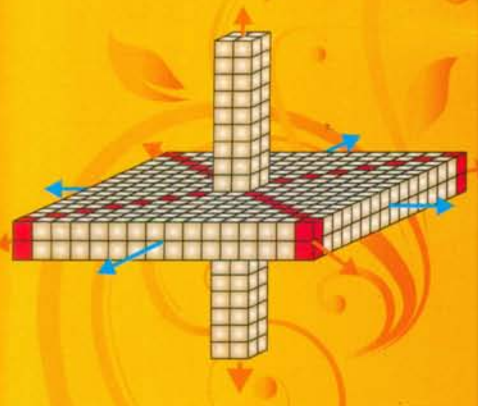

सचित्र

श्री भगवती सूत्र

—प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

ILLUSTRATED

SHRI BHAGWATI SUTRA

Pravartak Shri Amar Muni

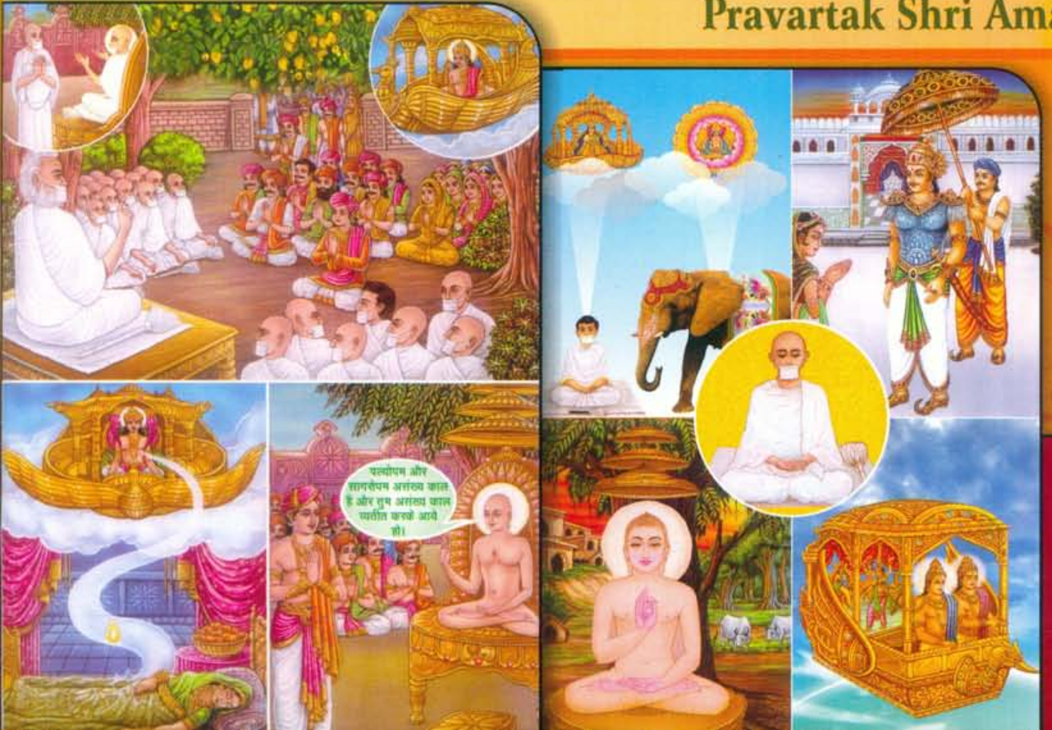

4

प्रस्तुत आगम श्री भगवतीसूत्र

जैन आगमों में सर्वाधिक महत्त्व प्राप्त विशालकाय आगम का नाम है **श्री भगवती सूत्र**। प्रसिद्ध है, कि इसमें जैन तत्त्वविद्या से सम्बन्धित विविध विषयों के ३६ हजार प्रश्नों का भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त युक्ति पूर्ण समाधान है। ज्ञान-विज्ञान की अनेक शाखाओं के रहस्य पूर्ण सिद्धान्तों का वर्णन इस आगम में उपलब्ध है।

माना जाता है, विश्वविद्या की ऐसी कोई भी शाखा नहीं होगी, जिसकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में चर्चा इस आगम में नहीं हो। दर्शन, अध्यात्म-विद्या, पुद्गल व परमाणु सिद्धान्त आदि सैकड़ों महत्त्वपूर्ण विषयों का वर्णन तथा उनका अनेकान्त शैली में समाधान इस आगम के अनुशीलन से प्राप्त हो जाता है।

आगमों के गम्भीर अध्येता प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी ने टीका व अन्य अनेक ग्रन्थों के आधार पर इस आगम के गम्भीर विषयों का अपनी सरल सारपूर्ण शैली में विवेचन प्रस्तुत कर 'सागर' को 'गागर' में भरने का प्रयत्न किया है।

इस आगम का प्रकाशन लगभग ६ भाग में सम्पन्न होने की सम्भावना है। तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं। जिसमें प्रथम शतक से नवम् शतक तक लिया गया है। इस चतुर्थ भाग में दशम् शतक से तेरहवें शतक के तृतीय उद्देशक तक का कलेवर लिया गया है।

This Agam Bhagavati Sutra

The most important and voluminous among the Jain Agams is **Shri Bhagavati Sutra** *(Vyakhya Prajnapti)*. It is well known that this work contains logical answers given by Bhagavan Mahavir to 36,000 questions on a variety of ontological topics. This Agam contains discussions about many important and obsours principles from many branches of knowledge and special studies.

It is believed that there is no branch of universal knowledge that has not been discussed directly or indirectly in this Agam. Information about numberous subjects including philosphy, spiritualism, matter and particle theory can be acquired by studying this Agam.

Pravartak Shri Amar Muni ji, a profound scholar of Agams, has tried to condense a sea in a drop by presenting the complex topics of this Agam in a simple and lucid style with the help of commentaries and many other reference works.

This voluminous Agam as expected to be completed in six volumes. This is the fourth volume containing original *Ardhamagadhi* text with Hindi and English translations, elaboration and multicolored illustrations.

- भगवान महावीर ने जिन शाश्वत सत्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया, वे आज के वैज्ञानिक युग में सर्वाधिक प्रासंगिक है। जैसे- किसी भी वस्तु को सर्वांग दृष्टि से समझने के लिए अनेकान्तदृष्टि और उसका सम्यक् स्वरूप कथन करने के लिए नये-निक्षेप की सापेक्षिक स्याद्वाद वचन-प्रणाली।
- धर्म, अधर्म, जीव, अजीव, पुद्गल-स्वरूप, परमाणु, लेश्या, तप-विधान, गति-सहायक द्रव्य धर्मास्तिकाय, कालचक्र-परिवर्तन का वर्णन, कर्म-सिद्धान्त, वनस्पति में जीव, पर्यावरण, मनोवर्गणा का स्वरूप, विभिन्न जीव योनियाँ आदि विषयों में हो रहे जीव-विज्ञान व भौतिक-विज्ञान सम्बन्धी अधुनातन अनुसंधान इन सबकी सत्यता सिद्ध करते हैं।
- भगवान महावीर के इन शाश्वत सिद्धान्तों को उन्हीं की भाषा व प्रतिपादन शैली में पढ़ने-समझने के लिए सचित्र **भगवतीसूत्र**, मूल अर्धमागधी, हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद के साथ आपके हाथों में प्रस्तुत है।

- The eternal and true principles Bhagwan Mahavir propagated are completely relevant in the modern scientific world. One example is the non-absolutisic viewpoint (Anekanta-vaad) to fully understand a thing and the relative methodology of Syadvad using naya and nikshep (standpoint and attribution) to realistically describe a thing.
- Virtue, vice, soul, non-soul, matter and its form, ultimate particle, soul complexion, codes of austerity, entity of motion, time-cycle and its changes, theory of karma, life in plants, environment, classification of mind and its activities, different genuses of life are being confirmed and authenticated by the latest researches in biology and physics.
- We place in your hands Illustrated Bhagwati Sutra (original Ardhamagadhi text with Hindi and English translations, elaboration and multicolored illustrations) to enable you to read and understand these eternal principles of Bhagwan Mahavir in his own language and style.

सचित्र

श्री भगवती सूत्र

भाग 4

—प्रवर्तक श्री अमर मुनि

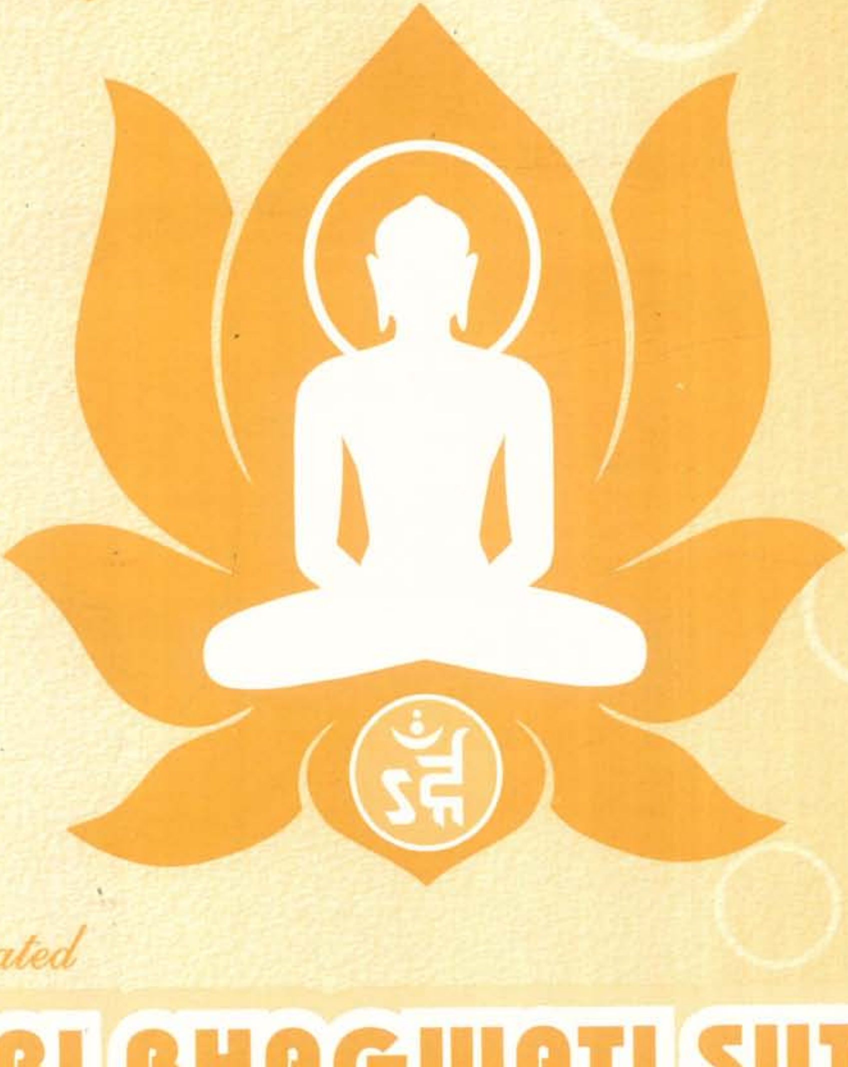

Illustrated

SHRI BHAGWATI SUTRA

Pravartak Shri Amar Muni

PART 4

।।卐।। श्री वर्धमानाय नमः।।卐।।

राष्ट्र सन्त उत्तर भारतीय प्रवर्तक अनंत उपकारी गुरूदेव भण्डारी प.पू. **श्री पद्म चन्द्र जी म.सा.** की पुण्य स्मृति में साहित्य सम्राट श्रुताचार्य पूज्य प्रवर्तक वाणी भूषण गुरूदेव प.पू. **श्री अमर मुनि जी म.सा.** द्वारा संपादित एवं पद्म प्रकाशन द्वारा विश्व में प्रथम बार प्रकाशित (सचित्र, मूल, हिन्दी-इंगलिश अनुवाद सहित) जैनागम सादर सप्रेम भेंट।

भेंटकर्त्ता : श्रुतसेवा लाभार्थी सौभाग्यशाली परिवार

श्रीमती मीराबाई रमेशलालजी लुणिया
(समस्त परिवार)

पंचम गणधर भगवत् सुधर्मा स्वामी प्रणीत पंचम अंग

सचित्र

श्री भगवती सूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति)

(चतुर्थ खण्ड)

मूल पाठ, हिन्दी-अंग्रेजी भावानुवाद, विवेचन तथा रंगीन चित्रों सहित

□ प्रधान सम्पादक □

श्रुताचार्य साहित्य सम्राट्

प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज

श्री वरुण मुनि 'अमर शिष्य'

संजय सुराना

● प्रकाशक ●

पद्म प्रकाशन, पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-40

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. सा. द्वारा सम्प्रेरित सचित्र आगममाला का छब्बीसवाँ पुष्प

❐ सचित्र श्री भगवती सूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति) **(चतुर्थ खण्ड)**

❐ *प्रधान सम्पादक :*

श्रुताचार्य साहित्य सम्राट्
प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज

❐ *सह-सम्पादक :*

श्री वरुण मुनि 'अमर शिष्य'
संजय सुराना

❐ *अंग्रेजी अनुवादक :*

सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

❐ *प्रथमावृत्ति :*

वि. सं. 2070, ज्येष्ठ, ईस्वी सन् 2013, जून

❐ *चित्रांकन :*

डॉ. त्रिलोक शर्मा

❐ *प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान :*

पद्म प्रकाशन
पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-110 040

महेन्द्र जैन (अध्यक्ष)
मो. : 09810027225

❐ *मुद्रक :*

संजय सुराना
श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-282 002
फोन : 0562-2851165, मो. : 9319203291

❐ *मूल्य :*

आठ सौ रुपया मात्र (800/- रुपये)

© *सर्वाधिकार :* पद्म प्रकाशन, दिल्ली

THE FIFTH ANGA WRITTEN BY THE FIFTH GANADHAR SHRI SUDHARMA SWAMI

ILLUSTRATED

SHRI BHAGAVATI SUTRA

(VYAKHYA PRAJNAPTI)

(FOURTH VOLUME)

Original text with Hindi and English translations, elaboration and multicoloured illustrations

❐ EDITOR-IN-CHIEF ❐
Shrut Acharya Sahitya Samrat
Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj

❐ ASSOCIATE-EDITOR ❐
Shri Varun Muni "Amar Shishya"
Sanjay Surana

PUBLISHERS
PADMA PRAKASHAN, PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-40

The Twenty-sixth number of the Illustrated *Agam* Series Inspired by Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji M. S.

- **ILLUSTRATED SHRI BHAGAVATI SUTRA (VYAKHYA PRAJNAPTI) (Fourth Volume)**

- ***Editor-in-Chief***
  Shrut Acharya Sahitya Samrat
  Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj

- ***Associate-Editor***
  Shri Varun Muni "Amar Shishya"
  Shri Sanjay Surana

- ***English Translator***
  Surendra Bothara, Jaipur

- ***First Edition***
  Jyeshth, 2070 V., June, 2013 A. D.

- ***Illustrations***
  Dr. Trilok Sharma

- ***Publishers and Distributors***
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040
  Mahender Jain (President – 9810027225)

- ***Printers***
  Sanjay Surana
  Shree Diwakar Prakashan, Agra
  A-7, Awagarh House, Opp. Anjna Cinema, M. G. Road,
  Agra-282 002. Ph. (0562) 2851165, Mob. : 9319203291

- ***Price***
  Eight Hundred Rupees only (Rs. 800/-)

© *Copyright :* Padma Prakashan, Delhi

राष्ट्रसन्त उत्तर भारतीय
प्रवर्त्तक अनन्त उपकारी
पूज्य गुरुदेव भण्डारी
श्री पद्मचन्द्र जी महाराज
की पावन स्मृति में
सादर सविनय

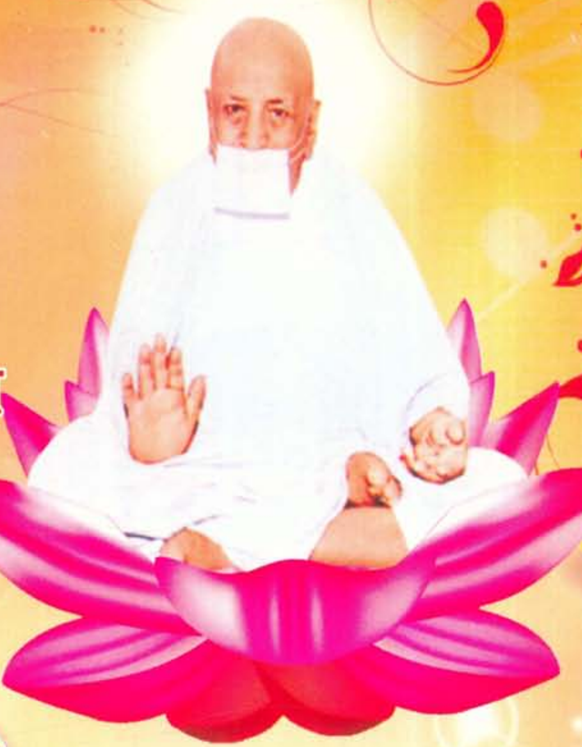

समर्पण

प्रवर्त्तक
अमर मुनि

आगम प्रकाशन के आधार स्तंभ

स्नेहमूर्ति महासती
श्री स्नेह कुमारी जी म.

जिन शासन प्रभाविका दिव्य साधिका
महासती श्री रश्मि जी म.

परम गुरूभक्त श्री सुशील जी – कौशल्या देवी जैन
(योजना विहार, दिल्ली)

परम गुरूभक्त श्री नेम चन्द जी – रक्षा जैन
(मण्डी गोविंदगढ़)

परम गुरूभक्त श्री राम कुमार जी – कमला जैन
(जाटल वाले) त्री नगर, दिल्ली

आगम प्रकाशन में परम सहयोगी गुरु भक्त

परम गुरुभक्त श्री सुभाष जी – मिथलेश गोयल
(अग्र नगर, लुधियाना)

परम गुरुभक्त श्री जिनेश जी – प्रेमलता जैन
(अग्र नगर, लुधियाना)

परम गुरुभक्त श्री सत्यपाल जी रुक्मिनीदेवी जैन
(कुरुक्षेत्र)

परम गुरुभक्त श्री सुदर्शन जी – मोहिता अग्रवाल
(कुरुक्षेत्र)

परम गुरुभक्त श्री विरेन्द्र जी – नीरू अग्रवाल
(खन्ना)

श्रुत सेवा में समर्पित गुरु भक्त

परम गुरूभक्त ला. जगमन्दरलाल जी – शकुन्तलादेवी जैन
(पदमपुर वाले) रोहिणी, दिल्ली

परम गुरूभक्त ला. पृथ्वी चन्द जी – शांति देवी जैन
(पदमपुर, राज.)

परम गुरूभक्त डॉ. श्री मौजी राम जी पुष्पा जैन
(सैनिक फार्म, दिल्ली)

परम गुरूभक्त श्री कृष्ण लाल जी – रामा मित्तल
(पदमपुर)

परम गुरूभक्त श्री सुभाष जी – सुलोचना जैन
(हुड्डा कॉलोनी, पानीपत)

प्रकाशकीय

जैनधर्म दर्शन की अनमोल धरोहर आप्त पुरुषों की वाणी "आगम" का शाब्दिक अर्थ है पदार्थ के रहस्य का परिपूर्ण ज्ञान होना। जिन्होंने केवलज्ञान से तीनों काल के पदार्थों को व तीनों लोकों के द्रव्यों को गुण व पर्याय से जाना व देखा है, ऐसे सर्वज्ञ तीर्थंकर ही आप्त पुरुष हैं और उनसे उत्पन्न अर्थ ज्ञान 'आगम' है।

ऐसा ही एक आगम है—**श्री भगवती सूत्र**। इस 41 शतक और 1138 उद्देशकों वाले विशाल आगम के चतुर्थ खण्ड को पुस्तकाकार कर सचित्र रूप में आपके कर-कमलों में सुशोभित करते हुए हमारा हृदय आध्यात्मिक उल्लास से भर उठा है।

आगम साहित्य जैन दर्शन की अनमोल निधि है। लगभग बीस वर्ष पूर्व इस निधि की रक्षा के लिए पूज्य गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. सा. ने अपने अन्तेःवासी सुशिष्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म. सा. को प्रेरणा प्रदान की। गुरु इच्छा को पूर्ण करने हेतु पू. प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म. सा. ने तत्कालीन परिस्थितियों पर विचार कर इसका अंग्रेजी अनुवाद सहित सचित्र संस्करण प्रकाशित कराने का मानस बनाया। कड़े परिश्रम और चिंतन के पश्चात् इस विचार ने मूर्त्त रूप धारण किया और पद्म प्रकाशन का प्रथम सोपान सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र सन् 1992 में प्रकाशित हुआ।

आगम का इस प्रकार का सचित्र संस्करण विश्व में प्रथम बार प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशन से जैन आगम साहित्य के प्रकाशन में एक नवीन विधा का शुभारम्भ हुआ।

सचित्र श्री भगवती सूत्र इस शृंखला में 26वीं रचना है। इसका प्रथम भाग सन् 2005 में प्रकाशित किया गया। सन् 2006 में द्वितीय भाग और सन् 2008 में तृतीय भाग प्रकाशित किया गया। अब यह चतुर्थ भाग (शतक 10 से लेकर शतक 13 के चौथे उद्देशक तक) आपके समक्ष प्रस्तुत है। आगे के भागों का प्रकाशन भी शीघ्र करने का प्रयास किया जा रहा है।

अंग्रेजी भाषा विश्व की साहित्यिक भाषाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस भाषा में आगमों का अनुवाद करके चित्रों सहित शुद्ध संस्करण का मुद्रण करवाना और विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में पहुँचाना अपने आपमें एक श्रमसाध्य अनुपम कार्य है। पूज्य गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म. सा. के इस महान सेवाकार्य से जैन साहित्य के इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जायेगा।

पूज्य गुरुदेव प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म. सा. के सेवाभावी शिष्य, आगमों के गहन ज्ञाता श्री वरुण मुनि जी म. सा. भी इस कार्य में पूर्ण मनोयोग पूर्वक जुटे हुए हैं। उनका उपकार भी हम नहीं भूल सकते। सम्पादन और चित्रण में सहयोगी संजय सुराना (श्री दिवाकर प्रकाशन, आगरा) एवं अंग्रेजी अनुवादक श्री सुरेन्द्र जी बोथरा, जयपुर और चित्रकार त्रिलोक शर्मा का सहयोग भी सदा स्मरण रहेगा। प्रकाशन हेतु अर्थ व्यवस्था करने वाले श्रुत सहयोगी गुरु-भक्तों ने भी इस कार्य में मुक्त-हस्त सहयोग प्रदान किया, वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

यह आगम प्रकाशन जैन साहित्य के श्रुत लोक में मेरु पर्वत की भाँति स्थापित हो, हम इसके लिए संकल्पबद्ध हैं। इसी कामना के साथ.....!

—महेन्द्रकुमार जैन

अध्यक्ष : पद्म प्रकाशन, दिल्ली

Publisher's Note

'*Agam*' or the compilation of the words of the savants is invaluable heritage of Jain philosophy. The literal meaning of *Agam* is 'the complete knowledge of the secrets of substances'. These savants are the omniscient Tirthankars who saw and knew all the attributes and modes of all substances and things existing in all the three worlds in all the three times. The corpus of the message of these savants and elaborations by their worth disciples is known as *Agam*.

One such *Agam* is *Shri Bhagavati Sutra*, a voluminous work having 41 Chapters and 1138 Lessons. We are filled with a spiritual elation to offer this fourth illustrated volume of this great *Agam* to our readers.

Agam literature is the immeasurable treasure of Jain philosophy. About twenty years back revered Gurudev Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padmachandra ji M. S. inspired his able disciple Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj for a mission to protect this treasure. In order to fulfill the desire of his guru and looking at the prevailing social conditions Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj thought of publishing illustrated editions of *Agams* with English translation. With a lot of contemplation and hard work this idea took practical shape and the first book by Padam Prakshan came out in 1992 as *Illustrated Uttaradhyayan Sutra*. Such illustrated edition of an *Agam* was published for the first time in the world. Its publication was the beginning of a new style in the field of Jain *Agam* literature.

. This *Illustrated Shri Bhagavati Sutra* (IV) is the 26th book of this series. The first volume of this work was published in 2005. The second came in 2006 and the third in 2008. Now this IV volume, containing chapters 10-12 and three lessons of chapter 13, is in your hands. Following volumes are also in the pipeline and will soon be available to our readers.

English occupies an important place in modern languages of the world. This essential and much appreciated project of translating *Agams* into English, getting elaborative illustrations made, getting them attractively printed and ensuring that they reach universities around the world has been an unprecedented but Herculean task. Once this exemplary mission is concluded the name of revered gurudev Shri Amar Muni ji Maharaj will be written in golden letters in the history of Jain literature.

The service oriented disciple of revered gurudev Shri Amar Muni ji Maharaj and a profound scholar of Jain *Agams* in his own right, Shri Varun Muni ji M. S., is also diligently involved with this project; we are indebted to him as well. We will never forget the active co-operation of Shri Sanjay Surana (Shri Diwakar Prakashan, Agra) in editing of the text as well as conceiving and getting the illustrations made; that of Shri Surendra Bothara, Jaipur in doing the free flowing English translation, much appreciated by foreign scholars; and that of Dr. Trilok Sharma, the artist-illustrator, in making beautiful multi-colour illustrations. We are, of course, thankful to the devotees who have liberally provided financial contributions for this mission of service to Tirthankar's sermon.

May this Illustrated *Agam* series gain the status of Meru Mountain in the world of Jain literature. With this hope and resolve......!

Mahendra Kumar Jain

President : Padma Prakashan

प्राग्वक्तव्य

महापुरुषों की वाणी में एक ऐसी अद्‌भुत शक्ति होती है कि जब वह किसी विषय का विश्लेषण करते हैं तो श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। उनका उपदेश गहन अनुभूतियों की छलनी से छना वह साररूप होता है जिसमें कुछ भी अंश व्यर्थ जैसा नहीं होता। इन्हीं महापुरुषों में एक हैं श्रमण भगवान महावीर, जिनके उपदेशों को गणधरों ने अपनी महाप्रज्ञता से द्वादशांगी का रूप दिया है जो आज आगम साहित्य के रूप में सम्पूर्ण जगत् को सर्वत्र आलोकित कर रहे हैं। इन आगम ग्रंथों में जो ग्रंथ द्वादशांगी का सबसे बड़ा महासागर कहा जाता है, वह '**भगवती सूत्र**' है। विश्व विधा की ऐसी कोई भी अभिधा नहीं जिसकी प्रस्तुत आगम में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से चर्चा न की गई हो। इस आगम की विस्तृत जानकारी प्रथम भाग की प्रस्तावना में दी जा चुकी है। अत: यहाँ उसके पुनरावर्त्तन की आवश्यकता नहीं है।

पूर्व प्रकाशित तीन भागों में इस सूत्र के शतक 1 से लेकर शतक 9 तक का वर्णन किया जा चुका है। अब इस चतुर्थ भाग में 10वें शतक से लेकर 13वें शतक के तृतीय उद्देशक तक दिये गये हैं।

दसवें शतक में दिशा संवृत अधिकार, उत्तर अन्तरद्वीप आदि का निरूपण किया गया है।

ग्यारहवें शतक के प्रारम्भ में हस्तिनापुर निवासी शिवराजर्षि का उल्लेख है जिसने पूर्व में दीक्षा-प्रोक्षक तापस दीक्षा ग्रहण की थी परन्तु बाद में वह भगवान महावीर का शिष्य बना। आखिर वह प्रभु वीर का शिष्य क्यों बना ? इसके बारे में बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत शतक में विवेचन दिया गया है। इसके अतिरिक्त सुदर्शन श्रेष्ठी की काल सम्बन्धी जिज्ञासाएँ तथा महाबल एवं आलंभिका के ऋषिभद्र पुत्र का वर्णन भी इसी शतक में किया गया है।

बारहवें शतक में श्रावस्ती के शंख और पोक्खली श्रावकों के पाक्षिक पौषध करने का उल्लेख है। तत्पश्चात् श्रमणोपासिका जयन्ती द्वारा श्रमण भगवान महावीर से जीव के सम्बन्ध में अनेक प्रश्नों की पृच्छा और प्रभु महावीर द्वारा बड़े ही सुन्दर, सहज तरीके से उनका समाधान किया गया है।

श्रमणोपासिका जयन्ती प्रश्न करती है—"भन्ते! जीव गुरुत्व को कैसे प्राप्त होता है?" प्रभु महावीर कहते हैं—"जयन्ती! प्राणातिपात आदि 18 दोषों का सेवन करने से जीव गुरुत्व

को प्राप्त होता है और उसकी निवृत्ति करने से लघुत्व को प्राप्त होता है।" जयन्ती–"भन्ते! जीव सोता हुआ अच्छा है अथवा जागता हुआ?" भगवान महावीर–"जयन्ती! कितने ही जीवों का सोना अच्छा है और कितने ही जीवों का जागना अच्छा है। जो जीव अधर्म और अनीतिपूर्ण कार्य करता है, दूसरों को कष्ट देता है उसका सोना अच्छा है और जो जीव धर्मयुक्त एवं नीतिपूर्वक कार्य करता है, उसका जागना अच्छा है।"

इसी कथन पर कबीर ने एक दोहा प्रस्तुत किया है–

सोया संत जगाइए, करे नाम का जाप।
तीनों सोते हैं भले, साकत, सिंह और साँप॥

इसके बाद नरक की सात पृथ्वियों, पुद्‌गल परावर्तन पर विचार, रूपी-अरूपी पर चिन्तन तथा लोक व आठ प्रकार की आत्मा का विस्तृत वर्णन भी 12वें शतक में व्यवहृत किया गया है।

तेरहवें शतक के प्रथम उद्देशक में नरक की सात पृथ्वियों के सम्बन्ध में विस्तृत प्रश्नोत्तर हैं। द्वितीय उद्देशक में चारों निकाय के देवों के आवासादि का वर्णन है। तृतीय उद्देशक में नैरयिक जीवों के अनन्तराहारादि के बारे में प्ररूपणा की गई है।

चूँकि भगवती सूत्र अन्य आगमों की अपेक्षा अत्यधिक विशाल है जिसकी विषय-वस्तु में प्राय: विभिन्नता एवं विविधता देखने को मिलती है। अत: प्रस्तुत मूलसूत्र के भावानुवाद के साथ जहाँ-जहाँ आवश्यकता हुई वहाँ-वहाँ हमने सरल, सरस एवं संक्षिप्त विधा में विवेचन प्रस्तुत किए हैं ताकि सुज्ञ पाठकों को कोई भी विषय समझने में परेशानी न हो। प्रस्तुत मूल सूत्र में अनेक स्थानों पर आगमकार ने प्रज्ञापना सूत्र का सन्दर्भ देखने की सूचना देकर विषय को काफी संक्षिप्त कर दिया है लेकिन हमने यहाँ प्रज्ञापना सूत्र का वह अंश विस्तृत रूप से प्रस्तुत कर पाठकों को पूरा विषय समझने में सुविधा दे दी है। इतना ही नहीं स्थान-स्थान पर अनेक महत्वपूर्ण विषयों को समझने के लिए भावपूर्ण सुरम्य रंगीन चित्रों का चित्रांकन भी किया गया है ताकि ये चित्र पाठकों के हृदय-अंतराल को स्पर्श कर जाए जिससे वह उस विषय को समझकर जिनशासन रसिक बनें।

इसके विस्तृत विवेचन में मेरे द्वारा पूर्व में अनुवादित भगवती सूत्र में किए गए विवेचन के काफी अंश यहाँ भी लिए गए हैं। इसके साथ-साथ पण्डित श्री घेवरचन्द जी शास्त्री का हिन्दी विवेचन और आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा भगवती सूत्र पर किया गया विवेचन भी हमने सामने

रखकर यथावश्यक उपयोग किया है। सरल भावानुसारी अंग्रेजी अनुवाद द्वारा इस आगम को और भी अधिक उपयोगी एवं रुचिप्रद बना दिया है जो आज की युवा पीढ़ी के अन्दर शास्त्र-पठन की प्यास जगाने एवं आत्म-अनुभूति की ललक जगाने हेतु मददगार साबित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

परिशिष्ट में शतक 10 से 13 तक आये हुए अर्ध मागधी के जैन पारिभाषिक शब्दों की एक विस्तृत शब्दावली दी गई है जिसमें इन शब्दों का जैन परिभाषिक अर्थ अंग्रेजी में सरलता पूर्वक समझाया गया है। आगमों का गहन अध्ययन करने वाले विद्वानों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

आगमों के इस विस्तृत श्रम-साध्य कार्य को व्यवस्थित रूप से सम्पन्न कराने में मेरे परम उपकारी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव उ. भा. प्रवर्त्तक, राष्ट्रसंत भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. सा. का आशीर्वाद कदम-कदम पर सम्बल की भाँति साथ रहा है। मैं ऐसे परम उपकारी गुरुदेव के प्रति विनयावनत हूँ।

इसके संपादन आदि में हमेशा की तरह मेरे प्रिय शिष्य आगम रसिक वरुण मुनि जी, स्व. श्रीचन्द जी सुराणा 'सरस' के सुपुत्र संजय सुराणा एवं अंग्रेजी अनुवादक सुरेन्द्र जी बोथरा ने पूर्ण सहयोग दिया है। साथ ही इसके प्रकाशन में जिन गुरुभक्तों ने उदार हृदय पूर्वक अर्थ-सहयोग प्रदान किया है, उन सभी को हम साधुवाद देते हैं। आशा है कि अंग्रेजी अनुवाद के साथ यह सचित्र भगवती सूत्र (भाग-4) श्रुत उपासकों को न केवल सद्धर्म चरणाभिमुख बनाए अपितु आत्म-दर्शन भी कराए।

—प्रवर्त्तक अमर मुनि

जैन स्थानक,
लुधियाना

Preface

The speech of great men has such astonishing power that when they analyze some theme the audience is spellbound. Their sermon is the essence filtered through the strainer of their profound spiritual experience; it has nothing that could be called worthless. One among these great men was Shraman Bhagavan Mahavir, whose sermons were compiled by highly accomplished Ganadhars in the form of *Dwadashangi* (the twelve limbed canon). The corpus was further enriched by the lineage of accomplished ascetic disciples and is now available as *Agam* literature, the source of spiritual light for the whole world. *Bhagavati Sutra* is the work that is popularly known as the ocean of knowledge among these *Agamic* scriptures. There is no topic of universal knowledge that has not been discussed in it, directly or indirectly. Detailed information about this *Agam* has already been given in the preface of the first volume, as such there is no need to repeat it here.

In the already published three volumes of this book chapters one to nine have been covered. Now this book includes chapters 10-12 and three lessons of chapter 13.

The tenth chapter has lessons describing the directions, restrained homeless-ascetic, inner powers, Shyamahasti (a disciple of Bhagavan Mahavir), goddesses, divine assembly, and northern inner-islands.

The eleventh chapter contains the story of Shiva Rajarshi of Hastinapur, who first got initiated as *Dishaprokshak* hermit but later became a disciple of Bhagavan Mahavir. The reason for his becoming a disciple of Bhagavan has been lucidly discussed. Besides this the chapter includes Merchant Sudarshan's questions about time and stories of Mahabal and Rishibhadraputra of Aalaabhika city.

The fortnightly partial-ascetic vow of Shravaks Shankh and Pokkhali in Shravasti city is discussed in chapter twelfth. The chapter also includes some questions of Jayanti Shramanopaasika about *jiva* (soul/living being) and easily understandable enlightening answers by Bhagavan Mahavir.

Jayanti Shramanopaasika asked — "*Bhante!* How do souls soon attain heaviness? Bhagavan Mahavir says — "Jayanti! Through indulgence in eighteen activities of sin including harming or destruction of life. And by abstaining from these, souls soon attain lightness." Jayanti – "*Bhante!* What is good for living beings – to remain sleeping or awake?" Bhagavan – "Jayanti! It is better for some to remain sleeping and for some to remain awake. It is better for irreligious to remain asleep because when awake they indulge in sinful deeds. It is good for a religious person to be awake because as long he is awake he indulges in pious deeds."

On the same theme Kabir also says in a couplet — "Awaken the sleeping saint who will chant the name of the Lord. These three are best sleeping – a rascal, a lion and a snake."

This is followed by elaboration of seven hells, matter transformation, form and formless, universe (Lok) and eight kinds of souls, concluding the twelfth chapter.

The first lesson of the thirteenth chapter gives further details of seven hells. The second lesson here details the abodes of four classes of divine realms. The third lesson informs about intake without interlude of infernal beings.

Bhagavati Sutra is very large as compared to other *Agams* and it contains varied discussions on different topics. As such, along with the free flowing translation of the original text, simple and brief but interesting elaborations have been included wherever needed. This will facilitate better understanding of the themes. At many places in the original text indications to refer to other scriptures like *Prajnapana Sutra* have been given for the sake of brevity. However, wherever needed we have quoted those portions in full for convenience of readers. Besides this, as always, colorful illustrations have been included on select topics for the easy understanding of complex subjkects as well as making the reading interesting and touching so that the readers get inspired to go deeper into Jain scriptures.

In preparing this edition many selected portions from my Hindi translation of Bhagavati Sutra have been included here. Besides this *Bhagavati Sutra* (commentary) by Pt. Ghevarchand ji Banthia and Bhagavai edited by Acharya Mahaprajna ji have been extensively consulted. Including easy to comprehend free flowing English translation makes this series of Agams useful for the international community of scholars as well as the new generation more adept in English. I hope that this would help evoke an interest and desire to study scriptures in the modern Jain youth.

A glossary of Jain technical terms has been given as appendix. Researchers and scholars of Jainology would find it useful.

My preface would not be complete without the pious remembrance of my revered teacher Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji M. S. who always inspired me to work in service of the *Shrut* (*Agams*). Whatever I have achieved and whatever I am presently doing is the fruit of his kindness and blessings.

As always, scholarly editors like my able disciple *Agam* lover Varun Muni ji, Sanjay Surana (son of late Shri Shrichand Surana 'Saras') and Shri Surendra Bothara (English translator) have extended their full cooperation in completing this edition. Also, generous devotees have extended their cooperation and contributions to this pious project. They all deserve thanks and commendations. I earnestly hope that this *Illustrated Bhagavati Sutra (IV)* with English translation will inspire and guide the devotees of *Shrut* towards pious conduct and spiritual uplift.

Jain Sthanak,
Raikot

—Pravartak Amar Muni

अनुक्रमणिका

दशम शतक : प्रथम उद्देशक :

दिशाएँ 1–11

प्राथमिक 1
दसवें शतक की संग्रहणी गाथा 1
दिशाओं का स्वरूप 2
दिशाओं के दस प्रकार 3
दस दिशाओं के नाम 4
जीव-अजीव सम्बन्धी कथन 5
शरीर के भेद-प्रभेद तथा सम्बन्धित कथन 10

दशम शतक : द्वितीय उद्देशक :

संवृत अनगार 12–20

संवृत अनगार को लगने वाली क्रिया 12
योनियों के भेद-प्रकार एवं स्वरूप 14
वेदना : प्रकार एवं स्वरूप 15
मासिक भिक्षुप्रतिमा की आराधना 17
अकृत्यसेवी भिक्षु 18

दशम शतक : तृतीय उद्देशक :

आत्मऋद्धि 21–30

उपोद्घात 21
देवों की उल्लंघनशक्ति 21
देवों के मध्य में से होकर गमन सामर्थ्य 22
देव-देवियों का एक-दूसरे के मध्य में से होकर गमन सामर्थ्य 26
दौड़ते हुए अश्व के 'खु-खु' शब्द का भेद 29
प्रज्ञापनी भाषा : मृषा नहीं 29

दशम शतक : चतुर्थ उद्देशक :

श्यामहस्ती 31–42

उपोद्घात 31
चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव : सम्बन्धी प्रश्न 32
बलीन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव 36
धरणेन्द्र आदि के त्रायस्त्रिंशक देव 37
शक्रेन्द्र से अच्युतेन्द्र तक के त्रायस्त्रिंशक देव 38

दशम शतक : पंचम उद्देशक :

देवी (अग्रमहिषी वर्णन) 43–64

उपोद्घात 43
अपनी सुधर्मा सभा में चमरेन्द्र की (मैथुन-निमित्तक) भोग की असमर्थता 44
लोकपालों का देवी-परिवार 47
बलीन्द्र लोकपालों का देवी-परिवार 49
धरणेन्द्र लोकपालों का देवी-परिवार 51
भूतानन्दादि लोकपालों का देवी-परिवार 52
व्यन्तर देवेन्द्रों के देवी-परिवार 54
चन्द्र-सूर्य-ग्रहों के देवी-परिवार 59
शक्रेन्द्र तथा लोकपालों का देवी-परिवार 61
ईशानेन्द्र तथा उसके लोकपालों का देवी-परिवार 63

दशम शतक : छठा उद्देशक :

सभा (शक्रेन्द्र की सुधर्मा सभा) 65–66

शक्रेन्द्र की सुधर्मा सभा 65

दशम शतक : सातवें से चौंतीसवें उद्देशक तक :

उत्तरवर्ती (अट्ठाईस) अन्तर्द्वीप 67–68

ग्यारहवाँ शतक : प्रथम उद्देशक :
उत्पल (जीव विषयक) 69-100

प्राथमिक 69
ग्यारहवें शतक की संग्रहणी गाथा 70
द्वार गाथाएँ 70
१. उपपात द्वार 71
२. परिमाण द्वार 73
३. अपहार द्वार 73
४. उच्चत्व द्वार 74
५ से ८ तक—ज्ञानावरणीयादि-बन्ध-वेद-उदय-उदीरणा द्वार 75
९. लेश्या द्वार 79
१० से १३ दृष्टि-ज्ञान-योग-उपयोग-द्वार 82
१४-१५-१६—वर्णरसादि-उच्छ्वासक-आहारक द्वार 84
१७-१८-१९—विरति-क्रिया और बन्धक द्वार 88
२०-२१—संज्ञा और कषाय द्वार 89
२२ से २५—स्त्रीवेदादि-वेदक-बन्धक-संज्ञी-इन्द्रिय-द्वार 90
२६-२७—अनुबन्ध-संवेध-द्वार 92
२८ से ३१ तक आहार-स्थिति-समुद्घात-उद्वर्तना-द्वार 96

ग्यारहवाँ शतक : द्वितीय उद्देशक :
शालूक (जीव विषयक) 101-102

ग्यारहवाँ शतक : तृतीय उद्देशक :
पलाश (जीव विषयक) 103-104

ग्यारहवाँ शतक : चतुर्थ उद्देशक :
कुम्भिक (जीव विषयक) 105-105

ग्यारहवाँ शतक : पंचम उद्देशक :
नालिक (जीव विषयक) 106-106

ग्यारहवाँ शतक : छठा उद्देशक :
पद्म (जीव विषयक) 107-107

ग्यारहवाँ शतक : सप्तम उद्देशक :
कर्णिका (जीव विषयक) 108-108

ग्यारहवाँ शतक : अष्टम उद्देशक :
नलिन (जीव विषयक) 109-110

ग्यारहवाँ शतक : नवम उद्देशक :
शिव राजर्षि 111-136

शिव राजा का दिक्प्रोक्षिक-तापस-प्रव्रज्याग्रहण-संकल्प 112
शिवभद्र कुमार का राज्याभिषेक और राज्य-ग्रहण 116
शिव राजर्षि द्वारा दिशाप्रोक्षकतापस-प्रव्रज्या ग्रहण 119
शिव राजर्षि द्वारा दिशाप्रोक्षणतापसचर्या का पालन 119
राजर्षि को विभंगज्ञान प्राप्त होने पर अपने ज्ञान का दावा और जनशंका 123
भगवान द्वारा असंख्यात द्वीपसमुद्र की प्ररूपणा 125
द्वीप-समुद्रगत द्रव्यों में वर्णादि की परस्परसम्बद्धता 128
भगवान से सत्य सुनकर जनता द्वारा प्रचार 130
शिवराजर्षि द्वारा निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या स्वीकार और मुक्ति प्राप्ति 132
सिद्ध होने वाले जीवों का संहननादि 135

ग्यारहवाँ शतक : दशम उद्देशक :

लोक (भेद-प्रभेद) 137-160

लोक-अलोक का संस्थान (आकार) 141
अधोलोक में जीव-अजीवादि 144
अधोलोक आदि के एक प्रदेश में जीव आदि 146
अधो-तिर्यग्-ऊर्ध्व क्षेत्रलोक और अलोक में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की अपेक्षा से जीव-अजीव द्रव्य 149
लोक की विशालता 151
अलोक की विशालता का वर्णन 154
आकाशप्रदेश पर परस्पर-सम्बद्ध जीवों का निराबाध अवस्थान 156
एक आकाशप्रदेश में जघन्य-उत्कृष्ट जीवप्रदेशों एवं सर्व जीवों का अल्पबहुत्व 159

ग्यारहवाँ शतक : ग्यारहवाँ उद्देशक :

काल (सम्बन्धित चर्चा) 161-208

काल और उसके चार प्रकार 163
प्रमाणकाल की व्याख्या 163
यथायुर्निर्वृत्तिकाल की व्याख्या 168
मरणकाल की व्याख्या 169
अद्धाकाल की व्याख्या 169
पल्योपम सागरोपम का प्रयोजन 170
नैरयिकादि समस्त संसारी जीवों की स्थिति की प्ररूपणा 171
पल्योपम-सागरोपम क्षयोपचय को सिद्ध करने हेतु महाबल राजा का दृष्टान्त 171
प्रभावती का वासगृह-शय्या-सिंहस्वप्न-दर्शन 172
रानी का स्वप्ननिवेदन और स्वप्न-फल कथन आग्रह 175
राजा द्वारा स्वप्नफल कथन 176
रानी प्रभावती का रात्रि जागरण 178
उपस्थानशाला की सफाई और सिंहासन की स्थापना 179
बल राजा द्वारा स्वप्नपाठकों को आमंत्रण 180
स्वप्नपाठकों से स्वप्न का समाधान 183
राजा द्वारा स्वप्नपाठकों का सत्कार एवं रानी को स्वप्नफल बताना 186
स्वप्नफल सुनकर रानी प्रभावती द्वारा गर्भ की रक्षा 188
दासियों द्वारा पुत्र-जन्म की बधाई देने पर उन्हें प्रीतिदान 189
पुत्र-जन्मोत्सव एवं नामकरण 191
महाबल कुमार का पंच धात्रियों द्वारा पालन तथा तरुणावस्था 194
राजकुमार महाबल के लिए श्रेष्ठ आठ प्रासादों का निर्माण 196
बलकुमार का आठ कन्याओं के साथ विवाह 196
बल राजा एवं महाबल कुमार की ओर से नववधुओं को प्रीतिदान 197
धर्मघोष अनगार का पदार्पण, जनता द्वारा पर्युपासना 202
महाबलकुमार द्वारा दीक्षाग्रहण 203
महाबल अनगार का अध्ययन, तपस्या, समाधिमरण एवं स्वर्गलोक प्राप्ति 205
सागरोपम की स्थिति का क्षयोपचय तथा सुदर्शन के पूर्वभव का रहस्योद्घाटन 206

ग्यारहवाँ शतक : बारहवाँ उद्देशक :

आलभिका 209-222

श्रमणोपासक ऋषिभद्र पुत्र की धर्म चर्चा, उसके प्रति अश्रद्धा 209

भगवान् द्वारा उन श्रमणोपासकों की जिज्ञासा का समाधान एवं उन ऋषिभद्रपुत्र से क्षमायाचना 211
भगवान द्वारा ऋषिभद्रपुत्र के भविष्य के सम्बन्ध में कथन 214
मुद्‌गल परिव्राजक को विभंगज्ञान प्राप्ति 216
विभंगज्ञानी मुद्‌गल द्वारा अपने अतिशय ज्ञान-दर्शन की घोषणा और लोगों द्वारा प्रतिक्रिया 217
भगवान द्वारा मुद्‌गल परिव्राजक के कथन के विषय में सत्यासत्य का निर्णय 219
मुद्‌गल परिव्राजक द्वारा निर्ग्रन्थप्रव्रज्याग्रहण एवं सिद्धिप्राप्ति 220

बारहवाँ शतक : प्रथम उद्देशक : शंख (और पुष्कली श्रमणोपासक) 223-246

प्राथमिक 223
बारहवें शतक की संग्रहणी गाथा 226
दो श्रमणोपासकों "शंख" और "पुष्कली" का संक्षिप्त परिचय 226
भगवान का श्रावस्ती नगरी में पदार्पण तथा श्रमणोपासकों द्वारा धर्मकथा-श्रवण 228
शंख श्रमणोपासक द्वारा पाक्षिक पौषध करने का विचार एवं श्रमणोपासकों को विपुल भोजन-सामग्री तैयार कराने के निर्देश 229
शंख श्रमणोपासक द्वारा आहार त्याग कर एकाकी पाक्षिक पौषध का अनुपालन 230
आहार तैयार करने के उपरांत पुष्कली का शंख को बुलाने के लिए जाना 232
शंख श्रमणोपासक की पत्नी द्वारा पुष्कली का स्वागत एवं परस्पर प्रश्नोत्तर 234
पुष्कली द्वारा शंख श्रावक को आहार सहित पौषध का निमंत्रण, शंख द्वारा अस्वीकार 234
पुष्कली आदि श्रमणोपासकों द्वारा खाते-पीते पौषध का अनुपालन करना 236
शंख तथा अन्य श्रमणोपासकों द्वारा भगवान की सेवा 237
भगवान का उपदेश और शंख श्रमणोपासक की निन्दादि न करने की प्रेरणा 238
भगवान द्वारा त्रिविधि जागरिका-प्ररूपणा 241
शंख द्वारा क्रोधादि कषाय-परिणामविषयक प्रश्न और भगवान द्वारा उत्तर 243
श्रमणोपासकों द्वारा शंख श्रावक से क्षमायाचना तथा स्वगृहगमन 244
शंख की मुक्ति के विषय में गौतम स्वामी का प्रश्न, भगवान का उत्तर 245

बारहवाँ शतक : द्वितीय उद्देशक : जयंती श्रमणोपासिका 247-263

जयन्ती श्रमणोपासिका और उससे सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों का परिचय 247
जयन्ती श्रमणोपासिका एवं मृगावतीदेवी का राजपरिवार सहित भगवान की सेवा में गमन 249
कर्मगुरुत्व-लघुत्व सम्बन्धी जयन्ती के प्रश्न और भगवान द्वारा उनका समाधान 252
भवसिद्धिक जीवों के विषय में चर्चा 253
सुप्तत्व-जागृतत्व, सबलत्व-दुर्बलत्व एवं दक्षत्व-आलसित्व के साधुता के विषय में परिचर्चा 256
पंचेन्द्रियों के वश आर्त्त बने हुए जीवों का बन्धादि दुष्परिणाम 262
जयन्ती द्वारा प्रव्रज्याग्रहण और मोक्ष प्राप्ति 263

बारहवाँ शतक : तृतीय उद्देशक : पृथ्वियाँ 264-265

सात नरक पृथ्वियों के नाम-गोत्रादि का वर्णन 264

बारहवाँ शतक : चतुर्थ उद्देशक :

पुद्गल 266-323

दो परमाणु-पुद्गलों के संघात एवं विभाग का निरूपण 266
तीन परमाणु-पुद्गलों के संघात एवं विभाग का निरूपण 267
चार परमाणु-पुद्गलों का संयोजन व वियोजन 267
पाँच परमाणु-पुद्गलों का संयोजन व वियोजन 268
छह परमाणु-पुद्गलों के संयोग एवं विभाग का निरूपण 269
सात परमाणु के पुद्गलों के संयोग और विभाग का निरूपण 271
आठ परमाणु-पुद्गलों के संयोग एवं विभाग का निरूपण 273
नौ परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग का निरूपण 275
दस परमाणु-पुद्गलों का संयोजन और वियोजन 279
संख्यात परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग से बने भंगों का निरूपण 285
असंख्यात परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग से निष्पन्न भंग का निरुपण 289
अनन्त परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग से निष्पन्न भंग की प्ररूपणा 293
परमाणु-पुद्गलों का पुद्गल परिवर्त्तन और उसके प्रकार 296
एकवचन एवं बहुवचन की दृष्टि से चौबीस दण्डकों में औदारिकादि सात पुद्गल परिवर्त्तन की प्ररूपणा 299
एकत्व की अपेक्षा से चौबीस दण्डकों में अतीतादि सात प्रकार के पुद्गल परिवर्त्तनों की प्ररूपणा 306
बहुत्व की अपेक्षा से नैरयिकादि जीवों के नैरयिकत्वादि रूप में अतीतादि सात प्रकार के पुद्गल-परिवर्त्तनों की प्ररूपणा 313
सात प्रकार के पुद्गल-परिवत्तनों का निर्वर्त्तनाकाल निरूपण 318
सप्तविध पुद्गल-परिवर्त्तों के निष्पत्तिकाल का अल्प-बहुत्व 319
सात प्रकार के पुद्गलपरिवर्त्तनों का अल्पबहुत्व 322

बारहवाँ शतक : पंचम उद्देशक :

अतिपात 324-344

अठारह पापस्थानों में वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श की प्ररूपणा 324
अठारह पापस्थान-विरमण में वर्णादि का अभाव होता है 331
चार बुद्धि, अवग्रहादि चार, उत्थानादि पाँच के विषय में वर्णादि की प्ररूपणा 331
अवकाशान्तर, तनुवात-घनवात-घनोदधि, पृथ्वी आदि के विषय में वर्णादि प्ररूपणा 334
चौबीस दण्डकों में वर्णादि की प्ररूपणा 336
धर्मास्तिकाय से लेकर अद्धाकाल तक में वर्णादि की प्ररूपणा 339
गर्भ में उत्पन्न हो रहे जीव में वर्णादि की प्ररूपणा 343
कर्मों के कारण जीव का विविध रूपों में परिणमन 343

बारहवाँ शतक : छठा उद्देशक :

राहु द्वारा चन्द्र का ग्रहण (ग्रसन) 345-358

राहुदेव का स्वरूप, उनके विमानों का वर्ण और उनके द्वारा चन्द्र ग्रसन की लोकभ्रान्तियों का निराकरण 345

ध्रुवराहु और पर्वराहु का स्वरूप तथा चन्द्र को आवृत-अनावृत करने का कार्यकलाप 350
चन्द्र को शशी (सश्री) और सूर्य को आदित्य कहे जाने का कारण 352
चन्द्रमा और सूर्य की अग्रमहिषियों (पटरानियों) का वर्णन 354
चन्द्र और सूर्य के कामभोगों से सुखानुभव का निरूपण 354

बारहवाँ शतक : सप्तम उद्देशक :
लोक का परिमाण 359-374

लोक के परिमाण की प्ररूपणा 359
बकरियों के बाड़े के दृष्टान्त द्वारा लोक में परमाणु मात्र प्रदेश में जीव के जन्म-मरण की प्ररूपणा 360
नरकादि चौबीस दण्डकों की आवास संख्या का अतिदेशपूर्वक निरूपण 363
एकजीव अथवा सर्वजीवों के चौबीस दण्डकवर्ती आवासों में विविध रूपों में अनन्त बार उत्पन्न होने की प्ररूपणा 363
एक जीव अथवा सर्वजीवों के मातादि, शत्रुदि, राजादि और दासादि के रूप में अनन्त बार उत्पन्न होने की प्ररूपणा 371

बारहवाँ शतक : अष्टम उद्देशक :
नाग 375-380

नाग, मणि, वृक्षादि में महर्द्धिक देव की उत्पत्ति एवं प्रभाव की चर्चा 375
शीलादि से रहित वानरादि का नरकगामित्त्व निरूपण 378

बारहवाँ शतक : नौवाँ उद्देशक :
देव 381-409

भव्यद्रव्यादि पंचविध देवों के स्वरूप का निरूपण 381
पूर्वोक्त पाँच प्रकार के देवों की उत्पत्ति का सकारण निरूपण 385
पंचविध देवों की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति का निरूपण 391
पंचविध देवों की वैक्रिय शक्ति का निरूपण 395
पंचविध देवों की उद्वर्त्तना-प्ररूपणा 396
पंचविध देवों की स्व-स्वरूप में संस्थिति प्ररूपणा 400
पंचविध देवों के अन्तरकाल की प्ररूपणा 401
पंचविध देवों का अल्प-बहुत्व 405
भवनवासी आदि भावदेवों का अल्प-बहुत्व 407

बारहवाँ शतक : दसवाँ उद्देशक :
आत्मा 410-448

आत्मा के आठ भेदों की प्ररूपणा 410
द्रव्यात्मा आदि आठों आत्मभेदों का परस्पर सहभाव एवं असहभाव-निरूपण 412

तेरहवाँ शतक : प्रथम उद्देशक :
नरक पृथ्वियाँ 449-481

प्राथमिक 449
तेरहवें शतक के संग्रहणी गाथा 451
नरक पृथ्वियों का वर्णन तथा रत्नप्रभा नरक पृथ्वी के नरकावासों की संख्या और उनका विस्तार 451
रत्नप्रभा के संख्येय (संख्यात) विस्तृत नरकावासों में विविध विशेषण-विशिष्ट नैरयिक जीवों की उत्पत्ति से सम्बन्धित उनचालीस प्रश्नोत्तर 453
रत्नप्रभा के संख्येय (संख्यात) विस्तृत नरकावासों से उद्वर्त्तना सम्बन्धी प्रश्नोत्तर 459
रत्नप्रभा पृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में नैरयिक जीवों की संख्या से लेकर चरम-अचरम की संख्या से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर 461

रत्नप्रभा के असंख्यात विस्तृत नरकावासों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर 466
शेष छह नरक पृथ्वियों के नरकावासों के सम्बन्ध में निरूपण 468
नैरयिकों में सम्यग्-मिथ्या-मिश्रदृष्टि वाले नैरयिक जीवों के उत्पाद, उद्वर्त्तना एवं विरहित-अविरहित की प्ररूपणा 474
लेश्याओं का परस्पर परिवर्तन और उसके अनुसार नरक में उत्पत्ति का निरूपण 477

तेरहवाँ शतक : द्वितीय उद्देशक :
देव (भेद-उत्तर भेद, आवास.....) 482-502

चार प्रकार के देवों की प्ररूपणा 482
भवनपति देवों के भेद, असुरकुमार देवों के आवास और उनके विस्तार की प्ररूपणा 483
भवनपति आवासों में उत्पन्न असुरकुमारादि से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर 484
वाणव्यन्तर देवों से सम्बन्धित प्ररूपणा 488
ज्योतिष्क देवों से सम्बन्धित प्रश्न 489
सौधर्मादि कल्पों, ग्रैवेयक एवं अनुत्तर देवों से सम्बन्धित कथन 491
चतुर्विध देवों के संख्यात-असंख्यात विस्तृत आवासों में सम्यग्दृष्टि आदि के उत्पत्ति, उद्वर्त्तन एवं सत्ता की प्ररूपणा 499
एक लेश्या वाले देव का दूसरी लेश्या वाले देवों में उत्पत्ति-प्ररूपणा 500

तेरहवाँ शतक : तृतीय उद्देशक :
(नैरयिकों के) अनन्तराहारादि 503-504

चौवीस दण्डकों में अनन्तराहारादि की प्ररूपणा 503

परिशिष्ट 505-547

शब्दकोष 505
आगमों का अनध्यायकाल 535
प्रकाशित आगम सूची 537

CONTENTS

Tenth Shatak : Pratham Uddeshak (First Lesson) : Dishi (The Directions) 1-11

Introduction 1
Collative Verse 1
Directions 2
Ten Directions 3
Names of Ten Directions 4
About the Living and the Non-living 5
Types and Sub-types of Body 10

Tenth Shatak : Dvitiya Uddeshak (Second Lesson) : Samvrit Anagara (The Restrained Ascetic) 12-20

Activities Performed by Restrained Ascetic 12
Description and Types of Genus 14
Description and Types of Sufferance 15
Observing Month-long Bhikshupratima 17
Wrongdoer Ascetic 18

Tenth Shatak : Tritiya Uddeshak (Third Lesson) : Atmariddhi (Innate Power) 21-30

Inception 21
Traverse Power of Gods 21
Capacity to Traverse through Other Divine Realms 22
Mutual Passing through of Gods and Goddesses 26
Guttural Sound of a Running Horse 29
Factual Form of Language is not Called False 29

Tenth Shatak : Chaturth Uddeshak (Fourth Lesson) : Curiosity of Shyamahasti 31-42

Inception 31
Question about Trayastrimshak Gods of Chamarendra 32
Trayastrimshak Gods of Balindra 36
Trayastrimshak Gods of Dharanendra 37
Trayastrimshak Gods of Shakrendra to Achyutendra 38

Tenth Shatak : Pancham Uddeshak (Fifth Lesson) : Devi (the Goddess)-43-64

Inception 43
Chamerandra's Inability of Enjoying Carnal Pleasures in his Assembly 44
Goddesses of the Realm-guardians of Chamarendra 47
Goddesses of the Realm-guardians of Balindra 49
Goddesses of the Realm-guardians of Dharanendra 51
Goddesses of the Realm-guardians of Bhootanand and Others 52
Goddesses of Kings of Vyantar Gods 54
Goddesses of Stellar Gods 59
Goddesses of Shakrendra and his Lokapaals 61

Goddesses of ishaanendra and his Lokapaals **63**

Tenth Shatak : Shasht Uddeshak (Sixth Lesson) : Sabha (Sudharma Assembly) 65-66

Sudharma Assembly of Shakrendra 65

Tenth Shatak : Shashtam-Chatustrimsh Uddeshakam (Seventh To Thirty-fourth Lessons) : Uttarvarti Antardveep (Northern Middle-islands) 67-68

Eleventh Shatak : Pratham Uddeshak (First Lesson) : Utpal (Life In Lotus) 69-100

Introduction 69

Collative Verse 70

Verses of themes 70

(1) Theme of Instantaneous Birth (Upapaat) 71

(2) Theme of Quantity (Parimaan) 73

(3) Theme of Removal (Apahaar) 73

(4) Theme of Height (Uchchata) 74

(5-8) Themes of Bondage (Bandhak), Sufferance (Veda), Fruition (Udaya) and Volitional Fruition (Udeerana) of Karmas 75

(9) Theme of Soul-complexion (Leshya) 79

(10-13) Themes of Drishti (Perspective), Jnana (Knowledge), Yoga (Association) and Upayoga (Intent of Indulgence) 82

14-16. Themes of Varnarasadi (Colour, Taste etc.), Uchchhavasak (Deep Breathing) and Aahaarak (Food Intake) 84

17-19. Themes of Virati (Detachment), Kriya (Action) and Bandhak (Bondage) 88

20-21. Themes of Sanjna (Active Awareness) and Kashaaya (Passions) 89

22-25. Themes of Ved-vedak (Genderic), Ved-bandhak (Gender-bondage Acquirer), Sanjna Sentience) and Indriya (Sense Organs) 90

26-27. Themes of Anubandh (Reborn in Same Genus) and Samvedh (Reborn in Other Genus) 92

28-31. themes of Aahaar (Food Intake), Sthiti (Span of Existence), Samudghaat (Bursting-forth), and Udvartan (Rebirth) 96

Eleventh Shatak : Dvitiya Uddeshak (Second Lesson) : Shaaluka (Life in Shaaluka) 101-102

Eleventh Shatak : Tritiya Uddeshak (Third Lesson) : Palaash (Life in Palaash) 103-104

Eleventh Shatak : Chaturth Uddeshak (Fourth Lesson) : Kumbhik (Life in Kumbhik) 105-105

Eleventh Shatak : Pancham Uddeshak (Fifth Lesson) : Naalik (Life in Naalik) 106-106

Eleventh Shatak : Shasht Uddeshak (Sixth Lesson) : Padma (Life in Padma) **107-107**

Eleventh Shatak : Shashtam Uddeshak (Seventh Lesson) : Karnika (Life in Karnika) **108-108**

Eleventh Shatak : Ashtam Uddeshak (Eighth Lesson) : Nalin (Life in Nalin) **109-110**

Eleventh Shatak : Navam Uddeshak (Ninth Lesson) : Shiva Rajarshi (Shiva the Saint King) **111-136**

King Shiva's Initiation into Directional Worship 112
Coronation of Prince Shivabhadra 116
Saint-king Shiva Initiated as Dishaprokshik Hermit 118
Saint-king Shiva Observing Dishaprokshik Austerity 119
The Saint-king Gains Vibhanga-jnana and Pride for his Knowledge 123
Bhagavan Preaches Innumerable continents-oceans 125
Interrelation of Attributes of Substances in continents-oceans 128
Publicity of the truth told by Bhagavan 130
Initiation of Saint-king Shiva as Nirgranth 132
The Body-constitution of beings to be Liberated 135

Eleventh Shatak : Dasham Uddeshak (Tenth Lesson) : Lok (Universe) **137-160**

Structure of the Lok-alok 141
Substances in the Lower World 144
Entities in one space-point 146
Substances in three worlds in four contexts 149
Vastness of the Lok 151
The Vastness of Alok 154
Interconnection of Soul-space-points 156
Comparative Numbers on one Space-point 159

Eleventh Shatak : Ekadasham Uddeshak (Eleventh Lesson) : Kaal (Time) **161-208**

Four Types of Kaal 163
Standard Time 163
Yathaayurnivritti Kaal 168
Maran Kaal 169
Addha Kaal 169
Purpose of Palyopam and Sagaropam 170
Life-spans of All Worldly Living Beings 171
Story of King Mahabal :
Decrease in Metaphoric Age 171
Prabhavati's Dream of Lion 172
Queen Narrates her Dream and Seeks its Meaning 175
Interpretation of Dream by the King 176
Prabahavati Remains Awake During the Night 178

Cleaning the Hall and Installing the Throne 179
King Invites Dream Diviners 180
Interpretation by Dream-diviners 183
Felicitation of Dream-diviners 186
The Queen Cares for Child in her Womb 188
Rewards to Maids for News of Birth of a Son 189
Birth and Naming Ceremonies 191
Care of Infant Mahabal 194
Construction of Eight Palaces 196
Marriage of Prince Mahabal 196
Marriage Gifts to Brides 197
Arrival of Ascetic Dharmaghosh 202
Initiation of Prince Mahabal 203
Study, Austerities, Death and Reincarnation of Ascetic Mahabal 205
Erosion and Depletion of Span of Sagaropam 206

Eleventh Shatak : Dwadasham Uddeshak (Twelfth Lesson) : Aalabhiya 209-222

Religious Discussion and Disbelief of Rishibhadraputra 209
Removal of Doubt by Bhagavan Mahavir 211
Bhagavan Predicts Future of Rishibhadraputra 214
Mudgal Parivrajak Gains Vibhanga Jnana 216
Vibhangajnani Mudgal Announces Hissupreme Knowledge, People React 217
Bhagavan Decides about Truth of Mudgal's statement 219
Mudgal Parivrajak's Nirgranth Initiation and Liberation 220

Twelfth Shatak : Pratham Uddeshak (First Lesson) : Shankh (and Pushkali) 223-246

Introduction 223
Collative Verse 226
Brief Introduction of Shankh and Pushkali 226
Arrival of Bhagavan Mahavir in Shravasti 228
Shankh Thinks of Observing Partial Ascetic Vow for a Fortnight 229
Shankh Alone Observes Fasting Paushadh for a Fortnight 230
After Preparing Food Pushkali Goes to Invite Shankh 232
Shankh's Wife Greets Pushkali 234
Pushkali Invites Shankh for Paushadh with Food Intake 234
Pushkali and Other Shramanopasaks Observe Paushadh with Food 236
Shankh and Other Shramanopasaks Worship Bhagavan 237
Bhagavan's Sermon and Advise not to Censureshankh 238
Bhagavan Defines three kinds of Jaagarika 241
Bhagavan answers Shankh's questions about Fruits of Passions 243
Shramanopasaks Return After Seeking Forgiveness From Shankh 244

Gautam Swami's question about Shankh's Liberation 245

Twelfth Shatak : Dvitiya Uddeshak (Second Lesson) : Jayanti Shramanopasika 247-263

Introduction of Jayanti and her kinfolk 247
Jayanti and Mrigavati go to Bhagavan's Assembly 249
Jayanti's Questions and Bhagavan's Answers 252
Discussion about Souls Destined to Liberate 253
Discussion about Positive and Negative States of Asceticism 256
Consequences of Grief Experienced due to Sensual Organsa 262
Jayanti's Initiation and Liberation 263

Twelfth Shatak : Tritiya Uddeshak (Third Lesson) : Prithvi (Hell) 264-265

Description of Seven Hells 264

Twelfth Shatak : Chaturth Uddeshak (Fourth Lesson) : Pudgal (Matter) 266-323

Combination and Division : Two Ultimate Particles of Matter 266
Combination and Division : Three Ultimate Particles of Matter 267
Combination and Division : Four Ultimate Particles of Matter 267
Combination and Division : Five Ultimate Particles of Matter 268
Combination and Division : Six Ultimate Particles of Matter 269
Combination and Division : Seven Ultimate Particles of Matter 271
Combination and Division : Eight Ultimate Particles of Matter 273
Combination and Division : Nine Ultimate Particles of Matter 275
Combination and Division : Ten Ultimate Particles of Matter 279
Combination and Division : Countable Ultimate Particles of Matter 285
Combination and Division : Uncountable Ultimate Particles of Matter 289
Combination and Division : Infinite Ultimate Particles of Matter 293
Material Transformation of Ultrons and Its Types 296
Seven Types of Transformations of Beings of Twenty Four Places of Suffering 299
Seven Types of Transformations in Singular Context 306
Seven Types of Transformations in Plural Context 313
Period of Completion of Seven Particulate Transformations 318
Comparative Period of Seven Types of Particulate Transformation 319
Comparative Number of Seven Types of Particulate Transformation 322

Twelfth Shatak : Pancham Uddeshak (Fifth Lesson) : Atipaat (Violation) 324-344

Colour, Smell, Taste and Touch in Eighteen Sources of Demerit 324
Absence of Attributes in Abstaining from Eighteen Sources of Demerit 331
Colour and Other Attributes of Intelligence etc. 331
Attributes of Intervening Space, Air, Water, Hell and Other Cosmic Things 334
Attributes of Colour etc. in Twenty Four Sources of Demerit 336
Attributes of Colour Etc. in Dharmaastikaaya To Addhaakaal 339
Attributes of a Soul in Womb 343
Transformation of Jiva in Various Forms Due to Karmas 343

Twelfth Shatak : Shasht Uddeshak (Sixth Lesson) : Rahu (Rahu) 345-358

Description of God Rahu and his Vimaans 345
Dhruva Rahu and Parva Rahu and Veiling and Unveiling of the Moon 350
Reasons For Calling the Moon Shashi and the Sun Aditya 352
Description of the Chief Consorts of Chandra and Surya 354
Pleasure Experiences of Chandra and Surya 354

Twelfth Shatak : Saptam Uddeshak (Seventh Lesson): Lok (Universe) 359-374

Expanse of the Lok 359
Death and Birth of Beings Explained with Example of Goat-yard 360
The Number of Abodes in Twenty Four Places of Suffering 363
Birth of one or many Souls in different forms in abodes in all places of Suffering 363
Birth of one or all Souls in different Human Relationships 371

Twelfth Shatak : Ashtam Uddeshak (Eighth Lesson): Naag (Serpent) 375-380

Birth and Effects of Opulent God Among Serpents, Gems and Trees 375
Rebirth in Hell of Virtue-less Vaanars etc. 378

Twelfth Shatak : Navam Uddeshak (Ninth Lesson) : Dev (Gods) 381-409

Description of Five Types of Gods 381
Birth of aforesaid Gods and its Cause 385
Minimum and Maximum Life-spans of Five Kinds of Gods 391
The Vaikriya Shakti of Five Kinds of Gods 395
Rebirth of Five Kinds of Gods 396
The Life-span of Five Kinds of Gods in their Current Status 400

The Intervening-period for Five Kinds of Gods 401
Comparative Numbers of Five Kinds of Gods 405
Comparative Numbers of Bhaavadevs 407

Twelfth Shatak : Dasham Uddeshak (Tenth Lesson) : Atma (Soul) 410-448

Description of Eight Kinds of Souls 410
Associated Presence of Eight Types of Soul 412

Thirteenth Shatak : Pratham Uddeshak (First Lesson) : Narak Prithvis (Hells) 449-481

Introduction 449
Collative Verse 451
Hells and Infernal Abodes in First Hell 451
Questions about Birth of Infernal beings in Infernal Abodes of First Hell with Limited Area 453
Questions about Death of Infernal beings in Infernal Abodes of First Hell with Limited Area 459
The Number of different Infernal beings in Infernal Abodes of First Hell with Limited Area 461
Questions about Infernal Abodes of First Hell with Unlimited Area 466
Details About the Infernal Abodes in the Remaining Six Hells 468
Birth, Death and Existence of Righteous, Unrighteous and Mixed Infernal beings 474
Transformation of Leshyas and Entailing Birth in Hells 477

Thirteenth Shatak : Dvitiya Uddeshak (Second Lesson) : Dev (Divine Beings) 482-502

Four Classes of Divine Beings 482
Classes of Abode Dwelling Gods, their Abodes and Expanse 483
Asur-kumar and Other Devs Born in Divine Abodes 484
Information about Vaanavyantar Devs 488
Questions about Jyotishk Devs 489
Information about Saudharm Kalp to Anuttar Vimaans 491
Origin, Descent and Existence of Righteous Jivas in Divine Realms 499
Rebirth of Divine beings from one Leshya to Another 500

Thirteenth Shatak : Tritiya Uddeshak (Third Lesson) : Anantar (Without Interlude) 503-504

Intake without Interlude in Twenty Four Places of Suffering 503

Appendix 505-547

Technical Terms 505
Inapproprate Time for Study of Agams 535
List of Published Agams 537

ॐ नमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

Om Namo Samanassa Bhagavao Mahavirassa

श्री भगवती सूत्र (4)

(श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र)

BHAGAVATI SUTRA (4)

(SHRI VYAKHYAPRAJNAPTI SUTRA)

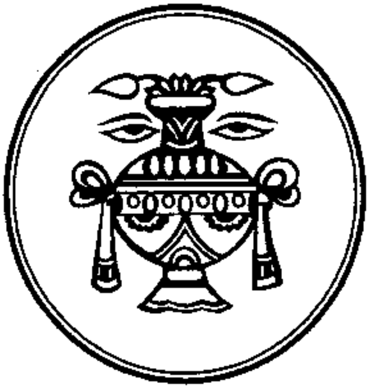

दसमं सयं : दशम शतक
DASHAMAM SHATAK (CHAPTER TEN)

प्राथमिक INTRODUCTION

व्याख्या प्रज्ञप्ति के दसवें शतक में दिशा, कषाय भाव व अकषाय भाव में स्थित संवृत अनगार, देवों की आत्म-ऋद्धि, श्यामहस्ती, इन्द्रों की देवियाँ, सुधर्मा सभा व 28 अन्तर्द्वीपों आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर के चौंतीस उद्देशक हैं। इस पूरे शतक में मनुष्यों और देवों की आध्यात्मिक, भौतिक एवं दिव्य शक्तियों का निर्देशन किया गया है।

In the tenth chapter of *Vyakhya Prajnapti* there are thirty four lessons having question-answers on various topics including directions, restrained homeless-ascetic in passion-ridden and passion-free states of mind, powers of divine beings, Shyamahasti, consorts of kings of gods, divine assemblies, and twenty eight middle islands (*antardveeps*). This chapter is fully devoted to the spiritual, physical and divine powers of human and divine beings.

दसवें शतक की संग्रहणी गाथा COLLATIVE VERSE

१. दिसि १ संवुडअणगारे २ आयड्ढी ३ सामहत्थि ४ देवि ५ सभा ६।
उत्तर अंतरदीवा ७—३४ दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा॥

१. दसवें शतक के चौंतीस उद्देशक इस प्रकार हैं—(१) दिशा, (२) संवृत अनगार, (३) आत्म-ऋद्धि, (४) श्यामहस्ती, (५) देवी, (६) सभा और (७ से ३४ तक) उत्तरवर्ती अन्तर्द्वीप।

1. The thirty four lessons of the tenth chapter are as follows — (1) Disha (The Directions), (2) Samvrit Anagar (Restrained Homeless-ascetic), (3) Atmariddhi (Inner Powers), (4) Shyamahasti, (5) Devi (Goddesses), (6) Sabha (Assembly), (7-34) Uttarvarti Antardveep (Northern Inner-islands).

विवेचन—(१) प्रथम उद्देशक में दिशाओं के सम्बन्ध में निरूपण है। (२) द्वितीय उद्देशक में संवृत अनगार आदि के विषय में वर्णन है। (३) तृतीय उद्देशक में देवावासों को उल्लंघन करने में देवों की आत्म-ऋद्धि (स्वशक्ति) का कथन है। (४) चतुर्थ उद्देशक में श्रमण भगवान् महावीर के 'श्यामहस्ती' नामक शिष्य के प्रश्नों से सम्बन्धित कथन है। (५) पंचम उद्देशक में चमरेन्द्र आदि इन्द्रों की देवियों (अग्रमहिषियों) के सम्बन्ध में निरूपण है। (६) छठे उद्देशक में देवों की सुधर्मा सभा के विषय में प्रतिपादन है और (७-३४) ७वें से ३४वें उद्देशक में उत्तर दिशा के २८ अन्तर्द्वीपों के विषय में २८ उद्देशक हैं।

Elaboration—(1) The first lesson explains cardinal and intermediate directions. (2) The second lesson contains details about restrained

homeless-ascetic and related information. (3) Inner powers of divine beings employed in transgressing their respective realms are discussed in the third lesson. (4) The questions of Shyamahasti, a disciple of Bhagavan Mahavir, are included in the fourth chapter. (5) The fifth lesson is about the chief consorts of kings of gods including Chamarendra. (6) The sixth chapter contains description of Sudharma Sabha (divine assembly) of different gods. (7-34) These are 28 lessons about the 28 Northern Inner-islands.

पढमो उद्देसओ : 'दिसि'
प्रथम उद्देशक : दिशाएँ
PRATHAM UDDESHAK (FIRST LESSON) : DISHI (THE DIRECTIONS)

दिशाओं का स्वरूप **DIRECTIONS**

२. [प्र.] रायगिहे जाव एवं वयासी—किमियं भंते ! 'पाईणा' ति पवुच्चइ?

[उ.] गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव।

२. [प्र.] राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने (श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से) यावत् इस प्रकार पूछा—भगवन्! यह पूर्व दिशा क्या कहलाती है?

[उ.] गौतम! यह जीव रूप भी है और अजीव रूप भी है।

2. **[Q.]** In Rajagriha city... and so on up to... (Gautam Swami) asked (Bhagavan Mahavir) – *Bhante !* What this East direction is called ?

[Ans.] Gautam ! It is called living (*jiva*) as well as non-living (*ajiva*).

३. [प्र.] किमियं भंते ! 'पडीणा' ति पवुच्चइ?

[उ.] गोयमा ! एवं चेव।

३. [प्र.] भगवन्! यह पश्चिम दिशा क्या कहलाती है?

[उ.] गौतम! यह भी पूर्व दिशा के समान जानना चाहिए।

3. [Q.] *Bhante !* What this West direction is called ?

[Ans.] Gautam ! This too should be taken as the East direction.

४. एवं दाहिणा, एवं उदीणा एवं उड्ढा एवं अहो वि।

४. इसी प्रकार दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्व-दिशा और अधो-दिशा के विषय में भी जानना चाहिए।

4. And the same holds good for the South, North, Zenith and Nadir.

विवेचन—दिशाएँ : जीव-अजीव रूप क्यों? गौतम स्वामी द्वारा पूछे जाने पर भगवान ने दिशाओं का जीव रूप भी बताया और अजीव रूप भी। जीव रूप इसलिए हैं कि उनमें एकेन्द्रिय आदि जीव रहे हुए हैं और अजीव रूप इसलिए हैं कि उनमें अजीव (धर्मास्तिकायादि) पदार्थ रहे हुए हैं।

Elaboration—Directions : Why living and non-living ?–On being asked by Gautam Swami, Bhagavan said the directions to be living as well as non-living. They are called living because living beings including one-sensed beings exist there. They are also called non-living because non-living substances including the medium of motion (*Dharmastikaya*) too exist there.

दिशाओं के दस प्रकार TEN DIRECTIONS

५. [प्र.] कइ णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ?

[उ.] गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— पुरत्थिमा १ पुरत्थिमदाहिणा २ दाहिणा ३ दाहिणपच्चत्थिमा ४ पच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमुत्तरा ६ उत्तरा, ७ उत्तरपुरत्थिमा, ८ उड्ढा ९ अहो १०।

५. [प्र.] भगवन्! दिशाएँ कितनी कही गयी हैं?

[उ.] गौतम! दिशाएँ दस कही गई हैं। यथा—(१) पूर्व, (२) पूर्व-दक्षिण (आग्नेय कोण), (३) दक्षिण, (४) दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण), (५) पश्चिम, (६) पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण), (७) उत्तर, (८) उत्तर पूर्व (ईशान कोण), (९) ऊर्ध्व-दिशा और (१०) अधो-दिशा।

5. [Q.] *Bhante !* Directions are said to be how many ?

[Ans.] Gautam ! Directions are said to be ten. They are — (1) east, (2) southeast (*Agneya kone*), (3) south, (4) southwest (*Nairitya kone*), (5) west, (6) northwest (*Vayavya kone*), (7) north, (8) northeast (*Ishaan kone*), (9) zenith, and (10) nadir.

विवेचन : दश दिशाओं के नाम—प्रस्तुत सूत्र में दस दिशाओं के नामों का उल्लेख किया गया है। पिछले सूत्रों में ६ दिशाएँ बताई गई थीं। इसमें चार विदिशाओं के ४ कोणों (पूर्वदक्षिण, दक्षिणपश्चिम, पश्चिमोत्तर, एवं उत्तरपूर्व) को जोड़कर १० दिशाएँ बताई गई हैं।

Elaboration—The ten directions—This aphorism mentions ten directions. In the preceding aphorisms six directions are mentioned.

Here four intermediate directions have been added (southeast, southwest, northwest and northeast) to make them ten.

दस दिशाओं के नाम NAMES OF TEN DIRECTIONS

६. [प्र.] एयासि णं भंते! दसण्हं दिसाणं कइ नामधेज्जा पण्णत्ता?

[उ.] गोयमा! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

इंदा १ अग्गेयी २ जम्मा य ३ नेरई ४ वारुणी ५ य वायव्वा ६।
सोमा ७ ईसाणी य ८ विमला य ९ तमा य १० बोधव्वा॥

६. [प्र.] भगवन्! इन दस दिशाओं के कितने नाम कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! (इनके) दस नाम हैं। वे इस प्रकार हैं—

गाथार्थ—(१) ऐन्द्री (पूर्व), (२) आग्नेयी (अग्निकोण), (३) याम्या (दक्षिण), (४) नैर्ऋती (नैऋत्य कोण), (५) वारुणी (पश्चिम), (६) वायव्या (वायव्य कोण), (७) सौम्या (उत्तर), (८) ऐशानी (ईशान कोण), (९) विमला (ऊर्ध्व-दिशा) और (१०) तमा (अधो-दिशा)। ये दस (दिशाओं के) नाम समझने चाहिए।

6. [Q.] *Bhante !* How many are said to be the names of these ten directions ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be ten names of these, they are–

Verse– Know these to be the ten names (of these directions)–(1) *Aindri* (East), (2) *Agneyi* (southeast or *agneya kone*), (3) *Yamya* (South), (4) *Nairiti* (southwest or *nairitya kone*), (5) *Varuni* (West), (6) *Vayavyaa* (northwest or *vayavya kone*), (7) *Saumya* (North), (8) *Aishaani* (northeast or *ishaan kone*), (9) *Vimala* (Zenith), and (10) *Tama* (Nadir).

विवेचन—पूर्व दिशा ऐन्द्री इसलिए कहलाती है क्योंकि उसका स्वामी (देवता) इन्द्र है। इसी प्रकार अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, सोम और ईशान देवता इनके स्वामी होने से इन दिशाओं को क्रमश: आग्नेयी, याम्या, नैर्ऋती, वारुणी, वायव्या, सौम्या और ऐशानी कहते हैं। ऊर्ध्व-दिशा प्रकाश-युक्त होने से उसे 'विमला' कहते हैं और अधो-दिशा अन्धकार-युक्त होने से उसे 'तमा' कहते हैं।

Elaboration—The East is called *Aindri* because its overlord is Indra (the king of gods). In the same way the remaining nine directions are called *Agneyi, Yamya, Nairiti, Varuni, Vayavyaa, Saumya,* and *Aishaani* because their overlords are Agni, Yama, Nairiti, Varun, Vayu, Soma and Ishaan respectively. As Zenith is the direction of light it is called *Vimala* and as Nadir is the direction of darkness it is called *Tama.*

दस दिशाएँ

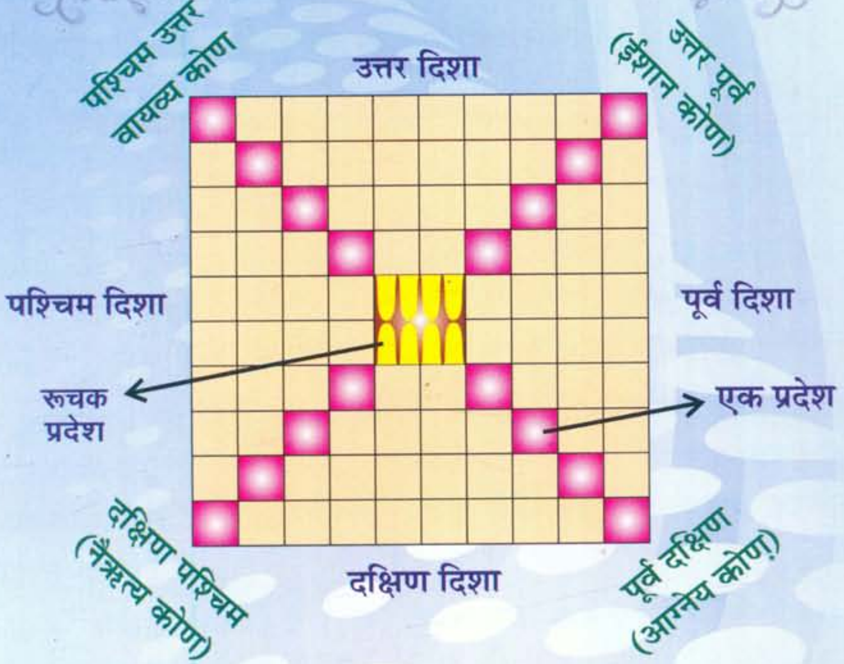

पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण ये चारों दिशाएँ मूल में द्वि प्रदेशी हैं। और आगे दो-दो प्रदेश की वृद्धि करती हुई लोकान्त तक असंख्यात प्रदेशी हो जाती हैं और अलोक में अनन्त प्रदेशी हो जाती है।

दसों दिशाओं का त्रिआयामी चित्र

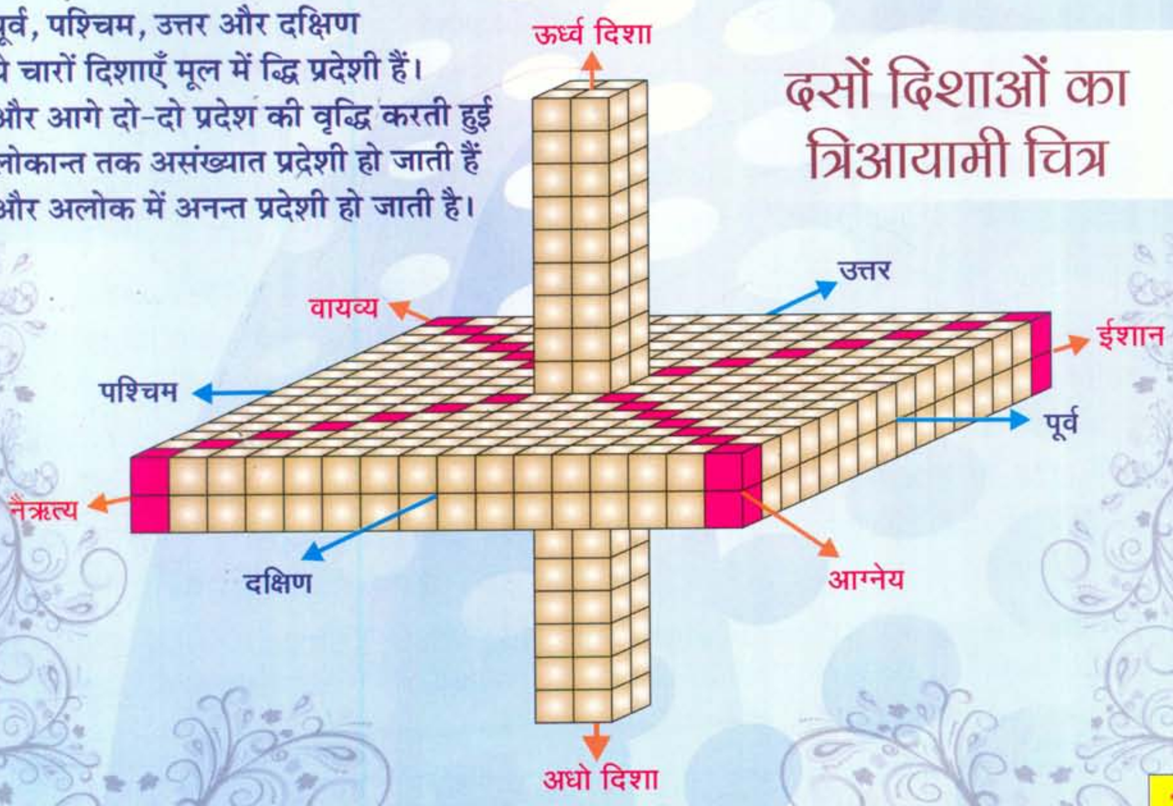

चित्र-परिचय 1

Illustration No. 1

दस दिशाएँ

जम्बूद्वीप की समपृथ्वी से 10 योजन नीचे दो अत्यन्त छोटे प्रतर हैं जो एक-दूसरे के ऊपर-नीचे स्थित हैं, इन प्रतरों में ऊपर की ओर चार तथा नीचे की ओर चार गोस्तनाकार रूप में आठ रुचक प्रदेश हैं। इन्हीं आठ रुचक प्रदेशों से दिशाएँ-विदिशाएँ निकलती हैं।

इनमें ऊर्ध्व तथा अधोदिशा ऊपर से नीचे तक 4 प्रदेशी है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशा मूल में दो प्रदेशी हैं और दो-दो प्रदेश की वृद्धि करती हुई लोकान्त तक असंख्यात प्रदेशी और अलोक में अनन्त प्रदेशी हो जाती हैं। 4 विदिशाएँ एक प्रदेशी हैं जो प्रारम्भ से अन्त तक एक-एक प्रदेशी ही रहती हैं।

—शतक 10, उ. 1

TEN DIRECTIONS

Ten Yojans below the level land of Jambu continent there are two micro-levels vertically located. Here there are eight *Ruchak* sections (glowing areas). They are in the shape of udders of a cow with four teats facing upwards and four downwards. The ten directions originate from these eight *Ruchak* sections.

Zenith and Nadir originate from four space-points and extend up to the edge of the occupied space (*Lok*) and beyond, into unoccupied space (*Alok*). The four cardinal directions (east, west, north south) originate from two space-points and extend in steps adding transverse space-points in geometric progression (in multiples of two) into unoccupied space (*Alok*). In the occupied space (*Lok*) its extension is up to innumerable space-points and in unoccupied space (*Alok*) it is infinite space-points. The four intermediate directions originate from a single space-point and have just a linear extension, without any addition of space-points.

—Shatak 10, lesson-1

७. [प्र.] इंदा णं भंते! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा?

[उ.] गोयमा! जीवा वि, तं चेव जाव अजीवपएसा वि।

जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया जाव पंचिंदिया, अणिंदिया। जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा, जाव अणिंदियदेसा। जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा बेइंदियपएसा, जाव अणिंदियपएसा।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य अरूविअजीवा य। जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, १ खंधदेसा २ खंधपएसा ३ परमाणुपोग्गला ४।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नो धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे १ धम्मत्थिकायस्स पएसा २; नो अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे ३ अधम्मत्थिकायस्स पएसा ४; नो आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे ५ आगासत्थि कायस्स पएसा ६ अद्धासमए ७।

७. [प्र.] भगवन्! क्या ऐन्द्री (पूर्व) दिशा जीव रूप है, जीव के देश रूप है, जीव के प्रदेश रूप है, अथवा अजीव रूप है, अजीव के देश रूप है या अजीव के प्रदेश रूप है?

[उ.] गौतम ! वह (ऐन्द्री दिशा) जीव रूप भी है, इत्यादि पूर्ववत् जानना चाहिए, यावत् वह अजीव प्रदेश रूप भी है।

उसमें जो जीव हैं, वे नियमतः एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, यावत् पंचेन्द्रिय तथा अनिन्द्रिय (केवलज्ञानी) हैं। जो जीव के देश हैं, वे नियमतः एकेन्द्रिय जीव के देश हैं, यावत् अनिन्द्रिय जीव के देश हैं। जो जीव के प्रदेश हैं, वे नियमतः एकेन्द्रिय जीव के प्रदेश हैं, यावत् अनिन्द्रिय जीव के प्रदेश हैं।

इसमें जो अजीव हैं, वे दो प्रकार के हैं। यथा-रूपी अजीव और अरूपी अजीव। रूपी अजीवों के चार भेद हैं। यथा—(१) स्कन्ध, (२) स्कन्ध देश, (३) स्कन्ध प्रदेश और (४) परमाणु पुद्गल।

जो अरूपी अजीव हैं, वे सात प्रकार के हैं। यथा—(१) (स्कन्ध रूप समग्र) धर्मास्तिकाय नहीं, किन्तु धर्मास्तिकाय का देश है, (२) धर्मास्तिकाय के प्रदेश हैं, (३) (स्कन्ध रूप) अधर्मास्तिकाय नहीं, किन्तु अधर्मास्तिकाय का देश है, (४) अधर्मास्तिकाय के प्रदेश हैं, (५) (स्कन्ध रूप) आकाशास्तिकाय नहीं, किन्तु आकाशास्तिकाय का देश है; (६) आकाशस्तिकाय के प्रदेश हैं और (७) अद्धा-समय अर्थात् काल है।

7. [Q.] *Bhante!* Does the east appear as (abound in) *jiva* (the living), section (*desh*) of the living, space-point (*pradesh*) of the living, or

ajiva (the non-living), section of the non-living, or space-point of the non-living ?

[Ans.] Gautam ! Know that it (the east) abounds in the living as well as all the aforesaid up to 'it also abounds in space-point of the non-living'.

The living in it are, as a rule, one-sensed, two-sensed, and so on up to five-sensed as well as without sense organs (the Perfected ones or Siddhas). The sections of the living in it are, as a rule, those of one-sensed, two-sensed, and so on up to five-sensed as well as without sense organs (the Perfected ones or Siddhas). The space-points of the living in it are, as a rule, those of one-sensed, two-sensed, and so on up to five-sensed as well as without sense organs (the Perfected ones or Siddhas).

The non-living in it are of two kinds—the non-living with form and the non-living without form. The non-living with form are of four types—(1) Aggregate (*skandh*), (2) Section of aggregate (*skandh-desh*), (3) Space-point of aggregate (*skandh-pradesh*) and (4) Ultimate particle of matter (*paramanu-pudgal*).

The formless non-living are of seven types—(1) Motion entity as sections and not as the whole (*Dharmastikaya-desh*), (2) Motion entity as space-point (*Dharmastikaya-pradesh*), (3) Rest entity as sections and not as the whole (*Adharmastikaya-desh*), (4) Rest entity as space-point (*Adharmastikaya-pradesh*), (5) Space entity as sections and not as the whole (*Akashastikaya-desh*), (6) Space entity as space-point (*Akashastikaya-pradesh*), and (7) Time entity (*Addhasamaya*).

विवेचन— सगडुद्धिसंठियाओ महादिसाओ हवंति चत्तारि।
मुत्तावलीव चउरो दो चेव य होंति रुयगनिभे॥

दिशा-विदिशाओं का आकार एवं व्यापकत्व—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, ये चारों महादिशाएँ गाड़ी (शकट) की उद्धि (ओढण) के आकार की हैं और आग्नेयी, नेर्ऋती, वायव्या और ऐशानी—ये चार विदिशाएँ मुक्तावली (मोतियों की लड़ी) के आकार की हैं। ऊर्ध्व-दिशा और अधो-दिशा रुचकाकार हैं, अर्थात्—मेरुपर्वत के मध्यभाग में ८ रुचक प्रदेश हैं, जिनमें से चार ऊपर की ओर और चार नीचे की ओर गोस्तनाकार हैं। यहाँ से दस दिशाएँ निकली हैं। पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, ये चारों दिशाएँ मूल में दो-दो प्रदेशी निकली हैं और आगे दो-दो प्रदेश की वृद्धि होती हुई लोकान्त तक एवं अलोक में चली गई हैं। लोक में असंख्यात प्रदेश तक और अलोक में अनन्त प्रदेश तक बढ़ी हैं इसलिए इनकी आकृति गाड़ी के ओढण के समान हैं। चारों विदिशाएँ एक-एक प्रदेश वाली निकली हैं और लोकान्त तक एक प्रदेशी ही चली गई हैं। ऊर्ध्व और अधो-दिशा चार-चार प्रदेशी निकली हैं और लोकान्त तक एवं

अलोक में भी चली गई हैं। पूर्व दिशा जीवादि रूप है किन्तु वहाँ समग्र धर्मास्तिकायादि नहीं, किन्तु धर्म, अधर्म एवं आकाश का एक देश रूप और असंख्य प्रदेश रूप हैं तथा अद्धा-समय रूप है। इस प्रकार अरूपी अजीव रूप सात प्रकार की पूर्व दिशा है।

Elaboration—The shapes and reach of directions and intermediate directions–East, west, north and south, these four cardinal directions are in the shape of an expanding cone or the central beam of a bullock-cart (*shakat-uddhi*). The four intermediate directions (southeast, southwest, northwest and northeast) are garland shaped (pearl-string or *muktavali*). Zenith and Nadir are of *Ruchak* (glow) shape. The concept is that at the center of the Meru Mountain there are eight *Ruchak* sections (glowing areas). They are in the shape of udders of a cow with four teats facing upwards and four downwards. The ten directions originate from this area. The four cardinal directions originate from two space-points and extend in steps adding transverse space-points in geometric progression (in multiples of two) up to the edge of the occupied space (*Lok*) and beyond into unoccupied space (*Alok*). In the occupied space (*Lok*) its extension is up to innumerable space-points and in unoccupied space (*Alok*) it is infinite space-points. This extension gives these directions the said expanding cone shape. The four intermediate directions originate from a single space-point and have just a linear extension, without any addition of space-points, up to the edge of the occupied space (*Lok*) and beyond into unoccupied space (*Alok*). Zenith and Nadir originate from four space-points and extend, without any addition of space-points, up to the edge of the occupied space (*Lok*) and beyond into unoccupied space (*Alok*). The east appears as (abound in) *jiva* (the living) etc. but it does not have the Motion and other entities as the whole. It only has sections of these entities with innumerable space-points as well as the Time entity. Thus in terms of formless non-living the east is of seven types.

८. [प्र.] अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपएसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपएसा वि।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा। अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे १, अहवा एगिंदियदेसाय बेइंदियस्स देसाय २, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा ३। अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स देसेय, एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो। एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो। जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा। अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियस्स

पएसा, अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियाण य पएसा। एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य अरूविअजीवा य। जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा जाव परमाणुपोग्गला ४। जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नो धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे १ धम्मत्थिकायस्स पएसा २; एवं अधम्मत्थिकायस्स वि. ३-४; एवं आगासत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पएसा ५-६; अद्धासमये ७।

८. [प्र.] भगवान्! आग्नेयी दिशा क्या जीव रूप है, जीव देश रूप है, अथवा जीव प्रदेश रूप है? इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न।

[उ.] गौतम ! वह (आग्नेयी दिशा) जीव रूप नहीं, किन्तु जीव के देश रूप है, जीव के प्रदेश रूप भी है, तथा अजीव रूप है और अजीव के प्रदेश रूप भी है।

इसमें जीव के जो देश हैं वे नियमत: एकेन्द्रिय जीवों के देश हैं, अथवा एकेन्द्रियों के बहुत देश और द्वीन्द्रिय का एक देश है १, अथवा एकेन्द्रियों के बहुत देश एवं द्वीन्द्रियों के बहुत देश हैं २, अथवा एकेन्द्रियों के बहुत देश और बहुत द्वीन्द्रियों के बहुत देश है ३, (ऐसे तीन भंग हैं, इसी प्रकार) एकेन्द्रियों के बहुत देश और एक त्रीन्द्रिय का एक देश है १, इसी प्रकार से पूर्ववत् त्रीन्द्रिय के साथ तीन भंग कहने चाहिए। इसी प्रकार यावत् अनिन्द्रिय तक के भी क्रमश: तीन-तीन भंग कहने चाहिये। इसमें जीव के जो प्रदेश हैं, वे नियम से एकेन्द्रियों के प्रदेश हैं। अथवा एकेन्द्रियों के बहुत प्रदेश द्वीन्द्रियों के बहुत प्रदेश हैं। इसी प्रकार सभी जगह प्रथम भंग को छोड़कर दो-दो भंग जानने चाहिए; यावत् अनिन्द्रिय तक इसी प्रकार जानना चाहिए।

अजीवों के दो भेद हैं। यथा—रूपी अजीव और अरूपी अजीव। जो रूपी अजीव हैं, वे चार प्रकार के हैं। यथा—(१-४) स्कन्ध से लेकर यावत् परमाणु पुद्गल तक। अरूपी अजीव सात प्रकार के हैं। यथा—(१) धर्मास्तिकाय नहीं, किन्तु धर्मास्तिकाय का देश, (२) धर्मास्तिकाय के प्रदेश, (३) अधर्मास्तिकाय नहीं, किन्तु अधर्मास्तिकाय का देश, (४) अधर्मास्तिकाय के प्रदेश, (५) आकाशास्तिकाय नहीं, किन्तु आकाशस्तिकाय का देश, (६) आकाशास्तिकाय के प्रदेश और (७) अद्धासमय (काल)। (विदिशाओं में जीव नहीं है, इसलिए सर्वत्र देश-प्रदेश विषयक भंग होते हैं।)

8. [Q.] *Bhante !* Does the Agneyi direction (southeast) appear as (abound in) *jiva* (the living), section (*desh*) of the living, space-point (*pradesh*) of the living and so on as aforesaid?

[Ans.] Gautam ! It (the southeast) does not abound in the living but in section (*desh*) of the living, space-point (*pradesh*) of the living, as well as

ajiva (the non-living), section of the non-living, or space-point of the non-living.

The sections of the living in it are, as a rule, sections of one-sensed beings. These have three alternatives – many sections of one-sensed beings and one section of two-sensed beings (1), or many sections of one-sensed beings and many sections of two-sensed beings (2), or many sections of one-sensed beings and many sections of many two-sensed beings (3). In the same way there are three aforesaid alternatives with one and three sensed beings, such as many sections of one-sensed beings and one section of three-sensed beings. In the same way three said alternatives should be taken for all combinations up to beings without sense organs. The space-points of the living in it are, as a rule, those of one-sensed beings. These have two alternatives each, leaving aside the first one – many sections of one-sensed beings and many sections of two-sensed beings (1), or many sections of one-sensed beings and many sections of many two-sensed beings (2), and so on up to beings without sense organs.

The non-living in it are of two kinds — the non-living with form and the non-living without form. The non-living with form are of four types — Aggregate (*skandh*) ... up to ... Ultimate particle of matter (*paramanu-pudgal*). The formless non-living are of seven types — Motion entity as sections and not as the whole (*Dharmastikaya-desh*), Motion entity as space-point (*Dharmastikaya-pradesh*), Rest entity as sections and not as the whole (*Adharmastikaya-desh*), Rest entity as space-point (*Adharmastikaya-pradesh*), Space entity as sections and not as the whole (*Akashastikaya-desh*), Space entity as space-point (*Akashastikaya-pradesh*), and Time entity (*Addhasamaya*). (In the intermediate directions there is absence of the living as a whole, as such there are only alternatives of sections and space-points.)

विवेचन—आग्नेयी विदिशा का स्वरूप—आग्नेयी विदिशा जीव रूप नहीं है, क्योंकि सभी विदिशाओं की चौड़ाई एक-एक प्रदेश रूप है—वे एक-प्रदेशी ही निकली है और अन्त तक एक-प्रदेशी ही रही है और उस एक प्रदेश में समग्र जीव का समावेश नहीं हो सकता, क्योंकि जीव की अवगाहना असंख्य प्रदेशात्मक है।

Elaboration—Agneyi direction (southeast)—The southeast intermediate direction does not have the living as a whole. This is because the intermediate directions are linear with a width of one space-point only. They originate from one space-point and remain so till the end. As the space occupation of a living is innumerable space-points as a rule, it cannot exist in one space-point.

९. [प्र.] जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा. ?

९. [उ.] जहा इंदा (सु. ८) तहेव निरवसेसं। नेरई जहा अग्गेयी (सु. ९)। वारुणी जहा इंदा (सु. ८)। वायव्वा जहा अग्गेयी (सु.९)। सोमा जहा इंदा। ईसाणी जहा अग्गेयी। विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इंदा। एवं तमाए वि, नवरं अरूवि छव्विहा। अद्धासमयो न भण्णइ।

९. [प्र.] भगवन् ! याम्या (दक्षिण)–दिशा क्या जीव रूप है? इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न।

[उ.] (गौतम!) ऐन्द्री दिशा के समान सभी कथन (सू. ८ में उक्त) जानना चाहिए। नैर्ऋती विदिशा का कथन आग्नेयी विदिशा के समान जानना चाहिए। वारुणी (पश्चिम)-दिशा का ऐन्द्री दिशा के समान जानना चाहिए। वायव्या विदिशा का कथन आग्नेयी के समान है। सौम्या (उत्तर)-दिशा का कथन ऐन्द्री दिशा के समान है। ऐशानी विदिशा का कथन आग्नेयी के समान है। विमला (ऊर्ध्व)-दिशा में जीवों का कथन आग्नेयी के समान है तथा अजीवों का कथन ऐन्द्री दिशा के समान है। इसी प्रकार तमा (अधो-दिशा) का कथन भी जानना चाहिए। विशेष इतना ही है कि तमा-दिशा में अरूपी-अजीवों के ६ भेद हैं, क्योंकि वहाँ (गतिमान सूर्य का प्रकाश न होने से) अद्धा-समय नहीं है। अत: अद्धा-समय का कथन नहीं किया गया है।

9. [Q.] *Bhante !* Does the *Yamya* direction (south) appear as (abound in) *jiva* (the living) etc. ? (as earlier question)

[Ans.] *Gautam !* The answer is exactly same as that about east direction (Aphorism-7). That about *Nairiti* (southwest) is same as that about southeast (Aphorism-8). That about the West is same as the East (Aphorism-7). That about *Vayavyaa* (northwest) is same as southeast (Aphorism-8). That about the North is same as east. That about *Aishaani* (northeast) is same as southeast. In case of Zenith the answer about the living follows the pattern of southeast and that about the non-living follows the pattern of the East. The same is true for Nadir, the only difference being that in case of Nadir the number of formless non-living is only 6. This is because there is absence of time (in absence of the moving sun).

शरीर के भेद-प्रभेद तथा सम्बन्धित कथन **TYPES AND SUB-TYPES OF BODY**

१०. [प्र.] कइ णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता?

[उ.] गोयमा ! पंच सरीरा, पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव कम्मए।

१०. [प्र.] भगवान् ! शरीर कितने प्रकार के कहे गए हैं?

[उ.] गौतम ! शरीर पाँच प्रकार के कहे गए हैं। यथा—औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण शरीर।

10. [Q.] *Bhante !* How many are said to be the types of body ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be five types of body—*Audarik* (gross physical body), *Vaikriya* (transmutable body), *Aharak* (telemigratory body), *Taijas* (fiery body), and *Karman* (*karmic* body) *Sharira*.

११. [प्र.] ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते?

[उ.] एवं ओगाहणसंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव 'अप्पाबहुगं' ति।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ दसमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥१०-१॥

११. [प्र.] भगवन् ! औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा गया है?

[उ.] (गौतम!) यहाँ प्रज्ञापनासूत्र के (२१वें) अवगाहन-संस्थान-पद में वर्णित समस्त वर्णन यावत् अल्प-बहुत्व तक कहना चाहिए।

हे भगवन ! यह इसी प्रकार है! हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ दशम शतक : प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

11. [Q.] *Bhante !* How many are said to be the types of *Audarik sharira* (gross physical body)?

[Ans.] (Gautam !) Here repeat complete description up to less or more, given in the *Avagahana Samsthan pad* (chapter 21st Space-occupation and Structure) of *Prajanapana Sutra*.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE FIRST LESSON OF THE TENTH CHAPTER •

बीओ उद्देसओ : संवुडअणगारे
द्वितीय उद्देशक : संवृत अनगार
DVITIYA UDDESHAK (SECOND LESSON) : SAMVRIT ANAGARA (THE RESTRAINED ASCETIC)

संवृत अनगार को लगने वाली क्रिया ACTIVITIES PERFORMED BY RESTRAINED ASCETIC

१. रायगिहे जाव एवं वयासी।

१. राजगृह में (भगवान महावीर से) यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा—

1. In the city of Rajagriha... and so on up to... Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir as follows—

२. [प्र.] संवुडस्स णं भंते! अणगारस्स वीयी पंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं आलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ?

[उ.] गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयी पंथे ठिच्चा जाव तस्स णं नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ।

२. [प्र.] भगवन्! वीचिपथ (कषाय भाव अथवा कषायोदय) में स्थित होकर सामने के रूपों को देखते हुए, पीछे रहे हुए रूपों को देखते हुए, पार्श्ववर्ती (दोनों ओर के) रूपों को देखते हुए, ऊपर के (ऊर्ध्व स्थित) रूपों का अवलोकन करते हुए एवं नीचे के (अध: स्थित) रूपों का निरीक्षण करते हुए संवृत अनगार को क्या ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है अथवा साम्परायिकी क्रिया लगती है?

[उ.] गौतम! वीचिपथ (कषाय भाव) में स्थित होकर सामने के रूपों को देखते हुए यावत् नीचे के रूपों को देखते हुए संवृत अनगार को ऐर्यापथिकी क्रिया नहीं लगती, किन्तु साम्परायिकी क्रिया लगती है।

2. [Q.] *Bhante !* While observing forms in front, those on the back, those on flanks (both), those above and those below, is a Samvrit *Anagaar* (an ascetic who has blocked the inflow of *karmas*) settled on the path of association (vichipath; state of fruition of passions) liable of involvement in *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) or Samparayik *kriya* (passion inspired activity) ?

[Ans.] Gautam ! While observing forms in front, ... and so on up to ... those below, a *Samvrit Anagaar* (an ascetic who has blocked the inflow of *karma*s) settled on the path of association (*vichipath*; state of fruition of passions) is not liable of involvement in *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) but liable of involvement in *Samparayik kriya* (passion inspired activity).

३. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुड० जाव संपराइया किरिया कज्जइ?

[उ.] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा० एवं जहा सत्तमसए पढमोद्देसए (स. ७ उ. १) जाव से णं उस्सुत्तमेव रियइ, से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ।

३. [प्र.] भगवन्! किस कारण से आप ऐसा कहते हैं कि वीचिपथ में स्थित.... यावत् संवृत अनगार को यावत् साम्परायिकी क्रिया लगती है, ऐर्यापथिकी क्रिया नहीं लगती?

[उ.] गौतम! जिसके क्रोध, मान, माया एवं लोभ व्युच्छिन्न हो गए हों, उसी को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है; इत्यादि (संवृत अनगार सम्बन्धी) सभी कथन सप्तम शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार, यावत्—यह संवृत अनगार सूत्र विरुद्ध (उत्सूत्र) आचरण करता है; यहाँ तक जानना चाहिए। इसी कारण से हे गौतम! ऐसा कहा गया है कि यावत् साम्परायिकी क्रिया लगती है।

3. [Q.] *Bhante !* Why do you say that an ascetic settled on the path of association ... and so on up to... is not liable of involvement in *Iryapathiki kriya* but liable of involvement in *Samparayik kriya* ?

[Ans.] Gautam ! (In this regard) refer to the statement (about restrained ascetic) in the first lesson of the seventh chapter beginning—Only that soul whose anger, conceit, deceit and greed are devoid of the state of fruition or have been destroyed (*vyuchchhinn*) is liable of involvement in *Iryapathiki kriya* ... and so on up to... acts contrary to *Sutra* (*Agam*). Gautam ! That is why it is said ... and so on up to... he is liable of involvement in *Samparayik*i *kriya*.

४-१. [प्र.] संवुडस्स णं भंते! अणगारस्स अवीयी पंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्स णं भंते! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ०? पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! संवुड० जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ।

४-१. [प्र.] भगवन्! अवीचिपथ (अकषाय भाव) में स्थित संवृत अनगार को सामने के रूपों को निहारते हुए यावत् नीचे के रूपों का अवलोकन करते हुए क्या ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, अथवा साम्परायिकी क्रिया लगती है? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! अकषाय भाव में स्थित संवृत्त अनगार को उपर्युक्त रूपों का अवलोकन करते हुए ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, (किन्तु) साम्परायिकी क्रिया नहीं लगती है।

4-1. [Q.] *Bhante !* While observing forms in front, those on the back, those on flanks (both), those above and those below, is a *Samvrit Anagaar* (an ascetic who has blocked the inflow of *karmas*) settled on the path of non-association (*avichipath*; state of non-fruition of passions) liable of involvement in *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) or *Samparayik kriya* (passion inspired activity) ?

[Ans.] Gautam ! While observing forms in front,... and so on up to ... those below, a *Samvrit Anagaar* (an ascetic who has blocked the inflow of *karmas*) settled on the path of non-association is liable of involvement in *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) but not liable of involvement in *Samparayik kriya* (passion inspired activity).

४-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ?

[उ.] जहा सत्तमेसए पढमोद्देसए, जाव से णं अहासुत्तमेव रीयइ से तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ।

४-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं?

[उ.] गौतम! सप्तम शतक के प्रथम उद्देशक में वर्णित (जिसके क्रोध, मान, माया और लोभ व्युच्छिन्न हो गए हों)—ऐसा जो संवृत अनगार यावत् सूत्रानुसार आचरण करता है; (उसको ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, साम्परायिकी क्रिया नहीं लगती।) इसी कारण मैं ऐसा कहता हूँ, यावत् साम्परायिक क्रिया नहीं लगती।

4-2. [Q.] *Bhante !* Why do you say so ?

[Ans.] Gautam ! (In this regard) refer to the statement (about restrained ascetic) in the first lesson of the seventh chapter (7/1/16) beginning—Only that soul whose anger, conceit, deceit and greed are devoid of the state of fruition or have been destroyed (*vyuchchhinn*) is liable of involvement in A*Iryapathiki kriya*... and so on up to... acts contrary to *Sutra* (*Agam*). Gautam ! That is why it is said... and so on up to... he is not liable of involvement in *Samparayiki kriya*.

योनियों के भेद-प्रकार एवं स्वरूप **DESCRIPTION AND TYPES OF GENUS**

५. [प्र.] कइविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सीया, उसिणा, सीओसिणा; एवं जोणीपयं निरवसेसं भाणियव्वं।

५. [प्र.] भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही गई है?

[उ.] गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही गई है। वह इस प्रकार है—शीत, उष्ण, शीतोष्ण। यहाँ (प्रज्ञापना सूत्र का नौवाँ) 'योनि पद' सम्पूर्ण कहना चाहिए।

5. [Q.] *Bhante !* How many types of *yoni* (genus or place of birth) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be three types of *yoni* (genus or place of birth)—cold, warm and cold-warm. Here quote the complete ninth chapter, *Yoni Pad*, of *Prajnapana Sutra*.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र में योनि तीन प्रकार की बताई गई है—शीत-स्पर्श के परिणाम वाली शीत योनि, उष्ण-स्पर्श के परिणाम वाली उष्ण योनि और उभय-स्पर्श के परिणाम वाली शीतोष्ण योनि कहलाती है। प्रज्ञापना सूत्र के योनि पद के अनुसार नारकी जीवों की शीत और उष्ण दो प्रकार की योनियाँ हैं, देवों और गर्भज जीवों की शीतोष्ण योनियाँ हैं। तेजस्काय की उष्ण योनि होती है तथा शेष जीवों के तीनों प्रकार की योनियाँ होती हैं। योनि सम्बधी विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना सूत्र से जाना चाहिए। (वृ., पत्र-496)

Elaboration—This aphorism states three kinds of genus (*yoni*) — cold genus having cold conditions, warm genus having warm conditions and cold-hot genus having both cold and hot conditions. According to the *Yoni Pad* chapter of *Prajnapana Sutra* infernal beings have two kinds of genus, cold as well as hot. Divine and placental beings have only one kind of genus, cold-hot. Fire-bodied beings also have only one kind of genus, hot. All the remaining classes of living beings have all the three kinds of genuses. Refer to *Prajanapana Sutra* for detailed information about genuses (*Vritti*, leaf 496)

वेदना : प्रकार एवं स्वरूप **DESCRIPTION AND TYPES OF SUFFERANCE**

६-१. [प्र.] कइविहा णं भंते! वेयणा पण्णत्ता?

[उ.] गोयमा! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा। एवं वेयणापयं भाणियव्वं जाव—

६-२. [प्र.] नेरइया णं भंते! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति, सुहं वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति?

[उ.] गोयमा! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति।

६-१. [प्र.] भगवन् ! वेदना कितने प्रकार की कही गई है?

[उ.] गौतम! वेदना तीन प्रकार की कही गई है। यथा–शीत, उष्ण और शीतोष्ण। यहाँ प्रज्ञापना सूत्र का सम्पूर्ण पैंतीसवाँ वेदना पद कहना चाहिए; यावत्

६-२. [प्र.] 'भगवन्!' क्या नैरयिक जीव दुःख रूप वेदना वेदते हैं, या सुख रूप वेदना वेदते हैं, अथवा अदुःख-असुख रूप वेदना वेदते हैं?

[उ.] हे गौतम! नैरयिक जीव दुःख रूप वेदना भी वेदते हैं, सुख रूप वेदना भी वेदते हैं और अदुःख-असुख रूप वेदना भी वेदते हैं।

6-1. [Q.] *Bhante!* How many types of *Vedana* (sufferance) are said to be there?

[Ans.] Gautam! There are said to be three types of *Vedana* (sufferance)—cold, hot and cold-hot. Here quote the complete thirty-fifth chapter, *Vedana Pad,* of *Prajnapana Sutra.*

6-2. [Q.] *Bhante !* Do infernal beings experience sufferance in the form of sorrow, or in the form of pleasure, or in the form of absence of sorrow or pleasure ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings experience sufferance in the form of sorrow, and in the form of pleasure, as well as in the form of absence of sorrow or pleasure.

विवेचन–वेदना का स्वरूप–प्रस्तुत सूत्र में वेदना के तीन प्रकार बताए हैं–१. शीत-वेदना, २. उष्ण-वेदना और ३. शीतोष्ण-वेदना। नरक में शीत और उष्ण दोनों प्रकार की वेदना पाई जाती है। शेष असुरकुमारादि से वैमानिक तक २३ दण्डकों में तीनों प्रकार की वेदना पाई जाती हैं। दूसरे प्रकार से वेदना ४ प्रकार की है–द्रव्यतः, क्षेत्रतः, कालतः और भावतः। पुद्गल द्रव्यों के सम्बन्ध से जो वेदना होती है वह द्रव्य-वेदना, नरकादि क्षेत्र से सम्बन्धित वेदना क्षेत्र-वेदना, पंचमारक एवं षष्ठारक सम्बन्धी वेदना काल-वेदना, शोक-क्रोधादि सम्बन्धजनित वेदना भाव-वेदना है। समस्त संसारी जीवों के ये चारों प्रकार की वेदनाएँ होती हैं। वेदना के विविध भेदों व प्रभेदों को उक्त प्रज्ञापना सूत्र से जान लेना चाहिए।

Elaboration—This aphorism states three kinds of *Vedana* (sufferance)—(1) cold sufferance, (2) hot sufferance and (3) cold-hot sufferance. In hell two kinds of sufferance, both hot and cold is experienced. In all the remaining 23 places of suffering (*dandak*) including divine realms from Asur-kumars to Vaimanik all three kinds of sufferance is experienced. In another context sufferance is of four kinds—substance (*dravya*) related, area (*kshetra*) related, time (*kaal*) related and feeling (*bhaava*) related. The sufferance caused by

association with material things is called substance related sufferance, that caused by presence in areas like hell is called area related sufferance, that related to periods of time including the fifth and sixth epochs (*aarak*s) is called time related sufferance, and that caused by feelings, like grief and anger, is called feeling related sufferance. All worldly beings experience all these four kinds of sufferance. In order to know about various types and sub-types of sufferance the aforesaid chapter of *Prajnapana Sutra* should be studied.

मासिक भिक्षुप्रतिमा की आराधना OBSERVING MONTH-LONG BHIKSHUPRATIMA

७. मासियं णं भंते ! भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्टे काए चियत्ते देहे, एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा जहा दसाहिं जाव आराहिया भवइ।

७. मासिक भिक्षु-प्रतिमा जिस अनगार ने अंगीकार की है तथा जिसने शरीर (के ममत्व) का त्याग कर दिया है और (शरीर-संस्कार आदि के रूप में) काया का सदा के लिए व्युत्सर्ग कर दिया है, इत्यादि दशाश्रुतस्कन्ध में बताए अनुसार मासिक भिक्षु-प्रतिमा सम्बन्धी समग्र वर्णन (बारहवीं भिक्षु-प्रतिमा तक) करना चाहिए, यावत् (तभी) आराधित होती है, यहाँ तक कहना चाहिए।

7. The ascetic who has accepted the vow of month-long *Bhikshupratima* (rigorous periodic austerities prescribed for ascetics) and who has renounced (the fondness for) his body and dissociated from (all care for) his body... etc. up to... is only then successfully concluded. All this description about month-long *Bhikshupratima* (up to the twelfth special austerity) should be said (quoted) here.

विवेचन—भिक्षु-प्रतिमा का स्वरूप—साधु की एक प्रकार की प्रतिज्ञा (अभिग्रह) विशेष को भिक्षु-प्रतिमा कहते हैं। यह बारह प्रकार की है। पहली से लेकर सातवीं प्रतिमा तक क्रमशः एक मास से लेकर सात मास की हैं। आठवीं, नौवीं और दसवीं प्रतिमा प्रत्येक सात-अहोरात्र की होती हैं। ग्यारहवीं प्रतिमा एक अहोरात्र की और बारहवीं भिक्षु-प्रतिमा केवल एक रात्रि की होती है। इसका विस्तृत वर्णन दशाश्रुतस्कन्ध की सातवीं दशा में है। भिक्षु स्नानादि शरीर संस्कार के त्याग के रूप में काया का व्युत्सर्ग कर देता है तथा शरीर के प्रति ममत्व का त्याग कर देता है, उस स्थिति में जो कोई परिषह या देवकृत, मनुष्यकृत या तिर्यञ्चकृत उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, उन्हें सम्यक् प्रकार से सहता है तो उसकी भिक्षु-प्रतिमा आराधित होती है।

Elaboration—Bhikshupratima—A special vow or resolve of an ascetic to observe special rigorous austerities is called *Bhikshupratima*.

These are twelve in number. The first seven of these have gradual increase of duration starting from one month for the first and going up to seven months for the seventh. Each of the eighth, ninth and tenth is for duration of 7 days and nights. The eleventh is for one day and one night and the twelfth just for one night. Detailed description of this is given in the seventh chapter of *Dashashrutskandh*. The practicing ascetic dissociates completely from his body by renouncing all fondness and care for his body including bathing. His austerity is successfully concluded only when he calmly endures all afflictions caused by divine beings, human beings and animals during his practice.

अकृत्यसेवी भिक्षु WRONGDOER ASCETIC

८. भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयाऽपडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा।

८. कोई भिक्षु किसी अकृत्य (पाप) का सेवन करके, यदि उस अकृत्य-स्थान की आलोचना तथा प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर (मर) जाता है तो उसके आराधना नहीं होती। यदि वह भिक्षु उस सेवित अकृत्य-स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण करके काल करता है, तो उसके आराधना होती है।

8. If an ascetic indulges in forbidden activity (sin) and dies without performing the formal censure (*aalochana*) and critical review (*pratikraman*) for the same, he fails to accomplish his spiritual endeavour (*aaradhana*). However, if he dies after performing the formal censure (*aalochana*) and critical review (*pratikraman*) for the same, he accomplishes his spiritual endeavour (*aaradhana*).

९. [१] भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता, तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि णं अहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि जाव पडिक्कमिस्सामि, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंते जाव नत्थि तस्स आराहणा।

[२] से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा।

९. [१] कदाचित् किसी भिक्षु ने किसी अकृत्य-स्थान का सेवन कर लिया हो, किन्तु बाद में उसके मन में ऐसा विचार उत्पन्न हो कि मैं अपने अन्तिम समय में इस अकृत्य-स्थान की आलोचना करूँगा यावत् तप-रूप प्रायश्चित स्वीकार करूँगा; परन्तु वह उस अकृत्य-स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाए, तो उसके आराधना नहीं होती।

[२] यदि वह आलोचना और प्रतिक्रमण करके काल करे, तो उसके आराधना होती है।

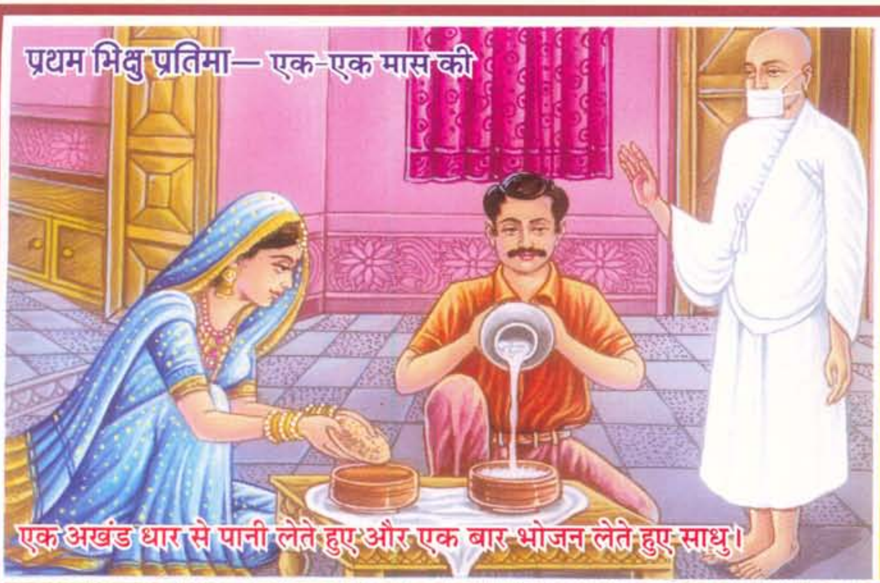

पानी आदि बोहराते समय जब तक धार खंडित न हो, तब तक उसे एक दत्ती कहते हैं। इसी तरह एक बार में जो भी आहार दे दिया जाए, उसे भी एक दत्ती कहते हैं।

भिक्षु प्रतिमा दो से सात तक— एक-एक मास की

2. दो दत्ति आहार-पानी
2. Food and water of two dutti.
3. तीन दत्ति आहार-पानी
3. Food and water of three dutti.
4. चार दत्ति आहार-पानी
4. Food and water of four dutti.
5. पाँच दत्ति आहार-पानी
5. Food and water of five dutti.
6. छह दत्ति आहार-पानी
6. Food and water of six dutti.
7. सात दत्ति आहार-पानी
7. Food and water of seven dutti.

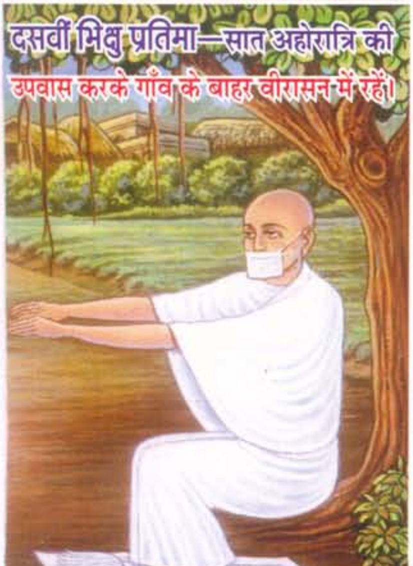

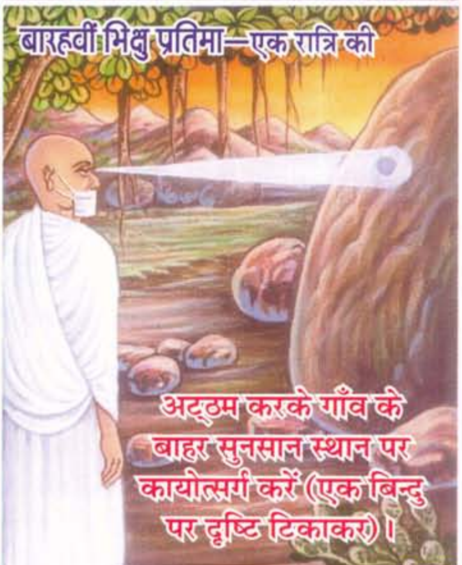

चित्र-परिचय 2

भिक्षु प्रतिमा

Illustration No. 2

जैन परिभाषा में **प्रतिमा** एक प्रकार का व्रत या अभिग्रह है जिसमें आत्मा की शुद्धि के लिए धर्म क्रियाओं का विशेष रूप से अनुष्ठान किया जाता है। जब साधु आत्म साधना और कर्म-निर्जरा के लिए एक विशेष प्रकार की प्रतिज्ञा करता है तो उसे '**भिक्षु प्रतिमा**' कहते हैं। दशाश्रुत स्कन्ध में इनका रूप बारह प्रकार का बताया गया है।

प्रथम प्रतिमा—यह प्रतिमा एक मास की कही गई है। प्रतिमाधारी साधु प्रतिदिन केवल एक अखण्ड धार से पानी ग्रहण करता है और एक ही बार अन्न ग्रहण करता है।

दूसरी से सातवीं प्रतिमा—दूसरी से सातवीं प्रतिमा भी एक-एक मास की होती है। अन्तर सिर्फ इतना है कि दूसरी प्रतिमा में साधु दो दत्ति (दो बार) अन्न-पानी ग्रहण कर सकता है और बढ़ते क्रम में सातवीं प्रतिमा में 7 बार अन्न-पानी प्रतिदिन ग्रहण करता है।

आठवीं प्रतिमा—यह प्रतिमा सात दिन और सात रात की मानी गई है। इसमें सात दिन तक उपवास पूर्वक नगर के बाहर एकान्त स्थान में उत्तनासन में कायोत्सर्ग किया जाता है।

नवीं-दसवीं प्रतिमा—यह प्रतिमा भी सात दिन-रात (सात अहोरात्र) की है। आठवीं और नवीं प्रतिमा में केवल इतना ही फर्क है कि यह दण्डासन या लगुडासन में की जाती है तथा दसवीं प्रतिमा का पालन वीरासन या गोदुहासन लगाकर किया जाता है। शेष सब आठवीं प्रतिमा के समान ही है।

ग्यारहवीं प्रतिमा—यह प्रतिमा एक दिन-रात्रि (आठ प्रहर) की होती है। इसमें दो उपवासों के साथ नगर के बाहर जाकर जिन-मुद्रा में कायोत्सर्ग किया जाता है। यह हठयोग की साधना विशेष है।

बारहवीं प्रतिमा—बिना पानी के अष्टम भक्त का पालन करते हुए नगर के बाहर एकान्त स्थान पर अनिमेष नेत्रों से एक बिन्दु पर दृष्टि टिकाकर कायोत्सर्ग किया जाता है। यह प्रतिमा केवल एक रात्रि की ही होती है।

—शतक 10, उ. 2

BHIKSHU*PRATIMA*

The Jain definition of the term *pratima* in this context is a special vow or resolve of an ascetic to observe special rigorous austerities aimed at purification of soul. When an ascetic takes some special prescribed resolve for spiritual uplift and shedding of *karma*s it is called *Bhikshupratima*. According to *Dashashrutskandh* these are twelve in number.

First *Pratima*—This is a one month long practice. The ascetic observing this *pratima* eats only once a day and drinks water from one unbroken pouring only once a day.

Second to seventh *Pratima*s—These six *pratima*s start with two offerings (*datti*) of food and water per day during the second *pratima* with a gradual increase of one offering per month ending in 7 offerings per day in the seventh *pratima*.

Eighth *Pratima*—This is for duration of 7 days and 7 nights. It is performed with fasting and practicing dissociation from body (*kaayotsarg*) in Uttaanaasan posture for seven days at an isolated spot.

Ninth and tenth *Pratima*—These are also performed exactly like the eighth *pratima* with a change in posture. Posture for ninth is Dandaasan or Lagudaasan and that for tenth is Viraasan or Goduhaasan.

Eleventh *Pratima*—This is for one day and one night only. It is performed after a two day fast by doing *kayotsarg* at an isolated spot in Jinamudra posture. This is a special practice of Hathayoga.

Twelfth *Pratima*—This is just for one night. It is performed after a two day fast by doing *kayotsarg* at an isolated spot with an unblinking gaze focused at a point.

—Shatak 10, lesson-2

9. [1] An ascetic having indulged in some forbidden activity (sin), if gets to think that during the last moments of his life he will perform the formal censure (*aalochana*)... and so on up to... accept atonement in the form of austerities, but he dies without performing the formal censure (*aalochana*) and critical review (*pratikraman*) for the same, he fails to accomplish his spiritual endeavour (*aaradhana*).

[2] However, if he dies after performing the formal censure (*aalochana*) and critical review (*pratikraman*) for the same, he accomplishes his spiritual endeavour (*aaradhana*).

१०. [१] भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चठाणं पडिसेवित्ता, तस्सं णं एवं भवइ–'जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति किमंग पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणं पि नो लभिस्सामि?' त्ति कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा।

[२] से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥दसमे सए बीओ उद्देसओ समत्तो॥१०-२॥

१०. [१] कदाचित् किसी भिक्षु ने किसी अकृत्य-स्थान का सेवन कर लिया हो और उसके बाद उसके मन में यह विचार उत्पन्न हो कि श्रमणोपासक भी काल के अवसर पर काल करके किन्हीं देवलोकों में देव रूप में उत्पन्न हो जाते हैं, तो क्या मैं अणपन्निक देवत्व भी प्राप्त नहीं कर सकूँगा? यह सोचकर यदि वह उस अकृत्य-स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाता है, तो उसके आराधना नहीं होती।

[२] यदि वह उस अकृत्य-स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण करके काल करता है, तो उसके आराधना होती है।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥दशम शतक : द्वितीय उद्देशक समाप्त॥

10. [1] An ascetic having indulged in some forbidden activity (sin), if gets to think that when even a lay devotee (*shramanopasak or Shramanist*) gets reborn as a god in some divine realms, will he not attain a birth as *Anapannik* god? Thinking thus if he dies without performing the formal censure (*aalochana*) and critical review

(*pratikraman*) for the same, he fails to accomplish his spiritual endeavour (*aaradhana*).

[2] However, if he dies after performing the formal censure (*aalochana*) and critical review (*pratikraman*) for the same, he accomplishes his spiritual endeavour (*aaradhana*).

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र ६ से ८ का सार यही है कि चाहे साधु हो या श्रावक, जो अपने व्रतों में आये हुए दोषों का सेवन करने उसकी आलोचना-प्रतिक्रमण कर लेता है, वही आराधक होता है। आलोचना-प्रतिक्रमण नहीं करने वाला विराधक होता है।

Elaboration—The gist of aphorisms 6 to 9 is that whether the aspirant is a lay devotee or an ascetic he accomplishes his spiritual endeavour only if he performs formal censure and critical review of the faults committed in observation of vows. One who does not do that fails in his spiritual endeavour.

• END OF THE SECOND LESSON OF THE TENTH CHAPTER •

तइओ उद्देसओ : आइड्ढी
तृतीय उद्देशक : आत्म-ऋद्धि
TRITIYA UDDESHAK (THIRD LESSON) : ATMARIDDHI (INNATE POWER)

उपोद्घात INCEPTION

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—

१. राजगृह नगर में (श्री गौतम स्वामी ने भगवान् महावीर से) यावत् इस प्रकार पूछा—

1. In Rajagriha city... and so on up to... (Gautam Swami) asked (Bhagavan Mahavir)—

देवों की उल्लंघन शक्ति TRAVERSE POWER OF GODS

२ [प्र.] आइड्ढीए णं भंते ! देवे जाव चत्तारि, पंच देवावासंतराइं वीइक्कंते, तेण परं परिड्ढीए?

[उ.] हंता, गोयमा! आइड्ढीए णं०, तं चेव।

२. [प्र.] भगवन्! देव क्या आत्म-ऋद्धि (अपनी आत्म-शक्ति) द्वारा यावत् चार-पाँच देवावासान्तरों का उल्लंघन करता है और इसके पश्चात् दूसरी शक्ति द्वारा उल्लंघन करता है?

[उ.] हाँ, गौतम! देव आत्म-शक्ति से यावत् चार-पाँच देवावासान्तरों का उल्लंघन करता है और उसके उपरान्त दूसरी (अतिरिक्त वैक्रिय) शक्ति (पर-ऋद्धि) द्वारा उल्लंघन करता है।

2. [Q.] *Bhante !* Does a god traverse the intervening space between four to five divine realms with the help of his innate power and beyond that with the help of some (special power of transmutation or *Vaikriya shakti*) other (acquired) power ?

[Ans.] Yes, Gautam ! A god traverses the intervening space between four to five divine realms with the help of his innate power and beyond that with the help of some other (acquired) power.

३. एवं असुरकुमारे वि। नवरं असुरकुमारावासंतराइं, सेसं तं चेव।

३. इसी प्रकार असुरकुमारों के विषय में भी समझ लेना चाहिए। परन्तु विशेष यह है कि वे असुरकुमारों के आवासों का उल्लंघन करते हैं। शेष पूर्ववत् जानना चाहिए।

3. Know that the same holds good for Asur-kumars (a class of gods). However, the difference is that they traverse through the abodes of Asur-Kumars only. Rest is same as aforesaid.

४. एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे।

४. इसी प्रकार इसी अनुक्रम से यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिए।

4. Know that the same holds good for all classes of gods up to Stanit Kumars in their conventional order.

५. एवं वाणमंतरे, जोइसिए वेमाणिए जाव तेण परं परिड्ढीए।

५. इसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव-पर्यन्त जानना चाहिए यावत् वे आत्म-शक्ति से चार-पाँच अन्य देवावासों का उल्लंघन करते हैं; इसके उपरान्त पर-ऋद्धि (स्वाभाविक शक्ति से अतिरिक्त दूसरी वैक्रिय-शक्ति) से उल्लंघन करते हैं।

5. Know that the same also holds good up to interstitial gods (Vanavyantar dev, stellar gods (Jyotishk dev) and Celestial-vehicular gods (Vaimanik dev)... and so on up to... traverse the intervening space between four to five divine realms with the help of his innate power and beyond that with the help of some other (acquired) power.

देवों के मध्य में से होकर गमन सामर्थ्य

CAPACITY TO TRAVERSE THROUGH OTHER DIVINE REALMS

६. [प्र.] अप्पिड्ढीए णं भंते ! देवे महड्ढियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

६. [प्र] भगवन्! क्या अल्प-ऋद्धिक (अल्प-शक्ति युक्त) देव, महर्द्धिक (महा-शक्ति वाले) देव के बीच में होकर जा सकता है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ (बात) समर्थ (शक्य) नहीं है। (वह, महर्द्धिक देव के बीचोंबीच होकर नहीं जा सकता।)

6. **[Q.]** *Bhante !* Can a god with lesser power pass through a god with greater power ?

[Ans.] Gautam ! This is statement is not correct. (He cannot pass through a god with greater power.)

७-१. [प्र.] समिड्ढीए णं भंते ! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे; पमत्तं पुण वीइवएज्जा।

७-१. [प्र.] भगवन्! समर्द्धिक (समान शक्ति वाला) देव समर्द्धिक देव के बीच में से होकर जा सकता है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है; परन्तु यदि वह (दूसरा समर्द्धिक देव) प्रमत्त (असावधान) हो तो (बीचोंबीच होकर) जा सकता है।

7-1. [Q.] *Bhante !* Can a god with equal power pass through a god with same power ?

[Ans.] Gautam ! This statement is not correct. However, if the other god is in stupor (not alert) he can pass through.

७-२. [प्र.] से णं भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ?

[उ.] गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू।

७-२. [प्र.] भगवन्! क्या वह देव, उस (सामने वाले समर्द्धिक देव) को विमोहित करके जा सकता है या विमोहित किये बिना जा सकता है?

[उ.] गौतम! वह देव, सामने वाले समर्द्धिक देव को विमोहित करके जा सकता है, विमोहित किये बिना नहीं जा सकता।

7-2. [Q.] *Bhante !* Can that god pass through the other god by entrancing him or without entrancing him ?

[Ans.] Gautam ! He can pass through only by entrancing him and not without entrancing him.

७-३. [प्र.] से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा?

[उ.] गोयमा ! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

७-३. [प्र.] भगवन्! क्या वह देव, उस देव को पहले विमोहित करके बाद में जाता है, या पहले जाकर बाद में विमोहित करता है?

[उ.] गौतम! वह देव, पहले उसे विमोहित करता है और बाद में जाता है, परन्तु पहले जाकर बाद में विमोहित नहीं करता है।

7-3. [Q.] *Bhante !* Does that god first entrance the other god and then pass through or does he first pass through and then entrance ?

[Ans.] Gautam ! That god first entrances the other god and then passes through, and does not first pass through and then entrance.

८-१. [प्र.] महिड्ढीए णं भंते ! देवे अप्पड्ढियस्य देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

[उ.] हंता, वीइवएज्जा।

८-१. [प्र.] भगवन्! क्या महर्द्धिक देव, अल्प-ऋद्धिक देव के बीचोंबीच होकर जा सकता है?

[उ.] हाँ, गौतम! जा सकता है।

8-1. [Q.] *Bhante !* Can a god with greater power pass through a god with lesser power ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He can pass through.

८-२. [प्र.] से भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ?

[उ.] गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू।

८-२. [प्र.] भगवन्! वह महर्द्धिक देव, उस अल्प-ऋद्धिक देव को विमोहित करके जाता है, अथवा विमोहित किये बिना जाता है?

[उ.] गौतम! वह विमोहित करके भी जा सकता है और विमोहित किये बिना भी जा सकता है।

8-2. [Q.] *Bhante !* Can that god pass through the other god by entrancing him or without entrancing him ?

[Ans.] Gautam ! He can pass through by entrancing him as well as without entrancing him.

८-३. [प्र.] से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?

[उ.] गोयमा ! पुव्विं वा विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

८-३. [प्र.] भगवन्! वह महर्द्धिक देव, उसे पहले विमोहित करके बाद में जाता है, अथवा पहले जाकर बाद में विमोहित करता है?

[उ.] गौतम! वह महर्द्धिक देव, पहले उसे विमोहित करके बाद में भी जा सकता है और पहले जाकर बाद में भी विमोहित कर सकता है?

8-3. [Q.] *Bhante !* Does that god first entrance the other god and then pass through or does he first pass through and then entrance ?

[Ans.] Gautam ! That god can first entrance the other god and then pass through, and he can also first pass through and then entrance.

अल्पऋद्धि वाले अनेक देवों के बीच में से
महाऋद्धि वाला देव निकल जाता है।
महाऋद्धि वाला देव

महाऋद्धि वाले देवों के बीच में से
अल्पऋद्धि वाला देव नहीं निकल सकता।
अल्पऋद्धि वाला देव

दौड़ता हुआ घोड़ा खु-खु...खु.... आवाज करता है
क्योंकि उसके हृदय और यकृत के बीच में कर्कट
नामक वायु की उत्पत्ति होती है।
खु-खु...खु....
करकट वायु

चित्र-परिचय 3 | Illustration No. 3

देवों की महाऋद्धि-अल्पऋद्धि

चारों निकायों (वैमानिक, ज्योतिष्क, भवनवासी, वाणव्यन्तर) के देवों में महाऋद्धि सम्पन्न और अल्पऋद्धि सम्पन्न दो प्रकार के देव होते हैं। पीछे दिये गये चित्र में दर्शाया गया है कि जो महाऋद्धि सम्पन्न देव होते हैं वे अल्पऋद्धि सम्पन्न देवों के बीच में से होकर जा सकते हैं, जबकि अल्पऋद्धि वाले देव महाऋद्धि सम्पन्न देवों के बीच होकर नहीं जा सकते।

—शतक 10, उ. 3/6-8

अश्व की ध्वनि का भेद

दौड़ते हुए अश्व के हृदय और यकृत (लीवर) के बीच कर्कट नामक वायु उत्पन्न होती है। जब वह तीव्र गति से दौड़ता है तो उसके मुख से वह वायु निकलती है और खु...खु...खु... इस प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है।

—शतक 10, उ. 3, सूत्र 17

GREAT AND LOW POWER OF GODS

Among the divine beings of four realms (*Vaimanik, Jyotishk, Bhavan-vaasi and Vaanavyantar*) there are gods with great power and less power. The illustration shows that gods with greater power can pass through those with lesser power, whereas those with lesser power cannot pass through those with greater power.

—Shatak-10, lesson-3, Sutra-6-8

SOUND OF HORSE

When a horse gallops a specific wind called *karkat* is produced between its heart and lever. When it speeds up this wind makes it produce the guttural sound – *Khu... khu... khu....*

—Shatak-10, lesson-3, Sutra-17

९. [प्र.] **अप्पिड्ढीए णं भंते ! असुरकुमारे महड्डियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?**

[उ.] **नो इणट्ठे समट्ठे। एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिया ! एवं जाव थणियकुमारेणं। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएणं एवं चेव।**

९. [प्र.] भगवन्! अल्प-ऋद्धिक असुरकुमार देव, महर्द्धिक असुरकुमार देव के बीचोंबीच होकर जा सकता है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है। इसी प्रकार सामान्य देव के आलापकों की तरह असुरकुमार के भी तीन आलापक कहने चाहिए। इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक तीन-तीन आलापक कहने चाहिए। वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों के विषय में भी इसी प्रकार कहना चाहिए।

9. [Q.] *Bhante !* Can an Asur-kumar god with lesser power pass through an Asur-kumar god with greater power?

[Ans.] Gautam ! This is statement is not correct. And repeat the three statements like the aforesaid ones about ordinary gods. In the same way repeat the three statements for gods up to Stanit Kumar gods. Repeat the same also for Vanavyantar (interstitial), Jyotishk (stellar) and Vaimanik (celestial vehicular) gods.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्रों के मुख्यतया ४ आलापक हैं—(१) अल्प-ऋद्धिक देव महर्द्धिक देव के साथ, (२) समर्द्धिक के साथ (३) महर्द्धिक देव का अल्पर्द्धिक देव के साथ और (४) अल्पर्द्धिक चारों जाति के देवों का स्व-स्व जातीय महर्द्धिक देवों के साथ निष्कर्ष यह है कि अल्पर्द्धिक देव महर्द्धिक देव के बीचोंबीच होकर नहीं जा सकते। महर्द्धिक देव अल्पर्द्धिक देव के बीचोंबीच होकर उसे पहले या पीछे विमोहित करके या विमोहित किये बिना भी जा सकते हैं। समर्द्धिक समर्द्धिक देव के बीचोंबीच होकर पहले उसे विमोहित करके जा सकता है, बशर्ते कि जिसके बीचोंबीच होकर जाना है, वह असावधान हो।

विमोहित का यहाँ प्रसंगवश अर्थ है—विस्मित करना, अर्थात् धूंअर आदि के द्वारा अन्धकार करके मोह उत्पन्न कर देना। उस अन्धकार को देखकर सामने वाला देव विस्मय में पड़ जाता है कि यह क्या है? ठीक उसी समय उसके न देखते हुए ही बीच में से निकल जाना।

Elaboration—These aphorisms detail four alternatives about passing through—(1) gods with lesser power through those with greater power, (2) gods through those with equal power, (3) gods with greater power through those with lesser power, and (4) all four classes of gods with lesser power through those of same class but with greater power. The conclusion is that gods with lesser power cannot pass through those with

greater power; those with greater power can pass through those with lesser power by entrancing before or after the act or even without entrancing; those with equal power can pass through others only after entrancing them or when they are in stupor.

The meaning of entrancing in this context is to astonish as if by creating darkness by smoke or other means and to pass through the other god when he is taken aback by the darkness and in stupor momentarily. (*Vritti*, leaf 499)

देव-देवियों का एक-दूसरे के मध्य में से होकर गमनसामर्थ्य

MUTUAL PASSING THROUGH OF GODS AND GODDESSES

१०. [प्र.] अप्पिड्ढीए णं भंते ! देवे महड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

१०. [प्र.] भगवन्! क्या अल्प-ऋद्धिक देव, महर्द्धिक-देवी के मध्य में होकर जा सकता है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है।

10. [Q.] *Bhante !* Can a god with lesser power pass through a goddess with greater power ?

[Ans.] Gautam ! This is statement is not correct.

११. [प्र.] समिड्ढीए णं भंते ! देवे समड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं० ?

[उ.] एवं तहेव देवेण य देवीए य दंडओ भाणियव्वो, जाव वेमाणियाए।

११. [प्र.] भगवन्! क्या समर्द्धिक देव, समर्द्धिक देवी के बीचोंबीच होकर जा सकता है?

[उ.] पूर्वोक्त प्रकार से देव के साथ देवी का भी दण्डक यावत् वैमानिक-पर्यन्त कहना चाहिए।

11. [Q.] *Bhante !* Can a god with equal power pass through a goddess with same power ?

[Ans.] For this aforesaid statements should be repeated for all classes of gods with goddesses up to Vaimanik gods and goddesses.

१२-१. [प्र.] अप्पड्ढिया णं भंते ! देवी महड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं० ?

[उ.] एवं एसो वि तईओ दंडओ भाणियव्वो जाव।

१२-२. [प्र.] महड्ढिया वेमाणिणी अप्पड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

[उ.] हंता, वीइवएज्जा।

१२-१. [प्र.] भगवन्! अल्प-ऋद्धिक देवी, महर्द्धिक देव के मध्य में से होकर जा सकती है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है।

इस प्रकार यहाँ भी यह तीसरा दण्डक कहना चाहिए यावत्–

१२-२. (प्र.) भगवन्! महर्द्धिक वैमानिक देवी, अल्प-ऋद्धिक वैमानिक देव के बीच में से होकर जा सकती है?

(उ.) हाँ, गौतम! जा सकती है।

12-1. [Q.] *Bhante !* Can a goddess with lesser power pass through a god with greater power ?

[Ans.] Gautam ! This statement is not correct.

Here repeat the third statement (She cannot pass through)... and so on up to ...

12-2. [Q.] Can a Vaimanik goddess with greater power pass through a god with lesser power ?

[Ans.] Yes, Gautam ! She can.

१३. [प्र.] अप्पड्ढिया णं भंते ! देवी महड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे। एवं समड्ढिया देवी समड्ढियाए देवीए तहेव। महड्ढिया देवी अप्पड्ढियाए देवीए तहेव।

१३. [प्र.] भगवन्! अल्प-ऋद्धिक देवी, महर्द्धिक देवी के मध्य में से होकर जा सकती है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है। इसी प्रकार सम-ऋद्धिक देवी का, सम-ऋद्धिक देवी के साथ, महर्द्धिक देवी का, अल्प-ऋद्धिक देवी के साथ पूर्ववत् आलापक कहना चाहिए।

13. [Q.] *Bhante !* Can a goddess with lesser power pass through a goddess with greater power ?

[Ans.] Gautam ! This statement is not correct. In the same way repeat the statements with regard to passing through of goddess with same power with that of same power and goddess with greater power with that of lesser power, as aforesaid.

१४. एवं एक्केक्के तिण्णि तिण्णि अलावगा भाणियव्वा, जाव–

१. [प्र.] महड्ढिया णं भंते! वेमाणिणी अप्पड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

[उ.] हंता, वीइवएज्जा।

२. [प्र.] सा भंते! किं विमोहित्ता पभू?

[उ.] तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा।

१४. इसी प्रकार एक-एक के तीन-तीन आलापक कहने चाहिए; यावत्–

१. [प्र.] भगवन्! वैमानिक महर्द्धिक देवी, अल्प-ऋद्धिक वैमानिक देवी के मध्य में होकर जा सकती है?

[उ.] हाँ गौतम! जा सकती है। यावत्–

२. [प्र.] क्या वह महर्द्धिक देवी, उसे विमोहित करके जा सकती है या विमोहित किए बिना भी जा सकती है? तथा पहले विमोहित करके बाद में जाती है, अथवा पहले जाकर बाद में विमोहित करती है?

[उ.] हे गौतम! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिए, यावत्–पहले जाती है और पीछे भी विमोहित करती है; तक कहना चाहिए। इस प्रकार के चार दण्डक कहने चाहिए।

14. In the same way repeat three statements for each condition. ... and so on up to...

1. [Q.] Can a Vaimanik goddess with greater power pass through a god with lesser power ?

[Ans.] Yes, Gautam ! She can. ... and so on up to...

2. [Q.] Can that goddess pass through the other goddess by entrancing her or without entrancing her ? And does she first entrance and then pass through or does she first pass through and then entrance?

[Ans.] Gautam ! Know as aforesaid... and so on up to... she first pass through and then entrances. Thus repeat four related statements.

विवेचन—उक्त कथन का निष्कर्ष यह है कि जैसे पहले अल्प-ऋद्धिक, महर्द्धिक, और समर्द्धिक देवों के विषय में कहा है, वैसे ही देव-देवियों के तथा देवियों-देवियों के विषय में भी समझना चाहिए।

Elaboration—The intent of this aphorism is to convey that what has been stated with regard to gods with lesser, greater and same power should also be repeated for passing through between gods and goddesses as well as goddesses and goddesses.

दौड़ते हुए अश्व के 'खु-खु' शब्द का भेद

GUTTURAL SOUND OF A RUNNING HORSE

१५. [प्र.] आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु खु' त्ति करेइ?

[उ.] गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स य अंतरा एत्थ णं कक्कडए नामं वाए संमुच्छइ, जे णं आसस्स धावमाणस्स 'खु खु' त्ति करेइ।

१५. [प्र.] भगवन्! दौड़ता हुआ घोड़ा 'खु-खु' शब्द क्यों करता है?

[उ.] गौतम! जब घोड़ा दौड़ता है तो उसके हृदय और यकृत (लीवर) के बीच में कर्कट नामक वायु उत्पन्न होती है, इससे दौड़ता हुआ घोड़ा 'खु-खु' शब्द करता है।

15. [Q.] *Bhante !* Why does a galloping horse produce the guttural sound–'*Khu khu*' ?

[Ans.] Gautam ! When a horse gallops a specific wind called *karkat* is produced between its heart and lever; this wind makes it produce the guttural sound–'*Khu khu*'.

प्रज्ञापनी भाषा : मृषा नहीं FACTUAL FORM OF LANGUAGE IS NOT CALLED FALSE

१६. [प्र.] अह भंते! आसइस्सामो, सइस्समो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो—

आमंतणी १ आणवणी २ जायणि ३ तह पुच्छणी ४ य पण्णवणी ५।
पच्चक्खाणी भासा ६ भासा इच्छाणुलोमा य ७॥

अणभिग्गहिया भासा ८ भासा य अभिग्गहम्मि बोधव्वा ९।
संसयकरणी भासा १० वोयड ११ मव्वोयडा १२ चेव॥

पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा?

[उ.] हंता, गोयमा ! आसइस्सामो०, तं चेव जाव न एसा भासा मोसा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ दसमे सए तइओ उद्देसो समत्तो॥१०.३॥

१६. [प्र.] भगवन्! १. आमंत्रणी, २ आज्ञापनी, ३. याचनी, ४. पृच्छनी, ५. प्रज्ञापनी, ६. प्रत्याख्यानी, ७. इच्छानुलोमा, ८. अनभिगृहीता, ९. अभिगृहीता, १०. संशयकरणी, ११. व्याकृता और १२. अव्याकृता, इन बारह प्रकार की भाषाओं में 'हम आश्रय करेंगे, शयन करेंगे, खड़े रहेंगे, बैठेंगे, और लेटेंगे' इत्यादि भाषण करना क्या प्रज्ञापनी भाषा कहलाती है और ऐसी भाषा मृषा (असत्य) नहीं कहलाती है?

[उ.] हाँ, गौतम्! यह (पूर्वोक्त) आश्रय करेंगे, इत्यादि भाषा प्रज्ञापनी भाषा है, यह भाषा मृषा (असत्य) नहीं है।

'हे, भगवन्! यह इसी प्रकार है, यह इसी प्रकार है!' ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥दशम शतक : तृतीय उद्देशक समाप्त॥

16. [Q.] *Bhante !* Out of the following twelve forms of language—(1) *Aamantrini* (address), (2) *Aajnapani* (command), (3) *Yaachani* (request), (4) *Prichchhani* (question), (5) *Prajnapani* (factual), (6) *Pratyaakhyaani* (denial), (7) *Ichchhaanuloma* (consent), (8) *Anabhigrihita* (inquiry), (9) *Abhigrihita* (conviction), (10) *Samshayakarani* (doubt), (11) *Vyakrita* (distinct) and (12) *Avyakrita* (indistinct)—is it called the *Prajnapani* (factual) form when we utter–'I will take lodge, I will lie down, I will stand, I will sit, and I will stretch.'? And is it not that such form of language is not called false?

[Ans.] Yes, Gautam ! 'I will take lodge, and so on' is, indeed, *Prajnapani* (factual) form of language and it is not called false.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—उपरोक्त सूत्र में लौकिक व्यवहार की प्रवृत्ति का कारण होने से आमंत्रणी आदि १२ प्रकार की असत्यामृषा (व्यवहार) भाषाओं में से 'आश्रय करेंगे' इत्यादि भाषा प्रज्ञापनी (वस्तु स्थिति बताने वाली) होने से मृषा नहीं है। प्रज्ञापना, ग्यारहवें भाषा पद में इसका विस्तार के साथ वर्णन है।

Elaboration—Here the statements like 'I will take lodge' convey the actual intent of the person. Thus they fall under the factual form of language among the 12 social (true-cum-false) forms of language. This subject has been discussed in detail in the 11th chapter of *Prajnapana Sutra*, titled *Bhasha Paad.*

• END OF THE THIRD LESSON OF THE TENTH CHAPTER •

चउत्थो उद्देसओ : सामहत्थी
चतुर्थ उद्देशक : श्यामहस्ती
CHATURTH UDDESHAK (FOURTH LESSON) : CURIOSITY OF SHYAMAHASTI

उपोद्घात INCEPTION

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था, वण्णओ। दूइपलासए चेइए। सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया।

१. उस काल और उस समय में वाणिज्यग्राम नामक नगर था। वहाँ द्युतिपलाश नामक उद्यान था। (एक बार) वहाँ श्रमण भगवान् महावीर का समवसरण हुआ यावत् परिषद आई और (दर्शन-प्रवचन श्रवण कर) वापस लौट गई।

1. During that period of time there was a city named Vanijyagram (description). There was a garden called Dyutipalash. Once Bhagavan Mahavir had his Divine Assembly (*Samavasaran*) there. People assembled there and returned (after the discourse).

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे, जाव-उड्ढंजाणू जाव विहरइ।

२. उस काल और उस समय में, श्रमण भगवान महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति गौतम नामक अनगार थे। वे ऊर्ध्वजानु (ध्यान की विशेष मुद्रा) में स्थित होकर विचरण करते थे।

2. During that period of time the senior in-house disciple (*antevasi*) of Shraman Bhagavan Mahavir was an ascetic named Indrabhuti Gautam... and so on up to... he used to sit in the *Urdhvajanu* posture (with knees erect)... and so on up to... performed his duties.

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे पगइभद्दए, जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ।

३. उस काल और उस समय में श्रमण भगवान् महावीर के एक अन्तेवासी (शिष्य) श्यामहस्ती नामक अनगार थे। वे प्रकृतिभद्र (प्रकृतिविनीत) यावत् रोह अनगार के समान उर्ध्वजानु, यावत् विचरण करते थे।

3. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir had an in-house disciple named ascetic Shyamahasti. He was gentle by nature like ascetic Roha and so on up to... he used to sit in the *Urdhvajanu* posture (with knees erect)... and so on up to... performed his duties.

४. तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी।

४. एक दिन उन श्यामहस्ती नामक अनगार को श्रद्धा, संशय (जिज्ञासा) सन्देह, विस्मय (कुतूहल) आदि उत्पन्न हुए। यावत् वे अपने स्थान से उठे और उठकर जहाँ भगवान गौतम स्वामी विराजमान थे, वहाँ आए। भगवान गौतम स्वामी के पास आकर वन्दन-नमस्कार कर यावत् पर्युपासना करते हुए इस प्रकार पूछने लगे—

4. One day that ascetic Shyamahasti was filled with reverence as well as doubt, curiosity and quandary... and so on up to... he got up and came where Bhagavan Gautam was seated. He formally saluted... and so on up to... paid homage and submitted as follows—

चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव : सम्बन्धी प्रश्न

QUESTION ABOUT TRAYASTRIMSHAK GODS OF CHAMARENDRA

५-१. [प्र.] अत्थि णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा?

[उ.] हंता, अत्थि।

५-१. [प्र.] भगवन्! क्या असुरकुमारों के राजा, असुरकुमारों के इन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] हाँ, हैं। (ये देव मंत्री और पुरोहित का कार्य करते हैं।)

5-1. [Q.] *Bhante !* Does Chamar, the king of gods of Asur-kumar gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] Yes, he has.

५-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा'?

[उ.] एवं खलु सामहत्थी। तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं कायंदीए नयरीए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाऽजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, वण्णओ जाव विहरंति। तएणं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई

समणोवासया पुव्विं उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा, संविग्गविहारी भवित्ता, तओ पच्छा पासत्था, पासत्थविहारी, ओसण्णा, ओसण्णविहारी, कुसीला, कुसीलविहारी, अहाच्छंदा, अहाछंदविहारी, बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, अत्ताणं झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना।

५-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहते हैं कि असुरकुमारों के राजा असुरेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] हे श्यामहस्ती! (असुरेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देव होने का) कारण इस प्रकार है—उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारतवर्ष में काकन्दी नाम की नगरी थी (वर्णन)। उस काकन्दी नगरी में (एक दूसरे की परस्पर) सहायता करने वाले तैंतीस गृहपति श्रमणोपासक (श्रावक) रहते थे। वे धनाढ्य यावत् अपरिभूत थे। वे जीव-अजीव के ज्ञाता एवं पुण्य-पाप को हृदयंगम किये हुए विचरण (जीवन-यापन) करते थे। एक समय था, जब वे परस्पर सहायक तैंतीस गृहपति श्रमणोपासक पहले उग्र (उत्कृष्ट-आचारी), उग्र-विहारी, संविग्न (संसार से भयभीत), संविग्नविहारी थे, परन्तु तत्पश्चात् वे पार्श्वस्थ (धर्म से दूर मोहग्रस्त) पार्श्वस्थविहारी, अवसन्न (धर्माचरण में प्रमादी) अवसन्नविहारी, कुशील (ज्ञानादि के विराधक) कुशीलविहारी, यथाच्छन्द (सूत्र विरुद्ध इच्छानुसार चलने वाले) और यथाच्छन्दविहारी हो गए। बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक-पर्याय का पालन कर, अर्धमासिक, संलेखना द्वारा शरीर को कृश करके तथा तीस भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके, उस (प्रमाद) स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल के अवसर पर काल कर वे असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देव के रूप में उत्पन्न हुए हैं।

5-2. **[Q.]** *Bhante !* Why is it said that Chamar, the king of gods of Asur-kumar gods has Trayastrimshak gods ?

[Ans.] O Shyamahasti ! The reason for this is as follows—During that period of time in the Bharat area of this Jambu continent there was a city called Kakandi. Description. In Kakandi city lived thirty three *Shramanist* (followers of the *Shraman* religion or Jains) house holders who were mutually helpful. They were affluent... and so on up to... fearless. They knew about the living and the non-living and lead their life with full awareness of merit and demerit. There was a time when these thirty three *Shramanist* householders were perfect (*ugra*) and rebirth-fearing (*samvigna*) in thought and conduct, but later they turned stragglers (*parshvasth*), negligent (*avasanna*), transgressors (*kusheel*)

and unruly (*yathachhand*) in thought and conduct. They lived as *Shramanists* for many years, after which they emaciated their body by observing the ultimate vow (*sanlekhana*) for a fortnight missing thirty meals. In the end at the time of their death they left their body without performing critical review and atonement for their lapses. They have taken rebirth as the Trayastrimshak gods of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods.

५. [३] जप्पभिइं च णं भंते ! ते कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा तप्पभिइं च णं भंते ! एवं वुच्चइ—'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा, तायत्तीसगा देवा'?

५. [३] (श्यामहस्ती ने गौतम स्वामी से) भगवन्! जब से वे काकन्दी निवासी परस्पर सहायक तैंतीस गृहपति श्रमणोपासक असुरराज चमर के त्रायस्त्रिंश-देव रूप में उत्पन्न हुए हैं, क्या तभी से ऐसा कहा जाता है कि असुरराज असुरेन्द्र चमर के (ये) तैंतीस देव त्रायस्त्रिंशक देव हैं? (अर्थात् क्या इससे पहले उसके त्रायस्त्रिंशक देव नहीं थे?)

5. [3] (Shyamahasti to Gautam Swami) *Bhante!* Does it mean that only since those thirty three friendly *Shramanist* householders were born as Trayastrimshak gods of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, it is said that Chamar, the king of gods of Asur-kumar gods has Trayastrimshak gods ? (In other words did he not have them before this ?)

६. तएणं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए, कंखिए, वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

६. श्यामहस्ती अनगार के द्वारा यह प्रश्न पूछे जाने पर भगवान् गौतम स्वामी शंकित, कांक्षित एवं विचिकित्सित (अतिसंदेहग्रस्त) हो गए। वे वहाँ से उठे और श्यामहस्ती अनगार के साथ जहाँ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी विराजमान थे, वहाँ आए। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना-नमस्कार किया और इस प्रकार पूछा—

6. On hearing this question from ascetic Shyamahasti, Bhagavan Gautam Swami was filled with doubt (*shanka*), confusion (*kanksha*), and incredulity (*vichikitsa*). He got up and, accompanied by ascetic Shyamahasti, came to Shraman Bhagavan Mahavir, paid homage and submitted—

७-१. [प्र.] अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा ?

[उ.] हंता, अत्थि।

७-१. [प्र.] भगवन् ! क्या असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] हाँ, गौतम हैं।

7-1. **[Q.]** *Bhante !* Does Chamar, the king of gods of Asur-kumar gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] Yes, he has.

७-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते !

[उ.] एवं वुच्चइ-एवं तं चेव सव्वं भाणियव्वं, जाव तायत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा।

७-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहते हैं कि चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] उत्तर में पूर्व-कथित त्रायस्त्रिंशक देवों का समस्त वृत्तान्त कहना चाहिए यावत् वे ही (काकन्दी निवासी परस्पर सहायक तैंतीस गृहस्थ श्रमणोपासक मरकर) चमरेन्द्र के त्रायत्रिंश देव के रूप में उत्पन्न हुए।

7-2. **[Q.]** *Bhante !* Why is it said that Chamar, the king of gods of Asur-kumar gods has Trayastrimshak gods ?

[Ans.] In answer repeat the whole statement already given about Trayastrimshak gods (5.2) up to 'They have taken rebirth as the Trayastrimshak gods of Chamarendra.'

७-३. [प्र.] भंते ! तप्पभिइं च णं एवं वुच्चइ-चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा, तायत्तीसगा देवा?'

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते; जं न कदाइ नासी, न कदाइ न भवइ, जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिनयट्ठताए, अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति।

७-३. [प्र.] भगवन्! जब से वे (तैंतीस गृहस्थ श्रमणोपासक असुरराज असुरेन्द्र चमर के) त्रायस्त्रिंशक देव रूप में उत्पन्न हुए हैं, क्या तभी से ऐसा कहा जाता है कि असुरराज असुरेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं? (क्या इससे पूर्व उसके त्रायस्त्रिंशक देव नहीं थे?)

[उ.] गौतम! यह अर्थ उचित नहीं है। असुरराज असुरेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देवों के नाम शाश्वत हैं इसलिए किसी समय नहीं थे, या नहीं हैं, ऐसा नहीं है और कभी नहीं रहेंगे, ऐसा भी नहीं है। यावत् अव्युच्छित्ति (द्रव्यार्थिक) नय की अपेक्षा से वे नित्य हैं,

(किन्तु पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से) आयुष्य पूर्ण होने पर पहले वाले च्यवते हैं, और दूसरे उत्पन्न होते हैं। (उनका प्रवाह रूप से कभी विच्छेद नहीं होता।)

7-3. [Q.] *Bhante !* Does it mean that only since those thirty three friendly *Shramanist* householders were born as Trayastrimshak gods of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, it is said that Chamar, the king of gods of Asur-kumar gods has Trayastrimshak gods? (In other words did he not have them before this?)

[Ans.] Gautam ! That is not true. The names (position and number) of Trayastrimshak gods of Chamarendra the king of Asur-kumar gods, are eternal. Therefore it is not that they did not or do not exist at any point of time. It is also not right to say that they will not be there in future. ... and so on up to... From existent material aspect (*dravyarthik naya*) they are eternal and (from *paryayarthik naya* or transformational aspect) they (the existing ones) descend (from their divine abode) and new ones are born. (Their position and number is never extinct.)

बलीन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव TRAYASTRIMSHAK GODS OF BALINDRA

८-१. [प्र.] अत्थि णं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तायत्तीसगा देवा, तायत्तीसगा देवा?

[उ.] हंता, अत्थि।

८-१. [प्र.] भगवन्! क्या वैरोचनराज वैरोचनेन्द्र बलि के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

8-1. [Q.] *Bhante !* Does Bali, the king of gods of Vairochan gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] Yes, he has.

८-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा?'

[उ.] एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बिभेले नामं सन्निवेसे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं बिभेले सन्निवेसे जहा चमरस्स जाव उववन्ना।

८-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि वैरोचनराज वैरोचनेन्द्र बलि के तैंतीस त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] गौतम! उस काल और उस समय में इसी जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में बिभेल नामक एक सन्निवेश था (वर्णन)। उस बिभेल सन्निवेश में परस्पर सहायक तैंतीस गृहस्थ श्रमणोपासक थे; इत्यादि जैसा वर्णन चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशकों के लिए किया गया है, वैसा ही यहाँ जानना चाहिए, यावत्—वे त्रायस्त्रिंशक देव के रूप में उत्पन्न हुए।

8-2. [Q.] *Bhante !* Why is it said that Bali, the king of gods of Vairochan gods has Trayastrimshak gods ?

[Ans.] Gautam ! During that period of time in the Bharat area of this Jambu continent there was a settlement called Bibhel. Description. In Bibhel settlement lived thirty three *Shramanist* (followers of the *Shraman* religion or Jains) house holders who were mutually helpful. Repeat complete description as mentioned about Chamarendra up to 'They have taken rebirth as the Trayastrimshak gods.'

८-३. [प्र.] जप्पभिइं च णं भंते! विब्भेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो?

[उ.] सेसं तं चेव जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए, अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति।

८-३. [प्र.] भगवन्! जब से वे बिभेल सन्निवेश निवासी परस्पर सहायक तैंतीस गृहपति श्रमणोपासक बलि के त्रायस्त्रिंशक देव के रूप में उत्पन्न हुए, क्या तभी से ऐसा कहा जाता है कि वैरोचनराज वैरोचनेन्द्र बलि के त्रायस्त्रिंशक देव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] (इसके उत्तर में) शेष सभी वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए; यावत्—वे अव्युच्छित्ति (द्रव्यार्थिक)-नय की अपेक्षा नित्य हैं। (किन्तु पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से) पुराने (त्रायस्त्रिंशक देव) च्यवन करते रहते हैं, (उनके स्थान पर) दूसरे (नये) उत्पन्न होते रहते हैं

8-3. [Q.] *Bhante !* Does it mean that only since those thirty three friendly *Shramanist* householders were born as Trayastrimshak gods of Bali, the king of Vairochan gods, it is said that Bali, the king of Vairochan gods has Trayastrimshak gods ?

[Ans.] (As answer) Repeat as before up to 'From existent material aspect (*dravyarthik naya*) they are eternal and (from *paryayarthik naya* or transformational aspect) they (the existing ones) descend (from their divine abode) and new ones are born.'

धरणेन्द्र आदि के त्रायस्त्रिंशक देव TRAYASTRIMSHAK GODS OF DHARANENDRA

९-१. [प्र.] अत्थि णं भंते! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा, तायत्तीसगा देवा?

[उ.] हंता, अत्थि।

९-१. [प्र.] भगवन्! क्या नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र धरणेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

9-1. [Q.] *Bhante !* Does Dharanendra, the king of gods of Naag Kumar gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] Yes, he has.

९-२. [प्र.] से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा, तायत्तीसगा देवा ?

[उ.] गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं न कयाई नासी, जाव अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति। एवं भूयाणंदस्स वि। एवं जाव महाघोसस्स।

९-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहते हैं कि नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] गौतम! नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र धरण के त्रायस्त्रिंशक देवों के नाम शाश्वत हैं। वे किसी समय नहीं थे, ऐसा नहीं है; 'नहीं रहेंगे'–ऐसा भी नहीं है; यावत् पुराने च्यवते हैं और (उनके स्थान पर) नये उत्पन्न होते हैं। (इसलिए प्रवाह रूप से वे अनादिकाल से हैं)। इसी प्रकार भूतानन्द इन्द्र, यावत् महाघोष इन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों के विषय में कथन है।

9-2. [Q.] *Bhante !* Why is it said that Dharanendra, the king of gods of Naag Kumar gods has Trayastrimshak gods ? (and other following questions)

[Ans.] Gautam ! The names (position and number) of Trayastrimshak gods of Dharanendra, the king of gods of Naag Kumar gods, are eternal. Therefore it is not that they did not or do not exist at any point of time. It is also not right to say that they will not be there in future. ... and so on up to... they (the existing ones) descend (from their divine abode) and new ones are born. (Their position and number is never extinct.). The same should be repeated for Trayastrimshak gods of other kings of gods including Bhootanand... and so on up to... Mahaghosh.

शक्रेन्द्र से अच्युतेन्द्र तक के त्रायस्त्रिंशक देव

TRAYASTRIMSHAK GODS OF SHAKRENDRA TO ACHYUTENDRA

१०-१. [प्र.] अत्थि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो० पुच्छा।

[उ.] हंता, अत्थि।

१०-१. [प्र.] भगवन् ! क्या देवराज देवेन्द्र शक्र के त्रायस्त्रिंशक देव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

10-1. [Q.] *Bhante !* Does Shakra, the king of gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] Yes, he has.

१०-२. [प्र.] से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा, तायत्तीसगा देवा?

[उ.] एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वालाए नामं सन्निवेसे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं वालाए सन्निवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरंति। तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववन्ना। जप्पभिइं च णं भंते! ते वालागा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति।

१०-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि देवेन्द्र देवराज शक्र के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] गौतम! उस काल और उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप में, भारतवर्ष में बालाक (अथवा पलाशक) सन्निवेश था। उस बालाक सन्निवेश में परस्पर सहायक तैंतीस गृहपति श्रमणोपासक रहते थे, इत्यादि सब वर्णन चरमेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों के अनुसार कहना चाहिए। वे तैंतीस परस्पर सहायक गृहस्थ श्रमणोपासक पहले भी और पीछे भी उग्र, उग्रविहारी एवं संविग्न तथा संविग्नविहारी होकर बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक पर्याय का पालन कर, मासिक संलेखना से शरीर को कृश करके, साठ भक्त का अनशन द्वारा छेदन करके, अन्त में आलोचना और प्रतिक्रमण करके काल के अवसर पर समाधिपूर्वक काल करके यावत् शक्र के त्रायस्त्रिंशक देव के रूप में उत्पन्न हुए। 'भगवन्! जब से वे बालाक निवासी परस्पर सहायक गृहपति श्रमणोपासक शक्र के त्रायस्त्रिंशकों के रूप में उत्पन्न हुए, क्या तभी से शक्र के त्रायस्त्रिंशक देव हैं? इत्यादि प्रश्न एवं उसके उत्तर में शेष समग्र वर्णन, द्रव्यार्दिक नय से शाश्वत है और पर्यायाथिक नय की दृष्टि से पुराने च्यवते हैं और नये उत्पन्न होते हैं; यहाँ तक चरमेन्द्र के समान कहना चाहिए।

10-2. [Q.] *Bhante !* Why is it said that Shakra, the king of gods has Trayastrimshak gods ?

[Ans.] Gautam ! During that period of time in the Bharat area of this Jambu continent there was a settlement called Baalaak (Palaashak). Description. In Baalaak city lived thirty three *Shramanist* (followers of the *Shraman* religion or Jains) house holders who were mutually helpful (as mentioned about Chamarendra). These thirty three *Shramanist* householders started as perfect (*ugra*) and rebirth-fearing (*samvigna*) in thought and conduct, and continued as *Shramanists* for many years, after which they emaciated their body by observing the ultimate vow (*sallekhana*) for a month missing sixty meals. In the end at the time of their death they serenely left their body after performing critical review and atonement for their lapses. They have taken rebirth as the Trayastrimshak gods of Shakrendra, the king of gods. Repeat all following questions like '*Bhante!* Does it mean that only since those thirty three friendly *Shramanist* householders were born as Trayastrimshak gods of Shakrendra, the king of gods, it is said that Shakra, the king of gods has Trayastrimshak gods?' and their answers as mentioned about Chamarendra... and so on up to... From existent material aspect (*dravyarthik naya*) they are eternal and (from *paryayarthik naya* or transformational aspect) they (the existing ones) descend (from their divine abode) and new ones are born.

११. [प्र.] अत्थि णं भंते! ईसाणस्स०।

[उ.] एवं जहा सक्कस्स, नवरं चंपाए नयरीए जाव उववन्ना। जप्पिभिइं च णं भंते! चंपिच्चा तायत्तीसं सहाया० सेसं तं चेव जाव अन्ने उववज्जंति।

११. [प्र.] भगवन्! क्या देवराज देवेन्द्र ईशान के त्रायस्त्रिंशक देव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] इस प्रश्न का उत्तर शक्रेन्द्र के समान है। इतना विशेष है कि ये तैंतीस श्रमणोपासक चम्पानगरी के निवासी थे, यावत् ईशानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव के रूप में उत्पन्न हुए। (इसके पश्चात्) जब से ये चम्पानगरी निवासी तैंतीस परस्पर सहायक श्रमणोपासक त्रायस्त्रिंशक बनें, इत्यादि (प्रश्न और उसके उत्तर में) शेष समग्र वर्णन पूर्ववत् करना चाहिए, यावत् पुराने च्यवते हैं और नये (अन्य) उत्पन्न होते हैं, यहाँ तक कहना चाहिए।

11. [Q.] *Bhante!* Does Ishaan, the king of gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] The answer of this and other related questions follows the pattern of Shakrendra. The difference is that these *Shramanists* resided in Champa city... and so on up to... They have taken rebirth as the

Trayastrimshak gods of Ishaanendra. Same is true for other questions like 'only since those thirty three friendly *Shramanist* householders from Champa city were born as Trayastrimshak gods... and so on up to... The existing ones descend and new ones are born.

१२-१. [प्र.] अत्थि णं भंते! सणंकुमारस्स देविंदस्स देवरण्णो० पुच्छा।

[उ.] हंता, अत्थि।

१२-१. [प्र.] भगवन्! क्या देवराज देवेन्द्र सनत्कुमार के त्रायस्त्रिंशक देव हैं?

[उ.] हाँ गौतम! हैं।

12-1. [Q.] *Bhante !* Does Sanatkumar, the king of gods, has Trayastrimshak gods (ministers or priests) ?

[Ans.] Yes, he has.

१२-२. [प्र.] से केणट्ठेणं०?

[उ.] जहा धरणस्स तहेव।

१२-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहते हैं? इत्यादि समग्र प्रश्न।

[उ.] उसके उत्तर में जैसे धरणेन्द्र के विषय में कहा है, उसी प्रकार कहना चाहिए।

12-2. [Q.] *Bhante !* Why is it said so ? And all other questions.

[Ans.] Their answers should be mentioned as aforesaid about Dharanendra.

१३. एवं जाव पाणयस्स। एवं अच्चुयस्स जाव अन्ने उववज्जंति।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

॥ दसमेसए चउत्थो उद्देसो समत्तो॥ १०.४॥

[१३] इसी प्रकार यावत् प्राणत (देवेन्द्र) तक के त्रायस्त्रिंशक देवों के विषय में समझें और इसी प्रकार अच्युतेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों के सम्बन्ध में जानना चाहिए, यावत् पुराने च्यवते हैं और (उनके स्थान पर) नये (त्रायस्त्रिंश देव) उत्पन्न होते हैं, यहाँ तक कहना चाहिए।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! भगवन्! यह इसी प्रकार है! ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ दशम शतक : चतुर्थ उद्देशक समाप्त॥

13. The same follows for Trayastrimshak gods of other kings of gods... and so on up to... Pranat king of gods as well as Achyut king of

gods... and so on up to... The existing ones descend and new ones are born.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—त्रायस्त्रिंशक देव : किन-किन देवनिकायों में?—देवों के 4 निकाय हैं—भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक। इनमें से वाणव्यन्तर एवं ज्योतिष्क देवों में त्रायस्त्रिंशक नहीं होते, किन्तु भवनपति एवं वैमानिक देवों में होते हैं। भवनपति देवों के त्रायस्त्रिंशक देव पूर्व भव में विराधक होकर उत्पन्न होते हैं, किन्तु वैमानिक देवों के त्रायस्त्रिंशक आराधक अवस्था में काल करके उत्पन्न होते हैं।

Elaboration—Trayastrimshak gods in which divine realms?—There are four divine realms – Abode-dwelling (Bhavan-pati), Interstitial (Vanavyantar), Stellar (Jyotishk), and Celestial-vehicular (Vaimanik). Out of these Abode-dwelling and Celestial-vehicular gods have Trayastrimshak gods but Interstitial and Stellar gods do not. The Trayastrimshak gods of Abode-dwelling gods were lax in their practices during past birth and those of Celestial-vehicular gods get reborn after their death as perfect observers.

• END OF THE FOURTH LESSON OF THE TENTH CHAPTER •

पंचमो उद्देसओ : देवी

पंचम उद्देशक : देवी (अग्रमहिषी वर्णन)

PANCHAM UDDESHAK (FIFTH LESSON) : DEVI (THE GODDESS)

उपोद्घात INCEPTION

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे गुणसिलए चेइए जाव परिसा पडिगया।

[१] उस काल और उस समय में राजगृह नामक नगर था। वहाँ गुणशीलक नामक उद्यान था। (वहाँ श्रमण भगवान महावीर स्वामी का समवसरण हुआ।) यावत् परिषद् (धर्मोपदेश सुनकर) लौट गई।

1. During that period of time there was a city named Rajagriha. There was a garden called Gunasheelak. (Once Bhagavan Mahavir had his Divine Assembly there.)... and so on up to... People assembled there and returned (after the discourse).

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति।

[२] उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर स्वामी के बहुत-से अन्तेवासी (शिष्य) स्थविर भगवंत जातिसम्पन्न इत्यादि विशेषणों से युक्त थे, आठवें शतक के सप्तम उद्देशक में कहे अनुसार अनेक विशिष्ट गुणसम्पन्न, यावत् विचरण करते थे।

2. During that period of time many of Shraman Bhagavan Mahavir's senior ascetic disciples (*Sthavir Bhagavant*), endowed with virtues like *jatisampanna* (belonged to high castes)... and so on up to... they stayed in his proximity.

३. तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जायसंसया जहा गोयमसामी जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी–

[३] एक बार उन स्थविरों (के मन) में (जिज्ञासायुक्त) श्रद्धा और शंका उत्पन्न हुई। अतः वे गौतम स्वामी की तरह, यावत् (भगवान की) पर्युपासना करते हुए इस प्रकार पूछने लगे–

3. One day those senior ascetic disciples were filled with reverence as well as doubt, curiosity and quandary... and so on up to... like Gautam Swami... and so on up to... they paid homage and submitted as follows —

४. [प्र.] चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?

[उ.] अज्जो! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—काली १, रायी २, रयणी ३, विज्जू ४, मेहा ५। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठऽट्ठ देवीसहस्सा परिवारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं अट्ठऽट्ठ देवीसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा, से त्तं तुडिए।

४. [प्र.] भगवन्! असुरेन्द्र असुरराज चमर की कितनी अग्रमहिषियाँ (पटरानियाँ—मुख्य देवियाँ) हैं?

[उ.] आर्यो! (चमरेन्द्र की) पाँच अग्रमहिषियाँ हैं—(१) काली, (२) राजी, (३) रजनी, (४) विद्युत् और (५) मेघा। इनमें से एक-एक अग्रमहिषी का आठ-आठ हजार देवियों का परिवार है।

एक-एक देवी (अग्रमहिषी), दूसरी आठ-आठ हजार देवियों के परिवार की विकुर्वणा कर सकती है। इस प्रकार पूर्वा-पर सब मिलाकर (पाँच अग्रमहिषियों का परिवार) चालीस हजार देवियाँ हैं। यह एक त्रुटिक (वर्ग) कहलाता है।

4. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Chamar, the king of gods of Asura gods have?

[Ans.] Noble ones ! He (Chamarendra) has five chief consorts—(1) Kaali, (2) Raaji, (3) Rajani, (4) Vidyut and (5) Megha. Each one of them has a family of eight thousand goddesses.

'*Prabhu* ! Is it possible for each of these goddesses to create or raise a family of eight thousand goddesses?' 'Yes, it is. And thus, all told, the total number of goddesses (in the family of the said five chief consorts) is forty thousand. This is called a group (*trutik* or *varga*).

अपनी सुधर्मा सभा में चमरेन्द्र की (मैथुन-निमित्तक) भोग की असमर्थता

CHAMERANDRA'S INABILITY OF ENJOYING CARNAL PLEASURES IN HIS ASSEMBLY

५-१. [प्र.] पभू णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

५-१. [प्र.] भगवन्! क्या असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर अपनी चमरचंचा राजधानी की सुधर्मा सभा में चमर नामक सिंहासन पर बैठ कर (पूर्वोक्त) त्रुटिक (स्व-देवियों के परिवार) के साथ भोग्य दिव्य भोगों को भोगने में समर्थ है?

[उ.] (हे आर्यो!) यह अर्थ समर्थ नहीं है।

5-1. [Q.] *Bhante !* Can Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, enjoy divine pleasures sitting on the Chamar throne in his Sudharma assembly in his capital Chamarchancha along with the said group of goddesses ?

[Ans.] (Noble ones !) That is not true.

५-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए ?

[उ.] "अज्जो! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अन्नेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पच्जुवासणिज्जाओ भवंति, तेसिं पणिहाए नो पभू; से तेणट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे जाव राया चमरचंचाए जाव विहरित्तए।"

५-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहते हैं कि असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर चमरचंचा राजधानी की सुधर्मा सभा में यावत् भोग्य दिव्य भोगों को भोगने में समर्थ नहीं है?

[उ.] आर्यो! असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर की चमरचंचा नामक राजधानी की सुधर्मा सभा में माणवक चैत्य-स्तम्भ में, वज्रमय (हीरों के) गोल डिब्बों में जिन भगवान की बहुत-सी अस्थियाँ रखी हुई हैं, जो कि असुरेन्द्र असुरकुमारराज के लिए तथा अन्य बहुत से असुरकुमार देवों और देवियों के लिए अर्चनीय, वन्दनीय, नमस्करणीय, पूजनीय, सत्कारयोग्य एवं सम्मानयोग्य हैं। वे कल्याणरूप, मंगलरूप, देवरूप चैत्यरूप एवं पर्युपासनीय हैं, इसलिए उन (जिन भगवान् की अस्थियों) के सान्निध्य में वह (असुरेन्द्र अपनी सुधर्मा सभा में) भोग भोगने में समर्थ नहीं हैं। इसीलिए हे आर्यो! ऐसा कहा गया है कि असुरेन्द्र यावत् चमर, चमरचंचा राजधानी की सुधर्मा सभा में दिव्य भोग भोगने में समर्थ नहीं है।

5-2. [Q.] *Bhante !* Why is it said that Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, is unable to enjoy ... and so on up to ... with the said group of goddesses?

---

१. 'जाव' पद सूचित पाठ—**"नट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं ति"**।

[Ans.] Noble ones ! In the Sudharma assembly in Chamarchancha, the capital city of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, there is a sacred pillar (*Chaitya-stambh*) called Manavak. Within this pillar are ensconced diamond-studded round boxes containing many bones of *Jinas*. These bones are objects of veneration (*archaniya*), reverence (*vandaniya*), salutation (*namaskaraniya*), worship (*pujaniya*), adoration (*satkaar*) and respect (*sammaan*) for Chamarendra and many other Asur-kumar gods and goddesses. Therefore, in proximity of those (the remains of *Jinas*) he is unable to enjoy divine pleasures. That is why, Noble ones, it said that Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, is unable to enjoy ... and so on up to ... with the said group of goddesses.

५. [३] पभू णं अज्जो! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अन्नेहिं य बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाऽहय–जाव भुंजमाणे विहरित्तए, केवलं परियारिद्धीए; नो चेव णं मेहुणवत्तियं।

५. [३] परन्तु हे आर्यो! वह असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर, अपनी चमरचंचा राजधानी की सुधर्मा सभा में चमर नामक सिंहासन पर बैठकर चौंसठ हजार सामानिक देवों, त्रायस्त्रिंशक देवों और दूसरे बहुत-से असुरकुमार देवों और देवियों से परिवृत होकर महा-निनाद के साथ होने वाले नाट्य, गीत, वादित्र आदि के शब्दों से होने वाले (राग-रंग-रूप) दिव्य भोग्य भोगों का केवल परिवार की ऋद्धि से उपभोग करने में समर्थ है, किन्तु मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है।

5. [3] However, Noble ones! Sitting on the Chamar throne in his Sudharma assembly in his capital Chamarchancha and surrounded by sixty four thousand gods of equal status, Trayastrimshak gods (ministers or priests) and many other Asur-kumar gods and goddesses, Chamarendra, the king of Asur-kumar gods can enjoy audio-visually the divine opulence and pleasures available as dramatic and musical, both vocal and instrumental, performances. But he is unable to indulge in any carnal pleasures.

विवेचन—माणवक चैत्य-स्तंभ—अनेक स्थानों पर माणवक चैत्य-स्तंभ का वर्णन आता है। इसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—सुधर्मा सभा के मध्य में एक विशाल मणि-पीठिका (चौकी-चबूतरा) है। वह सोलह योजन लम्बा-चौड़ा है। उसकी मोटाई आठ योजन है। उसके ऊपर माणवक नामक चैत्य-स्तंभ है जो साठ योजन ऊँचा तथा एक योजन भूमि में गहरा है तथा एक योजन चौड़ा है। उस

माणवक चैत्य-स्तंभ के मध्य में साढ़े चार योजन का सुवर्ण-रजत-रत्न जडित पाटिया (पट्टिका) हैं। उस पट्टी पर वज्र-रत्न के हाथी दाँत के आकार की खूंटियां (नागदत्त) बनी हैं। उस पर चाँदी के सींके लटक रहे हैं। उनमें वज्रमय डिब्बे रखे हुए हैं। उन डिब्बों में अनेक तीर्थंकरों की अस्थियाँ आदि सुरक्षित रखी रहती हैं। वह सभी देवों के लिए व देवियों के लिए पूजनीय होती हैं, जिन्हें मंगलदायी माना जाता है।

Elaboration—Manavak *chaitya-stambh* (sacred pillar called Manavak)–The detailed description of this pillar is available in many texts. Its brief description is—There is a huge platform at the center of the Sudharma assembly hall. In dimension it is sixteen Yojan square with a height of eight Yojan. On this platform this pillar called Manavak is built. It is sixty Yojan in height, with one Yojan deep foundation and one Yojan each in length and width. At the center of this pillar there is a projected platform of four and a half Yojan studded with gold silver and gems. On this projection there are tusk-shaped pegs made of diamonds. On these pegs are suspended silver baskets containing diamond boxes. These boxes contain skeletal remains of many Tirthankars. These remains are objects of worship for all gods and goddesses and are considered auspicious and beatific.

लोकपालों का देवी-परिवार

GODDESSES OF THE REALM-GUARDIANS OF CHAMARENDRA

६. [प्र.] चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—कणगा १, कणगलया २, चित्तगुत्ता ३, वसुंधरा ४। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगाए देवीए अन्नं एगमेगं देविसहस्सं परिवारं विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा, से त्तं तुडिए।

६. [प्र.] भगवन्! असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के लोकपाल सोम महाराज की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! उनके चार अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—(१) कनका, (२) कनकलता, (३) चित्रगुप्त और (४) वसुन्धरा। इनमें से प्रत्येक देवी का एक-एक हजार देवियों का परिवार है। इनमें से प्रत्येक देवी, एक-एक हजार देवियों के परिवार की विकुर्वणा कर सकती है। इस प्रकार पूर्वा-पर सब मिलकर चार हजार देवियाँ होती है। यह एक त्रुटिक (देवी-वर्ग) कहलाता है।

6. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Soma, the realm-guardian (*lokapaal*) of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods have ?

[Ans.] (Noble ones !) He has four chief consorts—(1) Kanaka, (2) Kanakalata, (3) Chitragupta and (4) Vasundhara. Each one of them has a family of one thousand goddesses. Each of these goddesses can create or raise a family of one thousand goddesses. Thus, all told, the total number of goddesses is four thousand. This is called a group (*trutik* or *varga*).

७. [प्र.] पभू णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं० ?

[उ.] अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं परियारो जहा सूरियाभस्स, सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं।

७. [प्र.] भगवन्! क्या असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर का लोकपाल सोम महाराज, अपनी सोमा नामक राजधानी की सुधर्मा सभा में, सोम नामक सिंहासन पर बैठकर अपने उस त्रुटिक (देवियों के परिवार वर्ग) के साथ भोग्य दिव्य-भोग भोगने में समर्थ है?

[उ.] (हे आर्यो!) जिस प्रकार असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के सम्बन्ध में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिए, परन्तु इसका परिवार, राजप्रश्नीय सूत्र में वर्णित सूर्याभदेव के परिवार के समान जानना चाहिए। शेष सभी वर्णन पूर्ववत् है यावत् वह सोमा राजधानी की सुधर्मा सभा में मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है।

7. [Q.] *Bhante!* Can Soma, the realm-guardian (*lokapaal*) of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods, enjoy divine pleasures sitting on the Soma throne in his Sudharma assembly in his capital Soma along with the said group of goddesses ?

[Ans.] (Noble ones!) What has been said about Chamarendra, the king of Asur-kumar gods should be taken to be true here also; however, the details about his family should be taken to be same as those mentioned in Rajaprashniya Sutra about the family of Suryaabh Dev (god). All other description is same as mentioned earlier ... and so on up to ... But he is unable to indulge in any carnal pleasures.

८. [प्र.] चमरस्स णं भंते! जाव रण्णो जमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ० ?

[उ.] एवं चेव, नवरं जमाए रायहाणीए सेसं जहा सोमस्स। एवं वरुणस्स वि, नवरं वरुणाए रायहाणीए। एवं वेसमणस्स वि, नवरं वेसमणाए रायहाणीए। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं।

८. [प्र.] भगवन्! चमरेन्द्र के यावत् लोकपाल यम महाराज की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं? इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न।

[उ.] (आर्यो!) (जिस प्रकार) सोम महाराज के सम्बन्ध में कहा है, उसी प्रकार यम महाराज के सम्बन्ध में भी कहना चाहिए; विशेष इतना है कि यम लोकपाल की राजधानी यमा है। इसी प्रकार (लोकपाल) वरुण महाराज का भी कथन है। विशेष यही है कि वरुण महाराज की राजधानी का नाम वरुणा है। इसी प्रकार (लोकपाल) वैश्रमण महाराज के विषय में भी कथन है। विशेष इतना ही है कि वैश्रमण की राजधानी वैश्रमण है। 'वे वहाँ मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं हैं।'

8. **[Q.]** How many chief consorts does Yama, the realm-guardian (*lokapaal*) of Chamarendra, the king of Asur-kumar gods have... and so on up to... other questions as mentioned earlier ?

[Ans.] (Noble ones !) What has been said about Soma should be repeated here for Yama, the only difference being that the capital city of *Lokapaal* Yama is Yamaa. The same is true for *Lokapaal* Varun, the only difference being that the capital city of Varun is Varuna. The same is also true for *Lokapaal* Vaishraman, the only difference being that the capital city of Vaishraman is Vaishramana. ... and so on up to ... But they are unable to indulge in any carnal pleasures.

बलीन्द्र लोकपालों का देवी-परिवार

GODDESSES OF THE REALM-GUARDIANS OF BALINDRA

९. [प्र.] बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—सुंभा १, निसुंभा २, रंभा ३, निरंभा ४, मयणा ५। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठऽट्ठ० सेसं जहा चमरस्स, नवरं बलिचंचाए रायहाणीए परियारो जहा मोउद्देसए (स. ३, उ. १), सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तियं।

९. [प्र.] भगवन्! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बली की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (बलीन्द्र की) पाँच अग्रमहिषियाँ हैं—१. शुम्भा, २. निशुम्भा, ३. रम्भा, ४. निरम्भा और ५. मदना। इनमें से प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी) के आठ-आठ हजार देवियों का परिवार है; इत्यादि शेष समग्र वर्णन चमरेन्द्र के देवीवर्ग के समान है। विशेष इतना है

कि बलीन्द्र की राजधानी बलिचंचा है। इनके परिवार का वर्णन तृतीय शतक के प्रथम उद्देशक (श. ३, उ. १) के अनुसार है। शेष सब वर्णन पूर्ववत् समझना चाहिए; यावत्—वह (सुधर्मा सभा में) मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है।

9. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Balindra, the king of Vairochan gods have ?

[Ans.] (Noble ones !) He (Balindra) has five chief consorts—(1) Shumbha, (2) Nishumbha, (3) Rambha, (4) Nirambha and (5) Madana. Each one of them has a family of eight thousand goddesses. All the remaining details are same as those of the group of goddesses of Chamarendra. The difference being that the capital city of Balindra is Balichancha. The description of the family is as mentioned in the first lesson of the third chapter. Other details are as mentioned earlier... and so on up to ... But they are unable to indulge in any carnal pleasures.

१०. [प्र.] बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ?

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—मीणगा १, सुभद्दा २, विजया ३, असणी ४। तत्थ णं एगमेगाए देवीए० सेसं जहा चमरसोमस्स, एवं जाव वेसमणस्स।

१०. [प्र.] भगवन् ! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के लोकपाल सोम महाराज की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं ?

[उ.] आर्यो ! चार अग्रमहिषियाँ हैं—(१) मेनका, (२) सुभद्रा, (३) विजया और (४) अशनी। इनकी एक-एक देवी का परिवार आदि समग्र चमरेन्द्र के लोकपाल सोम के समान जानना चाहिए। इसी प्रकार यावत् वैरोचनेन्द्र बलि के लोकपाल वैश्रमण तक सारा वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

10. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Soma, the realm-guardian (*lokapaal*) of Balindra, the king of Vairochan gods have?

[Ans.] (Noble ones !) He has four chief consorts—(1) Menaka, (2) Subhadra, (3) Vijaya and (4) Ashani. All details about the families of each goddess should be mentioned like those about Soma, the realm-guardian (*lokapaal*) of Chamarendra. In the same way repeat as mentioned earlier all description about other realm guardians of Balindra, the king of Vairochan gods up to Vaishraman.

धरणेन्द्र लोकपालों का देवी-परिवार—

GODDESSES OF THE REALM-GUARDIANS OF DHARANENDRA

११. [प्र.] धरणस्स णं भंते! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?

[उ.] अज्जो! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—अला १, मक्का २, सतेरा ३, सोयामणी ४, इंदा ५, घणविज्जुया ६। तत्थ णं एगमेगाए देवीए छच्छ देविसहस्सा परियारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं छच्छ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं छत्तीसं देविसहस्साइं, से त्तं तुडिए।

११. [प्र.] भगवन्! नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरणेन्द्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यों! (धरणेन्द्र की) छह अग्रमहिषियाँ हैं—(१) अला (इला), (२) मक्का (शुक्रा), (३) सतारा, (४) सौदामिनी, (५) इन्द्रा और (६) घनविद्युत। उनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के छह-छह हजार देवियों का परिवार है। इनमें से प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी), अन्य छह-छह हजार देवियों के परिवार की विकुर्वणा कर सकती है। इस प्रकार पूर्वा-पर सब मिलाकर छत्तीस हजार देवियों का यह त्रुटिक (वर्ग) कहा गया है।

11. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Dharanendra, the king of Naag-kumar gods have ?

[Ans.] Noble ones ! He (Dharanendra) has six chief consorts—(1) Ala (Ila), (2) Makka (Shukra), (3) Satara, (4) Saudamini, (5) Indraa and (6) Ghanavidyut. Each one of them has a family of six thousand goddesses. Each of these goddesses (chief consorts) can create or raise a family of six thousand goddesses.' Thus, all told, the total number of goddesses is thirty-six thousand. This is called a group (*trutik* or *varga*).

१२. [प्र.] पभू णं भंते! धरणे?

[उ.] सेसं तं चेव, नवरं धरणाए रायहाणीए धरणंसि सीहासणंसि सओ परियारो, सेसं तं चेव।

१२. [प्र.] भगवन्! क्या धरणेन्द्र (सुधर्मा सभा में देवी परिवार के साथ) यावत् भोग भोगने में समर्थ हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] पूर्ववत् समग्र कथन जानना चाहिए। विशेष इतना ही है कि (धरणेन्द्र की) राजधानी धरणा में धरण नामक सिंहासन पर (बैठकर) स्व-परिवार.... शेष सब वर्णन पूर्ववत्।

12. [Q.] *Bhante!* Can Dharanendra, the king of Naag-kumar gods, enjoy... and so on up to... along with the said group of goddesses? And other questions.

[Ans.] All details should be taken as mentioned earlier (about Chamarendra). The difference being that Dharanendra sits on the Dharan throne in his capital city Dharana. Description as mentioned earlier.

१३. [प्र.] धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स लोगपालस्स कालवालस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ?

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ; तं जहा—असोगा १, विमला २, सुप्पभा ३, सुदंसणा ४। तत्थ णं एगमेगाए० अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं।

१३. [प्र.] भगवन्! नागकुमारेन्द्र धरणेन्द्र के लोकपाल कालवाल नामक महाराज की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (धरणेन्द्र के लोकपाल कालवाल की) चार अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—१ अशोका, २ विमला, ३ सुप्रभा और ४ सुदर्शना। इनमें से एक-एक देवी का परिवार आदि वर्णन चमरेन्द्र के लोकपाल के समान ही है। इसी प्रकार (धरणेन्द्र के) शेष तीन लोकपालों के विषय में भी कहना चाहिए।

13. [Q.] *Bhante!* How many chief consorts does Kaalvalla, the realm-guardian (*lokapaal*) of Dharanendra, the king of Naag-kumar gods have?

[Ans.] (Noble ones!) He has four chief consorts—(1) Ashoka, (2) Vimala, (3) Suprabha and (4) Sudarshana. All details about the families of each goddess should be mentioned like those about the realm-guardian (*lokapaal*) of Chamarendra. In the same way repeat as mentioned earlier all description about other three realm-guardians (of Dharanendra).

भूतानन्दादि लोकपालों का देवी-परिवार

GODDESSES OF THE REALM-GUARDIANS OF BHOOTANAND AND OTHERS

१४. [प्र.] भूयाणंदस्स णं भंते ! पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—रूया १, रूयंसा २, सुरूया ३, रूयगावइ ४, रूयकंता ५, रूयप्पभा ६। तत्थ णं एगमेगाए देवीए० अवसेसं जहा धरणस्स।

१४. [प्र.] भगवन्! भूतानन्द (भवनपतीन्द्र) की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो ! भूतानन्द की छह अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—१. रूपा, २. रूपांशा, ३.सुरूपा, ४. रूपकावती, ५. रूपकान्ता और ६. रूपप्रभा। इनमें से प्रत्येक देवी—अग्रमहिषी के परिवार आदि का तथा शेष समस्त वर्णन धरणेन्द्र के समान है।

14. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Bhootanand, the king of Bhavan-pati Devas (abode-dwelling gods) have ?

[Ans.] Noble ones ! He (Bhootanand) has six chief consorts—(1) Rupa, (2) Rupaansha, (3) Surupa, (4) Rupakavati, (5) Rupakanta and (6) Rupaprabha. The description of family of all goddesses and all other details follow the pattern of the description about Dharanendra.

१५. [प्र.] भूयाणंदस्स णं भंते! नागवित्तस्स० पुच्छा।

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—सुणंदा १, सुभद्दा २, सुजाया ३, सुमणा ४। तत्थ णं एगमेगाए देवीए० अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं।

१५. [प्र.] भगवन्! भूतानन्द के लोकपाल नागवित्त के कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (नागवित्त की) चार अग्रमहिषियाँ हैं। वे इस प्रकार—(१) सुनन्दा, (२) सुभद्रा, (३) सुजाता और (४) सुमना। इसमें प्रत्येक देवी के परिवार आदि का शेष वर्णन चमरेन्द्र के लोकपाल के समान है। इसी प्रकार शेष तीन लोकपालों का वर्णन भी (चमरेन्द्र के शेष तीन लोकपालों के समान) है।

15. [Q.] *Bhante!* How many chief consorts does Naagvitta, the realm-guardian (*lokapaal*) of Bhootanand, the king of Bhavan-pati gods have ?

[Ans.] (Noble ones !) He has four chief consorts—(1) Sunanda, (2) Subhadra, (3) Sujata and (4) Sumana. All details about the families of each goddess should be mentioned like those about the realm-guardian (*lokapaal*) of Chamarendra. In the same way mention all description about other three realm guardians as mentioned earlier that about those of Chamarendra.

१६. जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणस्स। लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं।

उत्तरिल्लाणं इंदाणं जहा भूयाणंदस्स। लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं। नवरं इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ, सीहासणाणि य सरिसनामगाणि,

परियारो जहा मोउद्देसए (स. ३ उ. १)। लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, परियारो जहा चमरस्सलोगपालाणं।

१६. जो दक्षिण दिशावर्ती इन्द्र हैं उनका कथन धरणेन्द्र के समान तथा उनके लोकपालों का कथन धरणेन्द्र के लोकपालों के समान है।

उत्तर दिशावर्ती इन्द्रों का कथन भूतानन्द के समान तथा उनके लोकपालों का कथन भी भूतानन्द के लोकपालों के समान है। विशेष इतना है कि सब इन्द्रों की राजधानियों और उनके सिंहासनों का नाम इन्द्र के नाम के समान है। उनके परिवार का वर्णन भगवती सूत्र के तीसरे शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार है। सभी लोकपालों की राजधानियों और उनके सिंहासनों का नाम लोकपालों के नाम के सदृश तथा उनके परिवार का वर्णन चमरेन्द्र के लोकपालों के परिवार के वर्णन के समान जानना चाहिए।

16. The description of Indras (kings of gods) in the south and their *lokapaals* is like Dharanendra and his *lokapaals*. The description of Indras in the north and their *lokapaals* is like Bhootanand and his *lokapaals*. The difference being that the names of the throne and capital city of each Indra resemble the name of the particular Indra. Their families follow the description mentioned in lesson one of the third chapter. The names of the throne and capital city of each *lokapaal* resemble the name of the particular *lokapaal*. The description of their families resembles that of the *lokapaals* of Chamarendra.

व्यन्तर देवेन्द्रों के देवी-परिवार GODDESSES OF KINGS OF VYANTAR GODS

१७. [प्र.] कालस्स णं भंते! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—कमला १, कमलप्पभा २, उप्पला ३, सुदंसणा ४। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं, सेसं जहा चमरलोगपालाणं। परियारो तहेव, नवरं कालाए रायहाणीए कालंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। एवं महाकालस्स वि।

१७. [प्र.] भगवन्! पिशाचेन्द्र पिशाचराज काल की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (कालेन्द्र की) चार अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—(१) कमला, (२) कमलप्रभा, (३) उत्पला और (४) सुदर्शना। इनमें से प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी) के एक-एक हजार देवियों का परिवार है। शेष समग्र वर्णन चमरेन्द्र के लोकपालों के समान है एवं परिवार का कथन भी उसी के परिवार के सदृश है। विशेष इतना है कि इसके 'काला' नाम की राजधानी

और काल नामक सिंहासन है। शेष सब वर्णन पूर्ववत् है। इसी प्रकार पिशाचेन्द्र महाकाल के विषय में भी जानना चाहिए।

17. [Q.] *Bhante!* How many chief consorts does Kaal, the king of Pishaachas (a class of lower gods) have?

[Ans.] Noble ones! He (Kaal) has four chief consorts—(1) Kamala, (2) Kamal-prabha, (3) Utpala and (4) Sudarshana. Each of these goddesses has a family of one thousand goddesses. All the remaining details are just like those of the *Lokapaal*s of Chamarendra. The description of families also follows the same pattern. The only difference is that the names of his throne and capital city are Kaal and Kaala respectively. All other details follow the same pattern. The same is true for Mahakaal, the king of Pishaachas.

१८. [प्र.] सुरूवस्स णं भंते ! भूइंदस्स भूयरन्नो० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—रूववई १, बहुरूवा २, सुरूवा ३, सुभगा ४। तत्थ णं एगमेगाए० सेसं जहा कालस्स। एवं पडिरूवगस्स वि।

१८. [प्र.] भगवन्! भूतेन्द्र भूतराज सुरूप की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो ! (सुरूपेन्द्र भूतराज की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. रूपवती, २. बहुरूपा, ३. सुरूपा और ४. सुभगा। इनमें से प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी) के परिवार आदि का वर्णन कालेन्द्र के समान जानना चाहिए। इसी प्रकार प्रतिरूपेन्द्र के (देवी-परिवार आदि के) विषय में भी जानना चाहिए।

18. [Q.] *Bhante!* How many chief consorts does Surupa, the king of Bhoots (a class of lower gods) have?

[Ans.] Noble ones! He (Surupa) has four chief consorts—(1) Rupavati, (2) Bahurupa, (3) Surupa and (4) Subhaga. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as that of Kaal, the king of Pishaachas. The same is true for Pratirupa, the king of Bhoots.

१९. [प्र.] पुण्णभद्दस्स णं भंते ! जक्खिदस्स० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—पुण्णा १, बहुपुत्तिया २, उत्तमा ३, तारया ४। तत्थ णं एगमेगाए० सेसं जहा कालस्स एवं माणिभद्दस्स वि।

१९. [प्र.] भगवन् यक्षेन्द्र यक्षराज पूर्णभद्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! चार अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—१. पूर्णा, २. बहुपुत्रिका, ३. उत्तमा और ४. तारका। इनमें प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी) के परिवार आदि का वर्णन कालेन्द्र के समान है। इसी प्रकार माणिभद्र (यक्षेन्द्र) के विषय में भी जान लेना चाहिए।

19. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Purnabhadra, the king of Yakshas (a class of lower gods) have ?

[Ans.] Noble ones! He (Purnabhadra) has four chief consorts—(1) Purna, (2) Bahuputrika, (3) Uttama and (4) Taraka. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as that of Kaal. The same is true for Maanibhadra, the king of Yakshas.

२०. [प्र.] भीमस्स णं भंते ! रक्खसिंदस्स० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—पउमा १, पउमावई २, कणगा ३, रयणप्पभा ४। तत्थ णं एगमेगाए० सेसं जहा कालस्स। एवं महाभीमस्स वि।

२०. [प्र.] भगवन् ! राक्षसेन्द्र राक्षसराज भीम के कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (भीमेन्द्र की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. पद्मा, २. पद्मावती, ३. कनका और रत्नप्रभा। इनमें से प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी) के परिवार आदि का वर्णन कालेन्द्र के समान है। इसी प्रकार महाभीम (राक्षसेन्द्र) के विषय में भी जान लेना चाहिए।

20. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Bheem, the king of Raakshasas (a class of lower gods) have ?

[Ans.] Noble ones ! He (Bheem) has four chief consorts—(1) Padmaa, (2) Padmavati, (3) Kanaka and (4) Ratnaprabha. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as that of Kaal. The same is true for Mahabheem, the king of Raakshasas.

२१. [प्र.] किन्नरस्स णं भंते ! पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—वडेंसा १, केतुमई २, रइसेणा ३, रइप्पिया ४। तत्थ णं० सेसं तं चेव। एवं किंपुरिसस्स वि।

२१. [प्र.] भगवन्! किन्नरेन्द्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (किन्नरेन्द्र की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. अवतंसा, २. केतुमती, ३. रतिसेना और ४. रतिप्रिया। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार के विषय में पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिए। इसी प्रकार किम्पुरुषेन्द्र के विषय में कहना चाहिए।

21. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Kinnarendra, the king of Kinnars (a class of lower gods) have ?

[Ans.] Noble ones ! He (Kinnarendra) has four chief consorts—(1) Avatamsa, (2) Ketumati, (3) Ratisena and (4) Ratipriya. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as mentioned earlier. The same is true for Kimpurushendra, the king of Kinnaras.

२२. [प्र.] सप्पुरिसस्स णं० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—रोहिणी १, नवमिया २, हिरी ३, पुप्फवई ४। तत्थ णं एगमेगा०, सेसं तं चेव। एवं महापुरिसस्स वि।

२२. [प्र.] भगवन्! सत्पुरुषेन्द्र की कितनी अग्रमहिषियाँ है?

[उ.] आर्यो! (सत्पुरुषेन्द्र की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. रोहिणी, २. नवमिका, ३. ह्री और ४. पुष्पवती। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार का वर्णन पूर्वोक्तरूप से जानना चाहिए। इसी प्रकार महापुरुषेन्द्र के विषय में भी कथन है।

22. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Satpurushendra, the king of Kimpurushas (a class of lower gods) have ?

[Ans.] Noble ones ! He (Satpurushendra) has four chief consorts—(1) Rohini, (2) Navamika, (3) Hri and (4) Pushpavati. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as mentioned earlier. The same is true for Mahapurushendra, the king of Kimpurushas.

२३. [प्र.] अतिकायस्स णं भंते ! पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—भुयगा १, भुयगवई २, महाकच्छा ३, फुडा ४। तत्थ णं०, सेसं तं चेव। एवं महाकायस्स वि।

२३. [प्र.] भगवन्! अतिकायेन्द्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (अतिकायेन्द्र की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—(१) भुजंगा, (२) भुजंगवती, (३) महाकच्छा और (४) स्फुटा। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार का वर्णन पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिए। इसी प्रकार महाकायेन्द्र के विषय में भी कथन है।

23. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Atikaayendra, the king of Mahorags (a class of lower gods) have ?

[Ans.] Noble ones! He (Atikaayendra) has four chief consorts— (1) Bhujaga, (2) Bhujagavati, (3) Mahakachchha and (4) Sfuta. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as mentioned earlier. The same is true for Mahakaayendra, the king of Mahorags.

२४. [प्र.] गीयरइस्स णं भंते! पुच्छा।

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—सुघोसा १, विमला २, सुस्सरा ३, सरस्सई ४। तत्थ णं० सेसं तं चेव। एवं गीयजसस्स वि।

सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स, नवरं सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य। सेसं तं चेव।

२४. [प्र.] भगवन्! गीतरतीन्द्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. सुघोषा, २. विमला, ३. सुस्वरा और ४. सरस्वती। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार का वर्णन पूर्ववत् है। इसी प्रकार गीतशय-इन्द्र के विषय में भी कथन है।

इन सभी इन्द्रों का शेष सम्पूर्ण वर्णन कालेन्द्र के समान है। राजधानियों और सिंहासनों का नाम इन्द्रों के नाम के समान है। शेष सभी वर्णन पूर्ववत् (एक जैसा) है।

24. [Q.] *Bhante!* How many chief consorts does Geetaratindra, the king of Gandharvas (a class of lower gods) have?

[Ans.] Noble ones! He (Geetaratindra) has four chief consorts— (1) Sughosha, (2) Vimala, (3) Susvara and (4) Sarasvati. The description of each of these goddesses (chief consorts) and her family should be taken as mentioned earlier. The same is true for Geetayash, the king of Gandharvas.

Remaining details about all these Indras are same as Kaal. The names of the throne and capital city of each Indra resemble the name of the particular Indra. Other details are as mentioned earlier.

विवेचन—व्यन्तरजातीय देवों के ८ प्रकार—(१) पिशाच, (२) भूत, (३) यक्ष, (४) राक्षस, (५) किन्नर, (६) किम्पुरुष, (७) महोरग, एवं (८) गन्धर्व।

इन आठों के प्रत्येक समूह के दो-दो इन्द्रों के नाम—(१) पिशाच के दो इन्द्र—काल और महाकाल, (२) भूत के दो इन्द्र—सुरूप और प्रतिरूप; (३) यक्ष के दो इन्द्र—पूर्णभद्र और मणिभद्र, (४) राक्षस के दो इन्द्र—भीम और महाभीम, (५) किन्नर के दो इन्द्र—किन्नर और किम्पुरुष,

(६) किम्पुरुष के दो इन्द्र—सत्पुरुष और महापुरुष, (७) महोरग के दो इन्द्र—अतिकाय और महाकाय तथा (८) गान्धर्व के दो इन्द्र—गीतरति और गीतयश।

इनके प्रत्येक के चार-चार अग्रमहिषियाँ हैं और प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार की संख्या एक-एक हजार है। इन इन्द्रों की प्रत्येक की राजधानी और सिंहासन का नाम अपने-अपने नाम के अनुरूप होता है। ये सभी इन्द्र अपनी-अपनी सुधर्मा सभा में अपने देवी परिवार के साथ मैथुन-निमित्तक भोग नहीं भोग सकते हैं।

Elaboration—There are eight kinds of Vyantar Devas (interstitial gods)—(1) Pishaach, (2) Bhoot, (3) Yaksha, (4) Raakshas, (5) Kinnar, (6) Kimpurush, (7) Mahorag and (8) Gandharva.

Names of two kings (Indras) each of these eight groups of gods—(1) Pishaach–Kaal and Mahakaal, (2) Bhoot–Surupa and Pratirupa, (3) Yaksha–Purnabhadra and Maanibhadra, (4) Raakshas–Bheem and Mahabheem, (5) Kinnar–Kinnar and Kimpurush, (6) Kimpurush–Satpurush and Mahapurush, (7) Mahorag–Atikaaya and Mahakaaya and (8) Gandharva–Geetarati and Geetayash.

Each of these kings has four chief consorts and each of these chief consorts has a family of one thousand goddesses. The names of the throne and capital city of each Indra resemble the name of the particular Indra. All these Indras cannot enjoy carnal pleasures with their respective families of goddesses in their respective assemblies.

चन्द्र-सूर्य-ग्रहों के देवी-परिवार **GODDESSES OF STELLAR GODS**

२५. [प्र.] चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा १, दोसिणाभा २, अच्चिमाली ३, पभंकरा ४। एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव।

२५. [प्र.] भगवान्! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र की चार अग्रमहिषियाँ हैं—(१) चन्द्रप्रभा, (२) ज्योत्स्नाभा, (३) अर्चिमाली एवं (४) प्रभंकरा। शेष समस्त वर्णन जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के द्वितीय उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिए।

25. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Chandra, the king of Jyotishk Devas (stellar gods) have?

[Ans.] Noble ones ! He (Chandra) has four chief consorts—(1) Chandraprabha, (2) Jyotsnabha, (3) Archimali and (4) Prabhankara.

All the remaining description should be quoted from the second lesson of the third chapter of Jivabhigam Sutra.

२६. सूरस्स वि सूरप्पभा १, आयवाभा २, अच्चिमाली ३, पभंकरा ४। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं।

२६. इसी प्रकार सूर्य के विषय में भी जानना चाहिए। सूर्येन्द्र की चार अग्रमहिषियाँ हैं–(१) सूर्यप्रभा, (२) आतपाभा, (३) अर्चिमाली और (४) प्रभंकरा। शेष सब वर्णन पूर्ववत् है यावत् वे अपनी राजधानी की सुधर्मा सभा में सिंहासन पर बैठ कर अपने देवी परिवार के साथ मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं हैं।

26. The same is true for Surya. The four chief consorts of Surya, the king of stellar gods—(1) Suryaprabha, (2) Atapabha, (3) Archimali and (4) Prabhankara. Rest of the description is as mentioned earlier... and so on up to... They cannot enjoy carnal pleasures with their respective families of goddesses in their respective assemblies.

२७. [प्र.] इंगालस्स णं भंते ! महग्गहस्स कइ अग्ग० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–विजया १, वेजयंती २, जयंती ३, अपराजिया ४। तत्थ णं एगमेगाए देवीए०, सेसं जहा चंदस्स, नवरं इंगालवडेंसए विमाणे इंगालगंसि सीहासणंसि। सेसं तं चेव।

२७. [प्र.] भगवन्! अंगार (मंगल) नामक महाग्रह की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (अंगार-महाग्रह की) चार अग्रमहिषियाँ हैं–(१) विजया, (२) वैजयन्ती, (३) जयन्ती और (४) अपराजिता। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार का वर्णन चन्द्रमा के देवी-परिवार के समान है। परन्तु इतना विशेष है कि इसके विमान का नाम अंगारावतंसक और सिंहासन का नाम अंगारक है, इत्यादि शेष समग्र वर्णन पूर्ववत् है।

27. **[Q.]** *Bhante!* How many chief consorts does the great planet (*mahagraha*) Angaar (Mangal or Mars) have?

[Ans.] Noble ones! He (Angaar) has four chief consorts—(1) Vijayaa, (2) Vaijayanti, (3) Jayanti and (4) Aparajitaa. The description of the family of goddesses of each of these chief consorts is like that of the family of goddesses of Chandrama. The only difference is that the name of his *avatamsak* (abode or celestial vehicle) is Angaaravatamsak and that of the throne is Angaarak. The remaining details are as mentioned earlier.

२८. एवं वियालगस्स वि। एवं अट्ठासीतीए वि महागहाणं भाणियव्वं जाव भावकेउस्स। नवरं वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि। सेसं तं चेव।

२८. इसी प्रकार व्यालक नामक ग्रह के विषय में भी कथन है। इसी प्रकार ८८ महाग्रहों के विषय में यावत्–भावकेतु ग्रह तक जानना चाहिए। परन्तु विशेष यह है कि अवतंसकों और सिंहासनों का नाम इन्द्र के नाम के अनुरूप है। शेष सब वर्णन पूर्ववत् है।

28. In the same way repeat the description about the planet called Vyaalak. The same is true for all 88 Mahagrahas up to Bhaavaketu. The difference being that the names of *Avatamsak*s and thrones follow the name of the respective god. The remaining description is as mentioned earlier.

शक्रेन्द्र तथा लोकपालों का देवी-परिवार

GODDESSES OF SHAKRENDRA AND HIS *LOKAPAALS*

२९. [प्र.] सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो० पुच्छा।

[उ.] अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—पउमा १, सिवा २, सेया ३, अंजू ४, अमला ५, अच्छरा ६, नवमिया ७, रोहिणी ८। तत्थ णं एगमेगाए देवीए सोलस सोलस देवीसहस्सा परियारो पन्नत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं सोलस सोलस देवीसहस्सा परियारं विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देविसयसहस्सं, से त्तं तुडिए।

२९. [प्र.] भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (शक्रेन्द्र की) आठ अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—(१) पद्मा, (२) शिवा, (३) श्रेया, (४) अंजू, (५) अमला, (६) अप्सरा, (७) नवमिका और (८) रोहिणी। इनमें से प्रत्येक देवी (अग्रमहिषी) का सोलह-सोलह हजार देवियों का परिवार कहा गया है। इनमें से प्रत्येक देवी सोलह-सोलह हजार देवियों के परिवार की विकुर्वणा कर सकती है। इस प्रकार पूर्वा-पर सब मिलाकर एक लाख अट्ठाईस हजार देवियों का परिवार होता है। यह एक त्रुटिक (देवियों का वर्ग) कहलाता है।

29. **[Q.]** *Bhante!* How many chief consorts does Shakrendra, the king of gods have ?

[Ans.] Noble ones! He (Shakrendra) has eight chief consorts—(1) Padmaa, (2) Shiva, (3) Shreya, (4) Anju, (5) Amala, (6) Apsara, (7) Navamika and (8) Rohini. Each one of them has a family of sixteen thousand goddesses. Each of these goddesses (chief consorts) can create

or raise a family of sixteen thousand goddesses. Thus, all told, the total number of goddesses is one lac twenty-eight thousand. This is called a group (*trutik* or *varga*).

३०. [प्र.] पभू णं भंते! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं०।

[उ.] सेसं जहा चमरस्स। नवरं परियारो जहा मोउद्देसए (स. ३ उ. १ सु. १५)।

३०. [प्र.] भगवन्! क्या देवेन्द्र देवराज शक्र, सौधर्म-कल्प (देवलोक) में, सौधर्मावतंसक विमान में, सुधर्मा सभा में, शक्र नामक सिंहासन पर बैठ कर अपने (उक्त) त्रुटिक के साथ भोग भोगने में समर्थ है?

[उ.] (आर्यो!) इसका समग्र वर्णन चमरेन्द्र के समान है। विशेष इतना ही है कि इसके परिवार का कथन भगवती सूत्र के तीसरे शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार जान लेना चाहिए।

30. [Q.] *Bhante!* Can Shakrendra, the king of gods, enjoy divine pleasures sitting on the Shakra throne in his Sudharma assembly in his celestial vehicle Saudharmavatamsak in Saudharma divine realm along with the said group of goddesses?

[Ans.] (Noble ones!) All this description follows the pattern of Chamarendra. More details about his family should be taken to be same as those mentioned in the first lesson, of the third chapter of Bhagavati Sutra.

३१. [प्र.] सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ० पुच्छा।

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—रोहिणी १, मदणा २, चित्ता ३, सोमा ४। तत्थ णं एगमेगा०, सेसं जहा चमरलोगपालाणं। नवरं सयंपभे विमाणे सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। एवं जाव वेसमणस्स, नवरं विमाणाइं जहा तइयसए (स. ३ उ. ७)।

३१. [प्र.] भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र के लोकपाल सोम महाराज की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (लोकपाल सोम महाराजा की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. रोहिणी, २. मदना, ३. चित्रा और ४. सोमा। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी के देवी-परिवार का वर्णन चमरेन्द्र के

लोकपालों के समान है। किन्तु इतना विशेष है कि स्वयंप्रभ नामक विमान में सुधर्मा सभा में सोम नामक सिंहासन पर बैठ कर यावत् मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है इत्यादि यावत् वैश्रमण लोकपाल तक का कथन करना चाहिए। विशेष यह है कि इनके विमान आदि का वर्णन (भगवती सूत्र के) तृतीय शतक के सातवें उद्देशक में कहे अनुसार समझें।

31. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Soma, the realm-guardian (*lokapaal*) of Shakrendra, the king of gods have?

[Ans.] (Noble ones !) He (Soma) has four chief consorts—(1) Rohini, (2) Madana, (3) Chitra and (4) Somaa. The description of the family of goddesses of these Chief consorts follows the pattern of the *lokapaal*s of Chamarendra. The difference is that he is not able to enjoy carnal pleasures sitting on the Soma throne in the Sudharma assembly in the Svayamprabh celestial vehicle etc. ... and so on up to... description of *Lokapaal* Vaishraman. The difference being that the description of their celestial vehicles and other things should be taken from the seventh lesson of the third chapter of Bhagavati Sutra.

ईशानेन्द्र तथा उसके लोकपालों का देवी-परिवार

GODDESSES OF ISHAANENDRA AND HIS *LOKAPAALS*

३२. [प्र.] ईसाणस्स णं भंते ! पुच्छा।

[उ.] अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—कण्हा १, कण्हराई २, रामा ३, रामरक्खिया ४, वसू ५, वसुगुत्ता ६, वसुमित्ता ७, वसुंधरा ८। तत्थ णं एगमेगाए० सेसं जहा सक्कस्स।

३२. [प्र.] भगवन्! देवेन्द्र देवराज ईशान की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! ईशानेन्द्र की आठ अग्रमहिषियाँ हैं। यथा—१. कृष्णा, २. कृष्णराजि, ३. रामा, ४. रामरक्षिता, ५. वसु, ६. वसुगुप्ता, ७. वसुमित्रा, ८. वसुन्धरा। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी की देवियों के परिवार आदि का शेष समस्त वर्णन शक्रेन्द्र के समान जानना चाहिए।

32. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts does Ishaanendra, the king of gods have ?

[Ans.] Noble ones ! He (Ishaanendra) has eight chief consorts—(1) Krishna, (2) Krishnarashi, (3) Rama, (4) Ramarakshita, (5) Vasu, (6) Vasugupta, (7) Vasumitra and (8) Vasundhara. Other details about their families of goddesses and other things are same as those about Shakrendra.

३३. [प्र.] ईसाणस्स णं भंते! देविंदस्स सोमस्स महारण्णो कइ० पुच्छा।

[उ.] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—पुढवी १, राती २, रयणी ३, विज्जू ४। तत्थ णं०, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं। एवं जाव वरुणस्स, नवरं विमाणा जहा चउत्थसए (स. ४ उ. १)। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ।

॥ दसमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो॥१०.५॥

३३. [प्र.] भगवन्! देवेन्द्र ईशान के लोकपाल सोम महाराजा की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] आर्यो! (सोम लोकपाल की) चार अग्रमहिषियाँ हैं—१. पृथ्वी, २. रात्रि, ३. रजनी और ४. विद्युत्। इनमें से प्रत्येक अग्रमहिषी की देवियों के परिवार आदि शेष समग्र वर्णन शक्रेन्द्र के लोकपालों के समान है। इसी प्रकार यावत् वरुण लोकपाल तक जानना चाहिए। विशेष यह है कि इनके विमानों का वर्णन चौथे शतक के प्रथम उद्देशक के अनुसार कहें। शेष पूर्ववत् यावत्—वह मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। भगवन्! यह इसी प्रकार है,' ऐसा कह कर आर्य स्थविर यावत् विचरण करते हैं।

॥ दशम शतक: पंचम उद्देशक समाप्त॥

33. [Q.] *Bhante!* How many chief consorts does Soma, the realm-guardian (*lokapaal*) of Shakrendra, the king of gods have?

[Ans.] Noble ones! He (Soma) has four chief consorts—(1) Prithvi, (2) Ratri, (3) Rajani and (4) Vidyut. The description of the family of goddesses of these Chief consorts follows the pattern of the *lokapaals* of Shakrendra. The same is true also for other *Lokapaals* up to Varun. The difference is that the description of their celestial vehicles should be according to the first lesson of the fourth chapter. Remaining description is same as mentioned earlier ... and so on up to ... They cannot enjoy carnal pleasures.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE FIFTH LESSON OF THE TENTH CHAPTER •

छट्ठो उद्देसओ : सभा

छठा उद्देशक : सभा (शक्रेन्द्र की सुधर्मा सभा)

SHASHT UDDESHAK (SIXTH LESSON) : SABHA (SUDHARMA ASSEMBLY)

शक्रेन्द्र की सुधर्मा सभा SUDHARMA ASSEMBLY OF SHAKRENDRA

१. [प्र.] कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पंच वडेंसगा पन्नत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए जाव मज्झे सोहम्मवडेंसए। से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं।

"एवं जह सूरियाभे तहेव माणं तहेव उववाओ।
सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स॥"

अलंकार अच्चणिया तहेव जाव आयरक्ख त्ति, दो सागरोवमाइं ठिई।

१. [प्र.] भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र की सुधर्मा सभा कहाँ है?

[उ.] गौतम! जम्बूद्वीप नामक द्वीप के मेरुपर्वत के दक्षिण दिशा में, इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसम रमणीय भूभाग से अनेक कोटा-कोटि योजन दूर ऊँचाई में सौधर्म नामक देवलोक में सुधर्मा सभा है; इस प्रकार सारा वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र के अनुसार है, यावत् पांच अवतंसक विमान कहे गए हैं; यथा—अशोकावतंसक यावत् मध्य में सौधर्मावतंसक विमान है। वह सौधर्मावतंसक महा-विमान की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े बारह लाख योजन है।

[गाथार्थ—] (राजप्रश्नीय सूत्रगत) शक्र का विमान-प्रमाण तथा उपपात, अभिषेक, अलंकार तथा अर्चनिका, यावत् आत्म-रक्षक इत्यादि सारा वर्णन सूर्याभ देव के समान जानना चाहिए। (केवल उसका प्रमाण जो शकेन्द्र का है वही मानना चाहिये) शकेन्द्र की स्थिति (आयु) दो सागरोपम की है।

1. **[Q.]** *Bhante!* Where the Sudharma Assembly of Shakrendra, the king of gods, is located?

[Ans.] Gautam! Many Kotakoti (millions of millions) Yojans above the beautiful level land of this Ratnaprabha Prithvi, to the south of Meru mountain on this continent called Jambudveep, the said Sudharma assembly is located in the divine realm called Saudharma. The detailed

description is as mentioned in Rajaprashniya Sutra... and so on up to... it is said to have five *Avatamsak*s (celestial vehicles), namely Ashokavatamsak... and so on up to... Saudharmavatamsak in the middle. The length and breadth of that Saudharmavatamsak celestial vehicle is twelve and a half lac (1.25 million) Yojans.

Verse—The description of the birth, anointment, ornamentation, veneration... and so on up to... his bodyguards (of Shakrendra) etc. is same as that of Suryaabh god (only the dimension follows the Shakrendra standard). The life span of Shakrendra is two Sagaropam (a metaphoric unit of time).

२. [प्र.] सक्के णं भंते! देविंदे देवराया केमहिड्डीए जाव केमहासोक्खे?

[उ.] गोयमा! महिड्डीए जाव महासोक्खे, से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं जाव विहरइ, एवं महिड्डीए जाव महासोक्खे सक्के देविंदे देवराया।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति०।

॥ दसमे सए छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥ १०.६ ॥

२. [प्र.] भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र कितनी महा-ऋद्धि वाला यावत् कितने महान् सुख वाला है?

[उ.] गौतम! वह महा-ऋद्धिशाली यावत् महा-सुख-सम्पन्न है। वह वहाँ बत्तीस लाख विमानों का स्वामी है। देवेन्द्र देवराज शक्र इस प्रकार की महा-ऋद्धि सम्पन्न और महा-सुखी है।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है!' ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ दशम शतक : छठा उद्देशक समाप्त ॥

2. [Q.] *Bhante !* How great is the wealth of Shakrendra, the king of gods... and so on up to... how great is his happiness ?

[Ans.] Gautam ! He is endowed with enormous wealth... and so on up to... he is endowed with great happiness. He is the lord of thirty-two lac (3.2 million) celestial vehicles. Thus Shakrendra, the king of gods is enormously wealthy and extremely happy.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE SIXTH LESSON OF THE TENTH CHAPTER •

सत्तमाइ-चोत्तीसइम पज्जंता उद्देसा : अंतरदीवा
सातवें से चौतीसवें तक के उद्देशक :
उत्तरवर्ती (अट्ठाईस) अन्दर्द्वीप
SHASHTAM- CHATUSTRIMSH UDDESHAKAM
(SEVENTH TO THIRTY-FOURTH LESSONS) :
UTTARVARTI ANTARDVEEP (NORTHERN MIDDLE-ISLANDS)

१. [प्र.] कहि णं भंते! उत्तरिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पन्नत्ते?

[उ.] एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ।

॥ दसमे सए सत्तमाइ-चोत्तीसइम पज्जंता उद्देसा समत्ता॥

॥ दसमं सयं समत्तं॥

१. [प्र.] भगवन्! उत्तर दिशा में रहने वाले एकोरुक मनुष्यों का एकोरुक द्वीप नामक द्वीप कहाँ है?

[उ.] गौतम! एकोरुक द्वीप से लेकर यावत् शुद्धदन्त द्वीप तक का समस्त वर्णन जीवाभिगम सूत्र में कहे अनुसार है। (प्रत्येक द्वीप के सम्बन्ध में एक-एक उद्देशक है।) इस प्रकार अट्ठाईस द्वीपों के ये अट्ठाईस उद्देशक हैं।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! भगवन्! यह इसी प्रकार है!' ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ दशम शतक : सातवें से चौतीसवें उद्देशक तक सम्पूर्ण॥

॥ दशम शतक सम्पूर्ण॥

1. [Q.] *Bhante!* Where is the Ekoruk island inhabited by northern Ekoruk human beings is located?

[Ans.] Gautam! Complete description of Ekoruk island... and so on up to... Shuddhadant island is as mentioned in Jivabhigam Sutra.

(One lesson is devoted to one island.) Thus there are twenty-eight lessons for twenty-eight islands (to be read here).

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—इससे पूर्व नौवें शतक के तीसरे से तीसवें उद्देशक तक में दक्षिण दिशा के अन्तर्द्वीपों का वर्णन किया जा चुका है। प्रस्तुत दशम शतक के ७ वें से ३४ वें उद्देशक तक में उत्तर दिशा के अन्तर्द्वीपों का निरुपण किया गया है, जो दक्षिण-दिग्वर्ती अन्तर्द्वीपों के ही समान है। २८ नाम भी समान हैं। शेष वर्णन पूर्व नवम् शतक के अनुसार जानें।

Elaboration—Earlier southern middle-islands have been described in third to thirtieth lessons of the ninth chapter. Here northern middle-islands have been described in seventh to thirty-fourth lessons, which is same as the southern middle-islands. The twenty eight names are also the same, other details should be read as in the ninth chapter.

• END OF SEVENTH TO THIRTY-FOURTH LESSONS OF THE TENTH CHAPTER •

एक्कारसं सयं : ग्यारहवाँ शतक
EKADASH SHATAK (CHAPTER ELEVEN)

प्राथमिक **INTRODUCTION**

व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के ग्यारहवें शतक में कुल 12 उद्देशक हैं।

प्रथम एक से आठ उद्देशकों में उत्पल से लेकर एकेन्द्रिय वनस्पतिकाय जीव के सम्बन्ध में कर्मबन्ध के 32 द्वारों–उत्पत्ति–स्थितिबन्ध–योग–उपयोग–लेश्या–आहार आदि के माध्यम से प्रश्नोत्तर शैली में कर्म विषयक विविध शंकाओं का समाधान किया गया है।

नौवें उद्देशक में शिव राजा का वृतांत दिया गया है।

दसवें उद्देशक में लोक का स्वरूप, द्रव्यादि के प्रकार, अधोलोक, जीव–अजीव विषय का व्यापक वर्णन है।

ग्यारहवें उद्देशक में काल और उसके प्रकार का एवं सुदर्शन श्रेष्ठि का वर्णन है।

बारहवें उद्देशक में ऋषिभद्र पुत्र, श्रमणोपासक एवं मुद्गल परिव्राजक का जीवन वृत्तान्त दिया गया है।

In the tenth chapter of *Vyakhya Prajnapti* there are twelve lessons.

The first eight lessons deal with the life in *Utpal* (a class of lotus) and other one-sensed plant-bodied living beings. It explains various queries about *karma* with reference to the thirty two sources of bondage of *karma* including *utpatti* (origin), *sthitibandh* (acquiring bondage of span of existence), *yoga* (association), *upayoga* (intent for indulgence), *leshya* (soul-complexion) and *aahaar* (food intake). As earlier, this has been done in question-answer style.

The ninth lesson contains the story of king Shivi.

The tenth lesson has detailed descriptions of a variety of topics including the form of cosmos, kinds of substance etc., the lower world as well as the living and the non-living.

The eleventh chapter describes time and its divisions. It also has the story of Sudarshan merchant.

The twelfth chapter gives the stories of Rishibhadra's son, Shramanopasak and Mudgal Parivrajak.

१. उप्पल १ सालु २ पलासे ३ कुंभी ४ नालीय ५ पउम ६ कण्णीय ७।
नलिण ८ सिव ९ लोग १० कालाऽऽलभिय ११-१२ दस दो य एक्कारे॥१॥

ग्यारहवें शतक के बारह उद्देश्क इस प्रकार हैं—(१) उत्पल, (२) शालूक, (३) पलाश, (४) कुम्भी, (५) नाडीक, (६) पद्म, (७) कर्णिका, (८) नलिन, (९) शिवराजर्षि, (१०) लोक, (११) काल और (१२) आलभिक।

1. The twelve lessons of the eleventh chapter are—(1) *Utpal*, (2) *Shaaluk*, (3) *Palaash*, (4) *Kumbhi*, (5) *Naadeek*, (6) *Padma*, (7) *Karnika*, (8) *Nalin*, (9) Shiva Rajarshi, (10) *Lok*, (11) *Kaal*, and (12) *Aalabhik*. [1]

पढमो उद्देसओ : उप्पल
प्रथम उद्देशक : उत्पल (जीव विषयक)
PRATHAM UDDESHAK (FIRST LESSON) : *UTPAL* (LIFE IN LOTUS)

द्वार गाथाएँ VERSES OF THEMES

उववाओ १, परिमाणं २, अवहारुच्चत्त ३-४, बंध ५, वेदे ६ य।
उदए ७, उदीरणाए ८, लेसा ९, दिट्ठी १०, य नाणे ११ य ॥२॥
जोगुवओगे १२-१३, वण्ण-रसमाइ १४, ऊसासगे १५, य आहारे १६।
विरई १७, किरिया १८, बंधे १९, सण्ण २०, कसायित्थि २१-२२, बंधे २३ य ॥३॥
सण्णिंदिय २४-२५, अणुबंधे २६, संवेहाऽऽहार २७-२८, ठिइ २९, समुग्घाए ३०।
चयणं ३१, मूलादीसु य उववाओ सव्वजीवाणं ३२॥४॥

१. उपपात, २. परिमाण, ३. अपहार, ४. ऊँचाई (अवगाहना), ५. बन्धक, ६. वेद, ७. उदय, ८. उदीरणा, ९. लेश्या, १०. दृष्टि, ११. ज्ञान, १२. योग, १३. उपयोग, १४. वर्ण-रसादि, १५. उच्छ्वास, १६. आहार, १७. विरति, १८. क्रिया, १९. बन्धक, २०. संज्ञा, २१. कषाय, २२. स्त्रीवेदादि, २३. बन्ध, २४. संज्ञी, २५. इन्द्रिय, २६. अनुबन्ध, २७. संवेध, २८. आहार, २९. स्थिति, ३०. समुद्घात, ३१. च्यवन और ३२. सभी जीवों का मूलादि में उपपात।

(1) *Upapaat*, (2) *Parimaan*, (3) *Apahaar*, (4) *Uchchata*, (5) *Bandhak*, (6) *Veda*, (7) *Udaya*, (8) *Udeerana*, (9) *Leshya*, (10) *Drishti*, (11) *Jnana*,

(12) *Yoga*, (13) *Upayoga*, (14) *Varna-rasaadi*, (15) *Uchchhavaas*, (16) *Aahaar*, (17) *Virati*, (18) *Kriya*, (19) *Bandhak*, (20) *Sanjna*, (21) *Kashaaya*, (22) *Streevedaadi*, (23) *Bandh*, (24) *Sanjni*, (25) *Indriya*, (26) *Anubandh*, (27) *Samvedha*, (28) *Aahaar*, (29) *Sthiti*, (30) *Samudghaat*, (31) *Chyavan*, and (32) *Upapaat* of all beings in root etc.

विवेचन—बत्तीस द्वार संग्रह—उपरोक्त द्वितीय सूत्र की क्रमशः तीन गाथाओं में प्रथम उद्देशक में प्रतिपाद्य विषयों का नामोल्लेख किया गया है।

यह संग्रह गाथाएँ मूल में नहीं पाई जाती। अभयदेवीय वृत्ति में प्रथम उद्देशक के अर्थ संग्रह में ये वाचनान्तर कहकर उद्धृत की गई हैं।

बन्धक शब्द यहाँ तीन बार प्रयुक्त किया गया है, प्रथम बंधक द्वार में एक जीव कर्म-बन्धक है या अनेक जीव कर्मबन्धक? इसकी चर्चा है। द्वितीय बन्धक द्वार में सप्तविध बन्धक हैं या अष्टविध बन्धक? यह चर्चा है। तीसरे बन्धद्वार में स्त्रीवेद बन्धक हैं, पुरुषवेद बन्धक या नपुंसकवेद बन्धक? इसकी चर्चा है। (वियाहपण्णत्तिसुत्तं (मूलपाठ-टिप्पण), भा. २, पृ. ५०६)

Elaboration—List of thirty two themes : The three verses of the aforesaid second statement state the names of themes discussed in the first lesson.

The original text does not contain these collative verses. They are found as alternative text in the elaboration of the first lesson in the commentary (*Vritti*) by Abhayadev.

The term '*Bandhak*' has been mentioned thrice in these verses. The first *Bandhak* theme is about bondage by one being or many beings. The second one is about seven-way or eight-way bondage. And the third one is about bondage of feminine, masculine or neuter genders. (Annotations in original text in *Viyahapannatti Suttam* Part-2, p. 506)

१. उपपात द्वार (1) THEME OF INSTANTANEOUS BIRTH (*UPAPAAT*)

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

२. उस काल और उस समय में राजगृह नामक नगर था। वहाँ पर्युपासना करते हुए गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा—

2. During that period of time there was a city named Rajagriha... and so on up to... Gautam Swami paid homage and submitted as follows—

३. [प्र.] उप्पले णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे?

[उ.] गोयमा! एगजीवे, नो अणेगजीवे। तेण परं जे अण्णे जीवा उववज्जंति ते णं नो एगजीवा, अणेगजीवे।

३. [प्र.] भगवन् ! एक पत्र वाला उत्पल (कमल) एक जीव वाला है या अनेक जीव वाला?

[उ.] गौतम! एक पत्र वाला उत्पल एक जीव वाला है, अनेक जीव वाला नहीं। उसके पश्चात् जब उस उत्पल में दूसरे जीव (जीवाश्रित पत्ते आदि अवयव) उत्पन्न होते हैं, तब वह एक जीव वाला नहीं रह कर अनेक जीव वाला बन जाता है।

3. **[Q.]** *Bhante!* Does an *Utpal* (a kind of lotus) with one petal have one soul (*jiva*) or many?

[Ans.] Gautam! (Originally) An *Utpal* (a kind of lotus) with one petal has one soul (*jiva*) not many. However, when later other souls are born (soul-carrying parts like petals sprout) on it, then it no longer remains a single-soul but carries many souls.

४. [प्र.] ते णं भंते! जीवा कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति?

[उ.] गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख जोणिएहिंतो वि उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, देवेहिंतो वि उववज्जंति। एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणे त्ति।

४. [प्र.] भगवन्! उत्पल में वे जीव कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों से आकर उत्पन्न होते हैं, या तिर्यञ्चयोनिकों से उत्पन्न होते हैं अथवा मनुष्यों से आकर उत्पन्न होते हैं या देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव नारकों से आकर उत्पन्न नहीं होते हैं, वे तिर्यञ्चयोनिकों से, मनुष्यों से और देवों से आकर उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद के अनुसार—*वनस्पतिकायिक जीवों में यावत् ईशान-देवलोक तक के जीवों का उपपात होता है।* यहाँ तक कहना चाहिये।

4. **[Q]** *Bhante!* Wherefrom these souls come, to be born in an *Utpal*? Do they come from among infernal beings, animals, human beings or divine beings?

[Ans.] Gautam! To be born in an *Utpal,* these souls do not come from among infernal beings. They come from among animals, human

beings and divine beings. Here quote, 'in plant-bodied beings are born souls from among... and so on up to...divine beings up to Ishaan divine realm', from the sixth lesson, titled Vyutkraanti, of *Prajnapana Sutra.*

विवेचन—प्रस्तुत पंचम सूत्र में उत्पल जीवों की उत्पत्ति तीन गतियों से बताई गई है—तिर्यंच से, मनुष्य से और देव से। वे नरक गति से आकर उत्पन्न नहीं होते हैं। (वियाहपण्णत्तिसुत्तं (मूलपाठ-टिप्पण), भा. २, पृ. ५०७)

Elaboration—The statement conveys that souls from among only three genuses come to be born in *Utpal* – animal, human and divine. They do not come from the infernal genus. (Annotations in original text in *Viyahapannatti Suttam* Part-2, p. 507)

२. *परिमाण द्वार* (2) THEME OF QUANTITY (*PARIMAAN*)

५. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति।

५. [प्र.] भगवन्! उत्पल में वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव एक समय में जघन्यतः एक, दो या तीन और उत्कृष्टतः संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं।

5. [Q.] *Bhante !* How many souls are born in *Utpal* in one Samaya (the smallest unit of time)?

[Ans.] Gautam! A minimum of one, two or three souls and a maximum of countable number or uncountable number of souls are born.

३. *अपहार द्वार* (3) THEME OF REMOVAL (*APAHAAR*)

६. [प्र.] ते णं भंते! जीवा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा केवइकालेणं अवहीरंति?

[उ.] गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओस्सप्पिणिहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया। [दारं ३]

६. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीवों को प्रति समय में एक-एक निकाले जाएँ तो कितने काल में वे पूरे निकाले जा सकते हैं?

[उ.] गौतम! यदि वे असंख्यात जीव एक-एक समय में एक-एक निकाले जाएँ और उन्हें असंख्य उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल तक निकाले जाएँ तो भी वे सम्पूर्ण रूप से निकाले नहीं जा सकते हैं। [—तृतीय द्वार]

6. **[Q.]** *Bhante!* If those souls, born in *Utpal*, are removed one every Samaya then what period it would take to remove them all ?

[Ans.] Gautam ! Of the innumerable souls, if one is removed every Samaya they cannot be removed completely even if the act of removing continues for innumerable progressive and regressive cycles of time.

[*–The third theme*]

४. *उच्चत्व द्वार* (4) **THEME OF HEIGHT (*UCHCHATA*)**

७. [प्र.] तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता?

[उ.] गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं। [दारं ४]।

७. [प्र.] हे भगवन्! उन (उत्पल के) जीवों की अवगाहना कितनी बड़ी कही गई है?

[उ.] गौतम! उन जीवों की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट कुछ अधिक हजार योजन है। [—चतुर्थ द्वार]

7. **[Q.]** *Bhante !* What is said to be space-occupation (*avagaahana*) of those beings (in *Utpal*) ?

[Ans.] Gautam ! The space-occupation (*avagaahana*) of those beings is a minimum of an immeasurable fraction of an Angul (a linear measure equal to the width of a finger) and a maximum of a little more than one thousand Yojans (a linear measure equal to eight miles). [*–the fourth theme*]

विवेचन—उत्पल जीवों की अवगाहना—अवगाहना का अर्थ है—ऊँचाई। उत्पल जीवों की अवगाहना जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट से कुछ अधिक हजार योजन है जो तथाविध समुद्र, गोतीर्थ आदि में उत्पन्न उत्पल की अपेक्षा से कही गई है। (१. भगवती, अ. वृत्ति, पत्र ५१२)

Elaboration—Space occupation of beings in *Utpal*—Here *avagaahana* conveys height. The height of beings *in Utpal* is a minimum of an innumerable fraction of an Angul and a maximum of a little more than one thousand Yojans. This is with reference to the *Utpal* growing in mythical oceans and Gotirth. (*Bhagavati Vritti* by Abhayadev, leaf 512)

(5-8) THEMES OF BONDAGE (*BANDHAK*), SUFFERANCE (*VEDA*), FRUITION (*UDAYA*) AND VOLITIONAL FRUITION (*UDEERANA*) OF KARMAS

८. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा, अबंधगा?

[उ.] गोयमा ! नो अबंधगा, बंधए वा बंधगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स।

८. [प्र.] भगवन्! वे (उत्पल के) जीव ज्ञानावरणीय कर्म के बन्धक हैं या अबन्धक हैं?

[उ.] गौतम! वे ज्ञानावरणीय कर्म के अबन्धक नहीं; बन्धक हैं किन्तु एक जीव हो तो एक बन्धक है और अनेक जीव हों तो अनेक बन्धक हैं। इस प्रकार आयुष्य को छोड़कर अन्तराय कर्म तक समझना चाहिए।

8. [Q.] *Bhante !* Do these souls acquire bondage (*bandh*) of Knowledge obscuring *karmas* (*Jnanavaraniya karma*) or do they not ?

[Ans.] Gautam ! They are not non-acquirers of bondage (*abandhak*) of Knowledge obscuring *karmas*. They are acquirers (*bandhak*) but when there is one soul there is one acquirer and when there are many souls there are many acquirers. Other than the life-span determining *karma* (*Ayushya karma*), the same holds good for all *karmas*... and so on up to... Power hindering *karma* (*Antaraaya karma*).

९. [प्र.] नवरं आउयस्स पुच्छा।

[उ.] गोयमा! बंधए वा १, अबंधए वा २. बंधगा वा ३, अबंधगा वा ४, अहवा बंधए य अबंधए य ५, अहवा बंधए य अबंधगा य ६, अहवा बंधगा य अबंधए य ७, अहवा बंधगा य अबंधगा य ८., एते अट्ठ भंगा। [दारं ५]

९. [प्र.] भगवन्! वे जीव, आयुष्य कर्म के बन्धक हैं, या अबन्धक?

[उ.] गौतम! (१) उत्पल का एक जीव बन्धक है, (२) एक जीव अबन्धक है, (३) अनेक जीव बन्धक है, (४) अनेक जीव अबन्धक हैं, (५) अथवा एक जीव बन्धक और एक जीव अबन्धक है, (६) अथवा एक जीव बन्धक और अनेक जीव अबन्धक हैं, (७) अथवा अनेक जीव बन्धक हैं और एक जीव अबन्धक है (८) अथवा अनेक जीव बन्धक हैं और अनेक जीव अबन्धक हैं। इस प्रकार ये आठ भंग होते हैं। [—पंचम द्वार]

9. [Q.] *Bhante !* Do these souls acquire bondage (*bandh*) of Life-span determining *karmas* (*Ayushya karma*) or do they not ?

[Ans.] Gautam ! (It is like this—) (1) One soul (in *Utpal*) is acquirer (of bondage of *karma*), (2) or one soul is non-acquirer, (3) or many souls

are acquirers, (4) or many souls are non-acquirers, (5) or one soul is acquirer and one soul is non-acquirer, (6) or one soul is acquirer and many souls are non-acquirers, (7) or many souls are acquirers and one soul is non-acquirer, (8) or many souls are acquirers and many souls are non-acquirers. Thus there are eight options. [*–the fifth theme*]

१०. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेयगा, अवेयगा?

[उ.] गोयमा ! नो अवेयगा, वेयए वा वेयगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स।

१०. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदते हैं या नहीं वेदते हैं? वेदक हैं या अवेदक हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव अवेदक नहीं, एक जीव हो तो एक जीव वेदता है और अनेक जीव हों तो अनेक जीव वेदते हैं। इसी प्रकार अन्तराय कर्म तक समझना चाहिए।

10. [Q.] *Bhante !* Do these souls (in *Utpal*) suffer (*vedan*) (fruits of) (Knowledge obscuring *karmas* (*Jnanavaraniya karma*) or do they not? Are they sufferers (*vedak*) or non-sufferers (*avedak*) ?

[Ans.] Gautam ! They are not non-sufferers. When there is one soul there is one sufferer and when there are many souls there are many sufferers. The same holds good for all *karmas* ... and so on up to ... Power hindering *karma* (*Antaraaya karma*).

११. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं सायावेयगा, असायावेयगा?

[उ.] गोयमा ! सायावेयए वा, असायावेयए वा, अट्ठ भंगा। [दारं ६]।

११. [प्र.] भगवन्! वे (उत्पल के) जीव साता वेदते हैं या असाता वेदते हैं?

[उ.] गौतम! एक जीव साता वेदता है, अथवा एक जीव असाता वेदता है, आदि उपर बताए आठ भंग समझने चाहिए। [–छठा द्वार]

11. [Q.] *Bhante !* (As fruits of *karmas*) Do these souls (in *Utpal*) experience pleasure (*saata vedan*) or pain (*asaata vedan*) ?

[Ans.] Gautam ! (It is like this —) (1) One soul (in *Utpal*) experiences pleasure, (2) or one soul experiences pain, and repeat the aforesaid eight options (statement 9). [*– the sixth theme*]

१२. [प्र.] ते णं भंते! जीवा नाणावरणिज्जस कम्मस्स किं उदई, अणुदई?

[उ.] गोयमा! नो अणुदई, उदई वा उदइणो वा। एवं जाव अंतराइयस्स। [दारं ७]।

१२. [प्र.] भगवन्! वे जीव ज्ञानावरणीय कर्म के उदय वाले हैं या अनुदय वाले हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव ज्ञानावरणीय कर्म से अनुदय वाले नहीं हैं, एक जीव हो तो भी उदय वाले होते हैं अथवा अनेक जीव हों तो भी उदय वाले होते हैं। इसी प्रकार अन्तराय कर्म तक जान लेना चाहिए। [—सातवाँ द्वार]

12. [Q.] *Bhante !* Do these souls (in *Utpal*) experience fruition (*udaya*) of Knowledge obscuring *karmas* (*Jnanavaraniya karma*) or do they not ?

[Ans.] Gautam ! It is not that they do not experience fruition (*anudaya*). Whether there is one soul or there are many souls, all experience fruition (*udaya*). The same holds good for all *karmas*... and so on up to... Power hindering *karma* (*Antaraaya karma*). [–*the seventh theme*]

१३. [प्र.] ते णं भंते! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा, अणुदीरगा?

[उ.] गोयमा! नो अणुदीरगा, उदीरए वा उदीरगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स। नवरं वेयणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा। [दारं ८]।

१३. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव, ज्ञानावरणीय कर्म के उदीरक हैं या अनुदीरक हैं?

१३. [उ.] गौतम! वे अनुदीरक नहीं; यदि एक जीव है तो एक जीव उदीरक है और यदि अनेक जीव हों तो अनेक जीव उदीरक हैं। इसी प्रकार यावत् अन्तराय कर्म तक जानना चाहिए; परन्तु विशेषता यह है कि वेदनीय और आयुष्य कर्म (के उदीरक) में पूर्वोक्त आठ भंग कहे जाने चाहिए। [—आठवाँ द्वार]

13. [Q.] *Bhante !* Do these souls (in *Utpal*) cause voluntary fruition (*udiran*) of Knowledge obscuring *karmas* (*Jnanavaraniya karma*) or do they not ?

[Ans.] Gautam ! It is not that they do not cause voluntary fruition (*anudiran*). When there is one soul there is one perpetrator of voluntary fruition (*udirak*) and when there are many souls there are many perpetrators of voluntary fruition. The same holds good for all *karmas*... and so on up to... Power hindering *karma* (*Antaraaya karma*). The only difference is that in case of *Vedaniya karma* (*karma* responsible for pain or pleasure) and *Ayushya karma* (*karma* responsible for life-span) state the aforesaid eight options each. [– *the eighth theme*]

विवेचन—जैनेतर दार्शनिक प्राय: यह समझते हैं कि उत्पल (कमल) के जीव को सोचने-समझने की बुद्धि नहीं होती और द्रव्य मन भी न होने से वह कोई विचार नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में वह ज्ञानावरणीयादि कर्मों का बन्ध, वेदन, उदय या उदीरणा कैसे कर सकता है?

इस शंका का समाधान करने हेतु गौतम स्वामी ने ये बंध आदि विषयक प्रश्न उठाकर भगवान से पूछा है। भगवान के उत्तरों से यह स्पष्ट हो जाता है कि एकेन्द्रिय वनस्पतिकायिक जीवों में संज्ञा तथा भाव मन होता है, जिसके कारण वे चाहे विकसित चेतना वाले न हो, परन्तु मिथ्यात्व दशा में होने के कारण विपरीत दिशा में सोचकर भी ज्ञानावरणीय आदि कर्मबन्ध कर लेते हैं। वे कर्मों को वेदते भी हैं उदय वाले भी होते हैं और उदीरणा भी विपरीत दिशा में कर लेते हैं।

उत्पल के एक तथा अनेक जीवों के कर्म बन्धन आदि कैसे? उत्पल के प्रारम्भ में जब उसके एक ही पत्ता होता है, तब एक जीव होने से एक जीव ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बन्धक होता है, परन्तु जब उसके अनेक पत्ते होते हैं तो उसमें अनेक जीव होने से अनेक जीव बन्धक होते हैं। आयुष्यकर्म तो समग्र जीवन में एक ही बार बंधता है, उस बन्धकाल को छोड़कर जीव आयुष्यकर्म का अबन्धक होता है। इसलिए आयुष्यकर्म के बन्धक और अबन्धक की अपेक्षा से आठ भंग होते हैं, जिनमें चार असंयोगी और चार द्विकसंयोगी होते हैं।

(*—भगवती. अ. वृत्ति. पत्र ५१२*)

Elaboration—According to non-Jain schools of philosophy, in absence of brain and intellect the living being that is *Utpal* (a kind of lotus) is devoid of thoughts. Therefore how can it acquire bondage of, suffer fruits of, experience fruition of and cause voluntary fruition of knowledge obscuring and other *karma*s ?

In order to explain this Gautam Swami put this question about bondage etc. before Bhagavan Mahavir. His answers make it clear that one-sensed plant-bodied beings have sentience and mind (*bhaava-man*). Due to this they acquire bondage of *karma*s including knowledge obscuring *karma* due to base sentiments in their unrighteous state in spite of the fact that they only have under developed sentience. They also undergo processes of suffering, fruition and regressive voluntary fruition.

Karmic* bondage of single and multiple souls *in Utpal—To start with there is only one petal on a lotus and thus only one soul acquires bondage of *karma*s. However, when it has many petals and many souls it results in having many acquirers of karmic bondage. The bondage of life-span determining *karma* is acquired only once in a lifetime, thus except for the moment of acquiring that bondage the soul is non-acquirer of that *karma*. Therefore there are eight options with

regard to acquirer and non-acquirer of life-span determining *karma*; of these, four are with single factors and four with combinations of two factors. (*–Bhagavati Vritti by Abhayadev, leaf 512*)

९. लेश्या द्वार (9) THEME OF SOUL-COMPLEXION (*LESHYA*)

१४. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा?

[उ.] गोयमा ! कण्हलेस्से वा जाव तेउलेस्से वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेस्से य नीललेस्से य, एवं एए दुयासंजोग-तियासंजोग-चउक्कसंजोगेणं असीइं भंगा भवंति। [दारं ९]

१४. [प्र.] हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव, कृष्णलेश्या वाले, नीललेश्या वाले, कापोतलेश्या वाले या तेजोलेश्या वाले होते हैं?

१४. [उ.] हे गौतम! एक जीव कृष्णलेश्या वाला यावत् एक जीव तेजोलेश्या वाला होता है अथवा अनेक जीव कृष्णलेश्या वाले, नीललेश्या वाले, कापोतलेश्या वाले अथवा तेजोलेश्या वाले होते हैं अथवा एक जीव कृष्णलेश्या वाला और एक जीव नीललेश्या वाला होता है। इस प्रकार द्विकसंयोगी, त्रिकसंयोगी और चतुःसंयोगी सब मिलकर ८० भंग होते हैं।

[–नौवाँ द्वार]

14. [Q.] *Bhante !* Are those souls in *Utpal* with black soul-complexion (*Krishna leshya*), blue soul-complexion (*Leshya leshya*), pigeon soul-complexion (*Kaapot leshya*) or fiery soul-complexion (*Tejo leshya*) ?

[Ans.] Gautam! One soul may be with black soul-complexion (*Krishna leshya*) ... and so on up to ... one soul may be with fiery soul-complexion (*Tejo leshya*). Or many souls may be with black soul-complexion (*Krishna leshya*), blue soul-complexion (*Leshya leshya*), pigeon soul-complexion (*Kaapot leshya*) or fiery soul-complexion (*Tejo leshya*). Or one soul with black soul-complexion (*Krishna leshya*) and one with blue soul-complexion (*Neel leshya*). This way there are altogether 80 options with combinations of two, three and four factors. [*–the ninth theme*]

विवेचन—उत्पल वनस्पतिकायिक होने से उसमें पहले से पाई जाने वाली चार लेश्याओं (कृष्ण, नील, कापोत और तेजोलेश्या) के विविध ८० भंगों की प्ररूपणा उपरोक्त सूत्र में की गई है।

Elaboration—Being a plant-bodied being, *Utpal* already has four soul-complexions (*leshya*). This statement details the 80 possible alternatives of the same in contexts of souls born in it. The table of all these options is as follows—

लेश्याओं के भंगजाल का नक्शा

TABLE OF SOUL-COMPLEXIONS (*LESHYAS*)

असंयोगी ८ भंग (8 Options with single factors)

१. एक कृष्ण.	२. अनेक कृष्ण.	३. एक नील.	४. अनेक नील.
५. एक कापोत.	६. अनेक कापोत.	७. एक तेजो.	८. अनेक तेजो.
1. One black	2. Many black	3. One blue	4. Many blue
5. One pigeon	6. Many pigeon	7. One fiery	8. Many fiery

द्विकसंयोगी २४ भंग (24 Options with combinations of two factors)

१.	एक कृष्ण., एक नील.	२.	एक कृष्ण., अनेक नील
३.	अनेक कृष्ण., एक नील.	४.	अनेक कृष्ण., अनेक नील.
५.	एक कृष्ण., एक कापोत.	६.	एक कृष्ण., अनेक कापोत
७.	अनेक कृष्ण., एक कापोत.	८.	अनेक कृष्ण., अनेक कापोत.
९.	एक कृष्ण., एक तेजो.	१०.	एक कृष्ण., अनेक तेजो.
११.	अनेक कृष्ण., एक तेजो.	१२.	अनेक कृष्ण., अनेक तेजो.
१३.	एक नील., एक कापोत.	१४.	एक नील., अनेक कापोत.
१५.	अनेक नील., एक कापोत.,	१६.	अनेक नील., अनेक कपोत.
१७.	एक नील., एक तेजो.	१८.	एक नील., अनेक तेजो.
१९.	अनेक नील., एक तेजो.	२०.	अनेक नील., अनेक तेजो.
२१.	एक कापोत., एक तेजो.	२२.	एक कापोत., अनेक तेजो.
२३.	अनेक कापोत., एक तेजो.	२४	अनेक कापोत., अनेक तेजो.
1.	One black and one blue	2.	One black and many blue
3.	Many black and one blue	4.	Many black and many blue
5.	One black and one pigeon	6.	One black and many pigeon
7.	Many black and one pigeon	8.	Many black and many pigeon
9.	One black and one fiery	10.	One black and many fiery
11.	Many black and one fiery	12.	Many black and many fiery
13.	One blue and one pigeon	14.	One blue and many pigeon
15.	Many blue and one pigeon	16.	Many blue and many pigeon
17.	One blue and one fiery	18.	One blue and many fiery
19.	Many blue and one fiery	20.	Many blue and many fiery
21.	One pigeon and one fiery	22.	One pigeon and many fiery
23.	Many pigeon and one fiery	24.	Many pigeon and many fiery

त्रिकसंयोगी ३२ भंग (32 Options with combinations of three factors)

१. एक कृष्ण., एक नील., एक कापोत.
२. एक कृष्ण., एक नील., अनेक कापोत.
३. एक कृष्ण., अनेक नील., एक कापोत.
४. एक कृष्ण., अनेक नील., अनेक कापोत.
५. अनेक कृष्ण., एक नील., एक कापोत.
६. अनेक कृष्ण., एक नील., अनेक कापोत.
७. अनेक कृष्ण., अनेक नील., एक कापोत.
८. अनेक कृष्ण., अनेक नील. अनेक कापोत.
९. एक कृष्ण., एक नील., एक तेजो.
१०. एक कृष्ण., एक नील., अनेक तेजो.
११. एक कृष्ण., अनेक नील., एक तेजो.
१२. एक कृष्ण., अनेक नील., अनेक तेजो.
१३. अनेक कृष्ण., एक नील., एक तेजो.
१४. अनेक कृष्ण., एक नील., अनेक तेजो.
१५. अनेक कृष्ण., अनेक नील., अनेक तेजो.
१६. अनेक कृष्ण., अनेक नील., एक तेजो.
१७. एक कृष्ण., एक कापोत., एक तेजो.
१८. एक कृष्ण., एक कापोत., अनेक तेजो.
१९. एक कृष्ण., अनेक कापोत., अनेक. तेजो.
२०. एक कृष्ण., अनेक कापोत., अनेक तेजो.
२१. अनेक कृष्ण., एक कापोत., एक तेजो.
२२. अनेक कृष्ण., एक कापोत, अनेक तेजो.
२३. अनेक कृष्ण., अनेक कापोत., एक तेजो.
२४. अनेक कृष्ण. अनेक कापोत., अनेक तेजो.
२५. एक नील., एक कापोत., एक तेजो.
२६. एक नील., एक कापोत., अनेक तेजो.
२७. एक नील., अनेक कापोत., एक तेजो.
२८. एक नील., अनेक कापोत., अनेक तेजो.
२९. अनेक नील., एक कापोत., एक तेजो.
३०. अनेक नील., एक कापोत., अनेक तेजो.
३१. अनेक नील, अनेक कापोत., एक तेजो.
३२. अनेक नील., अनेक कापोत., अनेक तेजो.

1. One black, one blue, one pigeon
2. One black, one blue, many pigeon
3. One black, many blue, one pigeon
4. One black, many blue, many pigeon
5. Many black, one blue, one pigeon
6. Many black, one blue, many pigeon
7. Many black, many blue, one pigeon
8. Many black, many blue, many pigeon
9. One black, one blue, one fiery
10. One black, one blue, many fiery
11. One black, many blue, one fiery
12. One black, many blue, many fiery
13. Many black, one blue, one fiery
14. Many black, one blue, many fiery
15. Many black, many blue, one fiery
16. Many black, many blue, many fiery
17. One black, one pigeon, one fiery
18. One black, one pigeon, many fiery
19. One black, many pigeon, one fiery
20. One black, many pigeon, many fiery
21. Many black, one pigeon, one fiery
22. Many black, one pigeon, many fiery
23. Many black, many pigeon, one fiery
24. Many black, many pigeon, many fiery
25. One blue, one pigeon, one fiery
26. One blue, one pigeon, many fiery
27. One blue, many pigeon, one fiery
28. One blue, many pigeon, many fiery
29. Many blue, one pigeon, one fiery
30. Many blue, one pigeon, many fiery
31. Many blue, many pigeon, one fiery
32. Many blue, many pigeon, many fiery

चतु:संयोगी १६ भंग (16 Options with combinations of four factors)

१. एक कृष्ण., एक नील., एक कापोत., एक तेजो.	२. एक कृष्ण., एक नील., एक कापोत., अनेक तेजो.
३. एक कृष्ण., एक नील., अनेक कापोत., एक तेजो.	४. एक कृष्ण., एक नील., अनेक कापोत., अनेक तेजो.
५. एक कृष्ण., अनेक नील., एक कापोत., एक तेजो.	६. एक कृष्ण., अनेक नील., एक कापोत., अनेक तेजो.
७. एक कृष्ण., अनेक नील., अनेक कापोत., एक तेजो.	८. एक कृष्ण., अनेक नील., अनेक कापोत., अनेक तेजो.
९. अनेक कृष्ण., एक नील., एक कापोत., एक तेजो.	१०. अनेक कृष्ण., एक नील., एक कापोत., अनेक तेजो.
११. अनेक कृष्ण., एक नील., अनेक कापोत., एक तेजो.	१२. अनेक कृष्ण., एक नील. अनेक कापोत., अनेक तेजो.
१३. अनेक कृष्ण., अनेक नील., एक कापोत. एक तेजो.	१४. अनेक कृष्ण., अनेक नील., एक कापोत. अनेक तेजो.
१५. अनेक कृष्ण., अनेक नील., अनेक कापोत., एक तेजो.	१६. अनेक कृष्ण., अनेक नील., अनेक कापोत., अनेक तेजो.
1. One black, one blue, one pigeon, one fiery	2. One black, one blue, one pigeon, many fiery
3. One black, one blue, many pigeon, one fiery	4. One black, one blue, many pigeon, many fiery
5. One black, many blue, one pigeon, one fiery	6. One black, many blue, one pigeon, many fiery
7. One black, many blue, many pigeon, one fiery	8. One black, many blue, many pigeon, many fiery
9. Many black, one blue, one pigeon, one fiery	10. Many black, one blue, one pigeon, many fiery
11. Many black, one blue, many pigeon, one fiery	12. Many black, one blue, many pigeon, many fiery
13. Many black, many blue, one pigeon, one fiery	14. Many black, many blue, one pigeon, many fiery
15. Many black, many blue, many pigeon, one fiery	16. Many black, many blue, many pigeon, many fiery

इस प्रकार असंयोगी ८, द्विकसंयोगी २४, त्रिकसंयोगी ३२ और चतु:संयोगी १६ भंग, मिलाकर कुल ८० भंग होते हैं। (भगवती. विवेचन (पं. घेवरचन्दजी), भा. ४, पृ. १८५२-१८५४)

This way, 8 Options with single factors, 24 Options with combinations of two factors, 32 Options with combinations of three factors and 16 Options with combinations of four factors make a total of 80 options. (*Bhagavati commentary (Vivechan)* by Pt. Ghewarchand, part-4, pp. 1852-1854)

१० से १३ दृष्टि-ज्ञान-योग-उपयोग-द्वार

(10-13) THEMES OF *DRISHTI* (PERSPECTIVE), *JNANA* (KNOWLEDGE), *YOGA* (ASSOCIATION) AND *UPAYOGA* (INTENT OF INDULGENCE)

१५. [प्र.] ते णं भंते! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी?

[उ.] गोयमा! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा। [दारं १०]।

१५. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव सम्यग्दृष्टि हैं, मिथ्यादृष्टि हैं अथवा सम्यग्-मिथ्या-दृष्टि हैं?

[उ.] हे गौतम! वे सम्यग्दृष्टि नहीं, सम्यग्-मिथ्यादृष्टि भी नहीं परन्तु वे एक हो या अनेक हों वे सभी मात्र मिथ्यादृष्टि हैं। [—दशम द्वार]

15. [Q.] *Bhante !* Are those souls in *Utpal* endowed with right perspective (*samyag drishti*), wrong or false perspective (*mithya drishti*) or right-wrong perspective (*samyag-mithya drishti*) ?

[Ans.] Gautam ! They all are endowed neither with right perspective (*samyag drishti*) nor with right-wrong perspective (*samyag-mithya drishti*) but only with wrong or false perspective (*mithya drishti*) irrespective of being one or many. [*—the tenth theme*]

१६. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी?

[उ.] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी वा अन्नाणिणो वा। [दारं ११]।

१६. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं?

[उ.] गौतम! वे ज्ञानी नहीं हैं, परन्तु वे एक या अनेक हों वे सभी जीव अज्ञानी हैं।

[—ग्यारहवाँ द्वार]

16. [Q.] *Bhante !* Are those souls endowed with knowledge or are they devoid of knowledge ?

[Ans.] Gautam ! They are not endowed with knowledge but are devoid of knowledge irrespective of being one or many.

[*—the eleventh theme*]

१७. [प्र.] ते णं भंते! जीवा किं मणजोगी, वययोगी, कायजोगी?

[उ.] गोयमा! नो मणजोगी, नो वयजोगी, कायजोगी वा कायजोगिणो वा।

[दारं १२]

१७. [प्र.] भगवन्! वे जीव मनयोगी, वचनयोगी या काययोगी हैं?

[उ.] गौतम! वे मनयोगी नहीं, वचनयोगी भी नहीं, परन्तु वे एक हो या अनेक हों, सभी काययोगी हैं। [—बारहवाँ द्वार]

17. [Q.] *Bhante !* Do those souls in *Utpal* have capacity of mental association (*mano-yoga*), vocal association (*vachan-yoga*) or physical association (*kaaya-yoga*) ?

[Ans.] Gautam ! They do not have capacity of mental association or vocal association but only of physical association irrespective of being one or many. [*—the twelfth theme*]

१८. [प्र.] ते णं भंते! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता?

[उ.] गोयमा! सागारोवउत्ते वा अणागारोवउत्ते वा, अट्ठ भंगा [दारं १३]

१८. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव साकारोपयोगी हैं अथवा अनाकारोपयोगी हैं?

१८. [उ.] गौतम! वे एक जीव साकारोपयोग वाला (ज्ञान उपयोगी) है अथवा एक जीव अनाकारोपयोग वाला (दर्शन उपयोगी) है। इसके उपयुक्त आठ भंग समझने चाहिए।

18. [Q.] *Bhante !* Do those souls in *Utpal* have intent for indulgence in knowledge (*saakaaropayoga*) or that for indulgence in perception (*anaakaaropayoga*) ?

[Ans.] Gautam ! (It is like this—) (1) One soul (*in Utpal*) has intent for indulgence in knowledge (*saakaaropayoga*); (2) or one soul has for indulgence in perception (*anaakaaropayoga*); and repeat the aforesaid eight options (statement 9). [*–the thirteenth theme*]

विवेचन—पाँच ज्ञान और तीन अज्ञान को साकारोपयोग कहते हैं और चार दर्शन को अनाकारोपयोग कहते हैं।

Elaboration—*Saakaaropayoga* means intent for indulgence in knowledge including five kinds of knowledge and three kinds of non-knowledge. *Anaakaaropayoga* means intent for indulgence in four kinds of perception.

१४-१५-१६—वर्णरसादि-उच्छ्वासक-आहारक द्वार

14-16. THEMES OF *VARNARASADI* (COLOUR, TASTE ETC.), *UCHCHHAVASAK* (DEEP BREATHING) AND *AAHAARAK* (FOOD INTAKE)

१९. [प्र.] तेसि णं भंते! जीवाणं सरीरगा कइवण्णा कइगंधा कइरसा कइफासा पन्नत्ता?

१९ [उ.] गोयमा! पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पन्नत्ता। ते पुण अप्पणा अवण्णा अगंधा अरसा अफासा पन्नत्ता [दारं १४]

१९. [प्र.] भगवन्! उत्पल के जीवों के शरीर कितने वर्ण, कितने गन्ध, कितने रस और कितने स्पर्श वाले होते हैं?

[उ.] गौतम! उनका (शरीर) पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाला है। जीव स्वयं वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श-रहित है। [—चौदहवाँ द्वार]

19. [Q.] *Bhante !* Of how many kinds of colours (*varna*), smells (*gandh*), tastes (*rasa*) and touches (*sparsh*) are the bodies of those souls *in Utpal* ?

[Ans.] Gautam ! Their bodies may have five kinds of colours, two kinds of smells, five kinds of tastes and eight kinds of touches. The soul itself is devoid of any colour, smell, taste or touch.

[– *the fourteenth theme*]

२०. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं उस्सासगा, निस्सासगा, नोउस्सासनिस्सासगा?

[उ.] गोयमा ! उस्सासए वा १, निस्सासए वा २, नोउस्सासनिस्सासए वा ३, उस्सासगा वा ४, निस्सासगा वा ५, नोउस्सासनिस्सासगा वा ६, अहवा उस्सासए य निस्सासए य ४ (७-१०), अहवा उस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य ४ (११-१४), अहवा निस्सासए य नोउस्सासनीस्सासए य ४ (१५-१८), अहवा उस्सासए य नीस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य-अट्ठ भंगा (१९-२६), एए छव्वीसं भंगा भवंति। [दारं १५]।

२०. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव उच्छ्वासक हैं, निःश्वासक हैं, या अनुच्छ्वासक-निःश्वासक हैं?

[उ.] गौतम! (उनमें से) (१) एक जीव उच्छ्वासक है, (२) या एक जीव निःश्वासक है, (३) या एक जीव अनुच्छ्वासक-निःश्वासक है, (४) या अनेक जीव उच्छ्वासक हैं, (५) या अनेक जीव निःश्वासक हैं, (६) या अनेक जीव अनुच्छ्वासक-निःश्वासक हैं (७-१०) अथवा एक उच्छ्वासक है और एक निःश्वासक है; आदि। (११-१४) अथवा एक उच्छ्वासक और एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक है; आदि। (१५-१८) अथवा एक निःश्वासक और एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक है, आदि। (१९-२८) अथवा एक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक और एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक है आदि आठ भंग होते हैं। ये सम्पूर्ण मिलकर २६ भंग होते हैं।

[—पन्द्रहवाँ द्वार]

20. **[Q.]** *Bhante !* Are those living beings *in Utpal* endowed with faculties of deep breathing (*uchchhavaas*) or shallow breathing (*nishvaas*) or neither (*no-uchchhavaas-nishvaas*).

[Ans.] Gautam ! (It is like this—) (1) One soul is *uchchhavaasak*, or (2) One soul is *nishvaasak* or (3) One soul is *no-uchchhavaas-nishvaasak* or (4) Many souls are *uchchhavaasak*, or (5) Many souls are *nishvaasak* or (6) Many souls are *no-uchchhavaas-nishvaasak*; or (7-10) One soul is *uchchhavaasak* and one *nishvaasak* (and other three combinations of these two); or (11-14) One soul is *uchchhavaasak* and one *no-uchchhavaas-nishvaasak* (and other three combinations of these two); or (15-18) one soul is *nishvaasak* and one *no-uchchhavaas-nishvaasak* (and other three combinations of these two); or (19-28) One soul is *uchchhavaasak*, *nishvaasak*, and one *no-uchchhavaas-nishvaasak* (and other seven

combinations of these three). All these combined make 26 options. [– the fifteenth theme]

विवेचन—पर्याप्त अवस्था में सभी जीवों के उच्छ्वास और निःश्वास होते हैं, परन्तु अपर्याप्त अवस्था में जीव अनुच्छ्वासक-निःश्वासक होता है। अतः उच्छ्वासक-निःश्वासक द्वार के २६ भंग होते हैं। वे इस प्रकार–

Elaboration—In fully developed state all living beings (*jiva*) are endowed with faculties of deep and shallow breathing. However, the beings in underdeveloped state are not endowed with these faculties, thus they are *no-uchchhavaas-nishvaasak*. This theme has following 26 options—

असंयोगी ६ भंग (6 Options with single factors)

१. एक उच्छ्वासक	४. अनेक उच्छ्वासक
२. एक निःश्वासक	५. अनेक निःश्वासक
३. एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक	६. अनेक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक
1. One *uchchhavaasak*	2. One *nishvaasak*
3. One *no-uchchhavaasak-nishvaasak*	4. Many *uchchhavaasak*
5. Many *nishvaasak*	6. Many *no-uchchhavaasak-nishvaasak*

द्विकसंयोगी १२ भंग (12 Options with two factors)

१. एक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक	७. अनेक उच्छ्वासक, एक नोउच्छ्वासक
२. एक उच्छ्वासक, अनेक निःश्वासक	८. अनेक उच्छ्वासक, बहुत नोउच्छ्वासक
३. अनेक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक	९. एक निःश्वासक, एक नोउच्छ्वासक
४. अनेक उच्छ्वासक, अनेक निःश्वासक	१० एक निःश्वासक, बहुत नोउच्छ्वासक
५. एक उच्छ्वासक, एक नोउच्छ्वासक	११. अनेक निःश्वासक, एक नोउच्छ्वासक
६. एक उच्छ्वासक, अनेक नोउच्छ्वासक	१२. अनेक निःश्वासक, बहुत नोउच्छ्वासक
1. One *uchchhavaasak* and one *nishvaasak*	2. One *uchchhavaasak* and many *nishvaasak*
3. Many *uchchhavaasak* and one *nishvaasak*	4. Many *uchchhavaasak* and many *nishvaasak*
5. One *uchchhavaasak* and one *no-uchchhavaasak*	6. One *uchchhavaasak* and many *no-uchchhavaasak*
7. Many *uchchhavaasak* and one *no-uchchhavaasak*	8. Many *uchchhavaasak* and many *no-uchchhavaasak*

9. One *nishvaasak* and one *no-uchchhavaasak*
10. One *nishvaasak* and many *no-uchchhavaasak*
11. Many *nishvaasak* and one *no-uchchhavaasak*
12. Many *nishvaasak* and many *no-uchchhavaasak*

त्रिकसंयोगी ८ भंग (8 Options with three factors)

१. एक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक, एक नोउच्छ्वासक
२. एक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक, अनेक नोउच्छ्वासक
३. एक उच्छ्वासक, अनेक निःश्वासक, एक नोउच्छ्वासक
४. एक उच्छ्वासक, अनेक निःश्वासक, अनेक नोउच्छ्वासक
५. बहुत उच्छ्वासक, एक निःश्वासक, एक नोउच्छ्वासक
६. बहुत उच्छ्वासक, एक निःश्वासक, अनेक नोउच्छ्वासक
७. बहुत उच्छ्वासक, अनेक निःश्वासक, एक नोउच्छ्वासक
८. बहुत उच्छ्वासक, अनेक निःश्वासक, अनेक नोउच्छ्वासक

1. One *uchchhavaasak*, one *nishvaasak* and one *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
2. One *uchchhavaasak*, one *nishvaasak* and many *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
3. One *uchchhavaasak*, many *nishvaasak* and one *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
4. One *uchchhavaasak*, many *nishvaasak* and many *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
5. Many *uchchhavaasak*, one *nishvaasak* and one *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
6. Many *uchchhavaasak*, one *nishvaasak* and many *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
7. Many *uchchhavaasak*, many *nishvaasak* and one *no-uchchhavaasak-nishvaasak*
8. Many *uchchhavaasak*, many *nishvaasak* and many *no-uchchhavaasak-nishvaasak*

२१. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं आहारगा, अणाहारगा?

[उ.] गोयमा ! नो अणाहारगा, आहारए वा अणाहारए वा, एवं अट्ठ भंगा।

[दारं १६]

२१. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव आहारक हैं या अनाहारक हैं?

[उ.] गौतम! वे सब अनाहारक नहीं; किन्तु कोई एक जीव आहारक है, अथवा कोई एक जीव अनाहारक हैं; इस तरह अन्य आठ भंग कहने चाहिए। [–सोलहवाँ द्वार]

21. [Q.] *Bhante !* Are those living beings in *Utpal* endowed with faculty of food-intake (*aahaar*) or not?

[Ans.] Gautam ! It is not that all of them are not endowed with faculty of food-intake. Some soul is endowed with faculty of food-intake or some soul is not, and repeat the aforesaid eight options (statement 9). [*–the sixteenth theme*]

विवेचन—विग्रहगति में जीव अनाहारक होता है, शेष समय में आहारक। इसलिए आहारक-अनाहारक के ८ भंग कहे गए हैं। वे पूर्ववत् समझ लेने चाहिए।

Elaboration—In *Vigraha gati* (the *reincarnative* movement, when a soul reaches the destination of reincarnation) souls are not endowed with faculty of food-intake, at all other times they are. That is the reason eight options have been mentioned.

१७-१८-१९—विरति-क्रिया और बन्धक द्वार

17-19. THEMES OF *VIRATI* (DETACHMENT), *KRIYA* (ACTION) AND *BANDHAK* (BONDAGE)

२२. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं विरया, अविरया, विरयाविरया?

[उ.] गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा। [दारं १७]।

२२. [प्र.] भगवन्! क्या वे उत्पल के जीव विरत (सर्वविरत) हैं, अविरत हैं या विरताविरत हैं?

[उ.] गौतम! वे उत्पल-जीव न तो सर्वविरत हैं और न विरताविरत हैं, किन्तु एक जीव अविरत है अथवा अनेक जीव भी अविरत हैं। [–सत्रहवाँ द्वार]

22. [Q.] *Bhante !* Are those living beings in *Utpal* detached (*virat*), undetached (*avirat*) or detached-undetached ?

[Ans.] Gautam ! They are neither detached nor detached-undetached but are undetached irrespective of being one or many. [*–the seventeenth theme*]

२३. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया, अकिरिया?

[उ.] गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा सकिरिया वा। [दारं १८]।

२३. [प्र.] भगवन्! क्या वे उत्पल के जीव सक्रिय हैं या अक्रिय हैं?

[उ.] गौतम! वे अक्रिय नहीं हैं, किन्तु एक जीव हो या अनेक जीव, सक्रिय है।

[—अठारहवाँ द्वार]

23. [Q.] *Bhante !* Are those living beings *in Utpal* active (*sakriya*) or inactive (*akriya*) ?

[Ans.] Gautam ! They are not inactive but are active irrespective of being one or many. [*–the eighteenth theme*]

२४. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा, अट्ठविहबंधगा?

[उ.] गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा, अट्ठ भंगा। [दारं १९]।

२४. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव सात कर्म बांधते हैं या आठ कर्म बांधते हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव सात या आठ कर्म बांधते हैं। यहाँ पूर्वोक्त आठ भंग समझने चाहिए।

[—उन्नीसवाँ द्वार]

24. [Q.] *Bhante !* Do those souls *in Utpal* acquire bondage of seven types of *karma* or eight types ?

[Ans.] Gautam ! They acquire bondage of either seven types of *karma* or eight types; repeat the aforesaid eight options (statement 9).

[*–the nineteenth theme*]

२०-२१—संज्ञा और कषाय द्वार

20, 21. THEMES OF *SANJNA* (ACTIVE AWARENESS) AND *KASHAAYA* (PASSIONS)

२५. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिग्गह-सन्नोवउत्ता?

[उ.] गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता वा, असीई भंगा। [दारं २०]।

२५. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव आहारसंज्ञा के उपयोग वाले या भयसंज्ञा के उपयोग वाले या मैथुनसंज्ञा के उपयोग वाले या परिग्रहसंज्ञा के उपयोग वाले हैं?

[उ.] गौतम! वे आहारसंज्ञा के उपयोग वाले हैं इत्यादि लेश्याद्वार के समान अस्सी भंग कहना चाहिए। [—बीसवाँ द्वार]

25. [Q.] *Bhante !* Do those souls *in Utpal* have active awareness for food (*Aahaar Sanjna*) or active awareness of fear (*Bhaya Sanjna*) or active awareness for copulation (*Maithun Sanjna*) or active awareness for possessions (*Parigraha Sanjna*) ?

[Ans.] Gautam! They have active awareness for food (*Aahaar Sanjna*) or etc.; repeat the eighty options as mentioned about theme of soul complexion (statement 14). [*–the twenteeth theme*]

२६. [प्र.] ते णं भंते! जीवा किं कोहकसायी, माणकसायी, मायाकसायी, लोभकसायी?

[उ.] गोयमा ! असीई भंगा। [दारं २१]

२६. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव क्रोधकषायी हैं, मानकषायी हैं, मायाकषायी हैं अथवा लोभकषायी हैं?

[उ.] गौतम! यहाँ भी पूर्वोक्त ८० भंग कहना चाहिए।

26. [Q.] *Bhante !* Do those souls in *Utpal* have (four) passions (*kashaayas*), namely anger (*krodh*), conceit (*maan*), deceit (*maaya*) and greed (*lobh*) ?

[Ans.] Gautam ! (They have passions), repeat the aforesaid eighty options (statement 14). [– the twenty-first theme]

२२ से २५—स्त्रीवेदादि-वेदक-बन्धक-संज्ञी-इन्द्रिय-द्वार

22-25. THEMES OF *VED-VEDAK* (GENDERIC) , *VED-BANDHAK* (GENDER-BONDAGE ACQUIRER), *SANJNA* (SENTIENCE) AND *INDRIYA* (SENSE ORGANS)

२७. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, नपुंसग वेयगा?

[उ.] गोयमा ! नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा, नपुंसग वेयए वा नपुंसग वेयगा वा। [दारं २२]।

२७. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव स्त्रीवेदी हैं, पुरुषवेदी हैं या नपुंसकवेदी हैं?

[उ.] गौतम! वे स्त्रीवेदी नहीं, पुरुषवेदी नहीं, परन्तु एक जीव या अनेक जीव सभी नपुंसकवेदी हैं। [—बावीसवाँ द्वार]

27. [Q.] *Bhante!* Do those living beings *in Utpal* belong to female gender (*stree-vedi*), male gender (*purush-vedi*) or neuter gender (*napumsak-vedi*) ?

[Ans.] Gautam! They neither belong to female gender nor male gender but to neuter gender irrespective of being one or many.

[*–the twenty-second theme*]

२८. [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेयबंधगा, पुरिसवेयबंधगा, नपुंसगवेयबंधगा?

[उ.] गोयमा! इत्थिवेयबंधए वा पुरिसवेयबंधए वा नपुंसगवेयबंधए वा, छव्वीसं भंगा। [दारं २३]

२८. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव स्त्रीवेद के बन्धक हैं, पुरुषवेद के बन्धक हैं या नपुंसकवेद के बन्धक हैं?

[उ.] गौतम! वे स्त्रीवेद के बन्धक हैं, या पुरुषवेद के बन्धक हैं अथवा नपुंसकवेद के बन्धक हैं। यहाँ उच्छ्वास द्वार के समान २६ भंग कहने चाहिए। [—२२ वाँ, २३ वाँ द्वार]

28. [Q.] *Bhante!* Do those souls *in Utpal* acquire bondage of (being born as) female gender, male gender or neuter gender ?

[Ans.] Gautam! They acquire bondage of (being born as) either female gender or male gender or neuter gender; repeat the aforesaid twenty-six options as mentioned about *Uchchhavasak* (statement 20).

[—*the twenty-third theme*]

२९. [प्र.] ते णं भंते! जीवा किं सण्णी, असण्णी?

[उ.] गोयमा! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा। [दारं २४]।

२९. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव संज्ञी हैं या असंज्ञी?

[उ.] गौतम! वे संज्ञी नहीं, किन्तु एक हो या अनेक, वे जीव असंज्ञी ही हैं।

29. [Q.] *Bhante!* Are those living beings *in Utpal* sentient (*sanjni*) or non-sentient (*asanjni*) ?

[Ans.] Gautam! They are not sentient but are non-sentient irrespective of being one or many. [—*the twenty-fourth theme*]

३०. [प्र.] ते णं भंते! जीवा किं सइंदिया, अणिंदिया?

[उ.] गोयमा! नो अणिंदिया, सइंदिए वा सइंदिया वा। [दारं २५]।

३०. [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव सइन्द्रिय हैं या अनिन्द्रिय?

[उ.] गौतम! वे अनिन्द्रिय नहीं, किन्तु एक जीव हो या अनेक, सभी जीव सइन्द्रिय हैं।

[—२४ वाँ, २५वाँ द्वार]

30. [Q.] *Bhante!* Are those living beings *in Utpal* with sense organs (*sa-indriya*) or without sense organs (*an-indriya*) ?

[Ans.] Gautam! They are not without sense organs but are with sense organs irrespective of being one or many. [—*the twenty-fifth theme*]

26, 27. THEMES OF ANUBANDH (REBORN IN SAME GENUS) AND SAMVEDH (REBORN IN OTHER GENUS)

३१. [प्र.] से णं भंते ! 'उप्पलजीवे' त्ति कालओ केवचिरं होइ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। [दारं २६]।

३१. [प्र.] भगवन्! वह उत्पल का जीव उत्पलत्व में कितने काल तक रहता है?

[उ.] गौतम! वह जघन्यत: अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्टत: असंख्यात काल तक रहता है।

[—छब्बीसवाँ द्वार]

31. **[Q.]** *Bhante!* For what duration that soul *in Utpal* remains in that state ?

[Ans.] Gautam ! It remains in that state for a minimum period of Antarmuhurt (a unit of time slightly less than 48 minutes) and a maximum of uncountable time. [– *the twenty-sixth theme*]

३२. [प्र.] से णं भंते ! उप्पलजीवे 'पुढविजीवे' पुणरवि 'उप्पलजीवे' त्ति केवइयं कालं सेवेज्जा? केवइयं कालं गइरागइं करेज्जा?

[उ.] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा।

३२. [प्र.] भगवन्! वह उत्पल का जीव, पृथ्वीकाय में जावे और पुन: उत्पल में आवे, इस प्रकार उसका कितना काल व्यतीत हो जाता है? कितने काल तक वह गमनागमन (गति-आगति) करता है?

[उ.] गौतम! वह उत्पल का जीव भव की अपेक्षा से जघन्य दो भव ग्रहण करता है और उत्कृष्ट असंख्यात भव तक गमनागमन करता है। काल की अपेक्षा से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त तक और उत्कृष्ट असंख्यात काल तक गमनागमन करता है। उतने काल तक वह रहता है और गति-आगति करता है।

32. **[Q.]** *Bhante!* If that soul *in Utpal* takes rebirth as an earth-bodied being and then returns to be born again *in Utpal,* how long does it take? How long does it continue to move thus back and forth ?

[Ans.] Gautam! In terms of rebirths it moves back and forth for a minimum of two rebirths and a maximum of innumerable rebirths. In terms of time it moves back and forth for a minimum of two Antarmuhurts

and a maximum of uncountable period. For that period it remains and moves back and forth (in those states).

३३. [प्र.] से णं भंते ! उप्पलजीवे आउजीवे ?

[उ.] एवं चेव।

३३. [प्र.] भगवन्! वह उत्पल का जीव, अप्काय के रूप में उत्पन्न होवे और पुनः उत्पल में आए तो इसमें कितना काल व्यतीत हो जाता है? वह कितने काल तक गमनागमन करता है?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार पृथ्वीकाय के विषय में कहा, उसी प्रकार भवादेश से और कालादेश से अप्काय के विषय में कहना चाहिए।

33. **[Q.]** *Bhante!* If that soul *in Utpal* takes rebirth as a water-bodied being and then returns to be born again *in Utpal*, how long does it take ? How long does it continue to move thus back and forth ?

[Ans.] Gautam! What has been mentioned with regard to earth-bodied being should be repeated hear, both in terms of rebirths and time.

३४. एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे।

[३४] इसी प्रकार जैसे–(उत्पलजीव के) पृथ्वीकाय में गमनागमन के विषय में कहा, उसी प्रकार यावत् वायुकाय जीव तक के विषय में कहना चाहिए।

34. In the same way what has been mentioned with regard to earth-bodied being should also be repeated for other bodied beings ... and so on up to ... air-bodied beings, both in terms of rebirths and time.

३५. [प्र.] से णं भंते! उप्पलजीवे से वणस्सइजीवे, से वणस्सइजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति केवइयं कालं सेवेज्जा, केवइयं कालं गइरागइं करेज्जा?

[उ.] गोयमा भवाएसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं–तरुकालं, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा।

३५. [प्र.] भगवन्! वह उत्पल का जीव, वनस्पति के रूप में उत्पन्न हो और वह पुनः उत्पल के जीव में आए, इस प्रकार वह कितने काल तक रहता है? कितने काल तक गमनागमन करता है?

[उ.] गौतम! भवादेश से वह (उत्पल का जीव) जघन्य दो भव ग्रहण करता है और उत्कृष्ट अनन्त भव ग्रहण करता है। कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त्त तक, उत्कृष्ट अनन्तकाल

(वनस्पतिकाल) तक रहता है। (अर्थात्–) इतने काल तक वह उसी में रहता है, इतने काल तक वह गति-आगति करता है।

35. [Q.] *Bhante!* If that soul *in Utpal* takes rebirth as a plant-bodied being and then returns to be born again *in Utpal*, how long does it take? How long does it continue to move thus back and forth ?

[Ans.] Gautam! In terms of rebirths it moves back and forth for a minimum of two rebirths and a maximum of infinite rebirths. In terms of time it moves back and forth for a minimum of two Antarmuhurts and a maximum of infinite period (plant-period). For that period it remains and moves back and forth (in those states).

३६. [प्र.] से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे, बेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति केवइयं कालं सेवेज्जा? केवइयं कालं गइरागइं करेज्जा?

[उ.] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा।

३६. [प्र.] भगवन्! वह उत्पल का जीव, बेइन्द्रिय पर्याय में जाकर पुनः उत्पल जीव में आये (उत्पन्न हो), तो इसमें उसका कितना काल व्यतीत होता है? कितने काल तक गमनागमन करता है?

[उ.] गौतम! वह जीव भवादेश से जघन्य दो भव ग्रहण करता है, उत्कृष्ट संख्यात भव ग्रहण करता है। कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट संख्यात काल व्यतीत हो जाता है। अर्थात् इतने काल तक वह उसमें रहता है। इतने काल तक वह गति-आगति करता है।

36. [Q.] *Bhante !* If that soul *in Utpal* takes rebirth as a two-sensed being and then returns to be born again *in Utpal*, how long does it take? How long does it continue to move thus back and forth?

[Ans.] Gautam! In terms of rebirths it moves back and forth for a minimum of two rebirths and a maximum of countable rebirths. In terms of time it moves back and forth for a minimum of two Antarmuhurts and a maximum of countable period. For that period it remains and moves back and forth (in those states).

३७. एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि।

[३७.] इसी प्रकार तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव के विषय में भी जानना चाहिए।

37. The same is also true for three and four sensed beings.

३८ [प्र.] से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय जीवे, पुणरवि उप्पलजीवे त्ति. पुच्छा.।

[उ.] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालाएसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं। एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा।

३८ [प्र.] भगवन्! उत्पल का वह जीव, पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनि में जाकर पुन: उत्पल के रूप में उत्पन्न हो तो इसमें उसका कितना काल व्यतीत होता है? वह कितने काल तक गमनागमन करता रहता है?

[उ.] गौतम! भवादेश से जघन्य दो भव ग्रहण करता है और उत्कृष्ट आठ भव (चार तिर्यंच पंचेन्द्रिय के और चार भव उत्पल के) ग्रहण करता है। कालादेश से, जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त्त तक और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथकत्व काल तक रहता है। इतना काल वह उसमें व्यतीत करता है। इतने काल तक गति-आगति करता है।

38. [Q.] *Bhante!* If that soul *in Utpal* takes rebirth as a five-sensed animal being and then returns to be born again *in Utpal*, how long does it take? How long does it continue to move thus back and forth ?

[Ans.] Gautam! In terms of rebirths it moves back and forth for a minimum of two rebirths and a maximum of eight rebirths (four *in Utpal* and four as animal). In terms of time it moves back and forth for a minimum of two Antarmuhurts and a maximum of Purvakoti-prithakatva (2 to 9 Purvakoti; an extremely long period of time). For that period it remains and moves back and forth (in those states).

३९. एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा। (दारं २७)

[३९.] इसी प्रकार मनुष्ययोनि के विषय में भी जानना चाहिए यावत् इतने काल तक उत्पल का वह जीव गमनागमन करता है। [—सत्ताईसवाँ द्वार]

39. The same also holds good for human genus. ... and so on up to ... For that period it remains and moves back and forth (in those states). [*–the twenty-seventh theme*]

विवेचन—उत्पल का जीव उत्पल के रूप में उत्पन्न होता रहे, इसे **अनुबन्ध** कहते हैं और उत्पल का जीव पृथ्वीकायादि दूसरे कायों में उत्पन्न होकर पुन: उत्पल रूप में उत्पन्न हो, इसे **कायसंवेध** कहते हैं। यह भवादेश और कालादेश की अपेक्षा से दो प्रकार का है अर्थात् उत्पल का जीव भव की अपेक्षा से कितने भव ग्रहण करता है और काल की अपेक्षा से कितने काल तक गमनागमन करता है, उपरोक्त सूत्रों में इसकी प्ररूपणा की गई है। (भगवती, विवेचन भा. 4 (पं. घेवरचन्दजी), पृ. १८६३)

Elaboration—When a soul born *in Utpal* continues to get reborn *in Utpal*, the process is called *anubandh* (the process of getting reborn in the same genus). When a soul born *in Utpal* gets reborn in some other genus including that of earth-bodied beings and once again gets reborn

सेसं तं चेव। **[दारं २८]**

४० [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव किस पदार्थ का आहार करते हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव द्रव्य से अनन्तप्रदेशी द्रव्यों का आहार करते हैं इत्यादि, जिस प्रकार प्रज्ञापनासूत्र के अट्ठाईसवें पद के प्रथम आहार-उद्देशक में वर्णित वर्णन के अनुसार वनस्पतिकाय जीवों के आहार के विषय में कहा है, यावत् वे सर्वात्मना (सर्व देशों से) आहार करते हैं, यहाँ

(Vivechan) by Pt. Ghewarchand, part-4, p. 1863]

२८ से ३१ तक आहार-स्थिति-समुद्घात-उद्वर्तना-द्वार

28-31. THEMES OF AAHAAR (FOOD INTAKE), STHITI (SPAN OF EXISTENCE), SAMUDGHAAT (BURSTING-FORTH), AND UDVARTAN (REBIRTH)

४० [प्र.] ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति?

[उ.] गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं., एवं जहा आहारुद्देसए[१] वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति, नवरं नियमं छद्दिसिं, सेसं तं चेव। **[दारं २८]**

४० [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव किस पदार्थ का आहार करते हैं?

[उ.] गौतम! वे जीव द्रव्य से अनन्तप्रदेशी द्रव्यों का आहार करते हैं इत्यादि, जिस प्रकार प्रज्ञापनासूत्र के अट्ठाईसवें पद के प्रथम आहार-उद्देशक में वर्णित वर्णन के अनुसार वनस्पतिकाय जीवों के आहार के विषय में कहा है, यावत् वे सर्वात्मना (सर्व देशों से) आहार करते हैं, यहाँ तक—कहना चाहिए। विशेष यह है कि वे नियमतः छह दिशा से आहार करते हैं। शेष सभी वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए। [—अट्ठाइसवाँ द्वार]

40. [Q.] *Bhante !* What material do those living beings in *Utpal* eat ?

[Ans.] Gautam ! In terms of substance they eat substances having infinite space-points (*pradesh*) etc. as described about the food intake of plant-bodied beings in the first lesson, titled Aahaar, of the twenty-eighth chapter of *Prajnapana Sutra*... and so on up to... they have intake through all soul-space-points. The only difference being that as a rule they have food intake from all six directions. Rest of the information follows the aforesaid pattern. [– *the twenty-eighth theme*]

४१ [प्र.] तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं। [दारं २९]।

४१ [प्र.] भगवन्! उन उत्पल के जीवों की स्थिति कितने काल की है?

[उ.] गौतम! उनकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की है।

[—उनतीसवाँ द्वार]

41. [Q.] *Bhante !* What is the span of existence of those living beings in *Utpal*?

[Ans.] Gautam ! The span of existence of those living beings in *Utpal* is a minimum of one Antarmuhurt and a maximum of ten thousand years. *[–the twenty-ninth theme]*

४२ [प्र.] तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ समुग्घाया पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिय समुग्घाए। [दारं ३०]।

४२ [प्र.] भगवन्! उन (उत्पल के) जीवों में कितने समुद्घात कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! उनमें तीन समुद्घात कहे गए हैं। यथा—वेदना समुद्घात, कषाय समुद्घात और मारणान्तिक समुद्घात।

42. [Q.] *Bhante !* How many types of bursting-forth (*samudghaat*) are said to occur in those living beings *in Utpal*?

[Ans.] Gautam ! There are said to be three types of bursting-forth (*samudghaat*) that occur in them—bursting-forth of pain (*vedana samudghaat*), bursting-forth of passions (*kashaaya samudghaat*), and fatal bursting-forth (*maranaantik samudghaat*). *[–the thirteeth theme]*

४३ [प्र.] ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति, असमोहया मरंति?

[उ.] गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति।

४३ [प्र.] भगवन्! वे जीव मारणान्तिक समुद्घात द्वारा समवहत होकर मरते हैं या असमवहत होकर?

[उ.] गौतम! (वे उत्पल के जीव मारणान्तिक समुद्घात द्वारा) समवहत होकर भी मरते हैं और असमवहत होकर भी मरते हैं।

43. [Q.] *Bhante!* Is their death caused by fatal bursting-forth (*maranaantik samudghaat*) or even otherwise?

[Ans.] Gautam! Their death caused by fatal bursting-forth (*maranaantik samudghaat*) and otherwise also.

४४ [प्र.] ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति० ?

[उ.] एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं। [दारं ३१]

४४ [प्र.] भगवन्! वे उत्पल के जीव मरकर तुरन्त कहाँ जाते हैं और कहाँ उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं, तिर्यञ्चयोनिकों में उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में या देवों में उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! (उत्पल के जीवों की अनन्तर उत्पत्ति के विषय में) प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्तिक पद के उद्वर्त्तना-प्रकरण में वनस्पतिकाय जीवों के वर्णित वर्णन के अनुसार कहना चाहिए। [—तीसवाँ इकतीसवाँ द्वार]

44. [Q.] *Bhante!* Immediately after their death where do those living beings in *Utpal* go and where are they reborn ? Are they born among infernal beings or animals ? Or, are they born among human beings or divine beings ?

[Ans.] Gautam! The details about rebirth of living beings *in Utpal* are as mentioned about plant-bodied beings in the Udvartana lesson of the sixth chapter, titled Vyutkrantik of *Prajanapana Sutra.*

[– *the thirty-first theme*]

विवेचन—उत्पल के जीव नियमत: छह दिशा से आहार क्यों ग्रहण करते हैं?—पृथ्वीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होने से निष्कुटों (लोक के अन्तिम कोणों) तक उत्पन्न हो सकते हैं, इसलिए वे कदाचित् तीन, चार या पाँच दिशाओं से आहार लेते हैं तथा निर्व्याघात की अपेक्षा से छहों दिशाओं से आहार लेते हैं। किन्तु उत्पल के जीव बादर होने से वे निष्कुटों में उत्पन्न नहीं होते, अत: वे नियम से छहों दिशाओं से आहार लेते हैं। (भगवती, अ. वृत्ति, पत्र ५१३)

उत्पल के जीव वहाँ से मर कर तुरन्त तिर्यञ्चगति या मनुष्यगति में जन्म लेते हैं, देवगति या नरकगति में उत्पन्न नहीं होते। (वही, पत्र ५१३)

Elaboration—Food intake from all six directions–Earth-bodied and other such beings are minute and as such they get born even at the edges of the Lok (occupied space); therefore they have possibility of food

intake from two, three, four or five directions, and from six directions if not born on edges. But living beings in *Utpal* are gross and as such they are never born on the edges; therefore they have intake from all six directions as a rule. (*Bhagavati Vritti* by Abhayadev, leaf 513)

After their death the living beings *in Utpal* are reborn among animals and human beings; never among infernal or divine beings. (*Bhagavati Vritti* by Abhayadev, leaf 513)

४५ [प्र.] अह भंते ! सव्व पाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलनालत्ताए उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकण्णियत्ताए उप्पलथिभुगत्ताए उववन्नपुव्वा ?

[उ.] हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो। [दारं ३२]

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए पढमो उप्पलुद्देसओ समत्तो ॥

४५ [प्र.] भगवन्! सभी प्राण, सभी भूत, सभी जीव और समस्त सत्त्व; क्या उत्पल के मूलरूप में, उत्पल के कन्दरूप में, उत्पल के नालरूप में, उत्पल के पत्ररूप में, उत्पल के केसररूप में, उत्पल की कर्णिका के रूप में तथा उत्पल के थिभुग के रूप में (पत्र के उत्पत्ति स्थान में) इससे पहले उत्पन्न हुए हैं?

[उ.] हाँ गौतम! (सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, इससे पूर्व) अनेक बार अथवा अनन्त बार (पूर्वोक्त रूप से उत्पन्न हुए हैं।) [—बत्तीसवाँ द्वार]

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! यह इसी प्रकार है! ऐसा कहकर गौतम स्वामी, यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतकः प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

45. **[Q.]** *Bhante !* Have all beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*) been born in the form of the root (*mool*), the bulb (*kand*), the stalk (*naal*), the petal/leaf (*patra*), the pollen (*kesar*), pistil (*karnika*) and base (*thibhug* or the point where the petal/leaf sprouts) earlier?

[Ans.] Yes, Gautam ! They (beings etc.) have been born many times, may be infinite times in the aforesaid forms (root etc.).

[*–the thirty-second theme*]

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—कोई भी संसारी जीव ऐसा नहीं है, जो वर्तमान में जिस गति-योनि में है, उसमें या उससे भिन्न ८४ लाख जीव योनियों में इससे पूर्व अनेक या अनन्त बार उत्पन्न न हुआ हो। इसी दृष्टि से भगवान ने कहा कि समस्त जीव उत्पल के मूल, कन्द, नाल आदि के रूप में अनेक या अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं।

Elaboration—There is no such living being, which has never been born, many or infinite times in the past, among all the 8,4 million life-forms, including the one he is in now. With this reality in mind Bhagavan has said that they (beings etc.) have been born many times, may be infinite times in the aforesaid forms (root etc.).

कठिन शब्दार्थ : उववण्णपुव्वा—उत्पन्नपूर्व—पहले उत्पन्न हुए। **कण्णियत्ताए**—कर्णिका—बीजकोश के रूप में। **थिभुगत्ताए**—जिनमें से पत्ते निकलते हैं, पत्तों का उत्पत्ति स्थान।

Technical terms — *Uvavannapuvva* - *utpannapurva* - born earlier or before this. ***Kanniya*** - ***Karnika*** - pistil of a flower, which has ovary as its part. ***Thibhug*** - ***stibuk*** - base or the point where the petal/leaf sprouts.

• END OF THE FIRST LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

बीओ उद्देसओ : सालु
द्वितीय उद्देशक : शालूक (जीव विषयक)
DVITIYA UDDESHAK (SECOND LESSON) : SHAALUKA (LIFE IN SHAALUKA)

१. [प्र.] सालुए णं भंते! एगपत्तए किं एग जीवे अणेगजीवे?

[उ.] गोयमा! एगजीवे, एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अणंतखुत्तो। नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं। सेसं तं चेव।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए बीओ उद्देसो समत्तो॥

१ [प्र.] भगवन्! एक पत्ते वाला शालूक (उत्पल-कन्द) एक जीव वाला है या अनेक जीव वाला है?

[उ.] गौतम! वह (एक पत्र वाला शालूक) एक जीव वाला है; इस पाठ से शुरू कर यावत् अनन्त बार उत्पन्न हुए हैं; तक की सम्पूर्ण वक्तव्यता उत्पल-उद्देशक की तरह कहनी चाहिए। विशेषता यही है कि शालूक के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट धनुष-पृथक्त्व है। शेष वर्णन पूर्ववत् प्रमाण समझना चाहिए।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है!' ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : द्वितीय उद्देशक समाप्त॥

1. [Q.] *Bhante!* Does a Shaaluka (bulbous root of lotus) with one petal/leaf have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam! '(Originally) A Shaaluka (with one petal/leaf) has one soul (*jiva*) not many.' Beginning with this statement, mention all details following the pattern and content as mentioned in the Utpal lesson (first lesson) up to 'they (beings etc.) have been born many times, may be infinite times in the aforesaid forms'. The only difference is that the minimum height of Shaaluka is immeasurable fraction of one Angul

and maximum Dhanush-prithakatva (two to nine Dhanush). Rest of the matter is same as before.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—शालुक उत्पल का कन्द है। इसके जीव के सम्बन्ध में समस्त विवरण पिछले उद्देशक में दिये उत्पल के अनुसार ही समझना चाहिए। केवल इसके शरीर की अवगाहना ही उत्पल से अलग है। शेष सभी प्ररूपणा पूर्ववत् जाननी चाहिए।

Elaboration—Shaaluka is the bulbous root of Utpal (lotus). All information about souls in it is same as mentioned about Utpal. Only the size of its body is different.

• END OF THE SECOND LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

तइओ उद्देसओ : पलासे

तृतीय उद्देशक : पलाश (जीव विषयक)

TRITIYA UDDESHAK (THIRD LESSON) : PALAASH (LIFE IN PALAASH)

१. [प्र.] पलासे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे?

[उ.] एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा। नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं। देवा एएसु चेव न उववज्जंति।

२ [प्र.] लेस्सासु—ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा?

[उ.] गोयमा ! कण्हलेस्से वा, नीललेस्से वा, काउलेस्से वा, छव्वीसं भंगा। सेसं तं चेव।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

१ [प्र.] भगवन्! जब प्रारम्भ में पलाश वृक्ष एक पत्ते वाला होता है, तब वह एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला?

[उ.] गौतम! उत्पल-उद्देशक की सम्पूर्ण वक्तव्यता यहाँ कहनी चाहिए। विशेष इतना यह है कि पलाश के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग है और उत्कृष्ट गाऊ पृथक्त्व है। देव च्यव कर पलाश वृक्ष में उत्पन्न नहीं होते।

1. [Q.] *Bhante!* Does a Palaash (*Butea monosperma* tree) with one petal/leaf have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam ! '(Originally) A Palaash (with one petal/leaf) has one soul (*jiva*) not many.' Beginning with this statement mention all details following the pattern and content as mentioned in the Utpal lesson (first lesson) up to 'they (beings etc.) have been born many times, may be infinite times in the aforesaid forms. The only difference is that the minimum height of Shaaluka is immeasurable fraction of one Angul and maximum Gau-prithakatva (two to nine Gau). On their descent divine beings are not reborn in Palaash trees.

२ [प्र.] भगवन्! वे पलाश वृक्ष के जीव क्या कृष्णलेश्या वाले, नीललेश्या वाले और कापोतलेश्या वाले होते हैं?

[उ.] गौतम! वे कृष्णलेश्या वाले, नीललेश्या वाले और कापोतलेश्या वाले होते हैं। इस प्रकार यहाँ उच्छ्वासक द्वार के समान २६ भंग हैं। शेष सभी वर्णन (उत्पल) पूर्व की तरह समझना चाहिए।

'भगवन्! यह इसी प्रकार है! भगवन्! यह इसी प्रकार है!' ऐसा कहकर गौतमस्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

2. [Q.] *Bhante!* Are those souls in Palaash with black soul-complexion (*Krishna leshya*), blue soul-complexion (*Neel leshya*), or pigeon soul-complexion (*Kaapot leshya*) ?

[Ans.] Gautam! Yes, they are with black soul-complexion (*Krishna leshya*), blue soul-complexion (Neel *leshya*), or pigeon soul-complexion (*Kaapot leshya*). State the 26 options as mentioned in theme of Uchchhavaasak (first lesson). Rest of the description is as mentioned earlier (lesson on Utpal).

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—पलाश की उत्कृष्ट अवगाहना गाऊ-पृथक्त्व—दो गाऊ (४ कोस) से लेकर नौ गाऊ तक की है। गाऊ या गव्यूति दो कोस को कहते हैं। देवगति से च्यवकर जीव केवल प्रशस्त वनस्पति में ही उत्पन्न होते हैं, अप्रशस्त वनस्पति में नहीं। पलाश को अप्रशस्त वनस्पति माना गया है इसलिये उसमें देव भव से च्यव किया हुआ जीव उत्पन्न नहीं होता। पलाश के जीव में तीन अप्रशस्त लेश्याएँ पाई जाती हैं इसलिये इसके २६ भंग बनते हैं।

Elaboration—The maximum height of Palaash tree is said to be two to nine Gau. Gau or Gavyuta is a linear measure equal to two Kosa or four miles. On their descent, divine beings are reborn only in trees considered noble and never in ignoble trees. Palaash is considered to be an ignoble tree, as such divine beings are not reborn in them. The souls born in Palaash have three ignoble soul-complexions, that is why there are 26 options of their alternative combinations.

• END OF THE THIRD LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

चउत्थो उद्देसओ : कुंभी

चतुर्थ उद्देशक : कुम्भिक (जीव विषयक)

CHATURTH UDDESHAK (FOURTH LESSON) : KUMBHIK (LIFE IN KUMBHIK)

१ [प्र.] कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे?

[उ.] एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं। सेसं तं चेव।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो॥

१ [प्र.] भगवन्! एक पत्ते वाला कुम्भिक (वनस्पति विशेष) एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार पलाश के विषय में तीसरे उद्देशक में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए। इसमें इतनी विशेषता है कि कुम्भिक की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट वर्ष-पृथक्त्व (दो वर्ष से नौ वर्ष तक) की है। शेष सम्पूर्ण वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! हे भगवन्! यह इसी प्रकार है।' ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : चतुर्थ उद्देशक समाप्त॥

1. **[Q.]** *Bhante!* Does a Kumbhik (a kind of plant) with one petal/ leaf have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam! What has been mentioned about Palaash in the third lesson should be repeated here. The only difference is that the minimum span of existence of Kumbhik is one Antarmuhurt and maximum is Varsh-prithakatva or two to nine years. Rest of the description is as mentioned earlier.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE FOURTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

पंचमो उद्देसओ : नालीय

पंचम उद्देशक : नालिक (जीव विषयक)

PANCHAM UDDESHAK (FIFTH LESSON) : NAALIK (LIFE IN NAALIK)

१ [प्र.] नालिए णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे?

[उ.] एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

१ [प्र.] भगवन्! एक पत्ते वाला नालिक (नाडीक), एक जीव वाला है या अनेक जीव वाला?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार चौथे कुम्भिक उद्देशक में कहा है, उस प्रकार सम्पूर्ण वक्तव्यता यहाँ भी समझनी चाहिए।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! हे भगवन्! यह इसी प्रकार है।' ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरने लगे।

॥ ग्यारहवाँ शतक : चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

1. [Q.] *Bhante!* Does a Naalik (a kind of plant) with one petal/leaf have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam! What has been mentioned about Kumbhik in the fourth lesson should be repeated here fully.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—नालिक—जिसके फल नाडी या नाली की तरह होते हैं, ऐसा वनस्पति विशेष नाडीक या नालिक होता है। (भगवती. अ. वृत्ति, पत्र ५११—नाडीवद्यस्य फलानि स नाडीको वनस्पतिविशेष:।)

Elaboration—Naalik is a plant that has fruits in the shape of a tube (naali or naadi).

• END OF THE FIFTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

छट्ठो उद्देसओ : पउम

छठा उद्देशक : पद्म (जीव विषयक)

SHASHT UDDESHAK (SIXTH LESSON) : PADMA (LIFE IN PADMA)

१ [प्र.] पउमे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ?

[उ.] एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति. ।

॥ एक्कारसमे सए छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥

१ [प्र.] भगवन् ! एक पत्र वाला पद्म, एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला ?

[उ.] गौतम ! उत्पल-उद्देशक के अनुसार इसकी सारी वक्तव्यता कहनी चाहिए।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है ! हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है।' इस प्रकार कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : छठा उद्देशक समाप्त ॥

1. [Q.] *Bhante !* Does a Padma (a kind of lotus) with one petal have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam! What has been mentioned about Utpal in the first lesson should be repeated here fully.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE SIXTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

सत्तमो उद्देसओ : कण्णीय
सप्तम उद्देशक : कर्णिका (जीव विषयक)
SHASHTAM UDDESHAK (SEVENTH LESSON) : KARNIKA (LIFE IN KARNIKA)

१ [प्र.] कण्णिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ?

[उ.] एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति. ।

॥ एक्कारसमे सए सत्तमो उद्देसओ समत्तो॥

१ [प्र.] भगवन्! एक पत्ते वाली कर्णिका (वनस्पति विशेष) एक जीव वाली है या अनेक जीव वाली है?

[उ.] गौतम! इसका समग्र वर्णन उत्पल उद्देशक के समान समझना चाहिए।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! हे भगवन्! यह इसी प्रकार है।' इस प्रकार कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : सप्तम उद्देशक समाप्त॥

1. [Q.] *Bhante !* Does a Karnika (a kind of plant) with one petal/leaf have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam ! What has been mentioned about Utpal in the first lesson should be repeated here fully.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE SEVENTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

अट्ठमो उद्देसओ : नलिण
अष्टम उद्देशक : नलिन (जीव विषयक)
ASHTAM UDDESHAK (EIGHTH LESSON) : NALIN (LIFE IN NALIN)

१ [प्र.] नलिणे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे?

[उ.] एवं चेव निरवसेसं जाव अणंतखुत्तो।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए अट्ठमो उद्देसओ समत्तो॥

१ [प्र.] भगवन्! एक पत्ते वाला नलिन (कमल-विशेष) एक जीव वाला होता है, या अनेक जीव वाला?

[उ.] गौतम! इसका समग्र वर्णन उत्पल उद्देशक के समान करना चाहिए और सभी जीव अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं, यहाँ तक कहना चाहिए।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है! हे भगवन्! यह इसी प्रकार है।' इस प्रकार कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : अष्टम उद्देशक समाप्त॥

1. [Q.] *Bhante !* Does a Nalin (a kind of lotus) with one petal have one soul (*jiva*) or many ?

[Ans.] Gautam ! What has been mentioned about Utpal in the first lesson should be repeated here fully up to 'they (beings etc.) have been born many times, may be infinite times in the aforesaid forms.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—प्रथम उद्देशक 'उत्पल' से आठवें 'नलिन' उद्देशक तक उत्पल आदि आठ वनस्पतिकायिक जीवों का ३२ द्वार के माध्यम से वर्णन किया गया है। पारस्परिक अंतर को बताने के लिये तीन गाथाएँ वृत्तिकार ने बतायी हैं। यथा—

सालंमि धणुपुहत्तं होइ पलासे य गाउयपुहत्तं।
जोयणसहस्समहियं अवसेसाणं तु छण्हंपि॥ १॥
कुम्भीए नालियाए वासपुहत्तं ठिई उ बोद्धव्वा।
दसवाससहस्साइं अवसेसाणं तु छण्हं पि॥ २॥

कुंभीए नालियाए होंति पलासे य तिण्णि लेसाओ।
चत्तारि उ लेसाओ, अवसेसाणं तु पंचण्हं॥ ३॥

अर्थात्—शालूक की उत्कृष्ट अवगाहना धनुष पृथक्त्व और पलाश की उत्कृष्ट अवगाहना गाऊ पृथक्त्व बतायी है। शेष उत्पल, कुम्भिक, नालिक, पद्म, कर्णिका, नलिन की उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार योजन से कुछ अधिक बतायी है॥ १॥

कुम्भिक और नालिक की उत्कृष्ट स्थिति वर्ष-पृथक्त्व होती है और शेष ६ की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की होती है॥ २॥

कुम्भिक, नालिक और पलाश में पहले की तीन लेश्याएँ और शेष पाँच में पहले की चार लेश्याएँ होती हैं॥ ३॥ ((क) भगवती. अ. वृत्ति. पत्र ५१४, (ख) भगवती, विवेचन, भा. ४, (पं. घेवरचंदजी) पृ. १८७३)

वैसे तो भले ही इस गाथा में शालूक और पलाश को छोड़कर शेष छह वनस्पतियों की एक हजार योजन की अवगाहना बताई है परन्तु मूलपाठ में कुंभक और नालिक उद्देशक की वक्तव्यता पलाश और कुम्भिक की तरह बतायी होने से उनकी अवगाहना भी गाऊ पृथक्त्व ही स्पष्ट समझी जाती है। शेष चार वनस्पति की हजार योजन साधिक अवगाहना समझनी चाहिए।

Elaboration—In the first eight lessons from Utpal to Nalin, eight kinds of plant-bodied beings have been described with the help of thirty two themes. The commentator (*Vritti*) has written three verses to express the few differences some of the beings have from the general trend. They are as follows—

The maximum height of Shaaluka is said to be Dhanush-prithakatva (two to nine Dhanush) and that of Palaash as Gau-prithakatva. The maximum height of the rest of them (Utpal, Kumbhik, Naalik, Padma, Karnika and Nalin is said to be slightly more than one thousand Yojan. (i) The maximum span of existence of Kumbhik and Naalik is said to be Varsh-prithakatva and that of the remaining six is said to be ten thousand years. (ii) Kumbhik, Naalik and Palaash have the first three soul-complexions and the remaining five have first four. (iii) — [*Bhagavati Vritti* by Abhayadev, leaf 514; *Bhagavati commentary (Vivechan)* by Pt. Ghewarchand, part-4, p. 1873)

These verses mention the maximum height of six plants other than Shaaluka and Palaash as one thousand Yojan. It appears erroneous because the original text states that Kunthik and Naalik follow the pattern of Palaash and Kumbhik respectively; as such their height also should be Gau-prithakatva. Thus only the remaining four have a maximum height of slightly more than one thousand Yojan.

• END OF THE EIGHTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

नवमो उद्देसओ : सिव
नौवाँ उद्देशक : शिव राजर्षि
NAVAM UDDESHAK (NINTH LESSON) : SHIVA RAJARSHI (SHIVA THE SAINT KING)

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नयरे होत्था। वण्णओ।

[१] उस काल उस समय में हस्तिनापुर नाम का नगर था। उसका वर्णन। (हस्तिनापुर नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में देखें।)

1. During that period of time there was a city called Hastinapur. Description (of the city as mentioned in *Aupapatik Sutra*).

२. तस्स णं हत्थिणापुरस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवण सण्णिभिप्पगासे सुहसीयलच्छाए मणोरमे सादुफले अंकटए पासाईए जाव पडिरूवे।

[२] उस हस्तिनापुर नगर के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण) में सहस्राम्रवन नामक उद्यान था। वह सुरम्य उद्यान सभी ऋतुओं के पुष्पों और फलों से समृद्ध था। नन्दन वन के समान सुशोभित था। उसकी छाया सुखकारी और शीतल थी। वह मनोरम, स्वादिष्ट फलयुक्त, कण्टकरहित, प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला यावत् प्रतिरूप (सुन्दर) था।

2. Outside the city of Hastinapur, in the north-east direction, there was a garden named Sahasramravan. That beautiful garden was full of (trees of) all-season fruits and flowers. It was as attractive as the Divine Garden (Nandan Van). Having a pleasant and cool atmosphere, that garden was attractive, full of tasty fruits, free of thorns, joyful... and so on up to... beautiful.

३. तत्थ णं हत्थिणापुरे नयरे सिवे नामं राया होत्था, महताहिमवंत०। वण्णओ।

[३] उस हस्तिनापुर नगर में शिव नामक राजा था। वह हिमवान् पर्वत के समान श्रेष्ठ था, आदि राजा का सम्पूर्ण वर्णन समझना चाहिए। (राजा का वर्णन औपपातिक सूत्र में देखें।)

3. That city of Hastinapur had a king named Shiva. He was as glorious as the Himalayas... description. (of the king as mentioned in *Aupapatik Sutra*)

४. तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया०। वण्णओ।

[४] उस शिव राजा की धारिणी नाम की देवी (पटरानी) थी। उसके हाथ-पैर अतिसुकुमाल थे, आदि रानी का वर्णन यहाँ करना चाहिए।

4. The queen of King Shiva was Dhaarini. She had delicate limbs... description. (as mentioned in *Aupapatik Sutra*)

५. तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दए नामं कुमारे होत्था, सुकुमाल. जहा सूरियकंते जाव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।

[५] उस शिव राजा का पुत्र और धारिणी रानी का अंगजात 'शिवभद्र' नाम का कुमार था। उसके हाथ-पैर अत्यन्त सुकुमाल थे। कुमार का वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र में कथित सूर्यकान्त राजकुमार के समान समझना चाहिए, यावत् वह कुमार राज्य, राष्ट्र, बल (सैन्य), वाहन, कोश, कोष्ठागार, पुर, अन्तःपुर और जनपद का स्वयमेव अवलोकन करता हुआ रहता था।

5. Prince Shivabhadra was King Shiva's son, born from queen Dhaarini. He had delicate limbs like Suryakant (as mentioned about prince Suryakant in *Rajaprashniya Sutra*)... and so on up to... that prince spent his time observing and looking after the kingdom, country, army, vehicles, treasure, fort, palace, inner quarters and inhabited area.

शिव राजा का दिक्प्रोक्षिक-तापस-प्रव्रज्याग्रहण-संकल्प

KING SHIVA'S INITIATION INTO DIRECTIONAL WORSHIP

६. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंत्तेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—"अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं जहा तामलिस्स जाव-पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण. जाव संतसारसावएज्जेणं अतीव अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं उव्वेहमाणे विहरामि? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि, तं चेव जाव अभिवड्ढामि, जावं च मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुयं तंबियं तावसभंडयं घडावेत्ता, सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावित्ता, तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुयं तंबियं तावसभंडयं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धया हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो

सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा, पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेयकढिणगाया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियंपिव कंडुसोल्लियंपिव कट्ठसोल्लियंपिव अप्पाणं जाव करेमाणा विहरंति (जहा उववाइए जावकट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति) तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिय तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भावित्ता दिसा-पोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय जाव विहरित्तए" त्ति कट्टु; एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहीलोह जाव घडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को. स. २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरं नयरं सब्भिंतर बाहिरियं आसिय. जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

[६] उसके बाद एक दिन राजा शिव को रात्रि के पिछले प्रहर में (पूर्वरात्रि के बाद अपर रात्रि काल में) राज्य के कार्यभार का विचार करते हुए ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि यह मेरे पूर्व-पुण्य कर्मों का प्रभाव है, इत्यादि तीसरे शतक के प्रथम उद्देशक में कथित तामली—तापस के वर्णन के अनुसार विचार हुआ—यावत् मैं पुत्र, पशु, राज्य, राष्ट्र, बल (सैन्य), वाहन, कोष, कोष्ठागार, पुर और अन्तःपुर आदि द्वारा वृद्धि को प्राप्त हो रहा हूँ। अखूट धन, कनक, रत्न यावत् सारभूत द्रव्य द्वारा अतिशय अभिवृद्धि प्राप्त कर रहा हूँ। तो क्या मैं पूर्व पुण्य कर्मों के फलस्वरूप यावत् एकान्त सुख का उपभोग कर रहा हूँ तो अब मेरे लिये यही श्रेष्ठ है कि जब तक मैं हिरण्य आदि से वृद्धि को प्राप्त हो रहा हूँ, यावत् जब तक सामन्त राजा आदि भी मेरे वश में हैं तब तक कल प्रातःकाल देदीप्यमान सूर्य के उदय होने पर मैं बहुत-सी लोढ़ी, लोहे की कड़ाही, कुड़छी और ताम्बे के ताप सहने योग्य उपकरण (या पात्र) बनवाऊँ और शिवभद्र कुमार को राज्य पर स्थापित कर उपयुक्त लोहे एवं ताम्बे के तापसोचित भांड-उपकरण लेकर, उन तापसों के पास जाऊँ जो वानप्रस्थ तापस गंगातट पर हैं; जैसे कि—अग्निहोत्री, पोतिक (वस्त्रधारी), कौत्रिक (पृथ्वी पर सोने वाले), याज्ञिक, श्राद्धी (श्राद्धकर्म करने वाले), खप्परधारी (स्थालिक), कुण्डिकाधारी, दन्त-प्रक्षालक, उम्मज्जक, सम्मज्जक, निमज्जक, सम्प्रक्षालक, ऊर्ध्वकण्डुक, अधोकण्डुक, दक्षिणकूलक, उत्तरकूलक, शंखधमक (शंख फूंककर भोजन करने वाले), कूलधमक (किनारे पर खड़े होकर आवाज करके भोजन करने वाले), मृगलुब्धक, हस्तीतापस, जल से अभिषेक किये बिना भोजन नहीं करने वाले, बिलवासी, वायु में रहने वाले, वल्कलधारी, जल में रहने वाले वस्त्रधारी, जलभक्षक, वायुभक्षक, शेवालभक्षक, मूलाहारक, कन्दाहारक, पत्राहारी, पुष्पाहारी, फलाहारी, बीजाहारी, सड़ कर टूटे या गिरे हुए कन्द, मूल, छाल, पत्ते, पुष्प और फल खाने वाले, ऊँचा दण्ड रखकर चलने वाले, वृक्ष के मूल में रहने वाले, मांडलिक, वनवासी, दिशाप्रोक्षी, आतापना से पंचाग्नि ताप तपने वाले इत्यादि औपपातिक

सूत्र में कहे अनुसार यावत् जो अपने शरीर को काष्ठ जैसा बना देते हैं, उनमें से जो तापस दिशाप्रोक्षक हैं, उनके पास मुण्डित होकर मैं दिक्प्रोक्षक-तापस-रूप प्रव्रज्या अंगीकार करूँ। प्रव्रज्या लेकर इस प्रकार का अभिग्रह धारण करूँ कि 'यावज्जीवन निरन्तर छठ-छठ की तपस्या द्वारा दिक्चक्रवाल तप-कर्म में दोनों भुजाएँ ऊँची रखकर रहना मेरे लिये कल्पनीय है।' शिव राजा ने इस प्रकार का विचार किया।

यह विचार कर दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय होने पर अनेक प्रकार की लोढ़ियाँ, लोहे की कड़ाही आदि तापसोचित भण्डोपकरण तैयार कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियो! शीघ्र ही हस्तिनापुर नगर के बाहर और भीतर जल का छिड़काव करके स्वच्छ कराओ आदि; यावत् उन्होंने राजा की आज्ञानुसार कार्य करवाकर राजा को निवेदन किया।

6. Once during the last quarter of a night, while king Shiva was pondering over the workload of his state duties, an aspiration surfaced in his mind that it is the result of his past meritorious *karma*s (like that mentioned in the story of Tamil hermit in the first lesson of the third chapter)... and so on up to... 'I am gaining continuous growth in terms of sons, livestock, kingdom, state, army, vehicles, treasure, warehouses, forts, inner quarters etc. I am also enjoying unlimited growth of wealth, gold, gems... and so on up to...valuable things. Now that I am still enjoying absolute happiness due to my past meritorious *karma*s, as long as my gold etc. is increasing... and so on up to... and my subordinates, including kings and ministers, are under my command, it would be to my benefit that tomorrow when the night ends and the brilliant sun rises I should arrange to get made numerous grinding stones (*lodhi*), cooking pans (*kadaahi*) and spoons (*kaduchhi*) of iron and utensils of copper that can take heat. Then I should install prince Shivabhadra on the throne of the kingdom. After that I should take those utensils of iron and copper suitable for *taapasa*s (hermits) and go to those hermits who have renounced their homes and live on the banks of the Ganges River. Those *taapasa*s (hermits) include—*Agnihotri* (those who do offerings at fire sacrifice), *Potrik* (the clad ones); *Kautrik* (those who sleep on the ground); *Yajnik* (those who perform yajna or ritual sacrifice); *Shraaddhakin* (those who perform rituals for the benefit of deceased relatives); *Sthaalakin* (those who carry plate or *thaali* and other pots); *Humbauttha* (jungle dwelling ones); *Dantukhalik* (those who remove husk

from grain with their teeth before eating); *Unmajjak* (those who bathe by taking just one dip in water); *Sammajjak* (those who wash their hands and feet repeatedly); *Nimajjak* (those who remain under water for some time); *Samprakshaalak* (those who cleanse their body by rubbing sand or clay); *Dakshin-koolak* (those who live on the southern bank of the Ganges); *Uttar-koolak* (those who live on the northern bank of the Ganges); *Shankhadhma* (those who take their meals after blowing conch-shell); *Kooladhma* (those who take their meals on the bank after shouting loudly); *Mrigalubdhak* (those who subsist on deer-meat); *Hastitaapas* (those who subsist on elephant-meat); *Uddandak* (those who move about raising their staff); *Dishaprokshi* (those who sprinkle water in all directions for worship); *Valkavaasi* (the bark-clad); *Bil-vaasi* (those who dig holes and live in them); *Jal-vaasi* (those who live in water); *Vrikshamoolak* (those who live under trees); *Jal-bhakshi* (those who subsist only on water); *Vayubhakshi* (those who subsist only on air); *Shaivalabhakshi* (those who subsist on moss or grass only); *Moolaahaari* (those who subsist on roots only); *Kandaahaari* (those who subsist on bulbous roots); *Tvachaahaari* (those who subsist on bark of a plant); *Patraahaari* (those who subsist on leaves); *Pushpaahaari* (those who subsist on flowers); *Bijaahaari* (those who subsist on seeds); those who subsist on naturally fallen or detached bulbous roots, roots, bark, leaves, flowers, and fruits; those who develop endurance for water by regularly pouring water on their bodies; and those who mortify their bodies by five fires (burning four pyres on four sides and considering sun to be the fifth) as if cooking on burning coal or roasting in hot sand... and so on up to... those who turn their body like a log of wood (as mentioned in *Aupapatik Sutra*). Of these *taapasa*s (hermits) I would like to get initiated with the *Dishaprokshik*s (those who sprinkle water in all directions for worship). After getting tonsured and initiated I will take this rigorous resolve–"I will observe a life long vow of continuous two day fasts (a two day fast followed by a day of eating and again followed by a two day fast and so on). While doing this I will perform the *Disha-chakraval* practice mortifying my body enduring heat of the sun with raised arms in the heat-mortification arena." Thus thought King Shiva.

Deciding thus, at dawn (next morning) he got many grinding stones, iron cooking pans and other utensils befitting a hermit, called his attendants and said, "O beloved of gods! At once arrange to sprinkle water inside and outside Hastinapur and get it cleaned. Etc."... and so on up to... the attendants did as ordered and informed the king.

विवेचन—जल से दिशाओं की पूजा करके फिर फल-फूल को ग्रहण करना '**दिशा-प्रोक्षक प्रवज्या**' कहलाती है। **दिक्चक्रवाल तपःकर्म का लक्षण**—बेले के पारणे के दिन पूर्व दिशा में जो फल हों, उन्हें ग्रहण करके खाए जाते हैं, फिर दूसरे पारणे में दूसरी जगह दक्षिण दिशा में जो फल हों, उन्हें खाना। इसी तरह क्रमशः सभी दिशाओं से फल आदि लाकर खाना, जिस तपःकर्म में पारणा किया जाता है, उसे दिक्चक्रवाल तपःकर्म कहते हैं।

Elaboration—Accepting flowers and fruits after performing ritual worship by sprinkling water in all directions is called *Disha-prokshik* initiation. *Disha-chakravaal* practice–According to Acharya Shri Atmaram ji M., for breaking fast in this austere practice the aspirant collects fruits and places in four directions of the arena of practice. At the proper time he breaks his first fast eating the fruits placed in the east direction. The second, third and fourth fasts are broken by eating fruits placed in south, east, and north directions respectively. The practice in which fast is broken following this sequence is called *Disha-chakravaal* austerity. (Detailed description of hermits is available in *Aupapatik Sutra*, aphorism-72)

शिवभद्र कुमार का राज्याभिषेक और राज्य-ग्रहण

CORONATION OF PRINCE SHIVABHADRA

७. तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडुं बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह।

[७] तदनन्तर शिव राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को फिर से कहा कि 'हे देवानुप्रियो! शिवभद्र कुमार के महार्थ, महामूल्यवान और महोत्सव योग्य विपुल राज्याभिषेक की शीघ्र तैयारी करो।'

7. Then king Shiva once again called his attendants and said, "O beloved of gods! At once make arrangements for celebrating a grand, lavish and opulent coronation of prince Shivabhadra.

८. तए णं ते कोडुं वियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति।

[८] उसके बाद वे कौटुम्बिक पुरुषों ने राजा के आदेश अनुसार राज्याभिषेक की तैयारी की।

8. The attendants made arrangements for the coronation as instructed by the king.

९. तए णं से सिवे राया अणेगगणनायग-दंडनायग जाव-संधिपाल सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेइ, नि. २ अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, म. अ. २ पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ, पम्ह. लू. २ सरसेणं गोसीसेणं एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो तहेव जाव कप्परुक्खगं पिव अलंकियविभूसियं करेइ, करित्ता करयल जाव कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति, जएणं विजएणं वद्धावित्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं जहा उववाइए कोणियस्स जाव परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नयरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागर-नयरं जाव विहराहि, त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति।

[९] यह हो जाने पर शिव राजा ने अनेक गणनायक, दण्डनायक यावत् सन्धिपाल आदि राज्यपुरुष-परिवार से युक्त होकर शिवभद्र कुमार को पूर्व दिशा की तरफ मुख करके श्रेष्ठ सिंहासन पर आसीन किया। फिर एक सौ आठ सोने के कलशों द्वारा यावत् एक सौ आठ मिट्टी के कलशों द्वारा सर्व ऋद्धि (राजचिह्नों) के साथ यावत् बाजों के महा नाद के साथ राज्याभिषेक से अभिषिक्त किया। तदनन्तर अत्यन्त कोमल सुगन्धित गन्ध काषाय वस्त्र (तौलिया) द्वारा उसके शरीर को पोंछा। फिर गोशीर्ष चन्दन का लेप किया। यावत् जमालि के वर्णन अनुसार कल्पवृक्ष के समान अलंकारों से अलंकृत किया। इसके पश्चात् हाथ जोड़कर शिवभद्र कुमार को जय-विजय शब्दों से बधाई दी और औपपातिक सूत्र में वर्णित कोणिक राजा के प्रकरण अनुसार--(शिवभद्र कुमार को) इष्ट, कान्त एवं प्रिय शब्दों द्वारा आशीर्वाद दिया, यावत् कहा कि तुम दीर्घायु हो और इष्ट जनों से युक्त होकर हस्तिनापुर नगर और अन्य बहुत-से ग्राम, आकर, नगर आदि के परिवार, राज्य और राष्ट्र आदि के स्वामित्व का उपभोग करते हुए विचरो; इत्यादि कहकर जय-जय शब्द का उच्चारण किया।

9. Once this was done, King Shiva, along with his retinue of many chieftains (*gananaayag* or *gananaayak*); administrators (*dandanaayag* or *dandanaayak*)... and so on up to... diplomats (*sandhivaal* or *sandhipaal*), seated prince Shivabhadra on an exquisite throne facing east. Having done that they performed the ritual of pre-crowning anointing (*raajyaabhishek*) with grand fanfare (including royal canopy, other regalia and sound of musical instruments) using one hundred eight

golden urns... and so on up to... one hundred eight earthen urns. After that his body was wiped dry with soft and fragrant cloth and smeared with paste of Goshirsh sandal-wood. ... and so on up to... embellished with ornaments like Kalpavriksha (divine wish-fulfilling tree) as mentioned about Jamali. Then everyone joined palms, congratulated prince Shivabhadra with hails of victory, blessed him in adorable (*isht*), lovable (*kaant*) and endearing words ... and so on up to ... and said, 'May you live long and enjoy being the lord of Hastinapur and many other villages, settlements, cities, kingdoms and state along with your family and friends.' Saying all this they once again greeted him with hails of victory.

१०. तए णं से सिवभद्द कुमारे राया जाए महया हिमवंत. वण्णओ जाव विहरइ।

[१०] उसके बाद वह शिवभद्र कुमार राजा बन गया। वह महाहिमवान् पर्वत के समान राजाओं में प्रधान होकर विचरण करने लगा। यहाँ शिवभद्र राजा का वर्णन समझना चाहिए।

10. Now prince Shivabhadra became the king. Like the great Himalaya mountain he soon became leader of kings. Description (of king Shivabhadra).

शिव राजर्षि द्वारा दिशाप्रोक्षकतापस-प्रव्रज्याग्रहण

SAINT-KING SHIVA INITIATED AS *DISHAPROKSHIK* HERMIT

११. तए णं से सिवे राया अन्नया कयाइं सोभणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-दिवस-मुहुत्तंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण जाव परिजणं रायाणो य खत्तिया य आमंतेइ, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण जाव परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि य सद्धिं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं एवं जहा तामली जाव सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारे. सक्कारित्ता तं मित्त-नाइ जाव परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति तं चेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं. तं चेव जाव अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अय. अभि. २ पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

[११] तदनन्तर किसी समय शिव राजा (भूतपूर्व हस्तिनापुर नृप) ने प्रशस्त तिथि, करण, नक्षत्र, दिवस और शुभ मुहूर्त में विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम तैयार करवाया और मित्र, ज्ञातिजन, स्वजन, परिजन, राजाओं एवं क्षत्रियों आदि को आमंत्रित किया। स्वयं स्नान आदि

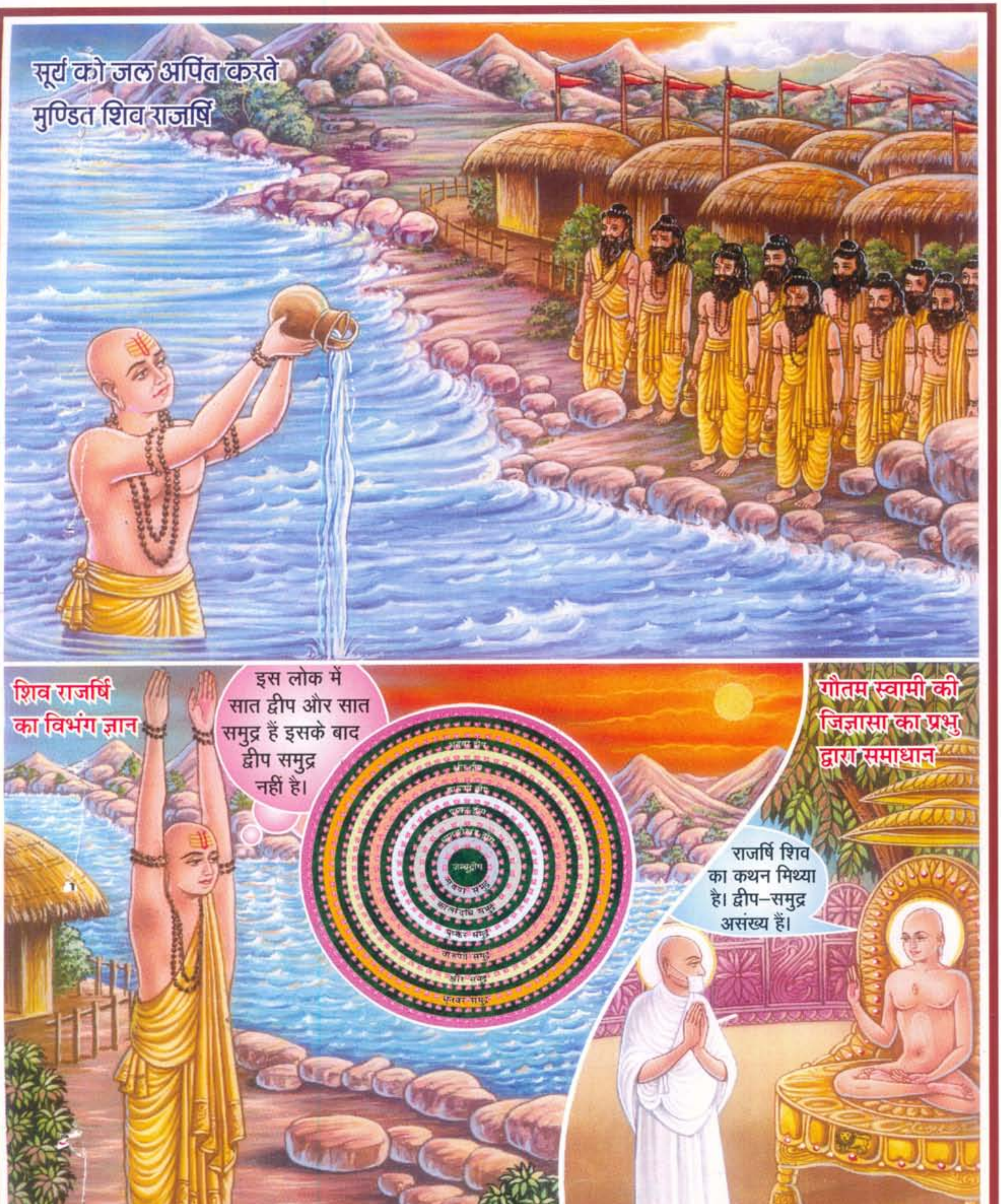
सूर्य को जल अर्पित करते
मुण्डित शिव राजर्षि
शिव राजर्षि
का विभंग ज्ञान
इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र हैं इसके बाद द्वीप समुद्र नहीं है।
गौतम स्वामी की
जिज्ञासा का प्रभु
द्वारा समाधान
राजर्षि शिव का कथन मिथ्या है। द्वीप–समुद्र असंख्य हैं।

चित्र-परिचय 4

Illustration No. 4

शिव राजर्षि

हस्तिनापुर के राजा शिव ने गंगा तट पर दिशाप्रोक्षक प्रवज्या ग्रहण की और बेले-तेले की तपस्या करते हुए दिक्चक्रवाल तप करने लगे। तपस्या करते-करते उनको विभंगज्ञान उत्पन्न हो गया और वे सात द्वीप-समुद्रों तक देखने-जानने लगे, जिससे उनको यह भ्रम उत्पन्न हुआ कि इस लोक में केवल सात द्वीप-समुद्र ही हैं, इससे आगे लोक समाप्त है। तब वे लोगों से ऐसा कहने लगे।

एक बार गौतम स्वामी गोचरी के लिए हस्तिनापुर नगर में पधारे। वहाँ उन्होंने लोगों के मुख से शिव राजर्षि का कथन सुना तो वापस आकर अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए भगवान महावीर स्वामी से प्रश्न पृच्छा की। तब प्रभु ने इसका समाधान देते हुए बताया- "हे गौतम ! शिव राजर्षि को विभंगज्ञान उत्पन्न हुआ है और उनका यह कथन मिथ्या है कि लोक में केवल सात द्वीप-समुद्र हैं। गौतम ! लोक में असंख्य द्वीप-समुद्र हैं।"

—शतक 10, उ. 9

SHIVA RAJARSHI

King Shiva of Hastinapur got initiated as Dishaprokshak on the banks of Ganges and commenced the *Dishachakraval-tap* with series of two day fasts. While observing this austerity he acquired *Vibhang jnana* and started seeing and knowing seven continents and seas. This gave him a delusion that there are only seven continents and seas in this universe (*Lok*) and nothing beyond. He started preaching this theory to masses.

One Gautam Swami came to Hastinapur city for seeking alms. He heard about Shiva Rajarshi's preaching from people. On his return he went to Bhagavan Mahavir and asked questions to satisfy his curiosity. Bhagavan said—"Gautam ! Shiva Rajarshi has gained *Vibhang jnana* and his statement that there are only seven continents and seas in this universe (*Lok*) is wrong. In fact there are innumerable continents and seas in this universe (*Lok*).

—Shatak-10, lesson-9

करके शरीर पर (चंदनादि का लेप किया।) उसके बाद भोजन के समय भोजनमण्डप में उत्तम सुखासन पर बैठा और उन मित्र, ज्ञातिजन, स्वजन, यावत् परिजन, राजाओं और क्षत्रियों के साथ विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम का भोजन करके तामली तापस (श. ३, उ. १ में वर्णित वर्णन) के अनुसार, यावत् उनका सत्कार-सम्मान किया। तदनन्तर उन मित्र, ज्ञातिजन आदि सभी की तथा शिवभद्र राजा की अनुमति लेकर लोढी—लोहकटाह, कुड़छी आदि बहुत से तापसोचित भण्डोपकरण ग्रहण किये और गंगा नदी निवासी जो वानप्रस्थ तापस थे, वहाँ जाकर, यावत् दिशाप्रोक्षक-तापस के रूप में प्रव्रजित हो गया। प्रव्रज्या ग्रहण करते ही शिवराजर्षि ने इस प्रकार का अभिग्रह धारण किया—आज से जीवन पर्यन्त मुझे बेले-बेले (छट्ठ-छट्ठ-तप) करते हुए विचरना कल्पनीय है; आदि उपर्युक्त (सू. ६ के अनुसार) यावत् अभिग्रह धारण करके प्रथम छट्ठ (बेले का) तप अंगीकार करके विचरने लगा।

11. Some time after that king Shiva (erstwhile of Hastinapur) got prepared plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) on an auspicious date, asterism, day and moment and invited friends, kinfolk, relatives, acquaintances, kings, warriors etc. After that he took his bath and smeared sandalwood paste on his body etc. At meal-time he came to the dining area and took a comfortable seat. Thereafter he sat to dine with those friends, kinfolk, relatives, acquaintances, kings, warriors etc. and ate that ample *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food)... and so on up to... greeted and honoured them as described about Taamali *Taapas* (Chapter-3, Lesson-1). Having done that he took permission of those friends, relatives etc. and king Shivabhadra, collected all utensils and equipments befitting a hermit, came to the world-renouncing hermits on the banks of river Ganges... and so on up to... got initiated as *Dishaprokshik* hermit. Immediately after getting initiated saintly king Shiva resolved thus—'I will observe a life long vow of continuous two day fasts etc.' (as mentioned in statement-6.)... and so on up to... after taking the resolve he commenced his first two-day fast and moved about.

शिव राजर्षि द्वारा दिशाप्रोक्षणतापसचर्या का पालन

SAINT-KING SHIVA OBSERVING *DISHAPROKSHIK* AUSTERITY

१२. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आया. प. २ वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ किढिणसंकाइयगं गिण्हइ, कि. गि. २ पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ। 'पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे

पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, अभिरक्खित्ता, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पासइ, पा. २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ। गे. २ किढिणसंकाइयगं भरेइ, किढि. भ. २ दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गेण्हइ, गे. २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, ते उवा. २ किढिणसंकाइयगं ठवेइ, किढि. ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वेदिं व. २ उवलेवणसम्मज्जणं करेइ, उ. क. २ दब्भ-कलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ गंगामहानदिं ओगाहइ, गंगा. ओ. २ जलमज्जणं करेइ, जल. क. २ जलकीडं करेइ, जल. क. २ जलाभिसेयं करेइ, ज. क. २ आयंते चोक्खे परमसूइभूए देवय-पिइकयकज्जे दब्भसगब्भकलसाहत्थगए गंगाओ महानदीओ पच्चुत्तरइ, गंगा. प. २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेइं रएइ, वेइं र. २ सरएणं अरणिं महेइ, स. मं. २ अग्गिं पाडेइ, अग्गिं पा. २ अग्गिं संधुक्केइ, अ. सं. २ समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, स. प. २ अग्गिं उज्जालेइ, अ. उ. २—

अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे। तं जहा—सकहं १ वक्कलं २ ठाणं ३ सेज्जाभंडं ४ कमंडलुं ५। दंडदारुं ६ तहऽप्पाणं ७ अहेताइं समादहे॥

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, अ. हु. २ चरुं साहेइ, चरुं सा. २ बलिं वइस्सदेवं करेइ, बलि. क. २ अतिहिपूयं करेइ, अ. क. २ तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।

[१२] तदनन्तर वह शिवराजर्षि प्रथम छट्ठ (बेले) के पारणे के दिन आतापना भूमि से नीचे उतरकर वल्कल के वस्त्र पहनकर जहाँ अपनी कुटी थी, वहाँ आए। वहाँ पर रहा हुआ किढीण (बाँस का पात्र—छबड़ी) और कावड़ लेकर पूर्व दिशा का पूजन कर इस प्रकार बोले—'हे पूर्व दिशा के लोकपाल सोम महाराज! प्रस्थान (परलोक-साधना मार्ग) में प्रस्थित (प्रवृत्त) मुझ शिवराजर्षि की आप रक्षा करें, और यहाँ (पूर्व दिशा में) जो भी कन्द, मूल, छाल, पत्ते, पुष्प, फल, बीज और हरी वनस्पति हैं, उन्हें लेने की अनुज्ञा दें। इस प्रकार कहकर शिवराजर्षि ने पूर्व दिशा का अवलोकन किया और वहाँ जो भी कन्द, मूल, यावत् हरी वनस्पति मिली, उसे ग्रहण की और कावड़ में लगी हुई बाँस की छबड़ी में भर ली। फिर दर्भ (डाभ), कुश, समिधा और वृक्ष की शाखा को झुकाकर तोड़े हुए पत्ते लिए और जहाँ अपनी कुटी थी, वहाँ आए। कावड़ सहित छबड़ी नीचे रखी, फिर वेदिका का प्रमार्जन किया, उसे लीप कर शुद्ध किया। तत्पश्चात् डाभ और कलश हाथ में लेकर जहाँ गंगा महानदी थी, वहाँ आए। गंगा महानदी में अवगाहन किया और उसके जल से देह शुद्ध किया। फिर जलक्रीड़ा कर पानी अपने देह पर सींचा, जल का आचमन आदि करके स्वच्छ और परम पवित्र होकर देव और पितरों का कार्य सम्पन्न करके कलश में डाभ डालकर उसे हाथ में लेकर गंगा महानदी से बाहर निकले और जहाँ अपनी कुटी

थी, वहाँ आए। कुटी में उन्होंने डाभ, कुश और बालू से वेदी बनाई। फिर मथनकाष्ठ से अरणि की लकड़ी घिसकर आग सुलगाई। अग्नि जब धधकने लगी तो उसमें समिधा की लकड़ी डालकर आग अधिक प्रज्वलित की। फिर अग्नि के दाहिनी तरफ ये सात वस्तुएँ (अंग) रखीं, यथा—(१) सकथा (उपकरण—विशेष), (२) वल्कल, (३) स्थान (दरी) (४) शय्याभाण्ड, (५) कमण्डलु, (६) लकड़ी का डंडा और (७) अपना शरीर। फिर मधु, घी और चावलों का अग्नि में हवन करके चरु (बलिपात्र) में बलिद्रव्य लेकर बलिवैश्व देव (अग्निदेव) को अर्पण कर अतिथि की पूजा करके शिवराजर्षि ने स्वयं आहार किया।

12. On the day he was to break his first two day fast that Saint-king Shiva stepped down from the heat-mortification arena. He then put on his bark-garments and came to his hut. He took a bamboo basket and a pole to carry it. After worshipping and sprinkling water in the east he uttered—"O honoured Soma, the guardian angel of the east, please protect me, Saint-king Shiva, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots, bark, leaves, flowers, fruits, seeds, and green vegetables as well as grass are available in the east." With these words Saint-king Shiva went towards east and collected whatever bulbous roots, roots, ... and so on up to... grass he could find and put them in the basket on the carrying pole. He also collected some grass, some leaves by bending branches, and some fire-wood. He then returned to his hut. He placed the basket and the pole on the ground. Now he made a clean platform and plastered it with cow-dung and other purifying things. After sprinkling water over that spot he took the grass and a pitcher, walked to the Ganges and entered it. He washed his body clean in the river water and played around in the river to soak his body. After washing his mouth and getting absolutely pure, he made offerings of water to deities and his ancestors. After this ritual he came out of the Ganges carrying the grass and the pitcher and returned to his hut. Back in the hut, he prepared a sacrificial platform with grass and sand. Taking the fire wood, he prepared two pieces of wood, one with a hole and the other pointed to fit in the whole. With the help of these two pieces of wood he made fire and inflamed it by adding fire-wood. Once the pyre was ready he installed seven things on its right-hand side—(1) *Sakth* (an instrument), (2) *Valkal* (bark garment), (3) *Sthaan* (aasan; seat or mattress), (4) *Shayya-bhaand* (bed and utensils), (5) *Kamandalu* (gourd-bowl), (6) wooden staff, and

(7) one's own body. Installing these seven things he offered honey, butter-oil, and rice into the pyre and offered sacrifice with the urn. He performed the daily yajna and worshipped guests (offered food to guests). At last he himself accepted food.

१३. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ. प. २ वागल. एवं जहा—पढमपारणगं, नवरं दाहिणगं दिसं पोक्खेइ। दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं., सेसं तं चेव जाव आहारमाहारेइ।

[१३] तदनन्तर उन शिवराजर्षि ने दूसरा बेला (छट्ठक्खमण) अंगीकार किया और दूसरे बेले के पारणे के दिन शिवराजर्षि आतापना भूमि से नीचे उतरे, वल्कल के वस्त्र पहने, यावत् प्रथम पारणे की जो विधि की थी, उसी के अनुसार दूसरे पारणे में भी किया। विशेषता यह है कि दूसरे पारणे के दिन दक्षिण दिशा की पूजा की। 'हे दक्षिण दिशा के लोकपाल यम महाराज! परलोक साधना में प्रस्थित मुझ शिवराजर्षि की रक्षा करें', आदि सब उपरोक्तवत् जानना चाहिए; यावत् अतिथि की पूजा करके फिर उसने स्वयं आहार किया।

13. Saint-king Shiva then commenced his second two day fast. To break his second fast Saint-king Shiva stepped down from the heat-mortification arena, put on his bark-garments... and so on up to... and broke the second two days fast following the aforesaid procedure. The only change being that this time he worshipped southern direction and uttered—"O honoured Yama, the guardian angel of the south, please protect me, Saint-king Shiva, on the spiritual path... as aforesaid... and so on up to... worshipped guests (offered food to guests) and at last he himself accepted food.

१४. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सिवे रायरिसी. सेसं तं चेव, नवरं पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ। पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खतु सिवं. सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।

[१४] तदनन्तर उन शिव राजर्षि ने तृतीय बेला अंगीकार किया। उसके पारणे के दिन शिवराजर्षि ने पूर्वोक्त सारी विधि की। इसमें विशेषता यह है कि पश्चिम दिशा की पूजा की और प्रार्थना की—हे पश्चिम दिशा के लोकपाल वरुण महाराज! परलोक-साधना-मार्ग में प्रस्थित मुझ शिवराजर्षि की रक्षा करें, आदि सब पूर्ववत् जानना चाहिये। यावत् स्वयं आहार किया।

14. Saint-king Shiva then commenced his third two day fast. He broke the third two days fast following the aforesaid procedure. The only change being that this time he worshipped western direction and uttered—"O honoured Varun, the guardian angel of the west, please protect me, Saint-king Shiva, on the spiritual path (continued the aforesaid procedure)... and so on up to... he himself accepted food.

१५. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं. एवं तं चेव, नवरं उत्तर दिसं पोक्खेइ। उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं. रायरिसिं सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।

[१५] तत्पश्चात् उन शिवराजर्षि ने चतुर्थ बेला अंगीकार किया। फिर इस चौथे बेले के तप के पारणे के दिन उपरोक्त सारी विधि की। विशेषता यह है कि उन्होंने (इस बार) उत्तर दिशा की पूजा की और इस प्रकार प्रार्थना की—'हे उत्तर दिशा के लोकपाल वैश्रमण महाराज! परलोक-साधना-मार्ग में प्रस्थित इस शिवराजर्षि की रक्षा करें', यावत् शिवराजर्षि ने स्वयं आहार किया। तब तक का समग्र वर्णन पूर्ववत् समझना।

15. Saint-king Shiva then commenced his fourth two day fast. He broke the fourth two days fast following the aforesaid procedure. The only change being that this time he worshipped northern direction and uttered—"O honoured Vaishraman, the guardian angel of the north, please protect me, Saint-king Shiva, on the spiritual path (continued the aforesaid procedure)... and so on up to... he himself accepted food.

राजर्षि को विभंगज्ञान प्राप्त होने पर अपने ज्ञान का दावा और जनशंका

THE SAINT-KING GAINS *VIBHANGA-JNANA* AND PRIDE FOR HIS KNOWLEDGE

१६. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जाव विणीययाए अन्नया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने। से णं तेण विब्भंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे। तेण परं न जाणइ न पासइ।

[१६] इसके बाद निरन्तर बेले-बेले की तपश्चर्या के दिक्चक्रवाल का प्रोक्षण करने से, यावत् आतापना लेने से तथा प्रकृति की भद्रता यावत् विनीतता से शिव राजर्षि को किसी दिन तदावरणीय कर्मों के क्षयोपशम के कारण ईहा, अपोह, मार्गणा और गवेषणा करते हुए विभंग ज्ञान उत्पन्न हुआ। उस उत्पन्न विभंगज्ञान से वे इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र तक देखने लगे। इससे आगे का वे जानते और देखते नहीं थे।

16. Due to observing aforesaid *Dishaprokshik* austerity with series of two day fasts along with exposure to sun and fire and due to his gentle and modest nature Saint-king Shiva one day gained *Vibhanga-jnana* (pervert knowledge) as a consequence of pacification and destruction of the related veiling *karmas*, while performing the process of *Iha* (conceiving the proper meaning), *Apoh* (ascertaining), *Margana* (searching for supporting values) and *Gaveshana* (comparing with opposing values). With the help of this acquired pervert knowledge he could see this *Lok* (occupied space or universe) up to seven continents and seven oceans; beyond that he neither knew nor saw.

१७. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–अत्थि णं ममं अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा, सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। एवं संपेहेइ, एवं सं. २ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ. प. २ वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं किढिणसंकाइयगं च गेण्हइ, गे. २ जेणेव हत्थिणापुरे नयरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ भंडनिक्खेवं करेइ, भंड. क. २ हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग-तिग जाव पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने एवं खलु अस्सिं लोए जाव दीवा य समुद्दा य।

[१७] तदनन्तर शिवराजर्षि को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ–"मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है। इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र हैं। उससे आगे द्वीप-समुद्र नहीं है।" ऐसा विचार कर वे आतापना-भूमि से नीचे उतरे और वल्कल-वस्त्र पहनकर अपनी कुटी में आए। वहाँ से अपने लोढ़ी, लोहे का कड़ाह, कुड़छी आदि बहुत-से भण्डोपकरण तथा छबड़ी-सहित कावड़ को लेकर हस्तिनापुर नगर में तापसों के आश्रम में आए। वहाँ अपने तापसोचित उपकरण रखकर हस्तिनापुर नगर के शृंगाटक, त्रिक यावत् राजमार्गों में बहुत-से मनुष्यों को इस प्रकार कहने यावत् प्ररूपणा करने लगे–"हे देवानुप्रियो! मुझे अतिशय-ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, जिससे मैं यह जानता और देखता हूँ कि इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र हैं।"

17. At this Saint-king Shiva thought thus, "I have gained supreme knowledge and perception. This *Lok* (occupied space or universe) has seven continents and seven oceans; beyond that there are no continents or oceans." With these thoughts he got down from the heat-mortification arena, put on his bark-garments and came to his cottage. There he

collected numerous utensils and equipment including his grinding stone, iron cooking pans and spoons as well as the basket and the carrying pole, and came to the hermitage in Hastinapur. Leaving his hermit-equipment there he started moving around in squares, crossings, highways and other public places in the city of Hastinapur and preaching to masses–"O beloved of gods! I have gained supreme knowledge and perception with the help of which, I know and see that this *Lok* (occupied space or universe) has seven continents and seven oceans."

१८. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग-तिग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ, 'अत्थि णं देवाणुप्पिया। ममं अइसेसे नाण-दंसणे जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दाय य।' से कहमेयं मन्ने एवं?

[१८] तदनन्तर शिवराजर्षि से यह बात सुनकर हस्तिनापुर नगर के शृंगाटक, त्रिक यावत् राजमार्गों पर बहुत-से लोग एक-दूसरे से इस प्रकार कहने यावत् बताने लगे—हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि जो इस प्रकार की बात कहते यावत् प्ररूपणा करते हैं कि "देवानुप्रियो! मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, यावत् इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र ही हैं। इससे आगे द्वीप और समुद्र नहीं हैं। उनकी यह बात कैसे मानी जाए?"

18. Hearing this from Saint-king Shiva the masses on squares, crossings highways and other public places in the city of Hastinapur started talking among themselves–"Beloved of gods ! Saint-king Shiva speaks and preaches thus–'O beloved of gods ! I have gained supreme knowledge and perception with the help of which, I know and see that this *Lok* (occupied space or universe) has only seven continents and seven oceans; beyond that there are no continents or oceans.' Why should we believe his statement ?"

भगवान द्वारा असंख्यात द्वीपसमुद्र की प्ररूपणा

BHAGAVAN PREACHES INNUMERABLE CONTINENTS-OCEANS

१९. ते णं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा जाव पडिगया।

[१९] उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर स्वामी वहाँ पधारे। परिषद् ने धर्मोपदेश सुना, यावत् वापस चली गई।

19. During that period of time Bhagavan Mahavir arrived there. People came out. Bhagavan gave his sermon. People dispersed.

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बिइयसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ—बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ जाव एवं परूवेइ—'एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं मन्ने एवं?'

[२०] उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति अनगार ने, दूसरे शतक के निर्ग्रन्थोद्देशक (श. २ उ. ५) में वर्णित विधि के अनुसार यावत् भिक्षार्थ-पर्यटन करते हुए, बहुत-से लोगों के शब्द सुनें। वे परस्पर एक-दूसरे से कह रहे थे कि हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि यह कहते हैं, यावत् प्ररूपणा करते हैं कि 'हे देवानुप्रियो! इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र हैं, इत्यादि यावत् उससे आगे द्वीप-समुद्र नहीं हैं, तो उनकी यह बात कैसे मानी जाए?'

20. During that period of time the senior disciple of Bhagavan Mahavir, Indrabhuti Anagar, came there (following the procedure mentioned in *Nirgranthoddeshak* (Lesson-5 of Chapter-2)... and so on up to ... while moving about seeking alms, he heard many people talking among themselves–"Beloved of gods! Saint-king Shiva speaks and preaches thus–'O beloved of gods ! I have gained supreme knowledge and perception with the help of which, I know and see that this *Lok* (occupied space or universe) has only seven continents and seven oceans; beyond that there are no continents or oceans.' Why should we believe his statement ?"

२१. [प्र.] तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे जहा नियंठुद्देसए जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं भंते! एवं?

[उ.] 'गोयमा!' दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जं णं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव भंडानिक्खेवं करेइ, हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग. तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव तेणं पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तं णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणाईया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभुरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो!

२१. [प्र.] बहुत-से मनुष्यों से यह बात सुनकर और विचार कर गौतम स्वामी को संदेह, कुतूहल यावत् श्रद्धा उत्पन्न हुई। वे द्वितीय शतक के निर्ग्रन्थोद्देशक में वर्णित वर्णन के अनुसार भगवान की सेवा में आए और उपरोक्त के विषय में पूछा—"भगवन्! शिवराजर्षि जो यह चर्चा कहते हैं, यावत् उससे आगे द्वीपों और समुद्रों का सर्वथा अभाव है, क्या उनका ऐसा कथन सत्य है?"

[उ.] भगवान महावीर ने गौतम को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहा—गौतम! जो ये बहुत-से लोग परस्पर ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपणा करते हैं (इत्यादि) शिवराजर्षि को विभंगज्ञान उत्पन्न होने से लेकर यावत् उन्होंने तापस-आश्रम में भण्डोपकरण रखे। हस्तिनापुर नगर में शृंगाटक, त्रिक आदि राजमार्गों पर वे कहने लगे—यावत् सात द्वीप-समुद्रों से आगे द्वीप-समुद्र नहीं हैं, इत्यादि सब उपरोक्त कहना चाहिए। तदनन्तर शिवराजर्षि से यह बात सुनकर बहुत से मनुष्य ऐसा कहते हैं कि उससे आगे द्वीप-समुद्र नहीं हैं।' यह कथन मिथ्या है। हे गौतम! मैं इस प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि वास्तव में जम्बूद्वीप आदि द्वीप एवं लवण समुद्र आदि समुद्र वृत्ताकार (गोल) होने से आकार (संस्थान) में एक समान हैं परन्तु विस्तार में एक-दूसरे से दुगुने-दुगुने होने से वे अनेक प्रकार के हैं, इत्यादि सभी वर्णन जीवाभिगम सूत्र के अनुसार समझना चाहिए, यावत् 'हे आयुष्मन् श्रमणों! इस तिर्च्छा लोक में स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त असंख्यात द्वीप और समुद्र हैं।'

21. [Q.] When Bhagavan Gautam heard people talking thus an interest... and so on up to... curiosity got triggered and surfaced in his mind. On his return he approached Bhagavan following the procedure as mentioned in Lesson-5 of Chapter-2 and asked about the aforesaid matter–"*Bhante !* This is about the statement of Saint-king Shiva... and so on up to... beyond that there are no continents or oceans. Is his statement correct ?"

[Ans.] Addressing Gautam Bhagavan Mahavir said–"Gautam ! Many people talking among themselves say and establish that—here repeat the story of Saint-king Shiva gaining pervert knowledge... and so on up to... he placed his hermit-equipment in the hermitage and started preaching on crossings etc. of Hastinapur city... and so on up to... there are no continents and oceans beyond seven continents and oceans that he saw. Hearing this from Saint-king Shiva many people also started saying–'There are no continents and oceans beyond seven continents and oceans.' This statement is false. Gautam ! I say... and so on up to...

propagate that, in fact, being round, Jambu continent and other continents as well as Lavan ocean and other oceans are similar in shape but being progressively double in size from the preceding one they are different in expanse (detailed description as mentioned in *Jivabhigam Sutra*)... and so on up to... O long lived *shramans* ! In this transverse dimension there are infinite continents and oceans up the Svayambhuraman ocean."

द्वीप-समुद्रगत द्रव्यों में वर्णादि की परस्परसम्बद्धता

INTERRELATION OF ATTRIBUTES OF SUBSTANCES IN CONTINENTS-OCEANS

२२. [प्र.] अत्थि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि, अफासाइं पि, अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति?

[उ.] हंता, अत्थि।

२२ [प्र.] भगवन्! क्या जम्बूद्वीप नामक द्वीप में वर्णसहित और वर्णरहित, गन्धसहित और गन्धरहित, रससहित और रसरहित, स्पर्शसहित और स्पर्शरहित, द्रव्य अन्योन्यबद्ध, अन्योन्यस्पृष्ट यावत् अन्योन्य सम्बद्ध हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

22. [Q.] *Bhante!* Are the substances in Jambu continent; with or without colour, with or without smell, with or without taste, with or without touch; bound, touched... and so on up to... and related with one another ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They are.

२३. [प्र.] अत्थि णं भंते! लवणसमुद्दे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति?

[उ.] हंता, अत्थि।

२३ [प्र.] भगवन्! क्या लवणसमुद्र में वर्णसहित और वर्णरहित, गन्धसहित और गन्धरहित, रससहित और रसरहित तथा स्पर्शसहित और स्पर्शरहित द्रव्य, अन्योन्य बद्ध तथा अन्योन्य स्पृष्ट यावत् अन्योन्य सम्बद्ध हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

23. [Q.] *Bhante !* Are the substances in Lavan ocean; with or without colour, with or without smell, with or without taste, with or without touch; bound, touched ... and so on up to ...and related with one another?

[Ans.] Yes, Gautam ! They are.

२४. [प्र.] अत्थि णं भंते! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवन्नाइं पि.।

[उ.] एवं चेव।

२४ [प्र.] भगवन्! क्या धातकीखण्ड द्वीप में वर्णसहित-वर्णरहित आदि द्रव्य यावत् अन्योन्य सम्बद्ध हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

24. [Q.] *Bhante !* Are the substances in Dhatakikhand continent; with or without colour, ... and so on up to ... related with one another?

[Ans.] Yes, Gautam! They are.

२५. [प्र.] एवं जाव सयंभूरमणसमुद्दे जाव।

[उ.] हंता, अत्थि।

२५. [प्र.] इसी प्रकार यावत् स्वयम्भूरमण समुद्र में भी यावत् द्रव्य अन्योन्य सम्बद्ध हैं?

[उ.] हाँ, हैं।

25. [Q.] *Bhante!* Are the substances in other continents and oceans... and so on up to... Svayambhuraman ocean; with or without colour,... and so on up to... related with one another ?

[Ans.] Yes, They are.

२६. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

[२६] इसके पश्चात् वह अत्यन्त महती विशाल परिषद् श्रमण भगवान महावीर से उपर्युक्त अर्थ (बात) सुनकर और हृदय में धारण कर हर्षित एवं सन्तुष्ट हुई और श्रमण भगवान महावीर को वन्दना व नमस्कार करके जिस दिशा से आई थी, उसी दिशा में लौट गई।

26. After that the large assembly, hearing the sermon from Bhagavan Mahavir, was happy and contented. After paying homage and greetings to Bhagavan Mahavir it dispersed and people went in directions they came from.

विवेचन—द्वीप-समुद्रगत द्रव्यों में वर्णादि की परस्पर सम्बद्धता—प्रस्तुत पाँच सूत्रों (२२ से २६ तक) में जम्बूद्वीप, लवणसमुद्र आदि समस्त द्वीप-समुद्रों में वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्शादि से रहित और सहित द्रव्यों की परस्पर बद्धता, गाढ़ श्लिष्टता, स्पृष्टता एवं अन्योन्य सम्बद्धता का प्रतिपादन किया गया है।

सवर्णादि एवं अवर्णादि का आशय—वर्णादि-सहित का अर्थ है—पुद्गल द्रव्य तथा वर्णादि-रहित का आशय है—धर्मास्तिकाय आदि। **अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति**—परस्पर सम्बद्ध रहते हैं।

Elaboration—These five statements establish the close and intimate inter-relationship of substances with and without attributes of colour, smell, taste etc.

With and without attributes—With attributes indicates matter and without attributes means entities like space (Akashastikaaya etc.). *Annannaghadattaaye chitthanti*—they exist in mutually inter-connected state.

भगवान से सत्य सुनकर जनता द्वारा प्रचार PUBLICITY OF THE TRUTH TOLD BY BHAGAVAN

२७. तए णं हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—"जं णं देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अइसेसे नाणे जाव समुद्दा य", तं णो इणट्ठे समट्ठे। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव भंडनिक्खेवं करेइ, भंडनिखेवं करेत्ता हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग जाव समुद्दा य। तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव समुद्दा य, तं णं मिच्छा। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जंबुद्दीवाईया दीवा लवणाईया समुद्दा तं चेव जाव असंखेज्जा दीव-समुद्दा पण्णत्ता समणाउसो!।

[२७] हस्तिनापुर नगर में शृंगाटक यावत् मार्गों पर बहुत-से लोग परस्पर इस प्रकार कहने यावत् (एक दूसरे को) बतलाने लगे—"हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि जो यह कहते हैं यावत् प्ररूपणा करते हैं कि मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है, जिससे मैं जानता-देखता हूँ कि इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र ही हैं, इसके आगे द्वीप-समुद्र बिल्कुल नहीं हैं; उनका यह कथन मिथ्या है। श्रमण भगवान महावीर इस प्रकार कहते, यावत् प्ररूपणा करते हैं कि निरन्तर बेले-बेले का तप करते हुए शिवराजर्षि को विभंगज्ञान उत्पन्न हुआ है। विभंगज्ञान उत्पन्न होने पर वे अपनी कुटी में आए यावत् वहाँ से तापस आश्रम में आकर अपने तापसोचित उपकरण रखे और हस्तिनापुर के शृंगाटक यावत् राजमार्गों पर स्वयं को अतिशय ज्ञानी होने का दावा करने लगे। लोग (उनके मुख से) ऐसी बात सुन परस्पर तर्क-वितर्क करते हैं—"क्या शिवराजर्षि का यह कथन सत्य है? परन्तु मैं कहता हूँ कि उनका यह कथन मिथ्या है।" श्रमण भगवान महावीर

इस प्रकार कहते हैं कि वास्तव में जम्बूद्वीप आदि तथा लवण समुद्र आदि गोल होने से एक प्रकार के लगते हैं, किन्तु वे एक-दूसरे से उत्तरोत्तर द्विगुण-द्विगुण होने से अनेक प्रकार के हैं। इसलिए हे आयुष्मन् श्रमणों! (लोक में) द्वीप और समुद्र असंख्यात हैं।

27. On crossings... and so on up to... highways of Hastinapur masses started talking among themselves—"Beloved of gods! Saint-king Shiva says that he has gained supreme knowledge and perception with the help of which, he knows and sees that this universe (*Lok*) has only seven continents and seven oceans. There are no continents and oceans beyond that. This statement by him is false. Shraman Bhagavan Mahavir says... and so on up to... propagates that—'Saint-king Shiva gained pervert knowledge due to his austerity of a series of two-day fasts. After gaining pervert knowledge he returned to his cottage... and so on up to... placed his hermit-equipment in the hermitage and started claiming that he was endowed with supreme knowledge on crossings etc. of Hastinapur city. Hearing this from him, people started discussing that was the statement by Saint-king Shiva correct ? But I say that his statement is false.' Shraman Bhagavan Mahavir says—'In fact, being round, Jambu continent and other continents as well as Lavan ocean and other oceans appear similar in shape but being progressively double in size from the preceding one they are different in expanse. Therefore, O long lived *shramans* ! In this universe (*Lok*) there are infinite continents.'

विवेचन—उपरोक्त सूत्र में भगवान ने शिवराजर्षि को विभंगज्ञान उत्पन्न हुआ बताया है। विभंगज्ञान का अर्थ है मिथ्यात्व युक्त अवधिज्ञान। जब किसी बाल तपस्वी को विभंगज्ञान उत्पन्न हो जाता है तो वह सर्वज्ञ प्रभु द्वारा उपदेष्टित वचनों से विपरीत मिथ्या प्ररूपणा करने लगता है। वह उस विभंग को ही सम्पूर्ण ज्ञान समझ लेता है।

Elaboration—The aforesaid statement conveys that Saint-king Shiva gained *Vibhanga-jnana* (pervert knowledge), which means unrighteous *Avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance). When an ignorant hermit gains this knowledge he starts postulating and propagating against the words of the omniscient. He considers his pervert knowledge to be the ultimate knowledge.

२८. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था।

[२८] तब शिवराजर्षि बहुत-से लोगों से यह बात सुनकर तथा हृदयंगम करके शंकित, कांक्षित, संदिग्ध, अनिश्चित और कलुषित भाव को प्राप्त हुए।

28. Hearing and understanding all this from people, Saint-king Shiva's mind was filled with doubt (*shankit*), desire for other faith (*kankshit*), incredulity (*vichikitsa yukt*), disjunction (*bhed samapann*), and spite (*kalush samapann*).

२९. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव कलुससमावन्नस्स से विभंगे अन्नाणे खिप्पामेव परिवडिए।

[२९] तब शंकित, कांक्षित यावत् कालुष्ययुक्त बने हुए शिवराजर्षि का वह विभंग-अज्ञान तुरन्त ही पतित (नष्ट) हो गया।

29. Then filled with doubt (*shankit*), desire for other faith (*kankshit*),... and so on up to... spite (*kalush samapann*), Saint-king Shiva at once lost his pervert knowledge.

विवेचन—शिवराजर्षि के प्राप्त ज्ञान की वास्तविकता से लोगों को जब भगवान महावीर ने परिचित कराया तो लागों के मुख से यह बात सुनकर शिवराजर्षि को शंका, कांक्षा, विचिकित्सा आदि उत्पन्न हुई। इस कारण उनका विभंगज्ञान नष्ट हो गया। (१. भगवती, विवेचन (पं. घेवरचन्दजी) भा. ४, पृ. १८९२)

Elaboration—Bhagavan Mahavir conveyed to the people the true story of the pervert knowledge gained by Saint-king Shiva. Hearing about that, he was filled with doubt etc. on what he had gained and considered to be the ultimate knowledge. This doubt freed him of his belief on pervert knowledge. (*Bhagavati commentary (Vivechan)* by Pt. Ghewarchand, part-4, p. 1892)

शिवराजर्षि द्वारा निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या स्वीकार और मुक्ति प्राप्ति

INITIATION OF SAINT-KING SHIVA AS *NIRGRANTH*

३०. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—'एवं खलु समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ। तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नाम-गोयस्स जहा उववाइए जाव गहणयाए, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि। एयं णे इहभवे य परभवे य जाव भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ तावसावसहं अणुप्पविसइ, ता. अ. २ सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव किढिणसंकाइयगं च गेण्हइ, गे. २ तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, ता. प. २ परिवडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नयरं मज्झंमज्झेणं

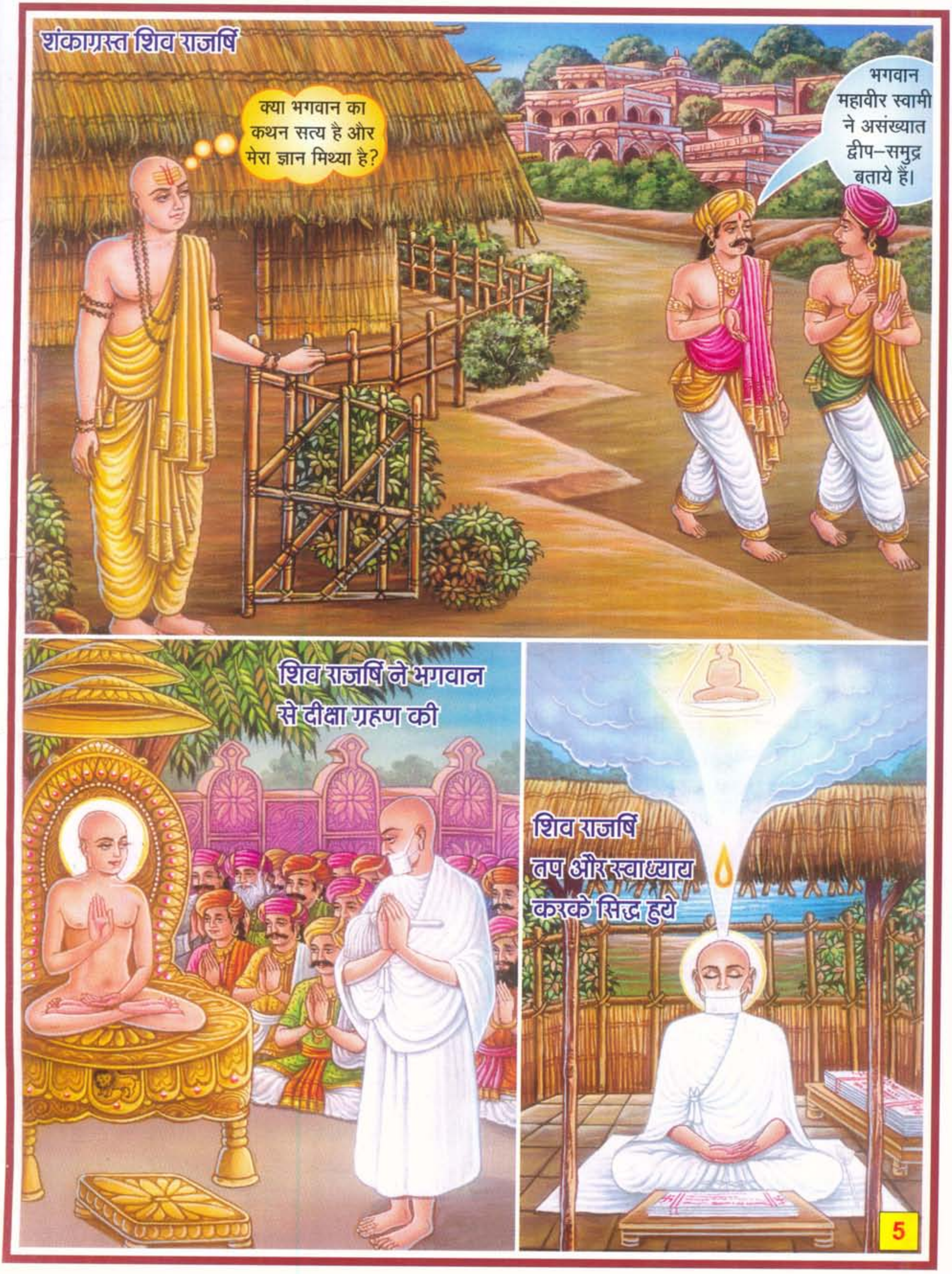

शंकाग्रस्त शिव राजर्षि
क्या भगवान का कथन सत्य है और मेरा ज्ञान मिथ्या है?
भगवान महावीर स्वामी ने असंख्यात द्वीप–समुद्र बताये हैं।
शिव राजर्षि ने भगवान से दीक्षा ग्रहण की
शिव राजर्षि तप और स्वाध्याय करके सिद्ध हुये

चित्र-परिचय 5

Illustration No. 5

शिव राजर्षि की प्रव्रज्या और मोक्ष गमन

एक बार हस्तिनापुर नगर के राजपथ पर अपनी कुटिया के बाहर खड़े शिव राजर्षि ने प्रभु की देशना सुनकर वापस आये लोगों के मुख से सुना कि लोक में असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं तो उन्हें अपने ज्ञान पर शंका उत्पन्न हुई और उसी क्षण उनका विभंगज्ञान विलुप्त हो गया। तब शिव राजर्षि ने प्रभु के समक्ष जाकर आलोचना की और सम्यक्ज्ञान प्राप्त करके प्रभु के मुख से भागवती दीक्षा ग्रहण की। फिर तप और स्वाध्याय करते-करते उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया और सिद्ध हुए।

—शतक 11, उ. 9

INITIATION AND LIBERATION OF SHIVA RAJARSHI

While standing outside his hut on highway in Hastinapur Shiva Rajarshi heard from people returning from Bhagavan Mahavir's discourse that there are innumerable continents and seas in this universe. A doubt arose in his mind on his own knowledge and as a result he lost his *Vibhang jnana*. Shiva Rajarshi then went to Bhagavan and atoned for his faults. Gaining right knowledge he got initiated by Bhagavan. After performing austerities and studies he gained omniscience and got liberated.

—Shatak-10, lesson-9

निग्गच्छइ, नि. २ जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, क. २ वंदइ नमंसइ, वं. २ नच्चासन्ने नाइदूरे जाव पंजलिउडे पज्जुवासइ।

[३०] तत्पश्चात् शिवराजर्षि को इस प्रकार का विचार यावत् उत्पन्न हुआ कि श्रमण भगवान महावीर स्वामी, धर्म की आदि करने वाले, तीर्थंकर यावत् सर्वज्ञ-सर्वदर्शी हैं, जिनके आगे आकाश में धर्मचक्र चलता है, यावत् वे यहाँ सहस्राम्रवन उद्यान में यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके यावत् विचरते हैं। तथारूप अरिहन्त भगवन्तों का नाम-गोत्र सुनना भी महाफलदायक है, तो फिर उनके सम्मुख जाना, वन्दन करना, इत्यादि का तो कहना ही क्या? इत्यादि औपपातिक सूत्र के उल्लेखानुसार विचार किया; यावत् एक भी आर्य धार्मिक सुवचन का सुनना भी महाफल-दायक है, तो फिर विपुल अर्थ के ग्रहण करने का तो कहना ही क्या! अतः मैं श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास जाऊँ, वन्दन-नमस्कार यावत् पर्युपासना करूँ। यह मेरे लिए इस भव में और परभव में, यावत् श्रेयस्कर होगा।

इस प्रकार का विचार करके वे तापसों के मठ में आये और उसमें प्रवेश किया। फिर वहाँ से लोढ़ी, लोह-कड़ाह यावत् छबड़ी सहित कावड़ आदि उपकरण लिए और उस तापस मठ से निकले। वहाँ से विभंगज्ञान-रहित वे शिवराजर्षि हस्तिनापुर नगर के मध्य में से होते हुए, सहस्राम्रवन उद्यान में श्रमण भगवान महावीर के निकट पहुँचे। श्रमण भगवान महावीर के निकट आकर उन्होंने तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा की, उन्हें वन्दना-नमस्कार किया और न अतिदूर, न अतिनिकट यावत् हाथ जोड़कर भगवान की उपासना करने लगे।

30. After that, it dawned on Saint-king Shiva that Shraman Bhagavan Mahavir was *Tirthankar*, the initiator of religion,... and so on up to... all-perceiving omniscient. The wheel of religion (*Dharmachakra*) moves ahead of him... and so on up to... He is staying here in the Sahasramravan garden with due resolve. When simply hearing the name of *Arihant Bhagavant*s is highly beneficent, what to say of the opportunity to go in his presence, pay homage to him etc.? He had this train of thoughts as mentioned in *Aupapatik Sutra*... and so on up to... When just a single pious word of the noble religion bestows great boons, what to say of the opportunity of absorbing volumes of meaning from the discourse? Therefore, I must go to Shraman Bhagavan Mahavir and greet him, pay homage... and so on up to... worship him. This would benefit this life and the next.

With these thoughts he came to the hermitage and entered it. From there he collected his grinding stone, iron cooking pans... and so on up

to... the basket with the carrying pole, and came out of the hermitage. From there Saint-king Shiva, free of his pervert knowledge, passed through the center of Hastinapur city and came near Shraman Bhagavan Mahavir in the Sahasramravan garden. Reaching near Shraman Bhagavan Mahavir he went around him clockwise thrice, greeted and paid homage. Thereafter he sat down, neither far nor near Bhagavan, and joining his palms commenced his worship.

३१. तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए जाव आणाए आराहए भवइ।

[३१] श्रमण भगवान महावीर ने शिवराजर्षि और उस महापरिषद् को धर्मोपदेश दिया यावत्–"इस प्रकार पालन करने से जीव आज्ञा के आराधक होते हैं।"

31. Shraman Bhagavan Mahavir gave his sermon to Saint-king Shiva and the large gathering... and so on up to... "Observing this conduct living beings become true spiritual aspirants (*aaraadhak*).

३२. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, उ. अ. २ सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव किढिणसंकाइयगं एगंते एडेइ, ए. २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, स. क. २ समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्ते तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

[३२] उसके पश्चात् वे शिवराजर्षि श्रमण भगवान महावीर स्वामी से धर्मोपदेश सुनकर और अवधारण कर; स्कन्दक की तरह (शतक २, उ. १) यावत् उत्तरपूर्व दिशा (ईशान कोण) में गए और लोढ़ी, लोह-कड़ाह यावत् कावड़ आदि तापसोचित उपकरणों को एकान्त स्थान में डाल दिया। फिर स्वयमेव पंचमुष्टि लोच किया और श्रमण भगवान महावीर के पास ऋषभदत्त की तरह (श. ८, उ. ३३) प्रव्रज्या अंगीकार की; ग्यारह अंगशास्त्रों का अध्ययन किया और उसी प्रकार यावत् वे शिवराजर्षि समस्त दुःखों से मुक्त हुए।

32. Hearing and understanding the discourse of Shraman Bhagavan Mahavir, Saint-king Shiva, followed what Skandak did (Chapter-2, Lesson-1)... and so on up to... proceeded in the north-east direction and discarded the hermit-equipment, including grinding stone, iron cooking pans... and so on up to... the carrying pole at an isolated spot. He then pulled out his hair in five fistfuls and, like Rishabhdutt (Chapter-8, lesson-33), got initiated by Shraman Bhagavan Mahavir, studied the

eleven Anga canons... and so on up to... and, in the same way, got liberated from all miseries.

सिद्ध होने वाले जीवों का संहननादि

THE BODY-CONSTITUTION OF BEINGS TO BE LIBERATED

३३. [प्र.] भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वं. २ एवं वयासी—जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति?

[उ.] गोयमा! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति एवं जहेव उववाइए तहेव 'संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयं च परिवसणा' एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव 'अव्वाबाहं सोक्खं अणुहुंती सासयं सिद्धा।'

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए नवमो उद्देसो समत्तो॥

३३ [प्र.] श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा—"भगवन्! सिद्ध होने वाले जीव किस संहनन से सिद्ध होते हैं?"

[उ.] गौतम! वे वज्र-ऋषभनाराचसंहनन से सिद्ध होते हैं; इत्यादि औपपातिक सूत्र के अनुसार संहनन, संस्थान, उच्चत्व (अवगाहना), आयुष्य, परिवसन (निवास), इस प्रकार सम्पूर्ण सिद्धिगण्डिका तक, यावत् सिद्ध जीव अव्याबाध शाश्वत सुख का अनुभव करते हैं; यहाँ तक कहना चाहिए।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है', यों कह कर गौतमस्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : नौवाँ उद्देशक समाप्त॥

33. [Q.] Greeting and paying homage to Shraman Bhagavan Mahavir, Gautam Swami asked–"*Bhante !* Beings destined to be liberated do so from which body-constitution (*Samhanan*) ?"

[Ans.] Gautam! They do so from *vajra-rishabh-narach samhanan* (a specific type of constitution of human body where the joints are perfect and strongest). Here quote complete information about *Siddha*s (the liberated souls) from *Aupapatik Sutra*, including body structure (*samsthaan*), space occupation (*uchchatva or avagaahana*), life span (*aayushya*), abode (*parivasan*)... and so on up to... the liberated souls (*Siddha*s) experience unhindered eternal bliss.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—सिद्धों के संहनन आदि इस प्रकार हैं—

संहनन—वज्र-ऋषभनाराचसंहनन वाले सिद्ध होते हैं।

संस्थान—छह प्रकार के संस्थानों में से किसी एक संस्थान से सिद्ध होते हैं।

अवगाहना—सिद्धों की (तीर्थंकरों की अपेक्षा) अवगाहना जघन्य सात रत्नि (मुंडहाथ) प्रमाण और उत्कृष्ट ५०० धनुष होती है।

आयुष्य—सिद्ध होने वाले जीव का आयुष्य जघन्य कुछ अधिक ८ वर्ष का, उत्कृष्ट पूर्वकोटि-प्रमाण होता है।

परिवसना (निवास)—सिद्ध होने वाले जीव लोकान्त में सिद्धशिला के ऊपर १/६ गाऊ भाग में निवास करते हैं।

Elaboration—The attributes of liberated souls are as follows—

Constitution (*samhanan*)–*vajra-rishabh-narach samhanan* (a specific type of constitution of human body where the joints are perfect and strongest).

Structure (*samsthaan*)–any one of the specified six body structures.

Space occupation (*avagaahana*)–The space occupation or height of *Siddha*s (*Tirthankar*-specific) is a minimum of 7 Ratni (a linear unit; approximately one feet) and a maximum of 500 Dhanush (a linear unit).

Life span (*aayushya*)–The life span of a being destined to be liberated is a minimum of slightly more than eight years and a maximum of Purvakoti (extremely long period of time).

Abode (*parivasana*)–The liberated souls live on Siddhashila at the edge of the universe in an area equal to sixth part of a Gau (four miles).

• END OF THE NINTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

दसमो उद्देसओ : लोग
दसवाँ उद्देशक : लोक (भेद-प्रभेद)
DASHAM UDDESHAK (TENTH LESSON) : *LOK* (UNIVERSE)

१. रायगिहे जाव एवं वयासी–

[१] राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से यावत् इस प्रकार पूछा–

1. In the city of Rajagriha... and so on up to... Gautam Swami paid homage to Bhagavan Mahavir and submitted as follows—

२. [प्र.] कइविहे णं भंते ! लोए पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तं जहा–दव्वलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए।

२. [प्र] भगवन्! लोक कितने प्रकार का कहा है?

[उ.] गौतम! लोक चार प्रकार का कहा गया है। यथा–(१) द्रव्यलोक, (२) क्षेत्रलोक, (३) काललोक और (४) भावलोक।

2. [Q.] *Bhante !* How many kinds of *Lok* are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! *Lok* (The Occupied Space or Universe) is said to have four kinds—(1) Material aspect of the Universe or the World as matter (*Dravya Lok*), (2) Area aspect of the Universe or the World as are (*Kshetra Lok*), (3) Time aspect of the Universe or the World as time (*Kaal Lok*), and (4) Cognitive aspect of the Universe or the World as cognition (*Bhaava Lok*).

विवेचन–धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय से भरा हुआ सम्पूर्ण द्रव्यों के आधार रूप चौदह रज्जू प्रमाण आकाशखण्ड को **लोक** कहते हैं। वह लोक (1) द्रव्य, (2) क्षेत्र, (3) काल और (4)भाव की अपेक्षा से मुख्य रूप से ४ प्रकार का है।

(1) द्रव्यलोक–इसके दो भेद हैं–**आगमतः, नोआगमतः**। जो लोक शब्द के अर्थ को जानता है, परन्तु उसमें उपयोग नहीं है, उसे **आगमतः द्रव्यलोक** कहते हैं। **नोआगमतः द्रव्यलोक** के तीन भेद हैं–**ज्ञशरीर, भव्यशरीर,** और **तद्व्यतिरिक्त**। जिस व्यक्ति ने पहले लोक शब्द का अर्थ जाना था, उसके मृत शरीर को '**ज्ञशरीर द्रव्यलोक**' कहा जाता है। जिस प्रकार भविष्य में जिस घट में मधु रखा जाएगा, उस घड़े को अभी से 'मधुघट' कहा जाता है, उसी प्रकार जो व्यक्ति भविष्य में लोक शब्द के अर्थ को जानेगा, उसके सचेतन शरीर को '**भव्यशरीर द्रव्यलोक**' कहा जाता है। धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों को '**ज्ञशरीर-भव्यशरीर-व्यतिरिक्त द्रव्यलोक**' कहा जाता है।

(2) **क्षेत्रलोक**—क्षेत्ररूप लोक को क्षेत्रलोक कहते हैं। ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यक्लोक में जितने आकाश-प्रदेश हैं, वह क्षेत्रलोक कहलाते हैं।

(3) **काललोक**—समय आदि कालरूप लोक को काललोक कहते हैं।

(4) **भावलोक**—भावरूप लोक दो प्रकार का है—आगमत: नोआगमत:। **आगमत: भावलोक** वह है, जो लोक शब्द के अर्थ का ज्ञाता है और उसमें उपयोग है। **नोआगमत: भावलोक**—औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक एवं पारिणामिक तथा सन्निपातिक रूप से ६ प्रकार का है।

Elaboration—The fourteen Rajju expanse that forms the occupied part of *Akashastikaya* (space entity), which is pervaded by *Dharmastikaya* (motion entity) and *Adharmastikaya* (rest entity) and which contains all substances including *Jivastikaya* (life entity), *Pudgalastikaya* (matter entity) with the interplay of Addhakaal (time entity), is called *Lok* (Occupied Space or the Universe). This *Lok* has mainly four aspects—(1) Physical aspect (*Dravya*), (2) Area aspect (*Kshetra*), (3) Time aspect (*Kaal*), and (4) Cognitive aspect (*Bhaava*).

(1) Physical aspect of the Universe or the World as matter (*Dravya Lok*)—Based on the theory of disquisition (*Anuyoga*) *Dravya Lok* is of two kinds– (a) *Agamtah* (in context of scripture)–one who knows the meaning of the term *Lok* but is inactive in that regard is called *Agamtah Dravya Lok.* (b) *No-agamtah* (not in context of scripture)–this is of three kinds–(i) *Jna-sharira* (in past context)–one who knew the meaning of the term *Lok* but is no more; his dead body is called *Jna-sharira Dravya Lok.* (ii) *Bhavya-sharira* (in future context)–one who is destined to know the meaning of the term *Lok,* his live body is called *Bhavya-sharira Dravya Lok.* It is something like a pitcher allotted to contain milk in future is called milk-pitcher in advance. (iii) *Jnasharira-Bhavyasharira Vyatirikta* (other than in past and future context)–*Dharmastikaya* (motion entity) and other entities or physical substances are called *Jnasharira-Bhavyasharira Vyatirikta Dravya Lok.*

(2) Area aspect of the Universe or the World as area (*Kshetra Lok*)—*Lok* or the Universe in terms of the area or space it covers is called *Kshetra Lok.* In other words all the space-points occupied by the Upper World, the Lower World and the Transverse World are called *Kshetra Lok.*

(3) Time aspect of the Universe or the World as time (*Kaal Lok*) — the play of time in the Universe or all activities happening in the universe measured in terms of passage of time are called *Kaal Lok.*

(4) Cognitive aspect of the Universe or the World as cognition (*Bhaava Lok*)—It is of two kinds–(i) *Agamtah* (in context of scripture)– one who knows the meaning of the term *Lok* and is active in that regard is called *Agamtah Bhaava Lok.* (ii) *No-agamtah* (not in context of scripture)–this relates to the states of soul and is of six kinds, namely *Audayik* (caused by fruition of *karmas*), *Aupashamik* (caused by pacification of *karmas*), *Kshaayik* (caused by destruction of *karmas*), *Kshayopashamik* (caused by pacification-cum-destruction of *karmas*), *Paarinaamik* (three eternal states unrelated to action of *karmas*) and Sannipaatik (state incorporating combinations of the said five states).

३. [प्र.] खेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तं जहा—अहोलोयखेत्तलोए तिरियलोयखेत्तलोए २ उड्ढलोयखेत्तलोए ३।

३. [प्र.] भगवन्! क्षेत्रलोक कितने प्रकार का कहा है?

[उ.] गौतम! तीन प्रकार का कहा है। यथा—१. अधोलोक-क्षेत्रलोक, २. तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक और ३. ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक।

3. [Q.] *Bhante !* How many types of *Kshetra Lok* (World as area) is said to be there ?

[Ans.] Gautam ! It is said to be of three types—1. The Lower World (*Adho Lok- Kshetra Lok*), 2. The Transverse World (*Tiryaklok-Kshetra Lok*), and The Upper World (*Urdhva Lok-Kshetra Lok*).

४. [प्र.] अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहोलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमपुढविअहोलोयखेत्तलोए।

४. [प्र.] भगवन्! अधोलोक-क्षेत्रलोक कितने प्रकार का है?

[उ.] गौतम! (वह) सात प्रकार का है। यथा—रत्नप्रभा पृथ्वी-अधोलोक-क्षेत्रलोक, यावत् अधः सप्तमपृथ्वी-अधोलोक-क्षेत्रलोक।

4. [Q.] *Bhante !* How many types of Lower World (*Adho Lok- Kshetra Lok*) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! It is said to be of seven types—*Ratnaprabhaprithvi-Adho Lok-Kshetra Lok* (the first hell)... and so on up to... *Adhah Saptamprithvi-Adho Lok-Kshetra Lok* (the seventh hell).

५. [प्र.] तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! असंखेज्जतिविहे पन्नत्ते, तं जहा—जंबुद्दीवतिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभूरमणसमुद्देतिरियलोयखेत्तलोए।

५. [प्र.] भगवन्! तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक कितने प्रकार का कहा गया है?

[उ.] गौतम! (वह) असंख्यात प्रकार का कहा गया है। यथा—जम्बूद्वीप-तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक, यावत् स्वयंभूरमणसमुद्र-तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक।

5. [Q.] *Bhante !* How many types of Transverse World (*Tiryaklok-Kshetra Lok*) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! It is said to be of innumerable types—Jambudveep-*Tiryaklok-Kshetra Lok* (the Jambu continent)... and so on up to... Svayambhuraman Samudra-*Tiryaklok-Kshetra Lok* (the Svayambhuraman ocean).

६. [प्र.] उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! पण्णरसविहे पन्नत्ते, तं जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुयउड्ढलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोग, अणुत्तरविमाण, ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए।

६. [प्र.] भगवन्! ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक कितने प्रकार का कहा गया है?

[उ.] गौतम! (वह) पन्द्रह प्रकार का कहा गया है। यथा—(१-१२) सौधर्मकल्प-ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक, यावत् अच्युतकल्प-ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक, (१३) ग्रैवेयक विमान-ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक, (१४) अनुत्तर विमान-ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक और (१५) ईषत् प्राग्भार पृथ्वी-ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक।

6. [Q.] *Bhante !* How many types of Upper World (*Urdhva Lok-Kshetra Lok*) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! It is said to be of fifteen types—(1-12) Saudharmakalp-*Urdhva Lok-Kshetra Lok* (Saudharmakalp divine realm or heaven)... and so on up to... Achyutkalp-*Urdhva Lok-Kshetra Lok* (Achyutkalp divine realm or heaven), (13) Graiveyak *Viman-Urdhva*

Lok-Kshetra Lok (Graiveyak Celestial Vehicles), (14) Anuttar *Viman-Urdhva Lok-Kshetra Lok* (Anuttar Celestial Vehicles), and (15) Ishatpragbharaprithvi-*Urdhva Lok-Kshetra Lok* (the Realm of Liberated Souls).

लोक-अलोक का संस्थान (आकार)

STRUCTURE OF THE LOK-ALOK

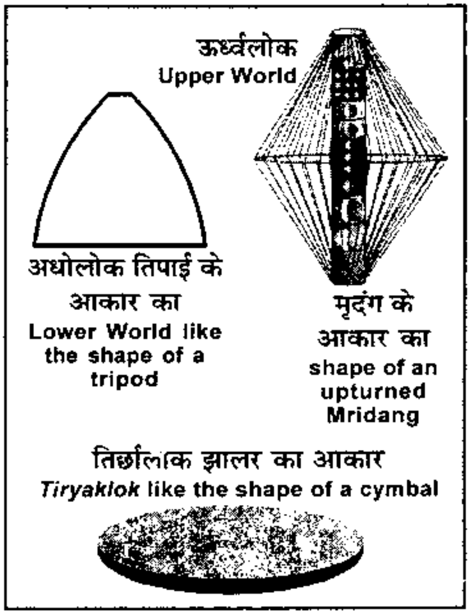

७. [प्र.] अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसठिए पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते।

७. [प्र.] भगवन्! अधोलोक-क्षेत्रलोक का किस प्रकार का संस्थान (आकार) है?

[उ.] गौतम! वह त्रपा (तिपाई) के आकार का है।

7. [Q.] *Bhante !* What is the structure (*samsthaan*) of the Lower World (*Adho Lok- Kshetra Lok*) ?

[Ans.] Gautam ! It is like the shape of a tripod (*trapa*).

८. [प्र.] तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किसंठिए पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते।

८. [प्र.] भगवन्! तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक का संस्थान (आकार) किस प्रकार का है?

[उ.] गौतम! वह झालर के आकार का है।

8. [Q.] *Bhante !* What is the structure (*samsthaan*) of the Transverse World (*Tiryaklok-Kshetra Lok*) ?

[Ans.] Gautam ! It is like the shape of a cymbal (or round disc).

९. [प्र.] उड्ढलोयखेत्तलोएपुच्छा?

[उ.] उड्ढमुइंगाकारसंठिए पन्नत्ते।

९. [प्र.] भगवन्! ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक किस प्रकार के संस्थान (आकार) का है?

[उ.] गौतम! (वह) ऊर्ध्वमृदंग के आकार (संस्थान) का है।

9. [Q.] *Bhante*! What is the structure (*samsthaan*) of the Upper World (*Urdhva Lok-Kshetra Lok*) ?

[Ans.] Gautam ! It is like the shape of an upturned Mridang (a two sided drum with bulging middle and unequal ends).

१०. [प्र.] लोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, तं जहा हेट्ठा वित्थिण्णे, मज्झे संखित्ते जहा सत्तमसए पढमे उद्देसए जाव अंतं करेइ।

१०. [प्र.] भगवन्! लोक का संस्थान (आकार) किस प्रकार का कहा है?

[उ.] गौतम! लोक सुप्रतिष्ठक के आकार का है। यथा—वह नीचे विस्तीर्ण (चौड़ा) है, मध्य में संक्षिप्त (संकीर्ण—संकड़ा) है, इत्यादि सातवें शतक के प्रथम उद्देशक के अनुसार समझना चाहिए। यावत्—उस लोक को उत्पन्न ज्ञान-दर्शन के धारक केवलज्ञानी जानते हैं, इसके पश्चात् वे सिद्ध होते हैं, यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं।

10. [Q.] *Bhante*! What is the structure (*samsthaan*) of the *Lok* (universe) ?

[Ans.] It is like the shape of a *supratishthit* (an earthen pot of the shape of a wine glass). It is wide at the base with a gradual taper in the middle, as mentioned in the first lesson of the seventh chapter... and so on up to... *Arhants*, *Jinas*, *Kevalis* (synonyms of *Tirthankar*), endowed with perfect knowledge know this and finally they become *Siddha* (perfected)... and so on up to... end all miseries.

११. [प्र.] अलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए पन्नत्ते?

११. [प्र.] भगवन्! अलोक का संस्थान (आकार) कैसा है?

[उ.] गौतम! अलोक का संस्थान पोले गोले के समान है।

11. [Q.] *Bhante*! What is the structure (*samsthaan*) of the *Alok* (unoccupied space or the space beyond the universe) ?

[Ans.] It is like the shape of a hollow sphere.

विवेचन—सुमेरु पर्वत के नीचे आठ प्रदेशी रुचक प्रदेश हैं, उसके निचले प्रतर के नीचे नौ सौ योजन तक तिर्यग्लोक है, उसके आगे अधःस्थित होने से अधोलोक है, जो सात रज्जू से कुछ अधिक है तथा रुचक प्रदेश से नीचे और ऊपर ९००-९०० योजन तिरछा होने से तिर्यग्लोक है। तिर्यग्लोक के ऊपर देशोन

सात रज्जू प्रमाण ऊर्ध्वभागवर्ती होने से ऊर्ध्वलोक कहलाता है। ऊर्ध्व और अधोदिशा में कुल ऊँचाई १४ रज्जू है। ऊपर क्रमशः घटते हुए क्रम से ७ रज्जू की ऊँचाई पर विस्तार १ रज्जू है। फिर क्रमशः बढ़कर ९½ रज्जू तक की ऊँचाई पर विस्तार ५ रज्जू है। फिर क्रमशः घटकर मूल से १४ रज्जू की ऊँचाई पर विस्तार १ रज्जू का है। इस तरह कुल ऊँचाई १४ रज्जू होती है।

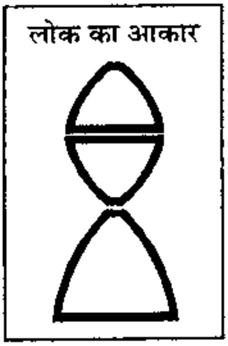

लोक के आकार के बारे में हम इस प्रकार बता सकते हैं कि नीचे एक उलटा सकोरा रखा जाये उसके ऊपर एक सीधा सकोरा रखा जाये फिर उसके ऊपर एक उलटा सकोरा रखा जाये। इस प्रकार जो आकार बनता है, वैसा ही लोक का आकार है।

तीनों लोकों का नाम, परिणामों की अपेक्षा से—क्षेत्र के प्रभाव से जिस लोक में द्रव्यों के प्रायः अशुभ (अधः) परिणाम होते हैं, वह अधोलोक कहलाता है। मध्यम (न अतिशुभ, न अतिअशुभ) परिणाम होने से मध्य या तिर्यग्लोक कहलाता है तथा द्रव्यों का ऊर्ध्व—ऊँचे—शुभ परिणामों का बाहुल्य होने से ऊर्ध्वलोक कहलाता है।

Elaboration—At the center of the Meru Mountain there are eight *Ruchak* sections (glowing areas). Below the lowest level of this area extends the Transverse World (*Tiryaklok*) up to nine hundred Yojans. Further underneath is the Lower World (*Adholok*) extending up to a little more than seven Rajjus (a linear measure). In the upper direction too the Transverse World extends up to nine hundred Yojans. Further above is the Upper World (*Urdhvalok*) extending up to a little less than seven Rajjus. The total height of the *Lok* is said to be 14 Rajjus. The base is seven Rajju wide and it tapers to one Rajju at the height of 7 Rajjus or the middle of the *Lok*. Still higher up, it gradually increases to five Rajju wide at the height of 9.5 Rajju or at the fifth dimension of gods, Brahmalok. Then again with gradual reduction it becomes one Rajju at the height of 14 Rajjus or at the top.

In simple terms this shape of the *Lok* can be described as putting a tapered tumbler up-side-down on ground, over it putting another tumbler upright and then again putting a tumbler up-side-down over it.

The names of the three *Lok*s are derived from the general conditions of substances including the living and the non-living. In the middle or the transverse world the general conditions are medium, neither bad nor good; as such it is called the Middle or Transverse World. As we proceed downwards conditions gradually turn from bad to worse; as such it is

called Hells or the Lower World. As we proceed higher conditions gradually turn from good to better; as such it is called Heavens or the Upper world.

अधोलोक में जीव-अजीवादि **SUBSTANCES IN THE LOWER WORLD**

१२. [प्र.] अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा ?

[ऊ.] एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए।

१२. [प्र.] भगवन्! अधोलोक-क्षेत्रलोक में क्या जीव हैं, क्या जीव के देश हैं, क्या जीव के प्रदेश हैं? क्या अजीव हैं, क्या अजीव के देश हैं, क्या अजीव के प्रदेश हैं?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार दसवें शतक के प्रथम उद्देशक में ऐन्द्री दिशा के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी समग्र वर्णन कहना चाहिए; यावत्-अद्धा-समय (काल) रूप है।

12. **[Q.]** *Bhante!* In the Lower World are there souls, sections (*desh*) of souls and space-points (*pradesh*) of souls? Also, are there non-souls, sections (*desh*) of non-souls and space-points (*pradesh*) of non-souls ?

[Ans.] Gautam ! What has been mentioned in the first lesson of the tenth chapter about the eastern direction should be repeated verbatim... and so on up to... *Addha-samaya* (time).

१३. [प्र.] तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा?

[उ.] एवं चेव।

१३. [प्र.] भगवन्! क्या तिर्यक्लोक-क्षेत्रलोक में जीव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! (इस विषय में समस्त वर्णन) उपरोक्त पूर्वक जानना चाहिए।

13. **[Q.]** *Bhante !* In the Transverse World are there souls, etc. ?

[Ans.] Gautam ! The answer is same as aforesaid (statement-12).

१४. एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि। नवरं अरूवी छव्विहा, अद्धासमओ नत्थि।

१४. इसी प्रकार ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक के विषय में जानना चाहिए; परन्तु विशेषता यह है कि ऊर्ध्वलोक में अरूपी के छह भेद ही हैं, क्योंकि वहाँ अद्धासमय नहीं है।

14. The same also holds good for the Upper World except for one variation that in the Upper World the formless entities are only six in number as time (*Addha-samaya*) is non-existent there.

१५. [प्र.] लोए णं भंते ! किं जीवा ?

[उ.] जहा बिइयसए अत्थिउद्देसए लोयागासे नवरं अरूवी सत्तविहा जाव अधम्मत्थिकायस्स पएसा, नो आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए। सेसं तं चेव।

१५. [प्र.] भगवन्! क्या लोक में जीव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! जिस प्रकार दूसरे शतक के दसवें 'अस्ति' उद्देशक में लोकाकाश के विषय में जीव आदि का कथन किया है, (उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिए।) विशेष इतना ही है कि यहाँ अरूपी के सात भेद कहने चाहिए; यावत् अधर्मास्तिकाय के प्रदेश, आकाशास्तिकाय का देश, आकाशास्तिकाय के प्रदेश और अद्धा-समय। शेष पूर्ववत् जानना चाहिए।

15. [Q.] *Bhante !* In the *Lok* are there souls, etc. ?

[Ans.] Gautam ! The answer is same as that mentioned in the tenth lesson titled Asti of the second chapter with regard to souls and other entities in *Lokakash* (Space within the Universe) with the exception that here seven types of formless entities should be mentioned... and so on up to... space-points of *Adharmastikaya* (Rest entity), sections of *Akashastikaya* (Space entity), space-points of *Akashastikaya* (Space entity) and *Addha-samaya* (time). Remaining being as mentioned earlier.

१६. [प्र.] अलोए णं भंते ! किं जीवा ?

[उ.] एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोगागासे तहेव निरवसेसं जाव अणंतभागूणे।

१६. [प्र.] भगवन्! क्या अलोक में जीव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! दूसरे शतक के दसवें अस्तिकाय उद्देशक में जिस प्रकार अलोकाकाश के विषय में कहा, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिए; यावत् वह सर्वाकाश के अनन्तवें भाग न्यून है।

16. [Q.] *Bhante !* In the *Alok* are there souls, etc. ?

[Ans.] Gautam ! The answer is same as that mentioned in the tenth lesson titled Astikaya of the second chapter with regard to *Alokakash*... and so on up to... and it is infinite parts less than the whole space (this is because *Lokakash* or occupied space is an infinite fraction of the whole space).

विवेचन—अधोलोक ओर तिर्यग्लोक में जीव, जीव के देश, प्रदेश तथा अजीव, अजीव के देश, प्रदेश और अद्धा-समय, ये ७ हैं, किन्तु ऊर्ध्वलोक में सूर्य के प्रकाश से प्रकटित काल न होने से

अद्धा-समय को छोड़कर शेष ६ बोल हैं। लोक में धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय दोनों अखण्ड होने से इन दोनों के देश नहीं हैं इसलिए धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय के प्रदेश, अधर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय के प्रदेश हैं। लोक में आकाशास्तिकाय सम्पूर्ण नहीं है, किन्तु उसका एक भाग है इसलिए कहा गया है—आकाशास्तिकाय का देश तथा उसके प्रदेश हैं। लोक में काल द्रव्य भी है।

अलोक में एकमात्र अजीव द्रव्य का देशरूप आलोकाकाश है, वह भी अगुरुलघु है। वह अनन्त अगुरुलघु गुणों से संयुक्त आकाश के अनन्तवें भाग न्यून है। ऊपर के सातों बोल अलोक में नहीं हैं।

Elaboration—In the Lower World there is existence of soul (*jiva*), sections and space-points of soul, non-soul, sections and space-points of non-soul and time (*Addha-samaya*). However in the Upper World due to absence of sun-oriented time there is no *Addha-samaya*. Thus there are only the other six listed entities and their components. In the *Lok Dharmastikaya* and *Adharmastikaya* exist as undivided whole; as such there are no sections of these. Therefore there are only *Dharmastikaya*, its space-points, *Adharmastikaya* and its space-points. In the *Lok* there is only a section of *Akashastikaya* and not the whole, therefore it is said that there is a section of *Akashastikaya* and its space-points. *Kaal* (time entity) also exists in *Lok*.

In *Alok* there is only one entity and that is a section of *Akashastikaya*, a non-soul entity, which is endowed with infinite *agurulaghu* (non-heavy-non-light) attributes and it is infinite parts less than the whole space. The remaining entities and components of the list of seven do not exist in *Alok*.

अधोलोक आदि के एक प्रदेश में जीव आदि **ENTITIES IN ONE SPACE-POINT**

१७. [प्र.] अहेलोयखेत्तलोयस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपएसे किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा?

[उ.] गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जीवपएसा वि अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपएसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा; अहवा अगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा; एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदिएसु जाव अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण देसाय। जे जीवपएसा ते नियमं एगिंदियपएसा, अहवा अगिंदियपएसा य बेइंदियस्स पएसा, अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियाण य पएसा, एवं आइल्लविरहिओ जाव पंचिंदिएसु, अणिंएिसु तिय भंगो। जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य। रूवी तहेव। जे अरूवी अजीवा ते

पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—नो धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे १, धम्मत्थिकायस्स पएसे २, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि ३-४, अद्धासमए ५।

१७. [प्र.] भगवन्! अधोलोक-क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश में क्या जीव हैं; जीव के देश हैं, जीव के प्रदेश हैं, अजीव हैं, अजीवों के देश हैं या अजीवों के प्रदेश हैं?

[उ.] गौतम! (वहाँ) जीव नहीं, किन्तु जीवों के देश हैं, जीवों के प्रदेश भी हैं, तथा अजीव हैं, अजीवों के देश हैं और अजीवों के प्रदेश भी हैं। इनमें जो जीवों के देश हैं, वे नियम से (१) एकेन्द्रिय जीवों के देश हैं, (२) अथवा एकेन्द्रियों के देश और द्वीन्द्रिय जीवों का एक देश है, (३) अथवा एकेन्द्रिय जीवों के देश और द्वीन्द्रिय जीव के देश हैं; इसी प्रकार मध्यम भंग-रहित (एकेन्द्रिय जीवों के देश और द्वीन्द्रिय जीव के देश—इस मध्यम भंग से रहित), शेष भंग, यावत् अनिन्द्रिय तक जानना चाहिए; यावत् अथवा एकेन्द्रिय जीवों के देश और अनिन्द्रिय जीवों के देश हैं। इनमें जो जीवों के प्रदेश हैं, वे नियम से एकेन्द्रिय जीवों के प्रदेश हैं, अथवा एकेन्द्रिय जीवों के प्रदेश और एक द्वीन्द्रिय जीव के प्रदेश हैं, अथवा एकेन्द्रिय जीवों का प्रदेश और द्वीन्द्रिय जीवों के प्रदेश हैं। इसी प्रकार यावत् पंचेन्द्रिय तक प्रथम भंग के सिवाय दो भंग कहने चाहिए; अनिन्द्रिय में तीनों भंग कहने चाहिए।

उनमें जो अजीव हैं, वे दो प्रकार के हैं। यथा—रूपी अजीव और अरूपी अजीव। रूपी अजीवों का वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए। अरूपी अजीव पाँच प्रकार के कहे गए हैं। यथा—(१) धर्मास्तिकाय का देश, (२) धर्मास्तिकाय का प्रदेश, (३) अधर्मास्तिकाय का देश, (४) अधर्मास्तिकाय का प्रदेश और (५) अद्धा-समय।

17. [Q.] *Bhante!* In a single space-point of the Lower World are there souls, sections (*desh*) of souls and space-points (*pradesh*) of souls? Also, are there non-souls, sections (*desh*) of non-souls and space-points (*pradesh*) of non-souls ?

[Ans.] Gautam! (In a single space-point of the Lower World) there are no souls but only sections of souls, space-points of souls, non-soul (matter), sections of non-soul, and space-points of non-soul. Here the sections of souls, as a rule, include—(1) soul-sections of one-sensed beings or (2) soul-sections of one-sensed beings and one soul-section of two-sensed beings or (3) soul-sections of one-sensed beings and soul-sections of two-sensed beings; in the same way, leaving aside the middle alternative (soul-sections of one-sensed beings and one soul-section of two-sensed beings), mention other alternatives... and so on up to... non-sensed beings... and so on up to... or soul-sections of one-sensed beings and

soul-sections of non-sensed beings. Here the space-points of souls, as a rule, include—(1) space-points of one-sensed beings or (2) space-points of one-sensed beings and one soul-section of two-sensed beings or (3) space-points of one-sensed beings and space-points of two-sensed beings; in the same way, leaving aside the first alternative, other two alternatives should be mentioned... and so on up to... five sensed beings. However in case of non-sensed beings, all the three alternatives should be mentioned.

(In a single space-point of the Lower World) non-souls (*ajiva*) are of two kinds—non-soul with form and non-soul without form. Description of non-souls with form is same as mentioned earlier. Non-souls without form are of five kinds—(1) Section of motion entity (*Dharmastikaya-desh*), (2) Space-point of motion entity (*Dharmastikaya-pradesh*), (3) Section of rest entity (*Adharmastikaya-desh*), (4) Space-point of rest entity (*Adharmastikaya-pradesh*), (5) Time (*Addha-samaya*).

१८. [प्र.] तिरियलोयखेत्तलोयस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपएसे किं जीवा?

[उ.] एवं जहा अहोलोयखेत्तलोयस्स तहेव।

१८. [प्र.] भगवन्! क्या तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश में जीव हैं; इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! जिस प्रकार अधोलोक-क्षेत्रलोक के विषय में कहा है उसी प्रकार तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक के विषय में जानना चाहिए।

18. [Q.] *Bhante!* In a single space-point of the Transverse World (*Tiryak Lok-Kshetra Lok*) are there souls ? (and other questions)

[Ans.] Gautam ! What has been mentioned about Lower World (*Adho Lok-Kshetra Lok*) is also true for Transverse World.

१९. एवं उड्ढलोयखेत्तलोयस्स वि, नवरं अद्धासमओ नत्थि, अरूवी चउव्विहा।

[१९.] इसी प्रकार ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश के विषय में भी जानना चाहिए। विशेष इतना है कि वहाँ अद्धासमय नहीं है, (इसलिए) वहाँ चार प्रकार के अरूपी अजीव हैं।

19. The same is also true for a single space-point of the Upper World (*Urdhva Lok-Kshetra Lok*) with the difference that the solar time (*Addha-samaya*) does not exist there; therefore only four Non-souls without form exist there.

२०. लोयस्स जहा अहोलोयखेत्तलोयस्स एगम्मि आगासपएसे।

[२०.] लोक के एक आकाश प्रदेश के विषय में भी अधोलोक-क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश के कथन के समान जानना चाहिए।

20. What has been mentioned about single space-point of the Lower World is also true for single space-point of the *Lok*.

२१. [प्र.] अलोयस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपएसे. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, तं चेव जाव अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे।

२१. [प्र.] भगवन्! क्या अलोक के एक आकाश प्रदेश में जीव हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! वहाँ जीव नहीं हैं, जीवों के देश नहीं हैं, इत्यादि पूर्ववत् जानना चाहिए; यावत् अलोक अनन्त अगुरुलघु गुणों से संयुक्त है और सर्व आकाश के अनन्तवें भाग न्यून है।

21. **[Q.]** *Bhante !* In a single space-point of the *Alok* (Unoccupied space or the space beyond) are there souls ? (and other questions)

[Ans.] Gautam ! It is devoid of soul, sections of soul etc. as mentioned earlier... and so on up to... it is endowed with infinite *agurulaghu* (non-heavy-non-light) attributes and it is infinite parts less than the whole space.

अधो-तिर्यग्-ऊर्ध्व क्षेत्रलोक और अलोक में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की अपेक्षा से जीव-अजीव द्रव्य

SUBSTANCES IN THREE WORLDS IN FOUR CONTEXTS

२२. [१] दव्वओ णं अहेलोयखेत्तलोए अणंताइं जीवदव्वाइं, अणंताइं अजीवदव्वाइं, अणंता जीवाजीवदव्वा।

२२. [१] द्रव्य से—अधोलोक-क्षेत्रलोक में अनन्त जीव द्रव्य हैं, अनन्त अजीव द्रव्य हैं और अनन्त जीवाजीव द्रव्य हैं।

22. [1] In context of substance, the Lower World contains infinite souls, infinite non-souls and infinite mixed (soul-non-soul) substances.

२२. [२] एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि। एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि।

२२. [२] इसी प्रकार तिर्यग्लोक-क्षेत्रलोक में भी जानना चाहिए। इसी प्रकार ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोक में भी जानना चाहिए।

22. [2] The same is true for the Transverse World. The same is also true for the Upper World.

२३. दव्वओ णं अलोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्व देसे जाव सव्वागासअणंतभागूणे।

[२३] द्रव्य से अलोक में जीव द्रव्य नहीं, अजीव द्रव्य नहीं और जीवाजीव द्रव्य भी नहीं, किन्तु अजीव द्रव्य का एक देश है, यावत् सर्वाकाश के अनन्तवें भाग न्यून है।

23. In context of substance, Unoccupied space (*Alok*) is devoid of souls, non-souls as well as mixed substances. However, it has a section of non-soul ... and so on up to ... and it is infinite parts less than the whole space.

२४. कालओ णं अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि, जाव निच्चे। एवं जाव अलोए।

[२४] काल से—अधोलोक-क्षेत्रलोक किसी समय नहीं था—ऐसा नहीं; यावत् वह नित्य है। इसी प्रकार यावत् अलोक के विषय में भी कहना चाहिए।

24. In context of time there was no time when the Lower World did not exist... and so on up to... It is eternal. The same holds good for other worlds... and so on up to... *Alok* (the space beyond).

२५. [१] भावओ णं अहेलोयखेत्तलोए अणंता वण्णपज्जवा जहा खंदए (स. २ उ. १) जाव अणंता अगरुयलहुयपज्जवा। एवं जाव लोए।

२५. [१] भाव से—अधोलोक-क्षेत्रलोक में 'अनन्तवर्णपर्याय' है, इत्यादि, द्वितीय शतक के प्रथम उद्देशक में वर्णित स्कन्दक-प्रकरण के अनुसार जानना चाहिए, यावत् अनन्त अगुरुलघु-पर्याय हैं। इसी प्रकार यावत् लोक तक जानना चाहिए।

25. [1] In context of cognition (*Bhaava*) there are infinite modes of colour in the Lower World, as mentioned in the story of Skandak in lesson first of chapter second... and so on up to... infinite *agurulaghu* (non-heavy-non-light) modes. The same holds good for other worlds... and so on up to... *Lok* (the universe).

२५. [२] भावओ णं अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा, एगे अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे।

२५. [२] भाव से—अलोक में वर्ण-पर्याय नहीं, यावत् अगुरुलघु-पर्याय नहीं है, परन्तु एक अजीव द्रव्य का देश है। अनन्त अगुरुलघु गुण से संयुक्त है। वह सर्वाकाश के अनन्तवें भाग न्यून है।

25. [2] In context of cognition (*Bhaava*) there are no alternatives of colour in the Lower World... and so on up to... no *agurulaghu* (non-

heavy-non-light) modes. However, it has a section of non-soul. It is endowed with infinite *agurulaghu* (non-heavy-non-light) attributes and it is infinite parts less than the whole space.

लोक की विशालता VASTNESS OF THE LOK

२६-१. [प्र.] लोए णं भंते ! के महालए पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव. जाव परिक्खेवेणं। तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्ढीया जाव महेसक्खा जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा। अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहिया अभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाए, एवं दाहिणाभिमुहे, एवं पच्चत्थाभिमुहे, एवं उत्तराभिमुहे, एवं उड्ढाभिमुहे, एगे देवे अहोभिमुहे पयाए। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवइ, नो चेव णं जाव संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवइ, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स नाम-गोए वि पहीणे भवइ, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।

२६-१. [प्र.] भगवन्! लोक कितना बड़ा (महान्) कहा है?

[उ.] गौतम! जम्बूद्वीप नाम का यह द्वीप, समस्त द्वीप-समुद्रों के मध्य में है। इसकी परिधि तीन लाख, सोलह हजार, दो सौ सत्ताईस योजन, तीन कोस, एक सौ अट्ठाईस धनुष और साढ़े तेरह अंगुल से कुछ अधिक है।

अगर किसी काल और किसी समय महर्द्धिक यावत् महासुख-सम्पन्न छह देव, मेरू पर्वत पर उसकी चूलिका के चारों ओर खड़े रहें और नीचे चार दिशाकुमारी देवियाँ चार अन्नपिण्ड लेकर जम्बूद्वीप की (जगती पर) चारों दिशाओं में बाहर की ओर मुख करके खड़ी रहें। फिर वे चारों देवियाँ एक साथ चारों अन्नपिण्डों को बाहर की ओर फैंकें। हे गौतम! उसी समय उन देवों में से प्रत्येक देव, उन अन्नपिण्डों को पृथ्वी पर गिरने से पहले ही, शीघ्र ग्रहण करने में समर्थ हो ऐसी तीव्र गति वाले उन देवों में से एक देव, उस उत्कृष्ट यावत् तीव्र गति से पूर्व की ओर जाए, एक देव दक्षिण की ओर जाए, इसी प्रकार एक देव पश्चिम की ओर, एक उत्तर की ओर, एक

देव ऊर्ध्वदिशा में और एक देव अधोदिशा में जाए। उसी दिन और उसी समय एक गाथापति के, एक हजार वर्ष की आयु वाले एक बालक ने जन्म लिया। तदनन्तर उस बालक के माता-पिता चल बसे। (उतने समय में भी) वे देव, लोक का अन्त प्राप्त नहीं कर सके। उसके बाद वह बालक भी आयुष्य पूर्ण होने पर कालधर्म को प्राप्त हो गया। उतने समय में भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त न कर सके। उस बालक की हड्डी, मज्जा भी नष्ट हो गई, तब भी वे देव, लोक का अन्त पा नहीं सके। फिर उस बालक की सात पीढ़ियों तक का कुलवंश नष्ट हो गया उतने समय में भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त न कर सके। तत्पश्चात् उस बालक के नाम-गौत्र भी नष्ट हो गए, उतने समय तक (चलते रहने पर) भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त नहीं कर सके।

26-1. [Q] *Bhante !* How large is the *Lok* (the universe) said to be ?

[Ans.] Gautam ! This continent called Jambudveep is at the centre of all continents and oceans. Its circumference is slightly more than 3,16, 227 Yojans (Y. = 8 miles), 3 Kosas (K. = 2 miles), 128 Dhanush (D = a little more than a meter) and 13.5 Anguls (A = about 0.5 inch).

At some point of time, if six gods with great opulence... and so on up to... great happiness stand at different points all around the peak of Mount Mandaar, and at the ground level four Dikkumaris (goddesses of directions), carrying a lump of dough in hands, stand at the periphery of the Jambu continent facing the four cardinal directions. Now, the goddesses throw out the lump of dough simultaneously. Gautam! If each god is capable of dashing forward with a tremendous speed to catch the lumps before they touch the ground, and if with such superhuman speed one god dashes in the east, one in the west, one in the north, one in the south, one in the Zenith and one in the Nadir; and at that moment a son with a life span of one thousand years is born to a merchant and in due course the parents die; even after the passage of so much time the gods cannot reach the end of the universe. After that the boy completes his life span and passes away, still the gods fail to reach the end of the universe. Then after the passage of a long period the bones and marrow of the boy completely decay, even till then the gods do not reach the end. After this seven generations of the boy pass and still the gods are not near the end of the universe. Even after the extinction of the lineage of the boy and wiping of the name from the social memory the gods cannot reach the end of the universe.

२६-२. [प्र.] 'तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए, अगए बहुए ?'

[उ.] 'गोयमा ! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाउ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे। लोए णं गोयमा ! एमहालए पन्नत्ते।'

२६-२. [प्र.] भगवन्! उन देवों का गत (गया हुआ-उल्लंघन किया हुआ) क्षेत्र अधिक है या अगत (नहीं गया हुआ—नहीं चला हुआ) क्षेत्र अधिक है?

[उ.] गौतम! (उन देवों का) गतक्षेत्र अधिक है, अगतक्षेत्र, गतक्षेत्र के असंख्यातवें भाग है। अगतक्षेत्र से गतक्षेत्र असंख्यात गुणा है। हे गौतम! लोक इतना बड़ा (महान्) है।

26-2. [Q.] *Bhante!* Is the part crossed by those gods greater or that not yet crossed is larger ?

[Ans.] Gautam ! The part crossed by those gods is greater. The part yet to be crossed is only an innumerable fraction of the crossed one. The traversed part is innumerable times more than that not yet crossed. O Gautam! The Universe (*Lok*) is so vast.

विवेचन—यह शंका हो सकती है कि मेरुपर्वत की चूलिका से चारों दिशाओं में लोक का विस्तार आधा-आधा रज्जुप्रमाण है। ऊर्ध्वलोक में किंचित् न्यून सात रज्जू और अधोलोक में सात रज्जू से कुछ अधिक है। ऐसी स्थिति में वे सभी देव छहों दिशाओं में एक समान त्वरित गति से जाते हैं, तब फिर छहों दिशाओं में गतक्षेत्र से अगतक्षेत्र असंख्यातवें भाग तथा अगत से गतक्षेत्र असंख्यात गुणा कैसे बतलाया गया है, क्योंकि चारों दिशाओं की अपेक्षा ऊर्ध्वदिशा और अधोदिशा में क्षेत्र-परिमाण की विषमता है? इस शंका का समाधान यह है कि यहाँ घनकृत (वर्गीकृत) लोक की विवक्षा से यह रूपक कल्पित किया गया है, इसलिए कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मेरुपर्वत को मध्य में रखने से लोक सब तरफ से साढ़े तीन-साढ़े तीन रज्जू रह जाता है।

[प्र.] पूर्वोक्त तीव्र दिव्य देवगति से गमन करते हुए वे देव जब उतने लम्बे समय तक में लोक का छोर नहीं प्राप्त कर सकते, तब तीर्थंकर भगवान के जन्मकल्याणादि में अन्तिम अच्युत देवलोक तक से देव यहाँ शीघ्र कैसे आ सकते हैं, क्योंकि क्षेत्र बहुत लम्बा है और अवतरण-काल बहुत ही अल्प है?

[उ.] इसका समाधान यह है कि तीर्थंकर भगवान के जन्मकल्याणादि में देवों के आने की गति शीघ्रतम है। उस गति की अपेक्षा से इस प्रकरण में बताई हुई गति अति मन्दतर है।

Elaboration—In this example there may be a doubt. In the said description of the *Lok* the transverse expanse of the universe from the peak of Mt. Meru is only half a Rajju, whereas in zenith and Nadir directions it is about 7 Rajju. As such how can the time traversed by the gods in all directions be same? The explanation is that this statement is metaphoric and based on the presumption of a cubical universe making the distances in all directions same.

Another doubt is that when it takes so much time for gods to reach the end of the universe, how can the gods from the last divine realm

(Achyut) can come to attend a *Tirthankar*'s *Kalyanak* (auspicious events). The explanation is that the speed at which the gods come on such occasions is the maximum speed of gods whereas the speed mentioned in this example is the minimum.

अलोक की विशालता का वर्णन THE VASTNESS OF ALOK

२७-१. [प्र.] अलोए णं भंते ! केमहालय पन्नत्ते ?

[उ.] गोयमा ! अयं णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं जहा खंदए (स. २ उ. १) जाव परिक्खेवेणं। तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढीया तहेव जाव संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा। ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाए, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाए, एवं जाव उत्तरपुरत्थाभिमुहे, एगे देवे उड्ढाभिमुहे, एगे देवे अहोभिमुहे पयाए। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाए। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति।' तं चेव जाव 'तेसिं णं भंते! देवाणं किं गए बहुए, अगए बहुए?'

'गोयमा ! नो गए बहुए, अगए बहुए, गयाउ से अगए अणंतगुणे, अगयाउ से गए अणंतभागे। अलोए णं गोयमा! एमहालए पन्नत्ते।'

२७-१. [प्र.] भगवन्! अलोक कितना बड़ा है?

[उ.] गौतम! यह जो समयक्षेत्र (मनुष्यक्षेत्र) है, वह ४५ लाख योजन लम्बा-चौड़ा है, इत्यादि सब (श. २, उ. १) स्कन्दक प्रकरण के अनुसार जानना चाहिए; यावत् वह (ऊपरवत्) परिधियुक्त है।

किसी काल, किसी समय में, दस महर्द्धिक देव, इस मनुष्यलोक को चारों ओर से घेर कर खड़े हों। उनके नीचे आठ दिशाकुमारियाँ, आठ अन्नपिण्ड लेकर मानुषोत्तर पर्वत की चारों दिशाओं और चारों विदिशाओं में बाह्याभिमुख होकर खड़ी रहें। तत्पश्चात् वे उन आठों बलिपिण्डों को एक साथ मानुषोत्तर पर्वत के बाहर की ओर फैंके। तब उन खड़े हुए देवों में से प्रत्येक देव उन बलिपिण्डों को पृथ्वी पर पहुँचने से पूर्व शीघ्र ही ग्रहण करने में समर्थ हों, ऐसी शीघ्र, उत्कृष्ट तीव्र देवगति वाले वे दसों देव, लोक के अन्त में खड़े रह कर उनमें से एक देव पूर्व दिशा की ओर जाए, एक देव दक्षिण पूर्व की ओर जाए, इसी प्रकार यावत् एक देव उत्तरपूर्व

की ओर जाए, एक देव ऊर्ध्वदिशा की ओर जाए और एक देव अधोदिशा में जाए (ऐसे तो यह असद्भूतार्थ कल्पना है, जो संभव नहीं)। उस काल और उसी समय में एक गृहपति के घर में एक बालक का जन्म हुआ हो, जो कि एक लाख वर्ष की आयु वाला हो। तत्पश्चात् उस बालक के माता-पिता का देहावसान हुआ, इतने समय में भी देव अलोक का अन्त नहीं प्राप्त कर सकें। तत्पश्चात् उस बालक का भी देहान्त हो गया। उसकी अस्थि और मज्जा भी विनष्ट हो गई और उसकी सात पीढ़ियों के बाद वह कुल-वंश भी नाश हो गया तथा उसके नाम-गोत्र भी समाप्त हो गए। इतने लम्बे समय तक चलते रहने पर भी वे देव अलोक के अन्त को प्राप्त नहीं कर सकते।

27-1. [Q.] *Bhante !* How large is the *Alok* (space beyond the universe) said to be ?

[Ans.] Gautam ! The time-region or the world of the humans is 4.5 million square Yojans etc.–as mentioned in the story of Skandak in lesson first of chapter second... and so on up to... its circumference.

At some point of time, if ten gods with great opulence... and so on up to... great happiness stand at different points all around the world of humans, and beneath them eight Dikkumaris (goddesses of directions), each carrying a lump of dough in hands, stand facing four cardinal and four intermediate directions. Now, the goddesses throw out the lump of dough simultaneously away from Manushottar mountain. Gautam! If each god is capable of dashing forward with a tremendous speed to catch the lumps before they touch the ground, and if with such superhuman speed one god dashes in the east, one in the west, one in the north, one in the south, one each in the four intermediate directions, one in the Zenith and one in the Nadir; and at that moment a son with a life span of one thousand years is born to a merchant and in due course the parents die; even after the passage of so much time the gods cannot reach the end of the *Alok*. After that the boy completes his life span and passes away, still the gods fail to reach the end of the *Alok*. Then after the passage of a long period the bones and marrow of the boy completely decay, even till then the gods do not reach the end. After this seven generations of the boy pass and still the gods are not near the end of the *Alok*. Even after the extinction of the lineage of the boy and wiping of the name from the social memory the gods cannot reach the end of *Alok* (the space beyond the universe).

२७-२. [प्र.] भगवन्! उन देवों का गतक्षेत्र अधिक है, या अगतक्षेत्र अधिक है?

[उ.] गौतम! वहाँ गतक्षेत्र बहुत नहीं, अगतक्षेत्र ही बहुत है। गतक्षेत्र से अगतक्षेत्र अनन्तगुणा है। अगतक्षेत्र से गतक्षेत्र अनन्तवें भाग है। हे गौतम! अलोक इतना बड़ा है।

27-2. [Q] *Bhante !* Is the part crossed by those gods greater or that not yet crossed is larger ?

[Ans.] Gautam ! The part crossed by those gods is greater. The part yet to be crossed is only an innumerable part of the crossed one. The traversed part is innumerable times more than that not yet crossed. O Gautam ! The *Alok* is so vast.

आकाशप्रदेश पर परस्पर-सम्बद्ध जीवों का निराबाध अवस्थान

INTERCONNECTION OF SOUL-SPACE-POINTS

२८-१. [प्र.] लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियपएसा अणिंदियपएसा अन्नमन्नबद्धा अन्नमन्नपुट्ठा जाव अन्नमन्नसमभरघडत्ताए चिट्ठंति? अत्थि णं भंते! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेंति?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

२८-१. [प्र.] भगवन्! लोक के एक आकाश प्रदेश पर एकेन्द्रिय जीवों के जो प्रदेश हैं, यावत् पंचेन्द्रिय जीवों के और अनिन्द्रिय जीवों के जो प्रदेश हैं, क्या वे सभी एक-दूसरे के साथ बद्ध, हैं, अन्योन्य स्पृष्ट हैं यावत् परस्पर-सम्बद्ध हैं? भगवन्! क्या वे परस्पर एक-दूसरे को आबाधा (पीड़ा) और व्याबाधा (विशेष पीड़ा) उत्पन्न करते हैं? तथा क्या वे उनके अवयवों का छेदन करते हैं?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ (सही) नहीं है।

28-1. [Q.] *Bhante !* Are the space-points (*pradesh*) of one-sensed beings... and so on up to... five-sensed beings as well as non-sensed beings occupying a single point of space, linked together or touching one another,... and so on up to... mutually connected ? *Bhante !* Do they cause pain and intense pain to each other ? And do they pierce parts of each other ?

[Ans.] Gautam ! This statement is not correct.

२८-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ लोयस्स णं एगम्मि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव चिट्ठंति नत्थि णं भंते! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा जाव करेंति?

[उ.] गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अन्नयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा।

[प्र.] से नूणं गोयमा! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति?

[उ.] 'हंता, समभिलोएंति।'

[प्र.] ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता संन्निपडियाओ?

[उ.] 'हंता, सन्निपडियाओ।'

[प्र.] अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेंति?

[उ.] 'नो इणट्ठे समट्ठे।'

[प्र.] अहवा सा नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएइ, छविच्छेदं वा करेइ?

[उ.] 'नो इणट्ठे समट्ठे।'

[प्र.] ताओ वा दिट्ठीओ अन्नमन्नाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेंति?

[उ.] 'नो इणट्ठे समट्ठे।'

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव छविच्छेदं वा करेंति।

२८-२ [प्र.] भगवन्! यह किस कारण से कहा है कि लोक के एक आकाश प्रदेश में एकेन्द्रिय आदि जीव प्रदेश परस्पर बद्ध यावत् सम्बद्ध हैं, फिर भी वे एक-दूसरे को बाधा या व्याबाधा नहीं पहुँचाते? और अवयवों का छेदन नहीं करते?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार कोई शृंगारित एवं उत्तम वेष वाली यावत् सुन्दर गति, हास्य, भाषण, चेष्टा, विलास, ललित संलाप निपुण, युक्त उपचार से युक्त नर्तकी सैंकड़ों और लाखों व्यक्तियों से परिपूर्ण रंगस्थली में बत्तीस प्रकार के नाट्यों में से कोई एक नाट्य दिखाती है, तो—

[प्र.] गौतम! क्या दर्शक लोग उस नर्तकी को अनिमेष दृष्टि से चारों ओर से देखते हैं?

[उ.] हाँ, भगवन्! देखते हैं।

[प्र.] गौतम! उन (दर्शकों) की दृष्टियाँ चारों ओर से उस नर्तकी पर पड़ती हैं?

[उ.] हाँ, भगवन्! पड़ती है।

[प्र.] गौतम! क्या उन दर्शकों की दृष्टियाँ उस नर्तकी को किसी प्रकार की (किंचित् भी) थोड़ी या ज्यादा पीड़ा पहुँचाती है? या उसके अवयव का छेदन करती है?

[उ.] भगवन्! यह अर्थ समर्थ (शक्य) नहीं है।

[प्र.] गौतम! क्या वह नर्तकी दर्शकों की उन दृष्टियों को कुछ भी बाधा-पीड़ा पहुँचाती है या उनके अवयव-छेदन करती हैं?

[उ.] भगवन्! यह अर्थ भी समर्थ नहीं है।

[प्र.] गौतम! क्या (दर्शकों की) वे दृष्टियाँ परस्पर एक-दूसरे को किंचिंत् भी बाधा या पीड़ा उत्पन्न करती हैं? या उनके अवयव का छेदन करती हैं?

[उ.] भगवन्! यह अर्थ भी समर्थ नहीं है।

गौतम! इसी कारण से मैं ऐसा कहता हूँ कि जीवों के आत्म-प्रदेश परस्पर बद्ध, स्पृष्ट और यावत् सम्बद्ध होने पर भी पीड़ा या विशेष पीड़ा उत्पन्न नहीं करते और न ही अवयवों का छेदन करते हैं।

28-2. [Q.] *Bhante !* Why it is said that the space-points (*pradesh*) of one-sensed beings... and so on up to... five-sensed beings as well as non-sensed beings occupying a single point of space, are linked together or touching one another... and so on up to... mutually connected and still they do not cause pain and intense pain to each other; and they do not pierce parts of each other ?

[Ans.] Gautam ! Take for example that some embellished, well dressed dancer... and so on up to... endowed with beautiful movement, laughter, speech, gesture, disposition, eloquent dialogue delivery and suitable presentation is performing one of the thirty two acts in a theater filled with thousands of people. Now there are few questions—

[Q.] Gautam ! Does the audience from all directions see that dancer without blinking ?

[Ans.] Yes, *Bhante !* They do.

[Q.] Gautam! Do their glances caress that dancer from all directions ?

[Ans.] Yes, *Bhante !* They do.

[Q.] Gautam ! Do the glances of the people in audience cause a little pain or intense pain to the dancer? Do they pierce parts of her body ?

[Ans.] *Bhante !* That is not correct.

Gautam ! That is why, I say that space-points (*pradesh*) of living, though linked together or touching one another or connected or mutually connected, do not cause pain and intense pain to each other nor do they pierce parts of each other.

विवेचन—जिस तरह एक नर्तकी को देखने के लिये हजारों लोगों की दृष्टि पड़ती है। वे दृष्टियाँ नर्तकी को या आपस में किसी को बाधा पीड़ा नहीं कर सकती। वैसे ही लोक के एक आकाश प्रदेश पर विविध जीव एवं अजीव रह सकते हैं और उनमें किसी को किसी से बाधा नहीं पहुँचती है क्योंकि वे सूक्ष्म जीव होते हैं अथवा औदारिक शरीर रहित छोटे-छोटे जीव आदि होते हैं। अरूपी अजीव भी वहाँ होते हैं। रूपी अजीव सूक्ष्म परिणाम परिणत भी होते हैं। इन अपेक्षाओं से एक आकाश प्रदेश पर ये सभी एक साथ रह सकते हैं।

Elaboration—While looking at a performing dancer thousands of eyes fall on the dancer but the glances do not disturb or hurt the dancer or for that matter each other. In the same way many different living beings and non-living particles can coexist on a single space-point without mutually interfering. This is because those living beings are very minute. The non-living things are also very minute. Thus they can exist together on one space-point.

एक आकाशप्रदेश में जघन्य-उत्कृष्ट जीवप्रदेशों एवं सर्व जीवों का अल्पबहुत्व

COMPARATIVE NUMBERS ON ONE SPACE-POINT

२९. [प्र.] लोयस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपएसे जहन्नपए जीवपएसाण, उक्कोसपए जीवपएसाणं, सव्वजीवाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा लोयस्स एगम्मि आगासपएसे जहन्नपए जीवपएसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपएसा विसेसाहिया।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ एक्कारसमे दसमो उद्देसओ समत्तो ॥

२९. [प्र.] भगवन्! लोक के एक आकाश प्रदेश पर जघन्य पद में रहे हुए जीव-प्रदेशों, उत्कृष्ट पद में रहे हुए जीव-प्रदेशों और समस्त जीवों में से कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है?

[उ.] गौतम! लोक के एक आकाश प्रदेश पर जघन्य पद में रहे हुए जीव-प्रदेश सबसे थोड़े हैं, उनसे सर्व जीव असंख्यात गुणे हैं, उनसे (एक आकाश प्रदेश पर), उत्कृष्ट पद में रहे हुए जीव-प्रदेश विशेषाधिक हैं।

हे भगवन्! यह इसी प्रकर है, भगवन्! यह इसी प्रकार है; इस तरह कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतकः दसवाँ उद्देशक समाप्त॥

29. [Q.] *Bhante!* On one space-point in the *Lok* what are the comparative numbers of soul space-points and all souls ?

[Ans.] Gautam! On one space-point in the *Lok* the number of soul space-points in the slot of minimum is lowest, the number of all souls is uncountable times more than them and the number of space-points in the slot of maximum is much more than them.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE TENTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

एक आकाश प्रदेश में जघन्य-उत्कृष्ट जीव-प्रदेशों एवं सर्व जीवों का अल्पबहुत्व

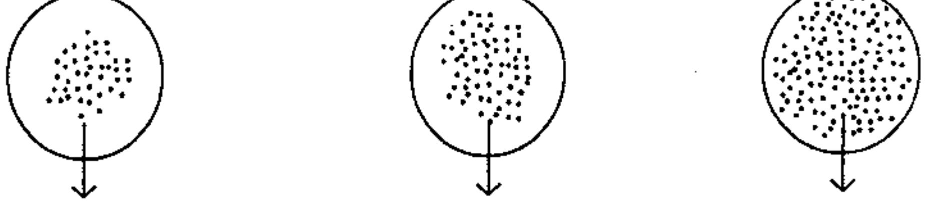

जघन्य पद में रहे जीव प्रदेश

सर्व जीव (जघन्य जीव प्रदेशों से असंख्यात गुने।)

उत्कृष्ट पद में रहे जीव (सर्व जीवों से विशेष अधिक।)

एक्कारसमो उद्देसओ : काल

ग्यारहवाँ उद्देशक : काल (सम्बन्धित चर्चा)

EKADASHAM UDDESHAK (ELEVENTH LESSON) : *KAAL* (TIME)

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्था, वण्णओ। दूइपलासए चेइए वण्णओ जाव पुढविसिलावट्टओ।

[१] उस काल उस समय में वाणिज्यग्राम नाम का नगर था। उसका वर्णन समझना चाहिए। वहाँ द्युतिपलाश नाम का उद्यान था। उसका वर्णन समझना चाहिए यावत् एक पृथ्वी शिलापट्ट था।

1. During that period of time there was a city called Vanijyagram. Description (as in *Aupapatik Sutra*). Outside the city there was a chaitya (temple complex) called Dyutipalash; description. ... and so on up to... there was a flat rock.

२. तत्थ णं वाणियग्गामे नयरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।

[२] उस वाणिज्यग्राम नगर में सुदर्शन नामक श्रेष्ठी रहता था। वह आढ्य यावत् अपरिभूत था। वह जीव-अजीव आदि तत्त्वों का ज्ञाता, श्रमणोपासक होकर विचरता था।

2. In that Vanijyagram lived a merchant named Sudarshan. He was very rich (*aadhya*)... and so on up to... insuperable (*aparibhoot*). He was a devotee of *Shraman*s, understood the fundamental entities including soul and matter... and so on up to... He spent his life enkindling (*bhaavit*) his soul (with ascetic religion and austerities).

३. सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ।

[३] (एक बार) श्रमण भगवान महावीर स्वामी का वहाँ पदार्पण हुआ, यावत् परिषद् पर्युपासना करने लगी।

3. (Once) Bhagavan Mahavir arrived there... and so on up to... the religious assembly started.

४. तए णं सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, साओ गिहाओ प. २

सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं जहा उसभदत्तो (स. ९ उ. ३३ सु. ११) जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ।

[४] तदनन्तर वह सुदर्शन श्रेष्ठी भगवान के पदार्पण की बात सुनकर अत्यन्त हर्षित एवं सन्तुष्ट हुए। उसने स्नान आदि किया, यावत् प्रायश्चित्त करके समस्त वस्त्र अलंकारों से सजकर अपने घर से निकला। फिर कोरंट-पुष्प की माला से युक्त छत्र धारण करके अनेक व्यक्तियों के साथ पैदल चलकर वाणिज्यग्राम नगर के बीचोंबीच होकर निकला और जहाँ द्युतिपलाश नामक उद्यान था, जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे, वहाँ आया। फिर (श. ९ उ. ३३) ऋषभदत्त-प्रकरण में जिस तरह बताया है, उसी प्रकार सचित्त द्रव्यों का त्याग आदि पाँच अभिगमपूर्वक वह सुदर्शन श्रेष्ठी भी, श्रमण भगवान महावीर के सम्मुख गया, यावत् तीन प्रकार से भगवान की पर्युपासना करने लगा।

4. Hearing about the arrival of Bhagavan Mahavir, that Sudarshan merchant was glad and contented. He took his bath... and so on up to... performed atonement rituals, adorned himself with dress and ornaments and came out of his house. After that he took an umbrella with garlands of Korant flowers, walked through the center of Vanijyagram city along with many people and came to the Dyutipalash garden where Shraman Bhagavan Mahavir was staying. After that he observed the five codes of courtesy meant for a religious assembly (*abhigam*) including discarding of things infested with living organisms (*sachet*), as mentioned about Rishabh-datt (Chapter 9, lesson 33), went before Shraman Bhagavan Mahavir... and so on up to... commenced his threefold worship (physical, vocal, and mental).

५. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए जाव आराहए भवइ।

[५] इसके पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने सुदर्शन श्रेष्ठी को और उस विशाल परिषद् को धर्म का उपदेश दिया, यावत् वह आराधक हुए।

5. Then Shraman Bhagavan Mahavir gave his sermon to merchant Sudarshan and the large assembly... and so on up to... they became spiritual aspirants (aradhak).

६. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, (उ. २) समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी—

[६] इसके पश्चात् वह सुदर्शन श्रेष्ठी श्रमण भगवान महावीर से धर्मकथा सुनकर एवं हृदय में धारण करके अत्यंत हर्षित संतुष्ट हुआ। उसने खड़े होकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी की तीन बार प्रदक्षिणा की और वन्दना-नमस्कार करके पूछा—

6. Merchant Sudarshan became very happy and contented on listening to and learning by heart the religious sermon from Shraman Bhagavan Mahavir. He, then, got up, circumambulated Shraman Bhagavan Mahavir thrice, paid homage and asked—

काल और उसके चार प्रकार FOUR TYPES OF KAAL

७. [प्र.] कइविहे णं भंते! काले पन्नत्ते?

[उ.] सुदंसणा! चउव्विहे काले पन्नत्ते, तं जहा—पमाणकाले १ अहाउनिव्वत्तिकाले २ मरणकाले ३ अद्धाकाले ४।

७. [प्र.] भगवन्! काल कितने प्रकार का कहा है?

[उ.] हे सुदर्शन! काल चार प्रकार का कहा है। यथा—(१) प्रमाणकाल, (२) यथायुर्निवृत्ति काल, (३) मरणकाल और (४) अद्धाकाल।

7. [Q.] *Bhante ! Kaal* (time) is said to be of how many types ?

[Ans.] Sudarshan! *Kaal* (time) is said to be of four types—(1) *Pramaan Kaal* (Solar time or clock time), (2) *Yathaayurnivritti Kaal* (life-span time), (3) *Maran Kaal* (death time), and (4) *Addha Kaal* (time scale).

प्रमाणकाल की व्याख्या STANDARD TIME

८. [प्र.] से किं तं पमाणकाले?

[उ.] पमाणकाले दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले य १ राइप्पमाणकाले य २। चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राइ भवइ। उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ। जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ।

८. [प्र.] भगवन्! प्रमाणकाल क्या है?

[उ.] सुदर्शन! प्रमाणकाल दो प्रकार का कहा गया है। यथा—दिवस-प्रमाणकाल और रात्रि-प्रमाणकाल। चार पौरुषी (प्रहर) का दिवस होता है और चार पौरुषी (प्रहर) की रात्रि

होती है। दिवस और रात्रि की उत्कृष्ट पौरुषी साढे चार मुहूर्त्त की होती है, तथा दिवस और रात्रि की जघन्य पौरुषी तीन मुहूर्त्त की होती है।

8. [Q.] *Bhante !* What is *Pramaan Kaal* (standard time or clock time) ?

[Ans.] Sudarshan ! *Pramaan Kaal* (Solar time) is said to be of two types—standard daytime and standard night-time. (Generally) the length of day is four Paurushis (quarters) and that of night is also four Paurushis (quarters). The maximum length of a Paurushi (quarter) of either day or night is four and a half Muhurts (one Muhurt = forty eight minutes); and the minimum length of a Paurushi (quarter) of either day or night is three Muhurts.

९. [प्र.] जहा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ तदा णं कइभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परिहायमाणी जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ ? जहा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ तया णं कइभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ ?

[उ.] सुदंसणा ! जहा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ तदा णं बावीससेयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परिहायमाणी जहन्निया तिमुहुत्ता दिवस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ। जया णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ तया णं बावीससेयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ।

९ [प्र.] भगवन्! जब दिवस की या रात्रि की पौरुषी उत्कृष्ट साढ़े चार मुहूर्त्त की होती है, तब उस मुहूर्त्त का कितना भाग घटते-घटते जघन्य तीन मुहूर्त्त की दिवस और रात्रि की पौरुषी होती है? और जब दिवस और रात्रि की पौरुषी जघन्य तीन मुहूर्त्त की होती है, तब मुहूर्त्त का कितना भाग बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट साढ़े चार मुहूर्त्त की पौरुषी होती है?

[उ.] हे सुदर्शन! जब दिवस और रात्रि की पौरुषी उत्कृष्ट साढ़े चार मुहूर्त्त की होती है, तब मुहूर्त्त का एक सौ बाईसवाँ भाग घटते-घटते जघन्य पौरुषी तीन मुहूर्त्त की होती है, और जब जघन्य पौरुषी तीन मुहूर्त्त की होती है, तब मुहूर्त्त का एक सौ बाईसवाँ भाग बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट पौरुषी साढ़े चार मुहूर्त्त की होती है।

9. [Q.] *Bhante !* When the Paurushi of day or night has the maximum span of four and a half Muhurts then by gradual reduction of

प्रमाण काल

यथायुनिर्वृत्ति काल

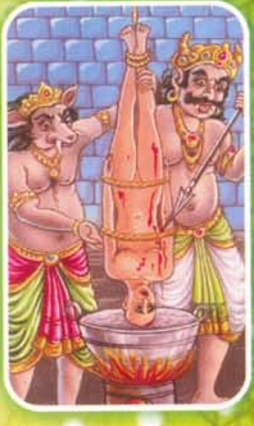

मरण काल

अद्धा काल

चित्र-परिचय 6

Illustration No. 6

काल के प्रकार

काल चार प्रकार के होते हैं—**प्रमाण काल, यथायुनिर्वृत्ति काल, मरण काल** और **अद्धा काल।**

जिससे दिन-रात-महिने, वर्ष आदि का प्रमाण जाना जाए उसे **प्रमाण काल** कहते हैं। एक दिन या एक रात्रि का प्रमाण 4 प्रहर माना जाता है। प्रहर का चौथा भाग मुहुर्त्त कहलाता है।

चित्र में उत्कृष्ट, समान और जघन्य दिन-रात्रि का प्रमाण बताया गया है। आषाढ़ी पूर्णिमा को 12 मुहूर्त्त की रात्रि तथा 18 मुहूर्त्त का दिवस होता है अर्थात् सबसे उत्कृष्ट दिन और सबसे जघन्य रात्रि चैत्री और आश्विनी पूर्णिमा को 15 मुहूर्त्त का दिन एवं 15 मुहूर्त्त की रात्रि होती है अर्थात् समान दिन व समान रात्रि। पौष पूर्णिमा को 18 मुहूर्त्त की रात्रि (सबसे उत्कृष्ट) और 12 मुहूर्त्त का दिन (सबसे जघन्य) होता है।

यथायुनिर्वृत्ति काल—जिस जीव ने जितना आयु बाँधा है, उतना आयुष्य भोगना यथायुनिर्वृत्ति काल कहलाता है।

मरण काल—जीव के शरीर से पृथक होने के काल को मरणकाल कहते हैं।

अद्धा काल—समय, आवलिका, उत्सर्पिणी आदि अद्धा काल कहलाते हैं। जहाँ चर ज्योतिष चक्र होता है, वही अद्धा काल होता है।

—शतक 11, उ. 11

TYPES OF *KAAL* (TIME)

Kaal (time) is of four types—*Pramaan Kaal* (Solar time or clock time), *Yathaayurnivritti Kaal* (life-span time), *Maran Kaal* (death time) and *Addha Kaal* (time scale).

Pramaan Kaal—That which defines the length of day, night, month, year etc. is called *Pramaan Kaal* (Solar time or clock time). The length of a day or night is believed to be four Prahars. One fourth of a Prahar is called Muhurt.

The illustration shows the length of longest, equal and shortest day and night. On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Ashadh is the day with maximum of eighteen Muhurts and the night with minimum of twelve Muhurts. On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the months of Chaitra and Aashwin the length of the day and night is same. On that date both day and night are fifteen Muhurts long. And on the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Paush is the night with maximum of eighteen Muhurts and the day with minimum of twelve Muhurts.

***Yathaayurnivritti Kaal* (life-span time)**—Experiencing the passage of the life-span acquired is called *Yathaayurnivritti Kaal* (life-span time).

***Maran Kaal* (death time)**—The moment or time of separation of soul from body or body from soul is called *Maran Kaal* (death time).

***Addha Kaal* (time scale)**—*Addha Kaal* (time scale) is measured as units like Samaya, Aavalika,... and so on up to... Utsarpini (progressive cycle of time). Where the stellar bodies keep moving is the area of *Addha Kaal* (time scale).

—Shatak-10, lesson-11

what fraction of Muhurt it gets the minimum span of three Muhurts; also, when the Paurushi of day or night has the minimum span of three Muhurts then by gradual addition of what fraction of Muhurt it gains the maximum span of four and a half Muhurts ?

[Ans.] Sudarshan! When the Paurushi of day or night has the maximum span of four and a half Muhurts then by gradual reduction of 122nd fraction of Muhurt it gets the minimum span of three Muhurts; also, when the Paurushi of day or night has the minimum span of three Muhurts then by gradual addition of 122nd fraction of Muhurt it gains the maximum span of four and a half Muhurts.

१०. [प्र.] कया णं भंते! उक्कोसिआ अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ? कया वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ?

[उ.] सुदंसणा! जया णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राइ भवइ तया णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवस्स पोरिसी भवइ, जहन्नियातिमुहुत्ता राइए पोरिसी भवइ। जया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राइ भवइ, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं मुक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राइए पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवस्स पोरिसी भवइ।

१०. [प्र.] भगवन्! दिवस और रात्रि की उत्कृष्ट साढ़े चार मुहूर्त्त की पौरुषी कब होती है और जघन्य तीन मुहूर्त्त की पौरुषी कब होती है?

[उ.] हे सुदर्शन! जब उत्कृष्ट अट्ठारह मुहूर्त्त का दिन होता है तथा जघन्य बारह मुहूर्त्त की छोटी रात्रि होती है, तब साढ़े चार मुहूर्त्त की दिवस की उत्कृष्ट पौरुषी होती है और रात्रि की तीन मुहूर्त्त की सबसे छोटी पौरुषी होती है। जब उत्कृष्ट अट्ठारह मुहूर्त्त की बड़ी रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त्त का छोटा दिन होता है, तब साढ़े चार मुहूर्त्त की उत्कृष्ट रात्रि-पौरुषी होती है और तीन मुहूर्त्त की जघन्य दिवस-पौरुषी होती है।

10. [Q.] *Bhante!* When does the Paurushi of day or night have the maximum span of four and a half Muhurts and when does the Paurushi of day or night has the minimum span of three Muhurts ?

[Ans.] Sudarshan! When the length of the day is a maximum of eighteen Muhurts and that of the night is a minimum of twelve Muhurt then the Paurushi of day has the maximum span of four and a half Muhurts and the Paurushi of night has the minimum span of three Muhurts. When the length of the night is a maximum of eighteen

Muhurts and that of the day is a minimum of twelve Muhurt then the Paurushi of night has the maximum span of four and a half Muhurts and the Paurushi of day has the minimum span of three Muhurts.

११. [प्र.] कया णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राइ भवइ? कया वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राइ भवइ, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ?

[उ.] सुदंसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राइ भवइ; पोसपुण्णिमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राइ भवइ, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

११. [प्र.] भगवन्! अट्ठारह मुहूर्त्त का उत्कृष्ट दिवस और बारह मुहूर्त्त की जघन्य रात्रि कब होती है? तथा अट्ठारह मुहूर्त्त की उत्कृष्ट रात्रि और बारह मुहूर्त्त का जघन्य दिन कब होता है?

[उ.] सुदर्शन! आषाढ़ी पूर्णिमा को अट्ठारह मुहूर्त्त का उत्कृष्ट दिवस और बारह मुहूर्त्त की जघन्य रात्रि होती है; तथा पौषी पूर्णिमा को अट्ठारह मुहूर्त्त की उत्कृष्ट रात्रि और बारह मुहूर्त्त का जघन्य दिवस होता है।

11. [Q.] *Bhante!* When do the day with maximum of eighteen Muhurts and the night with minimum of twelve Muhurts occur ? And when do the night with maximum of eighteen Muhurts and the day with minimum of twelve Muhurts occur ?

[Ans.] Sudarshan! On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Ashadh is the day with maximum of eighteen Muhurts and the night with minimum of twelve Muhurts. And on the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Paush is the night with maximum of eighteen Muhurts and the day with minimum of twelve Muhurts.

१२. [प्र.] अत्थि णं भंते ! दिवसा य राइओ य समा चेव भवंति?

[उ.] हंता, अत्थि।

१२. [प्र.] भगवन्! कभी दिवस और रात्रि दोनों समान भी होते हैं?

[उ.] हाँ, सुदर्शन! होते हैं।

12. [Q.] *Bhante !* Is the length of the day and night same ever ?

[Ans.] Yes, Sudarshan ! It is.

१३. [प्र.] कया णं भंते ! दिवसा य राइओ य समा चेव भवंति?

[उ.] सुदंसणा ! चेत्तसोयपुण्णिमासु णं, एत्थ णं दिवसा य राइओ य समा चेव भवंति; पन्नरसमुहुत्ते दिवसे, पन्नरसमुहुत्ता राइ भवइ; चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राइए वा पोरिसी भवइ। से त्तं पमाणकाले।

१३. [प्र.] भगवन्! दिवस और रात्रि, ये दोनों समान कब होते हैं?

[उ.] सुदर्शन! चैत्र और आश्विनी पूर्णिमा को दिवस और रात्रि दोनों समान (बराबर) होते हैं। उस दिन पन्द्रह मुहूर्त्त का दिन और पन्द्रह मुहूर्त्त की रात होती है तथा दिवस एवं रात्रि की पौने चार मुहूर्त्त की पौरुषी होती है।

इस प्रकार प्रमाणकाल कहा गया है।

13. [Q.] *Bhante!* When is the length of the day and night same?

[Ans.] Sudarshan! On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the months of Chaitra and Aashwin the length of the day and night is same. On that date both day and night are fifteen Muhurts long. Also, the Paurushis (quarters) of day and night are three and a three quarter Muhurts long. This completes the description of *Pramaan Kaal* (Solar time).

विवेचन—प्रमाणकाल—जिससे दिवस, रात्रि, वर्ष, शतवर्ष, आदि का प्रमाण जाना जाए, उसे **प्रमाणकाल** कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—दिवस प्रमाणकाल और रात्रि प्रमाणकाल। सामान्य रूप से दिन या रात्रि का प्रमाण चार-चार प्रहर का माना गया है। एक प्रहर को पौरुषी कहते हैं। **जितने मुहूर्त्त का दिन या रात्रि होती है, उसका चौथा भाग पौरुषी कहलाता है।** दिवस और रात्रि की उत्कृष्ट पौरुषी साढ़े चार मुहूर्त्त की होती है और जघन्य पौरुषी तीन मुहूर्त्त की होती है।

उत्कृष्ट दिन और रात—आषाढ़ी पूर्णिमा को १८ मुहूर्त्त का दिन और पौषी पूर्णिमा को १८ मुहूर्त्त की रात्रि होती है, उस कथन को **पंच-संवत्सर-परिमाण**-युग के अन्तिम वर्ष की अपेक्षा से समझना चाहिए। अन्य वर्षों में तो कर्क संक्रान्ति जब होती है, तभी १८ मुहूर्त्त का दिन और रात्रि होती है। जब १८ मुहूर्त्त के दिन और रात होते हैं, तब उनकी पौरुषी ४½ मुहूर्त्त की होती है।

समान दिन और रात—चैत्री और आश्विनी पूर्णिमा को दिन और रात्रि दोनों समान होते हैं, अर्थात् इन दोनों में १५-१५ मुहूर्त्त का दिवस और रात्रि होते हैं। इस कथन को भी व्यवहार नय से समझना चाहिए। निश्चय में तो कर्क संक्रान्ति और मकर संक्रान्ति से जो ९२वाँ दिन होता है, तब रात्रि और दिवस दोनों समान होते हैं।

जघन्य दिन और रात—आषाढ़ी-पूर्णिमा को बारह मुहूर्त्त की जघन्य रात्रि और पौषी पूर्णिमा को 12 मुहूर्त्त का जघन्य दिन होता है। जब 12 मुहूर्त्त के दिन और रात होते हैं, तब दिन एवं रात्रि की पौरुषी तीन मुहूर्त्त की होती है।

Elaboration—*Pramaan Kaal* (Solar time)–That which provides measure of day, night, year, century etc. is called *Pramaan Kaal* (Solar time). This is of two kinds–standard daytime and standard night-time. In general the length of a day or a night is believed to be four Prahar (quarter) each. Prahar is also called Paurushi. The length of Paurushi is equal to one fourth of the length of day or night in Muhurts. The maximum length of a Paurushi of day or night is four and a half Muhurts and the minimum is three Muhurts.

Maximum length of day or night–On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Ashadh is the day with maximum of eighteen Muhurts and on the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Paush is the night with maximum of eighteen Muhurts. However, this occurs every fifth year. During other years the maximum length of day and night is on the date the sun enters the sign of Cancer in the Zodiac. The length of the Paurushi is 4.5 Muhurts when the day and night are of maximum length.

Same length of day and night–On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the months of Chaitra and Aashwin the length of the day and night is same. On that date both day and night are fifteen Muhurts long. This is according to the traditional belief. Actually this occurs on the 92nd day after the dates of entry of the sun in Cancer (Kark) and Capricorn (Makar) signs of the Zodiac.

Minimum length of day and night–On the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Ashadh is the night with minimum of twelve Muhurts and on the 15th of the bright half (*Purnima*) of the month of Paush is the day with minimum of twelve Muhurts. The length of the Paurushi is 3 Muhurts when the day and night are of minimum length.

यथायुनिर्वृत्तिकाल की व्याख्या YATHAAYURNIVRITTI KAAL

१४. [प्र.] से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ?

[उ.] अहाउनिव्वत्तिकाले, जं णं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं से त्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले।

१४. [प्र.] भगवन्! वह यथायुनिर्वृत्तिकाल क्या है?

[उ.] (सुदर्शन!) जिस किसी नैरयिक, तिर्यञ्चयोनिक, मनुष्य अथवा देव ने स्वयं जैसा आयुष्य बाँधा है, उसी प्रकार उसका पालन करना—भोगना, 'यथायुनिर्वृत्तिकाल कहलाता है।

14. [Q.] *Bhante!* What is this *Yathaayurnivritti Kaal* (life-span time) ?

[Ans.] Sudarshan ! The passage or experiencing (by being alive) of the life-span acquired (as bondage of *ayushya karma* or life-span determining *karma*) as an infernal being, animal, human or divine being is called *Yathaayurnivritti Kaal* (life-span time).

मरणकाल की व्याख्या MARAN KAAL

१५. [प्र.] से किं तं मरणकाले ?

[उ.] मरणकाले, जीवो वा सरीराओ, सरीरं वा जीवाओ। से त्तं मरणकाले।

१५. [प्र.] भगवन्! मरणकाल क्या है?

[उ.] सुदर्शन! शरीर से जीव का अथवा जीव से शरीर का (पृथक् होने का काल) मरणकाल है।

15. [Q.] *Bhante !* What is this *Maran Kaal* (death time) ?

[Ans.] Sudarshan! The moment or time of separation of soul from body or body from soul is called *Maran Kaal* (death time).

अद्धाकाल की व्याख्या ADDHA KAAL

१६-१. [प्र.] से किं तं अद्धाकाले ?

[उ.] अद्धाकाले अणेगविहे पन्नत्ते, से णं समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए जाव उस्सप्पिणिअट्ठयाए।

१६-१. [प्र.] भगवन्! अद्धाकाल क्या है?

[उ.] सुदर्शन! अद्धाकाल अनेक प्रकार का कहा गया है। वह समय रूप प्रयोजन के लिए है, आवलिका रूप प्रयोजन के लिए है, यावत् उत्सर्पिणी-रूप प्रयोजन के लिए है।

16-1. [Q.] *Bhante !* What is this *Addha Kaal* (time scale) ?

[Ans.] Sudarshan ! *Addha Kaal* (time scale) is of numerous types. It is measured as units like Samaya, Aavalika,... and so on up to... Utsarpini (progressive cycle of time).

१६. [२] एस णं सुदंसणा ! अद्धा दोहारच्छेएणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छइ से त्तं समए समयट्ठयाए।

१६. [२] सुदर्शन! दो भागों में जिसका छेदन-विभाग न हो सके, वह 'समय' है, क्योंकि वह समयरूप प्रयोजन के लिए है।

16. [2] Sudarshan! That which cannot be further divided into two is called Samaya (the smallest indivisible unit of time).

१६. [३] असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा 'आवलिय' त्ति पवुच्चइ। संखेज्जओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए (स. ६ उ. ७) जाव तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परीमाणं।

१६. [३] असंख्य समयों के समूह से एक आवलिका होती है। संख्यात आवलिका का एक उच्छ्वास होता है, इत्यादि छठे शतक के शालि नामक सातवें उद्देशक में कहे अनुसार यावत्–'यह एक सागरोपम का परिमाण होता है', यहाँ तक जान लेना चाहिए।

16. [3] Aggregate of innumerable Samaya units is called Aavalika. Countable Aavalikas make an Uchchhavaas, as mentioned in Shaali, the seventh lesson of chapter sixth ... and so on up to ... this is the measure of Sagaropam (a metaphoric number).

पल्योपम सागरोपम का प्रयोजन **PURPOSE OF PALYOPAM AND SAGAROPAM**

१७. [प्र.] एएहि णं भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयणं?

[उ.] सुदंसणा ! एएहि णं पलिओवम-सागरोवमेहिं नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं आउयाइं मविज्जंति।

१७. [प्र.] भगवन्! इन पल्योपम और सागरोपमों से क्या प्रयोजन है?

[उ.] हे सुदर्शन! इन पल्योपम और सागरोपमों से नैरयिकों, तिर्यञ्चयोनिकों, मनुष्यों तथा देवों का आयुष्य नापा जाता है।

17. [Q.] *Bhante!* What is the purpose of Palyopam and Sagaropam?

[Ans.] Sudarshan! Palyopam and Sagaropam are used for the measure of life-span of infernal beings, animals, humans and divine beings.

विवेचन—उपमाकाल : स्वरूप और प्रयोजन—पल्योपम और सागरोपम उपमाकाल हैं। चार गति के जीवों की जो आयु संख्या द्वारा नहीं मापी जा सकती, वह इस उपमाकाल द्वारा मापी जाती है।

Elaboration—Metaphoric scale–Palyopam and Sagaropam are metaphoric units of time. The life span of living beings of all four genuses that cannot be put into numbers is expressed by these metaphoric units.

नैरयिकादि समस्त संसारी जीवों की स्थिति की प्ररूपणा

LIFE-SPANS OF ALL WORLDLY LIVING BEINGS

१८. [प्र.] नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिइ पण्णत्ता ?

[उ.] एवं ठिइ पयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव जहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइ पण्णत्ता।

१८. [प्र.] भगवन्! नैरयिकों की स्थिति कितने काल की कही गई है?

[उ.] सुदर्शन! इस विषय में प्रज्ञापना सूत्र का चौथा स्थिति पद सम्पूर्ण कहना चाहिए; यावत्—सर्वार्थसिद्ध देवों की अजघन्य-अनुत्कृष्ट तैंतीस सागरोपम की स्थिति है।

18. [Q.] *Bhante !* What is said to be the life-span (*sthiti*) of infernal beings ?

[Ans.] Sudarshan ! On this matter quote the fourth chapter of *Prajnapana Sutra,* titled *Sthiti,* in full... and so on up to... the average (neither minimum nor maximum) life-span of the divine beings of Sarvarth Siddhi Vimaan is thirty three Sagaropam.

विवेचन : चौबीस दण्डकवर्ती जीवों की स्थिति का अतिदेश—प्रस्तुत १८वें सूत्र में नैरयिकों से लेकर सर्वार्थसिद्ध देवों तक के जीवों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति का प्रज्ञापनासूत्र के अनुसार निरूपण किया गया है।

Elaboration—This statement informs about the minimum and maximum life-spans of living beings of all the twenty four places of suffering (*dandak*) from infernal to divine beings as mentioned in *Prajnapana Sutra.*

पल्योपम-सागरोपम क्षयोपचय को सिद्ध करने हेतु महाबल राजा का दृष्टान्त

STORY OF KING MAHABAL : DECREASE IN METAPHORIC AGE

१९-१. [प्र.] अत्थि णं भंते ! एएसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएइ वा अवचएइ वा?

[उ.] हंता, अत्थि।

१९-१. [प्र.] भगवन्! क्या इन पल्योपम और सागरोपम का क्षय अथवा अपचय होता है?

[उ.] हाँ, सुदर्शन! होता है।

19-1. [Q.] *Bhante !* Do these Palyopam and Sagaropam get diminished or reduced ?

[Ans.] Yes, Sudarshan ! They do.

१९-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थि णं एएसिं पलिओवम-सागरोवमाणं जाव अवचयेइ वा ?

[उ.] एवं खलु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नयरे होत्था, वण्णओ। सहसंबवणे उज्जाणे, वण्णओ।

१९-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि इन पल्योपम और सागरोपम का क्षय अथवा अपचय होता है?

[उ.] (उदाहरण द्वारा समाधान–) हे सुदर्शन! उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नाम का नगर था। उसका वर्णन समझना चाहिए। वहाँ सहस्राम्रवन नाम का एक उद्यान था। उसका वर्णन समझना चाहिए।

19-2. [Q.] *Bhante!* Why it is said that these Palyopam and Sagaropam get diminished or reduced ?

[Ans.] (Explained by example) Sudarshan! During that period of time there was a city called Hastinapur. Description. Outside the city there was a garden named Sahasramravan. Description.

२०. तत्थ णं हत्थिणापुरे नयरे बले नामं राया होत्था, वण्णओ।

[२०] उस हस्तिनापुर में 'बल' नामक राजा था। उसका वर्णन समझना चाहिए।

20. In Hastinapur ruled a king named Bal. Description.

२१. तस्स णं बलस्स रण्णो पभावई नामं देवी होत्था सुकुमाल० वण्णओ जाव विहरइ।

[२१] उस बल राजा की प्रभावती नाम की देवी (पटरानी) थी। उसके हाथ-पैर सुकुमाल थे, इत्यादि वर्णन समझना चाहिए; इस तरह वह पाँचों इन्द्रियों से परिपूर्ण होकर सुखपूर्वक अपने जीवन का निर्वाह करती थी।

21. The (chief) queen of King Bal was Prabhavati. She had delicate limbs (description)... and so on up to... lived happily.

प्रभावती का वासगृह-शय्या-सिंहस्वप्न-दर्शन **PRABHAVATI'S DREAM OF LION**

२२. तएणं सा पभावइ देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोयचिल्लियतले मणिरयणपणासियंधयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए तंसि

तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टीए उभयो बिब्बोयणे दुहओ उन्नए मज्झे णय-गंभीरे गंगापुलिणवालुयउद्दालसालिसए उवचियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुमचुण्णसयणो-वयारकलिए अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी अयमेयारूवं ओरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरियं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुद्धा। हार-रयय-खीर-सागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेलपंडुरतरोरुरमणिज्जपेच्छणिज्जं थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभंतलट्ठउट्ठं रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहं मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंत-वट्टतडिविमलसरिसनयणं विसालपीवरोरुपडिपुण्णविपुलखंधं मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थ-वित्थिण्णकेसरसडोवसोभियं ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियणंगूलं सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहयलायो ओवयमाणं निययवयणकमलसरमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा।

[२२] किसी दिन वह प्रभावती देवी उस प्रकार के वासभवन के भीतर, उस प्रकार की अनुपम शय्या पर सोई थी। वह वासभवन, भीतर से चित्रित तथा बाहर से सफेदी किया हुआ एवं घिस कर चिकना बनाया हुआ था। जिसका ऊपरी भाग विविध चित्रों से रंगा हुआ तथा नीचे का भाग प्रकाश से देदीप्यमान था। मणियों और रत्नों के कारण उस वासभवन में अन्धकार नहीं था। उसका भू-भाग बहुतसम और सुविभक्त था। वह पाँच वर्ण के सरस और सुगन्धित पुष्पपुंजों के उपचार से युक्त था। उत्तम कालागुरु (काला अगर), कुन्दरुक और तुरुष्क (शिलारस) के धूप से वह वासभवन चारों ओर से सुगंधित था। सुगन्धी पदार्थों से वह सुवासित एवं सुगन्धी द्रव्य की गुटिका के समान था। ऐसे वासभवन में जो शय्या थी, वह अपने आप में अद्वितीय थी तथा शरीर से स्पर्श करते हुए उपधान (पार्श्ववर्ती तकिये) से युक्त थी। उस शय्या के दोनों तरफ (सिरहाने और पादतल) तकिये रखे हुए थे। वह (शय्या) दोनों ओर से उन्नत, बीच में कुछ नमी हुई एवं गहरी थी, गंगा नदी की तटवर्ती बालू के अवदाल (पैर रखते ही नीचे धस जाने) के समान कोमल थी। वह परिकर्मित क्षौमिक-रेशम के समान मुलायम चादर से ढंकी हुई तथा सुन्दर सुरचित रजस्त्राण (पादलुंछन) से युक्त थी। रक्तांशुक (लाल रंग के सूक्ष्म वस्त्र) की मच्छरदानी उस पर लगी हुई थी। वह सुरम्य आजिनक (एक प्रकार के चमड़े का कोमल वस्त्र), रूई, बूर, नवनीत तथा अर्कतूल (आर्क की रूई) के समान कोमल स्पर्श वाली थी; तथा सुगन्धित श्रेष्ठपुष्प, चूर्ण एवं शयनोपचार (शयन-उपकरण) से युक्त थी।

ऐसी शय्या पर सोई हुई प्रभावती रानी ने अर्धरात्रि काल के समय अर्धनिद्रित अवस्था में एक उदार, कल्याणरूप, शिव, धन्य, मंगलकारक एवं शोभायुक्त (सश्रीक) महास्वप्न देखा और जागृत हो गई।।

प्रभावती रानी ने स्वप्न में एक सिंह देखा, जो (मोतियों के) हार, रजत (चांदी), क्षीर समुद्र, चन्द्रकिरण, जलकण, रजतमहाशैल के समान श्वेत वर्ण वाला था, वह विशाल, रमणीय और दर्शनीय था। उसके प्रकोष्ठ स्थिर और सुन्दर थे। वह अपने गोल, पुष्ट, सुश्लिष्ट, विशिष्ट और तीक्ष्ण दाढ़ाओं से युक्त मुँह को फाड़े हुए था। उसके होंठ संस्कारित उत्तम जाति के कमल के समान कोमल, प्रमाणोपेत अत्यन्त सुशोभित थे। उसका तालु और जीभ रक्तकमल-पत्र के समान अत्यन्त कोमल थी। उसके नयन मूस में रहे हुए तथा अग्नि से तपाये हुए और आवर्त्त करते हुए उत्तम स्वर्ण के समान वर्ण वाले गोल एवं बिजली के समान विमल (चमकीले) थे। वह विशाल और पुष्ट जंघाओं वाला तथा परिपूर्ण विपुल स्कन्धों (कंधों) वाला था। वह कोमल, विशद, सूक्ष्म और प्रशस्त लक्षण वाली विशाल केसर-जटाओं से सुशोभित था। वह सौम्य आकृति वाला सिंह अपनी सुनिर्मित, सुन्दर एवं उन्नत पूँछ को पृथ्वी पर फटकारता हुआ, लीला करता हुआ, जंभाई लेता हुआ, नभमंडल से नीचे उतर कर अपने मुख-कमल-सरोवर में प्रवेश करता हुआ दिखाई दिया। ऐसे सिंह को स्वप्न में देखकर रानी जाग्रत हुई।

22. One day Queen Prabhavati was in her bed in her bedroom. The outer walls of this room were white-washed and polished with smooth stones. The inner walls of this chamber were adorned with frescoes. The upper portion of the room was decorated with a variety of frescoes and the lower portion was glowing with light. It was free of darkness due to studded multi-coloured gem stones and beads. Its floor was level and well proportioned. It was embellished with beautiful and fragrant bouquets of flowers of five colours. It was filled with aroma of a variety of burning incenses including black Agar, Kundaruk and Turushk. The fragrance of so many aromas made the room redolent like a box of aromatic substances. The bed in this room was unique and it had body touching side-pillows. There were pillows lying at both ends. It was raised on both sides and sunken in the middle and was soft and pliant like the beach-sand of the Ganges. A bed-spread of colourfully embroidered soft silk was laid out. Also placed on it was a beautiful towel. A red coloured mosquito-net was put around it. This decorated and inviting bed was as soft to touch as chamois leather, softest cotton, Bura plant, fresh butter, or Aak fiber. It was also decorated with best of fragrant flowers and powders and with any and all provisions for comfortable sleep.

Around midnight Queen Prabhavati, while reclining in this beautiful bed, dozing and lying half asleep, saw a noble, auspicious, blissful, blessed, providential and enchanting great dream. She got startled and woke up.

रानी प्रभावती द्वारा
मुख में सिंह प्रवेश
का स्वप्न दर्शन
स्वर्ग से च्यवन कर
महाबल के जीव का रानी के
गर्भ में आना
अपनी आठ पत्नियों
के साथ महाबल कुमार
बल राजा ने महाबल कुमार
के लिये अत्यन्त सुन्दर
आठ महल बनवाये

चित्र-परिचय 7

Illustration No. 7

महाबल कुमार

सुदर्शन श्रमणोपासक द्वारा काल विषयक प्रश्न पूछे जाने पर भगवान महावीर स्वामी ने उसका समाधान देते हुए सुदर्शन को उसके पूर्व भव बताये।

सुदर्शन के पूर्व भव

एक रात्रि महाबल कुमार का जीव स्वर्ग से च्यवन करके हस्तिनापुर नगर के राजा बल की रानी प्रभावती के गर्भ में आया। उसी रात्रि को रानी ने एक दहाड़ते हुए सिंह का स्वप्न देखा।

रानी ने नौ माह, साढ़े सात दिन बीतने पर एक अत्यन्त सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। पाँच धायों की देख-रेख में बालक सुखपूर्वक बड़ा होने लगा। युवा होने पर राजा बल ने उसके लिये अत्यन्त सुन्दर खम्बों से युक्त आठ राजमहलों का निर्माण करवाया और अत्यन्त रूपवती आठ राजकन्याओं के साथ उसका विवाह करा दिया। महाबल कुमार उन भव्य प्रासादों में अपनी आठ रानियों के साथ स्वर्गिक सुख भोगने लगा।

—शतक 11, उ. 11

PRINCE MAHABAL

When Sudarshan Shramanopasak asks questions about time, Bhagavan Mahavir, while answering, told him about his past births.

SUDARSHAN'S PAST BIRTH

One night the soul of Prince Mahabal descended from heavens into the womb of queen Prabhavati, wife of king Bal of Hastinapur. The queen saw a roaring lion in her dream that night.

After nine months and seven and a half days the queen gave birth to a beautiful son. He grew happily under the care of five governesses. When he was young, king Bal got eight palaces with beautiful pillars constructed for him. He was also married to eight beautiful princesses. Now prince Mahabal spent his life enjoying divine pleasures with is wives in these grand palaces.

—Shatak-10, lesson-11

In her dream Queen Prabhavati saw a lion that was white like a pearl-necklace, silver, ocean of milk, moonlight, water drop, and a great mound of silver. It was huge, attractive and appealing. It had beautiful and stable limbs. Its mouth was open showing round, strong, well proportioned and very sharp molars. Its lips were beautiful, uniform and delicate like a clean good quality lotus. Its palate and tongue were soft like petals of red lotus. Its eyes were golden and round like whirling molten gold poured in a crucible and were radiant like lightening. It had large, strong thighs and prominent shoulders. A soft, white, fine, thick and prominent mane added to its beauty. The queen saw that graceful lion descending from the sky swinging its beautiful and shapely tail and entering her lotus-pond like mouth. Seeing such lion in her dream, the queen woke up.

रानी का स्वप्न निवेदन और स्वप्न-फल कथन आग्रह

QUEEN NARRATES HER DREAM AND SEEKS ITS MEANING

२३. तएणं सा पभावई देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव सस्सिरियं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया धाराहयकलंबपुप्फगं पिव समूसवियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, स. अ. २ अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मियमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेइ, पडि. २ बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी संलवमाणी एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण. तं चेव जाव नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। तं णं देवाणुप्पिया? एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?

[२३] प्रभावती रानी इस प्रकार के उदार एवं शोभावान महास्वप्न को देख जागृत होकर अत्यन्त हर्षित एवं सन्तुष्ट हुई; वह वर्षा की जलधारा से विकसित कदम्ब-पुष्प के समान रोमांचित होती हुई उस स्वप्न का स्मरण करने लगी। फिर वह अपनी शय्या से उठी और शीघ्रता से रहित तथा अचपल, असम्भ्रमित (हड़बड़ी से रहित) एवं अविलम्बित, राजहंस समान गति से चलकर बल राजा की शय्या के पास आईं और बल राजा की शय्या के पास आकर उन्हें उन इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम, उदार, कल्याणरूप, शिव, धन्य, मंगलमय तथा शोभायुक्त

परिमित, मधुर एवं मंजुल वाणी से पुकार कर जगाने लगीं। राजा जाग्रत हुआ। राजा की आज्ञा होने पर रानी विचित्र मणि और रत्नों की रचना से चित्रित भद्रासन पर बैठीं। फिर उत्तम सुखासन से बैठ कर स्वस्थ और शान्त बनी हुई रानी प्रभावती, बल राजा से इष्ट, कान्त ऐसी मधुर वाणी से इस प्रकार बोली–"हे देवानुप्रिय! आज मैं उपरोक्त वर्णन वाली सुख-शय्या पर सोई हुई थी तब मैंने अपने मुख में प्रवेश करते हुए सिंह-स्वप्न को देखा और मैं जाग्रत हुई हूँ। तो हे देवानुप्रिय! मुझे इस उदार यावत् महास्वप्न का क्या कल्याणकारक फल विशेष होगा?

23. Waking up after this radiant and appealing dream, Queen Prabhavati was filled with joy and contentment. As a Kadamba flower blossoms at the touch of rain drops, every pore of Queen Prabhavati's body became alive with a sensation of ecstasy. She brooded over the vivid dream and got up from the bed. She moved away from the bed and sauntering with the grace of a swan approached the bed of King Bal with unhurried gait and steady steps. She gently woke him up uttering loving, touching, and appropriate words in her soft, sweet, pleasing and melodious voice with gracious, clear, warm, and polite accent. The king awoke. Seeking permission from King Bal she made herself comfortable on a golden and gem studded seat. Controlling her excitement and regaining her composure she greeted the king with folded hands and uttered in her soft, sweet voice—"Beloved of gods ! Today while I was sleeping in my (aforesaid) bed I saw in my dream a lion entering my mouth. This dream broke my slumber. O beloved of gods ! Please tell me what boon is portended by this noble... and so on up to... great dream ?"

राजा द्वारा स्वप्नफल कथन INTERPRETATION OF DREAM BY THE KING

२४. तए णं से बले राया पभावइए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियये धाराहयणीमसुरभिकुसुमं वा चंचुमालइयतण ऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविस्सइ, ईहं प. २ अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, तस्स. क. २ पभावई देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मंगल्लाहिं मियमहुरसस्सिरियाहिं वग्गूहिं संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी–"ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे कल्लाणे णं तुमे जाव सस्सिरिए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए!, भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए!, रज्जलाभो देवाणुप्पिए! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदिया-णं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडेंसयं कुलतिलगं

कुलकित्तिकरं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीणपुण्णपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्णविउलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ। तं ओराले णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि. जाव मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे" त्ति कट्टु पभावई देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुवूहइ।

[२४] तदनन्तर वह बल राजा प्रभावती देवी की इस स्वप्नदर्शन की बात को सुनकर और हृदय में धारण कर हर्षित और सन्तुष्ट हुआ यावत् उसका हृदय आकर्षित हुआ। मेघ की धारा से विकसित कदम्ब के सुगन्धित पुष्प के समान उसका शरीर पुलकित हो उठा, रोम-रोम विकसित हो उठे। राजा बल ने उस स्वप्न के विषय में अवग्रह (सामान्य-विचार) करके ईहा (विशेष विचार) में प्रवेश किया, फिर उसने अपने स्वाभाविक बुद्धि विज्ञान से उस स्वप्न के फल का निश्चय किया। तदनन्तर इष्ट, कान्त, मंगलमय, परिमित, मधुर एवं शोभायुक्त सुन्दर वचन बोलता हुआ वह रानी प्रभावती से बोला—"हे देवी! तुमने उदार स्वप्न देखा है। देवी! तुमने कल्याणकारक यावत् शोभायुक्त स्वप्न देखा है। हे देवी! तुमने आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायु, कल्याणरूप और मंगलकारक स्वप्न देखा है। हे देवानुप्रिये! तुम्हें अर्थलाभ, भोगलाभ, पुत्रलाभ और राज्यलाभ होगा। हे देवानुप्रिये! नौ मास और साढ़े सात दिन (अहोरात्र) व्यतीत होने पर तुम हमारे कुल में केतु-(ध्वज) समान, कुल के दीपक, कुल में पर्वत के समान, कुल का शिखर, कुल का तिलक, कुल की कीर्ति फैलाने वाले, कुल को आनन्द देने वाले, कुल का यश बढ़ाने वाले, कुल के आधार, कुल में वृक्ष समान, कुल की वृद्धि करने वाले, सुकुमाल हाथ-पैर वाले, अंगहीनता रहित, परिपूर्ण पंचेन्द्रिययुक्त शरीर वाले, यावत् चन्द्रमा के समान सौम्य आकृति वाले, कान्त, प्रियदर्शन, सुरूप एवं देवकुमार के समान कान्ति वाले पुत्र को जन्म दोगी।"

वह बालक भी बालभाव से मुक्त होकर विज्ञ और कलादि में परिणत होगा। यौवनवय प्राप्त होते ही वह शूरवीर, पराक्रमी तथा विस्तीर्ण एवं विपुल बल और वाहन वाला राज्याधिपति राजा होगा। अत: हे देवी! तुमने उदार (प्रधान) स्वप्न देखा है। देवी! तुमने आरोग्य, तुष्टि यावत् मंगलकारक स्वप्न देखा है, इस प्रकार बल राजा ने प्रभावती देवी को इष्ट यावत् मधुर वचनों से वही बात दो बार और तीन बार कही।

24. Queen Prabhavati's words about seeing this dream filled King Bal with joy, contentment... and so on up to... enchantment. His heart also brimmed over with delightful ecstasy. He pondered over the dreams with the help of his inborn intelligence, discerning mind, and analytical

wisdom to interpret the dream and what it foreboded. He then conveyed to Queen Prabhavati in his soft, sweet, pleasing and melodious voice with gracious, clear, warm, and polite accent—"O Queen ! You have seen a noble dream. O Queen ! Your dream is bountiful... and so on up to... opulent. O Queen ! You have seen a dream that is harbinger of well being, contentment, long-life, boons and good fortune. O beloved of gods ! You will gain wealth, grandeur, a son, joy, and expansion of kingdom.

O beloved of gods ! You will give birth to a son after nine months and seven and a half days from today. This son of yours will bring glory to our clan, as do a flag, a lamp, a mountain, a crown, and an auspicious mark on the forehead. For our clan he will be like the sun, a support, and a shade giving tree. He will have delicate limbs, faultless and acute senses, and a perfectly formed body... and so on up to... Like the moon he will be soothingly radiant, absolutely beautiful, charming, handsome and opulent like a divine child. As he passes the age of infancy he will grow into a youth of mature intelligence and having perfect knowledge of all subjects including arts and sciences. In due course he will become a king having courage, bravery, glory, benevolence, power, vehicles, army, and kingdom. Thus you have seen the best of all dreams." King Bal praised the dream over and over again in sweet (etc.) words.

रानी प्रभावती का रात्रि जागरण **PRABAHAVATI REMAINS AWAKE DURING THE NIGHT**

२५. तए णं सा पभावई देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. करयल जाव एवं वयासी–'एवमेयं देवाणुप्पिया!, तहमेयं देवाणुप्पिया!, अवितहमेयं देवाणुप्पिया!, असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया!, पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया!, इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, तं. पडि. २ बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणि-रयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अ. २ अतुरियमचवल जाव गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ सयणिज्जंसि निसीयइ, नि. २ एवं वयासी–'मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अन्नेहिं पावसुविणेहिं पडिहम्मिस्सइ' त्ति कट्टु देव-गुरुजण-संबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

[२५] तदनन्तर वह रानी प्रभावती, बल राजा से स्वप्नफल को सुनकर, हृदय में धारण करके हर्षित और सन्तुष्ट हुई और हाथ जोड़कर इस प्रकार बोली–"हे देवानुप्रिय! आपने जो कहा वह यथार्थ है, देवानुप्रिय! वह सत्य है, असंदिग्ध है। वह मुझे इच्छित है, स्वीकृत है, पुनः

पुनः इच्छित और स्वीकृत है।" इस प्रकार रानी ने स्वप्न के फल को सम्यक् रूप से स्वीकार किया और फिर बल राजा की अनुमति लेकर अनेक मणियों और रत्नों से चित्रित भद्रासन से उठी। इसके बाद शीघ्रता और चपलता से रहित गति से जहाँ शयनगृह में अपनी शय्या थी, वहाँ आई और शय्या पर बैठकर मन ही मन इस प्रकार कहने लगी—"मेरा यह उत्तम, प्रधान एवं मंगलमय स्वप्न दूसरे पाप स्वप्नों से विनष्ट न हो जाए।" इस प्रकार विचार करके देवगुरुजन-सम्बन्धी प्रशस्त और मंगल रूप धार्मिक कथाओं (विचारणाओं) से स्वप्न-जागरिका के रूप में वह जागरण करती हुई बैठी रही।

25. Hearing the interpretation of the dream from King Bal made Queen Prabhavati happy and contented. Joining her palms, she exclaimed, "Undoubtedly, beloved of Gods, what you say is true. Your interpretation is absolutely correct. Your statement is desirable and acceptable to me. It is, in fact, again and again cherished and believed." Sincerely accepting the interpretation, she took leave of King Bal, got up from her seat decorated with gem stones and beads. She then returned to her bedroom with her natural graceful gait. Sitting on her bed she started thinking—"Lest this dream lose its auspicious effect due to later bad dreams (I should remain awake)." Guided by these thoughts she got occupied with pious, auspicious, and religious tales about gods and elders and kept awake during the rest of the night sitting and devoting herself to post-dream awakening (nurturing the auspicious dream)."

उपस्थानशाला की सफाई और सिंहासन की स्थापना

CLEANING THE HALL AND INSTALLING THE THRONE

२६. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को. स. २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्तसुइयसम्मज्जियोवलित्तं सुगंधवर-पंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्क. जाव गंधवट्टिभूयं करेह य करावेह य, करित्ता करावित्ता सीहासणं रएह, सीहा. र. २ ममेयं जाव पच्चप्पिणह।

[२६] इसके पश्चात् बल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों (सेवकों) को बुलाया और उनको इस प्रकार का आदेश दिया—"देवानुप्रियो! तुम बाहर की उपस्थानशाला को आज शीघ्र ही विशेष रूप से गन्धोदक छिड़क कर स्वच्छ करो और लीप कर शुद्ध करो। सुगन्धित और उत्तम पाँच वर्ण के पुष्पों से सुसज्जित करो, उत्तम कालागुरु और कुन्दरुक के धूप से यावत् सुगन्धित गुटिका के समान करो-कराओ, फिर वहाँ सिंहासन रखो। ये सब कार्य करके मुझे वापस निवेदन करो।"

26. As the dawn approached King Bal summoned the members of his staff and instructed, "O beloved of gods ! Hurry up and get the outer

assembly hall cleaned, anointed and sprinkled with good fragrant water. Decorate it with enchanting, fragrant and multicoloured flowers. Burn a variety of incenses, including Black Aguru and Kundaruk to make it redolent and pleasant. ... and so on up to... Turn it into a chamber of perfumes. After that, place a throne there. Do all this and report back."

२७. तए णं ते कोडुं बिय. जाव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति।

[२७] यह सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने बल राजा का आदेश शिरोधार्य किया और शीघ्र ही विशेष रूप से बाहर की उपस्थानशाला को स्वच्छ, शुद्ध, सुगन्धित किया इस प्रकार आदेशानुसार सब कार्य करके राजा से निवेदन किया।

27. Hearing the king's order they happily left and soon cleaned, decorated and perfumed the outer assembly. After completing the entrusted work they returned and informed the king.

बल राजा द्वारा स्वप्नपाठकों को आमंत्रण KING INVITES DREAM DIVINERS

२८. तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ समुट्ठेइ, स. स. २ पायपीढाओ पच्चोरुभइ, प. २ जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ अट्टणसालं अणुपविसइ जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, म. प. २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, नि. २ अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रया. २ अप्पणो अदूरसामंते नाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टबहुभत्तिसयचित्तताणं ईहामियउसभ जाव भत्तिचित्तं अब्भितरियं जवणियं अंछावेइ, अ. २ नाणामणि-रयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थगं सेयवत्थपच्चुत्थुयं अंगसुहफासयं सुमउयं पभावईए देवीए भद्दासणं रयावेइ, र. २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को. स. २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह।

[२८] तदन्तर बल राजा प्रातःकाल के समय अपनी शय्या से उठे और पादपीठ से नीचे उतरे। फिर वे जहाँ व्यायामशाला थी, वहाँ गए। व्यायामशाला में प्रवेश किया। व्यायामशाला तथा स्नानगृह के कार्य का वर्णन औपपातिक सूत्र के अनुसार जान लेना चाहिए, यावत् चन्द्रमा के समान प्रिय-दर्शन बन कर वह राजा, स्नानगृह से निकले और बाहर की उपस्थानशाला में आकर सिंहासन पर पूर्वदिशा की ओर मुख करके बैठ गये। फिर अपने से उत्तरपूर्व दिशा में (अपनी

बायीं ओर) श्वेतवस्त्र से आच्छादित तथा सरसों आदि मांगलिक पदार्थों से उपचरित आठ भद्रासन रखवाए। तत्पश्चात् प्रभावती देवी के लिये, अपने से न अति दूर और न अति निकट अनेक प्रकार के मणिरत्नों से सुशोभित, अत्यधिक दर्शनीय, बहुमूल्य श्रेष्ठ पट्टन में निर्मित सूक्ष्म पट पर सैकड़ों चित्रों की रचना से व्याप्त, ईहामृग, वृषभ आदि पद्मलता के चित्रों से युक्त एक आभ्यन्तरिक (अंदर की) यवनिका (पर्दा) लगवाई। (उस पर्दे के अन्दर) अनेक प्रकार के मणिरत्नों से एवं चित्रों से रचित विचित्र खोली (अस्तर) वाले, कोमल वस्त्र (मसूरक) से आच्छादित, तथा श्वेत वस्त्र चढ़ाया हुआ, अंगों को सुखद स्पर्श वाला तथा सुकोमल गद्दीयुक्त एक भद्रासन रखवा दिया। फिर बल राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और उन्हें इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियो! तुम शीघ्र ही जाओ और अष्टांग महानिमित्त के सूत्र और अर्थ के ज्ञाता, विविध शास्त्रों में कुशल स्वप्न-शास्त्र के पाठकों को बुला लाओ।

28. At the hour of dawn King Bal got up and left his bed stepping on the footrest. After that he went to his gymnasium and entered it. The routine of gymnasium followed by that of bathroom should be quoted from *Aupapatik Sutra*. ... and so on up to... appearing beautiful like the moon, the king left the bathroom; came to the outer assembly hall and sat down on the throne facing the east. Then King Bal got eight chairs with white covers installed in the area north-east of his throne and for auspicious treatment got white mustard seeds placed on them. A gorgeous, rich and gem studded screen-partition was placed neither far nor near his throne. This screen was made of soft imported cloth with exquisite illustrations of Iha-mrig (wolf), bull, horse, crocodile, birds, Kinnars (lower gods), yak, elephant, lotus creeper, etc. and embroidered and enriched with brocade. A beautiful gem studded throne with soft, comfortable cushions and pillows with clean white cotton covers was placed behind the screen for Queen Prabhavati. After making all these arrangements King Bal summoned his attendants and said, "Beloved of gods! Go at once and fetch dream diviners who are scholars of the eight-fold scripture of augury and various other scriptures as soon as possible."

२९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडि. २ सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, ते. उ. २ ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति।

[२९] तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इस प्रकार राजा का आदेश स्वीकार किया और राजा के पास से निकलकर वे शीघ्र, चपलता युक्त, त्वरित, उग्र (चण्ड) एवं वेग वाली तीव्र गति से

हस्तिनापुर नगर के मध्य में होकर जहाँ उन स्वप्नलक्षण-पाठकों के घर पहुँचे और उन्हें राजा की आज्ञा सुनाई। इस प्रकार स्वप्नलक्षण-पाठकों को उन्होंने बुलाया।

29. The attendants happily and humbly accepted the king's order. Taking leave of the king they crossed the streets of Hastinapur city, came to the area where the scholars of augury and allied subjects lived and extended the king's invitation to them for attending the assembly. Thus they called dream diviners.

३०. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ. ण्हाया कय. जाव सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियकयमंगलमुद्धाणा सएहिं सएहिं गिहेहिंतो निग्गच्छंति, स. नि. २ हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उ. २ भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, ए. मि. २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, ते. उ. २ करयल. बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदियपूइयसक्कारियसम्माणिया समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति।

[३०] वे स्वप्नलक्षण-पाठक भी बल राजा के कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा बुलाए जाने पर अत्यन्त हर्षित एवं सन्तुष्ट हुए। उन्होंने स्नानादि करके शरीर को अलंकृत किया। फिर वे अपने मस्तक पर सरसों और हरी दूब से मंगल करके अपने-अपने घर से निकलकर हस्तिनापुर नगर के मध्य में होकर जहाँ बल राजा का उत्तम शिखर रूप राज्य-प्रासाद था, वहाँ आए। उस उत्तम राजभवन के द्वार पर वे स्वप्नपाठक एकत्रित होकर मिले और जहाँ राजा की बाहरी उपस्थानशाला थी, सभी मिलकर वहाँ आए। बलराजा के पास आकर, उन्होंने हाथ जोड़कर 'बल राजा की जय हो, विजय हो' आदि शब्दों से उन्हें बधाया। बल राजा द्वारा वन्दित, पूजित, सत्कारित एवं सम्मानित किये गए वे स्वप्नलक्षण-पाठक प्रत्येक के लिए पहले से रखे हुए उन भद्रासनों पर बैठे।

30. The scholars felt pleased and honoured getting the invitation from royal attendants. After taking there bath... and so on up to... They embellished themselves and as an auspicious ritual they put mustard and grass on their heads and came out of their houses. Passing through Hastinapur city they approached the gate of the great palace of King Bal. After assembling at the gate they entered the hall in a group and went near the king. Joining their palms they greeted the king, wishing him success and victory, and blessed him. After being saluted, worshiped, honoured and greeted by the king, the dream diviners took the seats offered to them.

३१. तए णं से बले राया पभावई देवीं जवणियंतरियं ठावेइ, ठा. २ पुप्फ-फलपडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावई देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तं णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?

[३१] तत्पश्चात् बल राजा ने प्रभावती देवी को (बुलाकर) यवनिका के भीतर बिठाया। फिर पुष्प और फल हाथों में लेकर बल राजा ने अत्यन्त विनयपूर्वक स्वप्नलक्षण पाठकों से इस प्रकार कहा—देवानुप्रियो! आज प्रभावती देवी तथारूप उस वासगृह में शयन करते हुए स्वप्न में सिंह देखकर जागृत हुई है, तो हे देवानुप्रियो! इस उदार यावत् कल्याणकारक स्वप्न का क्या फल होगा?

31. Then King Bal called Queen Prabhavati and made her sit behind the screen. After that King Bal took flowers and fruits in his hands and humbly addressed the scholars, "O beloved of gods ! Queen Prabhavati saw a lion in her dream last night and got up. O beloved of gods! What this great and auspicious dream forebodes ?"

३२-१. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. तं. सुविणं ओगिण्हंति, तं. ओ. २ ईहं अणु-पविसंति, ईहं अणु-पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति, त. क. १ अन्नमन्नेणं सद्धिं संचालेंति अ. सं. २ तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा उच्चारेमाणा एवं वयासी—

३२. [१] बल राजा से प्रश्न को सुनकर, हृदय में अवधारण कर स्वप्नलक्षण-पाठक प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हुए। उन्होंने उस स्वप्न के विषय में सामान्य विचार किया, फिर विशेष विचार किया और उस स्वप्न के अर्थ का निश्चय किया। तत्पश्चात् परस्पर एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श कर, उस स्वप्न का अर्थ स्वयं जानकर एक-दूसरे से ग्रहण कर, एक-दूसरे से पूछकर शंका-समाधान करके अर्थ का निश्चय किया। तदोपरान्त बल राजा के समक्ष स्वप्नशास्त्रों का उच्चारण करते हुए बोले—

32. [1] The dream diviners were happy and contented to hear and understand the words of King Bal. They first gave a cursory thought to the dream and then a deep and evaluative contemplation. They consulted with each other in an in-depth discussion about the meaning and indications of the dream. When they reached a unanimous agreement about the meaning of the dream they conveyed their opinion, based on the relevant scriptures, to King Bal —

३२-२. "एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया! तित्थयरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थयरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तं जहा—

गय वसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं।
पउमसर सागर विमाण-भवण रयणुच्चय सिहिं च॥१॥

वासुदेवमायरो णं वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति।"

३२. [२] "हे देवानुप्रिय! हमारे स्वप्नशास्त्र में बयालीस सामान्य स्वप्न और तीस महास्वप्न, इस प्रकार कुल बहत्तर स्वप्न कहे हैं। तीर्थंकर की माताएँ या चक्रवर्ती की माताएँ, जब तीर्थंकर या चक्रवर्ती गर्भ में आते हैं, तब इन तीस महास्वप्नों में से ये १४ महास्वप्न देखकर जागृत होती हैं। यथा—(१) हाथी, (२) वृषभ, (३) सिंह, (४) अभिषेक की हुई लक्ष्मी, (५) पुष्पमाला, (६) चन्द्रमा, (७) सूर्य, (८) ध्वजा, (९) कुम्भ (कलश), (१०) पद्म-सरोवर, (११) समुद्र, (१२) विमान या भवन, (१३) रत्नराशि और (१४) निर्धूम अग्नि॥१॥

जब वासुदेव गर्भ में आते हैं, तब वासुदेव की माताएँ इन चौदह महास्वप्नों में से कोई भी सात महास्वप्न देखकर जागती हैं। जब बलदेव गर्भ में आते हैं, तब बलदेव-माताएँ इन चौदह महास्वप्नों में से कोई भी चार महास्वप्न देखती हैं। माण्डलिक राजा जब गर्भ में आते हैं, तब माण्डलिक राजा की माताएँ, इनमें से कोई एक महास्वप्न देखकर जागृत होती हैं।"

32. [2] "O beloved of gods ! According to our scriptures of dreams there are seventy two types of dreams, out of which forty two are known as common dreams and the remaining thirty as great dreams. Sire ! When an Arihant or a Chakravarti is conceived, his mother sees fourteen of the thirty great dreams; they are–1. An elephant, 2. a bull, 3. a lion, 4. the anointing of goddess Laxmi, 5. a garland, 6. the moon, 7. the sun, 8. a flag, 9. an urn, 10. lotus pond, 11. the sea, 12. a space vehicle (Vimaan), 13. a heap of jewels, and 14. a smokeless fire. (1)

When a Vasudev is conceived his mother sees any seven out of these fourteen dreams. When it is a Baldev in the womb, the mother

sees any four of these fourteen dreams. When it is a Mandalik Raja (regional sovereign) in the womb the mother sees any one of these fourteen dreams.

३२-३. "इमे य णं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-जाव मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे। अत्थलाभो! भोगलाभो. पुत्तलाभो. रज्जलाभो देवाणुप्पिया!"

३२. [३] "हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवी ने इनमें से एक महास्वप्न देखा है। अत: हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवी ने उदार स्वप्न देखा है। यह स्वप्न कल्याणकारी, आरोग्य, तुष्टि एवं मंगलकारी है, सुख-समृद्धि का सूचक है। हे देवानुप्रिय! इस स्वप्न के फलस्वरूप आपको अर्थलाभ, भोगलाभ, पुत्रलाभ और राज्यलाभ होगा।"

32. [3]. "O beloved of gods ! Queen Prabhavati has seen one of these great dreams. Therefore, O beloved of gods ! Queen Prabhavati has seen a noble dream that is harbinger of good fortune, beatitude, health, contentment, piety, happiness and wealth. You will gain wealth, grandeur, a son, and expansion of your kingdom.

३२-४. "एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव पयाहिइ। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। तं ओराले णं देवाणुप्पिया? पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण जाव दिट्ठे।"

३२. [४] "अत: हे देवानुप्रिय! यह निश्चित है कि प्रभावती देवी नौ मास और साढ़े सात दिन व्यतीत होने पर आपके कुल में ध्वज (केतु) के समान यावत् पुत्र को जन्म देगी। वह बालक भी बाल्यावस्था पार करने पर यावत् राज्य का अधिपति राजा होगा अथवा वह भावितात्मा अनगार होगा। इसलिये हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवी ने जो यह स्वप्न देखा है, वह उदार है। इस तरह देवी ने आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायु एवं महाकल्याणकारक स्वप्न देखा है।

32. [4] "As such, O beloved of gods ! It is certain that after passage of nine months and seven and half days Queen Prabhavati will give birth to a son who will bring glory to your clan, as does a flag... and so on up to... a divine child. As your son passes the age of infancy... and so on up to... he will be a brave and courageous king or a self disciplined ascetic. Therefore, O beloved of gods! Queen Prabhavati has indeed seen a bountiful and auspicious dream. The queen has seen a dream that is harbinger of health, contentment, long life, and bountiful."

विवेचन—तीर्थंकर या चक्रवर्ती जब माता के गर्भ में आते हैं, तब उनकी माता चौदह महास्वप्न देखती हैं। उनमें से बारहवें स्वप्न में दो शब्द दिये गये हैं—**विमान** और **भवन**। इसका तात्पर्य यह है कि जो जीव देवलोक से आकर तीर्थंकर के रूप में जन्म लेता है, उसकी माता स्वप्न में 'विमान' देखती है और जो जीव नरक से आकर तीर्थंकर के रूप में जन्म लेता है, उसकी माता स्वप्न में 'भवन' देखती है।

Elaboration—When an Arihant or a Chakravarti is conceived his mother sees fourteen great dreams. The twelfth dream has two alternate words–Vimaan and Bhavan. This indicates that the mother in whose womb a soul descends from divine realm to be born as Tirthankar sees a Vimaan (celestial vehicle) in her dream. And the mother in whose womb a soul ascends from infernal realm to be born as Tirthankar sees a Bhavan (abode) in her dream.

राजा द्वारा स्वप्नपाठकों का सत्कार एवं रानी को स्वप्नफल बताना

FELICITATION OF DREAM-DIVINERS

३३. तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ करयल जाव कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी—'एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव से जहेयं तुब्भे वयह', त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, तं सु. २ सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, स. २ विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, वि. द. २ पडिविसज्जेइ, पडि. २ सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, सी. अ. २ जेणेव पभावई देवी तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थयरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा, तं चेव जाव अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति। इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे। तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे" जाव दिट्ठे त्ति कट्टु पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहइ।

[३३] इसके पश्चात् स्वप्नलक्षण-पाठकों से इस (उपर्युक्त) स्वप्नफल को सुनकर एवं हृदय में अवधारण कर बल राजा अत्यन्त प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हुआ। उसने हाथ जोड़कर यावत् उन स्वप्नलक्षण-पाठकों से इस प्रकार कहा—"हे देवानुप्रियो! जैसा आपने स्वप्नफल बताया, यावत् वह उसी प्रकार है।" इस प्रकार कहकर स्वप्न का अर्थ सम्यक् प्रकार से स्वीकार किया। इसके बाद उन स्वप्नलक्षण-पाठकों को विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम तथा पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और अलंकारों से सत्कारित किया, सम्मानित किया; जीविका के योग्य विपुल प्रीतिदान दिया एवं सबको विदा किया।

तत्पश्चात् बल राजा अपने सिंहासन से उठकर रानी प्रभावती के पास आया और प्रभावती देवी को इष्ट, कान्त यावत् मधुर वचनों से वार्तालाप करता हुआ (स्वप्न-पाठकों से सुने हुए स्वप्न-फल को) इस प्रकार कहने लगा—"देवानुप्रिये! स्वप्नशास्त्र में बयालीस सामान्य स्वप्न और तीस महास्वप्न इस प्रकार बहत्तर स्वप्न बताए हैं। देवानुप्रिये! तीर्थंकरों की माताएँ या चक्रवर्तियों की माताएँ इनमें से किन्हीं १४ महास्वप्नों को देखकर जागती हैं; इत्यादि सब वर्णन पूर्ववत् कहना चाहिए, यावत् माण्डलिकों की माताएँ इनमें से किसी एक महास्वप्न को देखकर जागृत होती हैं। देवानुप्रिये! तुमने भी इन चौदह महास्वप्नों में से एक महास्वप्न देखा है। हे देवी! सचमुच तुमने एक उदार स्वप्न देखा है, जिसके फलस्वरूप तुम यावत् एक पुत्र को जन्म दोगी, जो या तो यावत् राज्याधिपति राजा होगा, अथवा भावितात्मा अनगार होगा। देवानुप्रिये! तुमने एक उदार यावत् मंगलकारक स्वप्न देखा है; इस प्रकार इष्ट, कान्त, प्रिय यावत् मधुर वाणी से उसी बात को दो-तीन बार कहकर प्रभावती देवी की प्रशंसा की।

33. Hearing and understanding about the interpretation of the dream, King Bal became very pleased and contented. He joined his palms and addressed the dream diviners—"O beloved of gods ! You have indeed revealed the truth and reality." With these words he accepted the interpretation with full faith and respect. He felicitated the scholars by giving them food, flowers, cloth, incense, garlands, ornaments, etc [illegible] these things in sufficient quantity to fulfill their needs for [illegible] them farewell.

After this King Bal got up from his throne, approached Queen Prabhavati and in his soft, sweet... and so on up to... and polite voice [said]—"O beloved of gods ! According to our scriptures of dreams there are seventy two types of dreams, out of which forty two are known as common dreams and the remaining thirty as great dreams. O beloved of gods! When an Arihant or a Chakravarti is conceived, his mother sees fourteen of the thirty great dreams. Repeat the description as mentioned earlier... and so on up to... When it is a Mandalik Raja (regional sovereign) in the womb the mother sees any one of these fourteen dreams. O beloved of gods! Of these fourteen dreams you have seen one great dream. O queen! You have, indeed, seen a noble dream. As a result you will give birth to a son... and so on up to... he will be a brave and courageous king or a self disciplined ascetic. As such, O beloved of gods ! You have seen a bountiful and auspicious dream." He repeated these words in sweet voice two three times and praised queen Prabhavati.

३४. तए णं सा पभावई देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. करयल जाव एवं वयासी—एयमेयं देवाणुप्पिया ! जाव तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, तं. पडि. २ बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणि-रयणभत्ति चित्त जाव अब्भुट्ठेइ, अ. २ अतुरियमचवल जाव गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ सयं भवणमणुपविट्ठा।

[३४] बल राजा से उपर्युक्त (स्वप्न-फलरूप) अर्थ सुनकर एवं उस पर विचार करके प्रभावती देवी हर्षित एवं सन्तुष्ट हुई। यावत् हाथ जोड़ कर इस प्रकार बोली—देवानुप्रिय! जैसा आप कहते हैं, वैसा ही है। यावत् इस प्रकार कहकर उसने स्वप्न के अर्थ को भलीभांति स्वीकार किया और बल राजा की अनुमति प्राप्त कर वह अनेक प्रकार के मणिरत्नों की कारीगरी से निर्मित उस भद्रासन से यावत् उठी; और फिर शीघ्रता तथा चपलता से रहित यावत् हंसगति से जहाँ अपना वासभवन था, वहाँ आकर अपने भवन में प्रविष्ट हुई।

34. Hearing and understanding the statement of King Bal, the queen was pleased and contented. Joining her palms, she said—"O beloved of gods! It is, indeed, as you say." She accepted the dream and its interpretation. Then she took leave of King Bal, got up from the seat, ornamented with gems and beads, and returned to her chamber walking slowly like a swan.

३५. तए णं सा पभावई देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं नाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्तेहिं नाइकडुएहिं नाइकसाएहिं नाइअंबिलेहिं नाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोयण-च्छायण-गंध-मल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुण्णदोहला सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिन्नदोहला विणीयदोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

[३५] तत्पश्चात् प्रभावती देवी ने स्नान करके शान्तिकर्म यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित हुई। इसके बाद वह अपने गर्भ का पालन करने लगी। वह न तो अत्यन्त शीतल (ठंडे) और न अत्यन्त उष्ण, न अत्यन्त तिक्त (तीखे) और न अत्यन्त कड़वे, न अत्यन्त कसैले, न अत्यन्त खट्टे और न अत्यन्त मीठे पदार्थ खाती थी परन्तु ऋतु योग्य सुखकारक भोजन आच्छादन (आवास या वस्त्र), गन्ध एवं माला का सेवन करती थी। गर्भ के लिए जो भी हित, परिमित,

पथ्य तथा गर्भपोषक पदार्थ होता, वह उसे ग्रहण करती और उस देश एवं काल के अनुसार आहार करती थी तथा जब वह दोषों से रहित मृदु शय्या एवं आसनों से युक्त सुखद मनोनुकूल विहारभूमि में थी, तब उन्हें प्रशस्त दोहद उत्पन्न हुए। उन दोहदों को सम्मान के साथ पूर्ण किया गया।

किसी ने उन दोहदों की अवमानना नहीं की। वह रोग, शोक, मोह, भय, परित्रास आदि से रहित होकर गर्भ का सुखपूर्वक पोषण करने लगी।

35. Then queen Prabhavati took her bath, performed various auspicious rituals... and so on up to... embellished herself with all ornaments. She started taking proper care required during pregnancy. She stopped eating excessively hot, cold, pungent, bitter, acrid, sour or sweet food. She would eat food and use dresses, perfumes and garlands that suited the season. She ate food that was prescribed during pregnancy (limited, nutritious and healthy) and suited the place and conditions. When she lived thus in joyous and comfortable quarters equipped with fault-free and soft beds and seats, she experienced noble pregnancy-desires (*dohad*). Those desires were fulfilled with due honour. No one neglected those wishes. Avoiding feelings of anxiety, sorrow, humility, fondness, fear, and horror, she spent her pregnancy period happily.

दासियों द्वारा पुत्र-जन्म की बधाई देने पर उन्हें प्रीतिदान

REWARDS TO MAIDS FOR NEWS OF BIRTH OF A SON

३६. तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणि-पायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया।

[३६] तब नव मास और साढ़े सात दिन पूर्ण होने पर प्रभावती देवी ने, सुकुमाल हाथ और पैर वाले, हीन अंगों से रहित, पाँचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाले तथा लक्षण-व्यञ्जन और गुणों से युक्त यावत् चन्द्रमा के समान सौम्य आकृति वाले, कान्त, प्रियदर्शन एवं सुन्दर रूप वाले पुत्र को जन्म दिया।

36. When nine months and seven and a half days passed since the date of conception, queen Prabhavati gave birth to a son with delicate limbs, faultless and perfectly formed body having auspicious signs and marks... and so on up to... like the moon, he will be soothingly radiant, absolutely beautiful, charming, handsome and opulent.

३७. तए णं तीसे पभावईए देवीए अंगपडियारियाओ पभावई देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवा. २ करयल जाव बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, ज. व. २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारयं पयाया, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो, पियं ते भवउ।

[३७] पुत्र जन्म होने पर प्रभावती देवी की अंग-परिचारिकाएँ (सेवा करने वाली दासियाँ) प्रभावती देवी को प्रसूता जानकर बल राजा के पास आईं और हाथ जोड़कर उन्हें जय-विजय शब्दों से बधाया। फिर उन्होंने राजा से इस प्रकार निवेदन किया–हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवी ने नौ महीने और साढ़े सात दिन पूर्ण होने पर यावत् रूपवान बालक को जन्म दिया है। अत: देवानुप्रिय की प्रीति के लिए हम आपसे यह प्रिय समाचार निवेदन करती हैं। यह आपके लिए प्रिय हो।

37. Immediately after the birth of the child the attendant maids, realizing that queen Prabhavati has given birth, rushed to King Bal and after formal greetings congratulated him—"O beloved of gods ! At the due hour Queen Prabhavati has given birth to a son. We bring this good news to you for the pleasure of the beloved of gods. May this add to your happiness."

३८. तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव रोमकूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयइ, ओ. द. २ सेयं रययामयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं च गिण्हइ, भिं. प. २ मत्थए धोवइ, म. धो. २ विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, वि. द. २ सक्कारेइ सम्माणेइ, स. २ पडिविसज्जेइ।

[३८] दासियों से यह प्रिय समाचार सुनकर बल राजा हर्षित एवं सन्तुष्ट हुआ; यावत् मेघ की धारा से सिंचित कदम्बपुष्प के समान रोमांचित हो गया। राजा ने अपने मुकुट को छोड़कर धारण किये हुए शेष सभी अलंकार उन अंग-परिचारिकाओं को पारितोषिक के रूप में दे दिये। फिर सफेद चाँदी का निर्मल जल से भरा हुआ कलश लेकर उन दासियों का मस्तक धोया अर्थात् उन्हें दासीपन से मुक्त स्वतंत्र कर दिया और आजीविका के योग्य विपुल प्रीतिदान देकर उनका सत्कार-सम्मान किया और उन्हें विदा किया।

38. Hearing this news from maids, King Bal was happy and contented... and so on up to... like a Kadamb flower soaked in showers of rain every pore of his body was exhilarated with joy. Other than his crown, the king gave all the ornaments on his body to the maids as

reward. He then took a silver urn filled with pure water and sprinkled it over the heads of the maids (formal sign of freedom from slavery). He also gave them wealth enough to last their lifetime and dismissed them with honour and respect.

विवेचन—अंग-परिचारिकाओं का मस्तक धोने की क्रिया, उनको दासत्व से मुक्त करने की प्रतीक है। जिस दासी का मस्तक धो दिया जाता था, उसे उस युग में दासत्व से मुक्त समझा जाता था। यह प्रक्रिया उस काल की परम्पराओं को परिलक्षित करती है।

Elaboration—The act of sprinkling water on the heads of maids or slave girls is the ritual indicating their freedom from slavery. Mention of this ritual informs us about the slave tradition prevalent during that period.

पुत्र-जन्मोत्सव एवं नामकरण BIRTH AND NAMING CEREMONIES

३९. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को. स. एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे चारगसोहणं करेह, चा. क. २ माणुम्माणवड्ढणं करेह, मा. क. २ हत्थिणाउरं नयरं सब्भितरबाहिरियं आसियसम्मज्जियोवलित्तं जाव करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य, जूवसहस्सं वा, चक्कसहस्सं वा, पूयामहामहिमसक्कारं वा उस्सवेह, ऊ. २ ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।

[३९] इसके पश्चात् बल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और उन्हें इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियो! हस्तिनापुर नगर के कारागार में से कैदियों को मुक्त कर दो और मान (नाप) तथा उन्मान (तौल) में वृद्धि करो। फिर हस्तिनापुर नगर के बाहर और भीतर छिड़काव करो, सफाई करो और शुद्धि कराओ। तत्पश्चात् यूप (जूवा) सहस्र और चक्रसहस्र की पूजा, महिमा और सत्कार करके उत्सव करो। मेरे आदेशानुसार यह सब कार्य करके मुझे पुनः निवेदन करो।

39. King Bal then called his attendants and instructed them—"O beloved of gods! Release all prisoners from the prison in Hastinapur and subsidize prices of essential goods. After that sprinkle water inside and outside the city in order to clean and purify Hastinapur. Then raise thousand pillars and thousand posts, do their ritual worship and launch festivities. Do all this and report back."

४०. तए णं ते कोडुं बियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्ता जाव पच्चप्पिणंति।

[४०] तदनन्तर बल राजा के आदेशानुसार यावत् कार्य करके उन कौटुम्बिक पुरुषों ने आज्ञानुसार कार्य हो जाने का निवेदन किया।

40. The attendants complied with the order and reported back.

४१. तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ तं चेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, प. २ उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेइ।

[४१] इसके बाद बल राजा व्यायामशाला में गये। वहाँ जाकर व्यायाम किया। तत्पश्चात् स्नानादि का वर्णन पूर्ववत् जानें। यावत् बल राजा स्नानगृह से निकले। (नरेश ने दस दिन के लिए) प्रजा से शुल्क तथा कर लेना बन्द कर दिया, भूमि के कर्षण–जोतने का निषेध कर दिया। क्रय, विक्रय का निषेध कर देने से किसी को कुछ मूल्य देना अथवा नाप-तौल करना न रहा। कुटुम्बियों (प्रजा) के घरों में सुभटों का प्रवेश बंद कर दिया। राजदण्ड तथा अपराधियों को दिये गए कुदण्ड का निषेध कर दिया। ऋणियों को ऋण से मुक्त कर दिया। इसके अतिरिक्त प्रधान गणिकाओं तथा नाटक सम्बन्धी पात्रों से युक्त अनेक प्रकार के तालानुचरों द्वारा निरन्तर करताल आदि तथा वादकों द्वारा उन्मुक्त रूप से बजाए जा रहे मृदंगादि वाद्य यंत्रों से वह उत्सव मनाया जाता रहा। यत्र-तत्र बिना कुम्हलाई हुई पुष्पमालाओं से सजावट की गई थी। आमोद-प्रमोद और खेलकूद करने वाले अनेक लोग, सभी नगरजन एवं जनपद के निवासी (इस उत्सव में सम्मिलित थे।) इस प्रकार दस दिनों तक राजा द्वारा पुत्र-जन्म महोत्सव प्रक्रिया (स्थितिपतिता—कुल-मर्यादागत प्रक्रिया) होती रही।

41. King Bal then went to his gymnasium and entered it. The routine of gymnasium followed by that of bathroom should be quoted as before... and so on up to... came out of the bathroom. (For the ten day celebration period, the king) stopped collection of all fees and taxes. He prohibited land tilling and stopped all trading, resulting in all provisions being distributed free. Policemen were prohibited from entering houses of citizens. Minor and major punishments were discontinued; in other words a general amnesty was declared. Public loans were written off. Actors, courtesans and other performing artists of fame freely performed with accompaniment of musical instruments including Mridangs (a specific type of drum) during the celebrations. Every nook and corner was decorated with garlands of fresh flowers. All the people of the city and the state along with a variety of entertainers and acrobats joined the celebrations with joy and enthusiasm. Thus for ten days these festivities continued without a pause.

४२. तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एवं विहरइ।

[४२] इन दस दिनों में जब पुत्र-जन्म महोत्सव की प्रक्रिया (स्थितिपतिता) चल रही थी, तब बल राजा सैकड़ों, हजारों और लाखों रुपयों के खर्च वाले श्रेष्ठ कार्य करता रहा तथा दान और अपनी सम्पत्ति का भाग देता और दिलवाता हुआ सैकड़ों, हजारों और लाखों रुपयों के लाभ (उपहार) देता और स्वीकार करता रहा।

42. While these celebrations were going on, King Bal kept on spending hundreds and thousands and millions of gold coins on altruistic activities. He ceremoniously gave donations as well as accepted presents and gifts of hundreds and thousands and millions of gold coins.

४३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ, तइए दिवसे चंदसूरदंसावणियं करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ। एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते, निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे, संपत्ते-बारसाहदिवसे विउलं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं उवक्खडावेंति, उ. २ जहा सिवो (स. ११ उ. ९) जाव खत्तिए य आमंतेंति, आ. २ तओ पच्छा ण्हाया कय. तं चेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति, स. २ तस्सेव मित्त-नाइ जावराईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जयपज्जयपिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्धणकरं अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति— जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले। तए णं तस्य दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'महब्बले' त्ति।

[४३] इसके बाद उस बालक के माता-पिता ने पहले दिन कुल की परम्परा के अनुसार प्रक्रिया (स्थितिपतिता) की। फिर तीसरे दिन (बालक को) चन्द्र-सूर्य के दर्शन कराए। छठे दिन जागरिका की क्रिया (जागरणरूप उत्सव क्रिया) की। ग्यारह दिन बीत जाने के बाद अशुचि जातककर्म की निवृत्ति की। बारहवाँ दिन आने पर विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम (चतुर्विध आहार) तैयार कराया। फिर (श. ११, उद्देशक ९, सू. ११ में कथित) शिव राजा के समान यावत् समस्त क्षत्रियों अर्थात् ज्ञातिजनों को आमंत्रित किया और भोजन कराया।

फिर स्नान एवं बलिकर्म किए हुए राजा ने उन सभी मित्रों, ज्ञातिजनों आदि का सत्कार-सम्मान किया। तदोपरान्त उन्हीं मित्र, ज्ञातिजन यावत् राजा और क्षत्रियों के समक्ष अपने पितामह, प्रपितामह एवं पिता के प्रपितामह आदि से चली आ रही अनेक पुरुषों की परम्परा से रूढ़, कुल के अनुरूप, कुल के सदृश, कुलरूप सन्तान-तन्तु की वृद्धि करने वाला, गुणयुक्त एवं गुणनिष्पन्न

इस प्रकार नामकरण करते हुए उन्होंने कहा—चूंकि हमारा यह बालक बल राजा का पुत्र और प्रभावती देवी का आत्मज है, इसलिए हमारे इस बालक का नाम 'महाबल' होगा। अतएव उस बालक के माता-पिता ने उसका नाम 'महाबल' रखा।

43. On the first day of the celebrations the parents performed ritual ceremonies according to the family tradition. On the third day they performed the ritual beholding (by the child) of the Sun and the moon. On the sixth night the night long religious chanting (*jaagarika*) was celebrated. On the eleventh day ritual ceremonies for removal of impurities connected with childbirth. On the twelfth day plenty of food, including *ashan, paan, khadya, and svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) was prepared. Then all Kshatriyas (kinsmen) were invited for the feast as king Shiva did. (Chapter-11, Lesson-9, Statement 11).

Following his daily routine of bath and auspicious rituals the king greeted and honoured all the guests, including friends and kinsmen. After this, in presence of all aforesaid friends, kinsmen... and so on up to... kings, and Kshatriyas, following the tradition of his grandfather, great grandfather, father's great grandfather and many generations for giving a name, suitable for the clan, like the clan, extender of the thread of progeny, impregnated with qualities and indicator of qualities, he addressed the assemblage—"As this child is the son of king Bal and queen Prabhavati his name would be Mahabal." Thus the new-born was formally named Mahabal by the parents.

महाबल कुमार का पंच धात्रियों द्वारा पालन तथा तरुणावस्था **CARE OF INFANT MAHABAL**

४४. तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, तं जहा—खीरधाईए एवं जहा दढप्पइण्णे जाव निवाएनिव्वाघातंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।

[४४] इसके बाद उस बालक महाबल कुमार का—क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मण्डनधात्री, क्रीड़नधात्री और अंकधात्री, इन पाँच धात्रियों द्वारा राजप्रश्नीय सूत्र में वर्णित दृढ़प्रतिज्ञ कुमार के समान लालन-पालन होने लगा यावत् वह महाबल कुमार वायु और व्याघात से रहित स्थान में रहे हुए चम्पक वृक्ष के समान अत्यन्त सुखपूर्वक बढ़ने लगा।

44. After that, like prince Dridhapratijna as described in Rajaprashniya *Sutra*, infant Mahabal was put under the care of five nurse-maids, namely *Kshir Dhatri* (milk-nurse-maid), *Mandan Dhatri* (dress- nurse-maid), *Majjan Dhatri* (bath-nurse-maid), *Kridayan Dhatri*

(play-nurse- maid) and *Anka Dhatri* (lap-nurse-maid) ... and so on up to ... Prince Mahabal grew happily as a Champa tree grows undisturbed by the blowing winds in a mountain cave.

४५. तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मा-पियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं वा चंद-सूर-दंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंकमणं वा जेमामणं वा पिंडवद्धणं वा पजंपामणं वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणगं वा उवणयणं वा अन्नाणि य बहूणि गब्भाधाणजम्मणमाइयाइं कोउयाइं करेंति।

[४५] उस महाबल कुमार के माता-पिता ने अपनी कुलमर्यादा के अनुसार (जन्मदिन से लेकर) क्रमशः चन्द्र-सूर्य-दर्शन, जागरण, नामकरण, घुटनों के बल चलाना (परंगामन), पैरों से चलाना (पाद-चंक्रमापन), अन्नप्राशन (अन्न-भोजन का प्रारम्भ करना), ग्रास-वर्द्धन (कौर बढ़ाना), संभाषण (बोलना सिखाना), कर्णवेधन (कान बिंधाना), संवत्सर प्रतिलेखन (वर्षगांठ-मनाना) चोटी रखवाना और उपनयन संस्कार करना, इत्यादि अन्य बहुत-से गर्भाधान, जन्म-महोत्सव आदि कौतुक किये।

45. Following the family tradition, Prince Mahabal's parents performed various ceremonial rituals connected with the initiation of the growing child into new activities one after the other. These included– beholding of the sun and the moon, night vigil (*jaagaran*), naming, toddling (*paramgaaman*), walking on feet (*paad-chakramaapan*), feeding cereals (*annapraashan*), increase morsels (*graas vardhan*), speaking (*sambhaashan*), piercing of earlobes (*karna vedhan*), celebrating birthday (*samvatsar pratilekhan*), making tuft of hair on the center of head, investing with holy-thread, and the like.

४६. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मा-पियरो साइरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणनक्खत्त मुहुत्तंसि एवं जहा दढप्पइण्णो जाव अलंभोग समत्थे जाए यावि होत्था।

[४६] फिर उस महाबल कुमार के माता-पिता ने जब उसे आठ वर्ष से कुछ अधिक उम्र का जाना तब शुभ तिथि, करण, नक्षत्र और मुहूर्त्त में कलाचार्य के पास पढ़ने के लिए भेजा, इत्यादि समस्त वर्णन् दृढ़प्रतिज्ञ कुमार के अनुसार जानना चाहिए यावत् महाबल कुमार भोगों का उपभोग करने में समर्थ (अर्थात् युवा) हुआ।

46. When Mahabal Kumar became eight years old his parents; finding an auspicious day, star, asterism and moment; sent him to a scholar of a wide range of subjects for study, as stated about Prince Dridhapratijna,... and so on up to... he grew fit to enjoy sensual pleasures (grew to be a youth).

४७. तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाव अलंभोगसमत्थं वियाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए कारेंति। अब्भुग्गयमूसिय पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे। तेसि णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं भवणं करेंति अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवे।

[४७] महाबल कुमार को बालभाव से उन्मुक्त यावत् पूरी तरह भोग-समर्थ जानकर माता-पिता ने उसके लिए आठ सर्वश्रेष्ठ प्रासाद बनवाए। वे प्रासाद राजप्रश्नीय सूत्र में उल्लेखित प्रासाद वर्णन के अनुसार, अत्यन्त ऊँचे यावत् प्रतिरूप (सुन्दर) थे। उन आठ श्रेष्ठ प्रासादों के ठीक मध्य में एक महाभवन तैयार करवाया, जो सैकड़ों खंभों पर टिका हुआ था। उसका वर्णन भी राजप्रश्नीय सूत्र के प्रेक्षागृह मण्डप के वर्णन के अनुसार जान लेना चाहिए यावत् वह अत्यन्त सुन्दर था।

47. When prince Mahabal's parents realized that from being juvenile he had matured in every respect and was capable of enjoying sensual pleasures, they got eight beautiful palaces constructed for him. These buildings were tall and eye catching like the description of palace given in *Rajaprashniya Sutra.* One other large palace, at the exact center of these eight palaces, was constructed. This building was raised on hundreds of pillars. The description of this palace should be quoted from the description of *Prekshagrihamandap* as mentioned in *Rajaprashniya Sutra.* ... and so on up to...it was exquisite and alluring.

बलकुमार का आठ कन्याओं के साथ विवाह MARRIAGE OF PRINCE MAHABAL

४८. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मा-पियरो अन्नया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणगण्हाण-गीय-वाइय-पसाहणट्ठंगतिलग-कंकण-अविहववहुवणीयं मंगल-सुजंपिएहि य वरकोउय-मंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउय-मंगलोवयारकयसंतिकम्माणं सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु।

[४८] इसके पश्चात् शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र और मुहूर्त्त में महाबल कुमार ने स्नान किया, फिर न्योछावर करने की क्रिया (बलिकर्म) करके कौतुक-मंगल प्रायश्चित्त किया। तदोपरांत उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया गया। इसके बाद सौभाग्यवती (सधवा) स्त्रियों

के द्वारा अभ्यंगन, स्नान, गीत, वादित, मण्डन (प्रसाधन), आठ अंगों पर तिलक (करना), लाल डोरे के रूप में कंकण (बांधना) तथा दही, अक्षत आदि मंगल एवं मंगलगीत किये गए तत्पश्चात् उत्तम कौतुक एवं मंगलोपचार के रूप में शान्तिकर्म किये गए। फिर महाबल कुमार के माता-पिता ने समान जोड़ी वाली, समान त्वचा वाली, समान उम्र की, समान रूप, लावण्य, यौवन एवं गुणों से युक्त विनीत कौतुक तथा मंगलोपचार की हुई एवं शान्तिकर्म की हुई ऐसी समान राजकुलों से लाई हुई आठ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ एक ही दिन में (महाबल कुमार का) पाणिग्रहण करवाया।

48. On an auspicious day, star, asterism and moment, after his bath and routine of auspicious rituals prince Mahabal was adorned with all his ornaments. After that, married women performed the auspicious ceremonial rituals of *abhyangan* (applying cleansing paste), *snaana* (bath), *geet* (singing songs), *vaadit* (playing musical instruments), *mandan* (decoration), *tilak* (applying auspicious marks on eight parts of body), *kankan* (tying auspicious beads with red thread), sprinkling propitious things including curd and rice, and singing ceremonial songs. The rituals were concluded by evoking beatitude and peace. After all this, parents of prince Mahabal married him to eight princesses, who had undergone the aforesaid ceremonial ritual, on the same day. These young ladies had suitable and matching physique, age, aura, beauty, youth, and virtues and they belonged to families of matching status.

बल राजा एवं महाबल-कुमार की ओर से नववधुओं को प्रीतिदान **MARRIAGE GIFTS TO BRIDES**

४९. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मा-पियरो अयमेयारूवं पीइदाणंदलयंति, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठकुंडलजोए कुंडलजुयप्पवरे, अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पवराइं, एवं वडगजुयलाइं, एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्लजुयलाइं, अट्ठ सिरीओ अट्ठ हिरीओ, एवं धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ; अट्ठ नंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए नियगवरभवणकेऊ, अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसबद्धेणं नाडएणं, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयनामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिपवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं, अट्ठ जुंगाइं जुगप्पवराइं, एवं सिबियाओ, एवं संदमाणिओ, एवं गिल्लीओ थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे संगामिए,

अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एवं चेव दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं वरिसधरे, एवं महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलंबणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कंचणदीवे, एवं चेव तिण्णि वि; अट्ठ सोवण्णिए पंजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि; अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पमए थाले, अट्ठ सुवण्ण-रुप्पमए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ, अट्ठ रुप्पमयाओ पत्तीओ, अट्ठ सुवण्ण-रुप्पमयाओ पत्तीओ; अट्ठ सोवण्णियाइं थासगाइं ३, अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचिआओ.३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ ३, अट्ठ० हंसासणाइं ३, अट्ठ० कोंचासणाइं ३, एवं गरुलासणाइं उन्नयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं, अट्ठ० पउमासणाइं, अट्ठ० उसभासणाइं, अट्ठ० दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ० तेल्लसमुग्गे, जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठ० सरिसवसमुग्गे, अट्ठ० खुज्जाओ जहा उववाइए जाव अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ, अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, अट्ठ करोडियाओ, अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ अट्ठ खीरधाईओ, जाव अट्ठ अंकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ, अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कोट्ठागारीओ, अट्ठ दवकारीओ, अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ, अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधारिणीओ, अट्ठ पाणिधारिणीओ, अट्ठ बलिकारिओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भिंतरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अन्नं वा सुबहुं हिरण्णं वा, सुवण्णं वा, कंसं वा दूसं वा, विउलधणकणग जाव संतसारसावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं परिभोत्तुं पकामं परिभाएउं।

[४९] विवाहोपरान्त उस महाबल कुमार के माता-पिता ने (अपनी आठों पुत्रवधुओं के लिए) इस प्रकार का प्रीतिदान दिया। यथा—आठ कोटि हिरण्य (चाँदी के सिक्के), आठ कोटि स्वर्ण मुद्राएँ (सोनैया), आठ श्रेष्ठ मुकट, आठ श्रेष्ठ कुण्डलयुगल, आठ उत्तम हार, आठ उत्तम अर्द्धहार, आठ उत्तम एकावली हार, आठ मुक्तावली हार, आठ कनकावली हार, आठ रत्नावली हार, आठ उत्तम कड़ों की जोड़ी, आठ बाजूबन्दों की जोड़ी, आठ श्रेष्ठ रेशमी वस्त्रयुगल, आठ उत्तम सूती वस्त्रयुगल, आठ टसर के वस्त्रयुगल, आठ पट्टयुगल, आठ दुकूलयुगल, आठ श्री, आठ ह्री, आठ धी, आठ कीर्ति, आठ बुद्धि एवं आठ लक्ष्मी देवियों की प्रतिमा, आठ नन्द, आठ भद्र,

आठ उत्तम तल (ताड़) वृक्ष, ये सब रत्नमय जानने चाहिए। अपने भवन में केतु (चिह्न) रूप आठ उत्तम ध्वज, दस हजार गायों का एक व्रज ऐसे आठ उत्तम व्रज (गोकुल), बत्तीस मनुष्यों द्वारा किया जाने वाला एक नाटक होता है, ऐसे आठ उत्तम नाटक, आठ उत्तम अश्व, ये सब रत्नमय जानने चाहिए। भाण्डागार (श्रीगृह) के समान आठ रत्नमय उत्तमोत्तम हाथी, भाण्डागार (श्रीधर के) समान आठ उत्तम यान, आठ उत्तम युग्म (एक प्रकार का वाहन), आठ शिविकाएँ, आठ स्यन्दमानिका इसी प्रकार आठ गिल्ली (हाथी की अम्बाड़ी), आठ थिल्ली (घोड़े का पलाण--काठी), आठ श्रेष्ठ विकट (खुले) यान, आठ पारियानिक (क्रीड़ा करने के) रथ, आठ संग्रामिक (युद्ध के समय उपयोगी) रथ, आठ उत्तम अश्व, आठ उत्तम हाथी, दस हजार कुल-परिवारों का एक ग्राम होता है, ऐसे आठ उत्तम ग्राम; आठ उत्तम दास, एवं आठ उत्तम दासियाँ, आठ उत्तम किंकर, आठ उत्तम कंचुकी (द्वाररक्षक), आठ वर्षधर (अन्त:पुर रक्षक, खोजा), आठ महत्तरक (अन्त:पुर के कार्य का विचार करने वाले), आठ सोने के, आठ चांदी के और आठ सोने-चांदी के अवलम्बन दीपक (लटकने वाले दीपक--हण्डियाँ), आठ सोने के, आठ चांदी के और आठ सोने-चांदी के उत्कंचन दीपक (दण्डयुक्त दीपक-मशाल), इसी प्रकार सोना, चांदी और सोना-चांदी, इन तीनों प्रकार के आठ पंजरदीपक, सोना, चांदी और सोने-चांदी के आठ थाल, आठ थालियाँ, आठ स्थासक (तश्तरियाँ), आठ मल्लक (कटोरे), आठ तलिका (रकाबियाँ), आठ कलाचिका (चम्मच), आठ तापिकाहस्तक (संडासियाँ), आठ तवे, आठ पादपीठ (पैर रखने के बाजोट), आठ भीषिका (आसन-विशेष), आठ करोटिका (लोटा), आठ पलंग, आठ प्रतिशय्याएँ (छोटे पलंग), आठ हंसासन, आठ क्रौंचासन, आठ गरुड़ासन, आठ उन्नतासन, आठ अवनतासन, आठ दीर्घासन, आठ भद्रासन, आठ पक्षासन, आठ मकरासन, आठ पद्मासन, आठ दिक्स्वस्तिकासन, आठ तेल के डिब्बे, इत्यादि सभी राजप्रश्नीय सूत्र के अनुसार जानना चाहिए; यावत् आठ सर्षप के डिब्बे, आठ कुब्जा दासियाँ आदि सभी औपपातिक सूत्र के अनुसार जानना चाहिए; यावत् आठ पारस देश की दासियाँ, आठ छत्र, आठ छत्रधारिणी दासियाँ, आठ चामर, आठ चामरधारिणी दासियाँ, आठ पंखे, आठ पंखाधारिणी दासियाँ, आठ करोटिका (ताम्बूल के करण्डिए), आठ करोटिका धारिणी दासियाँ, आठ क्षीरधात्रियाँ (दूध पिलाने वाली धाय), यावत् आठ अंकधात्रियां, आठ अंगमर्दिका (अल्प मालिश करने वाली दासियाँ), आठ उन्मर्दिका (अधिक मर्दन करने वाली दासियाँ), आठ स्नान कराने वाली दासियाँ, आठ अलंकार पहनाने वाली दासियाँ, आठ चन्दन घिसने वाली दासियाँ, आठ ताम्बूल चूर्ण पीसने वाली, आठ कोष्ठागार की रक्षा करने वाली, आठ परिहास करने वाली, आठ सभा में पास रहने वाली, आठ नाटक करने वाली, आठ कौटुम्बिक (साथ रहने वाली), आठ रसोई बनाने वाली, आठ भण्डार की रक्षा करने वाली, आठ तरुणियाँ, आठ पुष्प धारण करने वाली (मालिन), आठ पानी भरने वाली, आठ बलि करने वाली, आठ शय्या बिछाने वाली, आठ आभ्यन्तर और बाह्य प्रतिहारियाँ, आठ माला बनाने वाली और आठ-आठ आटा आदि (पेषण) पीसने वाली दासियाँ दीं। इसके

अतिरिक्त बहुत-सा हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, वस्त्र एवं विपुल धन, कनक, यावत् सारभूत द्रव्य दिया। जो सात कुलवंशों (पीढ़ियों) तक इच्छापूर्वक दान देने, उपभोग करने और बाँटने के लिए पर्याप्त था।

49. After the marriage ceremony, parents of Prince Mahabal gave enormous wealth as gift to their eight daughters-in-law. The list includes—Eighty million silver(coins), eighty million gold (coins), eight best crowns, eight best pairs of earrings, eight best necklaces, eight best half-necklaces, eight best single-line bead necklaces, eight pearl necklaces, eight golden beads necklaces, eight gemstone beads necklaces, eight best pairs bracelets, eight pairs of armlets, eight best suits of silken dress, eight best suits of cotton dress, eight best suits of Tusser-silk dress, eight pairs of best shawls (*patt*), and eight best suits of extra fine silk (*dukool*). Also included were eight idols each of goddesses Shree, Hri, Dhee, Kirti, Buddhi, and Laxmi; eight images of Nand, eight images of Bhadra and eight images of best palm trees; these all images were made of gem stones. The premises had eight best flags as ensigns, eight best cattle-yards (*vraj or gokul*) with ten thousand cows each, eight best dramatic teams with thirty-two actors each, eight best horses of gem stones, eight best elephants as large as silo, eight best wagons as large as silo, eight best *yugmas* (a type of vehicle), eight *shivikas* (a kind of palanquin), eight *syandamaanikas* (a kind of palanquin), eight *gilli* (*ambari* or howdah with canopy), eight *thilli* (saddle), eight best *vikat* (open wagon), eight *paariyaanik* (chariots for play), eight chariots for battle, eight best horses, eight best elephants, eight villages each having ten thousand families, eight best slaves, eight best maids, eight best servants, eight best *kanchuki* (door-keepers), eight best *varshadhars* (guards of ladies quarters, generally eunuchs), and eight *mahattarak* (managers of ladies quarters). Also included were eight *avalamban deepak* (hanging lamps) each made of gold, silver and gold-silver; eight *utkanchan deepak* (lamps with stands) each made of gold, silver and gold-silver; and eight *panjar deepak* (lamps with shades) each made of gold, silver and gold-silver. Other things included were--eight *thaali* (full plate), eight *sthaasak* (half plate), eight *mallak* (bowl), eight *talika* (small plate), eight *kalachika* (spoon), eight *taapikahastak* (pincer), all made of gold, silver and gold-silver; eight platens, eight foot-rests, eight *bheeshika* (cushions), eight *karotika* (lota or spherical jug), eight beds, eight *pratishaiya* (smaller beds), eight *hamsaasan*, eight *kraunchaasan*, eight *gardudaasan*, eight

unnataasan, eight *avanataasan*, eight *deerghaasan*, eight *bhadraasan*, eight *pakshaasan*, eight *makaraasan*, eight *padmaasan*, eight *dikswastikaasan*, (all seats of different designs) and eight oil cans etc. as mentioned in *Rajaprashniya Sutra*... and so on up to... eight mustard pots, eight hunchback maids etc. as mentioned in *Aupapatik Sutra*... and so on up to... eight maids from Persia; eight umbrellas with maids to carry, eight whisks with maids to carry, eight fans with maids to carry, eight beetle-boxes with maids to carry, eight milk serving maids... and so on up to... eight nurses to hold (*ankadhaatri*), eight female masseurs for light massage (*angamardika*), eight female masseurs for heavy massage (*unmardika*), eight maids to help bathing, eight maids to help wearing ornaments, eight maids for grinding sandalwood, eight maids for grinding betels, and eight storekeeping maids. Besides these other maids were provided for different duties including–eight jester maids, eight to give company in assembly, eight for dramatic performances, eight intimate ones, eight cooks, eight store guards, eight young girls, eight for carrying flowers, eight for water storing, eight cooks for ritual offerings, eight for making bed, eight inside and outside door-keepers, eight garland makers, and eight for grinding flour from grains. Besides these, great wealth including silver, gold, bronze, dresses and enormous wealth and other valuables were also given. The extant of gifts was so enormous that it was enough to enjoy, distribute, use, and donate for seven generations.

५०. तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ, एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अन्नं वा सुबहुं हिरण्णं वा जाव परिभाएउं।

[५०] इसी प्रकार महाबल कुमार ने भी प्रत्येक भार्या (पत्नी) को एक-एक हिरण्यकोटि, एक-एक स्वर्णकोटि, एक-एक उत्तम मुकुट, इत्यादि पूर्वोक्त सभी वस्तुएँ दीं यावत् सभी को एक-एक पेषणकारी (पीसने वाली) दासी दी तथा बहुत-सा हिरण्य, सुवर्ण आदि दिया, जो यावत् विभाजन करने के लिए पर्याप्त था।

50. Prince Mahabal too gave ten million silver coins, ten million gold coins, one beautiful crown and all aforesaid gifts... and so on up to... one maid for grinding flour from grains. Besides these, great wealth including silver, gold,... and so on up to... that it was enough to enjoy, distribute, use, and donate for seven generations.

५१. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली (स. ९ उ. ३३) जाव विहरइ।

[५१] तत्पश्चात् वह महाबल कुमार (श, ९, उ. ३३ में कथित) जमालि कुमार के वर्णन के अनुसार उत्तम प्रासाद में अपूर्व भोग भोगता हुआ जीवन बिताने लगा।

51. Then that prince Mahabal lived in that great palace enjoying unprecedented comforts and pleasures as described about prince Jamali (Chapter-9, Lesson-33).

धर्मघोष अनगार का पदार्पण, जनता द्वारा पर्युपासना

ARRIVAL OF ASCETIC DHARMAGHOSH

५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने, वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ, ओ. २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विरहइ।

[५२] उस काल और उस समय में तेरहवें तीर्थंकर अर्हन्त विमलनाथ के प्रपौत्र (प्रशिष्य-शिष्यानुशिष्य) धर्मघोष नामक अनगार थे। वे जातिसम्पन्न इत्यादि (राजप्रश्नीय सूत्र में दिये अनुसार) केशी स्वामी के समान थे, यावत् पाँच सौ अनगारों के परिवार के साथ अनुक्रम से एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करते हुए हस्तिनापुर नगर के सहस्राम्रवन उद्यान में पधारे और यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके संयम और तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

52. During that period of time lived ascetic Dharmaghosh who was a great-grand-disciple of the thirteenth Tirthankar Arhant Vimal Naath. He belonged to a noble clan etc. (as mentioned in *Rajaprashniya Sutra*) and was like Keshi Shraman. ... and so on up to ...With a family of five hundred ascetics, moving from one village to another, he arrived in Sahasramravan garden in Hastinapur city. Seeking suitable place and equipment he camped there enkindling his soul with his practices of penance and discipline.

५३. तए णं हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिय जाव परिसा पज्जुवासइ।

[५३] तब हस्तिनापुर नगर के शृंगाटक, त्रिक यावत् राजमार्गों पर बहुत-से लोग मुनि-आगमन की परस्पर चर्चा करने लगे यावत् जनता पर्युपासना करने लगी।

53. Then many citizens discussed about the arrival of the ascetic on squares, crossings... and so on up to... main roads of Hastinapur city... and so on up to... people started his worship.

महाबलकुमार द्वारा दीक्षाग्रहण INITIATION OF PRINCE MAHABAL

५४. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली (स. ९ उ. ३३) तहेव चिंता, तहेव कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाइ, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ। एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे सेसं तं चेव जाव सो वि तहेव रहवरेणं निग्गच्छइ। धम्मकहा जहा केसिसामिस्स। सो वि तहेव (स. ९ उ. ३३) अम्मापियरं आपुच्छइ, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए तहेव वुत्तपडिवुत्तिया (स. ९ उ. ३३) नवरं इमाओ य ते जाया! विउलरायकुलबालियाओ कला. सेसं तं चेव जाव ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए।

[५४] इसके बाद उस महाबल कुमार ने (धर्मघोष मुनि के दर्शन को जाते हुए) बहुत-से मनुष्यों का कोलाहल एवं चर्चा सुनकर (श. ९ उ. ३३ में उल्लिखित) जमालि कुमार के समान विचार करते हुए अपने कंचुकी पुरुष को बुलाकर (इसका) कारण पूछा। तब कंचुकी पुरुष ने (पूर्ववत्) हाथ जोड़कर महाबल कुमार से निवेदन किया—देवानुप्रिय! विमलनाथ तीर्थंकर के प्रपौत्र शिष्य श्री धर्मघोष अनगार यहाँ पधारे हैं इत्यादि सब वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए यावत् महाबल कुमार, जमालि कुमार की तरह (पूर्ववत्) उत्तम रथ पर बैठा और वहाँ पहुँचकर मुनि को वन्दना करने लगा। धर्मघोष अनगार ने भी केशी स्वामी के समान धर्मोपदेश (धर्मकथा) दिया जिसे सुनकर महाबल कुमार को भी (श. ९, उ. ३३ में कथित वर्णन के अनुसार) जमालि कुमार के समान वैराग्य उत्पन्न हुआ। घर आकर महाबल कुमार ने उसी प्रकार (जमालि कुमार की तरह) माता-पिता से अनगार धर्म में प्रव्रजित होने की अनुमति माँगते हुए कहा—हे माता-पिता! धर्मघोष अनगार से मैं मुण्डित होकर आगारवास (गृहवास) से अनगार धर्म में प्रव्रजित होना चाहता हूँ। (श. ९, उ. ३३ में वर्णित वर्णन के अनुसार) जमालि कुमार के समान महाबल कुमार और उसके माता-पिता में उत्तर-प्रत्युत्तर हुए। माता-पिता ने महाबल कुमार से कहा—हे पुत्र! यह विपुल धन और उत्तम राजकुल में उत्पन्न हुई अनेक कलाओं में कुशल आठ कुलबालाओं को छोड़कर तुम क्यों दीक्षा ले रहे हो? इत्यादि शेष वर्णन पूर्ववत् है यावत् माता-पिता ने अनिच्छापूर्वक महाबल कुमार से इस प्रकार कहा—"हे पुत्र! हम एक दिन के लिए तुम्हारी राज्य-लक्ष्मी (राजा के रूप में तुम्हें) देखना चाहते हैं।"

54. Looking at the large gathering and hearing the noise (of people going to pay homage to ascetic Dharmaghosh), prince Mahabal thought like prince Jamali, called his attendant and asked the reason (Chapter-9, Lesson-33). The attendant joined his palms and said to prince Mahabal–"Beloved of gods! Ascetic Dharmaghosh, a great-grand-disciple of Tirthankar Vimal Naath has arrived here. Description as earlier... and so on up to... prince Mahabal, like prince Jamali, boarded a good chariot, came to the ascetic and paid homage. Like Keshi Swami, ascetic Dharmaghosh too gave his religious discourse. Hearing that, prince Mahabal also got detached like prince Jamali (as mentioned in Chapter-9, Lesson-33). Returning home and following the example (of Jamali) he sought permission for ascetic initiation from his parents saying—"O mother and father! I want to get initiated by ascetic Dharmaghosh into his ascetic order after renouncing the worldly life and getting my head tonsured." Like Jamali, prince Mahabal too had a dialogue with his parents (Chapter-9, Lesson-33). His parents said—"Renouncing all this enormous wealth and eight beautiful and virtuous girls from best royal families, why do you want to get initiated?" etc. as described earlier (Chapter-9, Lesson-33)... and so on up to... The parents unwillingly gave permission adding—"But, Son ! May be just for a day, we want to see you in regal grandeur (as King)."

५५. तए णं से महब्बले कुमारे अम्मा-पियराणवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

[५५] माता-पिता की इस बात को सुनकर महाबल कुमार मौन रहे।

55. Hearing these words from his parents, prince Mahabal remained silent (gave consent).

५६. तए णं से बले राया। कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स (स. ११ उ. ९) तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयलपरि. महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति, जएणं विजएणं वद्धावित्ता जाव एवं वयासी—भण जाया! किं देमो? किं पयच्छामो? सेसं जहा जमालिस्स तहेव, जाव (स. ९ उ. ३३)—

[५६] तत्पश्चात् बल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और जिस प्रकार (श. ११, उ. ९ में) शिवभद्र के राज्याभिषेक का वर्णन है, उसी प्रकार यहाँ भी महाबल कुमार के राज्याभिषेक का वर्णन समझ लेना चाहिए, यावत् महाबल का राज्याभिषेक किया, फिर हाथ जोड़कर महाबल कुमार को जय-विजय शब्दों से बधाया तथा इस प्रकार कहा—हे पुत्र! कहो,

हम तुम्हें क्या दें ? तुम्हारे लिए हम क्या करें ? इत्यादि वर्णन (श. ९, उ. ३३ में कथित) जमालि के समान जानना चाहिए; यावत् महाबल कुमार ने धर्मघोष अनगार से प्रव्रज्या ग्रहण कर ली।

56. Then King Bal called his attendants and gave instructions, like the coronation of Shivabhadra (Chapter-11, lesson-9). Regarding the coronation of prince Mahabal, the same description should be repeated here... and so on up to... King Bal concluded the coronation ceremony, joining palms felicitated prince Mahabal with hails of victory, and said—"Son! Tell me what should I give you? What can I do for you? The description should follow the pattern of Jamali (Chapter-9, Lesson-33)... and so on up to... prince Mahabal got initiated by ascetic Dharmaghosh.

महाबल अनगार का अध्ययन, तपस्या, समाधिमरण एवं स्वर्गलोक प्राप्ति

STUDY, AUSTERITIES, DEATH AND REINCARNATION OF ASCETIC MAHABAL

५७. तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, बहु. पा. २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए, आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

[५७] दीक्षा ग्रहण के पश्चात् महाबल अनगार ने धर्मघोष अनगार के पास सामायिक आदि चौदह पूर्वों का अध्ययन किया तथा उपवास (चतुर्थभक्त), बेला (छट्ठ), तेला (अट्ठम) आदि बहुत-से विचित्र तपःकर्मों से आत्मा को भावित करते हुए पूरे बारह वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया और अन्त में मासिक संलेखना से साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना-प्रतिक्रमण कर समाधिपूर्वक काल के अवसर पर काल करके ऊर्ध्वलोक में चन्द्र और सूर्य से भी ऊपर बहुत दूर, अम्बड़ के समान यावत् ब्रह्मलोक कल्प में देवरूप में उत्पन्न हुए। वहाँ कितने ही देवों की दस सागरोपम की स्थिति कही गई है। तदानुसार महाबल देव की भी दस सागरोपम की स्थिति कही गई है।

57. After getting initiated, ascetic Mahabal studied fourteen *Purvas* (subtle canons) including *Saamaayik*. He observed the ascetic conduct for twelve years enkindling his soul by observing various rigorous austerities including fasting for one, two, and three days. In the end he took the ultimate vow of a month long fast and breathed his last in

meditation after performing critical review of his deeds. ... and so on up to... Like Ambad, he got reborn in Brahmalok Kalp, a divine realm much higher than the sun and the moon. There the life-span of many gods is said to be ten Sagaropam (a metaphoric unit of time); accordingly the life span of god Mahabal was also said to be ten Sagaropam.

सागरोपम की स्थिति का क्षयोपचय तथा सुदर्शन के पूर्वभव का रहस्योद्घाटन

EROSION AND DEPLETION OF SPAN OF SAGAROPAM

५८. से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोए कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुमत्ताए पच्चायाए। तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णायपरिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! इयाणिं करेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ 'अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं खएइ वा, अवचएइ वा'।

[५८] हे सुदर्शन! वही महाबल का जीव तुम (सुदर्शन) हो। ब्रह्मलोक कल्प में दस सागरोपम तक दिव्य भोगों को भोगते हुए वहाँ की स्थिति पूर्ण करके तथा वहाँ के आयुष्य, स्थिति और भव का क्षय होने पर वहाँ से च्यवकर तुम सीधे इस भरतक्षेत्र के वाणिज्यग्राम-नगर में, श्रेष्ठि कुल में पुत्र रूप में उत्पन्न हुए हो।

तत्पश्चात् हे सुदर्शन! बालभाव से मुक्त होकर तुम विज्ञ और परिणतवय वाले हुए, यौवन अवस्था प्राप्त होने पर तुमने तथारूप स्थविरों से केवलि-प्ररूपित धर्म सुना। वह धर्म तुम्हें इच्छित प्रतीच्छित (स्वीकृत) और रुचिकर हुआ। हे सुदर्शन! इस समय भी तुम जो कर रहे हो, अच्छा कर रहे हो।

इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि इन पल्योपम और सागरोपम का क्षय और अपचय होता है।

58. O Sudarshan! You are that soul of Mahabal. After enjoying divine pleasures in Brahmalok Kalp, completing the earned stay there and on erosion of the life-span and end of life there, you have descended and got reborn as a son in a merchant family in Vanijyagram city in this Bharat Area.

After that, O Sudarshan! Rising above your state of ignorance, you grew to be a wise youth. In your youthful age you listened to the religion propagated by omniscients from senior ascetics. You liked and desired

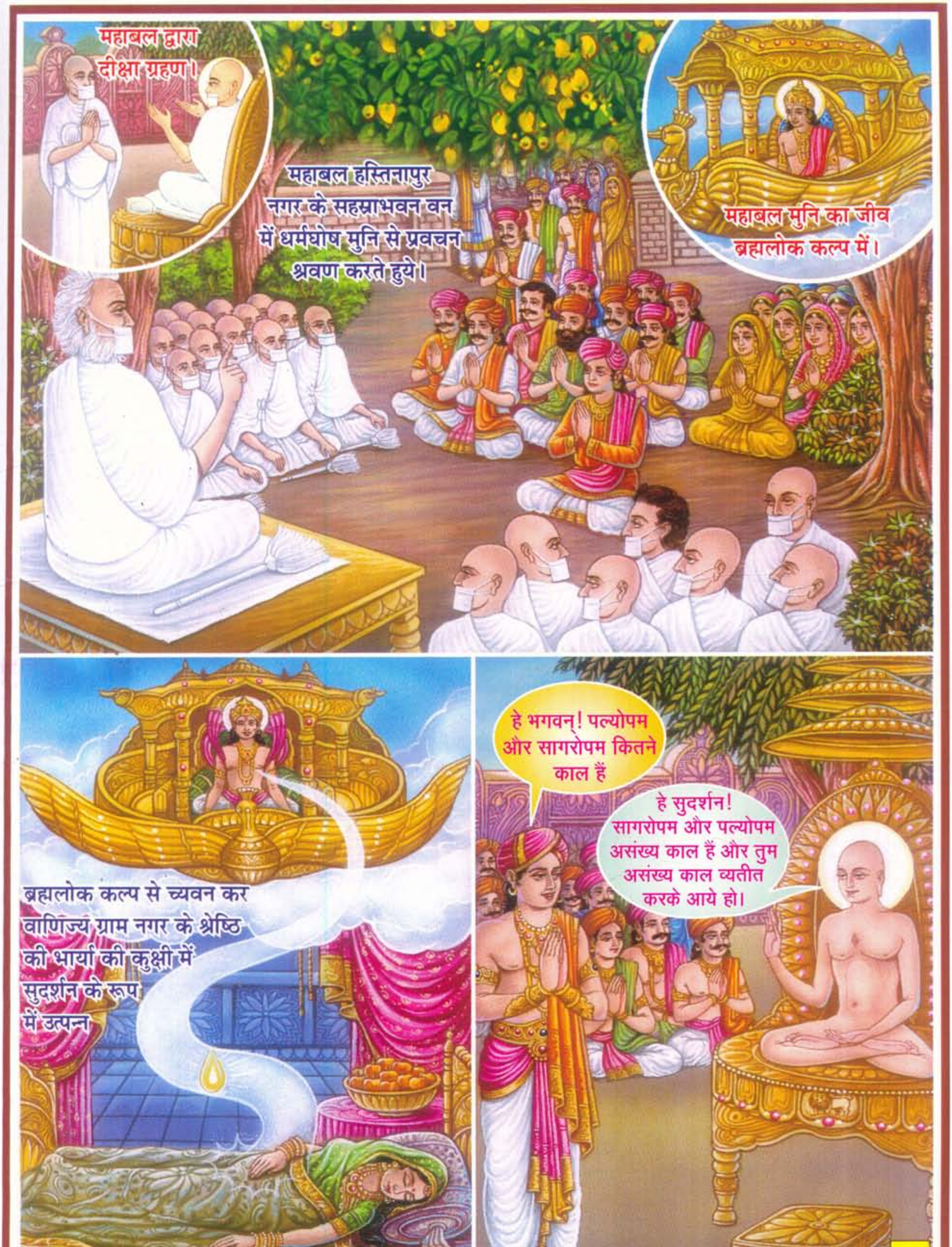
महाबल द्वारा दीक्षा ग्रहण।
महाबल हस्तिनापुर नगर के सहस्राभवन वन में धर्मघोष मुनि से प्रवचन श्रवण करते हुये।
महाबल मुनि का जीव ब्रह्मलोक कल्प में।
ब्रह्मलोक कल्प से च्यवन कर वाणिज्य ग्राम नगर के श्रेष्ठि की भार्या की कुक्षी में सुदर्शन के रूप में उत्पन्न
हे भगवन्! पल्योपम और सागरोपम कितने काल हैं
हे सुदर्शन! सागरोपम और पल्योपम असंख्य काल हैं और तुम असंख्य काल व्यतीत करके आये हो।

चित्र-परिचय 8

Illustration No. 8

महाबल चरित्र

एक बार नगर के बाहर उद्यान में आचार्य धर्मघोष पधारे। महाबल कुमार भी अपनी आठ रानियों के साथ धर्मोपदेश सुनने गया। उपदेश श्रवण कर उसे वैराग्य उत्पन्न हुआ और उसने आचार्य धर्मघोष से दीक्षा ग्रहण कर ली। महाबल मुनि ने स्वाध्याय, तप आदि करते हुए 14 पूर्वों का ज्ञान प्राप्त किया और बेले-तेले की तपस्या करके बारह वर्ष तक कठोर श्रमणचर्या का पालन किया। अन्त समय में संलेखना-संथारा पूर्वक प्राण त्यागकर वे ब्रह्म देवलोक में दस सागरोपम आयु वाले महाऋद्धिक देव बने। दस सागरोपम की स्थिति पूर्ण कर वहाँ से च्यवकर वाणिज्यग्राम नगर के श्रेष्ठि के यहाँ 'सुदर्शन' के रूप में उत्पन्न हुए।

सुदर्शन श्रमणोपासक द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान ने आगे कहा— "हे सुदर्शन! तुम स्वर्गलोक में दस सागरोपम की स्थिति का क्षय करके आये हो और यहाँ जन्मे यौवनवय को प्राप्त हुये हो, इसलिए ऐसा कहा जाता है कि सागरोपम-पल्योपम का भी क्षय-अपचय होता है।"

—शतक 11, उ. 11

MAHABAL'S STORY

Once, Acharya Dharmaghosh came to the garden outside the city. Prince Mahabal also went with his eight wives to the discourse. On hearing the discourse he got detached and then got initiated by the Acharya. After getting initiated, ascetic Mahabal studied fourteen *Purvas* (subtle canons). He observed the ascetic conduct for twelve years and observed rigorous austerities of fasting for one, two, and three days. In the end he took the ultimate vow of a month long fast and breathed his last. He got reborn in Brahmalok Kalp. After completing the life-span of ten Sagaropam he descended and was born as Sudarshan the son of a merchant in Vanijyagram.

Answering Sudarshan's question Bhagavan said—"O Sudarshan! You are that soul of Mahabal. After enjoying divine pleasures in Brahmalok Kalp, completing the life span of ten Sagaropam you have got reborn here. That is why it is said that these Palyopam and Sagaropam get diminished or reduced.

—Shatak-10, lesson-11

that religion. O Sudarshan! What you are doing at present is the right thing. That is why it is said that these Palyopam and Sagaropam get diminished or reduced.

५९. तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं, तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णीपुव्वजाईसरणे समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ।

[५९] तदोपरान्त श्रमण भगवान महावीर से यह बात (धर्मफल-सूचक) सुनकर और हृदय में धारण कर सुदर्शन सेठ को शुभ अध्यवसाय, शुभ परिणाम और विशुद्ध होती हुई लेश्याओं से तदावरणीय कर्मों का क्षयोपशम हुआ और ईहा, अपोह, मार्गणा और गवेषणा करते हुए संज्ञीपूर्व जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ, जिससे वह (भगवान द्वारा कहे गए) इस अर्थ (अपने पूर्व भव की बात) को सम्यक् रूप से जानने लगा।

59. After hearing and understanding these words from Shraman Bhagavan Mahavir, merchant Sudarshan underwent the process of destruction-cum-pacification of related veiling *karma*s through noble endeavour, noble thoughts and gradual purification of soul complexions (*leshya*s). Finally he gained sentient knowledge of his past births (*Jatismaran jnana*) and he rightly understood the meaning of what was said (by Bhagavan Mahavir).

६०. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भयवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे आणंदंसुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, आ. क. २ वंदइ नमंसइ, वं. २ एवं वयासी—एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ सेसं जहा उसभदत्तस्स (स. ९ उ. ३३) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ। सेसं तं चेव।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ एक्कारसमे सए एक्कारसमो उद्देसो समत्तो॥

[६०] (जातिस्मरण ज्ञान होने पर) श्रमण भगवान महावीर द्वारा पूर्वभव का स्मरण करा देने से सुदर्शन श्रेष्ठी को दुगुनी श्रद्धा और संवेग उत्पन्न हुआ। उसके नेत्र आनन्दाश्रुओं से भर गए। इसके बाद वह श्रमण भगवान महावीर स्वामी को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा एवं वन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार बोला—भगवन्! यावत् आप जैसा कहते हैं, वैसा ही है, सत्य है, यथार्थ है। इस प्रकार कहकर सुदर्शन सेठ उत्तर-पूर्व दिशा में गया, इत्यादि अवशिष्ट सारा

वर्णन (श. ९, उ. ३३ में वर्णित) ऋषभदत्त की तरह जानना चाहिए, यावत् सुदर्शन श्रेष्ठी ने प्रव्रज्या अंगीकार की। चौदह पूर्वों का अध्ययन किया, सम्पूर्ण बारह वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया; यावत् सर्व दुःखों से रहित हुए। शेष सब वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है; ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ ग्यारहवाँ शतक : ग्यारहवाँ उद्देशक समाप्त॥

60. When merchant Sudarshan recalled the story of his past birth with the help of Shraman Bhagavan Mahavir's words, his faith and fervor (for liberation) doubled. His eyes brimmed with tears of joy. He then went around Shraman Bhagavan Mahavir thrice clockwise, paid homage and said—"*Bhante !* It is exactly as you have stated; it is true; it is the realty." Then he went in the northeast direction; here repeat the description as mentioned about Rishabh-datt (Chapter-9, Lesson-33)... and so on up to... Sudarshan merchant got initiated. He studied the eleven limbs (*Anga*) of the canon; spent twelve years as an ascetic... and so on up to... he ended all miseries. Remaining details are as earlier.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—उपरोक्त दो सूत्रों में मुख्यतया दो घटनाओं का वर्णन किया गया है—पहला तो अपने पूर्वभव की कथा सुनकर सुदर्शन श्रेष्ठी को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया, और दूसरा उसकी श्रद्धा और संवेग में दुगुनी वृद्धि हुई। भगवान को वन्दना नमस्कार करके उसने ऋषभदत्त की तरह भगवान से प्रव्रज्या ग्रहण की, फिर १४ पूर्वों का अध्ययन किया, तत्पश्चात् तपश्चर्या करते हुए, पूरे बारह वर्ष तक श्रमणत्व का पालन कर अन्तिम समय में संलेखना संथारा किया। फिर सर्वकर्मों से मुक्त होकर सिद्ध-बुद्ध बन गए।

Elaboration—The aforesaid two statements relate two important turns in the life of Sudarshan. First, he gained knowledge of his past births (*Jatismaran jnana*) after hearing the story from Bhagavan Mahavir. Second, his faith and fervor (for liberation) doubled. He paid homage to Bhagavan and got initiated. He studied the eleven limbs (*Anga*) of the canon, spent twelve years as an ascetic and observed the ultimate vow (*Sanlekhana*) to shed all *karma*s and get liberated (*Siddha*).

● END OF THE ELEVENTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER ●

बारसमो उद्देसओ : आलभिया
बारहवाँ उद्देशक : आलभिका
DWADASHAM UDDESHAK (TWELFTH LESSON) : AALABHIYA

श्रमणोपासक ऋषिभद्र पुत्र की धर्म चर्चा, उसके प्रति अश्रद्धा

RELIGIOUS DISCUSSION AND DISBELIEF OF RISHIBHADRAPUTRA

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नयरी होत्था। वण्णओ। संखवणे चेइए। वण्णओ।

[१] उस काल और उस समय में आलभिका नाम की नगरी थी। (उसका वर्णन औपपातिक सूत्र में बताई नगरी वर्णन के अनुसार समझना चाहिए।) वहाँ शंखवन नामक उद्यान था। (उसका वर्णन भी औपपातिक सूत्र के अनुसार समझना चाहिए।)

1. During that period of time there was a city called Aalabhiya. Description (like the description of city in *Aupapatik Sutra*). Outside the city there was a *chaitya* (temple complex with garden) called Shankhavan. Description (as in *Aupapatik Sutra*).

२. तत्थ णं आलभियाए नयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति अड्डा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति।

[२] उस आलभिका नगरी में ऋषिभद्र पुत्र जैसे बहुत-से श्रमणोपासक रहते थे। वे आढ्य यावत् अपरिभूत थे। वे जीव और अजीव (आदि तत्त्वों) के ज्ञाता थे, यावत् विचरण (जीवनयापन) करते थे।

2. In that Aalabhiya city lived many *shramanopasaks* (followers of *Shramans* or Jain ascetics) including Rishibhadraputra. They were very rich (*aadhya*)... and so on up to... insuperable (*aparibhoot*). They understood the fundamental entities including soul and matter... and so on up to... spent their life enkindling (*bhaavit*) their souls (with ascetic religion and austerities).

३. तए णं तेसिं समणोवासयाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविट्ठाणं सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—

[प्र.] देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?

[३] किसी समय एक दिन एक स्थान पर एक साथ एकत्रित होकर बैठे हुए उन श्रमणोपासकों में परस्पर इस प्रकार का वार्त्तालाप हुआ–

[प्र.] हे आर्यो! देवलोकों में देवों की कितने काल की स्थिति कही गई है?

3. Some time one day assembling together and sitting at a place, those *shramanopasak*s had a discussion as follows—

[Q.] Noble ones ! What is said to be the life-span (*sthiti*) of gods (divine beings) in divine realms ?

४. तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिइगहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी–

[उ.] देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया; उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य।

४. [उ.] इस प्रश्न को सुनने के बाद देवों की स्थिति के विषय में ज्ञाता ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक ने उन श्रमणोपासकों से इस प्रकार कहा–आर्यों! देवलोकों में देवों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष बताई गई है, उसके बाद एक समय अधिक, दो समय अधिक, यावत् दस समय अधिक, संख्यात समय अधिक और असंख्यात समय अधिक, (इस तरह बढ़ते हुए) उत्कृष्ट तैंतीस सागरोपम की स्थिति कही गई है। इसके आगे अधिक स्थिति वाले देव तथा देवलोक नहीं है।

4. **[Ans.]** On hearing this question, *shramanopasak* Rishibhadraputra, who had knowledge about the life-span of divine beings, said to the *shramanopasak*s present there—"Noble ones ! The minimum life-span of gods in divine realms is said to be ten thousand years; then with gradual increase of one Samaya (the smallest indivisible unit of time), two Samayas... and so on up to... ten Samayas, countable Samayas, uncountable Samayas it can reach the maximum of thirty three Sagaropams (metaphoric unit of time). There are neither gods nor divine realms having life-span more than this."

५. तए णं ते समणोवासगा इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, नो पत्तियंति, नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

[५] इसके बाद उन श्रमणोपसकों ने ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक द्वारा इस प्रकार कही हुई यावत् प्ररूपित की हुई इस बात पर न तो श्रद्धा की, न प्रतीति की और न ही रुचि ली; उपर्युक्त

कथन पर श्रद्धा, प्रतीति और रुचि न करते हुए वे (श्रमणोपासक) जिस दिशा से आए थे, उसी दिशा में वापस चले गए।

5. The *shramanopasak*s present there did not believe, notice or like this information told... and so on up to... propagated by *shramanopasak* Rishibhadraputra. As they did not believe, notice or like this information, they all went back in the direction they came from.

भगवान् द्वारा उन श्रमणोपासकों की जिज्ञासा का समाधान एवं उन ऋषिभद्रपुत्र से क्षमायाचना

REMOVAL OF DOUBT BY BHAGAVAN MAHAVIR

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ।

[६] उस काल और उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यावत् वहाँ (आलभिका नगरी में) पधारे, यावत् परिषद् ने उनकी पर्युपासना की।

6. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived there (Aalabhiya city)... and so on up to... the religious assembly started and people worshiped him.

७. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा एवं जहा तुंगिउद्देसए (स० २ उ० ५) जाव पज्जुवासंति।

[७] (श. २, उ. ५ में वर्णित) तुंगिका नगरी के श्रमणोपासकों के समान आलभिका नगरी के वे (ऋषिभद्रपुत्र के देव स्थिति विषयक उत्तर के प्रति अश्रद्धावान) श्रमणोपासक भी (भगवान् के आगमन) को सुनकर हर्षित एवं सन्तुष्ट हुए, यावत् भगवान् की पर्युपासना करने लगे।

7. Like the *shramanopasak*s of Tungika city (as described in Chapter-2, Lesson-5), the *shramanopasak*s of Aalabhiya city (who disbelieved Rishibhadraputra's answer about life-span of divine beings) too were pleased and contented (hearing about arrival of Bhagavan)... and so on up to... they commenced worshipping Bhagavan.

८. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति. धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ।

[८] इसके उपरान्त श्रमण भगवान् महावीर ने उन श्रमणोपासकों को तथा उस महापरिषद् को धर्मकथा सुनाई, यावत् जिसे सुनकर वे सभी आज्ञा से आराधक हुए।

8. After that, Shraman Bhagavan Mahavir gave his sermon to those *shramanopasaks* and that great assembly... and so on up to... Hearing that they all became his followers.

९. तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उ. २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं. २ एवं वयासी—

[प्र.] एवं खलु भंते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवं आइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया, जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। से कहमेयं भंते ! एवं ?

[९] तदोपरान्त वे श्रमणोपासक श्रमण भगवान् महावीर के पास से धर्म श्रवण कर एवं (उसे हृदय में) अवधारण करके हृष्ट-तुष्ट हुए। फिर वे सभी उठे और खड़े होकर उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर को वन्दन-नमस्कार किया और इस प्रकार पूछा—

[प्र.] भगवन् ! ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक ने हमें इस प्रकार कहा है, यावत् प्ररूपणा की है—हे आर्यों! देवलोकों में देवों की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष कही गई है। उसके आगे एक-एक समय अधिक करते-करते यावत् (पूर्ववत्) देवलोक की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम की कही गई है, यावत् इसके बाद देव और देवलोक विच्छिन्न हैं (अर्थात् इसके आगे देव और देवलोक की स्थिति) नहीं है। तो क्या भगवन्। यह बात ऐसी ही है?

9. Those *shramanopasaks* were pleased and contented on hearing (and understanding) the sermon. Then they all stood up, offered salutations and homage to Bhagavan Mahavir and submitted —

[Q.] *Bhante ! Shramanopasak* Rishibhadraputra has told... and so on up to... propagated—'Noble ones ! The minimum life-span of gods in divine realms is said to be ten thousand years; then with gradual increase of one Samaya, two Samayas... and so on up to... ten Samayas, countable Samayas, uncountable Samayas it can reach the maximum of thirty three Sagaropams. There are neither gods nor divine realms having life-span more beyond this.' *Bhante !* Is it as he has told ?

१०. [उ.] 'अज्जो !' त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—जण्णं अज्जो! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवं आइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोगेसु णं अज्जो! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। सच्चे णं एसमट्ठे। अहं पि णं अज्जो! एवमाइक्खामि जाव

परूवेमि—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं. तं चेव जाव तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। सच्चे णं एसमट्ठे।

१०. [उ.] आर्यों! इस प्रकार सम्बोधन करते हुए श्रमण भगवान् महावीर ने उन श्रमणोपासकों को और उस बड़ी परिषद् को इस प्रकार कहा—हे आर्यो! ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक ने जो तुमसे इस प्रकार (पूर्वोक्त) कहा है, यावत् प्ररूपणा की है कि देवलोकों में देवों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है, उसके आगे एक-एक समय अधिक होते-होते यावत् उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है, यावत् इसके आगे देव और देवलोक विच्छिन्न अर्थात् नहीं हैं—यह बात सत्य है। हे आर्यो! मैं भी इसी प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि देवलोकों में देवों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है, यावत् उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागारोपम की है, यावत् इससे आगे देव और देवलोक विच्छिन्न हो जाते हैं। आर्यो! यह बात पूर्ण रूप से सत्य है।

10. [Ans.] "Noble ones!" Addressing thus Shraman Bhagavan Mahavir said to those *shramanopasak*s and that large assembly—"Noble ones! *Shramanopasak* Rishibhadraputra has told you... and so on up to... propagated that the minimum life-span of gods in divine realms is said to be ten thousand years; then with gradual increase of one Samaya, two Samayas... and so on up to... ten Samayas, countable Samayas, uncountable Samayas it can reach the maximum of thirty three Sagaropams. Beyond that gods and divine realms are extinct.' This statement is true. O Noble ones! I also say this... and so on up to... propagate this that the minimum life-span of gods in divine realms is said to be ten thousand years... and so on up to... it can reach the maximum of thirty three Sagaropams. Beyond that gods and divine realms are extinct.' This statement is absolutely true."

११. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं. २ जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा. २ इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वं. २ एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति।

[११] तदोपरान्त उन श्रमणोपासकों ने श्रमण भगवान् महावीर के पास से यह समाधान सुनकर और (हृदय में) अवधारण कर उन्हें वन्दन-नमस्कार किया। इसके बाद जहाँ ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक था, वे वहाँ आए। ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक के पास आकर उन्होंने उसे वन्दन-नमस्कार किया फिर उसकी (पूर्वोक्त) बात को सत्य न मानने के लिए विनयपूर्वक बार-बार क्षमायाचना करने लगे।

11. On hearing and understanding this answer from Shraman Bhagavan Mahavir those *shramanopasaks* offered salutations and homage to Bhagavan and came back to Rishibhadraputra. After coming to *shramanopasak* Rishibhadraputra they greeted him and, after paying homage, humbly sought his forgiveness repeatedly for not accepting his statement (aforesaid) to be true.

१२. तए णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, प. पु. २ अट्ठाइं परियाइयंति, अ. प. २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं. २ जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

[१२] तत्पश्चात् उन श्रमणोपासकों ने भगवान से कई प्रश्न पूछे तथा उनके अर्थ ग्रहण किए इसके बाद श्रमण भगवान् महावीर को वन्दना-नमस्कार करके जिस दिशा से आए थे, उसी दिशा में (अपने-अपने स्थान पर) वापस चले गए।

12. Later they asked many other questions to Bhagavan and got answers. Then they offered salutations and homage to Shraman Bhagavan Mahavir and went back in the directions they came from (returned to their respective abodes).

भगवान द्वारा ऋषिभद्रपुत्र के भविष्य के सम्बन्ध में कथन

BHAGAVAN PREDICTS FUTURE OF RISHIBHADRAPUTRA

१३. 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वं. २ एवं वयासी—

[प्र.] पभू णं भंते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा! इसिभद्दपुत्ते णं समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं-वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिइ, ब. पा. २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेहिइ, मा. झू. २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिइ स. छे. २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई भविस्सइ।

१३. तदोपरान्त हे भगवन्! इस प्रकार सम्बोधित करते हुए भगवान् गौतम ने श्रमण भगवान् महावीर को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार पूछा—

[प्र.] भगवन्! क्या श्रमणोपासक ऋषिभद्र-पुत्र, आप देवानुप्रिय के समीप मुण्डित होकर (गृह त्याग कर) आगारवास से अनगारधर्म में प्रव्रजित होने में समर्थ है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है परन्तु यह ऋषिभद्र-पुत्र श्रमणोपासक बहुत-से शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान और पौषधोपवासों से और यथा-योग्य गृहीत तपःकर्मों से अपनी आत्मा को भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक-पर्याय का पालन करेगा। फिर मासिक संलेखना द्वारा साठ भक्त अनशन का छेदन कर (आहार छोड़कर), आलोचना और प्रतिक्रमण कर तथा समाधि प्राप्त कर, काल के समय काल करके सौधर्म देवलोक के अरुणाभ नामक विमान में देव के रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ कितने ही देवों की चार पल्योपम की स्थिति बताई गई है। उनमें ऋषिभद्र-पुत्र-देव की भी चार पल्योपम की स्थिति होगी।

13. Then paying homage and addressing Shraman Bhagavan Mahavir as *Bhante!* Bhagavan Gautam submitted—

[Q.] *Bhante !* Is *shramanopasak* Rishibhadraputra prepared to renounce his household, get tonsured and get initiated to be an abode-less ascetic in your order?

[Ans.] Gautam ! That is not true but he will follow the *shramanopasak* code for many years enkindling his soul by observing *Sheel-vrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline), *Gunavrats* (restraints that reinforce the practice of *anuvrats*), *Viraman-vrats* (*Anuvrats* or five minor vows), *Pratyakhyan* (codes of renouncing), *Paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting) and other formally accepted austerities. After that he will take the ultimate vow of month long fasting, perform critical review of his deeds, attain serenity, end his life span and get reborn as a god in the Arunaabh celestial vehicle in the Saudharma divine realm. The life span of many gods there is said to be four Palyopam. God Rishibhadraputra too will have a life span of four Palyopam.

१४. [प्र.] से णं भंते! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिइ?

[उ.] गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहेइ।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

१४ [प्र.] भगवन्! वह ऋषिभद्र-पुत्र-देव उस देवलोक से आयुष्य, स्थिति और भव क्षय करके यावत् कहाँ उत्पन्न होगा?

१४ [उ.] गौतम! वह महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा, यावत् सभी दु:खों का अन्त करेगा।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है!, ऐसा कहकर भगवान् गौतम, यावत् अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

14. [Q.] *Bhante !* After ending the life-span, stay and birth in that divine realm... and so on up to... where will that Rishibhadraputra god be reborn ?

[Ans.] Gautam ! He will become Siddha (perfect one) in the Mahavideha area... and so on up to... end all miseries.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ आलभियाओ नयरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, प. २ बहिया जणवयविहारं विहरइ।

[१५] तत्पश्चात् किसी समय श्रमण भगवान् महावीर भी आलभिका नगरी के शंखवन उद्यान से निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने लगे।

15. Then at some point of time Shraman Bhagavan Mahavir left Shankhavan garden in Aalabhika city and commenced his itinerant way in other populated areas.

मुद्‌गल परिव्राजक

MUDGAL PARIVRAJAK

मुद्‌गल परिव्राजक को विभंगज्ञान प्राप्ति **MUDGAL PARIVRAJAK GAINS VIBHANGA JNANA**

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नयरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था। वण्णओ। तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते मोग्गले नामं परिव्वायए परिवसइ रिउव्वेद-यजुव्वेद जाव नयेसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ आव आयावेमाणे विहरइ। (किसी-किसी प्रति में **'मोग्गले'** (मुद्‌गल) के स्थान पर **पोग्गले** (पोद्‌गल) दिया गया है। जबकि वैदिक साहित्य की दृष्टि से देखा जाए तो 'मुद्‌गल' शब्द उचित प्रतीत होता है।)

[१६] उस काल और उस समय में आलभिका नाम की नगरी थी। (उसका वर्णन औपपातिक सूत्र के नगर वर्णन के अनुसार समझना चाहिए।) वहाँ शंखवन नामक उद्यान था। (उसका भी वर्णन औपपातिक सूत्र में बताए उद्यान वर्णन के अनुसार जानना चाहिए।) उस शंखवन उद्यान के न तो अतिदूर और न ही अतिनिकट अर्थात् कुछ दूर मुद्‌गल (पुद्‌गल) नामक

परिव्राजक रहता था। वह ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि शास्त्रों यावत् बहुत-से ब्राह्मण-विषयक नयों में अच्छी तरह कुशल था। वह लगातार बेले-बेले (छट्ठ-छट्ठ) का तपःकर्म करता हुआ तथा आतापना भूमि में दोनों भुजाएँ ऊँची करके यावत् आतापना लेता हुआ विचरण करता था।

16. During that period of time there was a city called Aalabhika. Description (like the description of city in *Aupapatik Sutra*). Outside the city there was a *chaitya* (temple complex with garden) called Shankhavan. Description (as in *Aupapatik Sutra*). Neither very far nor very near that Shankhavan complex lived a Parivrajak called Mudgal. He was an accomplished scholar of scriptures (Brahmin) including *Rigveda, Yajurved*... and so on up to... related logic. He moved around indulging in austerities of serial two-day fasts and mortifying his body with heat by standing with raised arms in an area allotted for heat mortification.

१७. तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठं छट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जहा सिवस्स (स. ११ उ. ९) जाव विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेण नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठिइं जाणइ पासइ।

[१७] तदोपरान्त इस प्रकार से बेले-बेले की तपस्या करते हुए मुद्गल परिव्रजक को प्रकृति की भद्रता (सरलता) आदि के कारण (श. ११. उ. ९. में वर्णित) शिव राजर्षि के समान विभंग नाम का कु-अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ। वह उस समुत्पन्न विभंगज्ञान से पंचम ब्रह्मलोक कल्प में रहे हुए देवों की स्थिति जानने-देखने लगा।

17. Due to observing aforesaid austerity with series of two day fasts and due to his gentle and modest nature, Mudgal Parivrajak one day gained *Vibhanga-jnana* (pervert knowledge) like Saint-king Shiva (Chapter-11, Lesson-9). With the help of this acquired pervert knowledge he could see and know the period of existence or life-span of gods living in Brahmalok Kalp or the fifth divine realm.

विभंगज्ञानी मुद्गल द्वारा अपने अतिशय ज्ञान-दर्शन की घोषणा और लोगों द्वारा प्रतिक्रिया

VIBHANGAJNANI MUDGAL ANNOUNCES HISSUPREME KNOWLEDGE, PEOPLE REACT

१८. तए णं तस्स मोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—'अत्थि णं ममं अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य'। एवं संपेहेति, एवं सं. २ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ. प. २ तिदंड-कुंडिय जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गे. २ जेणेव आलभिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छति, ते. उ.

२ भंडनिक्खेवं करेइ, भं. क. २ आलभियाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं. तहेव जाव वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य।

[१८] तत्पश्चात् उस मुद्गल परिव्राजक को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ–"मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन समुत्पन्न हुआ है, जिससे मैं जानता हूँ कि देवलोकों में देवों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है, उसके बाद एक समय अधिक, दो समय अधिक, यावत् असंख्यात समय अधिक, इस तरह बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है। उसके बाद देव और देवलोक विच्छिन्न हैं (नहीं हैं)।" इस प्रकार उसने ऐसा निश्चय कर लिया। फिर वह आतापना भूमि से नीचे उतरा और त्रिदण्ड, कुण्डिका, यावत् धातुरक्त (भगवां) वस्त्रों को लेकर आलभिका नगरी में जहाँ परिव्राजकों का आवसथ (मठ) था, वहाँ आया। वहाँ उसने अपने भण्डोपकरण रखे और आलभिका नगरी के शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क यावत् राजमार्ग पर एक-दूसरे से इस प्रकार कहने यावत् प्ररूपणा करने लगा–"हे देवानुप्रियो! मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, जिससे मैं यह जानता-देखता हूँ कि देवलोकों में देवों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है और उत्कृष्ट स्थिति यावत् दस सागरोपम की है। इससे आगे देवों और देवलोकों का अभाव है।"

18. Then Mudgal Parivrajak thought thus, "I have gained supreme knowledge and perception, with the help of which I know that the minimum life-span of gods in divine realms is ten thousand years; then with gradual increase of one Samaya, two Samayas ... and so on up to ... uncountable Samayas it can reach the maximum of ten Sagaropams. There are neither gods nor divine realms beyond this." Having resolved thus he got down from the heat-mortification arena and, carrying his trident, bowl ... and so on up to ... saffron coloured dress, came to the abode of Parivrajaks in Aalabhika city. Leaving his bowls and equipment there he started moving around in squares, crossings, highways and other public places in Aalabhika city and started preaching to masses – "O beloved of gods! I have gained supreme knowledge and perception with the help of which, I know and see that the minimum life-span of gods in divine realms is ten thousand years and the maximum is of ten Sagaropams. There are neither gods nor divine realms beyond this."

१९. तए णं आलभियाए नयरीए एवं एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स (स. ११ उ. ९) तं चेव जाव से कहमेयं मन्ने एवं?

[१९] इस बात को सुनकर आलभिका नगरी के लोग परस्पर (श. ११, उ. ९ के अनुसार) शिव राजर्षि के अभिलाप के समान कहने लगे यावत्–"हे देवानुप्रियो! उनकी यह बात कैसे मानी जाए?"

19. Hearing this the masses of Aalabhika city started talking as mentioned about Saint-king Shiva (Chapter-11, Lesson-9)... and so on up to... "O beloved of gods ! Why should we believe his this statement ?"

भगवान द्वारा मुद्गल परिव्राजक के कथन के विषय में सत्यासत्य का निर्णय

BHAGAVAN DECIDES ABOUT TRUTH OF MUDGAL'SSTATEMENT

२०. सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया। भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ (स. ११ उ. ९), तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव (स. ११ उ. ९.) अहं पुण गोयमा! एवं आइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता; तेण पर वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य।

[२०] (उन्हीं दिनों) श्रमण भगवान महावीर स्वामी का (आलभिका नगरी में) पदार्पण हुआ, यावत् परिषद् (धर्मोपदेश सुनकर) वापस लौटी। भगवान गौतम स्वामी उसी प्रकार (पूर्ववत्) भिक्षाचर्या के लिए नगरी में पधारे। वहाँ बहुत-से लोगों में परस्पर (मुद्गल परिव्राजक के अतिशय ज्ञान-दर्शनोत्पत्ति की) चर्चा होती हुई सुनी। शेष सारा वर्णन पूर्ववत् (श. ११, उ. ९ के अनुसार) जानना चाहिए, यावत् (फिर गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा तब उन्होंने इस प्रकार कहा—) हे गौतम! मुद्गल परिव्राजक का कथन असत्य है। मैं इस प्रकार कहता हूँ, इस प्रकार प्रतिपादन करता हूँ यावत् इस प्रकार प्ररूपणा करता हूँ—"देवलोकों में देवों की जघन्य स्थिति तो दस हजार वर्ष की है, किन्तु इसके उपरान्त एक समय अधिक, दो समय अधिक, यावत् उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम की है। इससे आगे देव और देवलोक विच्छिन्न हो गए हैं।"

20. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived there (Aalabhiya city)... and so on up to... the religious assembly started and people dispersed (after hearing his sermon). Bhagavan Gautam Swami went into the city and while moving about seeking alms, he heard many people talking among themselves (about the statement of Mudgal Parivrajak) following description should follow the pattern as mentioned earlier (Chapter-11, Lesson-9)... and so on up to... (Answering Gautam, Bhagavan said–) Gautam ! Mudgal Parivrajak's statement is false. I say, state... and so on up to... propagate that the minimum life-span of gods in divine realms is, indeed, ten thousand years; however, with gradual increase of one Samaya, two Samayas... and so on up to... uncountable Samayas it can reach a maximum of thirty three Sagaropams. Gods and divine realms are extinct beyond this."

२१. [प्र.] अत्थि णं भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं (स. ११ उ. ९.) पि।

[उ.] तहेव जाव हंता, अत्थि।

२१ [प्र.] भगवन्! क्या सौधर्म-देवलोक में वर्णसहित और वर्णरहित द्रव्य हैं? इत्यादि पूर्ववत् (श. ११, उ. ९ के अनुसार) प्रश्न।

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

21. [Q.] *Bhante !* Do substances (*dravya*) with and without colour exist in Saudharma divine realm ? And other questions as before (Chapter-11, Lesson-9).

[Ans.] Yes, Gautam ! They do.

२२. [प्र.] एवं ईसाणे वि। एवं जाव अच्चुए एवं गेविज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि?

[उ.] जाव हंता, अत्थि।

२२ [प्र.] इसी प्रकार क्या ईशान देवलोक में यावत् अच्युत देवलोक में ग्रैवेयक विमानों में, अनुत्तर विमानों में और ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी में भी वर्णादिसहित और वर्णादिरहित द्रव्य हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! हैं।

22. [Q.] In the same way do substances (*dravya*) with and without colour exist in Ishaan divine realm... and so on up to... Achyut divine realm, and Graiveyak and Anuttar celestial vehicles as well as Ishatpragbhaara Prithvi (the realm of Siddhas) ? And other questions as before (Chapter-11, Lesson-9).

[Ans.] Yes, Gautam ! They do.

२३. तए णं सा महतिमहालिया जाव पडिगया।

[२३] इसके बाद वह विशाल परिषद् (धर्मोपदेश सुनकर) यावत् वापस लौट गई।

23. After that the great religious assembly dispersed (after hearing his sermon).

मुद्‌गल परिव्राजक द्वारा निर्ग्रन्थप्रव्रज्याग्रहण एवं सिद्धिप्राप्ति

MUDGAL PARIVRAJAK'S NIRGRANTH INITIATION AND LIBERATION

२४. तए णं आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय. अवसेसं जहा सिवस्स (स. ११ उ. ९) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं तिदंड-कुंडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे

आलभियं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अ. २ तिदंड-कुंडियं च जहा खंदओ (स. २ उ. १) जाव पव्वइओ। सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वाबाहं सोक्खं अणुभवंति सासयं सिद्धा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.

॥ एक्कारसमे सए बारसमो उद्देसो समत्तो ॥ ११-१२ ॥

॥ एक्कारसमं सयं समत्तं ॥

[२४] तत्पश्चात् आलभिका नगरी में शृंगाटक, त्रिक यावत् राजमार्गों पर (बहुत-से लोगों से यावत् मुद्‌गल परिव्राजक ने भगवान द्वारा दिया अपनी मान्यता के मिथ्या होने का निर्णय सुनकर) इत्यादि सब वर्णन (श. ११, उ. ९ के अनुसार) शिव राजर्षि के समान जानना चाहिए।

[अरिहंत, तीर्थंकर, सर्वज्ञ-सर्वदर्शी] यावत् सर्व दुःखों से रहित (होकर विचरते) हैं; [उनके पास जाने का विचार कर] विभंगज्ञान से रहित होकर मुद्‌गल परिव्राजक ने अपने त्रिदण्ड, कुण्डिका आदि उपकरण लिये, यावत् भगवाँ वस्त्र पहने और वे आलभिका नगरी के मध्य में होकर निकले, [जहाँ भगवान विराजमान थे, वहाँ आए] यावत् उनकी पर्युपासना की।

भगवान द्वारा अपनी शंका का समाधान हो जाने पर मुद्‌गल परिव्राजक भी यावत् उत्तर-पूर्व दिशा में गए और स्कन्दक की तरह (श. २, उ. १, सू. ३४ के अनुसार) त्रिदण्ड, कुण्डिका एवं भगवाँ वस्त्र छोड़कर यावत् प्रव्रजित हो गए। इसके बाद का वर्णन शिव राजर्षि की तरह जानना चाहिए; [अर्थात् मुद्‌गल मुनि शिव राजर्षि के समान आराधक होकर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हुए।] यावत् वे सिद्ध, अव्याबाध, शाश्वत सुख का अनुभव करते हैं।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन! यह इसी प्रकार है', ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करने लगे।

॥ ग्यारहवाँ शतक : बारहवाँ उद्देशक समाप्त ॥

॥ ग्यारहवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

24. On crossings... and so on up to... highways of Aalabhika city masses started talking among themselves. (The following description should follow that mentioned about Saint-king Shiva in Chapter-11, Lesson-9). ... and so on up to... Arihant, *Tirthankar*, the initiator of religion,... and so on up to... (being free of the pervert knowledge and with thoughts of going to him) Mudgal Parivrajak collected his trident, bowls and other equipment, put on the saffron dress... and so on up to... passed through the center of Aalabhika city (came near Shraman Bhagavan Mahavir)... and so on up to... commenced his worship.

(On getting his doubts removed by Shraman Bhagavan Mahavir) Mudgal Parivrajak too followed what Skandak did (Chapter-2, Lesson-1)... and so on up to... proceeded in the north-east direction and discarded his trident, bowls, other equipment and the saffron dress... and so on up to... got initiated. The following description is like that of Saint-king Shiva (... and so on up to... got liberated from all miseries). Now he experiences unhindered eternal bliss as Siddha.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—मुद्गल परिव्राजक भी शिवराजर्षि के समान शंकित, कांक्षित हुये, जिससे उनका विभंगज्ञान नष्ट हो गया।

Elaboration—Like Saint-king Shiva, Mudgal Parivrajak was also plagued with doubt and desire for other faith. This rid him of his pervert knowledge.

• END OF THE TWELFTH LESSON OF THE ELEVENTH CHAPTER •

(END OF THE ELEVENTH CHAPTER)

बारसमं सयं : बारहवाँ शतक
DWADASH SHATAK (CHAPTER TWELVE)

प्राथमिक INTRODUCTION

व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के बारहवें शतक में कुल 10 उद्देशक हैं।

पहले उद्देशक में श्रावस्ती नगरी के श्रमणोपासक शंख द्वारा निराहार पौषध करने तथा पुष्कली आदि अन्य श्रमणोपासकों द्वारा आहार सहित पौषध करने का वर्णन किया गया है। इसके अलावा तीन प्रकार की जागरिका का भी निरूपण किया गया है।

दूसरे उद्देशक में भगवान महावीर की प्रथम शय्यातरा जयन्ती श्रमणोपासिका द्वारा प्रभु से जीव के भव्य-अभव्यादि अनेक विषयों पर चर्चा की गई है।

तीसरे उद्देशक में सात नरक पृथ्वियों के नाम, गोत्रादि का वर्णन किया गया है।

चौथे उद्देशक में दो परमाणुओं से लेकर दस परमाणुओं तक तथा संख्यात-असंख्यात एवं अनन्त परमाणु पुद्गलों के एकत्रित होने और भेदित होने का निरूपण किया गया है।

पाँचवें उद्देशक में प्राणातिपात आदि अठारह पाप स्थानों के पर्यायवाची पदों का एवं उनके वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श का निरूपण किया गया है। इसके बाद औत्पत्तिकी आदि चार बुद्धियों, अवग्रह आदि चार, उत्थानादि पाँच, अष्टकर्म, षट् लेश्या, पंच शरीर, त्रियोग, सप्तम अवकाशान्तर से वैमानिकावास तक, पंचास्तिकाय, अतीतादिकाल एवं गर्भगत जीवन में वर्णादि की प्ररूपणा की गई है। इसके अलावा जीव का कर्मों के द्वारा मनुष्यादि अनेक रूपों को प्राप्त होने के विषय में भी समझाया गया है।

छठे उद्देशक में लोगों द्वारा राहु के विषय में भ्रान्त मान्यताओं का निराकरण करते हुए राहु देव की विभूति, शक्ति, उसके नाम, वर्ण, प्रकार आदि का, राहु द्वारा चन्द्रमा की ज्योत्सना को आच्छादित करने का, चन्द्र के शशि एवं सूर्य को आदित्य कहने का तथा चन्द्र एवं सूर्य के कामभोग जनित सुखों आदि का वर्णन किया गया है।

सातवें उद्देशक में इस चौदह राजलोक में व्याप्त परमाणु पुद्गल जितने आकाश प्रदेशों में जीव के जन्म-मरण से अस्पृष्ट न रहने का वर्णन अजाव्रज के दृष्टान्त द्वारा किया गया है। इसके बाद रत्नप्रभा से लेकर अनुत्तर विमान के आवासों में अनेक अथवा अनन्त बार तथा एक व सर्व जीवों की अपेक्षा से माता आदि रूप में अनेक अथवा अनन्त बार उत्पन्न होने की विवेचना की गई है।

आठवें उद्देशक में महर्द्धिक देव के नागादि में उत्पन्न होने एवं उनके प्रभाव की, तत्पश्चात् व्रतादि रहित वानरादि के प्रथम नरक में नैरयिक रूप में उत्पन्न होने की प्ररूपणा की गई है।

नौवें उद्देशक में भव्य-द्रव्यदेवादि पंचविध देवों के स्वरूप, उनकी आगति, स्थिति, विक्रिया शक्ति, उद्वर्तना, संस्थिति काल, अन्तर, अल्प-बहुत्व आदि का प्रतिपादन किया गया है।

दसवें उद्देशक में आठ प्रकार की आत्मा और उनमें परस्पर सम्बन्धों का निरूपण किया गया है। तत्पश्चात् आत्मा की ज्ञान दर्शन से भिन्नता-अभिन्नता, रत्नप्रभा से लेकर अच्युत कल्प तक के आत्मा, नो-आत्मा का कथन तथा परमाणु पुद्गल से लेकर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक के सकलादेश-विकलादेश की अपेक्षा से विविध भंगों का प्रतिपादन किया गया है।

The twelfth chapter (*shatak*) of *Vyakhyaprajnapti Sutra* (*Bhagavati Sutra*) contains ten lessons (*uddeshak*) briefly stated as follows.

The first lesson describes the partial ascetic vow (*paushadh*) inclusive of fasting observed by *shramanopasak* (devotee of Jain ascetic) Shankh of Shravasti city along with the same vow exclusive of fasting observed by Pushkali and other *shramanopasak*s. The lesson concludes with praise of Shankh by Bhagavan Mahavir and description of three kinds of night-long religious-awakening (*Jaagarika*).

The second lesson has discussions of *shramanopasika* Jayanti with Bhagavan Mahavir on various topics including *bhavya* (destined to be liberated) and *abhavya* (not destined to be liberated). Jayanti was the first lay woman to offer place of stay to Bhagavan Mahavir.

The third lesson describes the names, classes and other information about the seven lower or infernal worlds (*Narak Prithvis*)

The fourth lesson deals with integration and disintegration of matter aggregates of two to ten to countable to uncountable number of ultimate particles (*paramanu*).

The fifth lesson gives synonyms and attributes of the eighteen places of sin. The other topics dealt with in this lesson include—information about attributes including colour associated with four kinds of wisdom including *autpattiki* (spontaneous); *avagraha* and other steps of learning; five kinds of vigour (*paraakram*); six soul complexions (*leshya*); five kinds of body (*sharira*); three associations (*yoga*); seventh intervening space (*avakaashaantar*) and all other sections of the cosmos; five *astikaaya*s (fundamental conglamorative ontological categories); time including the

past; and a being conceived in womb. Besides these there is description about a soul gaining various forms including human form due to fruition of *karma*s.

In the sixth lesson prevalent false beliefs about Rahu (a deity) have been cleared. Its glory, power, name appearance and other attributes have been described. Also explained is shadowing of the moon by Rahu as well as reasons of calling the moon and the sun Shashi and Aditya respectively. Besides this the carnal pleasures of the stellar gods Sun and Moon have been mentioned.

The seventh lesson deals with the fact that not a single space-point in the whole occupied space (*Lok*) remains untouched by the acts of birth and death of beings. The phenomenon has been explained with the example of Ajaa-vraj. The lesson also informs about numerous or infinite rebirths of souls in all realms from the Ratnaprabha hell to Anuttar Vimaans as well as numerous or infinite rebirths of souls as beings with different status and inter-relationships.

The eighth lesson describes rebirth and powers of highly endowed divine beings as lower gods including Naags. It also informs about rebirth of vow-less animals like monkeys as infernal beings in the first hell.

The ninth chapter gives details about five kinds of gods including *bhavyadravya dev*. These details include all relevant information about them including their birth, life-span, and powers.

The tenth chapter explains eight kinds of souls and their interrelations. It also deals with the subtle relationship of knowledge and perception with soul. Besides these the lesson also includes discussion about souls and non-souls in all realms from first hell to Achyut kalp, and various alternative combinations of association of soul with various aggregates of matter from ultimate particle to an aggregate of infinite ultimate particles.

□□

पढमो उद्देसओ : संखे
प्रथम उद्देशक : शंख (और पुष्कली श्रमणोपासक)
PRATHAM UDDESHAK (FIRST LESSON) : SHANKH (AND PUSHKALI)

बारहवें शतक की संग्रहणी गाथा COLLATIVE VERSE

१. संखे १ जयंति २ पुढवी ३ पोग्गल ४ अइवाय ५ राहु ६ लोगे य ७।
नागे य ८ देव ९ आया १० बारसमसए दसुद्देसा॥ १॥

[१] बारहवें शतक में दस उद्देशक हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं–(१) शंख, (२) जयन्ती, (३) पृथ्वी, (४) पुद्गल, (५) अतिपात, (६) राहु, (७) लोक, (८) नाग, (९) देव और (१०) आत्मा॥ १॥

[1] The twelfth chapter has ten lessons. There titles are—(1) Shankh, (2) Jayanti, (3) Prithvi, (4) Pudgal, (5) Atipaat, (6) Rahu, (7) Lok, (8) Naag, (9) Dev and (10) Atma. {1}

दो श्रमणोपासकों "शंख" और "पुष्कली" का संक्षिप्त परिचय
BRIEF INTRODUCTION OF SHANKH AND PUSHKALI

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था। वण्णओ। कोट्ठए चेइए। वण्णओ।

[२] उस काल और उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी थी। (उसका वर्णन औपपातिक सूत्र से समझ लेना चाहिए)। (वहाँ) कोष्ठक नामक उद्यान था, (उसका वर्णन भी औपपातिक सूत्र के उद्यान-वर्णन से समझ लेना चाहिए)।

2. During that period of time there was a city called Shravasti. Description (of the city as mentioned in *Aupapatik Sutra*). Outside the city there was a *chaitya* (temple complex) called Koshthak. Description (as mentioned in *Aupapatik Sutra*).

३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति।

[३] उस श्रावस्ती नगरी में शंख आदि बहुत-से श्रमणोपासक रहते थे। (वे) आढ्य (धन-धान्य से परिपूर्ण) यावत् अपरिभूत थे तथा जीवाजीवादि तत्त्वों के ज्ञाता थे, यावत् विचरते थे।

3. In that Shravasti city lived Shankh and many other *shramanopasak*s. They were very rich (*aadhya*)... and so on up to... insuperable (*aparibhoot*) and understood the fundamental entities including soul and matter... and so on up to... spent their life (enkindling their souls with ascetic religion and austerities).

४. तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरइ।

[४] उस 'शंख' श्रमणोपासक की 'उत्पला' नाम की भार्या (पत्नी) थी। उसके हाथ-पैर अत्यन्त सुकोमल थे, यावत् वह रूपवती एवं श्रमणोपासिका थी तथा जीव-अजीव आदि तत्त्वों को जानने वाली थी यावत् विचरती थी।

4. *Shramanopasak* Shankh had a wife named Utpala. She had very delicate limbs... and so on up to... she was beautiful. She was also a *shramanopasika* and understood the fundamental entities including soul and matter... and so on up to... spent her life (enkindling her soul with ascetic religion and austerities).

५. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ अड्ढे अभिगय० जाव विहरइ।

[५] उसी श्रावस्ती नगरी में पुष्कली नाम का श्रमणोपासक रहता था। वह भी आढ्य यावत् जीव-अजीवादि तत्त्वों का ज्ञाता था यावत् विचरता था।

5. In the same Shravasti city also lived another *shramanopasak* named Pushkali. He too was very rich (*aadhya*)... and so on up to... insuperable (*aparibhoot*) and understood the fundamental entities including soul and matter... and so on up to... spent his life (enkindling his soul with ascetic religion and austerities).

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ।

[६] उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर स्वामी श्रावस्ती पधारे। उनका समवसरण (धर्मसभा) लगा। तब परिषद् वन्दन के लिये गई यावत् पर्युपासना करने लगी।

6. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Shravasti city, his religious assembly started... and so on up to... people worshiped him.

७. तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए जहा आलभियाए (स. ११ उ. १२) जाव पज्जुवासंति।

[७] इसके बाद वे श्रमणोपासक (शंख और पुष्कली) भी, आलभिका नगरी के श्रमणोपासक के समान (श. ११, उ. १२) उनके वन्दन एवं धर्मकथा श्रवण के लिए आए यावत् पर्युपासना करने लगे।

7. Like the *shramanopasaks* of Aalabhika city (Chapter-11, Lesson-12), these *shramanopasaks* (of Shravasti city including Shankh and Pushkali) too came to pay homage to Bhagavan and listen to his sermon... and so on up to... they commenced his worship.

८. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए, धम्मकहा जाव परिसा पडिगया।

[८] इसके उपरान्त श्रमण भगवान महावीर ने उन श्रमणोपासकों को और उस विशाल महापरिषद को धर्मकथा कही। यावत् परिषद् (धर्मकथा सुनकर) वापिस चली गई।

8. After that, Shraman Bhagavan Mahavir gave his sermon to those *shramanopasaks* and that great assembly... and so on up to... (after hearing the sermon) the assembly dispersed.

९. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं. २ पसिणाइं पुच्छंति, प. पु. अट्ठाइं परियाइयंति, अ. प. २ उट्ठाए उट्ठेंति, उ. २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, प. २ जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

[९] तदोपरान्त वे श्रमणोपासक भगवान महावीर के पास धर्मोपदेश सुनकर और (हृदय में) अवधारण करके हर्षित और सन्तुष्ट हुए। उन्होंने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार कर उनसे प्रश्न पूछे फिर उनका अर्थ (उत्तर) ग्रहण किया। उसके बाद उन्होंने खड़े होकर श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके कोष्ठक उद्यान से निकल कर श्रावस्ती नगरी की ओर जाने का विचार किया।

9. Those *shramanopasak*s were pleased and contented on hearing (and understanding) Bhagavan Mahavir's sermon. They offered salutations and homage to Bhagavan Mahavir, asked questions and listened to the answers given by him. They stood up, paid homage and salutations to Bhagavan Mahavir, came out of the Koshtak garden and thought of returning to Shravasti city.

शंख श्रमणोपासक द्वारा पाक्षिक पौषध करने का विचार एवं श्रमणोपासकों को विपुल भोजन-सामग्री तैयार कराने के निर्देश

SHANKH THINKS OF OBSERVING PARTIAL ASCETIC VOW FOR A FORTNIGHT

१०. तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं उवक्खडावेह। तए णं अम्हे तं विउलं असणं पाणं-खाइमं-साइमं आसाएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो।

[१०] तत्पश्चात् उस शंख श्रमणोपासक ने दूसरे श्रमणोपासकों से इस प्रकार कहा—देवानुप्रियो! तुम विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम (भोजन) तैयार कराओ। हम उस विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम (भोजन) का आस्वादन करते हुए, विशेष प्रकार से आस्वादन करते हुए, परस्पर देते हुए और भोजन करते हुए पाक्षिक पौषध का अनुपालन करते हुए अहोरात्र-यापन करेंगे।

10. Just then *shramanopasak* Shankh said to other *shramanopasak*s–"Beloved of gods! Please arrange for plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food). We will spend days and nights eating, enjoying, and mutually sharing all that staple food, liquids, general food, and savoury food, and observing a fortnight-long partial-ascetic vow (*paakshik paushadh vrat*).

११. तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति।

[११] इस पर उन श्रमणोपासकों ने शंख श्रमणोपासक की इस बात को विनयपूर्वक स्वीकार किया।

11. The *shramanopasak*s modestly accepted Shankh's proposal.

विवेचन—पौषध मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं–(१) **चतुर्विध आहारत्याग-पौषध** और (२) **आहार-सेवनयुक्त पौषध।** शंख श्रमणोपासक ने आहार-सेवनयुक्त पौषध करने का विचार प्रस्तुत किया है, जिसे वर्तमान में देश पौषध, देशावकाशिकव्रत-रूप पौषध, अथवा दयाव्रत या छ: काय-आरम्भ (षट्कायारम्भ) त्याग कहते हैं।

Elaboration—*Paushadh vrat* (partial-ascetic vow) is mainly of two kinds—(1) *Chaturvidh ahaar tyaag paushadh* or partial-ascetic vow renouncing food of all four kinds or with fasting. (2) *Ahaar sevan yukt paushadh* or partial ascetic vow with food intake. In this statement Shankh proposes partial ascetic vow of second kind. In modern terms it is called *Desh Paushadh* (partial partial-ascetic vow), or *Deshavakashik Paushadh*, or *Daya Vrat* or *Shatkaayaarambh tyaag*.

शंख श्रमणोपासक द्वारा आहार त्याग कर एकाकी पाक्षिक पौषध का अनुपालन

SHANKH ALONE OBSERVES FASTING PAUSHADH FOR A FORTNIGHT

१२. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—'नो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए। सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभयारिस्स उम्मुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, ए. सं. २ जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, उ. आ. २ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ पोसहसालं अणुपविस्सइ, पो. अ. २ पोसहसालं पमज्जइ, पो. प. २ उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, उ. प. २ दब्भसंथारगं संथरइ, द. सं. २ दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

[१२] इसके बाद उस शंख श्रमणोपासक को एक ऐसा अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न हुआ–"उस विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य का आस्वादन, विस्वादन, परिभाग और परिभोग करते हुए पाक्षिक पौषध करके धर्मजागरणा करना मेरे लिए श्रेयस्कर नहीं है बल्कि अपनी पौषधशाला में, ब्रह्मचर्यपूर्वक, मणि और सुवर्ण का त्याग कर तथा माला, वर्णक एवं विलेपन से रहित होकर और शस्त्र-मूसल का त्याग करके दर्भ (डाभ) के संस्तारक (बिछौने) पर बैठकर, दूसरे किसी को साथ लिये बिना, अकेले ही पाक्षिक पौषध में (अहोरात्र) धर्मजागरणा करते हुए विचरण करना श्रेयस्कर है।" इस तरह विचार करके वह श्रावस्ती नगरी में जहाँ अपना घर था, वहाँ आया, (और अपनी भार्या) उत्पला श्रमणोपासिका से (इस विषय में) पूछा। फिर जहाँ अपनी पौषधशाला थी, वहाँ आया फिर पौषधशाला में प्रवेश किया। उसके बाद उसने पौषधशाला का प्रमार्जन किया (सफाई की); उच्चार-प्रस्रवण (मल-मूत्र विसर्जन) की भूमि का प्रतिलेखन (भलीभांति निरीक्षण) किया। फिर उसने डाभ का संस्तारक (बिछौना) बिछाया और उस पर बैठा। तदोपरान्त (उसी) पौषधशाला में उसने ब्रह्मचर्य पूर्वक यावत् पाक्षिक पौषध (रूप धर्मजागरणा) पालन करते हुए, (अहोरात्र) यापन किया।

12. However, after that Shankh *shramanopasak* had an inspiration (*adhyavasaaya*)... and so on up to... resolve (*sankalp*)—'It is not beneficial for me to spend days and nights eating, enjoying, and mutually sharing all that *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) and observing a fortnight-long partial-ascetic vow (*Paakshik Paushadh Vrat*) with religious-awakening during nights. Instead, it would beneficial to observe a fortnight-long partial-ascetic vow (*Paakshik Paushadh Vrat*) with religious awakening during nights in solitude in my ascetic-hostel (*paushadh shaala*). I should do this observing the following code–with complete celibacy; abandoning gems and gold; being free of garlands, auspicious marks and body smear; renouncing weapons and the like; sitting on a bed of hay; and in solitude without any company.' With these thoughts he returned home in Shravasti city and sought consent of Utpala *shramanopasika* (his wife). Then he came to his *paushadh shaala* and entered it. Thereafter he cleaned the place and properly inspected the place for disposing excrements. Finally he spread his bed of hay and sat down. He then spent his days and nights observing a fortnight-long partial-ascetic vow (*Paakshik Paushadh Vrat*) with religious awakening.

विवेचन—श्रमण भगवान महावीर के दर्शन करके वापिस लौटते समय शंख श्रावक को अचानक सामूहिक रूप से आहार सहित पौषध करने का विचार सूझा किन्तु थोड़ी ही देर में शंख के मन में उत्कृष्ट त्यागभाव के कारण निराहार रहकर अकेले ही अपनी पौषधशाला में पाक्षिक पौषध के अनुपालन करने का विचार उत्पन्न हुआ जिसे उसने पत्नी से परामर्श किया फिर पौषधशाला में गया और अकेले ही निराहार पौषध अंगीकार करके धर्मजागरणा किया। अब यहाँ यह प्रश्न होता है कि आहारसहित पौषध जैसे सामूहिक रूप से किया जाता है, तो क्या निराहार पौषध सामूहिक रूप से नहीं हो सकता? वृत्तिकार इसका समाधान करते हुए कहते हैं कि निराहार पौषध पौषधशाला में अकेले करना कल्पनीय है। लेकिन यदि पौषधशाला में अनेक श्रावक मिलकर सामूहिक रूप से भी निराहार पौषध करते हैं तो इसमें कोई दोष भी नहीं है, बल्कि सामूहिक रूप से पौषध करने से सामूहिक रूप से स्वाध्याय करने अर्थात् बोल-थोकड़े आदि का स्मरण करने में सुविधा होती है, और विशेष लाभ भी होता है। अत: सामूहिक पौषध में विशिष्ट गुणों की सम्भावना रहती है।

Elaboration—While returning after paying homage to Shraman Bhagavan Mahavir, *shramanopasak* Shankh suddenly thought of observing *paushadh vrat* with food in a group. However, a little later Shankh changed the idea and opted for solitary vow without food. After consulting his wife he went into his personal austerity chamber and observed the vow. This gives rise to a question that like *paushadh vrat* with food is observed in a group, can the same vow without food also be observed in group. The commentator (*Vritti*) explains that it is prescribed to observe this vow alone but there is nothing wrong if it is also done in a group. In fact when done in a group it is convenient to do study and chanting as it helps recalling the texts. Thus observation in a group has more merits.

आहार तैयार करने के उपरांत पुष्कली का शंख को बुलाने के लिए जाना

AFTER PREPARING FOOD PUSHKALI GOES TO INVITE SHANKH

१३. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, ते. उ. २ विउलं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं उवक्खडावेंति, उ. २ अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्न. स. २ एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं संखं समणोवासयं सद्दावेत्तए।'

[१३] तदोपरान्त वे श्रमणोपासक श्रावस्ती नगरी में अपने-अपने घर आए और विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य (चार प्रकार का आहार) तैयार करवाया। फिर उन्होंने एक-दूसरे को बुलाया और एक-दूसरे से इस प्रकार कहा—देवानुप्रियो! हमने तो (शंख श्रमणोपासक के कहने पर) विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य (आहार) तैयार करवा लिया; लेकिन शंख श्रमणोपासक अभी तक नहीं आए इसलिए देवानुप्रियो! हमें शंख श्रमणोपासक को बुलाकर लाना चाहिए।

13. There, those *shramanopasaks* returned to there respective homes and got prepared ample quantity of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food). They called each other and said—"Beloved of gods ! We got prepared (as advised by *shramanopasak* Shankh) ample staple food, liquids, general food, and savoury food. However, he has not yet turned up. As such, beloved of gods ! We should go and fetch him."

१४. तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—'अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सुनिव्वुया वीसत्था, अहं णं संखं समणोवासयं सद्दावेमि' त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, प. २ सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे।

[१४] इसके बाद उस पुष्कली नामक श्रमणोपासक ने उन श्रमणोपासकों से इस प्रकार कहा—"देवानुप्रियो ! तुम सब अच्छी तरह स्वस्थ (निश्चिंत) और विश्वस्त होकर (यहाँ) बैठो, मैं शंख श्रमणोपासक को बुलाकर लाता हूँ।" ऐसा कह कर वह उन श्रमणोपासकों के पास से निकल कर श्रावस्ती नगरी के मध्य से होकर जहाँ शंख श्रमणोपासक का घर था, वहाँ आया और शंख श्रमणोपासक के घर में प्रवेश किया।

14. At this a *shramanopasak* named Pushkali said to the group—"Beloved of gods ! I will go and fetch *shramanopasak* Shankh. You all please sit here and rest assured." With these words he left and crossing Shravasti city came to Shankh's residence and entered.

शंख श्रमणोपासक की पत्नी द्वारा पुष्कली का स्वागत एवं परस्पर प्रश्नोत्तर

SHANKH'S WIFE GREETS PUSHKALI

१५. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पा. २ हट्ठतुट्ठ. आसणाओ अब्भुट्ठेइ, आ. अ. २ सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, स. अ. २ पोक्खलिं समणोवासयं वंदइ नमंसइ, वं. २ आसणेणं उवनिमंतेइ, आ. उ. २ एवं वयासी—'संदिसउ णं देवाणुप्पिया! किमागमणप्पयोयणं?' तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी—'कहिं णं देवाणुप्पिए! संखे समणोवासए?' तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समाणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव विहरइ।'

[१५] इसके बाद पुष्कली श्रमणोपासक को अपने पास आते देखकर वह उत्पला श्रमणोपासिका (शंख श्रमणोपासक की पत्नी) हर्षित और सन्तुष्ट हुई। वह अपने आसन से उठी और सात-आठ कदम सामने गई। फिर उसने पुष्कली श्रमणोपासक को वन्दन-नमस्कार किया और आसन पर बैठने को कहा। उसके बाद उसने इस प्रकार पूछा—"कहिये, देवानुप्रिय! आपके (यहाँ) आने का क्या प्रयोजन है?" इस पर उस पुष्कली श्रमणोपासक ने उत्पला श्रमणोपासिका से इस प्रकार कहा—"देवानुप्रिये! शंख श्रमणोपासक कहाँ हैं?" (यह सुनकर) उस उत्पला श्रमणोपासिका ने पुष्कली श्रमणोपासक को इस प्रकार उत्तर दिया—"देवानुप्रिय! वह (शंख श्रमणोपासक) पौषधशाला में पौषध ग्रहण करके ब्रह्मचर्ययुक्त होकर यावत् (धर्मजागरणा कर) रहे हैं।"

15. When she saw *shramanopasak* Pushkali approaching, Utpala *shramanopasika,* (Shankh's wife), was pleased and contented. She got up from her seat and took seven-eight steps forward. Then she greeted and saluted Pushkali *shramanopasak* and offered him a seat. She asked– "Please tell me, beloved of gods ! What brings you here ?" Pushkali replied to Utpala–"Beloved of gods ! Where is *shramanopasak* Shankh ?" Utpala said to Pushkali–"Beloved of gods ! He is in his *paushadh shaala* observing partial-ascetic vow (*paushadh vrat*) with complete celibacy ... and so on up to ... with religious awakening."

पुष्कली द्वारा शंख श्रावक को आहार सहित पौषध का निमंत्रण, शंख द्वारा अस्वीकार

PUSHKALI INVITES SHANKH FOR *PAUSHADH* WITH FOOD INTAKE

१६. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ गमणागमणाए पडिक्कमइ, ग. प. २ संखे समणोवासयं वंदइ

नमंसइ, वं. २ एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं से विउले असण० जाव साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो।'

[१६] फिर पुष्कली श्रमणोपासक, जिस पौषधशाला में शंख श्रमणोपासक था, वह वहाँ उसके पास आया और गमनागमन का प्रतिक्रमण करने के बाद शंख श्रमणोपासक को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार बोला—"देवानुप्रिय! हमने वह विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम (भोजन) तैयार करा लिया है। अतः देवानुप्रिय! हम दोनों चलें और वह विपुल अशनादि आहार एक-दूसरे को देते हुए और उपभोगादि करते हुए पौषध करें।"

16. Then Pushkali *shramanopasak* came to the *paushadh shaala* (austerity chamber) where Shankh was observing his vow. After doing critical review for his movement he greeted Shankh and said–"Beloved of gods ! As advised by you, we have prepared ample *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food). As such, O beloved of gods ! Please come; let's go and observe partial ascetic vow offering that food to one another and eating it."

१७. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी—'नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए। कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए। तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा जाव विहरह।'

[१७] (यह सुनकर) शंख श्रमणोपासक ने पुष्कली श्रमणोपासक से इस प्रकार कहा—"देवानुप्रिय! उस विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य का उपभोग आदि करते हुए यावत् मेरे लिये (अब) पौषध करना कल्पनीय नहीं है। पौषधशाला में बिना आहार पौषध अंगीकार करके यावत् धर्मजागरणा करते हुए रहना मेरे लिए कल्पनीय है। अतः हे देवानुप्रिय! तुम सब अपनी इच्छानुसार उस विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य (आहार) का उपभोग आदि करते हुए यावत् पौषध का अनुपालन करो।"

17. Hearing this, Shankh *shramanopasak* said to Pushkali *shramanopasak*–"Beloved of gods ! Now it is not proper for me to enjoy that ample staple food, liquids, general food, and savoury food... and so on up to... observe partial ascetic vow. For me now it is proper just to

observe partial ascetic vow without any food and drinks... and so on up to... with religious awakening. Therefore, beloved of gods ! You all enjoy all that food as you wish... and so on up to... observe the partial ascetic vow."

पुष्कली आदि श्रमणोपासकों द्वारा खाते-पीते पौषध का अनुपालन करना

PUSHKALI AND OTHER SHRAMANOPASAKS OBSERVE PAUSHADH WITH FOOD

१८. तए णं से पोक्खली समणोवासगे संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडि. २ सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ ते समणोवासए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव विहरइ। तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं-पाणं- खाइमं-साइमं जाव विहरह। संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ।

[१८] तत्पश्चात् वह पुष्कली श्रमणोपासक, शंख श्रमणोपासक की पौषधशाला से वापस लौटकर और श्रावस्ती नगरी के मध्य में से होता हुआ, जहाँ वे (साथी) श्रमणोपासक थे, वहाँ आया और उन श्रमणोपासकों से इस प्रकार बोला—"देवानुप्रियो! शंख श्रमणोपासक निराहार-पौषधव्रत लेकर पौषधशाला में यावत् स्थित है। उसने कहा है कि "देवानुप्रियो! तुम सब इच्छानुसार उस विपुल अशनादि आहार को परस्पर देते हुए यावत् (उपभोग करते हुए) पौषध का अनुपालन करो। शंख श्रमणोपासक अब नहीं आएगा।"

18. Then Pushkali *shramanopasak* left Shankh *shramanopasak*'s *paushadh shaala* (austerity chamber), crossed Shravasti city to return to the group of *shramanopasak*s and said–"Beloved of gods ! Shankh *shramanopasak* is in his *paushadh shaala* observing foodless partial-ascetic vow... and so on up to... with religious awakening. He conveys– 'Beloved of gods! You all enjoy all that ample food sharing as you wish... and so on up to... observe the partial ascetic vow'; now Shankh *shramanopasak* will not come."

१९. तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं आसाएमाणा जाव विहरंति।

[१९] (यह सुनकर) उन श्रमणोपासकों ने उस विपुल अशन-पान-खाद्य-स्वाद्य रूप भोजन को खाते-पीते हुए यावत् (उपभोग करते हुए) पौषध का अनुपालन किया।

19. (On hearing this,) those *shramanopasaks* observed partial ascetic vow eating and consuming all that ample food.

शंख तथा अन्य श्रमणोपासकों द्वारा भगवान की सेवा

SHANKH AND OTHER *SHRAMANOPASAKS* WORSHIP BHAGAVAN

२०. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-'सेयं खलु मे कल्लं पाउ. जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, एवं सं. २ कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पो. प. २ सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, स. प. २ पायविहारचारेणं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासइ। अभिगमो नत्थि।

[२०] (दूसरी ओर) उस शंख श्रमणोपासक को पूर्वरात्रि व्यतीत होने पर, पिछली रात्रि के समय में धर्म-जागरिकापूर्वक जागरणा करते रहने से इस प्रकार का अध्यवसाय यावत् (विचार) उत्पन्न हुआ-'कल प्रातःकाल यावत् जाज्वल्यमान (सूर्योदय) हो जाने पर श्रमण भगवान महावीर को वन्दना-नमस्कार करके यावत् पर्युपासना करके वहाँ से लौट कर पाक्षिक पौषध पालना मेरे लिए श्रेयस्कर है।' इस प्रकार का चिन्तन कर वह प्रातःकाल सूर्योदय होने पर अपनी पौषधशाला से बाहर निकला। शुद्ध (स्वच्छ) एवं सभा में प्रवेश करने योग्य मंगल (मांगलिक) वस्त्र ठीक तरह से पहनकर अपने घर से चला और पाद विहार करता हुआ श्रावस्ती नगरी के मध्य में होकर भगवान की सेवा में पहुँचा, यावत् उनकी पर्युपासना करने लगा। वहाँ अभिगम नहीं (कहना चाहिए।)

20. When the night ended, as a consequence of last night's religious awakening, Shankh *shramanopasak* was inspired with an idea—'When the sun dawns and there is light it would be beneficial for me to go and offer homage and salutations to Shraman Bhagavan Mahavir and then continue observing my partial ascetic vow.' Resolving thus he spent rest of the night and left his *paushadh shaala* in the morning. Having properly dressed in fresh and auspicious dress he came out of his residence, walked through Shravasti city and came to Bhagavan... and so on up to... commenced worship. Here *abhigam* (codes of courtesy meant for a religious assembly) are redundant.

२१. तए णं ते समणोवासगा कल्लं पाउ. जाव जलंते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति, स. प. २ एगयओ मिलायंति, एगयओ मिलाइत्ता सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासंति।

[२१] इसके बाद (आहारसहित पौषध कर लेने के बाद) वे सब श्रमणोपासक, (अगले दिन) प्रातःकाल यावत् सूर्योदय होने पर स्नानादि करके यावत् शरीर को अलंकृत कर अपने-अपने घरों से निकले और एक स्थान पर मिले। फिर सभी मिलकर पूर्ववत् भगवान की सेवा में पहुँचे, यावत् पर्युपासना करने लगे।

21. The other *shramanopasak*s (after observing *paushadh* with food) left their respective houses after taking bath and adorning themselves, and came to a meeting point. Then they all went together to Bhagavan... and so on up to... commenced worship.

भगवान की देशना और शंख श्रमणोपासक की निन्दादि न करने की प्रेरणा

BHAGAVAN'S SERMON AND ADVISE NOT TO CENSURESHANKH

२२. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य. धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ।

[२२] तदनन्तर श्रमण भगवान महावीर ने उन श्रमणोपासकों और उस विशाल परिषद् को धर्मकथा कही (धर्मदेशना दी)। यावत् वे सभी आज्ञा के आराधक हुए।

22. After that Shraman Bhagavan Mahavir gave his sermon to the large gathering... and so on up to... they all became true spiritual aspirants (*aaraadhak*).

२३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा. उट्ठाए उट्ठेंति, उ. २ समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं. २ जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा. २ संखं समणोवासयं एवं वयासी-"तुमं णं देवाणुप्पिया! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी-'तुब्भे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं० जाव विहरिस्सामो'। तए णं तुमं पोसहसालाए जाव विहरिए तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया! अम्हे हीलसि।"

[२३] तत्पश्चात् वे श्रमणोपासक, श्रमण भगवान महावीर के पास से धर्म (धर्मोपदेश) सुनकर और हृदय में अवधारण कर हर्षित एवं सन्तुष्ट हुए। फिर वे खड़े हुए और श्रमण भगवान

महावीर को वन्दना नमस्कार किया। तदोपरान्त वे सभी शख श्रमणोपासक के पास आए और शंख श्रमणोपासक से इस प्रकार कहने लगे—देवानुप्रिय! कल आपने ही हमें इस प्रकार कहा था कि "देवानुप्रियो! तुम विपुल अशनादि भोजन तैयार करवाओ, हम सभी भोजन देते हुए यावत् उपभोग करते हुए पौषध का अनुपालन करेंगे। परन्तु फिर आप नहीं आए और आपने अकेले ही पौषधशाला में यावत् निराहार पौषध कर लिया। अत: देवानुप्रिय! आपने हमारी अवहेलना की है।"

23. Listening to the sermon of Shraman Bhagavan Mahavir and understanding it, those *shramanopasak*s were pleased and contented. They stood up and paid homage to Bhagavan. Having done that they all went to Shankh *shramanopasak* and said–"Beloved of gods ! Yesterday you had told us–'Beloved of gods! Please arrange for plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food). We will spend days and nights eating... and so on up to... partial-ascetic vow (*Paakshik Paushadh Vrat*).' But then you did not come and we observed the vow without you. Therefore, beloved of gods! You have slighted us."

२४. 'अज्जो!' त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—मा णं अज्जो! तुब्भे संखं समणोवासयं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमन्नह। संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए।

[२४] (उन श्रमणोपासकों की इस बात को सुनकर) आर्यों! इस प्रकार (सम्बोधित करते हुए) श्रमण भगवान महावीर ने उन श्रमणोपासकों से कहा—"आर्यों! तुम श्रमणोपासक शंख की हीलना, निन्दा, खिंसना, कोसना, गर्हा और अवमानना (अपमान) मत करो। क्योंकि शंख श्रमणोपासक प्रियधर्मा और दृढ़धर्मा है। इसने (प्रमाद और निद्रा का त्याग करके) सुदर्शन (सुरक्षा या सुदृश्या नामक) जागरिका जागृत की है।"

24. (At this) "Noble ones !" Addressing thus, Shraman Bhagavan Mahavir said to those *shramanopasak*s–"Noble ones! You should neither treat him with contempt (*heelana*), nor reprimand (*khimsana*), criticize (*ninda*), curse (*kosana*), slander (*garha*) or insult (*apamaan*) him. This is because Shankh *shramanopasak* loves religion and is resolute in observance. He has observed the prescribed and proper religious awakening (*Sudarshan Jaagarika*).

विवेचन—भगवान के इस प्रकार कहने का तात्पर्य यह था कि यदि कोई व्यक्ति पहले अल्पत्याग करने की सोचता है, परन्तु बाद में उसके परिणाम उससे अधिक और उच्च त्याग के हो जाते हैं, तो वह व्यक्ति निन्दनीय, गर्हणीय एवं तिरस्करणीय तथा अवमान्य नहीं होता, बल्कि प्रशंसनीय होता है।

Elaboration—The message of Bhagavan is that if a person thinks of renouncing some minor thing but later he resolves of take his renouncement to a higher plane, he is not an object of criticism or insult but that of praise and emulation.

शास्त्रों में पौषध के चार प्रकार बताये हैं—(१) आहारत्याग पौषध, (२) शरीर सत्कार त्याग पौषध, (३) ब्रह्मचर्य-पौषध और (४) अव्यापार पौषध।

According to scriptures *paushadh* (partial-ascetic vow) is of four kinds—(1) *Aahaar-tyaag Paushadh* or partial-ascetic vow without food, (2) *Sharira satkaar tyaag Paushadh* or partial-ascetic vow without body care, (3) *Brahmacharya Paushadh* or partial-ascetic vow with celibacy, and (4) *Avyapaar Paushadh* or partial-ascetic vow renouncing business activities.

आहारत्याग पौषध वह है जिसमें श्रावक ८ प्रहर के लिए चार प्रकार के आहार (अशन, पान, खादिम, स्वादिम) का त्याग करके धर्मध्यानादि करता है। **शरीर सत्कार त्याग पौषध** वह है, जिसमें शरीर को संस्कारित करने वाले पदार्थों जैसे स्नान, उबटन, गन्ध, विलेपन, तेल, इत्र, पुष्प, वस्त्र, आभरण आदि का त्याग किया जाता है। **ब्रह्मचर्य-पौषध** वह है जिसमें अब्रह्मचर्य (मैथुन) का सर्वथा त्याग करके कुशल अनुष्ठानों द्वारा धर्मवृद्धि करना है और **अव्यापार-पौषध** वह है, जिसमें कृषि-वाणिज्यादि सर्व सावद्य व्यापारों तथा अस्त्र-शस्त्र आदि का त्याग करके शुद्ध धर्मध्यान एवं आत्मचिन्तन द्वारा समय व्यतीत किया जाता है।

Aahaar-tyaag Paushadh or partial-ascetic vow without food—this vow is observed by renouncing four kinds of food (*ashan, paan, khadya, svadya* or staple food, liquids, general food, and savoury food) and devoting time in religious study and other prescribed ascetic activities. *Sharira satkaar tyaag Paushadh* or partial-ascetic vow without body care—this vow is observed by renouncing all activities of body care including bathing, massaging applying creams pastes etc. using perfumes, changing apparel and wearing ornaments. *Brahmacharya Paushadh* or partial-

ascetic vow with celibacy—this vow is observed by complete celibacy and devoting time religious activities. *Avyapaar Paushadh* or partial-ascetic vow renouncing business activities—this vow is observed by renouncing all business or profession related activities including farming and trading, and devoting time exclusively in religious activities like study and meditation. All these vows are observed for a minimum of eight quarters (one day-night) or multiples of that depending on one's ability.

भगवान द्वारा त्रिविध जागरिका-प्ररूपणा

BHAGAVAN DEFINES THREE KINDS OF *JAAGARIKA*

२५-१. [प्र.] 'भंते!' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वं. २ एवं वयासी-कइविहा णं भंते! जागरिया पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा! तिविहा जागरिया पन्नत्ता, तं जहा-बुद्धजागरिया १, अबुद्धजागरिया २, सुदक्खुजागरिया ३।

२५-१. [प्र.] 'हे भगवन!' इस प्रकार सम्बोधित करते हुए भगवान गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार पूछा-भगवन्! जागरिका कितने प्रकार की कही गई है।

[उ.] गौतम! जागरिका तीन प्रकार की कही गई है। यथा-(१) बुद्धजागरिका, (२) अबुद्धजागरिका और (३) सुदर्शनजागरिका।

25-1. [Q.] "*Bhante !*" Addressing thus Bhagavan Gautam Swami asked after paying homage and salutation to Shraman Bhagavan Mahavir—"*Bhante ! Jaagarika* (religious-awakening) is said to be of how many types ?"

[Ans.] "Gautam ! *Jaagarika* (religious-awakening) is said to be of three kinds-(1) *Buddha-jaagarika*, (2) *ABuddha-jaagarika*, and (3) *Sudarshan-jaagarika.*

२५-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'तिविहा जागरिया पन्नत्ता, तं जहा-बुद्धजागरिया १ अबुद्धजागरिया २ सुदक्खुजागरिया ३'?

[उ.] गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पन्ननाण-दंसणधरा जहा खंदए (स. २ उ. १) जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी, एए णं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति। जे इमे अणगारा भगवंतो

इरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभयारी, एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति। जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'तिविहा जागरिया जाव सुदक्खुजागरिया'।

२५-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से कहा गया है कि जागरिका तीन प्रकार की है, यथा—बुद्ध-जागरिका, अबुद्ध-जागरिका और सुदर्शन-जागरिका?

[उ.] हे गौतम! जो उत्पन्न हुए केवलज्ञान-केवलदर्शन के धारक अरिहन्त भगवान हैं, इत्यादि स्कन्दक-प्रकरण के अनुसार (शतक २, उ. १ में उक्त) जो यावत् सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हैं, वे बुद्ध हैं और वहीं बुद्धजागरिका करते हैं, जो ये अनगार भगवन्त ईर्यासमिति, भाषासमिति आदि पाँच समितियों और तीन गुप्तियों से युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हैं, वे अबुद्ध (अल्पज्ञ-छद्मस्थ) हैं और वहीं अबुद्धजागरिका करते हैं। जो ये श्रमणोपासक, जीव-अजीव आदि तत्त्वों के ज्ञाता यावत् पौषधादि करते हैं, वे सुदर्शनजागरिका करते हैं। इसी कारण से, हे गौतम! तीन प्रकार की जागरिका यावत् सुदर्शनजागरिका कही गई है।

25-2. [Q.] "*Bhante!* Why it is said that *jaagarika* (religious-awakening) is of three kinds–(1) *Buddha-jaagarika*, (2) *Abuddha-jaagarika*, and (3) *Sudarshan-Jaagarika*?

[Ans.] "Gautam! Arihant Bhagavants are endowed with omniscience (*Keval-jnana*) and omni-perception (*Keval-darshan*)... and so on up to... are all-knowing and all-seeing, are *Buddha* (enlightened). It is they who indulge in *Buddha-jaagarika* (enlightened religious-awakening). The Anagaar Bhagavants (accomplished ascetics) are endowed with five self regulations (*samitis*) including that of movement (*irya samiti*) and three restraints (*guptis*)... and so on up to... are undeclared celibates and *Abuddha* (unenlightened; short of omniscience). It is they who indulge in *Abuddha-jaagarika* (unenlightened religious-awakening). The *shramanopasaks* understand the fundamental entities including soul and matter... and so on up to... practice partial ascetic and other vows. It is they who indulge in *Sudarshan jaagarika* (prescribed and proper religious-awakening).

विवेचन—भगवान महावीर ने त्रिविध जागरिका का स्वरूप बताते हुए कहा कि अज्ञान-निद्रा आदि प्रमाद से रहित केवलज्ञान-केवलदर्शन रूप बुद्धों की जागरिका, बुद्धजागरिका कहलाती है। छद्मस्थ

ज्ञानवान अबुद्धों की जागरिका, अबुद्धजागरिका कहलाती है और जो सम्यग्दृष्टि श्रमणोपासक, पौषध आदि में प्रमाद निद्रा आदि का त्याग कर धर्मजागरणा करते हैं, उनकी यह जागरिका सुदर्शना जागरिका कहलाती है।

Elaboration—Explaining three kinds of religious awakening, Bhagavan Mahavir has said that the religious awakening of the enlightened, who are free of stupor and endowed with omniscience and omni-perception, is called *Buddha-jaagarika* (enlightened religious-awakening). That of accomplished ascetics, who are short of omniscience, is called *Abuddha-jaagarika* (unenlightened religious-awakening). That of righteous *shramanopasak*s, who practice partial ascetic and other vows meticulously is called *Sudarshan-jaagarika* (prescribed and proper religious-awakening).

शंख द्वारा क्रोधादि कषाय-परिणामविषयक प्रश्न और भगवान द्वारा उत्तर

BHAGAVAN ANSWERS SHANKH'S QUESTIONS ABOUT FRUITS OF PASSIONS

२६. तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता २ एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते! जीवे किं बंधइ? किं पगरेइ? किं चिणाइ? किं उवचिणाइ?

संखा! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स (स. १ उ. १) जाव अणुपरियट्टइ।

२६. [प्र.] इसके पश्चात् उस शंख श्रमणोपासक ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार पूछा—"भगवन्! क्रोध के वश आर्त्त बना हुआ जीव क्या बाँधता है? (अर्थात् कौन-सा कर्म बाँधता है?) क्या करता है? किसका चय करता है और किसका उपचय करता है?"

[उ.] शंख! क्रोध के वश आर्त्त बना हुआ जीव आयुष्यकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की शिथिल बन्धन से बंधी हुई प्रकृतियों को गाढ (मजबूत) बन्धन वाली करता है, इत्यादि, प्रथम शतक (प्रथम उद्देशक) में असंवृत अनगार के वर्णन के समान यावत् वह संसार में परिभ्रमण करता है, ऐसा जान लेना चाहिए।

26. [Q.] Then *shramanopasak* Shankh paid homage and salutations to Shraman Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante!* What bondage (of

karma) does a *jiva* (living being/soul) afflicted with anger attract? What does it do? What does it assimilate (*chaya*) and what does it augment (*upachaya*) ?"

[Ans.] Shankh! A *jiva* (living being/soul) afflicted with anger strengthens the weak qualitative bondage (*prakriti-bandh*) of the seven *karmas* other than *ayushya karma* (life-span determining *karma*) etc. as mentioned in first chapter (first lesson) under description of *asamvrit anagaar* (ascetic who has not blocked the inflow of *karmas*)... and so on up to... moves around in the endless, infinite, extended forest of cycles of rebirth having four genuses.

२७. [प्र.] माणवसट्टे णं भंते ! जीवे. ?

[उ.] एवं चेव।

२७. [प्र.] भगवन्! मान-वश आर्त्त बना हुआ जीव क्या बाँधता है? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] इसी प्रकार (पूर्ववत् कहे उत्तर के अनुसार) समझ लेना चाहिए।

27. [Q.] "*Bhante !* What bondage (of *karma*) does a *jiva* (living being/soul) afflicted with conceit attract ? (and other questions).

[Ans.] Same as aforesaid answer (26).

२८. एवं मायावसट्टे वि। एवं लोभवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ।

[२८] इसी तरह माया-वशार्त्त जीव के तथा लोभवशार्त्त जीव के विषय में भी जानना चाहिए। यावत् वह संसार में परिभ्रमण करता है।

28. The same is also true for a *jiva* (living being/soul) afflicted with deceit and greed and so on up to... moves around in the endless, infinite, extended forest of cycles of rebirth having four genuses.

श्रमणोपासकों द्वारा शंख श्रावक से क्षमायाचना तथा स्वगृहगमन

SHRAMANOPASAKS RETURN AFTER SEEKING FORGIVENESS FROM SHANKH

२९. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वं. २ जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवा. २ संखं समणोवासयं वंदंति नमंसंति, वं. २ एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति।

[२९] श्रमण भगवान महावीर से (क्रोधादि कषाय का) ऐसा फल सुनकर और उन्हें अवधारण करके वे (सभी) श्रमणोपासक उसी समय (कर्मबन्ध से) भयभीत, त्रस्त एवं संसारभय से उद्विग्न हुए। तदोपरान्त उन्होंने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया और फिर जहाँ शंख श्रमणोपासक था, वहाँ उसके पास आए। वहाँ उन्होंने शंख श्रमणोपासक को वन्दन-नमस्कार किया और फिर अपने उस अविनयरूप अपराध के लिए विनयपूर्वक बार-बार क्षमायाचना करने लगे।

29. On hearing about and understanding these consequences (of anger and other passions) those *shramanopasak*s got afraid and distressed of the impending cycles of rebirth (*samsaar*). After that they paid homage to Shraman Bhagavan Mahavir and came where Shankh *shramanopasak* sat. Arriving there, they paid him homage and humbly sought forgiveness again and again for the fault of immodesty they had earlier committed.

३०. तए णं ते समणोवासगा सेसं जहा आलभियाए (स. ११ उ. १२) जाव पडिगया।

[३०] तत्पश्चात् उन सभी श्रमणोपासकों ने भगवान से कई प्रश्न पूछे, इत्यादि सब वर्णन (श. ११ उ. १२ में वर्णित) आलभिका (नगरी) के (श्रमणोपासकों के) समान जानना चाहिए, यावत् वे सभी अपने-अपने स्थान पर लौट गये।

30. The *shramanopasak*s then asked numerous questions to Bhagavan Mahavir etc. as mentioned about the *shramanopasak*s of Aalabhika city (Chapter-11, lesson-12)... and so on up to... returned to their respective abodes.

शंख की मुक्ति के विषय में गौतम स्वामी का प्रश्न, भगवान का उत्तर

GAUTAM SWAMI'S QUESTION ABOUT SHANKH'S LIBERATION

३१. [प्र.] 'भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं।

[उ.] सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स (स. ११ उ. १२) जाव अंतं काहेइ।

सेवं भंते! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ।

॥ बारसमे सए : पढमो उद्देसओ समत्तो ॥१२-१॥

३१. [प्र.] 'हे भगवन्!', ऐसा कहकर भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया फिर उनसे इस प्रकार पूछा—

भगवन्! क्या शंख श्रमणोपासक आप देवानुप्रिय के पास प्रव्रजित होने में समर्थ है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है; इत्यादि समस्त वर्णन (श. ११ उ. १२ में) ऋषिभद्र पुत्र श्रमणोपासक विषयक कथन के समान जानना चाहिए, यावत् सर्वदु:खों का अन्त करेगा।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर श्री गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

31. [Q.] *Bhante !* Is *shramanopasak* Shankh prepared to renounce his household, get tonsured and get initiated to be an abode-less ascetic in your order ?

[Ans.] Gautam ! That is not true etc. as mentioned about *shramanopasak* Rishibhadraputra (Chapter-11, lesson-12)

...and so on up to... end all miseries.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

● END OF THE FIRST LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER ●

बीओ उद्देसओ : जयंती
द्वितीय उद्देशक : जयंती श्रमणोपासिका
DVITIYA UDDESHAK (SECOND LESSON) : JAYANTI SHRAMANOPASIKA

जयन्ती श्रमणोपासिका और उससे सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों का परिचय

INTRODUCTION OF JAYANTI AND HER KINFOLK

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नयरी होत्था। वण्णओ। चंदोवतरणे चेइए। वण्णओ।

[१] उस काल और उस समय में कौशाम्बी नाम की नगरी थी। (उसका वर्णन औपपातिक सूत्र से जान लेना चाहिए।) वहाँ चन्द्रोपतरण (चन्द्रावतरण) नाम का उद्यान था। (उसका वर्णन भी औपपातिक सूत्र के अनुसार जान लेना चाहिए।)

1. During that period of time there was a city called Kaushambi. Description (of the city as mentioned in *Aupapatik Sutra*). Outside the city there was a chaitya (temple complex and garden) called Chandravataran. Description (as mentioned in *Aupapatik Sutra*).

२. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मियावईए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे नामं राया होत्था। वण्णओ।

[२] उस कौशाम्बी नगरी में सहस्रानीक राजा का पौत्र, शतानीक राजा का पुत्र, चेटक राजा का दौहित्र, मृगावती देवी (रानी) का आत्मज और जयन्ती श्रमणोपासिका का भतीजा 'उदयन' नामक राजा था। (उसका वर्णन भी औपपातिक सूत्र के अनुसार जान लेना चाहिए।)

2. In that Kaushambi city ruled a king named Udayan, who was the grandson of king Sahasraneek, son of king Shataneek, grandson of king Chetak (on maternal side), son of queen Mrigavati and nephew (brother's son) of *shramanopasika* Jayanti. (Description as mentioned in *Aupapatik Sutra*).

३. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावई नामं देवी होत्था। सुकुमाल. जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ।

[३] उसी कौशाम्बी नगरी में सहस्रानीक राजा की पुत्रवधू, शतानीक राजा की पत्नी, चेटक राजा की पुत्री, उदयन राजा की माता, जयन्ती श्रमणोपासिका की भौजाई (भाभी), मृगावती नामक देवी थी। वह सुकुमाल हाथ-पैर वाली, यावत् सुरूपा श्रमणोपासिका यावत् विचरण करती थी।

3. In the same Kaushambi city also lived queen Mrigavati, who was daughter-in-law of king Sahasraneek, wife of king Shataneek, daughter of king Chetak, mother of king Udayan, and sister-in-law (brother's wife) of *shramanopasika* Jayanti. She had delicate limbs... and so on up to... beautiful... and so on up to... spent their life (enkindling their souls with ascetic religion and austerities).

४. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मियावईए देवीए नणंदा, वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसेज्जायरी जयंती नामं समणोवासिया होत्था। सुकुमाल. जाव सुरूवा अभिगय जाव विहरइ।

[४] उसी कौशाम्बी नगरी में सहस्रानीक राजा की पुत्री, शतानीक राजा की बहिन, उदयन राजा की बूआ, मृगावती देवी की ननन्द और वैशालिक (त्रिशला के पुत्र अर्थात् भगवान महावीर) के श्रावक-आर्हतों (अर्हन्त वचनों को सुनने-सुनाने वाले अर्थात् साधुओं) की पूर्व (प्रथम) शय्यातरा 'जयन्ती' नाम की श्रमणोपासिका थी। वह सुकुमाल यावत् सुरूपा और जीवाजीवादि तत्त्वों की ज्ञाता यावत् विचरती थी।

4. In the same Kaushambi city also lived a *shramanopasika* named Jayanti, who was daughter of king Sahasraneek, sister of king Shataneek, aunt (father's sister) of king Udayan, sister-in-law (husband's sister) of queen Mrigavati, and was the leading lay woman to offer place of stay to ascetic followers (*shravak-aarhants* or those who listened to the sermons of *Arhants*) of Vaishalik (Trishala's son, that is Bhagavan Mahavir). She had delicate limbs... and so on up to... beautiful... and knower of the fundamental entities including soul and

matter... and so on up to... spent her life (enkindling their souls with ascetic religion and austerities).

विवेचन—जयन्ती श्रमणोपासिका भगवान महावीर के साधुओं को स्थान देने में प्रसिद्ध थी। जो साधु पहली बार कौशाम्बी नगरी में आते थे, वे ठहरने के लिए उससे स्थान की याचना करते थे और जयन्ती श्रमणोपासिका अत्यन्त भक्तिभाव से उन्हें ठहरने के लिए स्थान देती थी। इस कारण वह 'पूर्वशय्यातरा' (पुव्वसेज्जायरी) के नाम से प्रसिद्ध थी।

Elaboration—Jayanti *shramanopasika* was known for providing place of stay for the ascetic disciples of Bhagavan Mahavir. The ascetics who came to Kaushambi city sought a place to stay from Jayanti *shramanopasika* and she took lead in offering a suitable place with complete devotion. That is the reason she became famous as *Puvvasejjayari* or *Purvashayyatara* (leading provider of place of stay)

जयन्ती श्रमणोपासिका एवं मृगावतीदेवी का राजपरिवार सहित भगवान की सेवा में गमन
JAYANTI AND MRIGAVATI GO TO BHAGAVAN'S ASSEMBLY

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ।

[५] उस काल और उस समय में (भगवान महावीर) स्वामी का कौशाम्बी में समवसरण लगा यावत् परिषद् पर्युपासना करने लगी।

5. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived there (Kaushambi city)... and so on up to... the religious assembly started and people worshiped him.

६. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुं बियपुरिसे सद्दावेइ, को. स. २ एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नयरिं सब्भिंतरबाहिरियं एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासइ।

[६] उस समय उदयन राजा को जब यह (भगवान के कौशाम्बी में आगमन का) पता चला तो वह हर्षित और सन्तुष्ट हुआ। उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर इस प्रकार कहा—"देवानुप्रियो! कौशाम्बी नगरी को अन्दर और बाहर से शीघ्रतापूर्वक साफ करवाओ"; इत्यादि सब वर्णन (औपपातिक सूत्र में वर्णित) कोणिक राजा के समान जानना चाहिए यावत् पर्युपासना करने लगा।

6. When king Udayan came to know of this (Bhagavan's arrival in Kaushambi) he was pleased and contented. He called his attendants

and instructed—"Beloved of gods! Get Kaushambi city cleaned from inside and outside fast etc."; quote all details as mentioned in Aupapatik Sutra in connection with king Kunik. ... and so on up to...commenced worship.

७. तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मियावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवा. २ मियावइ देविं एवं वयासी—एवं जहा नवमसए उसभदत्तो (स. ९ उ. ३३) जाव भविस्सइ।

[७] तदोपरान्त वह जयन्ती श्रमणोपासिका भी इस (भगवान के पधारने का) समाचार सुनकर हर्षित एवं सन्तुष्ट हुई और मृगावती के पास आकर इस प्रकार बोली—इत्यादि आगे का सम्पूर्ण कथन नौवें शतक (उ. ३३) में ऋषभदत्त ब्राह्मण के प्रकरण के समान जानना चाहिए।

7. Jayanti *shramanopasika* was also pleased and contented to hear this news (Bhagavan's arrival in Kaushambi). She came to Mrigavati and said etc. quote all details as mentioned in the story of Rishabh-datt Brahmin in chapter-9 (lesson-33).

८. तए णं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा (स. ९. उ. ३३) जाव पडिसुणेइ।

[८] तदोपरान्त उस मृगावती देवी ने भी जयन्ती श्रमणोपासिका के वचन उसी प्रकार स्वीकार किये, जिस प्रकार (शतक ९, उ. ३३, में) देवानन्दा ब्राह्मणी ने ऋषभदत्त के वचन) यावत् स्वीकार किये थे।

8. Queen Mrigavati too accepted Jayanti *shramanopasika*'s words like Devananda Brahmini had accepted the words of Rishabh-datt Brahmin... and so on up to... accepted her suggestion.

९. तए णं सा मियावई देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को. स. २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तजोइय. जाव (स. ९, उ. ३३) धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति।

[९] तदोपरान्त उस मृगावती देवी ने कौटुम्बिक पुरुषों का बुलाया और उनसे इस प्रकार कहा—"देवानुप्रियो! जिसमें वेगवान् घोड़े जुते हों, ऐसा यावत् धार्मिक श्रेष्ठ रथ जोत कर शीघ्र ही उपस्थित करो।" कौटुम्बिक पुरुषों ने यावत् रथ लाकर उपस्थित किया और यावत् उनकी आज्ञा वापिस सौंपी (पालन किया)।

9. Then Queen Mrigavati called her attendants and said—"Beloved of gods ! Quickly present a chariot that is harnessed with fleet horses... and so on up to... is religious and best." The attendants followed the order... and so on up to... brought a chariot.

१०. तए णं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव (स. ९ उ. ३३) अंतेउराओ निग्गच्छइ, अं. नि. २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, ते. उ. २ जाव (स. ९ उ. ३३) रूढा।

[१०] तदन्तर उस मृगावती देवी और जयन्ती श्रमणोपासिका ने स्नानादि करके यावत् शरीर को अलंकृत किया। फिर कुब्जा (आदि) दासियों के साथ यावत् वे दोनों अन्तःपुर से निकलीं। (यहाँ तक का वर्णन श. ९ उ. ३३ के अनुसार जानना।) फिर वे दोनों बाहरी उपस्थानशाला में आयीं तदोपरान्त जहाँ श्रेष्ठ धार्मिक रथ था, उसके पास आकर (श. ९ उ. ३३ के अनुसार यहाँ तक जानना चाहिए।) यावत् रथारूढ़ हुईं।

10. Queen Mrigavati and Jayanti *shramanopasika* took their bath... and so on up to... embellished their body. They both then came out of the inner quarters accompanied by many maids including the hunchbacked ones (as described in Ch.-9, Le.-33). They proceeded to the outer courtyard where the carriage was parked... and so on up to... boarded the carriage (as described in Ch.-9, Le.-33).

११. तए णं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं रूढा समाणी णियगपरियाल. जहा उसभदत्तो (स. ९ उ. ३३) जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ।

[११] इसके बाद मृगावती देवी जयन्ती श्रमणोपासिका के साथ श्रेष्ठ धार्मिक यान पर आरूढ़ होकर अपने परिवार के साथ, (इत्यादि सब वर्णन श. ९ उ. ३३ में ऋषभदत्त के समान जानना चाहिए।) यावत् धार्मिक श्रेष्ठ यान से नीचे उतरी।

11. After that Queen Mrigavati and Jayanti *shramanopasika* riding the best religious carriage and surrounded by their family... and so on up to... alighted from it like Rishabh-datt (as described in Ch.-9, Le.-33).

१२. तए णं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा (स. ९ उ. ३३) जाव वंदइ नमंसइ, वं. २ उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया चेव जाव (स. ९ उ. ३३) पज्जुवासइ।

[१२] तत्पश्चात् वह मृगावती देवी, जयन्ती श्रमणोपासिका एवं बहुत-सी कुब्जा आदि दासियों के साथ श्रमण भगवान महावीर की सेवा में देवानन्दा ब्राह्मणी के समान पहुँची (श. ९, उ. ३३ के अनुसार) यावत् उसने भगवान को वन्दन-नमस्कार किया फिर उदयन राजा को आगे करके समवसरण में बैठी और उसके पीछे स्थित होकर (इत्यादि सब वर्णन श. ९ उ. ३३ के समान समझना चाहिए) यावत् पर्युपासना करने लगी।

12. Queen Mrigavati, with Jayanti *shramanopasika*, surrounded by her numerous maids, including the hunchbacked, approached Shraman Bhagavan Mahavir like Devananda Brahmini (as described in Ch.-9, Le.-33)... and so on up to... paid homage and obeisance. She than sat behind king Udayan... and so on up to... commenced worship (as described in Ch.-9, Le.-33, St.-12).

[१३] तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहा. जाव धम्मं परिकहेइ जाव परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मियावई देवी वि पडिगया।

[१३] तत्पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने, उदयन राजा, मृगावती देवी, जयन्ती श्रमणोपासिका और उस विशाल महापरिषद् को यावत् धर्मोपदेश दिया, (जिसे सुनकर) यावत् परिषद लौट गई, उदयन राजा और मृगावती रानी भी चले गए।

13. Then Shraman Bhagavan Mahavir gave his sermon to king Udayan, queen Mrigavati, Jayanti *shramanopasika* and that large assembly... and so on up to... the assembly dispersed. King Udayan and queen Mrigavati also left.

कर्मगुरुत्व-लघुत्व सम्बन्धी जयन्ती के प्रश्न और भगवान द्वारा उनका समाधान

JAYANTI'S QUESTIONS AND BHAGAVAN'S ANSWERS

१४. [प्र.] तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वं. २ एवं वयासी—कहं णं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति?

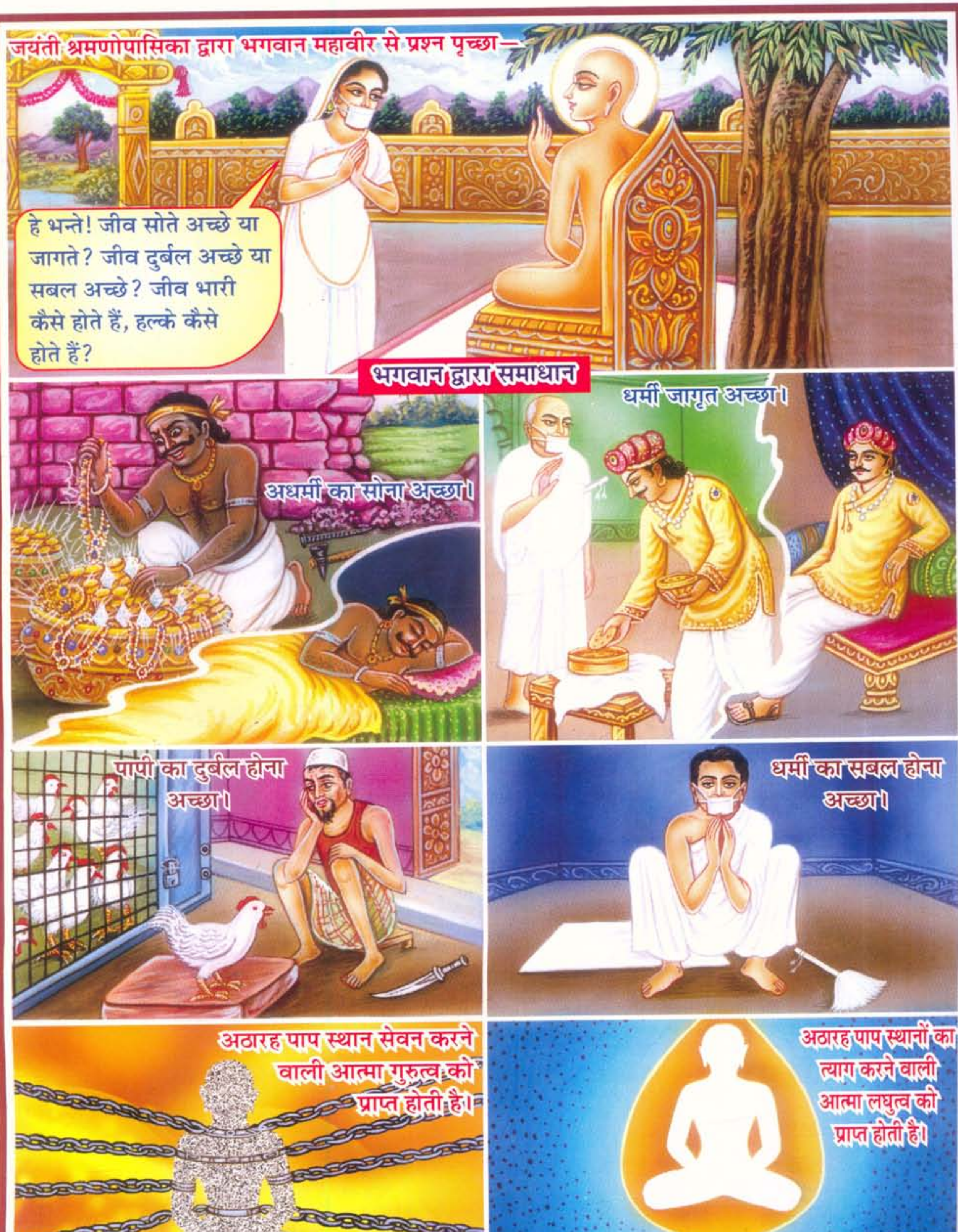

जयंती श्रमणोपासिका द्वारा भगवान महावीर से प्रश्न पृच्छा—
हे भन्ते! जीव सोते अच्छे या जागते? जीव दुर्बल अच्छे या सबल अच्छे? जीव भारी कैसे होते हैं, हल्के कैसे होते हैं?
भगवान द्वारा समाधान
अधर्मी का सोना अच्छा।
धर्मी जागृत अच्छा।
पापी का दुर्बल होना अच्छा।
धर्मी का सबल होना अच्छा।
अठारह पाप स्थान सेवन करने वाली आत्मा गुरुत्व को प्राप्त होती है।
अठारह पाप स्थानों का त्याग करने वाली आत्मा लघुत्व को प्राप्त होती है।

चित्र-परिचय 9

Illustration No. 9

जयन्ती द्वारा प्रश्न पृच्छा और भगवान द्वारा समाधान

विहार करते हुए भगवान महावीर कौशाम्बी नगरी के चन्द्रावतरण उद्यान में पधारे। उनके दर्शनार्थ तत्त्वों की ज्ञाता श्रमणोपासिका 'जयन्ती' भी आई। भगवान की धर्मसभा समाप्त होने के पश्चात् उसने हाथ जोड़कर भगवान से कुछ प्रश्न किये, जिसका समाधान भगवान ने इस प्रकार दिया—

जयन्ती—"हे भन्ते! जीव सोता अच्छा या जागता?"

प्रभु—"जयन्ती! अधर्मी का सोना अच्छा क्योंकि जब तक अधर्मी सोया रहेगा, पापकर्म नहीं करेगा। उठने पर वह पापकर्म में लिप्त हो जायेगा। धर्मी का जागना अच्छा। धर्मी व्यक्ति जागृत रहता है तो वह धर्म में प्रवृत्त रहता है। जागृत अवस्था में वह अधिक से अधिक धर्म कार्य में व्यस्त रहेगा।"

जयन्ती—"प्रभु! जीव दुर्बल अच्छा या सबल?"

प्रभु—"जयन्ती! पापी जीव दुर्बल अच्छा, क्योंकि ऐसी स्थिति में वह कम से कम पापकर्म करेगा। जीवों के शोक, दुःख, परिताप का कारण नहीं बनेगा। धर्मी सबल अच्छा, क्योंकि वह सबल होगा तो अधिक से अधिक धर्माचरण कर सकेगा।"

जयन्ती—"प्रभु! जीव भारी कैसे और हल्का कैसे होता है?"

प्रभु—"जो जीव अठारह पाप स्थानों का सेवन करता है। कर्मरज से लिप्त उसका आत्मा कर्म बन्धनों की बेड़ियों में जकड़ी गुरुत्व को प्राप्त होता है। इसके विपरीत अठारह पाप स्थान का त्याग करने से जीव कर्म पुद्‌गलों से रहित निर्लेप हो जाता है और लघुत्व को प्राप्त होता है।"

—शतक 12, उ. 2

JAYANTI'S QUESTIONS AND BHAGAVAN'S ANSWERS

While his wanderings Bhagavan Mahavir came to Chandravataran garden in Kaushambi city. *Shramanopasika* Jayanti, a knower of the fundamental entities, also came to pay homage. After the discourse was over she joined her palms and asked some questions from Bhagavan. The answer Bhagavan gave were—

Jayanti—"*Bhante !* What is good for living beings – to remain sleeping or awake?"

Bhagavan—"Jayanti ! It is better for irreligious to remain asleep because while they are asleep they do not indulge in sinful deeds. The moment he is awake he gets involved in sin. It is good for a religious person to be awake because as long he is awake he indulges in pious deeds. When he is awake he is busy more and more in religious deeds."

Jayanti—"*Bhante !* What is good for living beings – their being strong or their being weak?"

Bhagavan—"Jayanti ! It is better for irreligious to be weak because being weak they will indulge less and less in sinful deeds and will not cause pain, grief and misery to other beings. It is good for a religious person to be strong because being strong he will indulge more and more in pious deeds."

Jayanti—"*Bhante !* How does a soul become heavy or light?

Bhagavan—"Jayanti ! A *jiva* who indulges in eighteen activities of sin, his soul acquires the dirt of *karma* and is shackled in its bondage to become heavy. A *jiva* who abandons the said eighteen activities of sin gets rid of the dirt of *karma* and becomes light."

—Shatak-12, lesson-2

[उ.] जयंती! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। एवं जहा पढमसए (स. १ उ. ९) जाव वीईवयंति।

१४ [प्र.] तदनन्तर वह जयन्ती श्रमणोपासिका श्रमण भगवान महावीर के पास से धर्मोपदेश सुनकर एवं हृदय में अवधारण करके हर्षित एवं सन्तुष्ट हुई। फिर श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार पूछा—भगवन्! जीव किस कारण से शीघ्र गुरुत्व-भारीपन को प्राप्त होते हैं?

[उ.] जयन्ती! जीव प्राणातिपात से लेकर यावत् मिथ्यादर्शन शल्य तक इस तरह अठारह पापस्थानों के सेवन से शीघ्र गुरुत्व को प्राप्त होते हैं, (और इनसे निवृत्त होकर जीव हल्के होते हैं, इत्यादि सब) प्रथम शतक (उ. ९ में कहे) अनुसार जानना चाहिए यावत् वे संसार समुद्र से पार हो जाते हैं।

14. [Q.] Hearing and understanding the sermon of Bhagavan Mahavir, that Jayanti *shramanopasika* was pleased and contented. She paid homage and salutations to Shraman Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante !* How do souls soon attain heaviness ?

[Ans.] Jayanti ! Through indulgence in (eighteen activities of sin) *praanaatipaat* (harming or destruction of life)... and so on up to... *mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness). (And by abstaining from these, souls soon attain lightness) etc. as mentioned in the first chapter (Le.-9)... and so on up to... terminate the cycles of rebirth.

भवसिद्धिक जीवों के विषय में चर्चा DISCUSSION ABOUT SOULS DESTINED TO LIBERATE

१५. [प्र.] भवसिद्धियत्तणं भंते! जीवाणं किं सभावओ, परिणामओ?

[उ.] जयंती! सभावओ, नो परिणामओ।

१५. [प्र.] भगवन्! जीवों का भवसिद्धिकत्व स्वाभाविक है अथवा पारिणामिक?

[उ.] जयन्ती! वह स्वाभाविक है, पारिणामिक नहीं।

15. [Q.] *Bhante !* Is the condition of souls being *bhavasiddhik* (destined to attain liberation) is natural or consequential ?

[Ans.] Jayanti ! It is natural and not consequential.

१६. [प्र.] सव्वे वि णं भंते! भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति?

[उ.] हंता, जयंती! सव्वे वि णं भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति।

१६. [प्र.] भगवन्! क्या सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जायेंगे?

[उ.] हाँ, जयन्ती! सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जायेंगे।

16. **[Q.]** *Bhante !* Will all *bhavasiddhik* souls gain liberation ?

[Ans.] Yes, Jayanti ! All bhavasiddhik (destined to gain liberation) souls will gain liberation.

१७-१. [प्र.] जइ णं भंते! सव्वे भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति तम्हा णं भवसिद्धीयविरहिए लोए भविस्सइ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

१७-१. [प्र.] भगवन्! यदि सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध जो जायेंगे, तो क्या लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित हो जाएगा?

[उ.] जयन्ती! यह अर्थ समर्थ नहीं है।

17-1. **[Q.]** *Bhante !* If all *bhavasiddhik* souls will gain liberation then will the universe (*Lok*) be devoid of bhavasiddhik (destined to gain liberation) souls ?

[Ans.] Jayanti ! That is not true.

१७-२. [प्र.] से केणं खाइएणं अट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—सव्वे वि णं भवसिद्धीया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धीयविरहिए लोए भविस्सइ?

[उ.] जयंती! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया अणाईया अणवेदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए समए अवहीरमाणी अवहीरमाणी अणंताहिं ओसप्पिणि-अवसप्पिणीहिं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया, से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ—सव्वे वि णं भविसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ।

१७-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहा जाता है कि सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जाने पर भी यह लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित नहीं होगा?

[उ.] जयन्ती! जिस प्रकार सर्वाकाश की श्रेणी, जो अनादि, अनन्त (एकप्रदेशी होने से) परित्त (परिमित) और (अन्य श्रेणियों द्वारा) परिवृत हैं, उसमें से प्रतिसमय एक-एक परमाणु-पुद्गल जितना खण्ड निकालते-निकालते अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी तक निकाला जाए तो भी वह श्रेणी खाली नहीं होगी। ठीक इसी प्रकार, हे जयन्ती! ऐसा कहा जाता है कि सब भवसिद्धिक जीवों के सिद्ध होने पर भी लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित नहीं होगा।

17-2. **[Q.]** *Bhante !* Why is it said that even when all *bhavasiddhik* souls will gain liberation, the universe (*Lok*) will still not be devoid of bhavasiddhik (destined to gain liberation) souls ?

[Ans.] Jayanti ! A row of space-points in whole space is endless and infinite (being constituted of single space-points) but limited and surrounded (by other rows). If we take out a portion of the size of an ultimate particle every Samaya (the indivisible fraction of time) the row will not be extinct even after the passage of infinite progressive and regressive cycles of time. For the same reason, O Jayanti ! It is said that even when all *bhavasiddhik* souls will gain liberation, the universe (*Lok*) will still not be devoid of *bhavasiddhik* souls.

विवेचन—जयन्ती श्रमणोपासिका ने प्रभु महावीर से भवसिद्धिक जीव के विषय में तीन प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर बताते हुए प्रभु ने कहा—**जो भव्य हैं, मुक्ति के योग्य हैं, वे भवसिद्धिक कहलाते हैं।** समस्त भवसिद्धिक जीव एक न एक दिन अवश्य सिद्धि प्राप्त करेंगे। अतः भवसिद्धिक जीवों की भवसिद्धिकता स्वाभाविक है, पारिणामिक नहीं। ऐसा नहीं होता कि वे पहले अभवसिद्धिक थे किन्तु बाद में पर्याय-परिवर्तन होने के कारण भवसिद्धिक हो गए। जैसे पुद्गल में मूर्तत्व धर्म स्वाभाविक है, वैसे ही भवसिद्धिक जीवों में भवसिद्धिकता स्वाभाविक है।

आगे जयन्ती श्रमणोपासिका ने प्रभु से प्रश्न पूछा—'यदि सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जायेंगे तो संसार भवसिद्धिक जीवों से खाली हो जाएगा? तब भगवान महावीर ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—जितना भी भविष्यत्काल है, वह सब कभी न कभी वर्तमान हो जाएगा, तो क्या कभी ऐसा समय आ सकता है जब संसार भविष्यत्काल से खाली हो जाए? ऐसा होना जैसे असम्भव है, वैसे ही लोक का भवसिद्धिक जीवों से खाली होना असम्भव है।

इसी तरह समग्र आकाश की श्रेणी अनादि-अनन्त है, उसमें से एक-एक परमाणु जितना खण्ड प्रति समय निकाला जाए तो अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीकाल व्यतीत हो जाने पर भी आकाशश्रेणी खाली नहीं होगी, ठीक इसी प्रकार भवसिद्धिक जीवों के मोक्ष चले जाते रहने पर भी यह लोक भवसिद्धिक जीवों से खाली नहीं होगा।

Elaboration—Jayanti *shramanopasika* asked three questions to Bhagavan Mahavir about *bhavasiddhik* (destined to gain liberation) souls. Answering them Bhagavan said—the souls that are destined to gain liberation or have the ability to be perfect are called *bhavasiddhik*. All such souls are certain to attain liberation one day. That is why their condition of being destined to gain liberation is natural and not consequential. It is not that they were earlier *abhavasiddhik* (not destined to gain liberation) and became *bhavasiddhik* due to modal change. As the attribute of form is natural in matter, in the same way the condition of being destined to liberation is natural in *bhavasiddhik* (destined to gain liberation) souls.

The next question Jayanti asked was—if all souls destined to gain liberation will gain liberation then will the universe (*Lok*) be devoid of *bhavasiddhik* souls ? Answering this question Bhagavan said—every future moment is sure to become present with passage of time. Can there be a time when the universe is devoid of future moment ? That is an impossibility and so is extinction of *bhavasiddhik* (destined to gain liberation) souls.

Another example is—a row of space-points in whole space is endless and infinite. If a portion of the size of an ultimate particle is removed every Samaya, even after the passage of infinite progressive and regressive cycles of time the row will still not be extinct. In the same way even when all souls destined to gain liberation will gain liberation, the universe will still not be devoid of *bhavasiddhik* souls.

सुप्तत्व-जागृतत्व, सबलत्व-दुर्बलत्व एवं दक्षत्व-आलसित्व के साधुता के विषय में परिचर्चा

DISCUSSION ABOUT POSITIVE AND NEGATIVE STATES OF ASCETICISM

१८-१. [प्र.] सुत्तत्तं भंते! साहू, जागरियत्तं साहू?

[उ.] जयंती! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू।

१८-१. [प्र.] भगवन्! जीवों का सुप्त रहना अच्छा है या जागृत रहना?

[उ.] जयन्ती! कुछ जीवों का सुप्त रहना अच्छा है और कुछ जीवों का जागृत रहना अच्छा है।

18-1. [Q.] *Bhante!* What is good for living beings–to remain sleeping or awake ?

[Ans.] Jayanti! It is better for some to remain sleeping and for some to remain awake.

१८-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'अत्थेगइयाणं जाव साहू'?

[उ.] जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एएसिं णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। जयंती! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसिं णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति। ते णं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ–'अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू।

१८-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा किस कारण कहते हैं कि कुछ जीवों का सुप्त रहना और कुछ जीवों का जागृत रहना अच्छा है?

[उ.] जयन्ती! जो जीव अधार्मिक, अधर्म का अनुसरण करने वाले, अधर्मिष्ठ, अधर्म का क़थन करने वाले, अधर्म का अवलोकन करने वाले, अधर्म में आसक्त, अधर्म का आचरण करने वाले और अधर्म से ही आजीविका करने वाले हैं, उन जीवों का सुप्त रहना अच्छा है; क्योंकि ये जीव सुप्त रहते हैं, तो बहुत-से प्राणों, भूतों, जीवों और सत्त्वों को दुःख शोक यावत् परिताप देने में प्रवृत्त नहीं होते। ये जीव सोये रहते हैं तो अपने को, दूसरे को और स्व-पर दोनों को अनेक अधार्मिक संयोजनाओं (प्रपंचों) में नहीं फँसाते हैं। इसलिए इन जीवों का सुप्त रहना अच्छा है।

'जयन्ती! जो जीव धार्मिक हैं, धर्म का अनुसरण करने वाले, धर्मप्रिय, धर्म का कथन करने वाले, धर्म का अवलोकन करने वाले, धर्मासक्त, धर्म का आचरण करने वाले और धर्म

से ही अपनी आजीविका करने वाले हैं, उन जीवों का जाग्रत रहना अच्छा है, क्योंकि ये जीव जाग्रत रहते हैं तो बहुत-से प्राणों, भूतों, जीवों और सत्त्वों को दुःख, शोक यावत् परिताप देने में प्रवृत्त नहीं होते (बल्कि ये जीव अनेक जीवों के दुःख, शोक और परिताप को दूर करने में प्रवृत्त होते हैं)। ऐसे जीव जाग्रत रहते हुए स्वयं को, दूसरे को और स्व-पर दोनों को अनेक धार्मिक संयोजनाओं में संयोजित करते रहते हैं। इसलिए इन जीवों का जाग्रत रहना अच्छा है।

इसी कारण से, हे जयन्ती! ऐसा कहा जाता है कि कई जीवों का सुप्त रहना अच्छा है तो कई जीवों का जाग्रत रहना अच्छा है।

18-2. [Q.] *Bhante!* Why is it said that it is better for some beings to remain sleeping and for some beings to remain awake ?

[Ans.] Jayanti ! It is better for those beings to remain sleeping who are irreligious, follow irreligion, have faith in irreligion, profess irreligion, explore irreligion, are obsessed with irreligion, follow the conduct of irreligion and earn their living only through irreligion. It is better that such beings remain sleeping because while they are asleep they do not indulge in causing misery, grief... and so on up to... pain to many beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*). When they are asleep they do not trap themselves, others and both in numerous irreligious plots and conspiracies. Therefore it is better that such beings remain asleep.

Jayanti ! It is better for those beings to remain awake who are religious, follow religion, have faith in religion, profess religion, explore religion, are obsessed with religion, follow the conduct of religion and who earn their living only through religion. It is better that such beings remain awake because while they are awake they do not indulge in causing misery, grief... and so on up to... pain (on the contrary they indulge in removing their misery, grief and pain). When they are awake they engage themselves, others and both in numerous religious plans and projects. Therefore it is better that such beings remain awake.

That is why, Jayanti! It is said that it is better for some beings to remain sleeping and for some beings to remain awake.

१९-१. [प्र.] बलियत्तं भंते ! साहू, दुब्बलियत्तं साहू?

[उ.] जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू।

१९-१. [प्र.] भगवन्! जीवों की सबलता अच्छी है अथवा दुर्बलता?

[उ.] जयन्ती! कुछ जीवों की सबलता अच्छी है तो कुछ जीवों की दुर्बलता अच्छी है।

19-1. [Q.] *Bhante!* What is good for living beings–their being strong or their being weak ?

[Ans.] Jayanti ! It is better for some to be strong and for some to be weak.

१९-२ [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जाव साहू'?

[उ.] जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू। एए णं जीवा. एवं जहा सुत्तस्स (सु. १८ [२]) तहा दुब्बलियतस्स वत्तव्वया भाणियव्वा। बलियस्स जहा जागरस्स (सु. १८ [२]) तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ तं चेव जाव साहू।

१९-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि कुछ जीवों की सबलता अच्छी है और कुछ जीवों की दुर्बलता अच्छी है?

[उ.] जयन्ती! जो जीव अधार्मिक यावत् अधर्म से ही अपनी आजीविका करते हैं, ऐसे जीवों की दुर्बलता अच्छी है। क्योंकि ये जीव दुर्बल होने से किसी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व को दुःख आदि नहीं पहुँचा सकते, इत्यादि (१८-२ सू. के अनुसार) 'सुप्त' के समान दुर्बलता का भी वर्णन करना चाहिए और 'जाग्रत' के समान सबलता का वर्णन करना चाहिए। यावत् धार्मिक संयोजनाओं में संयोजित करते हैं, इसलिए ऐसे (धार्मिक) जीवों की सबलता अच्छी है।

हे जयन्ती! इसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि कई जीवों की सबलता अच्छी है तो कई जीवों की निर्बलता।

19-2. [Q.] *Bhante!* Why is it said that it is better for some beings to be strong and for some beings to be weak ?

[Ans.] Jayanti! It is better for those beings to be weak who are irreligious... and so on up to... earn their living only through irreligion

because when they are weak they do not indulge in causing misery, grief... and so on up to...: pain to many beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*) etc. The 'weak' should be described like 'asleep' in statement-18.2 and the description about 'strong' should be like 'awake'. ... and so on up to... engage themselves in numerous religious plans and projects. Therefore it is better that such (religious) beings remain awake.

That is why, Jayanti! It is said that it is better for some beings to remain strong and for some beings to remain weak.

२०-१. [प्र.] दक्खत्तं भंते! साहू, आलसियत्तं साहू?

[उ.] जयंती! अत्थेगइयाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू।

२०-१. [प्र.] भगवन्! जीवों का दक्षत्व अच्छा है अथवा आलसीपन?

[उ.] जयन्ती! कुछ जीवों का दक्षत्व अच्छा है तो कुछ जीवों का आलसीपन अच्छा है।

20-1. [Q.] *Bhante!* What is good for living beings–their being efficient or their being sluggish ?

[Ans.] Jayanti! It is better for some to be efficient and for some to be sluggish.

२०-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तं चेव जाव साहू?

[उ.] जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू। एए णं जीवा आलसा समाणा नो बहूणं जहा सुत्ता (सु. १८ [२]) तहा आलसा भाणियव्वा। जहा जागरा (सु. १८ [२]) तहा दक्खा भाणियव्वा जाव संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं, उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सिवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेहवेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं, साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव साहू।

२०-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि यावत् कुछ जीवों का दक्षत्व अच्छा है और कुछ जीवों का आलसीपन अच्छा है?

[उ.] जयन्ती! जो जीव अधार्मिक यावत् अधर्म द्वारा आजीविका करते हैं, उन जीवों का आलसीपन अच्छा है। यदि वे आलसी होंगे तो प्राणों, भूतों, जीवों और सत्त्वों को दुःख, शोक और परिताप उत्पन्न करने में प्रवृत्त नहीं होंगे, इत्यादि सब सुप्त के समान (१८-२ सू. के अनुसार) कहना चाहिए, तथा दक्षता (उद्यमीपन) का कथन जाग्रत के समान (१८-२ सू. के अनुसार) कहना चाहिए, यावत् वे (दक्ष जीव) स्व, पर और स्व-पर दोनों को धर्म के साथ संयोजित करने वाले होते हैं। यदि ये जीव दक्ष हों तो आचार्य की वैयावृत्य, उपाध्याय की वैयावृत्य, स्थविरों की वैयावृत्य, तपस्वियों की वैयावृत्य, ग्लान (रुग्ण) की वैयावृत्य, शैक्ष (नवदीक्षित) की वैयावृत्य, कुलवैयावृत्य, गणवैयावृत्य, संघवैयावृत्य और साधर्मिकवैयावृत्य में अपने आपको संयोजित (संलग्न) करने वाले होते हैं। इसलिए इन जीवों की दक्षता अच्छी है।

हे जयन्ती! इसी कारण से ऐसा कहा जाता है, कि कुछ जीवों का दक्षत्व (उद्यमीपन) अच्छा है और कुछ जीवों का आलसीपन अच्छा है।

20-2. [Q.] *Bhante!* Why is it said that it is better for some beings to be efficient and for some beings to be sluggish ?

[Ans.] Jayanti! It is better for those beings to be sluggish who are irreligious... and so on up to... earn their living only through irreligion because when they are sluggish they do not indulge in causing misery, grief... and so on up to... pain to many beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*) etc. The sluggish should be described like 'asleep' in statement-18.2 and the description about efficient should be like 'awake' in statement-18.2. ... and so on up to... engage themselves in numerous religious plans and projects. If they are efficient they engage themselves in service (*vaiyavratya*) of *Acharya* (head of the religious organization), service (*vaiyavratya*) of *Upadhyaya* (scholarly teacher of scriptures), service of *Sthavirs* (senior ascetics), service of austerity-observing ascetics, service of ailing ascetics, service of neo-initiates among ascetics, service of *Kula* (members of same ascetic lineage), service of *Gana* (own group of ascetics), service of *Sangh* (members of whole religious organization) and service of co-religionists (*saadharmik*). Therefore it is better that such (religious) beings remain efficient.

That is why, Jayanti ! It is said that it is better for some beings to remain efficient and for some beings to remain sluggish.

पंचेन्द्रियों के वश आर्त्त बने हुए जीवों का बन्धादि दुष्परिणाम

CONSEQUENCES OF GRIEF EXPERIENCED DUE TO SENSUAL ORGANS

२१-१. [प्र.] सोइंदियवसट्टे णं भंते! जीवे किं बंधइ?

[उ.] एवं जहा कोहवसट्टे (स. १२ उ. १) तहेव जाव अणुपरियट्टइ।

२१-१. [प्र.] भगवन्! श्रोत्रेन्द्रिय के वश आर्त्त (पीड़ित) बना हुआ जीव क्या बाँधता है? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] जयन्ती! जिस प्रकार क्रोध के वश आर्त्त बने हुए जीव के विषय में (श. १२, उ. १ में कहा गया) है, उसी प्रकार (यहाँ भी समझना चाहिए) यावत् वह संसार में बार-बार परिभ्रमण करता है।

21-1. [Q.] *Bhante !* What bondage (of *karma*) does a *jiva* (living being/soul) afflicted with grief caused due to hold of the sense organ of hearing attract ? And other questions.

[Ans.] Jayanti ! As it has been mentioned about a *jiva* (living being/soul) afflicted with grief caused by anger (Ch.-12, Le.-1, St.-26), so (it should be taken here)... and so on up to... moves around in the endless, infinite, extended forest of cycles of rebirth having four genuses.

२१-२. एवं चक्खिंदियवसट्टे वि। एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि, जाव अणुपरियट्टइ।

२१-२. इसी प्रकार से चक्षुरिन्द्रिय के वश आर्त्त बने हुए जीव के विषय में भी कहना चाहिए। इसी तरह यावत् स्पर्शेन्द्रियवशार्त्त बने हुए जीव के विषय में भी समझना चाहिए यावत् वह बार-बार संसार में परिभ्रमण करता है।

21-2. The same should be said about a *jiva* (living being/soul) afflicted with grief caused due to hold of the sense organ of seeing. Also (the same is true for)... and so on up to... hold of the sense organ of touch... and so on up to... moves around in the endless, infinite, extended forest of cycles of rebirth having four genuses.

२२. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदाए (स. ९ उ. ३३) तहेव पव्वइया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति.।

॥ बारसमे सए : बीओ उद्देसओ समत्तो॥१२-२॥

[२२] इसके पश्चात् वह जयन्ती श्रमणोपासिका, श्रमण भगवान महावीर के पास से यह अर्थ सुनकर एवं हृदय में अवधारण करके हर्षित और सन्तुष्ट हुई, इत्यादि शेष समस्त वर्णन (श. ९, उ. ३३ में वर्णित) देवानन्दा के समान है यावत् जयन्ती श्रमणोपासिका प्रव्रजित हुई यावत् सम्पूर्ण दुःखों से रहित हुई अर्थात् आर्या चन्दनबाला की शिष्या बनकर अंग शास्त्रों का अध्ययन करते हुए गुरुणी की आज्ञानुसार संयम पालन कर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त एवं सर्व दुःख से रहित हुई।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है—ऐसा कहकर श्री गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : द्वितीय उद्देशक समाप्त॥

22. After this that Jayanti *shramanopasika* was pleased and contented to hear the aforesaid answers from Shraman Bhagavan Mahavir etc. all remaining description follows the pattern of Devananda (Ch.-9, Le.-33)... and so on up to... Jayanti *shramanopasika* got initiated... and so on up to... ended all miseries. (In other words she became a disciple to Aryaa Chandana, studied the eleven limbs of the canon. She followed the ascetic conduct under guidance of her guru and in the end got perfected (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*), and ended all miseries.)

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE SECOND LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER •

तइओ उद्देसओ : 'पुढवी'
तृतीय उद्देशक : पृथ्वियाँ
TRITIYA UDDESHAK (THIRD LESSON) : *PRITHVI* (HELL)

सात नरक पृथ्वियों के नाम-गोत्रादि का वर्णन DESCRIPTION OF SEVEN HELLS

१. रायगिहे जाव एवं वयासी–

[१] राजगृह नगर में (श्रमण भगवान महावीर से) यावत् (गौतम स्वामी ने वन्दन-नमस्कार करके) इस प्रकार पूछा–

1. (During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in) Rajagriha city... and so on up to... Gautam Swami asked—

२. [प्र.] कइ णं भंते पुढवीओ पन्नत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-पढमा दोच्चा जाव सत्तमा।

२. [प्र.] भगवन्! पृथ्वियाँ (नरक-भूमियाँ) कितनी कही गई हैं?

[उ.] गौतम! पृथ्वियाँ सात कही गई हैं। वे इस प्रकार हैं–प्रथमा, द्वितीया यावत् सप्तमी।

2. [Q.] *Bhante!* How many *Prithvis* (worlds of hell) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be seven *Prithvis* (worlds of hell)— The First, The Second... and so on up to... The seventh.

३. [प्र.] पढमा णं भंते ! पुढवी किंनामा? किंगोत्ता पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा ! घम्मा नामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो निरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पाबहुगं ति।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ बारसमे सए : ततिओ उद्देसओ समत्तो॥ १२.३ ॥

३. [प्र.] भगवन्! प्रथमा पृथ्वी किस नाम और किस गोत्र वाली है?

[उ.] गौतम! प्रथमा पृथ्वी का नाम 'घम्मा' और गोत्र 'रत्नप्रभा' है। शेष (छह पृथ्वियों का) सम्पूर्ण वर्णन जीवाभिगम सूत्र (की तृतीय प्रतिपत्ति) के प्रथम नैरयिक उद्देशक के समान यावत् अल्पबहुत्व तक समझना चाहिए।

भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : तृतीय उद्देशक समाप्त॥

3. [Q.] *Bhante !* What is the name and class (*gotra*) of The First *Prithvi* ?

[Ans.] Gautam ! The name of The First *Prithvi* is Dhamma and its class (*gotra*) is *Ratnaprabha.* The detailed description of (this *Prithvi* and) the remaining (six *Prithvis*) should be quoted from Nairayik, the first lesson (*uddeshak*) of the third chapter (*pratipatti*) of *Jivabhigam Sutra* ... and so on up to... maximum and minimum.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—जीवाभिगम सूत्र में नरक की सात पृथ्वियों के नाम एवं गोत्र बताए गए हैं जो इस प्रकार हैं—**सात नरकों के नाम**—धम्मा, बंसा, शीला, अंजना, रिट्ठा, मघा और माघवई।

सात नरकों के गोत्र—रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और तमस्तमःप्रभा (महातमःप्रभा)। इसका सम्पूर्ण वर्णन जीवाभिगमसूत्र की तृतीय प्रतिपत्ति में है।

Elaboration—In aforesaid three statements give the names and classes of the seven hells as described in *Jivabhigam Sutra.*

Name and class—The term of address given to a thing, meaningful or meaningless, is called its name. The meaningful term of address given to a thing suiting its attributes is called *gotra* (class).

Names of seven hells—Dhamma, Bansa, Sheela, Anjana, Rittha, Magha and Maghavai. Classes of seven hells—*Ratnaprabha, Sharkaraprabha, Balukaprabha, Pankaprabha, Dhoomprabha, Tamahprabha* and *Tamastamahprabha.* The detailed description of these is mentioned in the third chapter of *Jivabhigam Sutra.*

• END OF THE THIRD LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER •

चउत्थो उद्देसओ : पोग्गले

चतुर्थ उद्देशक : पुद्गल

CHATURTH UDDESHAK (FOURTH LESSON) : PUDGAL (MATTER)

दो परमाणु-पुद्गलों के संघात एवं विभाग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : TWO ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—

[१] राजगृह नगर में (श्रमण भगवान महावीर का आगमन हुआ।) यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा—

1. (During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in) Rajagriha city... and so on up to... Gautam Swami asked—

२. [प्र.] दो भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णिता किं भवइ?

[उ.] गोयमा! दुपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ। एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ।

२. [प्र.] भगवन्! दो परमाणु पुद्गल जब संयुक्त होकर इकट्ठे होते हैं, तो उनका क्या होता है?

[उ.] गौतम! इकट्ठे हुए उन दो परमाणु-पुद्गलों का एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध बन जाता है। यदि उसका भेदन किया जाए तो दो विभाग होने पर एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और दूसरी ओर भी एक परमाणु-पुद्गल बन जाता है।

2. [Q.] *Bhante!* What happens when two *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! When two *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together, they combine to form a bisectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two sections; one having

a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other also having a single *paramanu-pudgal*.

तीन परमाणु-पुद्गलों के संघात एवं विभाग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : THREE ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

३. [प्र.] तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णिता किं भवइ ?

[उ.] गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे तिन्नि परमाणुपोग्गला भवंति।

३. [प्र.] भगवन् ! जब तीन परमाणु संयुक्त होकर इकट्ठे होते हैं, तब उन (एकत्र हुए तीन परमाणुओं) का क्या होता है ?

[उ.] गौतम ! उनका त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। यदि उसका भेदन किया जाए तो उसके (त्रिप्रदेशिक स्कन्ध के) दो या तीन विभाग हो जाते हैं। यदि दो विभाग हों तो एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और दूसरी ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध हो जाता है और यदि उसके तीन विभाग हों तो तीन परमाणु-पुद्गल अलग-अलग हो जाते हैं।

3. [Q.] *Bhante !* What happens when three *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a tri-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two or three parts. If there are two parts, one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has a bisectional aggregate (*skandh*). If the parts are three, all the three *paramanu-pudgals* get separated.

चार परमाणु-पुद्गलों का संयोजन व वियोजन

COMBINATION AND DIVISION : FOUR ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

४. [प्र.] चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति।

४. [प्र.] भगवन्! जब चार परमाणु पुद्गल इकट्ठे होते हैं, तब उनका क्या होता है?

[उ.] गौतम! उन (एकत्र हुए चार परमाणुओं) का चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध बन जाता है। उनका भेदन होने से दो-तीन अथवा चार विभाग होते हैं। दो विभाग होने पर एक ओर एक परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है, अथवा अलग-अलग दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध हो जाते हैं। तीन विभाग होने पर एक ओर अलग-अलग दो परमाणु पुद्गल और एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध रहता है। चार विभाग होने पर चार परमाणु पुद्गल अलग-अलग हो जाते हैं।

4. [Q.] *Bhante!* What happens when four *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a tetra-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two or three or four parts. If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (*ultron*) and the other has a tri-sectional aggregate (*skandh*); alternatively it divides into two separate bi-sectional aggregates. If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a bi-sectional aggregate. If there are four parts, all the four *paramanu-pudgals* get separated.

पाँच परमाणु-पुद्गलों का संयोजन व वियोजन

COMBINATION AND DIVISION : FIVE ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

५. [प्र.] पंच भंते ! परमाणुपोग्गला, पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि, पंचहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति।

५. [प्र.] भगवन्! जब पाँच परमाणु पुद्गल एकरूप संहत होते हैं तब क्या स्थिति होती है?

[उ.] गौतम! उनका पंच-प्रदेशिक स्कन्ध बन जाता है। जब उसका भेदन होता है तब दो, तीन, चार अथवा पाँच विभाग हो जाते हैं। यदि दो विभाग किये जाएँ तो एक ओर एक परमाणु

पुद्गल और दूसरी ओर एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध हो जाता है अथवा एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध और दूसरी ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध हो जाता है। तीन विभाग किये जाने पर एक ओर भिन्न-भिन्न दो परमाणु पुद्गल और एक ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध रहता है; अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और दूसरी ओर अलग-अलग दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध रहते हैं। चार विभाग किये जाए तब एक ओर अलग-अलग तीन परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध रहता है। पाँच विभाग किये जाने पर भिन्न-भिन्न पाँच परमाणु होते हैं।

5. [Q.] *Bhante!* What happens when five *paramanu-pudgals* (*ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a penta-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four or five parts. If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has a tetra-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has a tri-sectional aggregate. If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a tri-sectional aggregate; alternatively one has one *paramanu-pudgal* and the other two have one bi-sectional aggregate each. If there are four parts, one has a bi-sectional aggregate and the other four have one *paramanu-pudgal* each. If there are five parts, all the five *paramanu-pudgals* get separated.

छह परमाणु-पुद्गलों के संयोग एवं विभाग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : SIX ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

६. [प्र.] छब्भंते ! परमाणु-पोग्गला. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! छप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, जाव छहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला,

एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति।

६. [प्र.] भगवन्! छह परमाणु-पुद्गल जब एकत्र होकर संयुक्त होते हैं, तब क्या बनता है?

[उ.] गौतम! उनका षट्-प्रदेशिक स्कन्ध बनता है। यदि उसका भेदन किया जाए तो दो, तीन, चार, पाँच अथवा छह विभाग हो जाते हैं। दो विभाग किये जाने पर एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर पंचप्रदेशिक स्कन्ध होता है; अथवा एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध रहता है अथवा दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। यदि तीन विभाग किये जाए तो एक तरफ पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल और एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध रहता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा तीन अलग-अलग द्विप्रदेशिक होते हैं। चार विभाग किये जाने पर एक ओर तीन पृथक्-पृथक् परमाणु पुद्गल और एक ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु पुद्गल और एक ओर पृथक्-पृथक् दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं; पाँच विभाग किये जाने पर एक ओर पृथक्-पृथक् चार परमाणु पुद्गल और एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है; और छह विभाग किये जाने पर अलग-अलग छह परमाणु-पुद्गल होते हैं।

6. [Q.] *Bhante!* What happens when six *paramanu-pudgal*s (ultimate particles of matter or *ultron*s) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a hexa-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four, five or six parts. If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (*ultron*) and the other has a penta-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has a tetra-sectional aggregate, another alternative is two tri-sectional aggregates. If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a tetra-sectional aggregate; alternatively one has one *paramanu-pudgal,* one bi-sectional aggregate and one tri-sectional aggregate, another alternative is three bi-sectional aggregates. If there are four parts, there is one tri-sectional aggregate and the other three have one *paramanu-pudgal* each, another alternative is two bi-sectional

aggregates and two having one *paramanu-pudgal* each. If there are five parts, there is one bi-sectional aggregate and the other four having one *paramanu-pudgal* each. If there are six parts, all the six *paramanu-pudgals* get separated.

सात परमाणु के पुद्गलों के संयोग और विभाग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : SEVEN ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

७. [प्र.] सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधे भवंति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति।

७. [प्र.] भगवन्! जब सात परमाणु पुद्गल संयुक्त रूप से एकत्र होते हैं, तब उनका क्या होता है?

[उ.] गौतम! उनका सप्त-प्रदेशिक स्कन्ध होता है। यदि उसका भेदन किया जाए तो दो, तीन यावत् सात विभाग हो जाते हैं। यदि दो विभाग किये जाएँ तो एक तरफ एक परमाणु-पुद्गल और एक तरफ षट्-प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है और एक तरफ पंच-प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है। यदि तीन विभाग किये जाए तो एक ओर पृथक्-पृथक् दो

परमाणु-पुद्गल और दूसरी ओर पंच-प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध, और एक ओर चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर अलग-अलग दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध और दूसरी ओर एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। चार विभाग किये जाने पर एक ओर अलग-अलग तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न दो परमाणु-पुद्गल एक ओर द्विप्रदेशिक स्कन्ध तथा एक ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। पाँच विभाग किये जाने पर एक ओर अलग-अलग चार परमाणु पुद्गल और एक ओर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध रहता है अथवा एक ओर तीन अलग-अलग परमाणु-पुद्गल और एक ओर भिन्न-भिन्न दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। छह विभाग किये जाने पर एक तरफ पृथक्-पृथक् पाँच परमाणु-पुद्गल और दूसरी तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है। सात विभाग किये जाने पर अलग-अलग सात परमाणु-पुद्गल होते हैं।

7. **[Q.]** *Bhante!* What happens when seven *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a hepta-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three ... and so on up to... seven parts. If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (*ultron*) and the other has a hexa-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has a penta-sectional aggregate; another alternative is, one has a tri-sectional aggregate and the other has a tetra-sectional aggregate. If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a penta-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal* and two tri-sectional aggregates; another alternative is two bi-sectional aggregates and one tri-sectional aggregate. If there are four parts, there is one tri-sectional aggregate and the other three having one *paramanu-pudgal* each; another alternative is two single *paramanu-pudgals*, one bi-sectional aggregate and one tri-sectional aggregate; another alternative is one *paramanu-pudgal* and three bi-sectional aggregates.

If there are five parts, there is one tri-sectional aggregate and the other four having one *paramanu-pudgal* each; alternatively, there are three *paramanu-pudgals* and two bisectional aggregates. If there are six parts, there are five *paramanu-pudgals* and one bisectional aggregate. If there are seven parts, all the seven *paramanu-pudgals* get separated.

आठ परमाणु-पुद्गलों के संयोग एवं विभाग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : EIGHT ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

८. [प्र.] अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला॰ पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ, जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति।

८. [प्र.] भगवन्! जब आठ परमाणु-पुद्गल संयुक्तरूप से इकट्ठे होते है तब क्या बनते हैं?

[उ.] गौतम! उनका अष्टप्रदेशिक स्कन्ध बन जाता है। यदि उसके विभाग किये जाएँ तो दो, तीन, चार यावत् आठ विभाग होते हैं। दो विभाग किये जाने पर एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर सप्तप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध और दूसरी ओर एक षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा अलग-अलग दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। तीन विभाग किये जाने पर एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है, और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध पृथक्-पृथक् होते हैं। चार विभाग किये जाने पर एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु पुद्गल और एक ओर एक पंचप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर भिन्न-भिन्न दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं अथवा अलग-अलग चार द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। पाँच विभाग किये जाने पर एक ओर पृथक्-पृथक् चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है। अथवा एक ओर पृथक-पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध तथा एक ओर एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। छह विभाग किये जाने पर एक ओर पृथक्-पृथक् पाँच परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। सात विभाग किये जाने पर एक ओर भिन्न-भिन्न छह परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है। आठ विभाग किये जाने पर अलग-अलग आठ परमाणु-पुद्गल होते हैं।

8. **[Q.]** *Bhante!* What happens when eight *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam! They combine to form an octa-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four... and so on up to... eight parts. If there are two parts one has a single *paramanu-*

pudgal (*ultron*) and the other has a hepta-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has a hexa-sectional aggregate; another alternative is, one has a tri-sectional aggregate and the other has a penta-sectional aggregate and the last alternative is two tetra-sectional aggregates. If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a hexa-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one tri-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is two bi-sectional aggregates and one tetra-sectional aggregate; the last alternative is one bi-sectional aggregate and two tri-sectional aggregates. If there are four parts, three of them have single *paramanu-pudgal*s and one penta-sectional aggregate; another alternative is two single *paramanu-pudgal*s, one bi-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is two *paramanu-pudgal*s and two tri-sectional aggregates; another alternative is, single *paramanu-pudgal*, two bisectional aggregates and one tri-sectional aggregate; the last alternative is four bisectional aggregates. If there are five parts, four of them have single *paramanu-pudgal*s and one tetra-sectional aggregate; alternatively, there are three *paramanu-pudgal*s and one bisectional aggregate and one tri-sectional aggregate; another alternative is, two *paramanu-pudgal*s and three bisectional aggregates. If there are six parts, there are five *paramanu-pudgal*s and one tri-sectional aggregate; alternatively there are four *paramanu-pudgal*s and two bisectional aggregates. If there are seven parts, six of them are *paramanu-pudgal*s and one bisectional aggregate. If there are eight parts, all the eight *paramanu-pudgal*s get separated.

नौ परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : NINE ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

९. [प्र.] नव भंते ! परमाणुपोग्गला० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जाव नवविहा कज्जंति। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ; एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पएसिए

खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति।

९. [प्र.] भगवन्! नौ परमाणु-पुद्गलों के एकरूप से इकट्ठे होने पर क्या बनता है?

[उ.] गौतम! उनका नवप्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जाएँ तो दो, तीन यावत् नौ विभाग हो जाते हैं।

दो विभाग किये जाने पर एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक अष्टप्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार क्रमशः एक-एक का संचार (वृद्धि) करना चाहिए, यावत् अथवा एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है।

तीन विभाग किये जाने पर एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा तीन त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

चार भाग किये जाने पर—एक ओर भिन्न-भिन्न तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है।

पाँच भाग किये जाने पर—एक ओर भिन्न-भिन्न चार पमाणु-पुद्गल और एक ओर एक पंचप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग तीन परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न दो परमाणु पुद्गल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है। अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर चार द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

छह भाग किये जाने पर—एक ओर पृथक्-पृथक् पाँच परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग चार परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं।

सात विभाग किये जाने पर—एक ओर अलग-अलग छह परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न पाँच परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं।

आठ विभाग किये जाने पर—एक ओर अलग-अलग सात परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है।

नव विभाग किये जाने पर–पृथक्-पृथक् नौ परमाणु-पुद्गल होते हैं।

9. [Q.] *Bhante !* What happens when nine *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a nine-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four... and so on up to... nine parts.

If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has an octa-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has a hepta-sectional aggregate. For other alternatives increase one *ultron* in the first part... and so on up to... the last alternative is one tetra-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate (*skandh*).

If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a hepta-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one hexa-sectional aggregate; another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one tri-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is one single *paramanu-pudgal*, two tetra-sectional aggregates; another alternative is, one bi-sectional aggregate, one tri-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate. The last alternative is three tri-sectional aggregates.

If there are four parts, three of them have single *paramanu-pudgals* and one hexa-sectional aggregate; another alternative is two single *paramanu-pudgals*, one bi-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is two *paramanu-pudgals*, one tri-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, single *paramanu-pudgal*, two bisectional aggregates and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, single *paramanu-pudgal*, one bisectional aggregate and two tri-sectional aggregates; the last alternative is three bisectional aggregates and one tri-sectional aggregate.

If there are five parts, four of them have single *paramanu-pudgals* and one penta-sectional aggregate; alternatively, there are three

paramanu-pudgals, one bisectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, three *paramanu-pudgals* and two tri-sectional aggregates; another alternative is, two *paramanu-pudgals*, two bi-sectional aggregates and one tri-sectional aggregate; the last alternative is one *paramanu-pudgals* and four bi-sectional aggregates.

If there are six parts, there are five *paramanu-pudgals* and one tetra-sectional aggregate; alternatively there are four *paramanu-pudgals*, one bisectional aggregate and one tri-sectional aggregate; another alternative is, three *paramanu-pudgals* and three bi-sectional aggregates.

If there are seven parts, six of them are *paramanu-pudgals* and one tri-sectional aggregate; alternatively there are five *paramanu-pudgals* and two bi-sectional aggregates.

If there are eight parts, seven of them are *paramanu-pudgals* and one bisectional aggregate.

If there are nine parts, all the nine *paramanu-pudgals* get separated.

दस परमाणु-पुद्गलों का संयोजन और वियोजन

COMBINATION AND DIVISION : TEN ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

१०. [प्र.] दस भंते ! परमाणुपोग्गला।

[उ.] जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ; एवं एक्केक्कं संचारेयव्वंति जाव अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवंति।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ। अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए॰, एगयओ तिपएसिए॰, एगयओ पंच पएसिये खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति।

पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा पंचदुपएसिया खंधा भवंति।

छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति।

सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए., एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति।

अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ छप्परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति।

नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ।

दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति।

१०. [प्र.] भगवन्! यदि दस परमाणु-पुद्गल संयुक्त होकर इकट्ठे हो जाए तो क्या स्थिति बनती है?

[उ.] गौतम! उनका एक दस प्रदेशी स्कन्ध बनता है। उसके विभाग किये जाने पर दो, तीन यावत् दस विभाग होते हैं।

दो विभाग किए जाने पर—एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, और एक ओर एक नवप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अष्टप्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार एक-एक का संचार (वृद्धि) करना चाहिए, यावत् दो पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

तीन विभाग किए जाने पर—एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल और एक अष्टप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है (अथवा एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर षट्प्रदेशिक स्कन्ध होता है) अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है।

चार विभाग किए जाने पर—एक ओर भिन्न-भिन्न तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल, और एक ओर दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर तीन त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

पाँच विभाग किए जाने पर—एक ओर अलग-अलग चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर षट्प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल तथा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। अथवा एक ओर दो पृथक्-पृथक् परमाणु-पुद्गल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर तीन द्विदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा पाँच द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं।

छह विभाग किये जाने पर—एक ओर पृथक-पृथक् पाँच परमाणु-पुद्गल, एक ओर पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग चार परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर अलग-अलग तीन पुद्गल-परमाणु, एक ओर दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल तथा एक ओर चार द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

सात विभाग किये जाने पर—एक ओर अलग-अलग छह परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग पाँच परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

आठ विभाग किये जाने पर—एक ओर पृथक्-पृथक् सात परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न छह परमाणु पुद्गल और एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

नौ विभाग किये जाने पर—एक ओर भिन्न-भिन्न आठ परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है।

दस विभाग किये जाने पर भिन्न-भिन्न दस परमाणु पुद्गल होते हैं।

10. [Q.] *Bhante!* What happens when ten *paramanu-pudgal*s (ultimate particles of matter or *ultron*s) come together and combine ?

[Ans.] Gautam! They combine to form a ten-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four... and so on up to... ten parts.

If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has a nine-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has an octa-sectional aggregate. For other alternatives increase one *ultron* in the first part... and so on up to... the last alternative is two penta-sectional aggregates.

If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a octa-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one hepta-sectional aggregate; another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one tri-sectional aggregate and one hexa-sectional aggregate; another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one tetra-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate (or one single *paramanu-pudgal*, two bi-sectional aggregates and one penta-sectional aggregate); another alternative is, one bi-sectional aggregate, one tri-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is one bi-sectional aggregate and two tetra-sectional aggregates; the last alternative is, two tri-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate.

If there are four parts, three of them have single *paramanu-pudgals* and one hepta-sectional aggregate; another alternative is two single *paramanu-pudgals*, one bi-sectional aggregate and one hexa-sectional aggregate; another alternative is two *paramanu-pudgals*, one tri-sectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is, two *paramanu-pudgals* and two tetra-sectional aggregates; another alternative is, single *paramanu-pudgal*, one bisectional aggregate, one tri-sectional aggregate, and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, single *paramanu-pudgal*, one tri-sectional aggregate, three bi-sectional aggregates; another alternative is, three bi-sectional aggregates and one tetra-sectional aggregate; the last alternative is two bisectional aggregates and two tri-sectional aggregates.

If there are five parts, four of them have single *paramanu-pudgals* and one hexa-sectional aggregate; alternatively, there are three

paramanu-pudgals, one bisectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is, three *paramanu-pudgals*, one bisectional aggregate and one penta-sectional aggregate; another alternative is, three *paramanu-pudgals*, one tri-sectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, two *paramanu-pudgals*, two bi-sectional aggregates and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, two *paramanu-pudgals*, one bisectional aggregate and two tri-sectional aggregates; another alternative is, one *paramanu-pudgal*, three bisectional aggregates and one tri-sectional aggregate; the last alternative is five bi-sectional aggregates.

If there are six parts, there are five *paramanu-pudgals* and one penta-sectional aggregate; alternatively there are four *paramanu-pudgals*, one bisectional aggregate and one tetra-sectional aggregate; another alternative is, four *paramanu-pudgals* and two tri-sectional aggregates; another alternative is, three *paramanu-pudgals*, two bi-sectional aggregates and one tri-sectional aggregate; the last alternative is two *paramanu-pudgals* and four bi-sectional aggregates.

If there are seven parts, six of them are *paramanu-pudgals* and one tetra-sectional aggregate; alternatively there are five *paramanu-pudgals* and one bi-sectional aggregates and one tri-sectional aggregate; the last alternative is four *paramanu-pudgals* and three bi-sectional aggregates.

If there are eight parts, seven of them are *paramanu-pudgals* and one tri-sectional aggregate; alternatively there are six *paramanu-pudgals* and two bisectional aggregates.

If there are nine parts, eight of them are *paramanu-pudgals* and one bisectional aggregate.

If there are ten parts, all the ten *paramanu-pudgals* get separated.

विवेचन—उपरोक्त सूत्रों में द्विप्रदेशी से दस प्रदेशी स्कन्धों के विभाग किये जाने पर उनके विकल्प दिये हैं, जो इस प्रकार हैं—द्विप्रदेशी स्कंध—१ विकल्प, त्रिप्रदेशी स्कंध—२ विकल्प, चार प्रदेशी स्कंध—४ विकल्प, पंच प्रदेशी स्कंध—६ विकल्प, षट् प्रदेशी स्कंध—१० विकल्प, सप्त प्रदेशी स्कंध—१४ विकल्प, अष्ट प्रदेशी स्कंध—२१ विकल्प, नवप्रदेशी स्कंध—२८ विकल्प, दस प्रदेश स्कंध—३९ विकल्प, इस प्रकार कुल १२५ विकल्प।

Elaboration—In the aforesaid statement probabilities of dividing of countable sectional aggregates of *ultron*s are listed—bi-sectional aggregate–1 alternative; tri-sectional aggregate–2 alternatives; tetra-sectional aggregate–4 alternatives; penta-sectional aggregate–6 alternatives; hexa-sectional aggregate–10 alternatives; hepta-sectional aggregate–14 alternatives; octa-sectional aggregate–21 alternatives; nine-sectional aggregate–28 alternatives; ten-sectional aggregate–39 alternatives; making a total of 125 alternatives.

संख्यात परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग से बने भंगों का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : COUNTABLE ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

११. [प्र.] संखेज्जा णं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे. एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ

दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले; एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; जाव अहवा एगयओ दुपएसिए., एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधे भवंति; अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवसंजोगो।

दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं एएणं कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए., एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति।

११. [प्र.] भगवन्! संख्यात परमाणु-पुद्गल जब संयुक्त होते हैं तब क्या बनता है?

[उ.] गौतम! वह संख्यात प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जाएँ तो दो तीन यावत् दस और फिर संख्यात विभाग होते हैं।

दो विभाग किये जाने पर—एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक संख्येय प्रदेशिक स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है। इसी प्रकार यावत् एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

तीन विभाग किये जाने पर—एक ओर दो पृथक्-पृथक् परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार यावत्—अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल तथा एक ओर दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध तथा एक ओर दो संख्यात

प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। इस प्रकार यावत्–अथवा एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध तथा एक ओर दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा तीन संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

चार विभाग किये जाने पर एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु-पुद्‌गल और एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्‌गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न दो परमाणु-पुद्‌गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार यावत्–अथवा एक ओर दो अलग-अलग परमाणु-पुद्‌गल, एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्‌गल और एक ओर दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्‌गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। यावत्–अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्‌गल, एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध तथा एक ओर दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्‌गल और एक ओर तीन संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। इस प्रकार यावत्–एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध होता है और एक और तीन संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा चारों संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

इसी तरह इसी क्रम से पंचसंयोगी विकल्प भी कहते हुए यावत् नव-संयोगी विकल्प तक कहना चाहिए।

अब दस विभाग किये जाने पर–एक ओर अलग-अलग नौ परमाणु-पुद्‌गल और एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर भिन्न-भिन्न आठ परमाणु-पुद्‌गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है। इसी क्रम से एक-एक की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ाते जाना चाहिए, यावत् अथवा एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर नौ संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा दस संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

इसके बाद उसके संख्यात विभाग किये जाएँ तो पृथक्-पृथक् संख्यात परमाणु-पुद्‌गल होते हैं।

11. [Q.] '*Bhante!* What happens when countable (*sankhyat*) *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form a countable-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four... and so on up to... ten and then countable (*sankhyat*) parts.

If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has a countable-sectional aggregate (*skandh*); alternatively one has a bi-sectional aggregate and the other has a countable-sectional aggregate; another alternative is, one tri-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate. For other alternatives increase one *ultron* in the first part... and so on up to... one ten-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate; the last alternative is two countable-sectional aggregates.

If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a countable-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate; another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one tri-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate;... and so on up to... another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one ten-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate; another alternative is, one *paramanu-pudgal* and two countable-sectional aggregates; another alternative is, one bi-sectional aggregate and two countable-sectional aggregates;... and so on up to... another alternative is, one ten-sectional aggregate and two countable-sectional aggregates; the last alternative is, three countable-sectional aggregates.

If there are four parts, three of them have single *paramanu-pudgals* and one countable-sectional aggregate; another alternative is two single *paramanu-pudgals*, one bi-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate; another alternative is two *paramanu-pudgals*, one tri-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate; ... and so on up to... another alternative is, two *paramanu-pudgals*, one ten-sectional aggregate and one countable-sectional aggregate; another alternative is, single *paramanu-pudgal*, one bisectional aggregate, and two countable-sectional aggregates; ... and so on up to... another alternative is, single *paramanu-pudgal*, one ten-sectional aggregate, and two countable-sectional aggregates; another alternative is, one single *paramanu-pudgal* and three countable-sectional aggregates... and so on up to... one ten-sectional

aggregate and three countable-sectional aggregates; the last alternative is all four countable-sectional aggregates.

In the same order state alternatives for five divisions... and so on up to ... alternatives of nine divisions.

If there are ten parts, nine of them have single *paramanu-pudgals* and one countable-sectional aggregate; alternatively, there are eight *paramanu-pudgals*, one bisectional aggregate and one countable-sectional aggregate; in the same way keep on adding one... and so on up to... another alternative is, one ten-sectional aggregate and nine countable-sectional aggregate; the last alternative is ten countable-sectional aggregates.

If there are countable parts, all the countable *paramanu-pudgals* get separated.

विवेचन—संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध के विभाग करने पर विकल्प (भंग)—१. दो विभाग करने पर ११ विकल्प, २. तीन विभाग करने पर २१ विकल्प, ३. चार विभाग करने पर ३१ विकल्प, ४. पाँच विभाग करने पर ४१ विकल्प, ५. छह विभाग करने पर ५१ विकल्प, ६. सात विभाग करने पर ६१ विकल्प, ७. आठ विभाग करने पर ७१ विकल्प, ८. नौ विभाग करने पर ८१ विकल्प, ९. दस विभाग करने पर ९१ विकल्प, इस प्रकार कुल ४६० विकल्प।

Elaboration—In the aforesaid statement probabilities of dividing of countable sectional aggregates of *ultrons* are listed—two divisions–11 alternatives; three divisions–21 alternatives; four divisions–31 alternatives; five divisions–41 alternatives; six divisions–51 alternatives; seven divisions–61 alternatives; eight divisions–71 alternatives; nine divisions–81 alternatives; ten divisions–91 alternatives; making a total of 460 alternatives.

असंख्यात परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग से निष्पन्न भंग का निरूपण

COMBINATION AND DIVISION : UNCOUNTABLE ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

१२. [प्र.] असंखेज्जा णं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति एगयओ साहणित्ता किं भवइ?

[उ.] गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि, जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जइ।

दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवइ; जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ। एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो। एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति।

असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति।

१२. [प्र.] भगवन्! जब असंख्यात परमाणु-पुद्गल संयुक्त रूप से इकट्ठे होते हैं तब उनका क्या होता है?

[उ.] गौतम! उनका एक असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध होता है और यदि उस असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध के विभाग किये जाएँ तो उसके दो, तीन यावत् दस विभाग भी होते हैं, संख्यात विभाग भी होते हैं और असंख्यात विभाग भी होते हैं।

दो विभाग किये जाने पर—एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है। यावत्—अथवा एक ओर एक दश प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक

असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा दो असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

तीन विभाग किये जाने पर—एक ओर अलग-अलग दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है। यावत्—अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर दश प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। इस प्रकार यावत्—अथवा एक ओर एक संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा तीन असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

चार विभाग किये जाने पर—एक ओर तीन भिन्न-भिन्न परमाणु-पुद्गल और एक असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार चतुःसंयोगी से यावत् दश संयोगी तक जानना चाहिए। इन सबका कथन संख्यात-प्रदेशी के समान करना चाहिए। मुख्य रूप से केवल अन्तर इतना है कि एक असंख्यात शब्द अधिक कहना चाहिए, यावत्—अथवा दश असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

संख्यात विभाग किये जाने पर—एक ओर पृथक्-पृथक् संख्यात परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर संख्यात द्विप्रदेशिक स्कन्ध और एक ओर असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार यावत्—एक ओर संख्यात दश-प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा संख्यात असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

उसके असंख्यात विभाग किये जाने पर अलग-अलग असंख्यात परमाणु-पुद्गल होते हैं।

12. [Q.] *Bhante!* What happens when uncountable (*asankhyat*) *paramanu-pudgal*s (ultimate particles of matter or *ultron*s) come together and combine ?

[Ans.] Gautam! They combine to form an uncountable-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four... and so on up to... ten and then countable (*sankhyat*) as well as uncountable (*asankhyat*) parts.

If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has an uncountable-sectional aggregate (*skandh*)... and so on up to... one ten-sectional aggregate and one uncountable-sectional aggregate; another alternative is, one countable-sectional aggregate and one uncountable-sectional aggregate; the last alternative is two uncountable-sectional aggregates.

If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a uncountable-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one uncountable-sectional aggregate... and so on up to... another alternative is, there is one single *paramanu-pudgal*, one ten-sectional aggregate and one uncountable-sectional aggregate; another alternative is, one *paramanu-pudgal*, one countable-sectional aggregate and one uncountable-sectional aggregates; another alternative is one *paramanu-pudgal* and two uncountable-sectional aggregates; another alternative is one bi-sectional aggregate and two uncountable-sectional aggregates... and so on up to... another alternative is, one countable-sectional aggregate and two uncountable-sectional aggregates; the last alternative is, three uncountable-sectional aggregates.

If there are four parts, three of them have single *paramanu-pudgal*s and one uncountable-sectional aggregate; the same pattern holds good for four-sectional to ten-sectional aggregates; they should be stated just like countable-sectional aggregates, the only difference being additional mention of uncountable;... and so on up to... the last alternative is ten uncountable-sectional aggregates.

If there are countable parts, countable of them have single *paramanu-pudgal*s and one uncountable-sectional aggregate; another alternative is, countable bi-sectional aggregates and one uncountable-sectional aggregate;... and so on up to... another alternative is, countable ten-sectional aggregates and one uncountable-sectional aggregate; another alternative is, countable countable-sectional aggregates and one uncountable-sectional aggregate; the last alternative is countable uncountable-sectional aggregates.

If there are uncountable parts, all the uncountable *paramanu-pudgals* get separated.

विवेचन—असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध के विभाग करने पर विकल्प—असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध में पहले बारह कहकर फिर ग्यारह-ग्यारह बढ़ाने से कुल ५१७ विकल्प होते हैं। वे इस प्रकार हैं—

द्विकसंयोगी १२, त्रिकसंयोगी २३, चतुष्कसंयोगी ३४, पंचसंयोगी ४५, षट्-संयोगी ५६, सप्तसंयोगी ६७, अष्ट-संयोगी ७८, नवसंयोगी ८९, दशसंयोगी १००, संख्यात-संयोगी १२ और असंख्यात-संयोगी एक। इस प्रकार कुल मिलाकर ५१७ विकल्प होते हैं।

Elaboration—In the aforesaid statement probabilities of dividing of uncountable sectional aggregates of *ultrons* start with 12 alternatives and adding 11 at every step makes a total of 517 alternatives—two divisions–12 alternatives; three divisions–23 alternatives; four divisions–34 alternatives; five divisions–45 alternatives; six divisions–56 alternatives; seven divisions–67 alternatives; eight divisions–78 alternatives; nine divisions–89 alternatives; ten divisions–100 countable divisions–12 alternatives and uncountable division–1; making a total of 517 alternatives.

अनन्त परमाणु-पुद्गलों के संयोग और विभाग से निष्पन्न भंग की प्ररूपणा

COMBINATION AND DIVISION : INFINITE ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

१३. [प्र.] अणंता णं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवइ?

[उ.] गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि जाव दसहा वि, संखिज्ज-असंखिज्ज-अणंतहा वि कज्जइ।

दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधे भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा

एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो। एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताण वि भाणियव्वं, नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति।

असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति।

अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति।

१३. [प्र.] भगवन्! अनन्त परमाणु-पुद्गल एक रूप होकर इकट्ठे होते हैं तो उनका क्या होता है?

[उ.] गौतम! उनका एक अनन्त-प्रदेशी स्कन्ध बन जाता है। यदि उसके विभाग किये जाएँ तो दो तीन यावत् दस, संख्यात, असंख्यात और अनन्त विभाग होते हैं।

दो विभाग किये जाने पर—एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और दूसरी ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है। यावत् दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

तीन विभाग किये जाने पर—एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार यावत् अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। इस प्रकार यावत्—अथवा एक ओर एक दश प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं

अथवा एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा एक ओर एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं अथवा तीन अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है।

चार विभाग किये जाने पर—एक ओर अलग-अलग तीन परमाणु-पुद्‌गल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार चतुष्कसंयोगी से लेकर यावत् असंख्यात-संयोगी तक कहना चाहिए। जिस तरह असंख्यात-प्रदेशी स्कन्ध के भंग (विभाग) कहे गए हैं, उसी तरह यहाँ ये सब अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के भंग कहने चाहिए। विशेष रूप से एक 'अनन्त' शब्द अधिक कहना चाहिए। यावत्—अथवा एक ओर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर संख्यात असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा संख्यात अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

जब उसके असंख्यात भाग किये जाते हैं तो एक ओर अलग-अलग असंख्यात परमाणु पुद्‌गल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर असंख्यात द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है। यावत्—एक ओर असंख्यात संख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक ओर असंख्यात असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा असंख्यात अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

अनन्त विभाग किये जाने पर भिन्न-भिन्न अनन्त-परमाणु पुद्‌गल होते हैं।

13. [Q.] *Bhante!* What happens when infinite (*anant*) *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) come together and combine ?

[Ans.] Gautam ! They combine to form an infinite-sectional aggregate (*skandh*). If it is broken, it divides into two, three, four... and so on up to... ten and then countable (*sankhyat*), uncountable as well as *infinite (anant)* parts.

If there are two parts one has a single *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or *ultron*) and the other has an infinite-sectional aggregate (*skandh*)... and so on up to... two infinite-sectional aggregates.

If there are three parts, two of them have one *paramanu-pudgal* each and the third part is a infinite-sectional aggregate; alternatively there is one single *paramanu-pudgal*, one bi-sectional aggregate and one infinite-sectional aggregate... and so on up to... another alternative is,

there is one single *paramanu-pudgal*, one uncountable-sectional aggregate and one infinite-sectional aggregate; another alternative is, one *paramanu-pudgal* and two infinite-sectional aggregates; another alternative is one bi-sectional aggregate and two infinite-sectional aggregates... and so on up to... another alternative is, one ten-sectional aggregate and two infinite-sectional aggregates; another alternative is, one countable-sectional aggregate and two infinite-sectional aggregates; another alternative is, one uncountable-sectional aggregate and two infinite-sectional aggregates; the last alternative is, three infinite-sectional aggregates.

If there are four parts, three of them have single *paramanu-pudgals* and one infinite-sectional aggregate; the same pattern holds good for four-sectional to ten-sectional aggregates; they should be stated just like uncountable-sectional aggregates, the only difference being additional mention of infinite;... and so on up to... another alternative is, one countable-sectional aggregate and one infinite-sectional aggregate; another alternative is, countable uncountable-sectional aggregate and one infinite-sectional aggregates; the last alternative is countable infinite-sectional aggregates.

If there are uncountable parts, uncountable of them have single *paramanu-pudgals* and one infinite-sectional aggregate; another alternative is, uncountable bi-sectional aggregates and one infinite-sectional aggregate;... and so on up to... another alternative is, uncountable countable-sectional aggregates and one infinite-sectional aggregate; another alternative is, uncountable uncountable-sectional aggregates and one infinite-sectional aggregate; the last alternative is uncountable infinite-sectional aggregates.

If there are *infinite (anant)* parts, all the infinite *paramanu-pudgals* get separated.

परमाणु-पुद्गलों का पुद्गल परिवर्त्तन और उसके प्रकार

MATERIAL TRANSFORMATION OF *ULTRONS* AND ITS TYPES

१४. [प्र.] एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा-भेयाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया?

[उ.] हंता, गोयमा ! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा जाव मक्खाया।

१४. [प्र.] भगवन्! इन परमाणु-पुद्गलों के संघात (संयुक्त) और भेद (विभाग) से होने वाले अनन्तानन्त पुद्गल परिवर्त्तन (क्या) जानने योग्य हैं, जिस कारण आपने इनका कथन किया है?

[उ.] हाँ, गौतम! संघात और भेद के सम्बन्ध से होने वाले अनन्तानन्त पुद्गल-परिवर्त्तन जानने योग्य हैं, इसीलिए ये कहे गये हैं।

14. [Q.] *Bhante!* Are infinite-infinite material transformations (*pudgal parivartya*) caused by integration (*sanghaat* or fusion) and disintegration (*vibhaag* or fission) of these *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter or *ultrons*) worth knowing? Is that why you have stated the same ?

[Ans.] Yes, Gautam! Infinite-infinite material transformations (*pudgal parivartya*) caused by integration (*sanghaat* or fusion) and disintegration (*vibhaag* or fission) of these *paramanu-pudgals* (*ultrons*) are worth knowing; that is why they have been stated.

१५. [प्र.] कइविहे णं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते, तं जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे १ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे २ तेयापोग्गलपरियट्टे ३ कम्मापोग्गलपरियट्टे ४ मणपोग्गलपरियट्टे ५ वइपोग्गलपरियट्टे ६ आणपाणुपोग्गलपरियट्टे ७।

१५. [प्र.] भगवन्! पुद्गल-परिवर्त्तन कितने प्रकार का कहा गया है?

[उ.] गौतम! सात प्रकार का कहा गया है। यथा—(१) औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन, (२) वैक्रिय-पुद्गल परिवर्त्तन, (३) तैजस-पुद्गल परिवर्त्तन, (४) कार्मण-पुद्गल परिवर्त्तन, (५) मनः-पुद्गल परिवर्त्तन, (६) वचन-पुद्गल-परिवर्त्तन और (७) आनप्राण-पुद्गल परिवर्त्तन।

15. [Q.] *Bhante!* How many types of material or particulate transformations (*pudgal parivartya*) are said to be there ?

[Ans.] Gautam! They are said to be of seven types—(1) *Audarik pudgal parivartya* (gross physical material or particulate transformations), (2) *Vaikriya pudgal parivartya* (transmutable material or particulate transformations), (3) *Taijas pudgal parivartya* (fiery material or

particulate transformations), (4) *Karman pudgal parivartya* (karmic material or particulate transformations), (5) *Manah pudgal parivartya* (thought material or particulate transformations), (6) *Vachan pudgal parivartya* (speech material or particulate transformations) and (7) *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material or particulate transformations).

१६. [प्र.] नेरइयाणं भंते ! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते ?

[उ.] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पन्नत्ते, तं जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव आणपाणुपोग्गलपरियट्टे।

१६. [प्र.] भगवन्! नैरयिकों के पुद्गल-परिवर्त्तन कितने प्रकार के कहे गये हैं?

[उ.] गौतम! सात प्रकार के पुद्गल-परिवर्त्तन कहे गए हैं। यथा—औदारिकपुद्गल-परिवर्त्तन, वैक्रियपुद्गल-परिवर्त्तन यावत् आन-प्राणपुद्गल-परिवर्त्तन।

16. **[Q.]** *Bhante!* How many types of material or particulate transformations (*pudgal parivartya*) of infernal beings are said to be there?

[Ans.] Gautam! They are said to be of seven types—*Audarik pudgal parivartya* (gross physical material or particulate transformations), *Vaikriya pudgal parivartya* (transmutable material or particulate transformations)... and so on up to... *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material or particulate transformations).

१७. एवं जाव वेमाणियाणं।

[१७] इसी प्रकार (भवनपति देवों के असुरकुमार से लेकर) यावत् वैमानिक देवों तक कहना चाहिए।

17. The same holds good for (divine beings starting from Abode-dwelling Asur-kumars) ... and so on up to ... Celestial-vehicular gods (Vaimaanik Devs).

विवचन—पुद्गल द्रव्यों के साथ परमाणुओं का मिलन पुद्गल-परिवर्त्तन कहलाता है। ये पुद्गल-परिवर्त्तन संघात (संयोग) और भेद (विभाग) के योग से अनन्तानन्त होते हैं। अब ये पुद्गल-परिवर्त्तन कैसे होते हैं? इसके उत्तर के लिए बताया गया है कि पुद्गल द्रव्यों के साथ परमाणुओं के संघात (संयोग) और भेद (विभाग) के अनुपात—योग से पुद्गल-परिवर्त्तन होते हैं।

मुख्यतया पुद्गल-परिवर्त्तनों के ७ प्रकार होते हैं—(१) औदारिक, (२) वैक्रिय, (३) तैजस, (४) कार्मण, (५) मन, (६) वचन और (७) आन-प्राण पुद्गल परावर्त्तन। औदारिक शरीर में विद्यमान जीव के द्वारा लोकवर्ती औदारिक शरीर योग्य द्रव्यों का औदारिक शरीर के रूप में समग्रतया से ग्रहण करना औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन कहलाता है। इसी प्रकार वैक्रिय पुद्गल परिवर्त्तन आदि का अर्थ समझ लेना चाहिए।

नैरयिक पुद्गलपरिवर्त्तन—अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण करते हुए नैरयिक जीवों के पूर्वोक्त सात प्रकार के पुद्गलपरिवर्त्तन कहे गए हैं।

Elaboration—Combination and separation of ultimate-particles of matter (*paramanu* or *ultrons*) is called *pudgal-parivartya*. There are infinite times infinite (*anantaanant*) probabilities of types of *pudgal-parivartyas* when we count different alternative combinations of integrations and disintegrations. In answer to how these *pudgal-parivartyas* take place, it is stated that materials and *paramanus* integrate or disintegrate in different proportions of numbers to manifest *pudgal-parivartyas*.

There are seven main types of *pudgal-parivartyas* —(1) *Audarik* (gross physical), (2) *Vaikriya* (transmutable), (3) *Taijas* (fiery), (4) *Karman* (karmic), (5) *Manah* (thought), (6) *Vachan* (speech) and (7) *Aan-praan* (breath) *pudgal parivartyas* (material or particulate transformations). Acquiring and integrating of gross physical particulate matter present in the universe (Lok) by the soul/living being existing in its gross physical body is called *Audarik pudgal parivartya* (gross physical material or particulate transformations). The same definition is applicable to other material transformations including *Vaikriya pudgal parivartya* (transmutable material or particulate transformations).

Nairayik Pudgal-parivartya—There are the same seven types of material transformations related to infernal beings caught in the trap of cyclic rebirths since times immemorial.

एकवचन एवं बहुवचन की दृष्टि से चौबीस दण्डकों में औदारिकादि सात पुद्गल परिवर्त्तन की प्ररूपणा

SEVEN TYPES OF TRANSFORMATIONS OF BEINGS OF TWENTY FOUR PLACES OF SUFFERING

१८-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते! जीवस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] अणंता।

१८-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक जीव के अतीत (भूतकाल) में कितने औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! वे अनन्त हुए हैं।

18-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each *jiva* (soul/living being) ?

[Ans.] Gautam ! The number is infinite.

१८-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सऽत्थि जहण्णेणं एगो वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा।

१८-२. [प्र.] (भगवन्!) भविष्यकाल में (प्रत्येक जीव के पुद्गल-परिवर्त्तन) कितने होंगे?

[उ.] गौतम! (भविष्यकाल में) किसी (जीव के पुद्गल परिवर्तन) होंगे और किसी के नहीं। जिसके होंगे, उसके जघन्य से एक, दो (अथवा) तीन होंगे और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात या अनन्त होंगे।

18-2. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) will take place in the future of each *jiva* (soul/living being) ?

[Ans.] Gautam ! (In future) Some soul/living being will undergo that and some will not. Where these will take place the minimum number will be one, two or three and the maximum will be countable, uncountable or infinite.

१९. एवं सत्त दंडगा जाव आणपाणु त्ति।

[१९] इसी प्रकार (वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन से लेकर) यावत्-आन-प्राण, (श्वासोच्छ्वास पुद्गल-परिवर्त्तन तक) सात आलापक (दण्डक) कहने चाहिए।

19. In the same way seven statements should be mentioned for other transformations (from *Vaikriya*)... and so on up to... *Aan-praan.*

२०-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] अणंता।

२०-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक नैरयिक के अतीत (भूतकाल) में कितने औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! अनन्त हैं।

20-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each infernal *jiva* (soul/living being) ?

[Ans.] Gautam! The number is infinite.

२०. [२] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सऽत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा।

२०-२. [प्र.] भगवन्! भविष्यकाल में (प्रत्येक नैरयिक के पुद्गल-परिवर्त्तन) कितने होंगे?

[उ.] गौतम! (भविष्यकाल में) किसी (नैरयिक) के होंगे तो किसी के नहीं। जिसके होंगे, उसके जघन्य से एक, दो (अथवा) तीन होंगे और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात या अनन्त होंगे।

20-2. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) will take place in the future of each infernal *jiva* (soul/living being)?

[Ans.] Gautam! (In future) Some infernal soul/living being will undergo that and some will not. Where these will take place the minimum number will be one, two or three and the maximum will be countable, uncountable or infinite.

२१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] एवं चेव।

२१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक असुरकुमार के अतीत (भूतकाल) में कितने औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! पूर्ववत् जानना चाहिए।

21. [Q.] *Bhante !* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each divine *jiva* (soul/living being) of Asur-Kumar class ?

[Ans.] Gautam ! As aforesaid.

२२. एवं जाव वेमाणियस्स।

[२२] इसी प्रकार (नागकुमार से लेकर) यावत् वैमानिक तक (के अतीत पुद्गलपरिवर्त्तन) (पूर्ववत् समान जानना चाहिए।)

22. Same (for past transformations) is also true for other divine *jiva*s (from Naag-kumar class) ... and so on up to ... Vaimanik class.

२३-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] अणंता।

२३-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक नैरयिक के अतीत (भूतकाल) में कितने वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! (वे भी) अनन्त हुए हैं।

23-1. [Q.] *Bhante !* How many transmutable material transformations (*Vaikriya pudgal parivartya*) have taken place in the past of each infernal *jiva* (soul/living being) ?

[Ans.] Gautam ! The number is infinite.

२३-२. एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा।

[२३-२] जिस प्रकार औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तनन के विषय में कहा गया है, ठीक उसी प्रकार वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन के विषय में कहना चाहिए।

23. [2] What has been stated about gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*), exactly same should be stated for transmutable material transformations (*Vaikriya pudgal parivartya*).

२४. एवं जाव वेमाणियस्स आणापाणुपोग्गलपरियट्टा। एए एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति।

[२४] इसी प्रकार (प्रत्येक नैरयिक से लेकर) यावत् प्रत्येक वैमानिक तक के (अतीतकालिन तैजस पुद्गल-परिवर्त्तन से लेकर) आनाप्राण—श्वासोच्छ्वास पुद्गल-परिवर्त्तन तक कहना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक नैरयिक से वैमानिक तक प्रत्येक जीव की अपेक्षा से ये सात दण्डक होते हैं।

24. The same should be repeated for other *jiva*s (from infernal) up to divine *jiva*s of Vaimanik class (about past *Taijas* material transformations) ... and so on up to ... *Aan-praan* material transformations. In the same way there are seven statements with regard to each *jiva* (soul/living being) from infernal to Vaimanik class.

२५-१. [प्र.] नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] गोयमा ! अणंता।

२५-१. [प्र.] भगवन्! (सम्पूर्ण) नैरयिकों के अतीतकालीन औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन कितने हुए हैं?

[उ.] गौतम! अनन्त हुए हैं।

25-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of (all) infernal soul/living beings?

[Ans.] Gautam! The number is infinite.

२५-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] अणंता।

२५-२. [प्र.] भगवन्! (सम्पूर्ण नैरयिक जीवों के) भविष्य में (औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन) कितने होंगे?

[उ.] गौतम! अनन्त होंगे।

25-2. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) will take place in the future of all infernal *jivas*?

[Ans.] Gautam! The number will be infinite.

२६. एवं जाव वेमाणियाणं।

[२६] इस प्रकार (सम्पूर्ण असुरकुमारों से लेकर) यावत् (सम्पूर्ण) वैमानिकों तक (अतीतकालीन एवं भविष्यकालीन पुद्गल-परिवर्त्तन) के विषय में करना चाहिए।

26. The same (about material transformations of past and future) is true (from all Asur-kumars)... and so on up to... (all) Vaimanik (soul/living beings).

२७. एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि। एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा जाव वेमाणियाणं। एवं एए पोहत्तिया सत्त चउवीसतिदंडगा।

[२७] इस तरह (नैरयिकों से लेकर वैमानिकों तक के) वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन के विषय में कहना चाहिए। इसी प्रकार (तैजस पुद्गल-परिवर्त्तन से लेकर) यावत् आन-प्राण पुद्गल-परिवर्त्तन तक की कहना चाहिए।

इस तरह अलग-अलग सातों पुद्गल-परिवर्त्तनों के विषय में सात आलापक तथा समुच्चय रूप से चौबीस दण्डकवर्ती जीवों के विषय में चौबीस आलापक कहने चाहिए।

27. In the same way statements should be made about transmutable material transformations (in context of infernal beings to Vaimaniks)... and so on up to... *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material transformations). Thus seven separate statements about seven kinds of material transformations should be stated. And twenty four sets of statements related to *jiva*s (souls/living beings) in twenty four places of suffering (*dandak*).

विवेचन—सूत्र नं. १८ से २७ तक नैरयिकादि जीवों से लेकर वैमानिक तक के जीवों के अतीतकालीन और अनागत कालीन, औदारिक आदि सात प्रकार के पुद्गल परिवर्तन के बारे में चर्चा की गई है। अब प्रश्न यह होता है कि प्रत्येक नैरयिकादि जीव के अतीतकालीन पुद्गल-परिवर्त्तन अनन्त कैसे होते हैं? तो इसका उत्तर यह है कि अतीतकाल अनादि है और जीव भी अनादि है तथा अनादिकाल से अनन्त भवों तक भिन्न-भिन्न पुद्गल ग्रहण के कारण प्रत्येक नैरयिकादि जीव के अतीतकाल सम्बन्धी औदारिकादि पुद्गल परिवर्तन भी अनन्त है।

एक अभव्य जीव के तो भविष्यकाल में पुद्गल-परिवर्तन होते ही रहेंगे, परन्तु जो जीव नरक आदि गति से निकल कर मनुष्य भव पाकर सिद्धि प्राप्त कर लेगा, अथवा जो संख्यात या असंख्यात भवों में सिद्धि को प्राप्त करेगा, उसका पुद्गल-परिवर्त्तन नहीं होगा। लेकिन जिसका संसार परिभ्रमण अधिक होगा, वह एक अथवा अनेक पुद्गल-परिवर्त्तन करेगा, वैसे भी एक पुद्गल-परिवर्त्तन अनेक काल में पूरा होता है।

अब दण्डक (विकल्प) सम्बन्धी बात आती है तो एकवचन-सम्बन्धी औदारिकादि सात प्रकार के पुद्‌गल-परिवर्त्तन होने से, सात दण्डक (विकल्प) होते हैं। इन सात दण्डकों को नैरयिकादि चौबीस दण्डकों में कहना चाहिए और इसी प्रकार बहुवचन से भी कहनी चाहिए। एकवचन और बहुवचन सम्बन्धी दण्डकों में अन्तर केवल इतना है कि एकवचन सम्बन्धी दण्डकों में भविष्यकालीन पुद्‌गल-परिवर्त्तन किसी जीव के होते हैं तो किसी जीव के नहीं। जबकि बहुवचन सम्बन्धी दण्डकों में भविष्यकालीन पुद्‌गल परिवर्तन सभी जीव के होते हैं, क्योंकि उनमें सामान्य जीवों के लिये व्यतत्व कहा गया है।

Elaboration—Statements 18 to 27 detail seven types of *pudgal parivartya* (material or particulate transformations) of past and future in context of *jiva*s (soul/living beings) from *nairayik* (infernal) to Vaimanik (Celestial-vehicular gods). The question here is that how can the number of material transformations of the past be infinite? The explanation is that the past is without a beginning; existence of soul/living being is also beginning-less; as such it has undergone material transformations for infinite number of rebirths acquiring and shedding a variety of matter particles making the number of particulate transformations in the past as infinite.

A soul/living being, non-deserving or not destined to liberation (*abhavya jiva*), will continue to undergo particulate transformations but a soul/living being rising from hell, taking birth as human being and getting liberated or the one that may ultimately get liberated in countable or uncountable rebirths will terminate these transformation. However, the number of transformations will depend on the period of movement in the cycles of rebirth. Thus it will vary from one, two, and three to countable, uncountable and infinite. Note that even a single particulate transformation takes a very long period to manifest.

As regards the probabilities or alternatives of a soul/living being undergoing these transformations, they are seven based on the seven types. These seven alternatives are to be considered for twenty four places of suffering (*dandak*) including *nairayik* or infernal. All these sets are also to be mentioned in singular and plural contexts. The only difference is that in singular context the future transformations take place in some case and do not in some case; whereas in plural context they take place

in case of all soul/living beings because that is a general statement for all beings.

एकत्व की अपेक्षा से चौबीस दण्डकों में अतीतादि सात प्रकार के पुद्गल परिवर्त्तनों की प्ररूपणा

SEVEN TYPES OF TRANSFORMATIONS IN SINGULAR CONTEXT

२८-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] नत्थि एक्को वि।

२८-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक नैरयिक जीव के, नैरयिक अवस्था में अतीत (भूतकालीन) औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन कितने हुए हैं?

[उ.] गौतम! एक भी नहीं हुआ।

28-1. [Q.] *Bhante !* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each infernal soul/living being in infernal state ?

[Ans.] Gautam ! Not even one.

२८-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] नत्थि एक्को वि।

२८-२. [प्र.] भगवन्! भविष्य काल में (औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन) कितने होंगे?

[उ.] गौतम! एक भी नहीं होगा।

28-2. [Q.] *Bhante !* How many (gross physical material transformations) will take place in the future ?

[Ans.] Gautam ! Not even one.

२९-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया औरालियपोग्गल-परियट्टा?

[उ.] एवं चेव।

२९-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक नैरयिक जीव के, असुरकुमार रूप में अतीत औदारिक पुद्गलपरिवर्त्तन कितने हुए हैं?

[उ.] गौतम! इसी प्रकार (पूर्वोक्तव्यतानुसार) जानना चाहिए।

29-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each infernal soul/living being in Asur-kumar state ?

[Ans.] Gautam! Same as aforesaid (statement 28).

२९. [२] एवं जाव थणियकुमारत्ते।

[२९-२] इसी प्रकार (नागकुमार से लेकर) यावत्—स्तनितकुमार (तक कहना चाहिए।)

29. [2] The same pattern holds good (from Naag-kumar) ... and so on up to ... Stanit-kumar.

३०-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीया?

[उ.] अणंता।

३०-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक नैरयिक जीव के, पृथ्वीकाय की अवस्था में कितने अतीतकालीन औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन हुए है?

[उ.] गौतम! अनन्त हुए हैं।

30-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each infernal soul/living being in earth-bodied (*prithvi-kaya*) state ?

[Ans.] Gautam ! Infinite.

३०-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा।

३०-२. [प्र.] भगवन्! भविष्य में (औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन) कितने होंगे?

[उ.] किसी के होंगे, और किसी के नहीं होंगे। जिसके होंगे, उसके जघन्य से एक दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात अथवा अनन्त होंगे।

30-2. [Q.] *Bhante!* How many (gross physical material transformations) will take place in the future ?

[Ans.] Gautam ! (In future) Some will undergo that and some will not. Where these will take place, the minimum number will be one, two or three and the maximum will be countable, uncountable or infinite.

३१. एवं जाव मणुस्सत्ते।

[३१] इसी प्रकार (अप्काय की अवस्था से लेकर) यावत् मनुष्य भव तक कहना चाहिए।

31. The same pattern holds good (from water-bodied state)... and so on up to... human state.

३२. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते।

[३२] जिस प्रकार असुरकुमार के विषय में कहा गया है, ठीक उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क तथा वैमानिक के विषय में कहना चाहिए।

32. As has been said about Asur-kumar so should be repeated for Vanavyantar (interstitial), Jyotishk (stellar) and Vaimanik (celestial-vehicular) *jivas*.

३३. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीया?

[उ.] एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते।

३३. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक असुरकुमार के नैरयिक भव में कितने अतीत औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार प्रत्येक नैरयिक जीव के बारे में वक्तव्य कहा गया है, उसी प्रकार (प्रत्येक) असुरकुमार के विषय में यावत् वैमानिक भव-पर्यन्त कहना चाहिए।

33. **[Q.]** *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of each Asur-kumar *jiva* (soul/living being) in infernal (*nairayik*) state ?

[Ans.] Gautam ! What has been said about each infernal being should be repeated for Asur-kumar ... and so on up to ... Vaimanik.

३४. एवं जाव थणियकुमारस्स। एवं पुढविक्काइयस्स वि। एवं जाव वेमाणियस्स। सव्वेसिं एक्को गमो।

[३४] इसी प्रकार (असुरकुमार के समान) यावत्–(नागकुमार से लेकर) स्तनितकुमार तक कहना चाहिए। इसी तरह प्रत्येक पृथ्वीकाय के विषय में भी (पृथ्वीकाय से लेकर) यावत्–वैमानिक पर्यन्त सभी का एक समान आलापक (गम) कहना चाहिए।

34. The same (as Asur-kumar) should be repeated (from Naag-kumar) ... and so on up to...Stanit-kumar. The same should be repeated for each earth-bodied *jiva* (from earth-bodied)... and so on up to... Vaimanik state.

३५-१. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया ?

[उ.] अणंता।

३५-१. [प्र.] भगवन्! प्रत्येक नैरयिक जीव के नैरयिक अवस्था में कितने अतीतकालीन वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! अनन्त हुए हैं।

35-1. [Q.] *Bhante !* How many *Vaikriya pudgal parivartya* (transmutable material transformations) have taken place in the past of each infernal soul/living being in infernal state?

[Ans.] Gautam ! Infinite.

३५-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा ?

[उ.] एक्कोत्तरिया जाव अणंता वा।

३५-२. [प्र.] भगवन्! भविष्य में (वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन) कितने होंगे?

[उ.] गौतम! किसी के होंगे तो किसी के नहीं। जिनके होंगे उनके एक से लेकर उत्तरोत्तर उत्कृष्ट संख्यात, असंख्यात अथवा यावत् अनन्त होंगे।

35-2. [Q.] *Bhante !* How many (transmutable material transformations) will take place in the future ?

[Ans.] Gautam ! (In future) Some will undergo that and some will not. Where these will take place they will be from one to infinite.

३६. एवं जाव थणियकुमारत्ते।

[३६] इसी तरह यावत् स्तनितकुमार भव तक कहना चाहिए।

36. The same holds good (from Asur-kumar)... and so on up to...Stanit-kumar.

३७-१. [प्र.] पुढविकाइयत्ते पुच्छा?

[उ.] नत्थि एक्को वि।

३७-१. [प्र.] (भगवन्! प्रत्येक नैरयिक जीव के) पृथ्वीकायिक अवस्था में कितने (अतीतकालीन वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन) हुए हैं?

[उ.] (गौतम!) एक भी नहीं हुआ।

37-1. [Q.] The same question about earth-bodied soul/living beings?

[Ans.] (Gautam !) Not even one.

३७-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] नत्थि एक्को वि।

३७-२. [प्र.] (भगवन्!) भविष्यकाल में कितने होंगे?

[उ.] गौतम! एक भी नहीं होगा।

37-2. [Q.] (*Bhante !*) How many in future ?

[Ans.] (Gautam !) Not even one.

३८. एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते।

[३८] इस प्रकार जहाँ वैक्रिय शरीर है, वहाँ एक से लेकर अनन्त तक, (वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन जानना चाहिए।) और जहाँ वैक्रिय शरीर नहीं है, वहाँ (प्रत्येक नैरयिक के) जैसा पृथ्वीकायिक अवस्था में कहा, उसी प्रकार, यावत् वैमानिक जीव के वैमानिक भव पर्यन्त तक कहना चाहिए।

38. In the same way where there is a scope of transmutable body, the number of transformation should be taken as one to infinite. Where there is no scope of transmutable body the number of transformation (of infernal souls/living beings) follow the pattern of earth-bodied souls/living beings... and so on up to... Vaimanik souls/living beings in Vaimanik state.

३९. तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एक्कोत्तरिया भाणियव्वा। मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचेंदिएसु एगुत्तरिया। विगलिंदिएसु नत्थि। वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं एगिंदिएसु 'नत्थि' भाणियव्वा। आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एक्कोत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते।

[३९] तैजस पुद्‌गल-परिवर्त्तन और कार्मण-पुद्‌गल-परिवर्त्तन सर्वत्र (चौबीस दण्डक जीवों में) एक से लेकर अनन्त तक कहना चाहिए। मनः पुद्‌गल-परिवर्त्तन समस्त पंचेन्द्रिय जीवों में एक से लेकर यावत् अनन्त तक कहना चाहिए। परन्तु विकलेन्द्रियों (दो-तीन-चार इन्द्रिय वाले जीवों) में मनःपुद्‌गल-परिवर्त्तन नहीं होता। इसी प्रकार वचन-पुद्‌गल-परिवर्त्तन के सम्बन्ध में भी कहना चाहिए। विशेषतः अन्तर इतना है कि वह (वचन-पुद्‌गल-परिवर्त्तन) एकेन्द्रिय जीवों में नहीं होता। आन-प्राण (श्वासोच्छ्‌वास) पुद्‌गल-परिवर्त्तन भी सर्वत्र (सभी जीवों में) एक से लेकर अनन्त तक जानना चाहिए। यावत् वैमानिक के वैमानिक भव तक (इस प्रकार का कथन) कहना चाहिए।

39. (In the same way) State that the number of *Taijas pudgal parivartya* (fiery material transformations) and *Karman pudgal parivartya* (karmic material transformations) should be taken as one to infinite (for all souls/ living beings of 24 places of suffering). State that the number of *Manah pudgal parivartya* (thought material or transformations) should be taken as one to infinite for all five sensed souls/living beings; however in case of souls/living beings with two to four senses there is no *Manah pudgal parivartya.* The same is also true for *Vachan pudgal parivartya* (speech material transformations) the only difference is that this does not happen in case of one sensed souls/living beings. State that the number of *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material transformations) should be taken as one to infinite (for all soul/living beings). This pattern of statements should be repeated ... and so on up to ... Vaimanik souls/living beings in Vaimanik state.

विवेचन—सू. २८ से ३९ तक प्रत्येक वर्तमानकालिक नैरयिक से लेकर वैमानिक तक के अतीत-अनागत नैरयिकत्वादि रूप के सात प्रकार के पुद्‌गल-परिवर्त्तनों की संख्या का निरूपण किया गया है।

वैक्रिय-पुद्‌गल-परिवर्त्तन—प्रत्येक नैरयिक जीव के नैरयिक भव में रहते हुए अनन्त वैक्रिय पुद्‌गल-परिवर्त्तन अतीत में हुए हैं तथा भविष्यकाल में किसी के होंगे और किसी के नहीं। जिसके होंगे, उसके जघन्य से एक, दो, तीन और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात अथवा अनन्त होंगे।

इसके अतिरिक्त वायुकाय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और व्यन्तरादि देवों में से जिनका शरीर वैक्रिय है, उनके वैक्रिय पुद्‌गल-परिवर्त्तन एक, दो, तीन, संख्यात, असंख्यात अथवा अनन्त तक होते हैं। जहाँ अप्कायिक आदि जीवों में वैक्रिय शरीर नहीं है, वहाँ वैक्रिय पुद्‌गल-परिवर्त्तन भी नहीं होता।

तैजस-कार्मण-परिवर्त्तन—तैजस और कार्मण ये दोनों शरीर समस्त संसारी जीवों के होते हैं। इसलिए नारकादि चौबीस दण्डकवर्ती सभी जीवों में तैजस-कार्मण पुद्‌गल-परिवर्त्तन अतीत और भविष्यकाल में एक से लेकर अनन्त तक हुए हैं।

मनःपुद्‌गल-परिवर्त्तन—मन केवल संज्ञी पंचेन्द्रियों के ही होता है, इसी कारण पंचेन्द्रिय जीवों में एक से लेकर अनन्त तक मनःपुद्‌गल परिवर्त्तन होते हैं, हुए हैं और होते रहेंगे। किन्तु जिन जीवों में इन्द्रियों की अपूर्णता है, ऐसे एकेन्द्रिय जीवों से लेकर चतुरिन्द्रिय जीवों तक के मन नहीं होता और इसी कारण उनमें मनःपुद्‌गल-परिवर्तन भी नहीं होता।

वचन पुद्‌गल-परिवर्त्तन—एकेन्द्रिय जीवों के वचन नहीं होता, इसलिए उन्हें छोड़ कर शेष समस्त संसारी जीवों के (दो इन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव) के वचन पुद्‌गल-परिवर्त्तन होते हैं।

आन-प्राण-पुद्‌गल-परिवर्त्तन—श्वासोच्छ्‌वास एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक सभी संसारी जीवों के होता है, इसलिए आन-प्राण-पुद्‌गल-परिवर्त्तन सभी जीवों में एक से लेकर अनन्त तक होता है।

Elaboration—In aforesaid statements all alternatives of numbers of seven kinds of material transformations for all souls/living beings have been detailed.

Vaikriya pudgal parivartya (transmutable material transformations) — Infinite transmutable material transformations have taken place in the past of each infernal soul/living being in infernal state. In future some will undergo that and some will not. Where these will take place they will be a minimum of one, two or three and a maximum of numerable, innumerable or infinite.

Besides this in case of air-bodied, five sensed animals and divine *jivas* (soul/living beings) that have transmutable bodies, they have one, two, three, numerable, innumerable and infinite transmutable material transformations. In case of *jivas*, including water-bodied, that do not have transmutable bodies, this transformation does not take place.

Taijas and *Karman* material transformations—As all living *jivas* have fiery and karmic bodies these transformations have taken place in all *jivas*

of all the twenty four places of suffering (*dandak*) from one to infinite times in the past and will also take place in future.

Manah material transformations—Only sentient five-sensed beings have mind, therefore in these five sensed *jivas* *Manah pudgal parivartya* have taken place, taking place and will take place. However, the *jivas* having one to four sense organs do not have mind and as such there is no scope of this transformation in them.

Vachan material transformations—One sensed *jivas* lack the faculty of speech, therefore all *jivas* other than these (two to five sensed infernal beings, animals, humans and divine beings) have *Vachan* material transformations.

Aan-praan pudgal parivartya (breath material transformations)—All *jivas*, from one to five sensed, have breathing, therefore they all have breath material transformations from one to infinite times.

बहुत्व की अपेक्षा से नैरयिकादि जीवों के नैरयिकत्वादि रूप में अतीतादि सात प्रकार के पुद्गल-परिवर्त्तनों की प्ररूपणा

SEVEN TYPES OF TRANSFORMATIONS IN PLURAL CONTEXT

४०-१. [प्र.] नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया?

[उ.] नत्थिएक्को वि।

४०-१. [प्र.] भगवन्! अनेक नैरयिक जीवों के नैरयिक भव में कितने अतीतकालीन औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन हुए हैं?

[उ.] गौतम! एक भी नहीं हुआ।

40-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of many infernal souls/living beings in infernal state ?

[Ans.] Gautam ! Not even one.

४०-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] नत्थिएक्को वि।

४०-२. [प्र.] भगवन्! (उन नैरयिक जीवों के नैरयिक भव में) कितने भविष्यकालीन (औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन) होंगे?

[उ.] गौतम! भविष्य में एक भी नहीं होगा।

40-2. [Q.] *Bhante!* How many (gross physical material transformations) will take place in the future ?

[Ans.] Gautam ! Not even one.

४१. एवं जाव थणियकुमारत्ते।

[४१] इसी प्रकार (अनेक नैरयिक जीवों के असुरकुमार भव से लेकर) यावत् स्तनितकुमार भव तक (कहना चाहिए।)

41. The same holds good (from Asur-kumar)... and so on up to... Stanit-kumar.

४२-१. [प्र.] पुढविकाइयत्ते पुच्छा?

[उ.] अणंता।

४२-१. [प्र.] भगवन्! अनेक नैरयिक जीवों के पृथ्वीकायिक अवस्था में कितने (अतीतकालिक औदारिक-पुद्गल-परिवर्त्तन) हुए हैं।

[उ.] गौतम! अनन्त हुए हैं।

42-1. [Q.] *Bhante!* How many gross physical material transformations (*Audarik pudgal parivartya*) have taken place in the past of many infernal souls/living beings in earth-bodied state ?

[Ans.] Gautam ! Infinite.

४२-२. [प्र.] केवइया पुरेक्खडा?

[उ.] अणंता।

४२-२. [प्र.] भगवन्! (उन नैरयिकों के पृथ्वीकायिक अवस्था में) भविष्य में कितने (औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन) होंगे?

[उ.] गौतम! अनन्त होंगे।

42-2. [Q] *Bhante!* How many (gross physical material transformations) will take place in the future ?

[Ans.] Gautam ! Infinite.

४३. एवं जाव मणुस्सत्ते।

[४३] इसी प्रकार (जैसा अनेक नैरयिकों के पृथ्वीकायिक अवस्था में अतीत-अनागत औदारिक पुद्‌गल-परिवर्त्तन के विषय में कहा है, वैसा) यावत् मनुष्य भव तक कहना चाहिए।

43. The same holds good (from many infernal beings in water-bodied state)... and so on up to... in human state.

४४. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते।

[४४] इसी तरह (जैसा नैरयिकों के नैरयिक भव में अतीतानागत औदारिक पुद्‌गल परिवर्तन के बारे में कहा है वैसा) वाणव्यन्तर ज्योतिष्क और वैमानिक देव के भव में भी कहना चाहिए।

44. As has been said (about many infernal soul/living beings related gross physical material transformation in past and future) so should be repeated for Vanavyantar (interstitial), Jyotishk (stellar) and Vaimanik (celestial-vehicular) *jivas*.

४५. एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते।

[४५] (जिस तरह अनेक नैरयिकों के वैमानिक भव तक का औदारिक पुद्‌गल-परिवर्त्तन के विषय में कथन किया है) उसी तरह यावत् अनेक वैमानिकों के वैमानिक भव तक (कथन करना चाहिए)।

45. As has been said (about many infernal souls/living beings related gross physical material transformation in past and future in infernal to Vaimanik states) so should be repeated ... and so on up to ... for many Vaimanik souls/living beings in Vaimanik state.

४६. एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा। जत्थ अत्थि तत्थ अतीता वि, पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा। जत्थ नत्थि तत्थ दो वि 'नत्थि' भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवइया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीया? अणंता। केवइया पुरेक्खडा? अणंता।

[४६] (जिस प्रकार औदारिक पुद्‌गल-परिवर्त्तन के विषय में कहा) उसी प्रकार शेष सातों पुद्‌गल-परिवर्त्तनों के बारे में कहना चाहिए। जहाँ जो पुद्‌गल-परिवर्त्तन हो, वहाँ उसके अतीत (भूतकालिक) और पुरस्कृत (अनागत) पुद्‌गल परिवर्त्तन अनन्त-अनन्त कहने चाहिए। जहाँ नहीं हों वहाँ अतीत और पुरस्कृत (अनागत) दोनों नहीं कहने चाहिए। यावत्-(प्रश्न) भगवन्! अनेक वैमानिकों के वैमानिक भव में कितने (अतीत में) आन-प्राण-पुद्‌गल-परिवर्त्तन हुए?

(उत्तर–) गौतम! अनन्त हुए हैं। (प्रश्न–) भगवन्! आगे कितने होंगे? (उत्तर–) गौतम! अनन्त होंगे।

46. In the same way (as has been stated about gross physical material transformations) state about the remaining six material transformations. Where, which transformation is applicable mention infinite for past as well as future. Where the same is not applicable, both past and future are not to be stated. ... and so on up to... [Q.] *Bhante!* How many *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material transformations) have taken place in the past of many Vaimanik souls/living beings in Vaimanik state? [Ans.] Gautam! Infinite. [Q.] *Bhante!* How many will take place in the future? [Ans.] Gautam! Infinite.

४७. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'ओरालियपोग्गलपरियट्टे, ओरालियपोग्गलपरियट्टे'?

गोयमा! जंणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं परियाइयाइं परिणामियाइं निज्जिण्णाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'ओरालियपोग्गलपरियट्टे, ओरालियपोग्गलपरियट्टे'।

४७. [प्र.] भगवन्! यह औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन, औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन क्यों कहा जाता है?

[उ.] गौतम! जीव ने औदारिक शरीर में रहते हुए, औदारिक शरीर योग्य द्रव्यों को औदारिक शरीर के रूप में ग्रहण किये हैं, बद्ध किये हैं अर्थात्–जीव प्रदेशों के साथ एकमेक किये हैं; शरीर पर रेणु के समान स्पृष्ट किये हैं; अथवा नए-नए ग्रहण करके उन्हें पुष्ट किए हैं; उन्हें पूर्व परिणाम की अपेक्षा से परिणामान्तर किये हैं; उन्हें प्रस्थापित (स्थिर) किये हैं; निविष्ट (स्थापित) किये हैं, अभिनिविष्ट यानि जीव के साथ सर्वथा संलग्न किये हैं; अभिसमन्वागत अर्थात् जीव ने रसानुभूति का आश्रय लेकर सबको समाप्त किये हैं। जीव ने रसग्रहण द्वारा सभी अवयवों से उन्हें पर्याप्त (ग्रहण) कर लिये हैं। परिणामित (रसानुभूति से ही परिणामान्तर प्राप्त) कराये हैं, निर्जीण (क्षीण रस वाले) किये हैं; निःसृत (पृथक्) किये हैं, निःसृष्ट (अपने प्रदेशों से परित्यक्त) किये हैं।

अतः हे गौतम! इसी कारण से औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन, औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन कहलाता है।

47. [Q.] *Bhante!* Why this *Audarik pudgal parivartya* (gross physical material or particulate transformations) is called *Audarik pudgal parivartya*?

[Ans.] Gautam! A soul, while residing in *Audarik* sharira (gross physical body) has acquired (*grahan*) gross physical substances suitable for gross physical body; bounded (*baddha*) them with soul/living being-space-points; touched (*sprisht*) or consolidated (*pusht*) after acquiring anew; given a new form (*krit*); stabilized (*prasthapit*) them; fixed (*nivisht*) them with soul; fused (*abhinivisht*) them with soul; experienced the essence (*abhisamanvagat*) to consume them; thereby attained satiation or full development (*paryapt*) from all angles; having done that caused transformation (*parinamit*), extracted the essence (*nirjirna*), separated (*nihsrit*) them and shed (*nihsrisht*) them from soul-space-points.

Gautam! That is why this *Audarik pudgal parivartya* (gross physical material or particulate transformations) is called *Audarik pudgal parivartya.*

४८. एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीर-पायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए। सेसं तं चेव सव्वं।

[४८] इसी प्रकार (पूर्वोक्त कथन के अनुसार) वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन के विषय में भी कहना चाहिए। परन्तु मुख्य रूप से विशेषता यह है कि जीव ने वैक्रिय शरीर में रहते हुए वैक्रिय शरीर योग्य द्रव्यों को वैक्रिय शरीर के रूप में ग्रहण किये हैं, इत्यादि शेष सब कथन (पूर्ववत् कहना चाहिए।)

48. In the same way state with regard to *Vaikriya pudgal parivartya* (transmutable material transformations). The difference being that a soul while residing in *Vaikriya* sharira (transmutable body) has acquired (*grahan*) transmutable substances suitable for transmutable body. Rest of the statement is as aforesaid.

४९. एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए० सेसं तं चेव।

[४९] इसी प्रकार (तैजस, कार्मण से लेकर) यावत् आन-प्राण, पुद्गल-परिवर्त्तन तक कहना चाहिए। केवल विशेष यह है कि आन-प्राण-योग्य समस्त द्रव्यों को आन-प्राण रूप से जीव ने ग्रहण किये हैं, इत्यादि (शेष सब कथन भी पूर्व की तरह जानना चाहिए)।

49. In the same way state with regard to other transformations (from fiery and karmic)... and so on up to... *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material transformations). The difference being that a soul while residing in *sharira* (body) has acquired (*grahan*) substances suitable for breathing through exhalation and inhalation. Rest of the statement is as aforesaid.

विवेचन—सूत्र नं. ४७ में औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन की १३ प्रक्रियाएँ बताई गई हैं—(१) गृहीत, (२) बद्ध, (३) स्पृष्ट या पुष्ट, (४) कृत, (५) प्रस्थापित, (६) निविष्ट, (७) अभिनिविष्ट, (८) अभिसमन्वागत, (९) पर्याप्त, (१०) परिणामित, (११) निर्जीर्ण (१२) निःसृत और (१३) निःसृष्ट। इन तेरह प्रक्रियाओं में से औदारिक शरीर योग्य द्रव्यों के गुजरने के कारण ही वह औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन कहलाता है।

औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन के समान ही अन्य सभी पुद्गल-परिवर्त्तनों की प्रक्रियाएँ हैं, वहाँ केवल 'नाम' बदल जाता है, शेष सब कथन समान है।

Elaboration—Statement 47 names the 13 steps of the process of gross physical material transformation–(1) acquired (*grihit*), (2) bounded (*baddha*), (3) touched (*sprisht*) or consolidated (*pusht*), (4) given a new form (*krit*), (5) stabilized (*prasthapit*), (6) fixed (*nivisht*), (7) fused (*abhinivisht*), (8) experienced the essence (*abhisamanvagat*), (9) attained satiation or full development (*paryapt*), (10) caused transformation (*parinamit*), (11) extracted the essence (*nirjirna*), (12) separated (*nihsrit*), and (13) shed (*nihsrisht*). Only when particles suited for gross physical body undergo these thirteen steps the process is called gross physical material transformation. All other transformations also undergo the same process.

सात प्रकार के पुद्गल-परिवर्त्तनों का निर्वर्त्तनाकाल निरूपण

PERIOD OF COMPLETION OF SEVEN PARTICULATE TRANSFORMATIONS

५०. [प्र.] ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ?

[उ.] गोयमा! अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं, एवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ।

५०. [प्र.] भगवन्! औदारिक-पुद्गल-परिवर्त्तन कितने काल में निर्वर्त्तित-निष्पन्न होता है?

[उ.] गौतम! अनन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीकाल में (औदारिक-पुद्गल-परिवर्त्तन) निष्पन्न होता है।

50. [Q.] *Bhante!* How much time does *Audarik pudgal parivartya* (gross physical material or particulate transformations) take to reach completion.

[Ans.] Gautam! It (gross physical material or particulate transformations) takes infinite progressive and regressive cycles of time (*Utsarpini & Avasarpini*) to reach completion.

५१. एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि।

[५१] इसी प्रकार (पूर्ववत्) वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल जानना चाहिए।

51. The same is true for *Vaikriya pudgal parivartya* (transmutable material transformations).

५२. एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे वि।

[५२] इसी तरह (औदारिक पुद्गल परिवर्त्तन-निष्पत्तिकाल के समान ही शेष पाँच पुद्गल-परिवर्त्तन) यावत् आन-प्राण-पुद्गल परिवर्त्तन (का निष्पत्तिकाल जानना चाहिए।)

52. The same is also true for other five material transformations ... and so on up to ... *Aan-praan pudgal parivartya* (breath material transformations).

विवेचन—औदारिक आदि सातों पुद्गल-परिवर्त्तनों में से प्रत्येक पुद्गल-परिवर्त्तन अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल में निष्पन्न होता है, उसका कारण यह है कि पुद्गल अनन्त है और उनका ग्राहक एक ही जीव होता है तथा किसी भी पुद्गल-परिवर्त्तन में पूर्वगृहीत पुद्गलों की गणना नहीं की जाती।

Elaboration—Each of the aforesaid particulate transformations takes infinite cycles of time to come to completion. This is because, in the universe matter particles are infinite and there is only one soul/living being under consideration at one moment; moreover, at the time of consideration the particles transformed in the past are not counted.

सप्तविध पुद्गल-परिवर्त्तों के निष्पत्तिकाल का अल्प-बहुत्व

COMPARATIVE PERIOD OF SEVEN TYPES OF PARTICULATE TRANSFORMATION

५३. [प्र.] एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गल-परियट्ट-निव्वत्तणाकालस्स, जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?

[उ.] गोयमा! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणु-पोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे।

५३. [प्र.] भगवन्! औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन-निर्वर्त्तना काल, वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन-निर्वर्त्तनाकाल यावत् आन-प्राण-पुद्गल-परिवर्त्तन निर्वर्त्तनाकाल, इन (सातों) में से कौन-सा (निष्पत्ति-) काल, किस काल से अल्प (कम) यावत् विशेषाधिक है?

[उ.] गौतम! सबसे थोड़ा निर्वर्त्तना (निष्पत्ति) काल कार्मण-पुद्गल-परिवर्त्तन का है। उससे तैजस पुद्गल-परिवर्त्तन का निर्वर्त्तनाकाल अनन्तगुणा (अधिक) है। उससे औदारिक-पुद्गल-परिवर्त्तन का निर्वर्त्तना-काल अनन्तगुणा है, उससे आन-प्राण-पुद्गल-परिवर्त्तन का निर्वर्त्तनाकाल अनन्तगुणा है। उससे मनःपुद्गल-परिवर्त्तन-निर्वर्त्तनाकाल अनन्तगुणा है और उससे मनःपुद्गल-परिवर्त्तन का निर्वर्त्तना काल अनन्तगुणा है, उससे वचन-पुद्गल-परिवर्त्तन का निर्वर्त्तनाकाल अनन्तगुणा है और (इन सबसे) वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन का निर्वर्त्तनाकाल अनन्तगुणा है।

53. [Q.] *Bhante !* Of the periods of completion of the said seven types of particulate transformations—gross physical particulate transformation, transmutable particulate transformation... and so on up to... breath particulate transformation, which period is less than which... and so on up to... which is much more ?

[Ans.] The minimum period of completion is of Karmic particulate transformation; infinite times more than that is the period of completion of Fiery particulate transformation; infinite times more than that is the period of completion of gross physical particulate transformation; infinite times more than that is the period of completion of Breath particulate transformation; infinite times more than that is the period of completion of Thought particulate transformation; infinite times more than that is the period of completion of Speech particulate transformation; infinite times more than that is the period of completion of Transmutable particulate transformation, which is maximum.

विवेचन—कार्मण पुद्गल परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल सबसे थोड़ा इसलिए है क्योंकि कार्मण पुद्गल सूक्ष्म होते हैं और बहुत-से परमाणुओं से निष्पन्न होते हैं। इसी कारण वे एक ही बार में नारक

आदि सभी गतियों में वर्तमान जीवों द्वारा प्रति समय बहुत-से ग्रहण किए जाते हैं। उससे तैजस पुद्गल परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है, क्योंकि तैजस पुद्गल स्थूल होने के कारण और अल्प-प्रदेशों से निष्पन्न होने से वे जीव द्वारा एक बार में अल्प रूप से ग्रहण किए जाते हैं। इसलिए कार्मण से तैजस पुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है। उससे औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है, क्योंकि औदारिक पुद्गल अत्यन्त स्थूल होते हैं तथा वे कार्मण और तैजस पुद्गलों की तरह सर्व-संसारी जीवों द्वारा निरन्तर गृहीत नहीं होते, केवल औदारिक शरीरधारियों द्वारा ही ग्रहण किये जाते हैं इसलिए बहुत लम्बे काल में उनका ग्रहण होता है। उससे आन-प्राण-पुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पतिकाल अनन्तगुणा है। यद्यपि औदारिक पुद्गलों से आन-प्राण-पुद्गल सूक्ष्म और बहुप्रदेशी होते हैं, फिर भी उनका ग्रहण अल्पकाल में होता है, क्योंकि अपर्याप्त-अवस्था में उनका ग्रहण न होने से तथा पर्याप्त-अवस्था में भी औदारिक शरीर-पुद्गलों की अपेक्षा अल्प-परिमाण में उनका ग्रहण होने से, उनका शीघ्रतापूर्वक ग्रहण नहीं होता। इसलिए औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है। यद्यपि आन प्राण पुद्गलों की अपेक्षा मनःपुद्गल सूक्ष्म और बहुप्रदेशी होते हैं, फिर भी अल्पकाल में ही उनका ग्रहण होता है, क्योंकि एकेन्द्रियादि की कायस्थिति बहुत दीर्घकालीन है। एकेन्द्रियादि में चले जाने पर मन की प्राप्ति चिरकाल के बाद होती है, इसलिए मनःपुद्गल-परिवर्त्तन दीर्घकाल-साध्य होने से मनःपुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल उससे अनन्तगुणा कही गयी है। उससे वचन पुद्गल परिवर्त्तन निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है क्योंकि मनोद्रव्यों की अपेक्षा भाषाद्रव्य अत्यन्त स्थूल होते हैं, इसलिए एक बार में उनको अल्प परिमाण में ग्रहण किया जाता है। अतः मनःपुद्गल-परिवर्त्तन-निष्पत्तिकाल से वाक्-पुद्गल-परिवर्त्तन-निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है। इससे वैक्रिय पुद्गल-परिवर्त्तन का निष्पत्तिकाल अनन्तगुणा है, क्योंकि वैक्रिय शरीर बहुत दीर्घकाल में प्राप्त होता है।

Elaboration—The period of completion of Karmic particulate transformation is minimum, because these particles are very minute and thus they are acquired by a soul in bunches every moment. Infinite times more than that is the period of completion of Fiery particulate transformation because these particles grosser and are acquired in lesser numbers every moment by a soul. Infinite times more than that is the period of completion of gross physical particulate transformation because these particles are even larger than fiery particles, moreover they are acquired only by souls with gross physical body and not by any other soul; thus it takes much more time to exhaust all available particles. Infinite times more than that is the period of completion of Breath particulate transformation; this is because, though these particles are smaller than gross physical particles, they are acquired only by souls with fully developed bodies and even the fully developed bodies acquire more gross physical particles than breath particles. Infinite times

more than that is the period of completion of Thought particulate transformation; this is because, though these particles are subtler than breath particles, the total number of souls acquiring these is very small as all non-sentient beings are without mind; moreover once a soul moves to these lower beings it again becomes sentient only after a very long period. Infinite times more than that is the period of completion of Speech particulate transformation because the speech particles are larger than the thought particles; larger the particle lesser number is acquired every moment making the period of completion of transformation very long. Infinite times more than that is the period of completion of Transmutable particulate transformation; this is because a soul gains transmutable body after a very long period and the total number of such souls is very less.

सात प्रकार के पुद्गल परिवर्त्तनों का अल्पबहुत्व

COMPARATIVE NUMBER OF SEVEN TYPES OF PARTICULATE TRANSFORMATION

५४. [प्र.] एएसि णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गल-परियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?

[उ.] गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गल-परियट्टा अणंतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालियपोग्गल-परियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं जाव विहरइ।

॥ बारसमे सए : चउत्थो उद्देसओ समत्तो ॥ १२-४ ॥

५४. [प्र.] भगवन्! औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन (से लेकर), यावत् आन-प्राण-पुद्गल-परिवर्त्तन में कौन पुद्गल-परिवर्त्तन किससे अल्प यावत् विशेषाधिक है?

[उ.] गौतम! सबसे थोड़े वैक्रिय-पुद्गल-परिवर्त्तन हैं। उनसे अनंतगुणा वचन-पुद्गल-परिवर्त्तन हैं, उनसे मन:पुद्गल-परिवर्त्तन अनन्तगुणे हैं, उनसे अनंतगुणा आनप्राण-पुद्गल-परिवर्त्तन हैं। उनसे अनंतगुणा औदारिक पुद्गल-परिवर्त्तन है उनसे अनन्तगुणा तैजस पुद्गल-परिवर्त्तन हैं और उनसे भी अधिक अनन्तगुणा कार्मण पुद्गल परिवर्त्तन हैं।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है; ऐसा कहकर भगवान गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

54. [Q.] *Bhante!* Of the said seven types of particulate transformations—gross physical particulate transformation, transmutable particulate transformation... and so on up to... breath particulate transformation, which is less in number than which... and so on up to... which is much more ?

[Ans.] Gautam ! Minimum number is of Transmutable particulate transformations; infinite times more than that is the number of Speech particulate transformations; infinite times more than that is the number of thought particulate transformations; infinite times more than that is the number of breath particulate transformations; infinite times more than that is the number of Gross physical particulate transformations; infinite times more than that is the number of Fiery particulate transformations; infinite times more than that is the number of Karmic particulate transformations;

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—इन सातों पुद्गल-परिवर्त्तनों में सबसे थोड़े वैक्रिय पुद्गल परिवर्त्तन हैं, क्योंकि वे बहुत दीर्घकाल में निष्पन्न होते हैं। उनसे वचन-पुद्गल-परिवर्त्तन अनन्तगुणे हैं, क्योंकि वे अल्पतर काल में ही निष्पन्न होते हैं।

इसी प्रकार आगे के पुद्गल-परिवर्त्तनों के विषय में समझना चाहिए।

Elaboration—Of the seven particulate transformations the number of transmutable particulate transformation is minimum because they come to completion in a very long period. Infinite times more is the number of speech particulate transformations because they take lesser time for completion. The same is applicable to the following transformations.

• END OF THE FOURTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER •

पंचमो उद्देसओ : अतिवात
पंचम उद्देशक : अतिपात
PANCHAM UDDESHAK (FIFTH LESSON) : ATIPAAT (VIOLATION)

अठारह पापस्थानों में वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श की प्ररूपणा

COLOUR, SMELL, TASTE AND TOUCH IN EIGHTEEN SOURCES OF DEMERIT

१. रायगिहे जाव एवं वयासी–

[१] राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा–

1. 1. (During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in) Rajagriha city... and so on up to... Gautam Swami asked—

२. [प्र.] अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे, एस णं कइवण्णे कइगंधे कइरसे कइफासे पन्नत्ते ?

[उ.] गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पन्नत्ते।

२. [प्र] भगवन्! प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह; ये (सभी) कितने वर्ण, कितने गन्ध, कितने रस और कितने स्पर्श वाले कहे हैं?

[उ.] गौतम! (ये सभी) पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस और चार स्पर्श वाले कहे हैं।

2. [Q.] *Bhante!* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be – *praanaatipaat* (violating life), *mrishaavaad* (falsity), *adattaadaan* (taking without being given; stealing), *maithun* (sexual intercourse) and *parigraha* (covetousness) ?

[Ans.] Gautam! They all are said to have five colours (*varna*), two smells (*gandh*), five tastes (*rasa*) and four touches (*sparsh*).

३. [प्र.] अह भंते! कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे, एस णं कइवण्णे जाव कइफासे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा! पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे चउफासे पन्नत्ते।

३ [प्र.] भगवन्! क्रोध, कोप, रोष, दोष (द्वेष), अक्षमा, संज्वलन, कलह, चाण्डिक्य, भण्डन और विवाद—ये सभी कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले कहे हैं?

[उ.] गौतम! ये सभी पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और चार स्पर्श वाले कहे हैं।

3. [Q.] *Bhante!* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be–*krodh* (anger), *kope* (provocation), *roash* (antagonism), *doash* (blame), *akshama* (intolerance), *sanjvalan* (irritability), *kalah* (dispute), *chaandikya* (rage), *bhandan* (fight), and *vivaad* (debate)?

[Ans.] Gautam! They all are said to have five colours (*varna*), two smells (*gandh*), five tastes (*rasa*) and four touches (*sparsh*).

४. [प्र.] अह भंते! माणे मए दप्पे थंभे गव्वे अत्तुक्कोसे परपरिवाए उक्कासे अवक्कासे उन्नए उन्नामे दुन्नामे, एस णं कइवण्णे कइगंधे कइरसे कइफासे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! पंचवण्णे जहा कोहे तहेव।

४. [प्र.] भगवन्! मान, मद, दर्प, स्तम्भ, गर्व, अत्युत्क्रोश, परपरिवाद, उत्कर्ष, अपकर्ष, उन्नत, उन्नाम और दुर्नाम—ये (सभी) कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले कहे हैं?

[उ.] गौतम! ये (सभी) पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस एवं चार स्पर्श वाले कहे हैं।

4. [Q.] *Bhante!* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be–*maan* (conceit), *mada* (pride), *darpa* (bloated ego), *stambh* (rigidity), *garva* (vainglory), *atyutkrosh* (haughtiness), *paraparivaad* (snobbery), *utkarsh* (boastfulness), *apakarsh* (narcissism), *unnat* (arrogance), *unnaam* (smugness), and *durnaam* (superciliousness)?

[Ans.] Gautam! Like *krodh* they all are said to have five colours (*varna*), two smells (*gandh*), five tastes (*rasa*) and four touches (*sparsh*).

५. [प्र.] अह भंते! माया उवही नियडी वलये गहणे णूमे कक्के कुरूए जिम्हे किब्बिसे आयरणया गूहणया वंचणया पलिउंचणया साइजोगे, एस णं कइवण्णे कइगंधे कइरसे कइफासे पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! पंचवण्णे जहेव कोहे।

५. [प्र.] भगवन्! माया, उपधि, निकृति, वलय, गहन, नूम, कल्क, कुरूपा, जिह्मता, किल्विष, आचरणता, गूहनता, वञ्चनता, प्रतिकुञ्चनता, और सातियोग—इन सभी में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं?

[उ.] गौतम! ये सभी क्रोध के समान पाँच वर्ण वाले हैं।

5. [Q.] *Bhante!* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be–*maaya* (deceit), *upadhi* (conspire), *nikriti* (cheat by enticing), *valaya* (chicanery), *gahan* (treachery), *noom* (vileness), *kalk* (banditry), *kurupa* (slyness), *jihmata* (cunningness), *kilvish* (treachery), *aacharanata* (trickery), *goohanata* (disguise), *vanchanata* (swindle), *pratikunchanata* (misinterpretation) and *saatiyoga* (adulteration)?

[Ans.] Gautam! Like *krodh* they all are said to have five colours (*varna*), two smells (*gandh*), five tastes (*rasa*) and four touches (*sparsh*).

६. [प्र.] अह भंते ! लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पत्थणया लालप्पणया कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे, एस णं कइवण्णे० ?

[उ.] जहेव कोहे।

६. [प्र.] भगवन्! लोभ, इच्छा, मूर्च्छा, काँक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भिध्या, अभिध्या, आशंसनता, प्रार्थनता, लालपनता, कामाशा, भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा और नन्दिराग—ये सभी कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले कहे हैं?

[उ.] गौतम! क्रोध के समान जानना चाहिए। (अर्थात् पाँच वर्ण वाले हैं।)

6. [Q.] *Bhante!* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be–*lobha* (greed), *ichchha* (desire), *murchchha* (graspingness), *kaanksha* (craving), *griddhi* (infatuation), *trishna* (holding), *bhidhya* (longing), *abhidhya* (voracity), *aashamsanata* (expectation), *praarthanata* (begging), *laalapanata* (demand), *kaamaasha* (hope), *bhogaasha* (hope), *jivitaasha* (hope for life), *maranaasha* (death wish) and *nandiraag* (attachment)?

[Ans.] Gautam! Like *krodh* they all are said to have five colours (*varna*), two smells (*gandh*), five tastes (*rasa*) and four touches (*sparsh*).

७. [प्र.] अह भंते ! पेज्जे दोसे कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले, एस णं कइवण्णे. ?

[उ.] जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे।

७. [प्र.] भगवन्! प्रेम-राग, द्वेष, कलह से लेकर यावत् मिथ्यादर्शन-शल्य तक ये (सभी पापस्थानों) कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले कहे हैं?

[उ.] (गौतम!) जिस प्रकार क्रोध के लिए (कथन किया था उसी प्रकार) इनमें भी, यावत् चार स्पर्श हैं (यहाँ तक कहना चाहिए।)

7. **[Q.]** *Bhante !* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be–*preyas* or *raag* (attachment inspired by love), *dvesh* (aversion), *kalah* (dispute)... and so on up to... *mithyaadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness) ?

[Ans.] Gautam ! As stated about *krodh*... and so on up to... four touches (*sparsh*).

विवेचन—प्रस्तुत सात सूत्रों के अन्तर्गत बताया गया है कि प्राणातिपात से लेकर मिथ्यादर्शन-शल्य तक ये अठारह पापस्थान पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस और चार स्पर्श (स्निग्ध, रुक्ष, शीत और उष्ण) वाले होते हैं।

प्राणातिपात—जीव हिंसा से जनित कर्म प्राणातिपात कहलाता है। **मृषावाद**—क्रोध, लोभ, भय अथवा हास्य के वशीभूत होकर असत्य, अप्रिय, अहितकर, विघातक वचन कहना मृषावाद है। **अदत्तादान**—स्वामी की अनुमति, इच्छा या सम्मति के बिना कुछ भी लेना अदत्तादान है। **मैथुन**—विषयवासना से प्रेरित स्त्री-पुरुष के संयोग को मैथुन कहते हैं। **परिग्रह**—धन, कांचन, मकान आदि बाह्य परिग्रह है और ममता-मूर्च्छा आदि आभ्यन्तर परिग्रह है।

क्रोध—क्रोध रूप परिणाम को उत्पन्न करने वाले कर्म को क्रोध कहते हैं। (२) **कोप**—क्रोध के उदय से अपने स्वभाव से चलित होना। (३) **रोष**—क्रोध की परम्परा। (४) **दोष**—अपने आपको और दूसरों को दोष देना। (५) **अक्षमा**—दूसरे के द्वारा किए हुए अपराध को सहन नहीं करना। (६) **संज्वलन**—बार-बार क्रोध से प्रज्वलित होना। (७) **कलह**—वाक्-युद्ध करते हुए परस्पर क्लेश करना। (८) **चाण्डिक्य**—रौद्र रूप धारण करना। (९) **भण्डन**—दण्ड आदि से परस्पर लड़ाई करना (१०) **विवाद**—परस्पर विरोधी बात कहकर झगड़ा या विवाद करना। ये सभी क्रोध के पर्यायवाची शब्द हैं।

मान और उसके पर्यायवाची शब्द—(१) **मान**—अपने आपको दूसरों से उत्कृष्ट समझना। (२) **मद**—जाति आदि का अहंकार करना। (३) **दर्प**—घमण्ड में चूर होना। (४) **स्तम्भ**—नम्र न होना—स्तम्भ की भाँति कठोर बने रहना। (५) **गर्व**—अहंकार। (६) **अत्युत्क्रोश**—स्वयं को दूसरों से

उत्कृष्ट मानना या बताना। (७) **पर-परिवाद**—पर-निन्दा करके अपनी ऊँचाई की डींगें हाँकना। (८) **उत्कर्ष**—क्रिया से अपने आपको उत्कृष्ट मानना अथवा अभिमानपूर्वक अपनी समृद्धि, शक्ति, क्षमता, विभूति आदि प्रकट करना। (९) **अपकर्ष**—अपने से दूसरे को तुच्छ बताना अथवा अभिमान से अपना या दूसरों का अपकर्ष करना। (१०) **उन्नत**—नमन से दूर रहना अथवा अभिमानपूर्वक तने रहना अर्थात् अक्खड़ में रहना। (११) **उन्नय**—वन्दन योग्य पुरुष को वन्दन न करना अथवा अपने को नमन करने वाले पुरुष के प्रति सद्भाव न रखना। (१२) **दुर्नाम**—वन्द्य पुरुष को अभिमानवश बुरे ढंग से वन्दन-नमन करना।

माया और उसके पर्यायवाची शब्द—(१) **माया**—छल-कपट करना। (२) **उपधि**—किसी को ठगने के लिए उसके समीप जाने का दुर्भाव करना। (३) **निकृति**—किसी का आदर-सम्मान करके उसे ठगना। (४) **वलय**—वलय की तरह गोल-मोल वचन कहना। (५) **गहन**—दूसरे को मूढ़ बनाने के लिए गूढ़ (गहन) वचन का जाल रचना। (६) **नूम**—दूसरों को ठगने के लिए नीचतापूर्ण कार्य करना। (७) **कल्क**—हिंसा रूप पाप के निमित्त से वंचना करना कल्क है। (८) **कुरूपा**—कुत्सित रूप से मोह उत्पन्न करके ठगना। (९) **जिह्मता**—जिह्मता अर्थात् कुटिलता, दूसरे को ठगने के लिए वक्रता अपनाना। (१०) **किल्विष**—मायाचारी करने हेतु किल्विषी जैसी प्रवृत्ति करना। (११) **आदरणता**—आदरणता यानि आचरणता अर्थात् दूसरों को ठगने के लिए विविध क्रियाओं का आचरण करना। (१२) **गूहनता**—अपने स्वरूप को गूहन करना अर्थात् छिपाना। (१३) **वंचनता**—दूसरों को ठगना। (१४) **प्रतिकुञ्चनता**—सरल भाव से कहे हुए वाक्य का खण्डन करना अथवा विपरीत अर्थ लगाना। (१५) **सातियोग**—सातियोग का अर्थ है अविश्वासपूर्ण सम्बन्ध, अथवा उत्कृष्ट द्रव्य के साथ निकृष्ट द्रव्य का संयोग कर देना।

लोभ और उसके पर्यायवाची शब्द—(१) **लोभ**—ममत्व को लोभ कहते हैं। (२) **इच्छा**—वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। (३) **मूर्च्छा**—प्राप्त वस्तु की रक्षा की निरन्तर चिन्ता करना। (४) **कांक्षा**—अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने की लालसा। (५) **गृद्धि**—प्राप्त वस्तु के प्रति आसक्ति। (६) **तृष्णा**—प्राप्त पदार्थ का व्यय या वियोग न हो, ऐसी इच्छा करना। (७) **भिध्या**—विषयों का ध्यान करना। (८) **अभिध्या**—चित्त की व्यग्रता अर्थात् चंचलता। (९) **आशंसना**—अपने पुत्र या शिष्य को यह ऐसा हो जाए, इत्यादि प्रकार का आशीर्वाद या अभीष्ट पदार्थ की अभिलाषा। (१०) **प्रार्थना**—दूसरों से इष्ट पदार्थ की याचना करना। (११) **लालपनता**—विशेष रूप से बोल-बोलकर प्रार्थना करना। (१२) **कामाशा**—इष्ट शब्द और इष्ट रूप को पाने की आशा। (१३) **भोगाशा**—इष्ट गन्ध आदि को पाने की वाञ्छा। (१४) **जीविताशा**—जीने की लालसा। (१५) **मरणाशा**—विपत्ति या अत्यन्त दुःख आ पड़ने पर मरने की इच्छा करना। (१६) **नन्दिराग**—विद्यमान अभीष्ट वस्तु या समृद्धि होने पर रागभाव या ममत्व भाव करना।

प्रेम आदि शेष पापस्थानक—**राग**—पुत्रादि से स्नेह—प्रेम करना। **द्वेष**—अप्रीति। **कलह**—राग अथवा हास्यादि वश उत्पन्न हुआ क्लेश या वाग्युद्ध। **अभ्याख्यान**—मिथ्या दोषारोपण करना, झूठा कलंक लगाना। **पैशुन्य**—पीठ पीछे किसी की निन्दा-चुगली करना। **परपरिवाद**—दूसरे को बदनाम

करना या दूसरे की बुराई करना। **अरति-रति**—मोहनीय कर्म के उदय के कारण प्रतिकूल विषयों की प्राप्ति होने पर चित्त में अरुचि, घृणा या उद्वेग होना अरति है और अनुकूल विषयों के प्राप्त होने पर चित्त में हर्ष रूप परिणाम उत्पन्न होना रति है। **मायामृषा**—कपटसहित झूठ बोलना, दम्भ करना। **मिथ्यादर्शन शल्य**—श्रद्धा की विपरीतता। शरीर में चुभे हुए तीखे काँटे की तरह, आत्मा में चुभा हुआ मिथ्यादर्शन शल्य भी कष्ट देता है।

Elaboration—These seven statements convey that all eighteen sources of demerit (*paapasthaan*), from *praanaatipaat* (violating life) to *mithyaadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness), have five colours (*varna*), two smells (*gandh*), five tastes (*rasa*) and four touches (*sparsh*).

Praanaatipaat—The demerit (*paap*) *karmas* acquired by violating life or violence towards living beings is called *praanaatipaat*. *Mrishaavaad*—To utter lies, harsh, harmful and damaging words is called *mrishaavaad* (falsity). *Adattadaan*—To take anything without permission, desire or consent of the owner is called *adattadaan* (stealing). *Maithun*—To indulge in sexual intercourse inspired by lust is called *maithun* (sexual intercourse). *Parigraha*—The desire to possess is called *parigraha* (covetousness). Wealth, gold, property etc. are material or outer possessions and attachment, obsession etc. are mental or inner possessions.

Synonyms of ***krodh***—(1) *Krodh*—The *karma* that evokes feelings of anger is called *krodh* (anger). (2) *Kope*—to shift from one's natural disposition (provocation). (3) *Roash*—continued anger (antagonism). (4) *Doash*—to blame self and/or others (blame). (5) *Akshama*—not to tolerate fault committed by others (intolerance). (6) *Sanjvalan*—to flare up in anger time and again (irritability). (7) *Kalah*—to create dispute through verbal exchange (dispute). (8) *Chaandikya*—To express extreme anger (rage). (9) *Bhandan*—To fight with weapons (fight). (10) *Vivaad*—dispute with verbal arguments (debate). All these are synonyms of *krodh* (anger).

Synonyms of ***maan***—(1) *Maan*—to consider self to be better than others (conceit). (2) *Mada*—pride of caste and other such factors (pride). (3) *Darpa*—to brim with pride (bloated ego). (4) *Stambh*—not to be humble (rigidity). (5) *Garva*—over estimation of the self (vainglory). (6) *Atyutkrosh*—to express self better than others (haughtiness). (7) *Paraparivaad*— to assert

self by criticizing others (snobbery). (8) *Utkarsh*—To display one's wealth, power, ability etc. by words and action (boastfulness). (9) *Apakarsh*—to harm self and others out of pride (narcissism). (10) *Unnat*—to avoid bowing and be unbending with conceit (arrogance). (11) *Unnaam*—Not to give respect to the worthy and not to appreciate those who give respect (smugness). *Durnaam*—to misbehave with revered person out of conceit (superciliousness).

Synonyms of ***maaya***—(1) *Maaya*—to indulge in cheating others (deceit). (2) *Upadhi*—to plan to approach someone in order to swindle (conspire). (3) *Nikriti*—to swindle someone by offering honour and respect (cheat by enticing). (4) *Valaya*—deceptive talking (chicanery). (5) *Gahan*—to spin a web of secret talks to fool someone (treachery). (6) *Noom* — to indulge in mean acts to cheat (vileness). (7) *Kalk*—Employ violence to swindle someone (banditry). (8) *Kurupa*—to cheat by using lowly enticement (slyness). (9) *Jihmata* — use of conspiracy to swindle someone (cunningness). (10) *Kilvish* — to cheat by sinful activities (treachery). (11) *Aacharanata* — to employ various methods to cheat (trickery). (12) *Goohanata*—to conceal one's identity (disguise). (13) *Vanchanata*—to swindle (swindle). (14) *Pratikunchanata*—to refute or misinterpret simple statement (misinterpretation). (15) *Saatiyoga*—faithless relationship or to mix bad quality material with good quality material (adulteration).

Synonyms of ***lobha***—(1) *Lobha*—fondness for a thing (greed). (2) *Ichchha*—desire to own a thing (desire). (3) *Murchchha*—continued worry to protect a possession (graspingness). (4) *Kaanksha*—craving to get a thing not owned (crave). (5) *Griddhi*—infatuation for a thing owned (infatuation). (6) *Trishna*—wish not to lose a thing owned (holding). (7) *Bhidhya*—to long for things (longing). (8) *Abhidhya*—restlessness to possess (voracity). (9) *Aashamsanata*—to bless one's disciple or son for his achievements (expectation). (10) *Prarthanata*—to beg the desired from others (beg). (11) *Laalapanata*—to ask repeatedly for desired things (demand). (12) *Kaamaasha*—to hope to get desired sound or appearance (hope). (13) *Bhogaasha*—to hope to get desired smell (hope). (14) *Jivitaasha*—craving to live (hope for life). (15) *Maranaasha*—desire for death in face of grief or distress (death wish). (16) *Nandiraag*—fondness for possessions (attachment).

Other sources of demerit—*Raag* or *preyas*—attachment inspired by love is. *Dvesh*—aversion inspired by suppressed anger and conceit. *Kalah*—dispute or argument due to attachment or aversion. *Abhyaakhyaan*—blaming falsely. *Paishunya*—inculpating someone at his back. *Paraparivaad*—slandering others. *Rati-arati*—happiness and inclination to pursue ignoble and detest noble. *Maayamrisha*—betray or tell a lie deceptively. *Mithyaadarshan shalya*—the thorn of wrong belief or unrighteousness.

अठारह पापस्थान-विरमण में वर्णादि का अभाव होता है

ABSENCE OF ATTRIBUTES IN ABSTAINING FROM EIGHTEEN SOURCES OF DEMERIT

८. [प्र.] अह भंते ! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, एस णं कइवण्णे जाव कइफासे पन्नत्ते ?

[उ.] गोयमा ! अवण्णे अगंधे अरसे अफासे पन्नत्ते।

८. [प्र.] भगवन्! प्राणातिपात-विरमण यावत् परिग्रह-विरमण तथा क्रोधविवेक (क्रोध त्याग) यावत् मिथ्यादर्शन-शल्यविवेक, इन सभी में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श कहे हैं?

[उ.] गौतम! ये सभी वर्णरहित, गन्धरहित, रसरहित और स्पर्शरहित कहे हैं।

8. **[Q.]** *Bhante !* Of how many colours (*varna*), how many smells (*gandh*), how many tastes (*rasa*) and how many touches (*sparsh*) these are said to be—*Praanaatipaat viraman* (to abstain from harming or destroying life)... and so on up to... *Parigraha viraman* (to abstain from covetousness) and *Krodh vivek* (prudence with regard to anger)... and so on up to... *Mithyaadarshan shalya vivek* (prudence with regard to the thorn of wrong belief or unrighteousness) ?

[Ans.] Gautam ! They all are said to be devoid of attributes of colour (*varna*), smell (*gandh*), taste (*rasa*) and touch (*sparsh*).

चार बुद्धि, अवग्रहादि चार, उत्थानादि पाँच के विषय में वर्णादि की प्ररूपणा

COLOUR AND OTHER ATTRIBUTES OF INTELLIGENCE ETC.

९. [प्र.] अह भंते ! उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया पारिणामिया, एस णं कइवण्णे जाव कइफासे पन्नत्ते?

[उ.] तं चेव जाव अफासा पन्नत्ता।

९. [प्र.] भगवन्! औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी बुद्धि कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाली कही गयी हैं?

[उ.] गौतम! (ये चारों बुद्धि) वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं।

9. [Q.] *Bhante!* Of how many colours (*varna*), smells (*gandh*), tastes (*rasa*) and touches (*sparsh*) these are said to be—*Autpattiki, Vainayiki, Karmiki* and *Parinamiki buddhi* (intelligence) ?

[Ans.] Gautam ! They all (types of intelligence) are said to be devoid of attributes of colour (*varna*), smell (*gandh*), taste (*rasa*) and touch (*sparsh*).

१०. [प्र.] अह भंते! उग्गहे ईहा अवाए धारणा, एस णं कइवण्णा. ?

[उ.] एवं चेव जाव अफासा पन्नत्ता।

१०. [प्र.] भगवन्! अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! ये चारों वर्ण यावत् स्पर्श से रहित कहे गए हैं।

10. [Q.] *Bhante !* Of how many colours (*varna*), smells (*gandh*), tastes (*rasa*) and touches (*sparsh*) these are said to be—*Avagraha, Iha, Avaya,* and *Dharana* (the four steps of learning) ?

[Ans.] Gautam ! They all are said to be devoid of attributes of colour (*varna*)... and so on up to... touch (*sparsh*).

११. [प्र.] अह भंते ! उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे, एस णं कइवण्णे. ?

[उ.] तं चेव जाव अफासे पन्नत्ते।

११. [प्र.] भगवन्! उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, और पुरुषकार-पराक्रम, इन सभी में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं?

[उ.] गौतम! ये सभी पूर्व की तरह वर्णादि यावत् स्पर्श से रहित हैं।

11. [Q.] *Bhante !* Of how many colours (*varna*), smells (*gandh*), tastes (*rasa*) and touches (*sparsh*) these are said to be—*utthaan, karma, bala, virya, purushakaar* and *paraakram* (steps of endeavour).

[Ans.] Gautam! They all are said to be devoid of attributes of colour (*varna*)... and so on up to... touch (*sparsh*).

विवेचन—औत्पत्तिकी आदि चार बुद्धियों का स्वरूप—(१) औत्पत्तिकी—शास्त्र, सत्कर्म एवं अभ्यास के बिना अथवा पदार्थों को पहले देखे, सुने और सोचे बिना ही उन्हें ग्रहण करके जो स्वत: सहसा बुद्धि उत्पन्न होती है, वह औत्पत्तिकी बुद्धि है। (२) **वैनयिकी**—माता-पिता गुरु आदि के प्रति विनय से प्राप्त होने वाली बुद्धि वैनयिकी बुद्धि है। (३) **कार्मिकी**—निरन्तर अभ्यास और विवेक से विस्तृत होने वाली बुद्धि कार्मिकी बुद्धि है। (४) **पारिणामिकी**—अति दीर्घकाल तक पदार्थों को देखने से, दीर्घकालिक अनुभव से प्राप्त होने वाली बुद्धि पारिणामिकी है।

अवग्रहादि चारों का स्वरूप—(१) अवग्रह—मन व इन्द्रियों द्वारा किसी पदार्थ के अस्पष्ट ज्ञान को अवग्रह कहते हैं। **ईहा**—अवग्रह से जाने हुए पदार्थ के विषय में उत्पन्न हुए संशय को दूर करते हुए उसके विषय के बारे में विचार करने को ईहा कहते हैं। **अवाय**—ईहा से जाने हुए पदार्थों में निश्चयात्मक ज्ञान होना अवाय है। **धारणा**—अवाय से निर्णित पदार्थों के ज्ञान को हृदय में दृढ़ कर लेने को धारणा कहते हैं।

उत्थानादि पाँच का स्वरूप—उत्थानादि—पाँच वीर्यान्तराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाले जीव के परिणाम विशेषों को उत्थानादि कहते हैं। ये सभी जीव के पराक्रम विशेष हैं। **उत्थान**—प्रारम्भिक पराक्रम विशेष। **कर्म**—भ्रमणादि क्रिया, जीव का पराक्रम विशेष। **बल**—शारीरिक पराक्रम या सामर्थ्य। **वीर्य**—शक्ति, जीवप्रभाव अर्थात्—आत्मिक शक्ति। **पुरुषकार पराक्रम**—प्रबल पुरुषार्थ, स्वाभिमानपूर्वक किया हुआ पराक्रम।

Elaboration—Four types of intelligence—(1) *Autpattiki*–That which rises suddenly, spontaneously and without studying scriptures is called *autpattiki buddhi.* (2) *Vainayiki*–That which is acquired through devotion for teachers and elders or seniors, by serving them and being humble before them is called *vainayiki buddhi.* (3) *Karmaja*–That which is acquired through regular practice like that of various arts and crafts is called *karmaja buddhi.* (4) *Parinamiki*–That which is acquired through long and continuous contemplation or as a consequence of maturity and experience is called *parinamiki buddhi.*

Four steps of learning—(1) *Avagrah*–To acquire simple knowledge or awareness of a thing through sense organs and mind is called *avagrah.* (2) *Iha*–The process of analyzing that information, reject the unreal, and accept the real is called *iha.* (3) *Avaaya*–The decision arrived at through the activity of iha is called *avaaya.* (4)*Dhaarana*–To accept or absorb, into the mind or the memory, the so decided meaning is called *dhaarana.*

Five drives of endeavour—These five drives are evoked through destruction or pacification of *Viryantaraya karma*s (potency hindering *karma*s)–(1) *utthaan*–preliminary drive or effort to rise; (2) karma–drive of action, such as movement; (3) *bala*–physical strength; (4) *virya*–spiritual and mental potency or capacity; (5) *purushakaar-paraakram*–intent to act and effort capable of accomplishing an act with self awareness.

अवकाशान्तर, तनुवात-घनवात-घनोदधि, पृथ्वी आदि के विषय में वर्णादि प्ररूपणा

ATTRIBUTES OF INTERVENING SPACE, AIR, WATER, HELL AND OTHER COSMIC THINGS

१२. [प्र.] सत्तमे णं भंते ! ओवासंतरे कइवण्णे. ?

[उ.] एवं चेव जाव अफासे पन्नत्ते।

१२. [प्र.] भगवन्! सातवें अवकाशान्तर में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं?

[उ.] गौतम! वह वर्ण यावत् स्पर्श से रहित है।

12. [Q.] *Bhante !* Of how many colours (*varna*), smells (*gandh*), tastes (*rasa*) and touches (*sparsh*) is the seventh *avakaashaantar* (intervening space)?

[Ans.] Gautam ! It is devoid of attributes of colour (*varna*)... and so on up to... touch (*sparsh*).

१३. [प्र.] सत्तमे णं भंते ! तणुवाए कइवण्णे. ?

[उ.] जहा पाणाइवाए (सु. २) नवरं अट्ठफासे पन्नत्ते।

१३. [प्र.] भगवन्! सातवाँ तनुवात कितने वर्णादि वाला है?

[उ.] गौतम! इसका कथन (सू. २ में उक्त) प्राणातिपात के समान करना चाहिए। मुख्यतः यह आठ स्पर्श वाला है।

13. [Q.] *Bhante !* Of how many colours (*varna*), smells (*gandh*), tastes (*rasa*) and touches (*sparsh*) is the seventh *tanuvaat* (layer of rarefied air)?

[Ans.] Gautam ! It follows the pattern of *praanaatipaat* (as mentioned in statement-2); mainly it has eight touches.

१४. एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए घणोदही, पुढवी।

[१४] जिस प्रकार सातवें तनुवात के विषय में कहा है, उसी प्रकार सातवें घनवात, घनोदधि एवं सातवीं पृथ्वी (के विषय में कहना चाहिए।)

14. Seventh *ghanavaat* (layer of dense air), seventh *ghanod* (layer of dense or frozen water) and seventh *prithvi* (hell) follows the pattern of seventh *tanuvaat* (layer of rarefied air).

१५. छट्ठे ओवासंतरे अवण्णे।

[१५] छठा अवकाशान्तर वर्णादि से रहित है।

15. The sixth *tanuvaat* (layer of rarefied air) is devoid of attributes of colour (*varna*) etc.

१६. तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी, एयाइं अट्ठ फासाइं।

[१६] छठा तनुवात, घनवात, घनोदधि और छठी पृथ्वी—ये सभी आठ स्पर्श वाले हैं।

16. Sixth *ghanavaat* (layer of dense air), *ghanod* (layer of dense or frozen water) and sixth *prithvi* (hell) ... and so on up to ... have eight touches.

१७. एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं।

[१७] जिस प्रकार सातवीं पृथ्वी की वक्तव्यता कही है, उसी प्रकार यावत् प्रथम पृथ्वी तक जानना चाहिए।

17. Like the statements related to seventh *prithvi* mention for others... and so on up to... the first *prithvi* (hell) following the same pattern.

१८. जंबूद्दीवे जाव सयंभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी, नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा, एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि।

[१८] जम्बूद्वीप से लेकर यावत् स्वयम्भूरमण समुद्र तक, सौधर्मकल्प से यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक नैरयिकावास से लेकर यावत् वैमानिकवास तक सभी आठ स्पर्श वाले हैं।

18. (In the same way) Jambu Dveep... and so on up to... Svayambhuraman ocean, Saudharma *kalp* (divine dimension)... and so on up to... Ishatpragbhara *Prithvi*, infernal worlds... and so on up to... celestial vehicles, all have eight touches.

विवेचन—'अवकाशान्तर' आदि का स्वरूप—पहली और दूसरी नरक पृथ्वी के बीच जो आकाश खण्ड है, वह 'पहला अवकाशान्तर' कहलाता है। इस अपेक्षा से सातवीं नरक-पृथ्वी से नीचे

का 'आकाश खण्ड' है वह सातवाँ अवकाशान्तर कहलाता है। उसके ऊपर सातवाँ तनुवात है, उसके ऊपर सातवाँ घनवात है। घनवात के ऊपर सातवाँ घनोदधि है और सातवें घनोदधि से ऊपर सातवीं नरकपृथ्वी है। इसी क्रम से पहली नरकपृथ्वी तक जानना चाहिए।

अवकाशान्तर जितने भी हैं, वे सभी आकाश रूप हैं और आकाश अमूर्त्त होने से वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से सर्वथा रहित है। तनुवात, घनवात, घनोदधि और नरक पृथ्वी आदि पौद्गलिक होने से मूर्त्त हैं। इसलिए वे वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले हैं और बादर परिणाम वाले होने से इनमें शीत-उष्ण, स्निग्ध-रूक्ष, मृदु-कठिन, हल्का-भारी, ये आठों ही स्पर्श पाये जाते हैं।

Elaboration—Cosmic structure—The layer of intervening space between the first and second hell (*prithvi*) is called 'first *avakaashaantar*'; thus the intervening space beyond the seventh hell is seventh *avakaashaantar*. Considering that to be the lowest in the conceived cosmos, the layer of rarified air above that is seventh *tanuvaat*, above that is seventh *ghanavaat*, above that is seventh *ghanodadhi (ghanod)* and above that is seventh *prithvi*. Like this the pattern follows up to the first *prithvi*.

All *avakaashaantar*s being space are completely devoid of attributes of colour, smell, taste and touch. *Tanuvaat, ghanavaat, ghanodadhi* and *prithvi* are material things and thus with form. That is why they all have these attributes of colour, smell, taste and touch; and being gross they have attributes of all eight touches – *sheet* (cold)-*ushna* (hot), *snigdha* (smooth)-*ruksha* (coarse), *karkash* (hard touch)-*mridu* (soft) and *guru* (heavy)-*laghu* (light).

चौबीस दण्डकों में वर्णादि की प्ररूपणा

ATTRIBUTES OF COLOUR ETC. IN TWENTY FOUR SOURCES OF DEMERIT

१९. [प्र.] नेरइया णं भंते ! कइवण्णा जाव कइफासा पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्च पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा पन्नत्ता। कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा चउफासा पन्नत्ता। जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पन्नत्ता।

१९. [प्र.] भगवन्! नैरयिकों में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं?

[उ.] गौतम! वैक्रिय और तैजस पुद्गलों की अपेक्षा से उनमें पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श हैं। कार्मण पुद्गलों की अपेक्षा से उनमें पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और चार स्पर्श हैं और जीव की अपेक्षा से वे वर्णरहित यावत् स्पर्शरहित हैं।

19. [Q.] *Bhante!* Of how many colours, smells, tastes and touches are *nairayiks* (infernal beings)?

[Ans.] Gautam ! In context of *Vaikriya* (transmutable) and *Taijas* (fiery) *pudgals* (particles) they have five colours, five tastes, two smells and eight touches. In context of *Karman pudgals* (karmic particles) they have five colours, five tastes, two smells and four touches. In context of *jiva* (soul) they are devoid of these attributes of colour... and so on up to... touch.

२०. एवं जाव थणियकुमारा।

[२०] इसी प्रकार (असुरकुमारों से लेकर) यावत् स्तनितकुमारों तक कहना चाहिए।

20. The same is true (for Asur-kumars) ... and so on up to ...Stanit-kumars.

२१. [प्र.] पुढविकाइया णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव।

२१. [प्र.] भगवन्! पृथ्वीकायिक जीव कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले हैं?

[उ.] गौतम! औदारिक और तैजस पुद्गलों की अपेक्षा से वे पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस और आठ स्पर्श वाले कहे गए हैं। कार्मण पुद्गल और जीव की अपेक्षा से पूर्व की तरह अर्थात् नैरयिकों के कथन के समान जानना चाहिए।

21. [Q.] *Bhante!* Of how many colours, smells, tastes and touches are (*prithvikayik jivas*) earth-bodied beings ?

[Ans.] Gautam ! In context of *Audaarik* (gross physical) and *Taijas* (fiery) *pudgals* (particles) they have five colours, five tastes, two smells and eight touches. In context of *Karman pudgals* (karmic particles) and *jiva* (soul), state as aforesaid (about infernal beings).

२२. एवं जाव चउरिंदिया, नवरं वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। सेसं जहा नेरइयाणं।

[२२] इसी प्रकार (अप्काय, से लेकर) यावत् चतुरिन्द्रिय तक जानना चाहिए। परन्तु इनमें मुख्य विशेषता यह है कि वायुकायिक जीव औदारिक, वैक्रिय और तैजस, पुद्गलों की अपेक्षा से

पाँच वर्ण यावत् पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले कहे गए हैं। शेष नैरयिकों के समान जानना चाहिए।

22. The same is true for (water-bodied beings)... and so on up to...four-sensed beings. The difference is that air-bodied beings in context of gross physical, transmutable and fiery particles have five colours... and so on up to ...five tastes, two smells and eight touches. All others are same as infernal beings.

२३. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया।

[२३] पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक जीवों का कथन भी वायुकायिकों के समान जानना चाहिए।

23. Five sensed animals follow the pattern of air-bodied beings.

२४. [प्र.] मणुस्सा णं. पुच्छा।

[उ.] औरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं।

२४. [प्र.] भगवन्! मनुष्य कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले हैं?

[उ.] गौतम! औदारिक, वैक्रिय, आहारक और तैजस पुद्गलों की अपेक्षा से (मनुष्य) पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले हैं। जबकि कार्मण पुद्गल और जीव की अपेक्षा से नैरयिकों के समान (जानना चाहिए।)

24. [Q.] *Bhante!* Of how many colours, smells, tastes and touches are human beings ?

[Ans.] Gautam ! In context of *Audaarik* (gross physical), *Vaikriya* (transmutable), *aahaarak* (telemigratory) and *Taijas* (fiery) *pudgals* (particles) they (humans) have five colours, five tastes, two smells and eight touches. In context of *karman* (karmic) particles and *jiva* (soul) they follow the pattern of infernal beings.

२५. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया।

[२५] वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिकों के विषय में भी नैरयिकों के समान कथन करना चाहिए।

25. Vanavyantar (interstitial), Jyotishk (stellar) and Vaimanik (celestial vehicular) *jivas* also follow the pattern of infernal beings.

विवेचन—नारक, मनुष्य, पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि जो भी औदारिक, वैक्रिय, तैजस या आहारक शरीर वाले हैं, वे पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस तथा अष्टस्पर्शी वाले हैं, क्योंकि ये चारों शरीर बादर-परिणाम वाले पुद्गल हैं, जबकि कार्मण शरीर सूक्ष्म परिणाम-पुद्गल वाले हैं जिस कारण ये चतुःस्पर्शी है। परन्तु जीव (आत्मा) में वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श नहीं है। इसलिए वह वर्णादि से रहित है।

Elaboration—Infernal, human, five-sensed animal and other beings having *audaarik* (gross physical), *vaikriya* (transmutable), *aaharak* (telemigratory) and *taijas* (fiery) bodies have five colours, five tastes, two smells and eight touches; this is because these four kinds of bodies are made up of gross particulate matter. The *karman* (karmic) body is made up of minute particulate matter and therefore they have only four touches. However, as soul is not particulate it is devoid of these attributes.

धर्मास्तिकाय से लेकर अद्धाकाल तक में वर्णादि की प्ररूपणा

ATTRIBUTES OF COLOUR ETC. IN DHARMAASTIKAAYA TO ADDHAAKAAL

२६. धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए, एए सव्वे अवण्णा, जाव अफासा, नवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे पन्नत्ते।

[२६] धर्मास्तिकाय (से लेकर) यावत् पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय और काल—ये सभी वर्णादि यावत् स्पर्श से रहित हैं। विशेष रूप से यह है कि पुद्गलास्तिकाय पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाला हैं।

26. Other than *Pudgalaastikaaya* (matter entity) all (*Astikaaya dravya*s or eternal agglomerative entities) up to *Aakaashaastikaaya* (space entity) and *Kaal* are devoid of attributes of colour... and so on up to... touch. *Pudgalaastikaaya* (matter entity) has five colours, five tastes, two smells and eight touches.

२७. णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, एयाणि चउफासाणि।

[२७] ज्ञानावरणीय (से लेकर) यावत् अन्तराय कर्म तक के आठों कर्म, पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस और चार स्पर्श वाले कहे हैं।

27. All eight *karma*s from Jnanavaraniya (knowledge obscuring)... and so on up to... Antaraya (power hindering *karma*) have five colours, five tastes, two smells and four touches.

२८. [प्र.] कण्हलेसा णं भंते ! कइवण्णा. पुच्छा?

[उ.] दव्वलेसं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। भावलेसं पडुच्च अवण्णा अरसा अगंधा अफासा।

२८. [प्र.] भगवन्! कृष्ण लेश्या कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाली हैं?

[उ.] गौतम! द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से वह पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाली हैं और भाव लेश्या की अपेक्षा से वह वर्णादि से रहित है।

28. **[Q.]** *Bhante !* Of how many colours, smells, tastes and touches is *krishna leshya* (black soul-complexion) ?

[Ans.] Gautam ! In context of *dravya leshya* (physical complexion) it (black soul complexion) has five colours, five tastes, two smells and eight touches. However in context of *bhaava leshya* (spiritual complexion) it is devoid of attributes of colour etc.

२९. एवं जाव सुक्कलेस्सा।

[२९] इसी प्रकार (नील, कापोत, पीत और पद्मलेश्या) यावत् शुक्ल लेश्या तक जानना चाहिए।

29. The same is true for other soul complexions (blue, pigeon, fiery, yellow)... and so on up to ... white soul-complexion).

३०. सम्मद्दिट्ठि-मिच्छादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिनिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसन्ना जाव परिग्गहसण्णा, एयाणि अवण्णाणि अरसाणि अगंधाणि अफासाणि।

[३०] सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि, (ये तीन दृष्टि) चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन (ये चार दर्शन), आभिनिबोधिक ज्ञान (से लेकर श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ये पाँच ज्ञान तथा मति-अज्ञान, श्रुत-अज्ञान और) यावत् विभंगज्ञान (तक ये तीन अज्ञान) आहारसंज्ञा (भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा) यावत् परिग्रहसंज्ञा (ये चार संज्ञा), ये सभी वर्ण गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं।

30. *Samyagdrishti* (right perception/faith), *mithyadrishti* (wrong perception/faith) and *samyagmithyadrishti* (right-wrong or mixed perception/faith) (these three *drishti*s); *chakshu darshan* (visual

perception), *achakshu darshan* (non-visual perception), *avadhi darshan* (extrasensory perception of the physical dimension), *Keval darshan* (absolute perception or pre-omniscience-perception) (these four perceptions); *abhinibodhik jnana* (sensory knowledge) ... and so on up to ... *vibhang-jnana* (pervert knowledge) (eight kinds of knowledge; this also includes – *shrut-jnana* or scriptural knowledge, *avadhi-jnana* or extrasensory perception of the physical dimension, *manahparyav jnana* or extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms, *keval-jnana* or omniscience, *mati-ajnana* or absence of sensory knowledge, *shrut-ajnana* (absence of scriptural knowledge); and *aahaar-sanjna* (desire for food), *bhaya-sanjna* (desire to run away from fear), *maithun-sanjna* (desire for sex), *parigraha-sanjna* (desire for possessions) (these four desires); all these are devoid of attributes of colour, smell, taste and touch.

३१. ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे, एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे चउफासे। मणजोगे वइजोगे य चउफासे। कायजोगे अट्ठफासे।

[३१] औदारिक शरीर (वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर) यावत् तैजस शरीर ये अष्ट स्पर्श वाले हैं। (जबकि) कार्मण शरीर, मनोयोग और वचनयोग, ये चार स्पर्श वाले हैं। काययोग अष्टस्पर्श वाला है।

31. *Audaarik sharira* (gross physical body) ... and so on up to ... *taijas sharira* (fiery body) have attributes of eight touches, whereas *karman sharira* (karmic body), *manoyoga* (mental association) and *vachan yoga* (vocal association) have attributes of four touches. *Kaya yoga* (physical association) has eight touches.

३२. सागारोवयोगे य अणागारोवयोगे य अवण्णा.।

[३२] साकारोपयोग और अनाकारोपयोग, ये दोनों वर्णादि से रहित हैं।

32. *Saakaaropayoga* (inclination towards right knowledge) and *anaakaaropayoga* (inclination towards right perception/faith) are devoid of attributes of colour etc.

३३. [प्र.] सव्वदव्वा णं भंते ! कइवण्णा. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पन्नत्ता। अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पन्नत्ता। अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा एगरसा दुफासा पन्नत्ता। अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पन्नत्ता।

३३. [प्र.] भगवन्! सभी द्रव्य कितने वर्णादि वाले हैं?

[उ.] गौतम! सभी द्रव्यों में से कुछ (द्रव्य) पाँच वर्ण यावत् (पाँच रस, दो गन्ध और) आठ स्पर्श वाले हैं। सर्वद्रव्यों में से कुछ (द्रव्य) पाँच वर्ण यावत् (पाँच रस, दो गन्ध और) चार स्पर्श वाले हैं। सर्वद्रव्यों में से कुछ (द्रव्य) एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्श वाले हैं। सर्वद्रव्यों में से कुछ (द्रव्य) वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं।

33. [Q.] *Bhante!* Of how many colours etc. are all substances (*dravyas*)?

[Ans.] Gautam ! Of all substances (*dravyas*) some have five colours... and so on up to... eight touches. Of all substances (*dravyas*) some have five colours... and so on up to... four touches. Of all substances (*dravyas*) some have one colour, one smell, one taste and two touches. Of all substances (*dravyas*) some are devoid of attributes of colour, smell, taste and touch.

३४. एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि।

[३४] इसी प्रकार (सभी द्रव्य के समान) सभी प्रदेश और समस्त पर्यायों के विषय में भी कथन करना चाहिए।

34. The same (like all substances) is true also for all space-points (*pradesh*as) and all modes (*paryaaya*s).

३५. तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पन्नत्ता। एवं अणागयद्धा वि। एवं सव्वद्धा वि।

[३५] अतीत काल वर्ण रहित यावत् स्पर्शरहित है। इसी प्रकार अनागतकाल और समस्त काल भी वर्णादि-रहित हैं।

35. The past time (*ateet kaal*) is devoid of colour ... and so on up to ... touch. The same is also true for future time (*anaagat kaal*) and all time (*sarvaddha*).

विवेचन—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, भावलेश्याएँ, साकार-निराकार उपयोग, अतीत-अनागत आदि सब काल, सर्वद्रव्यों में कुछ (धर्मास्तिकायादि) द्रव्य, उनके (अमूर्त्त द्रव्य के) प्रदेश एवं पर्याय तथा सम्यग्दृष्टि से लेकर परिग्रह संज्ञा तक वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श रहित हैं, क्योंकि ये सभी अमूर्त्त तथा जीव परिणाम हैं।

Elaboration—*Dharmaastikaaya, Adharmaastikaaya, Aakaashaastikaaya,* spiritual soul-complexions, *Saakaaropayoga, Anaakaaropayoga,* time, and some of the substances, their space-points and modes, and right perception/faith to desires are all devoid of attributes of colour etc. because they all are formless.

गर्भ में उत्पन्न हो रहे जीव में वर्णादि की प्ररूपणा ATTRIBUTES OF A SOUL IN WOMB

३६. [प्र.] जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवण्णं कइगंधं कइरसं कइफासं परिणामं परिणमइ ?

[उ.] गोयमा ! पंचवण्णं दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ।

३६. [प्र.] भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव, कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाला होता है?

[उ.] गौतम! पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस और आठ स्पर्श वाले परिणाम से परिणत होता है।

36. [Q.] *Bhante !* Of how many colours, smells, tastes and touches is a *jiva* (soul/living being) in womb and to reborn ?

[Ans.] Gautam ! It gets born with manifestation of five colours, five tastes, two smells and eight touches.

कर्मों के कारण जीव का विविध रूपों में परिणमन

TRANSFORMATION OF *JIVA* IN VARIOUS FORMS DUE TO *KARMAS*

३७. [प्र.] कम्मओ णं भंते ! जीवे, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ, कम्मओ णं जए, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ?

[उ.] हंता, गोयमा ! कम्मओ णं तं चेव जाव परिणमइ, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति.।

॥ बारसमे सए : पंचमो उद्देसओ समत्तो॥ १२-५॥

३७. [प्र.] भगवन्! क्या जीव कर्मों के कारण मनुष्य-तिर्यञ्च आदि विविध रूपों को प्राप्त होता है, कर्मों के बिना विविध रूपों को प्राप्त नहीं होता तथा क्या जगत् कर्मों से विविध रूपों को प्राप्त होता है और बिना कर्मों के प्राप्त नहीं होता?

[उ.] हाँ, गौतम! कर्म से जीव और जगत् (जीवों का समूह) विविध रूपों को प्राप्त होते है, लेकिन कर्मों के बिना ये विविध रूपों को प्राप्त नहीं होते।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है' ऐसा कहकर गौतम स्वामी, यावत् विचरते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : पंचम उद्देशक समाप्त ॥

37. **[Q.]** *Bhante !* Does a *jiva* (soul) attain various forms including human and animal due to *karmas* ? Does it not attain various forms in absence of *karmas* ? And does the world (plurality of souls) attain various forms due to *karmas* ? Does the world (plurality of souls) not attain various forms in absence of *karmas*?

[Ans.] Yes, Gautam ! *Jiva* (soul) and the world (plurality of souls) attain various forms due to *karmas*, and they do not attain those various forms in absence of *karmas*.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

• END OF THE FIFTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER •

छट्ठो उद्देसओ : राहू

छठा उद्देशक : राहु द्वारा चन्द्र का ग्रहण (ग्रसन)

SHASHT UDDESHAK (SIXTH LESSON) : RAHU (RAHU)

राहुदेव का स्वरूप, उनके विमानों का वर्ण और उनके द्वारा चन्द्र ग्रसन की लोकभ्रान्तियों का निराकरण

DESCRIPTION OF GOD RAHU AND HIS VIMAANS

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—

[१] राजगृह नगर में यावत् (गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से) इस प्रकार पूछा—

1. (During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in) Rajagriha city... and so on up to... Gautam Swami asked—

२. [प्र.] बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—'एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ' से कहमेयं भंते ! एवं?

[उ.] गोयमा ! जं णं से बहुजणे अन्नमन्नस्स जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि—

एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव महेसक्खे वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी।

राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पन्नत्ता, तं तहा—सिंघाडए १ जडिलए २ खतए ३ खरए ४ दद्दुरे ५ मगरे ६ मच्छे ७ कच्छभे ८ कण्हसप्पे ९।

राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पन्नत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पन्नत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे पन्नत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ताणं पच्चत्थिमेणं वीईवयइ तया णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पच्चत्थिमेणं राहू। जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा

चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरित्ताणं पुरत्थिमेणं वीईवयइ तया णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पुरत्थिमेणं राहू।

एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एवं दाहिणेण उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा।

एवं उत्तरपुत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं चेव जाव तया णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू।

जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति—एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, एवं खलु राहू-चंदं गेण्हइ।

जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरित्ताणं पासेणं वीईवयइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति—एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना।

जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरित्ताणं पच्चोसक्कइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति—एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते।

जया णं राहू आगच्छमाणे वा जाव परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरित्ताणं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ तया णं मणुस्सा वयंति—राहुणा चंदे वइचरिए, राहुणा चंदे वइचरिए।

जया णं राहू आगच्छमाणे वा जाव परियारेमाणे वा चंदलेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरित्ताणं चिट्ठइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति—एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे।

२. [प्र.] भगवन्! बहुत से मनुष्य इस प्रकार कहते हैं, यावत् इस प्रकार प्ररूपणा करते हैं कि निश्चित रूप से राहु चन्द्रमा को ग्रस लेता है, तो हे भगवन्! क्या वास्तव में राहु चन्द्रमा को ग्रसता है?

२. [उ.] गौतम! बहुत-से लोग जो इस प्रकार कहते हैं, यावत् इस प्रकार प्ररूपणा करते हैं (राहू चन्द्रमा को ग्रसता है), वे मिथ्या कहते हैं। मैं इस प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ—

यह निश्चय है कि राहु महर्द्धिक यावत् महासौख्य सम्पन्न है। वह उत्तम वस्त्रधारी, श्रेष्ठ माला का धारक, उत्कृष्ट सुगन्ध-धर और उत्तम आभूषणधारी देव है।

राहु देव के नौ नाम कहे गए हैं—(१) शृंगाटक, (२) जटिलक, (३) क्षत्रक, (४) खर, (५) दर्दुर, (६) मकर, (७) मत्स्य, (८) कच्छप और (९) कृष्णसर्प।

राहु देव का विमान पाँच वर्णों (रंगों) वाला कहा गया है—(१) काला, (२) नीला, (३) लाल, (४) पीला और (५) श्वेत। इनमें से राहु का जो काला विमान है, वह खंजन (काजल) के समान वर्ण वाला है। राहु का जो नीला (हरा) विमान है, वह हरी तुम्बी के समान वर्ण वाला है। राहु का जो लोहित (लाल) विमान है, वह मजीठ के समान वर्ण वाला है। राहु का जो पीला विमान है, वह हल्दी के समान वर्ण वाला है और राहु का जो शुक्ल (श्वेत) विमान है, वह भस्मराशि (राख के ढेर) के समान वर्ण वाला है।

जब गमनागमन करता हुआ अथवा विकुर्वणा (विक्रिया) करता हुआ अथवा कामक्रीड़ा करता हुआ राहु, पूर्व में स्थित चन्द्रमा के प्रकाश को ढँक कर पश्चिम की ओर जाता है; तब चन्द्रमा पूर्व में दिखाई देता है और पश्चिम में राहु दिखाई देता है। जब आता हुआ अथवा जाता हुआ अथवा विक्रिया करता हुआ अथवा कामक्रीडा करता हुआ राहु, चन्द्रमा के प्रकाश को पश्चिम दिशा में आच्छादित करके पूर्व दिशा की ओर जाता है; तब चन्द्रमा पश्चिम में दिखाई देता है और राहु पूर्व में दिखाई देता है।

जिस प्रकार पूर्व और पश्चिम के दो आलापक कहे हैं, उसी प्रकार दक्षिण और उत्तर के दो आलापक कहने चाहिए।

इसी प्रकार उत्तर-पूर्व (ईशान-कोण) और दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण) के दो आलापक कहने चाहिए तथा इसी प्रकार दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण) एवं उत्तर-पश्चिम (वायव्य कोण) के भी दो आलापक कहने चाहिए। इसी प्रकार उत्तर-पश्चिम में चन्द्रमा दिखाई देता है तो राहु दक्षिण-पूर्व में दिखाई देता है।

इसी प्रकार जब आता हुआ अथवा जाता हुआ अथवा विक्रिया करता हुआ अथवा काम-क्रीड़ा करता हुआ राहु, बार-बार चन्द्रमा के प्रकाश को आवृत करता है, तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं—'राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया, इस प्रकार राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया।'

जब आता हुआ अथवा जाता हुआ, अथवा विक्रिया करता हुआ अथवा काम-क्रीड़ा करता हुआ राहु चन्द्र के प्रकाश को आच्छादित करके पास से होकर निकलता है, तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं—'चन्द्रमा ने राहु की कुक्षि का भेदन कर दिया, इस प्रकार चन्द्रमा ने राहु की कुक्षि का भेदन कर दिया।'

जब आता हुआ अथवा जाता हुआ अथवा विक्रिया करता हुआ अथवा काम-क्रीड़ा करता हुआ राहु, चन्द्रमा के प्रकाश को आवृत करके वापस लौटता है, तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं—'राहु ने चन्द्रमा का वमन कर दिया, इस प्रकार राहु ने चन्द्रमा का वमन कर दिया।'

जब आता हुआ अथवा जाता हुआ, अथवा विकुर्वणा करता हुआ अथवा परिचारणा करता हुआ राहु, चन्द्रमा के प्रकाश को ढँक कर मध्य में से होकर निकलता है, तब मनुष्य कहने लगते हैं—'राहु ने चन्द्रमा का अतिभक्षण कर लिया। इस प्रकार राहु ने चन्द्रमा का अतिभक्षण कर लिया।'

जब आता हुआ अथवा जाता हुआ अथवा विकुर्वणा करता हुआ अथवा कामक्रीड़ा करता हुआ राहु, चन्द्रमा के प्रकाश को नीचे से, (चारों) दिशाओं एवं (चारों) विदिशाओं से ढँक देता है, तब मनुष्यलोक में मनुष्य कहते हैं—'राहु ने चन्द्रमा को ग्रसित कर लिया है, इस प्रकार राहु ने चन्द्रमा को ग्रसित कर लिया है।'

2. [Q.] *Bhante !* Many people say... and so on up to... propagate that it is for sure that Rahu swallows the moon. *Bhante!* Is it a fact that Rahu swallows the moon ?

[Ans.] Gautam ! Many people say... and so on up to... propagate that (Rahu swallows the moon), but they are wrong. What I say... and so on up to... propagate is—

It is certain that Rahu is endowed with great prosperity... and so on up to... happiness. He is a god adorned with best of dresses, garlands, perfumes and ornaments.

Rahu god is said have nine names—(1) Shringaatak, (2) Jatilak, (3) Kshatrak, (4) Khar, (5) Dardur, (6) Makar, (7) Matsya, (8) Kachchhap and (9) Krishnasarp.

The celestial vehicle (*vimaan*) of Rahu god is said to be of five colours—(1) black, (2) green, (3) red, (4) yellow and (5) white. Of these the black celestial vehicle of Rahu is of the colour of lampblack. The green celestial vehicle of Rahu is of the colour of green gourd. The red celestial vehicle of Rahu is of the colour of madder (*majeeth*) plant. The yellow celestial vehicle of Rahu is of the colour of turmeric. The white celestial vehicle of Rahu is of the colour of a heap of ash.

While its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of moon located in the east and moves towards the west, then the moon is visible in the east and Rahu is visible in the west. While its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of moon located in the west and

पर्व राहू

पर्व राहू कभी कभी सूर्य और चंद्र के बीच या आसपास से उसकी प्रभा को आच्छादित करता है, उसे ग्रहण कहते हैं। ग्रहण तीन प्रकार से होता है

नित्य राहू से होने वाली चन्द्रमा की हानि वृद्धि

चित्र-परिचय 10

Illustration No. 10

पर्व राहु और नित्य राहु

कृष्ण वर्णीय राहु का विमान चन्द्रमा से चार अंगुल दूर नीचे रहकर हमेशा चन्द्रमा के साथ चलता है। राहु के संयोग से चन्द्रमा के साथ कैसी-कैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, उस आधार पर राहु को दो भागों में बाँटा गया है–

(1) **पर्व राहु**—जब राहु किसी-किसी समय अपने विमान से चन्द्रमा को ढक देता है उस समय "ग्रहण हुआ" ऐसा कहा जाता है। यह राहु जघन्य से छह मास में और उत्कृष्ट 42 मास में चन्द्र को आवृत करता है। यह ग्रहण तीन प्रकार से होता है–(अ) जब राहु का विमान चन्द्र के एक भाग को ढँक देता है तो उसे **खण्डग्रास ग्रहण** कहते हैं। (ब) जब राहु का विमान चन्द्र विमान को बीच से ढँक लेता है और चारों तरफ से एक चूड़ी की आकृति में चन्द्र विमान दिखाई देता है तो उसे **कंकणाकृति ग्रहण** कहते हैं। (स) जब राहु चन्द्र को पूरी तरह ढँक लेता है तो उसे **खग्रास ग्रहण** कहते हैं।

(2) **नित्य राहु**—चन्द्रमा के सोलह भाग (अंश-कला) हैं। कृष्णपक्ष में राहु प्रतिदिन चन्द्रमा के एक-एक भाग को आच्छादित करता जाता है। अमावस्या तक वह पन्द्रह भागों को आच्छादित कर देता है और शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक प्रतिदिन एक-एक भाग को अनावृत (खुला) करता जाता है और पूर्णिमा तक चन्द्र के 15 भागों को अनावृत कर देता है।

—शतक 12, उ. 6

PARVA RAHU AND NITYA RAHU

The black celestial vehicle of Rahu remains four Anguls (finger width) below the moon and moves with it. According to the consequences of moon's association with it, Rahu is said to be of two kinds —

(1) Parva Rahu (occasional Rahu)—When Rahu occasionally covers the moon or the sun. This happens after a minimum gap of six months and a maximum gap of forty-two months for the moon and forty eight years for the sun. These are called lunar and solar eclipses. There are three types of eclipses – (a) when Rahu covers a portion of the moon it is called *Khandagraas* (partial eclipse). (b) When Rahu covers the moon in center and moon looks like a ring it is called *Kankamakriti Grahan*. (c) When Rahu completely covers the moon it is called *Khagras*.

(2) Nitya Rahu (regular Rahu)—The moon is hypothetically divided into 16 fractions (*ansh or kala*). Rahu keeps on covering one fraction of the circle of moon everyday of the dark fortnight of a month in increasing order; on the fifteenth day it covers all 15 fractions. In the same way from the first day of the bright fortnight to the full moon night every day additional 15th fraction of the moon becomes visible.

—Shatak-12, lesson-6

moves towards the east, then the moon is visible in the west and Rahu is visible in the east.

Like the two statements about east and west, mention two statements about south and north. In the same way mention two statements for North-east (Ishaan kone) and South-west (Nairitya kone) and two statements for South-east (Agneya kone) and North-west (Vaayavya kone)... and so on up to... then the moon is visible in the North-west and Rahu is visible in the South-east.

Thus while its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of moon, then humans in the human world say—"Rahu has seized the moon ! Rahu has seized the moon !"

While its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of moon and just passes away, then humans in the human world say—"The moon has pierced the womb of Rahu ! The moon has pierced the womb of Rahu !"

While its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of moon and retraces the path, then humans in the human world say—"Rahu has vomited the moon ! Rahu has vomited the moon !"

While its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of moon and passes through the middle of the moon, then humans in the human world say—"Rahu has snapped the moon ! Rahu has snapped the moon !"

While its wanderings, or transmuting or enjoying carnal activity, when Rahu obstructs the light of the moon on the lower side, four cardinal directions and four intermediate directions, then humans in the human world say—"Rahu has swallowed the moon ! Rahu has swallowed the moon !"

विवेचन—भगवान महावीर ने बताया है कि राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया है, डस लिया है, भेद दिया है। यह कथन केवल औपचारिक है, वास्तविक नहीं। राहु की छाया चन्द्र पर पड़ती है। अत: राहु के द्वारा चन्द्र का यह ग्रसन कार्य एक तरह से आवरण (आच्छादन) मात्र है, जो कि वैस्रसिक–स्वाभाविक है, कर्मकृत नहीं।

Elaboration—Bhagavan Mahavir has said that the statement that Rahu has seized or snapped or swallowed the moon is virtual and not actual. It is the shadow of Rahu that falls on the moon; as such the said act of swallowing of the moon by Rahu is simply partial covering of the moon, which is a natural phenomenon and not an intended act.

ध्रुवराहु और पर्वराहु का स्वरूप तथा चन्द्र को आवृत-अनावृत करने का कार्यकलाप

DHRUVA RAHU AND PARVA RAHU AND VEILING AND UNVEILING OF THE MOON

३. [प्र.] कइविधे णं भंते ! राहू पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा! दुविहे राहू पन्नत्ते, तं जहा—धुवराहू या पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसइभागेणं पन्नरसइभागं, चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बिइयाए बिइयं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं। चरिमसमये चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समये चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ। तमेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ-पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं चरिमसमये चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ।

तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहन्नेणं छण्हं मासाणं; उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स।

३. [प्र.] भगवन्! राहु कितने प्रकार का कहा गया है?

[उ.] गौतम! राहु दो प्रकार का कहा गया है, यथा—ध्रुवराहु (नित्यराहु) और पर्वराहु। उनमें से जो ध्रुवराहु है, वह कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपने पन्द्रहवें भाग से, चन्द्र बिम्ब के पन्द्रहवें भाग को बार-बार ढँकता रहता है, जैसे प्रतिपदा को चन्द्रमा के प्रथम भाग को ढँकता है, द्वितीया को दूसरे भाग को ढँकता है, इसी प्रकार यावत् अमावस्या को (चन्द्रमा के) पन्द्रहवें भाग को ढँकता है। कृष्णपक्ष के अन्तिम समय में चन्द्रमा रक्त (सर्वथा आच्छादित) हो जाता है, और शेष समय में चन्द्रमा रक्त (कुछ भाग आच्छादित) और विरक्त (कुछ भाग अनाच्छादित) रहता है। इसी कारण शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर यावत् पूर्णिमा तक प्रतिदिन (चन्द्रमा का) पन्द्रहवाँ भाग दिखाई देता रहता है, शुक्लपक्ष के अन्तिम समय में चन्द्रमा पूर्णतः अनाच्छदित हो जाता है और शेष समय में वह (चन्द्रमा) रक्त (कुछ भाग आच्छादित) और विरक्त (कुछ भाग अनाच्छादित) रहता है।

इनमें से जो पर्वराहु है, वह जघन्य से छह मास में चन्द्र और सूर्य को आवृत करता है और उत्कृष्ट से बयालीस मास में चन्द्र को और अड़तालीस वर्ष में सूर्य को ढँकता है।

3. [Q.] *Bhante !* Of how many types is Rahu said to be ?

[Ans.] Gautam! Rahu is said to be of two kinds—Dhruva Rahu (regular Rahu) and Parva Rahu (occasional Rahu). Of these the Dhruva Rahu (regular Rahu) keeps on covering 15th fraction of the circle of moon everyday of the dark fortnight of a month in increasing order; for example on the first day of the dark fortnight it covers the first 15th fraction, on the second day it covers additional 15th fraction... and so on up to... on the fifteenth day it also covers the last 15th fraction. This means that on the last day of the dark fortnight, the moon is dark (completely covered) and on the remaining days it is dark and bright (partially covered). In the same way from the first day of the bright fortnight... and so on up to... the full moon night (the fifteenth day) every day, starting from the first, additional 15th fraction of the moon becomes visible. This means that on the last day of the bright fortnight, the moon is bright (completely visible) and on the remaining days it is dark and bright (partially visible).

The Parva Rahu (occasional Rahu) covers (eclipses) the moon and the sun after a minimum gap of six months and after a maximum gap of forty-two months for the moon and forty eight years for the sun.

विवेचन—राहु दो प्रकार का है—ध्रुवराहु और पर्वराहु। जो काला राहु-विमान चन्द्रमा से चार अंगुल ठीक नीचे नित्य रहता है, वह **ध्रुवराहु** है। चन्द्रमा की १६ कलाएँ (अंश) हैं, जिन्हें १६ भाग कहते हैं। कृष्णपक्ष में राहु प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक के पन्द्रह दिनों में चन्द्रबिम्ब के पन्द्रह भागों (कलाओं) में से एक-एक भाग को प्रतिदिन आच्छादित करता जाता है और पन्द्रहवें अर्थात् अमावस्या के दिन वह चन्द्रमा के पन्द्रह भागों को पूर्णतः आवृत कर देता है। जबकि शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक राहु चन्द्रमा के एक-एक भाग को अनाच्छादित करता जाता है और अन्तिम (पूर्णिमा के) दिन चन्द्रमा सर्वथा अनाच्छादित होने से पूर्ण शुक्ल हो जाता है। राहु का विमान चन्द्रमा के १६वें भाग (१६वीं कला) को कभी ढ़क नहीं सकता। वह हमेशा अनाच्छादित रहती है।

पर्वराहु जघन्य से ६ मास में चन्द्रमा और सूर्य को आवृत करता है, और उत्कृष्ट से ४२ मास में चन्द्रमा को और ४८ वर्ष में सूर्य को आवृत करता है। यही चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण कहलाता है।

Elaboration—Rahu is of two kinds—Dhruva Rahu (regular Rahu) and Parva Rahu (occasional Rahu). The black celestial vehicle that is located just below the moon is called Dhruva Rahu. The moon is hypothetically divided into 16 fractions. Of these the Dhruva Rahu

(regular Rahu) keeps on covering one fraction of the circle of moon everyday of the dark fortnight of a month in increasing order; on the fifteenth day it covers all 15 fractions. In the same way from the first day of the bright fortnight to the full moon night every day additional 15th fraction of the moon becomes visible. This means that on the last day of the bright fortnight the moon is bright. The 16th fraction of the moon is never covered by the celestial vehicle of Rahu.

The Parva Rahu (occasional Rahu) covers (eclipses) the moon and the sun after a minimum gap of six months and after a maximum gap of forty-two months for the moon and forty eight years for the sun. These are called lunar and solar eclipses.

चन्द्र को शशी (सश्री) और सूर्य को आदित्य कहे जाने का कारण

REASONS FOR CALLING THE MOON SHASHI AND THE SUN ADITYA

४. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'चंदे ससी, चंदे ससी'?

[उ.] गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव ससी।

४. [प्र.] भगवन्! चन्द्रमा को 'शशी (सश्री)' क्यों कहा जाता है?

[उ.] गौतम! ज्योतिषियों के इन्द्र, ज्योतिषियों के राजा चन्द्र का विमान मृगांक अर्थात् मृग के चिह्न वाला है, उसमें कान्त देव तथा कान्ता देवियाँ हैं और आसन, शयन, स्तम्भ, भाण्ड, पात्र आदि उपकरण भी कान्त हैं। स्वयं ज्योतिष्कों का इन्द्र, ज्योतिष्कों का राजा चन्द्र भी सौम्य, कान्त, सुभग, प्रियदर्शन और सुरूप है, इसलिए, हे गौतम! चन्द्रमा को शशी (सश्री-शोभायुक्त) कहा जाता है।

4. [Q.] *Bhante !* Why the moon (Chandra) is called Shashi (Sashri)?

[Ans.] Gautam ! The celestial vehicle (*vimaan*) of Chandra (the moon), the king of Jyotishk gods, has the logo of deer (*mrigaank*). The gods and goddesses in it are radiant. Seats, beds, pillars, utensils, vessels and all other equipment are also radiant. Chandra, the king of Jyotishk gods, too is serene, radiant, charming, handsome, and attractive. That is why, Gautam! Chandra is called Shashi (sashri or graceful).

५. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे'?

[उ.] गोयमा! सूरादीया णं समया इ वा आवलिया इ वा जाव ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा। से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे।

५. [प्र.] भगवन्! सूर्य 'आदित्य', क्यों कहा जाता है?

[उ.] गौतम! समय अथवा आवलिका यावत् अवसर्पिणी अथवा उत्सर्पिणी आदि कालों का आदिभूत सूर्य है। इसलिए इसे आदित्य कहा जाता है।

5. [Q.] *Bhante !* Why the sun (Surya) is called Aaditya ?

[Ans.] Gautam ! The sun is the source (*aadibhoot*) of all time including Samay or Aavalika... and so on up to... Avasarpini (progressive cycle of time) or Utsarpini (regressive cycle of time). That is why it is called Aaditya.

विवेचन–चन्द्रमा को शशी (सश्री) कहने का कारण–चूँकि शशि का अर्थ होता है–मृग। चन्द्र विमान का चिन्ह मृग होने के कारण चन्द्र को शशी कहा जाता है। इसी तरह शशी का रूपान्तरित शब्द सश्री है जिसका अर्थ है–शोभासहित। चन्द्र विमान के सभी देव-देवी-उपकरणादि कान्तवान (शोभनीय) होने के कारण इसे सश्री भी कहा जाता है।

सूर्य को 'आदित्य' कहने का कारण–चूंकि समय, आवलिका, दिन, रात, सप्ताह, पक्ष, मास, वर्ष से लेकर उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी तक आदि समस्त कालों का आदिभूत (प्रथम कारण) सूर्य है। सूर्य के द्वारा ही इन सभी कालों का विभाग किया जाता है। इसलिए सूर्य को 'आदित्य' कहा गया है।

Elaboration—Reason for Chandra being called Shashi (Sashri)—Shashi means deer; as the logo of the celestial vehicle of Chandra dev is deer it is called Shashi. Also, Shashi transcribed in Sanskrit is Sashri which means endowed with radiance. All inhabitant gods and goddesses as also its components and décor are radiant; for that reason it is called Sashri.

Reason for Surya being called Aaditya—The sun is the source (*aadibhoot*) or root cause of all time including Samay, Aavalika, day, night, week, fortnight, month, year and so on up to Avasarpini (progressive cycle of time) or Utsarpini (regressive cycle of time). All these units of time are derived from the movement of the sun. That is the reason the sun (Surya) is called Aaditya.

DESCRIPTION OF THE CHIEF CONSORTS OF CHANDRA AND SURYA

६. [प्र.] चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ?

[उ.] जहा दसमसए (उ. ५) जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं।

६. [प्र.] भगवन्! ज्योतिष्कों के इन्द्र, ज्योतिष्कों के राजा चन्द्रमा की कितनी अग्रमहिषियाँ हैं?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार दशवें शतक (के उद्देशक ५) में कहा है, (उसी के अनुसार जानना चाहिए) यावत् अपनी राजधानी में सिंहासन पर मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है, (यहाँ तक कहना चाहिए।)

6. [Q.] *Bhante !* How many chief consorts (*agramahishi*s) Chandra, the king of Jyotishk gods has?

[Ans.] Gautam ! What has been mentioned in the tenth chapter (5th lesson) should be repeated here... and so on up to... he is not able to enjoy carnal pleasures while on the throne in his capital.

७. सूरस्स वि तहेव (स. १० उ. ५)।

[७] सूर्य के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार शतक १० (उ. ५ के अनुसार) कहना चाहिए।

7. In the same way repeat here for Surya (chapter-10, lesson-5).

विवेचन—चन्द्रमा की चार पट्टरानियाँ हैं—(१) चन्द्रप्रभा, (२) ज्योत्स्नाभा, (३) अर्चिर्माली और (४) प्रभंकरा। इसी प्रकार सूर्य की भी चार पट्टरानियाँ हैं—(१) सूर्यप्रभा, (२) आतपाभा, (३) अर्चिर्माली और (४) प्रभंकरा।

Elaboration—Chandra has four chief consorts—(1) Chandraprabha, (2) Jyotsnabha, (3) Archimali and (4) Prabhankara. In the same way Surya also has four chief consorts—(1) Suryaprabha, (2) Atapabha, (3) Archimali and (4) Prabhankara.

चन्द्र और सूर्य के कामभोगों से सुखानुभव का निरूपण

PLEASURE EXPERIENCES OF CHANDRA AND SURYA

८. [प्र.] चंदिम-सूरिया णं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति?

[उ.] गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाण-बलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगं गिहं हव्वमागते ण्हाते कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुण्णं थालिपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि; वण्णओ. महब्बले कुमारे (स. ११ उ. ११) जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा।

[प्र.] से णं गोयमा! पुरिसे विओसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?

[उ.] ओरालं समणाउसो!

तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोएहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं [इंदभूयाणं] देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराणं॰ देवाणं कामभोगेहिंतो गहगणनक्खत्त-तारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण-नक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिम-सूरिया णं जोइसिंदाणं जोइसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चंदिम-सूरिया णं गोयमा! जोइसिंदा जोइसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ।

॥ बारसमे सए : छट्ठओ उद्देसओ समत्तो॥

८. [प्र.] भगवन्! ज्योतिष्कों के इन्द्र, ज्योतिष्कों के राजा चन्द्र और सूर्य किस प्रकार के कामभोगों का उपभोग करते हुए विचरते हैं?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार प्रथम युवावस्था में प्रवेश हुए किसी बलिष्ठ पुरुष (युवक) ने, किसी यौवनावस्था में प्रविष्ट होती हुई किसी बलिष्ठ भार्या (युवती) के साथ नया (थोड़े दिन पहले) ही विवाह किया, और (विवाह के बाद वह पुरुष) अर्थोपार्जन करने के लिए सोलह वर्ष तक विदेश में रहा। वहाँ से धनोपार्जन कर अपना कार्य सम्पन्न करके वह निर्विघ्न रूप से पुनः

लौटकर शीघ्र अपने घर आया। वहाँ उसने स्नान किया, बलिकर्म (भेंट-न्योछावर) किया, (विघ्न निवारणार्थ) कौतुक और मंगल रूप प्रायश्चित्त किया। फिर सभी आभूषणों से विभूषित होकर मनोज्ञ स्थालीपाक-विशुद्ध अठारह प्रकार के व्यंजनों से युक्त भोजन किया। इसके उपरान्त महाबल के प्रकरण (श. ११, उ. ११) में वर्णित वासगृह के समान शयनगृह में शृंगारगृह में सुन्दर वेषवाली, यावत् ललितकला युक्त, अनुरक्त, अत्यन्त रागयुक्त और मनोऽनुकूल पत्नी (भार्या) के साथ वह इष्ट शब्द रूप, स्पर्शादि यावत् पाँच प्रकार के मनुष्य-सम्बन्धी कामभोग का उपभोग करता हुआ विचरता है।

[प्र.] गौतम! वह पुरुष वेदोपशमन (कामविकार-शान्ति) के समय किस प्रकार के साता-सौख्य का अनुभव करता है?

[उ.] (गौतम स्वामी कहते हैं) हे श्रमण भगवन्! वह पुरुष उदार (सुख का अनुभव करता है।)

[भगवान कहते हैं—] गौतम! उस पुरुष के इन कामभोगों की अपेक्षा वाणव्यन्तर देवों के कामभोग अनन्त-गुण विशिष्टतर होते हैं। वाणव्यन्तर देवों के कामभोगों से असुरेन्द्र को छोड़कर शेष भवनवासी देवों के कामभोग अनन्त गुण विशिष्टतर होते हैं। असुरेन्द्र को छोड़कर (शेष) भवनवासी देवों के कामभोगों से (इन्द्रभूत) असुरकुमार देवों के कामभोग अनन्तगुण-विशिष्टतर होते हैं। असुरकुमार देवों के कामभोगों से ग्रहगण, नक्षत्र और तारा रूप ज्योतिष्क देवों के कामभोग अनन्त गुण विशिष्टतर होते हैं। ग्रहगण-नक्षत्र-तारा-रूप ज्योतिष्क देवों के कामभोगों से, ज्योतिष्कों के इन्द्र, ज्योतिष्कों के राजा चन्द्रमा और सूर्य के कामभोग अनन्तगुण विशिष्टतर होते हैं।

हे गौतम! ज्योतिषियों के इन्द्र, ज्योतिष्कों के राजा चन्द्रमा और सूर्य इस प्रकार के कामभोगों का अनुभव करते हुए विचरते हैं।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है—ऐसा कहकर भगवान गौतमस्वामी श्रमण भगवान महावीर को (वन्दना-नमस्कार करके) यावत् विचरण करते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : छठा उद्देशक समाप्त ॥

8. **[Q.]** *Bhante !* Experiencing what type of enjoyments king Chandra and king Surya the kings of Jyotishk gods spend their lives ?

[Ans.] Gautam ! Take for example a strong male gaining his youth newly married to a strong wife gaining her youth migrates (leaving his wife) to other country to earn wealth and remains away for sixteen years. Earning wealth and completing his mission he returns home safe. After that he takes

his bath, performs auspicious rituals and offerings as well as beatific atonement. Then, he adorns himself with ornaments and eats expertly cooked delicious eighteen-course dinner. After this he goes to the perfume-chamber-like bedroom like the one mentioned in the story of Mahabal (chapter-11, lesson-11) and spends his time enjoying manly carnal pleasures, derived from five sensual gratifications including adorable sound and touch, with beautifully dressed... and so on up to... artful, loving, enamoured and gorgeous wife.

[Q.] Gautam ! Once his lust is satiated, what kind of elation and contentment he experiences ?

[Ans.] (Gautam Swami replies—) O Shraman Bhagavan ! That person experiences great elation and contentment.

(Bhagavan adds—) Gautam ! The carnal pleasures of Vanavyantar Devs (interstitial gods) are infinite times more exquisite than those of this person. The carnal pleasures of abode-dwelling gods, other than Asurendras, are infinite times more exquisite than those of Vanavyantar Devs (interstitial gods). The carnal pleasures of Asur-kumar gods are infinite times more exquisite than those of abode-dwelling gods other than Asurendras. The carnal pleasures of Jyotishk gods including planets, stars and *nakshatras* are infinite times more exquisite than those of Asur-kumar gods. The carnal pleasures of Chandra and Surya, the kings of Jyotishk gods, are infinite times more exquisite than those of Jyotishk gods including planets, stars and *nakshatras*.

O Gautam ! Experiencing this type of enjoyments king Chandra and king Surya the kings of Jyotishk gods spend their lives.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—यहाँ चन्द्रमा और सूर्य के कामभोगों को अन्य (भवनपति व वाणव्यंतर आदि) देवों से अनन्त गुणों से विशिष्ट बताया गया है।

श्रमण भगवान महावीर ने यहाँ कामभोगों के सुख को उदार सुख कहा है। उन्होंने इस कामभोग को मोक्ष सुख अथवा आत्मिक सुख की अपेक्षा से नहीं, बल्कि सामान्य सांसारिकजनों के वैषयिक सुखों की अपेक्षा से कहा है। वास्तव में कामभोग सम्बन्धी सुख, सुख नहीं मात्र सुखाभास है, क्षणिक है, तुच्छ है। यह एक प्रकार के दुःख का कारण है।

Elaboration—Here the carnal pleasures of Chandra and Surya have been shown as infinite times more exquisite than those of other gods including abode-dwelling and interstitial ones.

Shraman Bhagavan Mahavir has mentioned the carnal pleasures as exquisite here; this not in context of spiritual bliss or the bliss of liberation but simply in context of sensual pleasures of ordinary mundane people. In fact carnal pleasures are not happiness but illusion of happiness. They are ephemeral, worthless and end up in misery.

● END OF THE SIXTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER ●

सत्तमो उद्देसओ : लोगे

सप्तम उद्देशक : लोक का परिमाण

SAPTAM UDDESHAK (SEVENTH LESSON): *LOK* (UNIVERSE)

लोक के परिमाण की प्ररूपणा EXPANSE OF THE *LOK*

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी—

[१] उस काल और उस समय में यावत् (गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से) इस प्रकार पूछा—

1. (During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in) Rajagriha city... and so on up to... Gautam Swami asked—

२. [प्र.] केमहालए णं भंते ! लोए पन्नत्ते?

[उ.] गोयमा ! महतिमहालए लोए पन्नत्ते; पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखिज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढंपि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं।

२. [प्र.] भगवन्! लोक कितना बड़ा है?

[उ.] गौतम! लोक महातिमहान् अर्थात् बहुत बड़ा है। वह पूर्व दिशा में असंख्य कोटा-कोटि योजन वाला है। इसी प्रकार दक्षिण दिशा में भी असंख्य कोटा-कोटि योजन वाला है और इसी तरह पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्व तथा अधो दिशा में भी असंख्य कोटा-कोटि योजन-आयाम-विष्कम्भ (लम्बाई-चौड़ाई) वाला है।

2. [Q.] *Bhante !* How large is *Lok* (occupied space or the universe) ?

[Ans.] Gautam ! It is extremely great. In the eastern direction it extends to innumerable Kotakoti (Crore-crores or ten million ten millions or 10^{14}) Yojans (8 miles). In the same way in the southern direction it extends to innumerable Kotakoti Yojans (8 miles). So also in the western, northern, Zenith and nadir directions it extends to innumerable Kotakoti Yojans long and wide.

३-१. [प्र.] एयंसि णं भंते ! एमहालयंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि?

[उ.] गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे।

३-१. [प्र.] भगवन्! इतने बड़े लोक में क्या कोई परमाणु-पुद्गल जितना भी आकाश-प्रदेश ऐसा है, जहाँ पर इस जीव ने जन्म-मरण न किया हो?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है।

3-1. [Q.] *Bhante !* In such gigantic *Lok* (universe) is there a space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) where this *jiva* (living being) has not been born or died ?

[Ans.] Gautam ! That is not right.

३-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एयं वुच्चइ—'एयंसि णं एमहालयंसि लोगंसि नत्थि केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा न मए वावि'?

[उ.] गोयमा ! से जहानामए केई पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा; से णं तत्थ जहन्नेणं एक्कं वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा; ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहन्नेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणएण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे भवइ? 'नो इणट्ठे समट्ठे'। होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे नो चेव णं एयंसि एमहालयंसि लोगंसि लोगस्स य सासयभावं, संसारस्स य अणाइभावं, जीवस्स य निच्चभावं कम्मबहुत्तं जम्मण-मरणाबाहुल्लं च पडुच्च नत्थि केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव न मए वा वि।

३-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहा गया है कि इतने बड़े लोक में परमाणु पुद्गल जितना ऐसा कोई भी आकाश प्रदेश नहीं है, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण न किया हो?

जिस प्रकार बकरियों से भरे बाड़ें में कोई भी स्थान ऐसा खाली नहीं होता जहाँ बकरियों का मल, मूत्र, कफ, लार, वमन, शुक्र, रुधिर आदि न हो

उसी प्रकार लोक में कोई भी स्थान ऐसा खाली नहीं जहां जीव ने जन्म मरण न किया हो

चित्र-परिचय 11

Illustration No. 11

बकरी के बाड़े के दृष्टांत द्वारा लोक के प्रत्येक परमाणु पर जीव के जन्म-मरण की प्ररूपणा

पीछे दिये गये चित्र में लोक के अन्दर जीव के अनेकों बार जन्म-मरण को दर्शाया गया है। उसके पीछे बाड़े में बकरियाँ दिखाई गई हैं।

चित्र का अर्थ–

भगवान ने बताया है कि जिस तरह पूर्ण रूप से भरे हुए बकरियों के बाड़े में भूमि का कोई भी भाग बकरियों के मल-मूत्रादि से अवशिष्ट नहीं रह पाता है, उसी तरह लोक का कोई भी परमाणु पुद्गल (कोई भी स्थान) ऐसा नहीं है जिस पर जीव ने जन्म-मरण न किया हो अर्थात् अनादिकाल से कर्म बहुलता के कारण भव भ्रमण करता जीव शाश्वत लोक के प्रत्येक स्थान पर जन्म-मरण कर चुका है।

–शतक 12, उ. 7

DEATH AND BIRTH OF BEINGS EXPLAINED WITH EXAMPLE OF GOAT-YARD

The illustration shows many birth-death cycles a soul passes through and the back is a goat-yard.

Theme of the illustration—

In a goat-yard full of goats not even a smallest part of the ground can remain untouched with the excreta of goats; in the same way in this *Lok* (universe) there is no such space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) where this *jiva* (living being) has not got born or died. In other words since time immemorial going through endless cycles of rebirth due to excess of karma particles every soul has been born at every place in this eternal universe.

—Shatak-12, lesson-7

[उ.] गौतम! जैसे कोई पुरुष सौ बकरियों के लिए एक विशाल अजाव्रज अर्थात् बकरियों का बाड़ा बनाए और उसमें वह कम से कम एक, दो अथवा तीन और अधिक से अधिक एक हजार बकरियों को रखे। वहाँ उनके लिए घास-चारा चरने की प्रचुर भूमि और प्रचुर पानी हो। यदि वे बकरियाँ वहाँ कम से कम एक, दो अथवा तीन दिन और अधिक से अधिक छह महीने तक रहें, तो हे गौतम! क्या उस बाड़े का कोई भी परमाणु-पुद्गल मात्र प्रदेश ऐसा रह सकता है, जो उन बकरियों के मल, मूत्र, श्लेष्म (कफ), नाक के मैल (लींट), वमन, पित्त, शुक्र, रुधिर, चर्म, रोम, सींग, खुर और नखों से (पूर्व में अनाक्रान्त) स्पर्श न किया हो (तब गौतम स्वामी ने उत्तर देते हुए कहा—भगवन!) यह अर्थ समर्थ नहीं है। (तदोपरान्त भगवान ने कहा—) हे गौतम! कदाचित् उस बाड़े में कोई एक परमाणु-पुद्गल मात्र प्रदेश ऐसा भी रह सकता है, जो उन बकरियों के मल यावत् नखों से स्पृष्ट न हुआ हो, परन्तु इतने बड़े इस लोक में, लोक के शाश्वत भाव के कारण, संसार के अनादि भाव होने के कारण, जीव के नित्य भाव, कर्म-बहुलता तथा जन्म-मरण की बहुलता के कारण कोई परमाणु-पुद्गल मात्र प्रदेश ऐसा नहीं है जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। हे गौतम! इसी कारण उपर्युक्त कथन किया गया है कि यावत् जन्म-मरण न किया हो।

3-2. [Q.] *Bhante !* Why is it said that in such gigantic *Lok* (universe) there is no such space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) where this *jiva* (soul/living being) has not been born or died ?

[Ans.] Gautam ! For example, some person makes a large cattle-yard for one hundred goats and in that he keeps at least one, two or three and at most one thousand goats. In the yard there is ample land with grass to graze and ample water. Those goats live there for at least one, two or three days and at most six months. Then, O Gautam ! In that cattle-yard can a space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) remain untouched (as in the past) with the excreta, urine, phlegm, nose-slime, vomit, bile, semen, blood, skin, horns, hooves or claws ? (Gautam Swami replied– *Bhante !*) That is not true. (Then Bhagavan added–) Gautam ! There may be a chance that a single space-point remains untouched with excreta... and so on up to... claws of those goats, but in such gigantic *Lok* (universe) there is no such space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) where this *jiva* (living being) has not got born or died; this is because of the eternality of this universe, beginning-less state of the cycles of rebirth (*Samsaar*), immortality of *jiva*

(soul), profusion of *karmas*, and multitude of births and deaths. That is why it has been said that... and so on up to... *jiva* (living being) has not been born or died.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र में श्रमण भगवान महावीर ने बकरियों के बाड़े में उनके मूलमूत्रादि का दृष्टान्त देकर समझाया है कि लोक में ऐसा कोई परमाणु पुद्गल मात्र प्रदेश अछूता नहीं है जहाँ जीव ने जन्म मरण न किया हो।

इस बात की पुष्टि के पाँच कारण कहे गए हैं—(१) **लोक शाश्वत है**—यदि लोक विनाशी होता तो यह बात सम्भव नहीं हो सकती थी। अत: लोक के शाश्वत होने पर ही उपर्युक्त घटना घटित हो सकती है। (२) **लोक अनादि है**—लोक के शाश्वत होने पर भी यदि वह सादि (आदि सहित) हो तो भी उपर्युक्त बात घटित नहीं हो सकती, इसलिए कहा गया—लोक अनादि है। (३) **जीवात्मा नित्य है**—अनन्त जीवों की अपेक्षा से प्रवाहरूप से संसार अनादि हो, किन्तु विवक्षित जीव अनित्य हो तो भी उपर्युक्त अर्थ घटित नहीं हो सकता, इसलिए कहा गया—जीव (आत्मा) नित्य है। (४) **कर्मों की बहुलता है**—जीव नित्य होने पर भी यदि कर्म अल्प हों तो भी तथाविध संसार परिभ्रमण नहीं हो सकता, और वैसी स्थिति में उपर्युक्त कथन घटित नहीं हो सकता, इसलिए कहा गया—कर्मों की बहुलता है। (५) **जन्म-मरण की बहुलता है**—कर्मों की बहुलता होने पर भी यदि जन्म-मरण की अल्पता हो तो पूर्वोक्त अर्थ घटित नहीं हो सकता, इसलिए बतलाया गया—जन्म-मरण की बहुलता है। इस प्रकार इन पाँच कारणों से लोक में एक परमाणु मात्र भी आकाश-प्रदेश ऐसा नहीं है, जहाँ जीव जन्मा न हो, और मरा न हो।

Elaboration—In this statement Shraman Bhagavan Mahavir has explained that in *Lok* (universe) there is no such space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) where this *jiva* (living being) has not been born or died by giving the example of a cattle-yard for goats where no place is left untouched with excreta of goats.

Five reasons have been given for this—1. Eternality of this universe–If the universe was not eternal this would not have been possible, but as the universe is eternal this is true. 2. Beginning-less state of the cycles of rebirth (*Samsaar*) – even when the universe is eternal this could not be possible if the cycles of rebirth had a beginning; because the total past time would have reduced; but as the cycles of rebirth (*Samsaar*) are without a beginning this is true. 3. Immortality of *jiva* (soul)– even when the existence of souls is without a beginning, this could not be possible if soul was not immortal because then the total number of souls would keep on reducing; but as soul is immortal it is true. 4. Profusion of *karmas*–even

when soul is immortal, if there is no profusion of *karmas* the cycles of rebirth would be reduced and this would not be possible; but as there is a profusion of *karmas* this is true. 5. Multitude of births and deaths–even when there is profusion of *karmas*, if the number of births and deaths is low this would not be possible; but as there is a multitude of births and deaths it is true. That is why it is said that in *Lok* (universe) there is no such space-point even as small as an ultimate particle of matter (*Ultron*) where this *jiva* (living being) has not been born or died.

नरकादि चौबीस दण्डकों की आवास संख्या का अतिदेशपूर्वक निरूपण

THE NUMBER OF ABODES IN TWENTY FOUR PLACES OF SUFFERING

४. [प्र.] कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए (स. १ उ. ५) तहेव आवासा ठावेयव्वा। जाव अणुत्तरविमाणे त्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे।

४. [प्र.] भगवन्! पृथ्वियाँ (नरक-भूमियाँ) कितनी कही गई हैं?

[उ.] गौतम! पृथ्वियाँ सात कही गई हैं। जिस प्रकार प्रथम शतक के पञ्चम उद्देशक (श. १, उ. ५) में कहा गया है, उसी प्रकार नरकादि के आवासों का कथन करना चाहिए। यावत् अनुत्तर-विमान तक, यावत् अपराजित और सर्वार्थसिद्ध तक इसी प्रकार कहना चाहिए।

4. [Q.] *Bhante !* How many Prithvis (infernal worlds) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be seven Prithvis (infernal worlds). Repeat as mentioned in the fifth lesson of the first chapter about abodes in infernal and other worlds... and so on up to... Anuttar Vimaan... and so on up to... Aparaajit and Sarvaarthasiddha.

एकजीव अथवा सर्वजीवों के चौबीस दण्डकवर्ती आवासों में विविध रूपों में अनन्त बार उत्पन्न होने की प्ररूपणा

BIRTH OF ONE OR MANY SOULS IN DIFFERENT FORMS IN ABODES IN ALL PLACES OF SUFFERING

५-१. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नरगत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?

[उ.] हंता, गोयमा ! असइ अदुवा अणंतखुत्तो।

५-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव, इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से प्रत्येक नरकावास में, पृथ्वीकायिक रूप से यावत् वनस्पतिकायिक रूप से, नरक रूप में (नरकावासरूप पृथ्वीकायिक रूप), पहले उत्पन्न हुआ है?

[उ.] हाँ, गौतम! अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुका है।

5-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in three million infernal abodes on this Ratnaprabha Prithvi (first hell) in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied form or infernal form?

[Ans.] Yes, Gautam ! It has been born thus many times or infinite times.

५-२. [प्र.] सव्वजीवा वि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरया.?

[उ.] तं चेव जाव अणंतखुत्तो।

५-२. [प्र.] भगवन्! क्या सभी जीव, इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से प्रत्येक नरकावास में पृथ्वीकायिक रूप में यावत् वनस्पतिकायिक रूप में, नरकपने और नैरयिकपने में पहले उत्पन्न हो चुके हैं?

[उ.] (हाँ, गौतम!) उसी प्रकार (पहले की तरह) यावत् अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हुए हैं।

5-2. [Q.] *Bhante !* Have all *jivas* (souls/living beings) been born earlier in three million infernal abodes on this Ratnaprabha Prithvi (first hell) in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied form or infernal form?

[Ans.] (Yes, Gautam !) As aforesaid, it has been born thus many times or infinite times.

६. [प्र.] अयं णं भंते! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए.?

[उ.] एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा। एवं जाव धूमप्पभाए।

६. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव शर्कराप्रभा पृथ्वी के पच्चीस लाख (नरकावासों में से प्रत्येक नरकावास में, पृथ्वीकायिक रूप में यावत् वनस्पतिकायिक रूप में, यावत् पहले उत्पन्न हो चुका है?)

[उ.] गौतम! जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी-(के विषय में) दो आलापक कहे हैं, उसी प्रकार (शर्कराप्रभा पृथ्वी के विषय में) दो आलापक कहने चाहिए। इसी प्रकार यावत् धूमप्रभा पृथ्वी तक (के आलापक कहने चाहिए।)

6. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in two and a half million infernal abodes on Sharkaraaprabha Prithvi (second hell) in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied form or infernal form ?

[Ans.] Gautam ! Like the two statements about Ratnaprabha Prithvi mention two statements about this (Sharkaraaprabha Prithvi) also. In the same way repeat two statements about other Prithvis... and so on up to... Dhoom-prabha Prithvi (fifth hell).

७. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि. ?

[उ.] सेसं तं चेव।

७. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव तमःप्रभा पृथ्वी के पाँच कम एक लाख नरकावासों में से प्रत्येक नरकावास में (पूर्ववत् उत्पन्न हो चुका है?)

[उ.] (हाँ, गौतम! पूर्ववत् ही) शेष सर्व कथन करना चाहिए।

7. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in five less one Lac infernal abodes on Tamah-prabha Prithvi (sixth hell) as aforesaid ?

[Ans.] (Yes, Gautam !) Repeat as aforesaid.

८. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसिव. ?

[उ.] सेसं जहा रयणप्पभाए।

८. [प्र.] भगवन्! यह जीव अधःसप्तमपृथ्वी के पाँच अनुत्तर और महातिमहान् (अति विशाल) महानरकावासों में क्या पूर्ववत् उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] (हाँ, गौतम!) शेष सर्व कथन रत्नप्रभा पृथ्वी के समान समझना चाहिए।

8. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in five unique and gargantuan infernal abodes on Adhah-saptam Prithvi (seventh hell) as aforesaid ?

[Ans.] (Yes, Gautam !) Repeat as aforesaid about Ratnaprabha Prithvi (first hell).

९-१. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण-सयण-भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो।

९-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव, असुरकुमारों के चौसठ लाख असुरकुमारावासों में से प्रत्येक असुरकुमारावास में पृथ्वीकायिक रूप में यावत् वनस्पतिकायिक रूप में, देव रूप में अथवा देवी रूप में अथवा आसन, शयन, भांड, पात्र आदि उपकरण रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ, गौतम! यावत् अनेक बार या अनन्त बार (उत्पन्न हो चुका है।)

9-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in each of the 6.4 million Asur-kumar abodes of Asur-kumar gods in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied form or in the form of gods or goddesses or as seats, beds, utensils, vessels or other equipment ?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... (it has been born thus) many times or infinite times.

९-२. [प्र.] सव्वजीवा वि णं भंते !

[उ.] एवं चेव।

९-२. [प्र.] भगवन्! क्या सभी जीव (पूर्वोक्त रूप में उत्पन्न हो चुके हैं?)

[उ.] हाँ गौतम! इसी प्रकार (पूर्वोक्त में बताए गए अनेक बार या अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं।)

9-2. [Q.] *Bhante !* Have all *jivas* (souls/living beings) been born earlier as aforesaid ?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... (it has been born thus) many times or infinite times.

१०. एवं जाव थणियकुमारेसु नाणत्तं आवासेसु आवासा पुव्वभणिया।

[१०] इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक कहना चाहिए। किन्तु उनके आवासों की संख्या में अन्तर है। उनकी आवास संख्या (भगवती श. १ उ. ५ में) पहले बताई जा चुकी है।

10. The same should be repeated for other divine abodes... and so on up to... Stanit-kumar gods; however, their number is different. The number of their abodes has been mentioned earlier (chapter-1, lesson-5).

११-१. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?

[उ.] हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो।

११-१. [प्र.] भंते! क्या यह जीव असंख्यात लाख पृथ्वीकायिक-आवासों में से प्रत्येक पृथ्वीकायिक-आवास में पृथ्वीकायिक रूप में यावत् वनस्पतिकायिक रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ, गौतम! अनेक बार या अनन्त बार उत्पन्न हो चुका है।

11-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in each of the infinite million earth-bodied abodes in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied form ?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... (it has been born thus) many times or infinite times.

११-२. एवं सव्वजीवा वि।

[११-२] इसी प्रकार सर्वजीवों के (विषय में भी पूर्व की भाँति कथन करना चाहिए।)

11. [2] The same is true for all *jiva*s (souls/living beings).

१२. एवं जाव वणस्सइकाइएसु।

[१२] इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिकों के आवासों के (विषय में कहना चाहिए।)

12. The same is also true (for abodes of other bodied-beings)... and so on up to... abodes of plant-bodied beings.

१३-१. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेंदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेंदियावासंसि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए बेंदियत्ताए उववन्नपुव्वे ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव खुत्तो।

१३-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव असंख्यात लाख द्वीन्द्रिय-आवासों में से प्रत्येक द्वीन्द्रियावास में पृथ्वीकायिक रूप में यावत् वनस्पतिकायिक रूप में और द्वीन्द्रिय रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ, गौतम! यावत् अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुका है।

13-1. [Q.] *Bhante!* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in each of the infinite million two-sensed abodes in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied form and two-sensed form ?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... (it has been born thus) many times or infinite times.

१३. [२] सव्वजीवा वि णं एवं चेव।

[१३-२] इसी प्रकार सभी जीवों के विषय में (कहना चाहिए।)

13. [2] The same is true for all *jivas* (souls/living beings).

१४. एवं जाव मणुस्सेसु। नवरं तेंदियएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए. सेसं जहा बेंदियाणं।

[१४] इसी प्रकार (त्रीन्द्रिय से लेकर) यावत् मनुष्यों तक (अपने-अपने आवासों में उत्पन्न होने के विषय में कहना चाहिए।) परन्तु इतनी विशेषता है कि त्रीन्द्रियों में यावत् वनस्पतिकायिक रूप में, यावत् त्रीन्द्रिय रूप में, चतुरिन्द्रियों में यावत् चतुरिन्द्रिय रूप में, पंचेन्द्रिय-तिर्यञ्च योनिकों में यावत् पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च रूप में तथा मनुष्यों में यावत् मनुष्य रूप में उत्पत्ति जाननी चाहिए। शेष समस्त कथन द्वीन्द्रियों के (समान कहना चाहिए।)

14. The same pattern follows for other sensed beings (three-sensed)... and so on up to... human beings (about being born in their own abodes). The only difference is that in three-sensed beings... and so on up to... plant-bodied form... and so on up to... three-sensed form; in four-sensed beings... and so on up to... four-sensed form; in five-sensed animal beings... and so on up to... five-sensed animal form; and in human beings... and so on up to... human form. Other details like two-sensed beings.

१५. वाणमंतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणेसु य जहा असुरकुमाराणं।

[१५] जिस प्रकार असुरकुमारों के (विषय में कहा है;) उसी प्रकार वाणव्यन्तर; ज्योतिष्क तथा सौधर्म एवं ईशान देवलोक तक (कहना चाहिए।)

15. What has been stated about Asur-kumar gods should be repeated for Vanavyantar and Jyotishk gods as well as for Saudharm and Ishaan divine realms?

१६-१. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढविकाइयत्ताए.।

[उ.] सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो। नो चेव णं देवित्ताए।

१६-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव सनत्कुमार देवलोक के बारह लाख विमानावासों में से प्रत्येक विमानावास में पृथ्वीकायिक रूप में यावत् पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] (हाँ, गौतम!) सब कथन असुरकुमारों के समान, यावत् अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं; यहाँ तक जानना चाहिए। किन्तु वहाँ वह देवी रूप में उत्पन्न नहीं हुए।

16-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in each of the 1.2 million celestial vehicles of Sanat-kumar divine realm in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied and other forms ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Like Asur-kumar gods... and so on up to... (it has been born thus) many times or infinite times. But here it has not been born in the form of goddess

१६-२. एवं सव्वजीवा वि।

[१६-२] इसी प्रकार सर्व जीवों के विषय में कहना चाहिए।

16. [2] The same is true for all *jivas* (souls/living beings).

१७. एवं जाव आणय-पाणएसु। एवं आरणच्चुएसु वि।

[१७] इसी प्रकार यावत् आनत और प्राणत तक तथा आरण और अच्युत तक जानना चाहिए।

17. In the same way (repeat for other celestial-vehicular divine realms)... and so on up to... Aanat, Praanat, and Achyut divine realms.

१८. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेवेज्जविमाणावाससएसु.।

[उ.] एवं चेव।

१८. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव तीन सौ अठारह ग्रैवेयक विमानावासों में से प्रत्येक विमानावास में पृथ्वीकायिक रूप में यावत् उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ गौतम! पूर्ववत् (अनेक बार या अनन्त बार) उत्पन्न हो चुका है।

18. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in each of the three hundred eighteen celestial vehicles of Graiveyak divine realms in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied and other forms ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Like aforesaid many times or infinite times.

१९-१. [प्र.] अयं णं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि.।

[उ.] तहेव जाव अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए वा, देवित्ताए वा।

१९-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव पाँच अनुत्तर विमानों में से प्रत्येक अनुत्तर विमान में, पृथ्वीकायिक रूप में यावत् उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ, किन्तु वहाँ यावत् अनन्त बार देवरूप अथवा देवी रूप में उत्पन्न नहीं हुआ।

19-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier in each of the five celestial vehicles of Anuttar divine realms in earth-bodied form... and so on up to... plant-bodied and other forms ?

[Ans.] Yes, Gautam ! But here it has not been born infinite times in the form of god and goddess.

१९-२. एवं सव्वजीवा वि।

[१९-२] इसी प्रकार सभी जीवों के विषय में जानना चाहिए।

19-2. [Q.] The same is true for all *jivas* (souls/living beings).

विवेचन—एक जीव तथा सर्व जीवों की अपेक्षा से रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावासों से लेकर अनुत्तर विमान के विमानावासों तक में एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के समग्र रूपों में उत्पत्ति की प्ररूपणा की गई है। सूत्र नं. (११-१) में पृथ्वीकायिक आवासों की संख्या असंख्यात लाख कही गई है। ऐसा बताने का एक मात्र कारण उनकी बहुलता बताना है जिस कारण शतसहस्र (लाख) शब्द प्रयुक्त किया गया है। सूत्र नं. (१६-१) से आगे के सूत्रों में सनत्कुमारादि देवलोक के विमानों में जो

जीव के देवी रूप में न होने की बात कही है। उसे कहने का तात्पर्य यह है कि देवियाँ ईशान देवलोक तक ही उत्पन्न होती हैं, सनत्कुमार आदि देवलोकों में उत्पन्न नहीं, होती है। इस दृष्टि से कहा गया है कि जीव सनत्कुमार आदि आगे के देवलोकों में, देवी रूप में उत्पन्न नहीं होता।

अनुत्तर विमानों में कोई भी जीव देव रूप से अनन्त बार उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि अनुत्तर विमानों में कोई जीव मात्र एक बार ही देव रूप में उत्पन्न होता है।

Elaboration—Here rebirths of one or many souls in different forms from one-sensed to five sensed living beings in various abodes in all places of suffering from Ratnaprabha Prithvi to Anuttar Vimaans. In statement 11 [1], the number of earth-bodied abodes is mentioned as innumerable millions. This is just in order to depict the abundance and further emphasize it by mentioning 'shat-sahasra Lac'. In statements following 16 [1], it is mentioned that they are not born in the form of goddess. This indicates that goddesses exist only up to Ishaan divine realm beyond that, in Sanat-kumar and further divine realms there are no goddesses. That is why it is stated that *jiva* is not born as goddess in Sanat-kumar and further divine realms. In Anuttar celestial vehicles soul is never born infinite times because in these vimaans a soul is born only once, after which it gets reborn as human to get liberated.

एक जीव अथवा सर्वजीवों के मातादि, शत्रुदि, राजादि और दासादि के रूप में अनन्त बार उत्पन्न होने की प्ररूपणा

BIRTH OF ONE OR ALL SOULS IN DIFFERENT HUMAN RELATIONSHIPS

२०-१. [प्र.] अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए पिइत्ताए भाइत्ताए भगिणित्ताए भज्जत्ताए पुत्तत्ताए धूयत्ताए सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे?

[उ.] हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो।

२०-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव सभी जीवों के माता के रूप में, पिता के रूप में, भाई के रूप में, भगिनी के रूप में, पत्नी के रूप में, पुत्र के रूप में, पुत्री के रूप में और पुत्रवधू के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ गौतम! अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुका है।

20-1. **[Q.]** *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier as mother, as father, as brother, as sister, as wife, as son, as daughter and as daughter-in-law of all *jivas* (souls/living beings) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It has been born earlier many times or infinite times.

२०-२. [प्र.] सव्वजीवा वि णं भंते! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा?

[उ.] हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो।

२०-२. [प्र.] भगवन्! क्या सभी जीव, इस जीव के माता के रूप में यावत् पुत्रवधू के रूप में पहले उत्पन्न हो चुके हैं?

[उ.] हाँ गौतम! (सब जीव, इस जीव के माता आदि के रूप में) यावत् अनेक बार अथवा अनन्त बार (पहले उत्पन्न हुए हैं।)

20-2. [Q.] *Bhante!* Have all *jiva*s (soul/living being) been born earlier as mother... and so on up to... daughter-in-law of this *jiva* (soul/living being) ?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... many times or infinite times.

२१-१. [प्र.] अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए वेरियत्ताए घायगत्ताए वहगत्ताए पडिणीयत्ताए पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो।

२१-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव सब जीवों के शत्रु रूप में, वैरी-रूप में, घातक रूप में, वधक रूप में, प्रत्यनीक रूप में, तथा प्रत्यामित्र (शत्रु-सहायक) रूप में पहले उत्पन्न हुआ है?

[उ.] हाँ गौतम! अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुका है।

21-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier as enemy, as foe, as molester, as killer, as antagonist and as helper of antagonist of all *jiva*s (souls/living beings) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It has been born earlier many times or infinite times.

२१-२. [प्र.] सव्वजीवा वि णं भंते !

[उ.] एवं चेव।

२१-२. [प्र.] भगवन्! क्या सभी जीव (पूर्व सूत्रानुसार शत्रु आदि रूपों में) पहले उत्पन्न हो चुके हैं?

[उ.] हाँ गौतम! इसी प्रकार पूर्व की भाँति (सभी कथन) समझने चाहिए।

21-2. [Q.] *Bhante!* Have all *jiva*s (soul/living being) been born earlier as aforesaid (preceding statement)?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... as aforesaid.

२२-१. [प्र.] अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे?

[उ.] हंता, गोयमा! असइं जाव अणंतखुत्तो।

२२-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव, सब जीवों के राजा के रूप में, युवराज के रूप में, यावत् सार्थवाह के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] गौतम! अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुका है।

22-1. [Q.] *Bhante!* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier as king, as prince,... and so on up to... caravan chief of all *jiva*s (souls/living beings)?

[Ans.] Yes, Gautam ! It has been born earlier many times or infinite times.

२२-२. सव्वजीवा णं एवं चेव।

[२२-२] इस जीव के राजा आदि के रूप में सभी जीवों की उत्पत्ति का कथन भी पूर्व की भाँति कहना चाहिए।

22. [2] As aforesaid the same holds good for all *jiva*s (soul/living being).

२३-१. [प्र.] अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए पेसत्ताए भयगत्ताए भाइल्लत्ताए भोगपुरिसत्ताए सीसत्ताए वेसत्ताए उववन्नपुव्वे?

[उ.] हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो।

२३-१. [प्र.] भगवन्! क्या यह जीव, सभी जीवों के दास के रूप में, प्रेष्य (नौकर) के रूप में, भृतक रूप में, भागीदार के रूप में, भोगपुरुष के रूप में, शिष्य के रूप में और द्वेष्य (द्वेषी—ईर्ष्यालु) के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है?

[उ.] हाँ गौतम! (यह जीव) यावत् अनेक बार या अनन्त बार (पहले उत्पन्न हो चुका है।)

23-1. [Q.] *Bhante !* Has this *jiva* (soul/living being) been born earlier as slave, as attendant, as servant, as partner, as assistant, as disciple and as rival of all *jivas* (souls/living beings) ?

[Ans.] Yes, Gautam !... and so on up to... infinite times.

२३-२. एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ।

॥ बारसमे सए : सत्तमो उद्देसओ समत्तो॥

[२३-२] इसी प्रकार सभी जीव भी, (पूर्वानुसार दास आदि के रूप में) यावत् अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुके हैं।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : सप्तम उद्देशक समाप्त॥

23. [2] As aforesaid the same holds good for all *jivas* (soul/living being).

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—प्रस्तुत चार सूत्रों में एक जीव एवं सर्व जीवों की अपेक्षा से माता आदि के रूप में, शत्रु आदि के रूप में, राजा आदि के रूप में और दासादि के रूप में अनेक बार या अनन्त बार उत्पन्न होने की प्ररूपणा की गई है।

Elaboration—These four statements convey about birth of one or all souls infinite times in different human relationships including mother etc., enemy etc., king etc., and slave etc.

● END OF THE SEVENTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER ●

अट्ठमो उद्देसओ : नागे
अष्टम उद्देशक : नाग
ASHTAM UDDESHAK (EIGHTH LESSON): NAAG (SERPENT)

नाग, मणि, वृक्षादि में महर्द्धिक देव की उत्पत्ति एवं प्रभाव की चर्चा

BIRTH AND EFFECTS OF OPULENT GOD AMONG SERPENTS, GEMS AND TREES

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी—

[१] उस काल और उस समय में (गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से) यावत् इस प्रकार पूछा—

1. (During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in) Rajagriha city... and so on up to... Gautam Swami asked—

२-१. [प्र.] देवे णं भंते ! महड्ढीए जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?

[उ.] हंता, उववज्जेज्जा।

२-१. [प्र.] भगवन्! क्या महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देव अन्तर रहित च्यव (मर) कर द्विशरीरी (दो बार जन्म लेकर सिद्ध होने वाले) नागों (सर्पों अथवा हाथियों) में उत्पन्न होता है?

[उ.] हाँ गौतम! उत्पन्न होता है।

2-1. **[Q.]** *Bhante !* Does a god with great opulence... and so on up to... great happiness descend and take birth among two-bodied (destined to be liberated after two births) Naags (serpents or elephants) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He takes birth.

२-२. [प्र.] से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा?

[उ.] हंता, भवेज्जा।

२-२. [प्र.] भगवन्! क्या वह वहाँ (नाग के भव में) अर्चित, वन्दित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित, दिव्य, प्रधान, सत्य, सत्यावपात रूप अथवा सन्निहित प्रातिहारिक भी होता है?

[उ.] हाँ गौतम! होता है।

2-2. [Q.] *Bhante !* There (as Naag) does he get adored (*archit*), saluted (*vandit*), worshiped (*poojit*), honoured (*satkaarit*) and respected (*sammanit*)? Does he also make his worship etc. fruitful by predicting future and providing protection (to devotees) every moment with his divine powers?

[Ans.] Yes, Gautam ! He does.

२-३. [प्र.] से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ?

[उ.] हंता, सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा।

२-३. [प्र.] भगवन्! क्या वह वहाँ से अन्तर रहित च्यव कर (मनुष्य भव में उत्पन्न होकर) सिद्ध-बुद्ध होता है, यावत् संसार का अन्त करता है?

[उ.] हाँ, सिद्ध होता है, यावत् संसार का अन्त करता है।

2-3. [Q.] *Bhante !* Does he descend from there without a gap (some other rebirth in between) to take birth as a human being and become perfected (*Siddha*), enlightened (*buddha*)... and so on up to... end all miseries.

[Ans.] Yes, Gautam ! He does... and so on up to... end all miseries.

३. [प्र.] देवे णं भंते ! महड्ढीए एवं जाव बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?

[उ.] एवं चेव जहा नागाणं।

३. [प्र.] भगवन्! महर्द्धिक इसी प्रकार (पूर्वोक्तवत्) यावत् (महासुख वाला देव च्यव कर) क्या द्विशरीरी मणियों में उत्पन्न होता है?

[उ.] (हाँ, गौतम!) जैसे नागों के विषय में (कहा है, वैसा इनके विषय में भी जानना चाहिए)।

3. [Q.] *Bhante !* In the same way does a god with great opulence (... and so on up to... great happiness descend and) take birth among two-bodied (destined to be liberated after two births) Gems ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Just like Naags (as aforesaid).

४. [प्र.] देवे णं भंते ! महड्ढीए जाव बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?

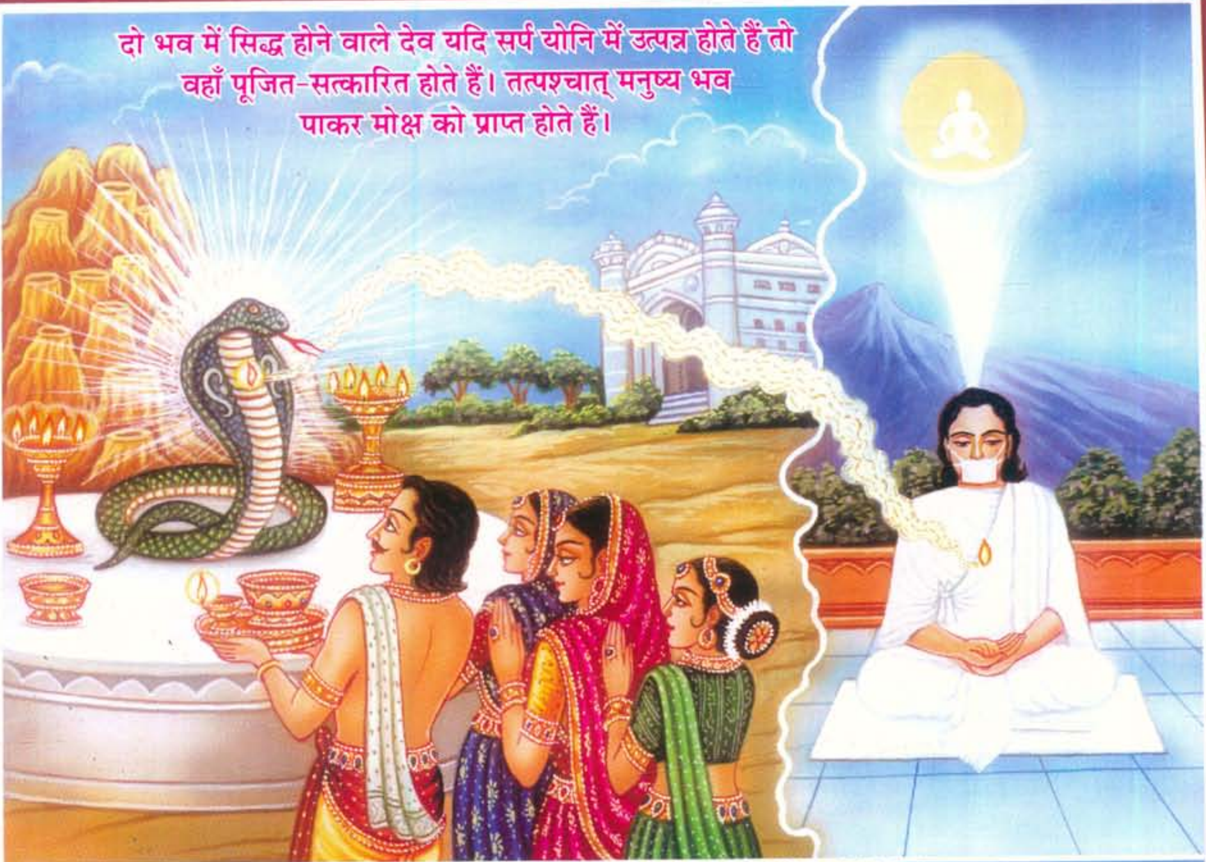
दो भव में सिद्ध होने वाले देव यदि सर्प योनि में उत्पन्न होते हैं तो
वहाँ पूजित-सत्कारित होते हैं। तत्पश्चात् मनुष्य भव
पाकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

दो भव में सिद्ध होने वाले देव यदि वृक्ष रूप में उत्पन्न होते हैं तो
वहाँ पूजित-अर्चित-सत्कारित होते हैं। तत्पश्चात् मनुष्य भव
पाकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

चित्र-परिचय 12

Illustration No. 12

दो भव में सिद्ध होने वाले देव की नाग-वृक्ष आदि में उत्पत्ति

(1) दो भवधारी महाऋद्धिक देव जब नाग रूप में उत्पन्न होता है तो वहाँ उसका पूजा, सत्कार होता है क्योंकि पूर्व भव के संगतिक देव से देवाधिष्ठित होने के कारण वह मनोकामना पूर्ण करने वाला होता है। वह नाग अगले भव में मनुष्य रूप में उत्पन्न होता है और सिद्धत्व प्राप्त करता है।

(2) जब कोई द्विभवधारी महाऋद्धिक देव, वृक्ष रूप में उत्पन्न होता है तो देवाधिष्ठित होने के कारण वह मनोकामना, इच्छा पूर्ण करने वाला होता है। लोग उसकी पूजा-अर्चना करते हैं। उसकी पीठिका को लीप-पोतकर रंगोली आदि करते हैं। ऐसा वृक्ष रूप जीव अगला मनुष्य जन्म पाकर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त होता है।

-शतक 12, उ. 8

BIRTH OF GODS TO BE LIBERATED IN TWO BIRTHS AMONG NAAGS, TREES ETC.

(1) When a god of great opulence destined to be liberated after two births is born among Naags he gets adored and saluted because they are capable of granting boons with the help of friendly gods from past birth. That Naag is reborn as a human and attains liberation.

(2) When a god of great opulence destined to be liberated after two births is born among trees he gets adored and saluted because they are capable of granting boons with the help of friendly gods from past birth. They are made special by building a platform around and the devotees keep the platform pure and clean by smearing and plastering. That tree is reborn as a human and attains liberation.

—Shatak-12, lesson-8

[उ.] हंता, उववज्जेज्जा। एवं चेव। नवरं इमं नाणत्तं—जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा।

हंता, भवेज्जा। सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा।

४. [प्र.] भगवन्! महर्द्धिक यावत् (महासुख वाला देव च्यव कर क्या) द्विशरीरी वृक्षों में उत्पन्न होता है?

[उ.] हाँ, गौतम! उत्पन्न होता है। इसी प्रकार (पूर्व की भाँति सारा कथन जानना चाहिए); मात्र विशेषता इतनी है कि (वह जिस वृक्ष में उत्पन्न होता है, वह अर्चित होने के साथ-साथ) यावत् सन्निहित प्रातिहारिक होता है तथा उस वृक्ष की पीठिका (चबूतरा आदि) गोबर आदि से लीपी हुई और खड़िया मिट्टी आदि द्वारा पोती हुई होती है जिस कारण वह महित (पूजित) होता है। शेष समस्त कथन पूर्ववत् समझना चाहिए, यावत् वह (मनुष्य-भव धारण करके) संसार का अन्त करता है।

4. [Q.] *Bhante !* In the same way does a god with great opulence (... and so on up to... great happiness descend and) take birth among two-bodied (destined to be liberated after two births) Trees ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It does. Just as aforesaid; the difference is that besides getting adored... and so on up to... providing protection, its base (platform) is smeared with cow-dung and plastered with clay inspiring worship. Rest of the statement as aforesaid... and so on up to... (gets reborn as human and) end all miseries.

विवेचन—प्रस्तुत चार सूत्रों में महर्द्धिक देवों की नाग आदि भव में उत्पत्ति, महिमा एवं सिद्धि आदि के विषय में चर्चा की गई है।

ये देव द्विशरीर वाले होते हैं। अर्थात्—एक शरीर (नाग आदि का भव) छोड़कर तदनन्तर दूसरे शरीर यानि मनुष्य शरीर को प्राप्त करते हैं जिससे वे सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो जाते हैं।

ये महर्द्धिक देव नाग, मणि अथवा वृक्ष के भव में भी देवाधिष्ठित होते हैं अर्थात् वे इन भवों में से जिस क्षेत्र में उत्पन्न होतें हैं, वहाँ उनकी अर्चना, वन्दना, पूजा, सत्कार और सम्मान होता है। वे दिव्य, प्रधान, सत्य स्वप्नादि द्वारा सच्चा भविष्य कथन करने वाले होते हैं उनकी सेवा सत्य-सफल होती है, क्योंकि वे पूर्व सगतिक प्रातिहारिक (प्रतिक्षण पहरेदार की तरह रक्षक) होकर उनके सन्निहित-अत्यन्त निकट रहते हैं और जो वृक्ष होता है, वह भी देवाधिष्ठित, विशिष्ट और बद्धपीठ होता है। जनता उसकी महिमा, पूजा आदि करती है और उसकी पीठिका (चबूतरे) को लीप-पोत कर स्वच्छ रखती है।

Elaboration—These four statements discuss the rebirth and glory of highly opulent gods as Naags etc. These gods are said to be two-bodied, which means that after this first body as serpent they get reborn into second body as humans and then get enlightened and liberated.

These opulent gods retain their godhood even as serpents, gems and trees. Wherever they are born as serpent etc. they are adored, saluted, worshiped, honoured and respected. They also predict future through dreams and other divine powers. They make their worship fruitful by providing protection (to devotees) every moment. As trees they are made special by building a platform around and the devotees keep the platform pure and clean by smearing and plastering.

शीलादि से रहित वानरादि का नरकगामित्त्व निरूपण

REBIRTH IN HELL OF VIRTUE-LESS *VAANARS* ETC.

५. [प्र.] अह भंते ! गोलंगूलवसभे कुक्कुडवसभे मंडुक्कवसभे, एए णं निस्सीला निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसणं सागरोवमठिईयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

[उ.] समणे भगवं महावीरे वागरेइ—'उववज्जमाणे उववन्ने' त्ति वत्तव्वं सिया।

५. [प्र.] भगवन्! यदि वानरवृषभ (बड़ा बन्दर), कुर्कुटवृषभ (बड़ा मुर्गा) एवं मण्डूकवृषभ (बड़ा मेंढ़क) ये सभी शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादा-रहित तथा प्रत्याख्यान-पौषधोपवास रहित हों और मरण के समय मृत्यु को प्राप्त हो तो (क्या वह) इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट सागरोपम की स्थिति वाले नरक में नैरयिक के रूप में उत्पन्न होते हैं?

[उ.] श्रमण भगवान महावीर स्वामी कहते हैं—(हाँ, गौतम! ये नैरयिक रूप से उत्पन्न होते हैं;) क्योंकि उत्पन्न होता हुआ 'उत्पन्न हुआ', ऐसा कहा जा सकता है।

5. [Q.] *Bhante !* If a bull-monkey (*vaanar*), a bull-cock, a bull-frog, all these are devoid of morality, vows, virtues, discipline, as well as codes of renunciation, partial ascetic vow and fasting; and they die at the end of their life-spans; then do they get reborn in this Ratnaprabha Prithvi (first hell) as infernal beings with a maximum life span limit of one Sagaropam ?

[Ans.] Shraman Bhagavan Mahavir says—(Yes, Gautam ! They get born as infernal beings) this is because that which is in process of being born can be called as born.

६. [प्र.] अह भंते ! सीहे वग्घे जहा ओसप्पिणिउद्देसए (स. ७ उ. ६) जाव परस्सरे एए णं निस्सीला.।

[उ.] एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया।

६. [प्र.] भगवन्! सिंह, व्याघ्रादि (जीवों के बारे में) जैसा अवसर्पिणी उद्देशक (श. ७, उ. ६) में कहा है, यदि ये सभी शीलरहित (इत्यादि हों तो क्या) पूर्वोक्तरूप में (नैरयिक रूप में) उत्पन्न होते हैं?

[उ.] हाँ गौतम! उत्पन्न होते हैं, यावत् उत्पन्न होता हुआ 'उत्पन्न हुआ' ऐसा कहा जा सकता है।

6. [Q.] *Bhante !* About lion, tiger and other such animals; as mentioned in Avasarpini Uddeshak (Ch.-7, le.-6); if they all are devoid of morality etc. then do they get born (as infernal beings) as aforesaid ?

[Ans.] (Yes, Gautam ! They get born as infernal beings–) this is because that which is in process of being born can be called as born.

७. [प्र.] अह भंते! ढंके कंके विलए मद्दुए सिखी, एए णं निस्सीला.।

[उ.] सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया।

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ।

॥ बारसमे सए : अट्ठमो उद्देसओ समत्तो॥

७. [प्र.] भगवन्! (यदि) ढंक (कौआ) कंक (गिद्ध) बिलक, मेंढक और मोर—ये सभी शील रहित इत्यादि हों तो (क्या) पूर्वोक्त रूप (नैरयिक रूप में) उत्पन्न होते हैं?

[उ.] हाँ, गौतम! उत्पन्न होते हैं। शेष सब कथन यावत् (पूर्ववत्) कहा जा सकता है।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : अष्टम उद्देशक सम्पूर्ण॥

7. [Q.] *Bhante!* If crow (*dank*), vulture (*kank*), Indian oriole (*vilak or peelak*), duck (*madguk*) and peacock (*shikhi*), they all are devoid of morality etc. then do they get born (as infernal beings) as aforesaid ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They get born as infernal beings as aforesaid.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—प्रश्न होता है कि वानर आदि जिस समय वानरादि हैं, उस समय वे नारक रूप नहीं हैं, फिर नारक रूप से कैसे उत्पन्न हुए? इसका समाधान करते हुए भगवान महावीर कहते हैं कि जो उत्पन्न हो रहा है, वह उत्पन्न हुआ कहलाता है। क्रियाकाल और निष्ठाकाल में अभेद दृष्टि से यह ठीक ही कहा गया है क्योंकि जो वानरादि नारक रूप से उत्पन्न होने वाले हैं। अत: वे उत्पन्न हुए हैं।

Elaboration—Here the question is that monkeys (*vaanars*) and other animals, when they exist as monkey etc. how could they be born as infernal beings? Bhagavan Mahavir explains—that which is in process of being born can be called as born. This is an interpretation from the viewpoint of absence of difference between the time of action and time of inevitable natural consequence.

● END OF THE EIGHTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER ●

नवमो उद्देसओ : नौवाँ उद्देशक
देव : देव
NAVAM UDDESHAK (NINTH LESSON) : DEV (GODS)

भव्यद्रव्यादि पंचविध देवों के स्वरूप का निरूपण

DESCRIPTION OF FIVE TYPES OF GODS

१. [प्र.] कइविहा णं भंते ! देवा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! पंचविहा देवा पन्नत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा १ नरदेवा २ धम्मदेवा ३ देवाहिदेवा ४ भावदेवा ५।

१. [प्र.] भगवन्! देव कितने प्रकार के कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! देव पाँच प्रकार के कहे गए हैं। यथा—(१) भव्य-द्रव्यदेव, (२) नरदेव, (३) धर्मदेव, (४) देवाधिदेव, (५) भावदेव।

1. [Q.] *Bhante !* Of how many types are *Dev*s (gods) said to be ?

[Ans.] Gautam ! *Dev*s (gods) are said to be of five kinds — (1) *Bhavya-dravyadev*, (2) *Naradev*, (3) *Dharmadev*, (4) *Devadhidev*, and (5) *Bhaavadev*.

२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा'?

[उ.] गोयमा ! जे भविए पंचेंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—'भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा'।

२. [प्र.] भगवन्! भव्य-द्रव्यदेव, 'भव्य-द्रव्यदेव' किस कारण से कहे गये हैं?

[उ.] गौतम! जो पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक अथवा मनुष्य, देवों में उत्पन्न होने योग्य हैं, ऐसे भविष्य में उत्पन्न होने वाले भावी देवों को 'हे गौतम' भव्य द्रव्यदेव कहा गया है।

2. [Q.] *Bhante !* Why *Bhavya-dravyadev*s are said to be *Bhavya-dravyadev*s ?

[Ans.] Gautam ! Those among five sensed animals or humans that are capable of being born as divine beings, such to be born future gods, O Gautam, are said to be *Bhavya-dravyadev*s.

३. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'नरदेवा, नरदेवा'?

[उ.] गोयमा ! जे इमे रायाणो चउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसं रायवरसहस्साणुयायमग्गा सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव 'नरदेवा, नरदेवा'।

३. [प्र.] भगवन्! नरदेव 'नरदेव' किस कारण से कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! जो राजा चार दिशाओं अर्थात् (पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में समुद्र तथा उत्तर में हिम पर्वत तक षट्खण्ड पृथ्वी के स्वामी) चक्रवर्ती हैं, जिनके यहाँ समस्त रत्नों में प्रधान चक्र-रत्न उत्पन्न हुआ है, जो नव निधियों के अधिपति (स्वामी) हैं, जिनके कोष समृद्ध हैं, बत्तीस हजार राजा जिनके मार्गानुसारी हैं और जो महासागर रूप श्रेष्ठ मेखला पर्यन्त-पृथ्वी के अधिपति और मनुष्यों में इन्द्र समान हैं ऐसे नरदेव को इसी कारण यावत् 'नरदेव' कहा गया है।

3. **[Q.]** *Bhante !* Why *Naradevs* are said to be *Naradevs* ?

[Ans.] Gautam ! The rulers who are *Chakravartis* whose sovereignty extends till end of land in all four directions (up to the Himalaya in the north and the seas in other three directions); in whose treasury *Chakra* (the disc weapon), the best of gems, has appeared; who are owners of nine kinds of wealth; who have plentiful treasuries; who have thirty-two thousand kings at their command; who are lords of the whole earth (land) bounded by oceans and who are like Indra (king of gods) among men; such human-gods, for this reason... and so on up to... are said to be *Naradevs*.

४. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'धम्मदेवा, धम्मदेवा'?

[उ.] गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया जाव गुत्तबंभचारी, से तेणट्ठेणं जाव 'धम्मदेवा, धम्मदेवा'।

४. [प्र.] भगवन्! धर्मदेव 'धर्मदेव' किस कारण से कहे जाते हैं?

[उ.] गौतम! जो ये अनगार भगवान ईर्यासमिति (आदि पंच समितियों से युक्त) यावत् गुप्त-ब्रह्मचारी होते हैं; वे इस कारण से धर्म के देव यावत् 'धर्मदेव' कहे जाते हैं।

4. **[Q.]** *Bhante !* Why *Dharmadevs* are said to be *Dharmadevs* ?

[Ans.] Gautam ! These *Anagaar* (abode-less ascetics) *Bhagavans* who are endowed with (five *samitis* or self regulations, including) *Iryasamiti* (care in movement)... and so on up to... are *gupta-brahmachaaris* or perfect

पाँच देव

चित्र-परिचय 13

Illustration No. 13

पाँच प्रकार के देव

पाँच प्रकार के देव बताये गये हैं–

(1) **भव्यद्रव्यदेव**–जो मनुष्य अथवा तिर्यंच इस भव के बाद ही अगले भव में देव रूप में उत्पन्न होने वाले होते हैं। वे इस भव में भव्यद्रव्यदेव कहलाते हैं।

(2) **नरदेव**–जो चक्रवर्ती राजा मनुष्यों में देव समान आराध्य होते हैं, वे नरदेव कहलाते हैं।

(3) **धर्मदेव**–श्रुतादि धर्म द्वारा जो देव तुल्य हैं, ऐसे 27 मूल गुणों से सुशोभित अणगार धर्मदेव कहलाते हैं।

(4) **देवाधिदेव**–जो देवों से भी अधिक श्रेष्ठ हैं अर्थात् देवों द्वारा पूजित हैं, ऐसे तीर्थंकर देव देवाधिदेव कहलाते हैं।

(5) **भाव देव**–जो वर्तमान में देव हैं अर्थात् देव नामकर्म उदय में आने के कारण जो देवगति भोग रहे हैं ऐसे देव भाव देव कहे जाते हैं।

–शतक 12, उ. 9

FIVE CLASSES OF GODS

There are said to be five classes of gods—

(1) ***Bhavya-dravyadev***—Those humans or animals who are destined to be born as gods immediately after this birth are called *Bhavya-dravyadev* during this birth.

(2) ***Naradev***—Those among men who are worshiped like gods, such as *Chakravarti*, are called *Naradevs*.

(3) ***Dharmadev***—Those ascetics endowed with 27 basic virtues and who are divine in terms of religion, knowledge of scriptures, conduct etc. are called *Dharmadevs*.

(4) ***Devadhidev***—Those who are loftier than all other gods and are objects of their worship, such *Tirthankars* are called *Devadhidevs*.

(5) ***Bhaavadev***—Those who are currently born as gods and enjoying godhood due to fruition of *Naam-karma & Gotra-karma* are called *Bhaavadevs*.

—Shatak-12, lesson-9

celibates (celibacy with its nine shields or *guptis*), for this reason... and so on up to... are said to be *Dharmadevs*.

५. [प्र.] मे केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'देवाहिदेवा, देवाहिदेवा'?

[उ.] गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पन्ननाण-दंसणधरा जाव सव्वदरिसी, से तेणट्ठेणं जाव 'देवाहिदेवा, देवाहिदेवा'।

५. [प्र.] भगवन्! देवाधिदेव 'देवाधिदेव' क्यों कहे जाते हैं?

[उ.] गौतम! जो ये अरिहन्त भगवान हैं, वे उत्पन्न हुए केवलज्ञान-केवलदर्शन के धारक हैं यावत् सर्वदर्शी हैं, इस कारण वे देवों के देव यावत् देवाधिदेव कहे जाते हैं।

5. [Q.] *Bhante !* Why *Devadhidevs* are said to be *Devadhidevs* ?

[Ans.] Gautam ! These *Arihant Bhagavans* are endowed with acquired omniscience (*Keval-jnana*) and omni-perception (*Keval-darshan*)... and so on up to... are all-knowing and all-seeing, for this reason... and so on up to... are said to be *Devadhidevs*.

६. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'भावदेवा, भावदेवा'?

[उ.] गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा देवगइनाम-गोयाइं कम्माइं वेदेंति, से तेणट्ठेणं जाव 'भावदेवा, भावदेवा'।

६. [प्र.] भगवन्! किस कारण से भावदेव को भावदेव कहा जाता है?

[उ.] गौतम! जो ये भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव हैं,जो देवगति नामकर्म एवं गोत्रकर्म का वेदन कर रहे हैं, ऐसे (देवभव का वेदन करने वाले) भाव देव इसी कारण से यावत् 'भावदेव' कहे जाते हैं।

6. [Q.] *Bhante !* Why *Bhaavadevs* are said to be *Bhaavadevs* ?

[Ans.] Gautam ! These Bhavanpati (abode dwelling), Vanavyantar (interstitial), Jyotishk (stellar) and *Vaimaanik* (celestial vehicular) gods who are (currently) experiencing (the fruition of) *Dev-gati* (birth in divine genus) *Naam-karma* (*karma* responsible for the state one is born in) and *Gotra-karma* (*karma* responsible for the higher or lower status of a being), for this reason (experiencing godhood) ... and so on up to ... are said to be *Bhaavadevs*.

विवेचन—भव्य-द्रव्यदेव आदि पाँच प्रकार के देवों का अर्थ और स्वरूप—जो क्रीड़ा स्वभाव वाले होते हैं और जिनकी आराध्य रूप से स्तुति की जाती है, वे देव कहलाते हैं।

(१) **भव्य-द्रव्यदेव**—भव्य-द्रव्यदेव में द्रव्य शब्द अप्राधान्यवाचक है। भूतकाल में देव पर्याय को प्राप्त हुए अथवा भविष्यकाल में देवत्व को प्राप्त करने वाले, किन्तु वर्तमान में देव के गुणों से शून्य होने के कारण वे अप्रधान होते हैं। अर्थात् भूतकाल में देवत्व पर्याय को प्राप्त हुए तथा भविष्य में देवरूप में उत्पन्न होने वाले देव, '**द्रव्यदेव**' कहे जाते हैं। इनमें से जो इस भव के बाद देवत्व को प्राप्त करने वाले हैं। वे ही **भव्य-द्रव्यदेव** कहलाते हैं।

(२) **नरदेव**—मनुष्यों में जो देव तुल्य—आराध्य और क्रीड़ा-कान्ति आदि विशेषताओं से युक्त चक्रवर्ती हैं, वे नरदेव कहलाते हैं।

(३) **धर्मदेव**—जो धर्म प्रधान रूपी श्रुत चारित्रादि से देव तुल्य हैं, वे धर्मदेव कहलाते हैं।

(४) **देवातिदेव अथवा देवाधिदेव**—पारमार्थिक देवत्व के कारण जो पूर्वोक्त सभी देवों को अतिक्रान्त (मात) कर गए हैं, वे देवातिदेव कहलाते हैं, अथवा पारमार्थिक देवत्व होने से जो देवों से अधिक श्रेष्ठ हैं, वे देवाधिदेव कहलाते हैं। तीर्थंकर देव देवाधिदेव कहलाते हैं।

(५) **भावदेव**—देवगति नाम कर्म के उदय से जो देवों में उत्पन्न हैं, जो देव पर्याय से देव हैं, और देवत्व का वेदन करते हैं, वे भावदेव कहलाते हैं। तीर्थंकर देव देवाधिदेव कहलाते हैं।

Elaboration—Five kinds of gods (*Dev*s) – Those who are vivacious by nature and are praised as objects of worship are called *Dev*s or gods. Here five classes are discussed—

(1) *Bhavya-dravyadev*—Here the term *dravya* indicates commonality; in other words it deprives the concept of its divinity. Those who were born in the past or will be born in future in the divine realm but are not divine at present are called *dravyadev*. Only those who are destined to be born as gods after this birth are called *Bhavya-dravyadev*.

(2) *Naradev*—Those among men who are worshiped like gods and are endowed with vivacity, opulence and other god-like attributes, such as *Chakravarti*, are called *Naradev*s.

(3) *Dharmadev*—Those who are divine in terms of religion, knowledge of scriptures, conduct etc. are called *Dharmadev*s.

(4) *Devadhidev*—Due to their attaining the ultimate goal (of liberation), those who have become loftier than all other types of gods are called *Devadhidev*s. In simple terms, those who are better than all other gods are *Devadhidev*s. Thus *Tirthankar*s are called *Devadhidev*s.

(5) *Bhaavadev*—Those who are currently born in divine genus due to fruition of *karma* responsible for the state one is born in and the *karma* responsible for the higher or lower status of a being (*Naam-karma* & *Gotra-karma*) are called *Bhaavadevs*.

पूर्वोक्त पाँच प्रकार के देवों की उत्पत्ति का सकारण निरूपण

BIRTH OF AFORESAID GODS AND ITS CAUSE

७. [प्र.] भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति?

[उ.] गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि-मणु-देवेहिंतो वि उववज्जंति। भेओ जहा वक्कंतीए। सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइय त्ति। नवरंअसंखेज्जावासाउय-अकम्मभूमग-अंतरदीवग-सव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, नो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति।

७. [प्र.] भगवन्! भव्य-द्रव्यदेव किन (गतियों) में से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर उत्पन्न होते हैं, अथवा तिर्यञ्च, मनुष्य या देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं।

[उ.] गौतम! वे नैरयिकों में से (आकर) उत्पन्न होते हैं और तिर्यञ्चों, मनुष्यों या देवों में से भी उत्पन्न होते हैं। (यहाँ प्रज्ञापना सूत्र के छठे) व्युत्क्रान्ति पद (में कहे) के अनुसार भेद (विशेषता) कहना चाहिए। इन सभी की उत्पत्ति के विषय में यावत् अनुत्तरोपपातिक तक कहना चाहिए। मुख्य बात यह है कि असंख्यात वर्ष की आयु वाले अकर्मभूमि तथा अन्तरद्वीप एवं सर्वार्थसिद्ध के जीवों को छोड़कर यावत् अपराजित देवों (भवनपति से लेकर अपराजित नामक चौथे अनुत्तर विमानवासी देवों) तक से आकर उत्पन्न होते हैं, किन्तु सर्वार्थसिद्ध के देवों से आकर उत्पन्न नहीं होते।

7. [Q.] *Bhante !* From where (which genus) do *Bhavya-dravyadevs* come and get born ? Do they come from among infernal beings or animals or humans or divine beings and get born ?

[Ans.] Gautam ! They come from among infernal beings as also from animals, humans and divine beings. Here mention the difference as mentioned in Vyutkranti chapter (the sixth chapter of *Prajnapana Sutra*). About birth of all these, mention... and so on up to... *Anuttaropapatik* (a divine realm). The important variation is that other than the inhabitants of land of inaction (*Akarmabhumi*), middle islands (*antardveep*) and

Sarvarthasiddha Vimaan (a divine realm), all beings... and so on up to... *Aparajit Dev*s come and get reborn as gods.

८-१ [प्र.] नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइय. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरि., नो मणु., देवेहिंतो वि उववज्जंति।

८-१ [प्र.] भगवन्! नरदेव कहाँ से उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिक, तिर्यञ्च, मनुष्य अथवा देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे नैरयिकों से आकर उत्पन्न होते हैं, किन्तु न तो मनुष्यों से आकर उत्पन्न होते हैं और न ही तिर्यञ्चों से, परन्तु देवों से भी आकर उत्पन्न होते हैं।

8-1. [Q.] *Bhante !* From where (which genus) do *Naradev*s come and get born? Do they come from among infernal beings or animals or humans or divine beings and get born ?

[Ans.] Gautam ! They come from among infernal beings and get born but not from animals and humans; they also come from among divine beings and get born.

८-२. [प्र.] जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति?

[उ.] गोयमा! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, नो सक्कर. जाव नो अहेसत्तम-पुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति।

८-२ [प्र.] भगवन्! यदि वे (नरदेव) नैरयिकों से आकर उत्पन्न होते हैं, तो क्या रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिकों से उत्पन्न होते हैं, यावत् अधः सप्तम पृथ्वी के नैरयिकों से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे रत्नप्रभा-पृथ्वी के नैरयिकों में से आकर उत्पन्न होते हैं, किन्तु शर्कराप्रभा-पृथ्वी के नैरयिकों से यावत् अधःसप्तम पृथ्वी के नैरयिकों से आकर उत्पन्न नहीं होते।

8-2. [Q.] *Bhante !* If they come from among infernal beings, do they come from among infernal beings of *Ratnaprabha Prithvi*... and so on up to... *Adhah-saptam Prithvi* and get born ?

[Ans.] Gautam! They come from among infernal beings of *Ratnaprabha Prithvi* and get born but not those from *Sharkaraprabha Prithvi*... and so on up to... *Adhah-saptam Prithvi.*

८-३. [प्र.] जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति?

[उ.] गोयमा! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतर०, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा वक्कंतीभेएणं जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति।

८-३ [प्र.] भगवन्! यदि वे देवों से आकर उत्पन्न होते हैं, तो क्या भवनवासी देवों से उत्पन्न होते हैं? अथवा वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क या वैमानिक देवों से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! भवनवासी देवों से भी उत्पन्न होते हैं अथवा बाणव्यन्तर से भी (उत्पन्न होते हैं।) इस प्रकार सभी देवों से उत्पत्ति उपपात के विषय में यावत् सर्वार्थसिद्ध तक, (प्रज्ञापनासूत्र के छठे) व्युत्क्रान्ति-पद में कथित भेद (विशेषता) के अनुसार कहना चाहिए।

8-3. [Q.] *Bhante!* If they come from among divine beings (*Devs*), do they come from among the abode-dwelling divine beings (*Bhavan-vaasi Devs*) and get born? Or they come from interstitial (*Vanavyantar*), stellar (*Jyotishk*) or celestial-vehicular (*Vaimaanik*) gods (*Devs*) and get born?

[Ans.] Gautam! From abode-dwelling divine beings, interstitial (*Vanavyantar*), and in the same way mention about all divine beings... and so on up to... *Sarvarthasiddha* (divine realm) coming from and getting born according to the variation as mentioned in Vyutkranti chapter (the sixth chapter of *Prajnapana Sutra*).

९. [प्र.] धम्मदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो?

[उ.] एवं वक्कंतोभेएणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। नवरं तमा-अहेसत्तमाए नो उववाओ तेउ-वाउ-असंखेज्जवासाउय-अकम्मभूमग-अंतरदीवगवज्जेसु।

९. [प्र.] भगवन्! धर्मदेव कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों से उत्पन्न होते हैं? (इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न।)

[उ.] गौतम! व्युत्क्रान्ति-पद में कथित भेद के अनुसार यह सभी उपपात यावत्-सर्वार्थसिद्ध तक कहना चाहिए। परन्तु इतना विशेष है कि (ये धर्मदेव) तमःप्रभा, अधःसप्तम पृथ्वी से तथा

तेउकाय, वायुकाय एवं असंख्यात वर्ष की आयु वाले अकर्मभूमि और अन्तरद्वीप के जीवों (मनुष्यों व तिर्यंचों) को छोड़कर उत्पन्न होते हैं।

9. [Q.] *Bhante !* From where (which genus) do *Dharmadevs* come and get born? Do they come from among infernal beings etc. (as aforesaid) and get born?

[Ans.] Gautam ! They also follow the aforesaid pattern... and so on up to... *Sarvarthasiddha* (divine realm) according to the variation as mentioned in Vyutkranti chapter (the sixth chapter of *Prajnapana Sutra*). However, there is a difference that they never come from *Tamah-prabha, Adhah-saptam Prithvi*, fire-bodied beings, air-bodied beings, and beings with innumerable years life-span from land of inaction and middle islands, and get born.

१०-१. [प्र.] देवाहिंदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति० ? पुच्छा?

[उ.] गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरि., नो मणु., देवेहिंतो वि उववज्जंति।

१०-१. [प्र.] भगवन्! देवाधिदेव कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों से उत्पन्न होते हैं? इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न।

[उ.] गौतम! वे नैरयिकों से आकर उत्पन्न होते हैं, किन्तु तिर्यञ्चों से अथवा मनुष्यों से आकर उत्पन्न नहीं होते। लेकिन देवों से भी आकर उत्पन्न होते हैं।

10-1. [Q.] *Bhante !* From where (which genus) do *Devadhidevs* come and get born? Do they come from among infernal beings etc. (as aforesaid) and get born ?

[Ans.] Gautam ! They come from among infernal beings and get born but not from animals and humans; they also come from among divine beings and get born.

१०-२. [प्र.] जइ नेरइएहिंतो. ?

[उ.] एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ।

१०-२. [प्र.] (भगवन्!) यदि नैरयिकों से आकर उत्पन्न होते हैं, तो क्या रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिकों यावत् अध:सप्तम पृथ्वी के नैरयिकों में से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे प्रथम तीन नरक पृथ्वियों में से आकर उत्पन्न होते हैं। शेष चार (नरकपृथ्वियों) से (उत्पत्ति का) निषेध करना चाहिए।

10-2. [Q.] *Bhante !* If they come from among infernal beings, do they come from among infernal beings of *Ratnaprabha Prithvi*... and so on up to... *Adhah-saptam Prithvi* and get born ?

[Ans.] Gautam ! They come from among infernal beings of first three *Narak Prithvi*s (hells) and never from remaining four hells.

१०-३. [प्र.] जइ देवेहिंतो. ?

[उ.] वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। सेसा खोडेयव्वा।

१०-३. [प्र.] भगवन्! यदि वे देवों से आकर उत्पन्न होते हैं, तो क्या भवनपति आदि देवों से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे, समस्त वैमानिक देवों से यावत् सर्वार्थसिद्ध से आकर उत्पन्न होते हैं। शेष सभी देवों का निषेध (करना चाहिए।)

10-3. [Q.] *Bhante !* If they come from among divine beings (*Devs*), do they come from among the abode-dwelling and other divine beings and get born ?

[Ans.] Gautam ! They come from all celestial vehicular gods (*Vaimanik Devs*)... and so on up to...*Sarvarthasiddha* (divine realm) and get born. Negate all other divine beings.

११. [प्र.] भावदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति?

[उ.] एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो।

११. [प्र.] भगवन्! भावदेव किस गति से आकर उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार (प्रज्ञापनासूत्र के छठे) व्युत्क्रान्ति पद में भवनवासियों के उपपात (उत्पत्ति) का कथन किया है, उसी प्रकार यहाँ भी करना चाहिए।

11. [Q.] *Bhante !* From which genus do *Bhaavadevs* come and get born ?

[Ans.] Gautam ! What has been mentioned in Vyutkranti chapter (the sixth chapter of *Prajnapana Sutra*) regarding birth (*upapaat*) of abode-dwelling gods (*Bhavan-vaasi Devs*) should be repeated here.

विवेचन—प्रस्तुत पाँच सूत्रों ७ से ११ तक में पूर्वोक्त पाँच प्रकार के देवों की उत्पत्ति के स्थानों का वर्णन किया गया है।

भव्य द्रव्यदेवों की उत्पत्ति के बारे में कहा गया है कि ये देव असंख्यात वर्ष की आयु वाले, अकर्मभूमिज, अन्तरद्वीपज एवं सर्वार्थसिद्ध के जीवों को छोड़कर अन्य देवों (भवनपति से लेकर अपराजित नामक चतुर्थ अनुत्तर विमान तक) से आकर भव्य-द्रव्यदेवों में उत्पन्न होते हैं। असंख्यात वर्ष की आयु वाले, अकर्मभूमिज एवं अन्तरद्वीपज जीव तो सीधे भावदेवों में उत्पन्न होते हैं जिस कारण वे भव्य-द्रव्यदेवों (मनुष्य, तिर्यञ्चों) में उत्पन्न नहीं होते जबकि सर्वार्थसिद्ध के देव तो भव्य-द्रव्यसिद्ध होते हैं, अर्थात् वे तो मनुष्य भव प्राप्त करके सिद्ध हो जाते हैं।

नरदेवों की उत्पत्ति के बारे में कहा गया है कि वे मनुष्यों और तिर्यंचों को छोड़कर नैरयिकों एवं देवों से आकर उत्पन्न होते हैं।

कोई **धर्मदेव** तभी बन सकता है, जब वे चारित्र (सर्वविरति) ग्रहण करें। छठी नरक पृथ्वी (तम:प्रभा) से निकले हुए जीव मनुष्य भव प्राप्त तो कर सकते हैं, परन्तु चारित्र ग्रहण नहीं कर सकते तथा सप्तम नरक पृथ्वी (तमस्तम:प्रभा), तेउकाय, वायुकाय, असंख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमि, अकर्मभूमि और अन्तरद्वीप मनुष्यों और तिर्यञ्चों से निकले हुए जीव तो मनुष्य भव ही प्राप्त नहीं करते, तब तो धर्मदेव (चारित्र युक्त साधक) बनने की बात दूर रही। इसलिए इनसे धर्मदेवों की उत्पत्ति का निषेध किया गया है। **देवाधिदेवों** की उत्पत्ति के बारे में कहा गया कि प्रथम तीन नरक पृथ्वियों से निकले हुए जीव ही देवाधिदेव (तीर्थंकर) पद प्राप्त कर सकते हैं, आगे की चार नरक पृथ्वियों से नहीं। इसके अलावा सभी वैमानिक देवों से निकले हुए जीव भी देवाधिदेव पद प्राप्त कर सकते हैं।

प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद में जैसे भवनपति देवों की उत्पत्ति के बारे में कथन किया गया है वैसा ही कथन यहाँ भी **भावदेवों** की उत्पत्ति के बारे में किया गया है। प्रज्ञापना सूत्र में भवनपति सम्बन्धी उपपात का अतिदेश किया गया है। इसका कारण यह है कि बहुत-से स्थानों से आकर जीव भवनवासी देव के रूप में उत्पन्न होते हैं जिनमें से असंज्ञी जीव भी आकर उत्पन्न होते हैं।

Elaboration—In aforesaid five statements (7-11) the birth of aforesaid five kinds of gods has been explained.

Jivas (souls/living beings) come from all genuses except those from the inhabitants of land of inaction (*Akarmabhumi*) and middle islands (*antardveep*) having life-span of innumerable years as well as from *Sarvarthasiddha Vimaan,* and get reborn as *Bhavya-dravyadevs*. In other words they come from among all living beings from infernal beings ... and so on up to ... divine beings of *Aparajit Vimaan,* the fourth *Anuttar Vimaan.* The reason for this is that the inhabitants of land of inaction (*Akarmabhumi*) and middle islands (*antardveep*) having life-span of

innumerable years get directly reborn as *Bhaavadevs* and the gods of *Sarvarthasiddha Vimaan* are, in fact, *Bhavya-dravya Siddhas*, and as such they just get reborn as humans and get liberated.

Jivas (souls/living beings) come from among infernal beings and divine beings and get reborn as *Naradevs*. They never come from animals and humans.

The status of *Dharmadevs* can be gained only when someone renounces the world and gets initiated. Souls from the sixth hell (*Tamah-prabha*) can be reborn as human beings but cannot get initiated. Beings from among infernal beings of seventh hell (*Tamastamah-prabha*), fire-bodied beings, air-bodied beings, and beings with innumerable years life-span from land of inaction and middle islands do not get reborn as humans; as such, there is no question of there being reborn as *Dharmadevs*. For these reasons there is negation of them being reborn as *Dharmadevs*.

Jivas (souls/living beings) come from among infernal beings of first three *Narak Prithvis* (hells), and not the other hells, to get reborn as *Devadhidevs*. They also come from *Vaimanik Devs* to get reborn as *Devadhidevs*.

The statement regarding birth (*upapaat*) of *Bhaavadevs* follows that mentioned in Vyutkranti chapter (the sixth chapter of *Prajnapana Sutra*) about abode-dwelling gods (*Bhavan-vaasi Devs*). In *Prajnapana Sutra* there is a mention about superabundance of births (*upapaat*) of abode-dwelling gods; this is because *Jivas* (souls/living beings) from numerous places come to be reborn as abode-dwelling gods, they include even non-sentient beings.

पंचविध देवों की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति का निरूपण

MINIMUM AND MAXIMUM LIFE-SPANS OF FIVE KINDS OF GODS

१२. [प्र.] भवियदव्वदेवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं।

१२. [प्र.] भगवन्! भव्य-द्रव्यदेवों की स्थिति कितने काल की कही गई है?

[उ.] गौतम! (उनकी स्थिति) जघन्य से अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की है।

12. [Q.] *Bhante !* What is said to be the life-span (*sthiti*) of *Bhavya-dravyadevs* ?

[Ans.] Gautam ! (Their life-span) is a minimum of one Antarmuhurt (less than a Muhurt or 48 minutes) and a maximum of three Palyopam (a metaphoric unit of time).

१३. [प्र.] नरदेवाणं भंते ! पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं सत्त वाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं।

१३. [प्र.] भगवन्! नरदेवों के विषय में पूर्ववत् प्रश्न। (उनकी स्थिति कितने काल की कही गई है?)

[उ.] गौतम! (उनकी स्थिति) जघन्य से सात सौ वर्ष और उत्कृष्ट से चौरासी लाख पूर्व की है।

13. [Q.] *Bhante !* The same question about *Naradevs* (What is said to be the life-span of *Naradevs*) ?

[Ans.] Gautam ! (Their life-span) is a minimum of seven hundred years and a maximum of 8.4 million Purvas (a very large unit of time).

१४. [प्र.] धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी।

१४. [प्र.] भगवन्! धर्मदेवों के विषय में पूर्ववत् प्रश्न। (उनकी स्थिति कितने काल की है?)

[उ.] गौतम! (उनकी स्थिति) जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट से देशोनपूर्व कोटि की है।

14. [Q.] *Bhante !* The same question about *Dharmadevs* (What is said to be the life-span of *Dharmadevs*) ?

[Ans.] Gautam ! (Their life-span) is a minimum of one Antarmuhurt (less than a Muhurt or 48 minutes) and a maximum of Deshon-purva Koti (a very large unit of time).

१५. [प्र.] देवाहिदेवाणं भन्ते ! पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं।

१५. [प्र.] भगवन्! देवाधिदेवों के विषय में पूर्ववत् प्रश्न। (उनकी स्थिति कितने काल की है?)

[उ.] गौतम! (उनकी स्थिति) जघन्य से बहत्तर वर्ष और उत्कृष्ट से चौरासी लाख पूर्व की है।

15. [Q.] *Bhante !* The same question about *Devadhidevs* (What is said to be the life-span of *Devadhidevs*) ?

[Ans.] Gautam ! (Their life-span) is a minimum of seventy two years and a maximum of 8.4 million Purvas.

१६. [प्र.] भावदेवाणं भन्ते ! पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं।

१६. [प्र.] भगवन्! भावदेवों के विषय में पूर्ववत् प्रश्न। (उनकी स्थिति कितने काल की है?)

[उ.] गौतम! (भावदेवों की) जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम की है।

16. [Q.] *Bhante !* The same question about *Bhaavadevs* (What is said to be the life-span of *Bhaavadevs*) ?

[Ans.] Gautam ! (Their life-span) is a minimum of ten thousand years and a maximum of thirty three Sagaropam (a metaphoric unit of time).

विवेचन—प्रस्तुत १२ से १६ तक के सूत्रों में पूर्वोक्त पाँच प्रकार के देवों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति का निरूपण किया गया है।

भव्य-द्रव्यदेव की स्थिति—अन्तर्मुहूर्त्त आयुष्य वाले पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च, देवों में उत्पन्न होते हैं, इसलिए भव्यद्रव्य देव की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की बताई गई है। जबकि तीन पल्योपम की स्थिति वाले देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुष्य एवं तिर्यञ्च भी देवों में उत्पन्न होते हैं, इसी कारण भव्य-द्रव्यदेव की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

नरदेव (चक्रवर्ती) की स्थिति—नरदेव (चक्रवर्ती) की जघन्य स्थिति ७०० वर्ष की होती है, जैसा कि ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की थी तथा उत्कृष्ट स्थिति ८४ लाख पूर्व की होती है, जैसे भरत-चक्रवर्ती की उत्कृष्ट आयु ८४ लाख वर्ष की थी।

धर्मदेव की स्थिति—जो मनुष्य अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहते ही चारित्र (महाव्रत) स्वीकार करता है, उस अपेक्षा से धर्मदेव (साधु-साध्वी) की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है तथा कोई पूर्व

कोटि वर्ष की आयु वाला मनुष्य आठ वर्ष की आयु में प्रव्रज्या योग्य होने पर पूर्व कोटि में आठ वर्ष कम की आयु में चारित्र ग्रहण करता है तो उस अपेक्षा से धर्मदेव की उत्कृष्ट स्थिति देशोन पूर्व कोटि वर्ष की कही गई है। अतिमुक्तक मुनि अथवा वज्र स्वामी, जो क्रमश: ६ वर्ष एवं ३ वर्ष की आयु में प्रव्रजित हो गए थे, वह कादाचित्क है, अत: उनकी यहाँ विवक्षा नहीं है।

देवाधिदेव की स्थिति—चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जघन्य आयु ७२ वर्ष की थी, इस अपेक्षा से देवाधिदेव की जघन्य स्थिति ७२ वर्ष की कही है, तथा भगवान ऋषभदेव की उत्कृष्ट आयु ८४ लाख पूर्व की थी, इस अपेक्षा से देवाधिदेव की उत्कृष्ट स्थिति ८४ लाख पूर्व की कही है।

भावदेव की स्थिति—व्यन्तरदेवों की आयु १० हजार वर्ष की है, इसलिए भाव देव की जघन्य स्थिति १० हजार वर्ष की ही है। सर्वार्थसिद्ध देवों की स्थिति ३३ सागरोपम की है। इसलिए भाव देव की उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपम की है।

Elaboration—The aforesaid five statements (12-16) inform about minimum and maximum life-spans of aforesaid five kinds of gods.

Life-span of *Bhavya-dravyadevs* —As five-sensed animals with a life-span of one Antar-muhurt get reborn as gods the minimum life-span of *Bhavya-dravyadevs* is said to be one Antar-muhurt. The humans and animals of Devakuru and Uttarakuru having life-span of three Palyopam also get reborn as gods; therefore the maximum life-span of *Bhavya-dravyadevs* is said to be three Palyopam.

Life-span of *Naradevs*—Their minimum life-span is seven hundred years as that of Brahmadatta *Chakravarti* and maximum life-span is 8.4 million Purvas as that of Bharat *Chakravarti.*

Life-span of *Dharmadevs*—A person can get initiated even when only one Antarmuhurt of his life is left, as such, in that context the minimum life-span of *Dharmadevs* is said to be one Antarmuhurt. When someone with a life-span of Purva Koti years gets initiated when he is eight years old (minimum age of initiation) and remains ascetic for 8 years less Purva Koti years, in that context the maximum life-span of *Dharmadevs* is said to be Deshon-purva Koti years. Ascetics Atimuktak and Vajra Swami, who got initiated when they were 6 and 3 years old respectively, are exceptions, and thus they are not considered here.

Life-span of *Devadhidevs*—The minimum life-span of *Devadhidevs* is seventy two years as that of the last *Tirthankar* Bhagavan Mahavir and

the maximum life span is 8.4 million Purvas as that of the first *Tirthankar* Bhagavan Rishabh Dev.

Life-span of *Bhaavadevs*—Their minimum life-span is ten thousand years as that of *Vyantar Devs* and the maximum is thirty three Sagaropam as that of *Sarvarthasiddha* gods.

पंचविध देवों की वैक्रिय शक्ति का निरूपण

THE *VAIKRIYA SHAKTI* OF FIVE KINDS OF GODS

१७. [प्र.] भवियदव्वदेवा णं भंते! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए?

[प्र.] गोयमा! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वत्तए। एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा। ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहिच्छियाइं करेंति।

१७. [प्र.] भगवन्! क्या भव्यदेव एक रूप की विकुर्वणा करने में अथवा अनेक रूपों की विकुर्वणा करने में समर्थ है?

[उ.] (हाँ) गौतम! वह एक रूप की विकुर्वणा करने में और अनेक रूपों की विकुर्वणा करने में समर्थ है। एक रूप की विकुर्वणा करता हुआ वह, एक एकेन्द्रिय रूप अथवा यावत् एक पंचेन्द्रिय रूप की विकुर्वणा करता है। अनेक रूपों की विकुर्वणा करता हुआ अनेक एकेन्द्रिय रूपों अथवा यावत् अनेक पंचेन्द्रिय रूपों की विकुर्वणा करता है। ये रूप संख्येय अथवा असंख्येय, सम्बद्ध अथवा असम्बद्ध या समान अथवा असमान विकुर्वित किये जाते हैं। विकुर्वणा करने के बाद वे अपना यथेष्ट कार्य करते हैं।

17. [Q.] *Bhante!* Is a *Bhavya-dravyadev* capable of doing transmutation of one form or many forms?

[Ans.] (Yes,) Gautam! He is capable of doing transmutation (*vikriya*) of one form or many forms. While doing transmutation of one form he creates one one-sensed form... and so on up to... or one five-sensed form. While doing transmutation of many forms he creates many one-sensed forms... and so on up to... or many five-sensed forms. These forms can be countable or uncountable, associated or non-associated, similar or dissimilar. After transmutation these forms perform their assigned duties.

१८. एवं नरदेवा वि, धम्मदेवा वि।

[१८] इसी प्रकार नरदेव और धर्मदेव के द्वारा (विकुर्वणा के विषय में भी समझना चाहिए।)

18. The same is true (about transmutation) for *Naradevs* and *Dharmadevs* as well.

१९. [प्र.] देवाहिदेवा णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा, विउव्विंति वा, विउव्विस्संति वा।

१९. [प्र.] देवाधिदेव के विषय में पूर्ववत् प्रश्न—(भगवन्! क्या वे एक रूप अथवा अनेक रूपों की विकुर्वणा करने में समर्थ हैं?)

[उ.] (हाँ) गौतम! वे एक रूप की विकुर्वणा करने में और अनेक रूपों की विकुर्वणा करने में समर्थ हैं। (परन्तु शक्ति होते हुए भी उत्सुकता के अभाव में) उन्होंने क्रियान्विति रूप में कभी विकुर्वणा नहीं की, करते भी नहीं और करेंगे भी नहीं।

19. [Q.] *Bhante!* Same question about *Devadhidev* (is he capable of doing transmutation of one form or many forms)?

[Ans.] Gautam! He is capable of doing transmutation (*vikriya*) of one form or many forms. However, (though having the ability, in absence of any curiosity) practically he never did, never does and will never do any transmutation.

[२०] भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा।

[२०] जिस तरह भव्य-द्रव्यदेव (के विकुर्वणा-सामर्थ्य) का कथन किया है, उसी तरह भावदेव (के विकुर्वणा-सामर्थ्य) का कथन करना चाहिए।

20. What has been stated about (ability of transmutation) *Bhavya-dravyadev* should also be repeated for *Bhaavadev*.

पंचविध देवों की उद्वर्त्तना-प्ररूपणा

REBIRTH OF FIVE KINDS OF GODS

२१-१. [प्र.] भवियदव्वदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति, जाव देवेसु उववज्जंति?

[उ.] गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि., नो मणु., देवेसु उववज्जंति।

२१-१. [प्र.] भगवन्! भव्य-द्रव्यदेव मर कर तुरन्त (अन्तर रहित) कहाँ जाते हैं, कहाँ उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! (वे मर कर तुरन्त) न तो नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं, न तिर्यञ्चों में और न ही मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं, (वे तो केवल) देवों में उत्पन्न होते हैं।

21-1. [Q.] *Bhante !* Immediately after their death where do *Bhavya-dravyadevs* go and get reborn ? Do they get born among infernal beings... and so on up to... divine beings ?

[Ans.] Gautam ! (Immediately after their death) *Bhavya-dravyadevs* do not get reborn among infernal beings or animals or humans; they only get reborn among divine beings.

२१-२. [प्र.] जइ देवेसु उववज्जंति. ?

[उ.] सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति।

२१-२. [प्र.] (भगवन्!) यदि वे देवों में उत्पन्न होते हैं (तो भवनपति आदि कौन-कौन देवों में उत्पन्न होते हैं?)

[उ.] (गौतम!) वे सभी देवों में उत्पन्न होते हैं, (अर्थात्—असुरकुमार आदि से लेकर) यावत्—सर्वार्थसिद्ध तक।

21-2. [Q.] (*Bhante !*) In which class among divine beings (abode-dwelling etc.) ?

[Ans.] (Gautam !) They get reborn among all classes of divine beings (including *Asur-kumars*)... and so on up to... *Sarvarthasiddha.*

२२-१. [प्र.] नरदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि., नो मणु., नो देवेसु उववज्जंति।

२२-१. [प्र.] भगवन्! नरदेव मर कर तुरन्त कहाँ उत्पन्न होते हैं? पूर्ववत् प्रश्न।

[उ.] गौतम! वे नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं, न तो वे तिर्यञ्चों में उत्पन्न होते हैं, न मनुष्यों में और न ही देवों में उत्पन्न होते हैं।

22-1. [Q.] *Bhante !* Immediately after their death where do *Naradevs* go and get reborn ? Question as aforesaid.

[Ans.] Gautam ! (Immediately after their death) *Naradevs* get reborn among infernal beings and not among animals or humans or divine beings.

२२-२. [प्र.] जइ नेरइएसु उववज्जंति. ?

[उ.] सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति।

२२-२. [प्र.] (भगवन्!) यदि नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं (तो वे पहली से लेकर सातवीं नरक पृथ्वी तक में से किस-किस में उत्पन्न होते हैं?)

[उ.] (गौतम!) वे सातों ही (नरक-) पृथ्वियों में उत्पन्न होते हैं।

22-2. [Q.] (*Bhante !*) In which hell (first to seventh) ?

[Ans.] (Gautam !) They get reborn in all seven *Prithvis* (hells).

२३-१. [प्र.] धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि., नो मणु., देवेसु उववज्जंति।

२३-१. [प्र.] भगवन्! धर्मदेव आयुष्य पूर्ण कर तुरन्त कहाँ उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! वे न तो नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं, न तिर्यञ्चों में और न ही मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं, (वे तो केवल) देवों में उत्पन्न होते हैं।

23-1. [Q.] *Bhante !* Immediately after their death where do *Dharmadevs* go and get reborn ? Question as aforesaid.

[Ans.] Gautam ! (Immediately after their death) *Dharmadevs* do not get reborn among infernal beings or animals or humans; they only get reborn among divine beings.

२३-२. [प्र.] जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतर., नो जोइसिय., वेमाणियदेवेसु उववज्जंति-सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइएसु जाव उववज्जंति। अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति।

२३-२. [प्र.] (भगवन्!) यदि वे देवों में उत्पन्न होते हैं तो क्या भवनवासी देवों में उत्पन्न होते हैं, अथवा वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क अथवा वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं? पूर्ववत् प्रश्न।

[उ.] गौतम! वे न तो भवनवासियों में उत्पन्न होते हैं, न वाणव्यन्तर देवों में और न ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होते हैं, पर वैमानिक देवों में यानि सभी वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं।

(अर्थात्–प्रथम सौधर्म कल्प से लेकर) यावत् सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक देवों में यावत् उत्पन्न होते हैं। उनमें से कोई-कोई (धर्मदेव) सिद्ध होते हैं यावत् (सर्व दुःखों का) अन्त कर देते हैं।

23-2. [Q.] (*Bhante !*) In which class among divine beings (abode-dwelling etc.) ? Question as aforesaid.

[Ans.] (Gautam !) They do not get reborn among abode dwelling, or interstitial or stellar gods; but only among celestial vehicular gods, all classes of celestial vehicular gods (starting from Saudharm kalp),... and so on up to... Sarvarthasiddha-Anuttaropapatik Devs... and so on up to... they get reborn. Some of them (*Dharmadevs*) get perfected and end all miseries.

२४. [प्र.] देवाहिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! सिज्झंति जाव अंतं करेंति।

२४. [प्र.] (भगवन्!) देवाधिदेव आयुष्य पूर्ण कर तुरन्त (अन्तर रहित) कहाँ जाते हैं, कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

[उ.] गौतम! वे सिद्ध होते हैं, यावत् (सर्व दुःखों) का अन्त करते हैं।

24. [Q.] *Bhante !* Immediately after their death where do *Devadhidevs* go and get reborn ? Question as aforesaid.

[Ans.] Gautam ! They get perfected (become Siddha) and end all miseries.

२५. [प्र.] भावदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता, पुच्छा।

[उ.] जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा।

२५. [प्र.] भगवन्! भावदेव, आयुष्य पूर्ण कर तत्काल कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

[उ.] गौतम! (प्रज्ञापना सूत्र के छठे) व्युत्क्रान्ति पद में जिस प्रकार असुरकुमारों की उदवर्त्तना (बताई गई) है, उसी प्रकार यहाँ भावदेवों की भी उदवर्त्तना कहना चाहिए।

25. [Q.] *Bhante !* Immediately after their death where do *Bhaavadevs* go and get reborn ? Question as aforesaid.

[Ans.] Gautam ! What has been stated in Vyutkranti chapter (the sixth chapter of *Prajnapana Sutra*) about rebirth (*udvartana*) of *Asur-kumar Devs* should be repeated for the rebirth of *Bhaavadevs*.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्रों २१ से २५ तक में पूर्वोक्त पंचविध देवों की उद्वर्त्तना (आयुष्य पूर्ण होने) के तत्काल बाद उनकी गति-उत्पत्ति का निरूपण किया गया है, जिसके अनुसार भव्य-द्रव्यदेवों के लिए कहा गया है कि भव्य-द्रव्यदेवों में भावि देव भव का स्वभाव होने से वे नारक आदि तीन भवों (नरक, तिर्यंच, मनुष्य) में उत्पन्न नहीं होते हैं।

इसी प्रकार नरदेवों की उद्वर्त्तनानन्तर उत्पत्ति के बारे में कहा गया है कि यदि कामभोगों में आसक्त नरदेव (चक्रवर्ती) उनका त्याग नहीं करते तो नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं, इसी कारण शेष तीन भवों (तिर्यंच, मनुष्य और देव) में उनकी उत्पत्ति का निषेध किया गया है। यद्यपि कई चक्रवर्ती देवों में या सिद्धों में तभी उत्पन्न होते हैं, जब नरदेव रूप को त्याग कर धर्म देवत्व को प्राप्त कर लेते हैं, अर्थात् चक्रवर्तित्व को छोड़कर चारित्र अंगीकार करके धर्मदेव (साधु) बन जाते हैं।

Elaboration—In the aforesaid five statements (21-25) information about rebirth immediately after death of said five kinds of gods. According to the said information as *Bhavya-dravyadevs* are destined to be born as divine beings they do not get reborn as any other beings including infernal, animal and human.

In the same way about rebirth of *Naradevs* it is mentioned that if they do not renounce mundane indulgences they get reborn as infernal beings and as such their rebirth in other three genuses (animal, human and divine) is negated. However, some of them get reborn as divine beings or get liberated if they renounce their mundane status of *Naradev* (*Chakravarti*) and get initiated to become ascetics and gain the status of *Dharmadev*.

पंचविध देवों की स्व-स्वरूप में संस्थिति प्ररूपणा

THE LIFE-SPAN OF FIVE KINDS OF GODS IN THEIR CURRENT STATUS

२६. [प्र.] भवियदव्वदेवे णं भंते ! 'भवियदव्वदेवे' त्ति कालओ केवचिरं होइ?

[उ.] गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स। नवरं धम्मदेवस्स जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी।

२६. [प्र.] भगवन्! भव्य-द्रव्यदेव, भव्य-द्रव्यदेव रूप से कितने काल तक रहता है?

[उ.] गौतम! (भव्य-द्रव्यदेव, भव्य-द्रव्यदेव रूप से) जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम तक रहता है। इसी प्रकार जिसकी जो (भव-) स्थिति कही है, उसी प्रकार उसकी संस्थिति भी (पूर्वोक्त नरदेवादि) यावत् भावदेव तक कहनी चाहिए। मुख्य बात यह है कि धर्मदेव की (संस्थिति) जघन्य से एक समय और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि वर्ष तक की होती है।

26. [Q.] *Bhante!* For what period does a *Bhavya-dravyadev* exist as *Bhavya-dravyadev*?

[Ans.] Gautam ! He (*Bhavya-dravyadev*) exists (as *Bhavya-dravyadev*) for a minimum period of one Antarmuhurt and maximum of three Palyopam. In the same way repeat the (aforesaid) life-span of each kind of god as his period of existence... and so on up to... *Bhaavadev*. The only variation is that the period of existence of *Dharmadev* is a minimum of one Samay and maximum of Deshon Purva Koti.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र में प्रभु गौतम स्वामी द्वारा पूछे गए प्रश्न का आशय यह है कि भव्य-द्रव्यदेव, भव्य-द्रव्यदेव-पर्याय को नहीं छोड़ता हुआ, कितने काल तक रहता है? अर्थात् उसका संस्थिति (संचिट्ठणा) काल कितना है?

इस प्रश्न का उत्तर बताते हुए श्रमण भगवान महावीर कहते हैं कि जिसकी जो भव स्थिति पहले कही गई है, वही उनकी संस्थिति (संचिट्ठणा) अर्थात्—उस पर्याय का अनुबन्ध है।

धर्मदेव का जघन्य संचिट्ठणाकाल—कोई धर्मदेव, अशुभ भाव को प्राप्त करके, उससे निवृत्त होकर शुभ भाव को प्राप्त होने के एक समय बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इसलिए धर्मदेव का जघन्य संचिट्ठणा (संस्थिति) काल परिणामों की अपेक्षा से एक समय का कहा गया है।

Elaboration—In this statement Gautam Swami's question is about the period for which a *Bhavya-dravyadev* continues to live prior to leaving his status of *Bhavya-dravyadev*. In other words what is the period of his existence? In answer Bhagavan says that life-span of each kind of god is his period of existence or the bondage of life span of that status.

Minimum period of existence of *Dharmadev* — There are *Dharmadevs* who have ignoble feelings and later they get rid of the same but just after lapse of one Samay they die. In that context the minimum period of existence in terms of transformed feelings is said to be one Samay.

पंचविध देवों के अन्तरकाल की प्ररूपणा

THE INTERVENING-PERIOD FOR FIVE KINDS OF GODS

२७. [प्र.] भवियदव्वदेवस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालंवणस्सइकालो।

२७. [प्र.] भगवन्! भव्य-द्रव्यदेव का अन्तर कितने काल का होता है?

[उ.] गौतम! (भव्य-द्रव्यदेव का अन्तर) जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट से अनन्तकाल-वनस्पतिकाल पर्यन्त होता है।

27. [Q.] *Bhante !* What is the *Antar-kaal* or intervening-period (between loosing and regaining birth in the same status) for *Bhavya-dravyadevs* ?

[Ans.] Gautam ! That (intervening-period for *Bhavya-dravyadevs*) is a minimum of one Antarmuhurt more ten thousand years and maximum of infinite time (*Vanaspati-kaal*).

२८. [प्र.] नरदेवाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं।

२८. [प्र.] भगवन्! नरदेवों का कितने काल का अन्तर होता है?

[उ.] गौतम! (नरदेव का अन्तर) जघन्य से सागरोपम से कुछ अधिक और उत्कृष्ट से अनन्तकाल, देशोन अपार्द्ध पुद्‌गल-परावर्त्तन-काल तक होता है।

28. [Q.] *Bhante !* Same question about *Naradevs* (What is the *Antar-kaal* or intervening-period for *Naradevs* ?

[Ans.] Gautam ! That (intervening-period for *Naradevs*) is a minimum of little more than one Sagaropam and maximum of Deshon Ardha-pudgal paravartya kaal (extremely long unit of time).

२९. [प्र.] धम्मदेवस्स णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं।

२९. [प्र.] भगवन्! धर्मदेव का अन्तर कितने काल तक का होता है?

[उ.] गौतम! (धर्मदेव का अन्तर) जघन्य से पल्योपम-पृथक्त्व (दो से नौ पल्योपम) और उत्कृष्ट से अनन्तकाल यावत् देशोन अपार्द्ध पुद्‌गल परावर्त्तनकाल तक होता है।

29. [Q.] *Bhante !* Same question about *Dharmadevs* (What is the *Antar-kaal* or intervening-period for *Dharmadevs* ?

[Ans.] Gautam ! That (intervening-period for *Dharmadevs*) is a minimum of Palyopam-prithaktva (two to nine Palyopam) and maximum of Deshon Ardha-pudgal paravartya kaal (extremely long unit of time).

३०. [प्र.] देवाहिदेवाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नत्थि अंतरं।

३०. [प्र.] भगवन्! देवाधिदेवों का अन्तर कितने काल का होता है?

[उ.] गौतम! देवाधिदेवों का अन्तर नहीं होता।

30. **[Q.]** *Bhante !* Same question about *Devadhidevs* (What is the *Antar-kaal* or intervening-period for *Devadhidevs* ?

[Ans.] Gautam ! There is no intervening-period for *Devadhidevs*.

३१. [प्र.] भावदेवस्स णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहूत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो।

३१. [प्र.] भगवन्! भावदेव का अन्तर कितने काल का होता है?

[उ.] गौतम! (भावदेव का अन्तर) जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट अनन्तकाल—वनस्पतिकाल पर्यन्त अन्तर होता है।

31. **[Q.]** *Bhante !* Same question about *Bhaavadevs* (What is the *Antar-kaal* or intervening-period for *Bhaavadevs* ?

[Ans.] Gautam ! That (intervening-period for *Bhaavadevs*) is a minimum of one Antarmuhurt and maximum of infinite time (*Vanaspati-kaal*).

विवेचन—यहाँ पंचविध देवों के अन्तर से आशय यह है कि एक देव को अपना एक भव पूर्ण करके पुनः उसी भव में उत्पन्न होने में जितने काल का जघन्य या उत्कृष्ट अन्तर (व्यवधान) होता है, वह अन्तर कहलाता है।

भव्य-द्रव्यदेव के जघन्य एवं उत्कृष्ट अन्तर—कोई भव्य-द्रव्यदेव दस हजार वर्ष की स्थिति वाले, व्यन्तरादि देवों में उत्पन्न हुआ, और वहाँ से अपनी आयु पूर्ण कर शुभ पृथ्वीकायादि में चला गया। वहाँ अन्तर्मुहूर्त्त तक रहा, फिर तुरंत भव्य-द्रव्यदेव में उत्पन्न हो गया तो इस दृष्टि से भव्य-द्रव्यदेव का अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार वर्ष का होता है। अपर्याप्त जीव देवगति में उत्पन्न नहीं हो सकता अतः पर्याप्त होने के बाद ही उसे भव्य-द्रव्यदेव मानना चाहिए। ऐसा मानने से जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार वर्ष का होता है।

भव्य-द्रव्यदेव मर कर देव होता है और वहाँ से च्यव कर वनस्पति आदि से अनन्तकाल तक रह सकता है, फिर भव्य-द्रव्यदेव होता है तो इस दृष्टि से उसका उत्कृष्ट अन्तर अनन्तकाल का होता है।

नरदेव का जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर—जिन नरदेवों (चक्रवर्तियों) ने कामभोगों की आसक्ति को नहीं छोड़ा है। वे यहाँ से मर कर पहले नरक में उत्पन्न होते हैं फिर वहाँ एक सागरोपम की उत्कृष्ट आयु भोग कर यदि पुनः नरदेव में उत्पन्न हों और चक्ररत्न उत्पन्न न हो, तब तक उनका जघन्य अन्तर एक सागरोपम से कुछ अधिक होता है। अब कोई सम्यग्दृष्टि जीव चक्रवर्ती पद प्राप्त करे, फिर वह देशोन अपार्द्ध पुद्गल-परावर्त्तन काल तक संसार में परिभ्रमण करे, इसके बाद संयम पालन कर मोक्ष जाए, इस अपेक्षा से नरदेव का उत्कृष्ट अन्तर देशोन अपार्द्ध पुद्गल-परावर्त्तन कहा गया है।

धर्मदेव का जघन्य अन्तर—कोई धर्मदेव (चारित्रवान साधु) सौधर्म देवलोक में पल्योपम-पृथक्त्व आयुष्य वाला देव हो और वह वहाँ से च्यव कर पुनः मनुष्य भव प्राप्त करे। वहाँ वह साधक आठ वर्ष की आयु में चारित्र ग्रहण करे, इस अपेक्षा से धर्मदेव का जघन्य अन्तर पल्योपम पृथक्त्व कहा गया है।

देवाधिदेव का अन्तर—देवधिदेव का अन्तर नहीं होता है क्योंकि वे (तीर्थंकर भगवान) आयुष्य कर्म पूर्ण होने पर सीधे मोक्ष में जाते हैं।

Elaboration—The term *antar* here means the intervening-period between a god loosing his status on death and regaining birth in the same status. Here the minimum and maximum intervening periods of the said five kinds of gods have been detailed.

Minimum and maximum intervening period for *Bhavya-dravyadev*—A god of this status may get reborn as an interstitial god with a minimum life-span of ten thousand years, after end of this life-span he may descend to be reborn as a noble earth-bodied or other such being. He has to remain there for a minimum period of one Antarmuhurt and then die to be reborn as a *Bhavya-dravyadev* again. This is because that is the time required to gain full development in that genus and before that he cannot die to get reborn. Thus in this case the minimum intervening period is one Antarmuhurt more than ten thousand years.

Alternatively he can remain in cycles of rebirth as plant-bodied or other beings for infinite period and then get reborn as *Bhavya-dravyadev.* Thus in this case the maximum intervening period is infinite time.

Minimum and maximum intervening period for *Naradev*—The *Naradev* who has not renounced mundane indulgences gets reborn in

hell. After completing the maximum life-span of one Sagaropam there he may get reborn as human being and become a *Naradev* again when the disc weapon appears in his armory. Thus the minimum intervening period for *Naradev* is little more than one Sagaropam. On the other hand when a righteous *jiva* becomes a *Chakravarti* and continues in the cycles of rebirth for Deshon Ardha-pudgal paravartya kaal before getting reborn as a *Naradev*, get initiated and liberated, the intervening period is maximum; which is Deshon Ardha-pudgal paravartya kaal.

Minimum intervening period for *Dharmadev*—In case of a Dharmadev the maximum intervening period is the same as *Naradev* for the same reason. The minimum intervening period is when he (ascetic with righteous conduct) gets reborn as a Dev in Saudharm kalp with a life-span of Palyopam-prithaktva, after which period he gets reborn as a human being and gets initiated at the age of eight years (the minimum age for getting initiated). Thus the minimum intervening period is Palyopam-prithaktva.

Intervening period for *Devadhidevs*—There is no intervening-period for *Devadhidev* because he (Tirthankar) gets liberated at the end of his lifespan.

पंचविध देवों का अल्प-बहुत्व

COMPARATIVE NUMBERS OF FIVE KINDS OF GODS

३२. [प्र.] एएसि णं भंते ! भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा भावदेवा असंखेज्जगुणा।

३२. [प्र.] भगवन्! इन भव्य-द्रव्यदेव नरदेव यावत् भावदेव में से कौन-से (देव) किन (देवों) से अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक होते हैं?

[उ.] गौतम! सबसे थोड़े नरदेव हैं, उनसे देवाधिदेव संख्यात-गुणा (अधिक) हैं, उनसे धर्मदेव संख्यातगुणे (अधिक) हैं, उनसे भव्यद्रव्यदेव असंख्यातगुणे हैं और उनसे भी भावदेव असंख्यात गुणे हैं।

32. [Q.] *Bhante !* Of these *Bhavya-dravyadevs*, *Naradevs*... and so on up to... *Bhaavadevs*, which ones are comparatively less, more, equal and much more ?

[Ans.] Gautam ! (Of these) Minimum are *Naradevs*, countable times more than these are *Devadhidevs*, countable times more than these are *Dharmadevs*, innumerable times more than these are *Bhavya-dravyadevs* and innumerable times more than these are *Bhaavadevs*.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र में पंचविध देवों के अल्प-बहुत्व का निरूपण किया गया है।

प्रत्येक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल में भरत और ऐरवत क्षेत्र में, प्रत्येक में बारह-बारह चक्रवर्ती उत्पन्न होते हैं। तथा महाविदेह क्षेत्रीय विजयों में वासुदेवों के होने से उन सभी विजयों में वे एक साथ उत्पन्न नहीं होते। इसी कारण नरदेव सबसे थोड़े होते हैं।

भरतादि क्षेत्रों में देवाधिदेव चक्रवर्तियों से दुगुने-दुगुने होते हैं और महाविदेह क्षेत्र में वे वासुदेवों के विद्यमान रहते हुए भी उत्पन्न होते हैं। इसी कारण देवाधिदेव, नरदेवों से संख्यातगुणे होते हैं।

साधु (धर्मदेव) एक समय में कोटीसहस्र पृथक्त्व (दो हजार करोड़ से नौ हजार करोड़ तक) हो सकते हैं। इसी कारण वे देवाधिदेवों से संख्यातगुणे होते हैं।

देवगतिगामी देशविरत, अविरत सम्यग्दृष्टि आदि (मनुष्य तथा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय) धर्मदेवों से असंख्यातगुणे अधिक होते हैं, इस कारण धर्मदेवों से भव्य-द्रव्यदेव असंख्यातगुणे कहे गए हैं।

भावदेव भव्य-द्रव्य देवों से भी असंख्यातगुणे इसलिए बताए गए हैं क्योंकि स्वरूप से वे भव्य-द्रव्य देवों से बहुत अधिक होते हैं।

Elaboration—This statement informs about comparative numbers of aforesaid five kinds of gods.

In each regressive and progressive cycle of time (Avasarpini and Utsarpini kaal) twelve *Chakravartis* each are born in Bharat and Airavat areas. In Mahavideh area they are not born in all the *Vijayas* (continents) at the same time due to presence of Vaasudevs. That is why *Naradevs* are said to be minimum in number.

In each of Bharat and Airavat areas *Devadhidevs* are double the number of *Chakravartis* and in Mahavideh area they get born even in presence of Vaasudevs. Thus the number of *Devadhidevs* is said to be countable times more than *Naradevs*.

At one moment the maximum number of ascetics (*Dharmadevs*) can be Koti Sahasra-prithaktva (two thousand to nine thousand Crores), that is why they are said to be countable times more than *Devadhidevs*.

There is an abundance of *jivas* with partial renunciation and righteous non-initiates (among both humans and five sensed animals) destined to be born as divine beings, as such the number of *Bhavya-dravyadevs* is said to be innumerable times more than *Dharmadevs*.

Bhaavadevs are innumerable times more than *Bhavya-dravyadevs* simply because of their natural inherent attributes (like very long life-span).

भवनवासी आदि भावदेवों का अल्प-बहुत्व

COMPARATIVE NUMBERS OF *BHAAVADEVS*

३३. [प्र.] एएसि णं भंते ! भावदेवाणं-भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं, वेमाणियाणं सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?

गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा, जाव आणय कप्पे देवा संखेज्जगुणा एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ बारसमे सए : नवमो उद्देसओ समत्तो ॥१२-९॥

३३. [प्र.] भगवन्! भवनवासी, वाणव्यन्तर ज्योतिष्क और वैमानिक (तथा वैमानिकों में भी) सौधर्म, ईशान, यावत् अच्युत, ग्रैवेयक एवं अनुत्तरोपपातिक विमानों तक के भावदेवों में कौन-से (देव) किसं (देव) से अल्प, बहुत, तुल्य अथवा यावत् विशेषाधिक है?

[उ.] गौतम! सबसे थोड़े अनुत्तरोपपातिक भावदेव हैं, उनसे उपरिम (ऊपर) ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुणे हैं, उनसे मध्यम ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुणे हैं, उनसे नीचे के ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुणे हैं। उनसे अच्युत कल्प के देव संख्यातगुणे हैं, यावत् आनतकल्प के देव संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार जैसा जीवाभिगम सूत्र की दूसरी प्रतिपत्ति के त्रिविध

(जीवाधिकार) में देवपुरुषों का अल्पबहुत्व कहा है, वैसा यहाँ भी यावत् ज्योतिष्क भावदेव असंख्यातगुणे (अधिक) हैं–(तक कहना चाहिए।)

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर श्री गौतम स्वामी यावत् विचरण करते हैं।

॥ बारहवाँ शतक : नौवाँ उद्देशक समाप्त ॥

33. [Q.] *Bhante!* Of *Bhavan-vaasi*, *Vanavyantar*, *Jyotishk*, and *Vaimaanik* gods as also (among *Vaimaaniks*) Saudharma, Ishaan... and so on up to... *Achyut*, *Graiveyak* and *Anuttaropapatik Bhaavadevs*, which ones are comparatively less, more, equal and much more?

[Ans.] Gautam! (Of these) Minimum are *Anuttaropapatik Bhaavadevs*, countable times more than these are those of Upper *Graiveyak*, countable times more than these are those of Middle *Graiveyak*, countable times more than these are those of Lower *Graiveyak*, countable times more than these are those of *Achyut Kalp*... and so on up to... *Anat Kalp*. In the same way repeat the comparative number of gods as mentioned in Trividh or Jivadhikar lesson of the second chapter of *Jivabhigam Sutra*... and so on up to... innumerable times more than those are *Jyotishk Bhaavadevs*.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र में विविध भावदेवों के अल्पबहुत्व का निरूपण किया गया है।

आगे बताते हुए प्रस्तुत सूत्र में अल्प-बहुत्व जीवाभिगम-सूत्रोक्त त्रिविध जीवाधिकार का अतिदेश किया गया है। जिसके अनुसार वहाँ अल्प-बहुत्व इस प्रकार वर्णित है कि आरण-कल्प से सहस्रार-कल्प में भावदेव असंख्यातगुणे हैं, उनसे महाशुक्र में असंख्यातगुणे, उनसे लान्तक में असंख्यातगुणे, उनसे ब्रह्मलोक के देव असंख्यातगुणे, उनसे माहेन्द्र-कल्प के देव असंख्यातगुणे हैं। उनसे सनत्कुमार कल्प के देव असंख्यातगुणे, उनसे ईशान के देव असंख्यातगुणे हैं, और ईशान देवों से सौधर्म कल्प के देव संख्यातगुणा हैं। उनसे भवनवासी देव असंख्यातगुणे हैं। उनसे वाणव्यन्तर देव असंख्यातगुणा हैं और वाणव्यन्तर से ज्योतिष्क भावदेव असंख्यातगुणा हैं।

Elaboration—This statement details the comparative number of *Bhaavadevs*.

The details as mentioned in *Jivabhigam Sutra* are—innumerable times more than those of *Aran Kalp* are those of *Sahasrar Kalp,* innumerable times more than these are those of *Mahashukra,* innumerable times more than these are those of *Lantak,* innumerable times more than these are those of *Brahma Lok,* innumerable times more than these are those of *Maahendra Kalp,* innumerable times more than these are those of *Sanatkumar,* innumerable times more than these are those of *Ishaan Kalp,* innumerable times more than these are those of *Saudharm Kalp.* Innumerable times more than these are *Bhavan-vaasi* gods. Innumerable times more than these are *Vanavyantar* gods and innumerable times more than these are *Jyotishk* gods.

• END OF THE NINTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER •

दसमो उद्देसओ : आया
दशम उद्देशक : आत्मा
DASHAM UDDESHAK (TENTH LESSON) : ATMA (SOUL)

आत्मा के आठ भेदों की प्ररूपणा

DESCRIPTION OF EIGHT KINDS OF SOULS

१. [प्र.] कइविहा णं भंते ! आया पन्नत्ता?

[उ.] गोयमा ! अट्ठविहा आया पन्नत्ता, तं जहा—दवियाया कसायाया जोगाया उवयोगाया णाणाया दंसणाया चरित्ताया वीरियाया।

१. [प्र.] भगवन्! आत्मा कितने प्रकार की कही गई है?

[उ.] गौतम! आत्मा आठ प्रकार की कही गई है। यथा—(१) द्रव्य-आत्मा, (२) कषाय-आत्मा, (३) योग-आत्मा, (४) उपयोग-आत्मा, (५) ज्ञान-आत्मा, (६) दर्शन-आत्मा, (७) चारित्र-आत्मा और (८) वीर्य-आत्मा।

1. [Q.] *Bhante!* Of how many types, souls (*atma*s) are said to be there?

[Ans.] Gautam! Souls are said to be of eight kinds—(1) *Dravya-atma*, (2) *Kashaaya-atma*, (3) *Yoga-atma*, (4) *Upayoga-atma*, (5) *Jnana-atma*, (6) *Darshan-atma*, (7) *Chaaritra-atma*, and (8) *Virya-atma*.

विवेचन—आत्मा का स्वरूप—जिसमें सदा उपयोग अर्थात्—बोध रूप व्यापार पाया जाता है, वह आत्मा कहलाती है। सामान्यतया उपयोग रूप लक्षण सभी आत्माओं में पाया जाता है, परन्तु विशिष्ट गुण अथवा उपाधि को श्रेष्ठ मानकर आत्मा के आठ प्रकार बताए गए हैं—

(१) द्रव्य-आत्मा—त्रिकालानुगामी देव, मनुष्य आदि विविध पर्यायों से युक्त द्रव्य रूप आत्मा द्रव्यात्मा कहलाती है। यह सभी जीवों के होती है।

(२) कषाय-आत्मा—क्रोध, मान, माया, लोभ—ये चार रूप कषाय और हास्यादि—ये छह नोकषाय से युक्त आत्मा कषायात्मा कहलाती है। यह आत्मा उपशान्तकषाय एवं क्षीणकषाय आत्माओं के अलावा सभी संसारी जीवों के होती है।

आठ आत्मा

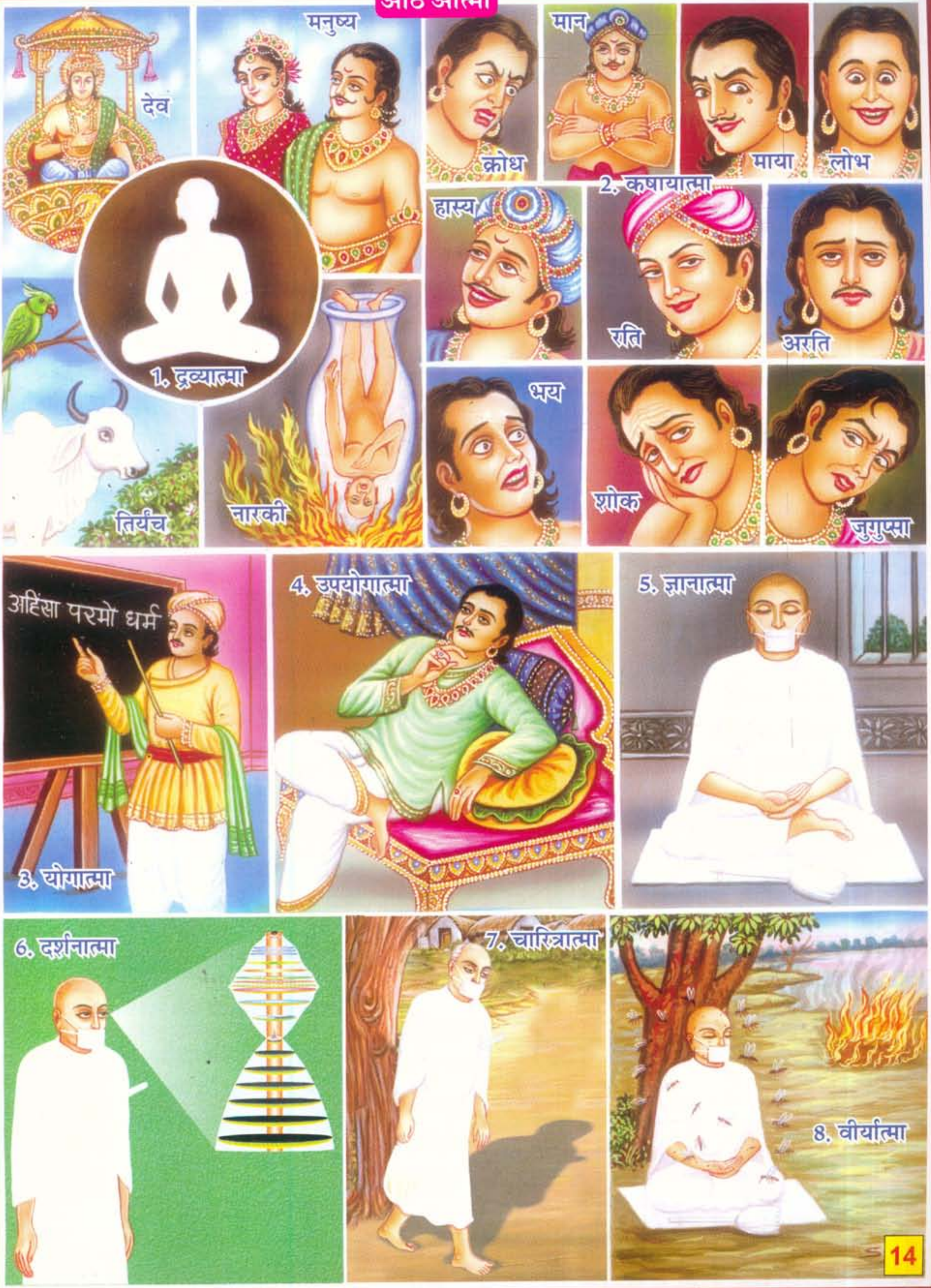

देव
मनुष्य
मान
क्रोध
माया
लोभ
2. कषायात्मा
हास्य
रति
अरति
1. द्रव्यात्मा
भय
शोक
जुगुप्सा
तिर्यंच
नारकी
अहिंसा परमो धर्म
3. योगात्मा
4. उपयोगात्मा
5. ज्ञानात्मा
6. दर्शनात्मा
7. चारित्रात्मा
8. वीर्यात्मा

चित्र-परिचय 14

आठ आत्मा

Illustration No. 14

उपयोग की अपेक्षा से सामान्य रूप से सभी आत्माएँ समान रहती हैं किन्तु विशिष्ट गुण-उपाधि को प्रधान माना जाए तो आत्मा के आठ भेद होते हैं–

(1) **द्रव्यात्मा**—आत्मा मूल रूप से द्रव्य है। यह द्रव्यात्मा सभी गति के जीवें में होती है।

(2) **कषायात्मा**—चार कषाय–क्रोध, मान, माया, लोभ और छह नोकषाय–हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा युक्त आत्मा कषायात्मा होती है।

(3) **योगात्मा**—मन, वचन, काया के व्यापार से युक्त आत्मा योगात्मा कहलाती है। उदाहरण—पढ़ाता हुआ शिक्षक। तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीवों के अतिरिक्त सभी में यह आत्मा होती है।

(4) **उपयोगात्मा**—ज्ञान और दर्शन रूप उपयोग प्रधान आत्मा उपयोगात्मा है। यह संसारी, सिद्ध सभी जीवों में होती है।

(5) **ज्ञानात्मा**—सम्यक् ज्ञान से युक्त आत्मा ज्ञानात्मा कहलाती है।

(6) **दर्शनात्मा**—सामान्य-विशिष्ट अवबोध रूप दर्शन से युक्त आत्मा दर्शनात्मा है। जैसे किसी वस्तु को देखकर उसके बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त करना। एक केवली साधु भगवंत दर्शनात्मा द्वारा तीनों लोक को देख सकते हैं।

(7) **चारित्रात्मा**—चारित्र के विशिष्ट गुणों से युक्त आत्मा चारित्रात्मा कहलाती है।

(8) **वीर्यात्मा**—आत्मा का परिणाम विशेष अथवा द्रव्य की अपनी शक्ति वीर्य है। यह दो प्रकार के होते हैं–सकरण वीर्य और अकरणय वीर्य। सभी संसारी आत्माओं में सकरण वीर्यात्मा होती है। उपसर्ग सहता संयमी साधु वीर्यात्मा है।

—शतक 12, उ. 10

EIGHT TYPES OF SOUL

Though being active in cognition is a common attribute of all souls, based on some special inclinations soul has been divided into eight types—

(1) *Dravya-atma*—The immortal entity endowed with sentience is called *Dravya-atma* (soul entity). It is present in every living being.

(2) *Kashaaya-atma*—The soul that is encumbered with four passions (*kashaaya*), namely anger, conceit, deceit and greed; and six no-*kashaaya*s (sub-passions) including laughter is called *Kashaaya-atma* (passion-soul).

(3) *Yoga-atma*—The soul associated with three activities of mind, speech and body is called *Yoga-atma* (associated-soul). For example, a teacher involved in act of teaching. Other than *Ayogi Kevali* (dissociated omniscient) and *Siddha* (Perfected Soul) this is present in every living being.

(4) *Upayoga-atma*—The soul with predominant inclination for gaining knowledge and faith is called *Upayoga-atma* (righteously active soul). This is present in every living being; including *Siddha*s).

(5) *Jnana-atma*—The enlightened soul endowed with right knowledge (*samyak jnana*) is called *Jnana-atma* (righteous-soul).

(6) *Darshan-atma*—The soul endowed with common and special faculty of perception leading to faith is called *Darshan-atma* (perceptive soul). At common level it acquires general information on seeing a thing. At special level it can see the whole universe and know about it, like an omniscient does.

(7) *Chaaritra-atma*—The soul endowed with the special virtues of right conduct is called *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul).

(8) *Virya-atma*—The soul endowed with potency with means of manifestation and directed towards uplift and other such activities is called *Virya-atma* (soul with active potency). This is of two kinds—sakaran (with means), as in all worldly souls; and akaran (without means) as in *Siddha*s. An ascetic enduring afflictions is *Virya-atma.*

—Shatak-12, lesson-10

(३) **योग-आत्मा**—मन, वचन और काया के व्यापार को योग कहते हैं। इन्हीं तीनों योगों से युक्त आत्मा योगात्मा कहलाती है। आयोगी केवली और सिद्धों के अतिरिक्त सभी सयोगी जीवों के यह आत्मा होती है।

(४) **उपयोग-आत्मा**—ज्ञान-दर्शन रूप उपयोग-प्रधान आत्मा ही उपयोगात्मा कहलाती है। यह सिद्ध और संसारी सभी जीवों के होती है।

(५) **ज्ञान-आत्मा**—विशेष अवबोध रूप सम्यग्ज्ञान से विशिष्ट आत्मा को ज्ञानात्मा कहते हैं। ज्ञानात्मा सम्यग्दृष्टि जीवों के होती है।

(६) **दर्शन-आत्मा**—सामान्य-अवबोध रूप दर्शन से विशिष्ट आत्मा को दर्शनात्मा कहते है। दर्शनात्मा सभी जीवों के होती है।

(७) **चारित्र-आत्मा**—चारित्र विशिष्ट गुण से युक्त आत्मा को चारित्रात्मा कहते हैं, चारित्रात्मा विरति वाले साधु-श्रावकों के होती है।

(८) **वीर्य-आत्मा**—उत्थानादि रूप कारणों से युक्त सकरण वीर्य विशिष्ट आत्मा को वीर्यात्मा कहते हैं। जो सभी संसारी जीवों के होती है। सिद्धों में सकरण वीर्य न होने से उनमें वीर्यात्मा नहीं मानी जाती है।

Elaboration—Description of soul—that which is ever active in cognition is called *atma* or soul. In other words that which has ever active urge to know is called soul. Though it is a common attribute of all souls, based on some special inclinations soul has been divided into eight types—

(1) ***Dravya-atma***—The immortal entity endowed with sentience and ever active faculty of cognition that exists in various modes, including divine and human, is called *Dravya-atma* (soul entity). It is present in every living being.

(2) ***Kashaaya-atma***—The soul that is encumbered with four passions (*kashaaya*), namely anger, conceit, deceit and greed; and six no-*kashaaya*s (sub-passions) including laughter is called *Kashaaya-atma* (passion-soul). Other than souls with pacified and destroyed passion (*upashaant kashaaya and ksheen kashaaya*) this is present in every living being.

(3) ***Yoga-atma***—Association with activities of mind, speech and body is called *yoga*. The soul associated with these three activities is called *Yoga-atma* (associated-soul). Other than *Ayogi Kevali* (dissociated omniscient) and *Siddha* (Perfected Soul) this is present in every living being.

(4) *Upayoga-atma*—The soul with predominant inclination, urge and involvement in gaining knowledge and faith is called *Upayoga-atma* (righteously active soul). This is present in every living being; including *Siddhas*).

(5) ***Jnana-atma***—The enlightened soul endowed with right knowledge (*samyak jnana*) is called *Jnana-atma* (righteous-soul). This is present in righteous (*samyagdrishti*) living beings.

(6) ***Darshan-atma***—The soul endowed with common faculty of perception leading to faith is called *Darshan-atma* (perceptive soul). This is present in all living beings.

(7) ***Chaaritra-atma***—The soul endowed with the pursuance of right conduct is called *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul). This is present in ascetics and laity who have renounced the world.

(8) ***Virya-atma***—The soul endowed with potency with means of manifestation and directed towards uplift and other such activities is called *Virya-atma* (soul with active potency). This is present in all living beings. Though *Siddhas* have potency but in absence of means of manifestation they are said to be devoid of *Virya-atma*.

द्रव्यात्मा आदि आठों आत्मभेदों का परस्पर सहभाव एवं असहभाव-निरूपण

ASSOCIATED PRESENCE OF EIGHT TYPES OF SOUL

२-१. [प्र.] जस्स णं भंते! दवियाया तस्स कसायाया, जस्स कसायाया तस्स दवियाया?

[उ.] गोयमा! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि।

२-१. [प्र.] भगवन्! जिसके द्रव्यात्मा होती है, क्या उसके कषायात्मा होती है और जिसके कषायात्मा होती है, (तो क्या) उसके द्रव्यात्मा होती है?

[उ.] गौतम! जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके कषायात्मा कदाचित् होती है और कदाचित् नहीं भी होती। किन्तु जिसके कषायात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है।

2-1. [Q.] *Bhante!* Does one having *Dravya-atma* (soul entity) also has *Kashaaya-atma* (passion-soul) and vice versa?

[Ans.] Gautam ! One having *Dravya-atma* (soul entity) has *Kashaaya-atma* (passion-soul) optionally (may have or may not have). But, one having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Dravya-atma* (soul entity).

२-२. [प्र.] जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया. ?

[उ.] एवं जहा दवियाया य कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया य भाणियव्वा।

२-२. [प्र.] भगवन्! जिसके द्रव्यात्मा होती है, क्या उसके योग-आत्मा होती है और जिसके योग-आत्मा होती है, (तो क्या) उसके द्रव्यात्मा होती है?

[उ.] गौतम! जिस तरह द्रव्यात्मा और कषायात्मा का सम्बन्ध कहा है, उसी तरह द्रव्यात्मा और योग-आत्मा का सम्बन्ध कहना चाहिए।

2-2. [Q.] *Bhante !* Same question about *Dravya-atma* (soul entity) and *Yoga-atma* (associated-soul) ? (Does one having *Dravya-atma* also has *Yoga-atma* and vice versa ?)

[Ans.] Gautam ! Repeat the aforesaid association of *Dravya-atma* (soul entity) and *Kashaaya-atma* (passion-soul) for *Dravya-atma* (soul entity) and *Yoga-atma* (associated-soul) also.

२-३. [प्र.] जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवयोगाया. ?

[उ.] एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवयोगाया नियमं अत्थि, जस्स वि उपयोगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए, जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। एवं वीरियायाए वि समं।

२-३. [प्र.] भगवन्! जिसके द्रव्यात्मा होती है, क्या उसके उपयोगात्मा होती है और जिसके उपयोगात्मा होती है, (तो क्या) उसके द्रव्यात्मा होती है? इसी प्रकार शेष सभी आत्माओं के द्रव्यात्मा से सम्बन्ध के विषय में पृच्छा (प्रश्न करना) करनी चाहिए।

[उ.] गौतम! जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा अवश्य होती है और जिसके उपयोगात्मा होती है उसके द्रव्यात्मा अवश्यमेव होती है। जिसके द्रव्यात्मा होती है उसके ज्ञानात्मा भजना (वैकल्पिक रूप) से होती है (अर्थात्—कदाचित् होती है, कदाचित् नहीं भी होती।) और

जिसके ज्ञानात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है। जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्यमेव होती है तथा जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा भी अवश्य होती है। जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा भजना से होती है (अर्थात् कदाचित् होती है, कदाचित् नहीं भी होती) किन्तु जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है और जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके वीर्य-आत्मा भजना से होती है, किन्तु जिसके वीर्य-आत्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य ही होती है।

2-3. [Q.] *Bhante !* Same question about *Dravya-atma* (soul entity) and *Upayoga-atma* (righteously active soul) ? (Does one having *Dravya-atma* also has *Upayoga-atma* and vice versa) ? In the same way, questions for remaining kinds of souls.

[Ans.] Gautam ! One having *Dravya-atma* certainly has *Upayoga-atma* and one having *Upayoga-atma* certainly has *Dravya-atma.* One having *Dravya-atma* optionally has *Jnana-atma* (righteous-soul), but one having *Jnana-atma* certainly has *Dravya-atma.* One having *Dravya-atma* certainly has *Darshan-atma* (perceptive soul) and one having *Darshan-atma* certainly has *Dravya-atma.* One having *Dravya-atma* has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) optionally, but one having *Chaaritra-atma* certainly has *Dravya-atma.* One having *Dravya-atma* optionally has *Virya-atma* (soul with active potency), but one having *Virya-atma* certainly has *Dravya-atma.*

३-१. [प्र.] जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि।

३-१. [प्र.] भगवन्! जिसके कषायात्मा होती है, क्या उसके योगात्मा होती है? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! जिसके कषायात्मा होती है, उसके योग-आत्मा नियम से अवश्य होती है, परन्तु जिसके योग-आत्मा होती है, उसके कषायात्मा कदाचित् होती है, कदाचित् नहीं होती।

3-1. [Q.] *Bhante !* Same question about *Kashaaya-atma* (passion-soul) and *Yoga-atma* (associated-soul) ? (Does one having *Kashaaya-atma* also has *Yoga-atma* and vice versa ?)

[Ans.] Gautam ! One having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Yoga-atma* (associated-soul). But, one having *Yoga-atma* has *Kashaaya-atma* only optionally.

३-२. एवं उवयोगायाए वि समं कसायाया नेयव्वा।

[३-२] इसी प्रकार उपयोगात्मा के साथ भी कषायात्मा का (परस्पर) सम्बन्ध समझ लेना चाहिए।

3. [2] The same is true for association of *Upayoga-atma* (righteously active soul) and *Kashaaya-atma.*

३-३. कसायाया य नाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ।

[३-३] कषायात्मा और ज्ञानात्मा इन दोनों का परस्पर (सम्बन्ध) भजना से (कदाचित् होता है, कदाचित् नहीं भी होता है) कहना चाहिए।

3. [3] The association of *Kashaaya-atma* and *Jnana-atma* (righteous-soul) is always optional only.

३-४. जहा कसायाया य उवयोगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य।

[३-४] कषायात्मा और उपयोगात्मा (के परस्पर सम्बन्ध) के समान ही कषायात्मा और दर्शनात्मा (के पारस्परिक सम्बन्ध) का कथन करना चाहिए।

3. [4] The association of *Kashaaya-atma* and *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) follows the pattern of aforesaid association of *Upayoga-atma* and *Kashaaya-atma.*

३-५. कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ।

[३-५] कषायात्मा और चारित्रात्मा का (परस्पर सम्बन्ध) भजना से कहना चाहिए।

3. [5] The association of *Kashaaya-atma* and *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) is always optional only.

३-६. जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ।

[३-६] जैसा कषायात्मा और योगात्मा के परस्पर सम्बन्ध के बारे में कहा है वैसा कषायात्मा और वीर्यात्मा के सम्बन्ध का कथन करना चाहिए।

3. [6] The association of *Kashaaya-atma* and *Virya-atma* (soul with

active potency) follows the pattern of aforesaid association of *Yoga-atma* and *Kashaaya-atma.*

४. एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वओ।

[४] इसी प्रकार जैसे कषायात्मा के साथ अन्य छह आत्माओं के पारस्परिक सम्बन्ध की वक्तव्यता कही है वैसी योगात्मा के साथ भी आगे की पाँच आत्माओं के परस्पर सम्बन्ध की वक्तव्यता कहनी चाहिए।

4. As association of *Kashaaya-atma* with following six classes of souls has been detailed in preceding statements, likewise mention the association of *Yoga-atma* with following five classes of souls.

५. जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवयोगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा।

[५] जिस प्रकार द्रव्यात्मा की वक्तव्यता कही है, उसी प्रकार उपयोगात्मा की वक्तव्यता भी आगे की चार आत्माओं के साथ कहनी चाहिए।

5. As association of *Dravya-atma* has been detailed in preceding statements, likewise mention the association of *Upayoga-atma* with following four classes of souls.

६-१. जस्स णाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए।

[६-१] जिसके ज्ञानात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा नियम से अवश्य होती है और जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा भजना से होती है।

6. [1] One having *Jnana-atma* (righteous-soul) certainly has *Darshan-atma* (perceptive soul). But, one having *Darshan-atma* has *Jnana-atma* only optionally.

६-२. जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया नियमं अत्थि।

[६-२] जिसके ज्ञानात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा कदाचित् होती है और कदाचित् नहीं भी होती तथा जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा अवश्य होती है।

6. [2] One having *Jnana-atma* has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) only optionally. But, one having *Chaaritra-atma* certainly has *Jnana-atma.*

६-३. णाणाया य वीरियाया य दो वि परोप्परं भयणाए।

[६-३] ज्ञानात्मा और वीर्यात्मा इन दोनों का परस्पर-सम्बन्ध भजना से कहना चाहिए।

6. [3] The association of *Jnana-atma* and *Virya-atma* (soul with active potency) is always optional only.

७. जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि।

[७] जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा और वीर्यात्मा, ये दोनों भजना से होती है; परन्तु जिसके चारित्रात्मा और वीर्यात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है।

7. One having *Darshan-atma* has both *Chaaritra-atma and Virya-atma* only optionally. But, one having both *Chaaritra-atma and Virya-atma* certainly has *Darshan-atma.*

८. जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि।

[७] जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है, किन्तु जिसके वीर्यात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा कदाचित् होती है और कदाचित् नहीं भी होती।

8. One having *Chaaritra-atma* certainly has *Virya-atma.* But, one having *Virya-atma* has *Chaaritra-atma* only optionally.

विवेचन—प्रस्तुत सात सूत्रों में आठ प्रकार की आत्माओं के परस्पर सम्बन्ध की प्ररूपणा की गई है।

द्रव्यात्मा का शेष सात आत्माओं के साथ सम्बन्ध—जिस जीव के द्रव्यात्मा होती है, उसके कषायात्मा, सकषाय अवस्था में होती है, परन्तु उपशान्तकषाय अथवा क्षीणकषाय अवस्था में कषायात्मा नहीं होती है। इसके विपरीत जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा नियम से होती है, क्योंकि द्रव्यात्मत्व—जीवत्व के बिना कषायों का होना सम्भव नहीं है।

जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके योगात्मा सयोगी अवस्था में होती है, लेकिन अयोगी अवस्था में द्रव्यात्मा के साथ योगात्मा का होना सम्भव नहीं है। इसके विपरीत जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा तो नियम से होती है, क्योंकि द्रव्यात्मा जीव रूप है जिसके बिना जीव के योगों का होना सम्भव नहीं है।

द्रव्यात्मा और उपयोगात्मा का परस्पर नित्य अविनाभावी सम्बन्ध है जिसके कारण द्रव्यात्मा के साथ उपयोगात्मा एवं उपयोगात्मा के साथ द्रव्यात्मा अवश्य होती है, क्योंकि द्रव्यात्मा जीव रूप है और उपयोग उसका लक्षण है, इसलिए दोनों एक-दूसरे के साथ नियम से पाई जाती है।

जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा कदाचित् होती भी है और कदाचित् नहीं भी होती है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि द्रव्यात्मा के ज्ञानात्मा होती है जबकि मिथ्यादृष्टि के सम्यग्ज्ञान-रूप ज्ञानात्मा नहीं होती; लेकिन ज्ञानात्मा के साथ द्रव्यात्मा अवश्य होती है, क्योंकि द्रव्यात्मा के बिना ज्ञानात्मा संभव नहीं है।

द्रव्यात्मा और उपयोगात्मा के समान द्रव्यात्मा और दर्शनात्मा में भी नित्य अविनाभावी सम्बन्ध है; क्योंकि सामान्य अवबोध रूप दर्शन तो प्रत्येक जीव के होता है, यहाँ तक तो सिद्ध भगवान के भी केवलदर्शन होता है। अत: जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा नियम से होती है, जैसे—चक्षुदर्शनादि वाले के द्रव्यात्मा होती है और विरति वाले द्रव्यात्मा के साथ ही चारित्रात्मा पाई जाती है परन्तु विरति रहित संसारी और सिद्ध जीवों में द्रव्यात्मा होने पर भी चारित्रात्मा नहीं पाई जाती है। किन्तु जहाँ चारित्रात्मा होती है, वहाँ द्रव्यात्मा अवश्य होती है, क्योंकि द्रव्यात्मा के बिना चारित्र सम्भव नहीं है।

द्रव्यात्मा के साथ वीर्यात्मा के सम्बन्ध की भजना है; क्योंकि सकरण वीर्ययुक्त प्रत्येक द्रव्यात्मा वाले संसारी जीव के वीर्यात्मा रहती है, किन्तु सिद्धों में सकरण वीर्य न होने से उनकी द्रव्यात्मा के साथ वीर्यात्मा नहीं होती। जहाँ वीर्यात्मा है, वहाँ द्रव्यात्मा अवश्य होती है; क्योंकि वीर्यात्मा वाले समस्त संसारी जीवों में द्रव्यात्मा अवश्यमेव होती है।

कषायात्मा का आगे की छह आत्माओं के साथ सम्बन्ध—जिसके कषायात्मा होती है, उसके योगात्मा अवश्य होती है, क्योंकि सकषायी आत्मा अयोगी नहीं होती और जिसके योगात्मा होती है, उसके कषायात्मा की भजना है, क्योंकि सयोगी आत्मा सकषायी और अकषायी दोनों ही प्रकार की होती है।

जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा अवश्य होती है, क्योंकि कोई भी जीव उपयोग से रहित नहीं है। उपयोगात्मा में कषायात्मा की भजना है, क्योंकि ग्यारहवें से लेकर चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीवों में एवं सिद्ध जीवों में उपयोगात्मा तो है, परन्तु कषाय का अभाव है।

जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है। क्योंकि मिथ्यादृष्टि के कषायात्मा तो होती है, किन्तु सम्यग्ज्ञान रूप ज्ञानात्मा नहीं होती। जबकि सकषायी सम्यग्दृष्टि के ज्ञानात्मा होती है। और जिस जीव के ज्ञानात्मा होती है, उसके कषायात्मा की भी भजना है, क्योंकि सम्यग्ज्ञानी कषाय सहित भी होते हैं और कषाय रहित भी।

जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है, जबकि दर्शन रहित घटादि जड़ पदार्थों में कषायों का सर्वथा अभाव है और जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके कषायात्मा की भजना है, क्योंकि दर्शनात्मा वाले सकषायी और अकषायी दोनों ही होते हैं।

जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा की भजना है और चारित्रात्मा वाले जीवों के भी कषायात्मा की भजना है, क्योंकि कषाय वाले जीव विरत और अविरत दोनों प्रकार के होते हैं। अथवा सामायिकादि चारित्र वाले साधकों के कषाय रहती है, जबकि यथाख्यात चारित्र वाले साधक कषाय रहित होते हैं।

जिस जीव के कषायात्मा है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है लेकिन जो सकरण वीर्य रहित सिद्ध जीव हैं, उनमें कषायों का अभाव पाया जाता है और वीर्यात्मा वाले जीवों के कषायात्मा की भजना है, क्योंकि वीर्यात्मा वाले जीव सकषायी और अकषायी दोनों ही प्रकार के होते हैं।

योगात्मा के साथ आगे की पाँच आत्माओं का सम्बन्ध—जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा अवश्य होती है, क्योंकि सभी सयोगी जीवों में उपयोग होता ही है, किन्तु जिसके उपयोगात्मा होती है, उसके योगात्मा की भजना है। क्योंकि चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली और सिद्ध भगवान में उपयोगात्मा होते हुए भी योगात्मा नहीं होती है।

जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है। क्योंकि मिथ्यादृष्टि जीवों में योगात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नहीं होती है। इसी प्रकार ज्ञानात्मा वाले जीव के भी योगात्मा की भजना है क्योंकि चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली और सिद्ध जीवों में ज्ञानात्मा होते हुए भी योगात्मा नहीं होती।

जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है, क्योंकि समस्त जीवों में सामान्य अवबोध रूप दर्शन रहता ही है। किन्तु जिस जीव के दर्शनात्मा होती है, उसके योगात्मा की भजना है। क्योंकि दर्शन वाले जीव योग सहित भी होते हैं, योग रहित भी।

जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा की भजना है क्योंकि योगात्मा होते हुए भी अविरत जीवों में चारित्रात्मा नहीं होती। इसी तरह चारित्रात्मा वाले जीवों के भी योगात्मा की भजना है, क्योंकि चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी जीवों के चारित्रात्मा तो है, परन्तु योगात्मा नहीं है। जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके योगात्मा अवश्य होती है, क्योंकि प्रत्युपेक्षणादि व्यापार रूप चारित्र योगपूर्वक ही होता है।

जिसके योगात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है, क्योंकि योग होने पर वीर्य अवश्य होता है। किन्तु जिसके वीर्यात्मा होती है, उसके योगात्मा की भजना है, क्योंकि अयोगी केवली में वीर्यात्मा तो है, किन्तु योगात्मा नहीं है। यह बात करण और लब्धि दोनों वीर्यात्माओं को लेकर कही गई है। जहाँ करण वीर्यात्मा है, वहाँ योगात्मा अवश्यम्भावी है, किन्तु जहाँ लब्धि वीर्यात्मा है, वहाँ योगात्मा की भजना है।

उपयोगात्मा के साथ आगे की चार आत्माओं का सम्बन्ध—जिस जीव के उपयोगात्मा है, उसमें ज्ञानात्मा की भजना है, क्योंकि मिथ्यादृष्टि जीवों में उपयोगात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नहीं होती और जिस जीव के ज्ञानात्मा है, उसके उपयोगात्मा तो अवश्य ही होती है।

इसी तरह जिस जीव के उपयोगात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है और जिसके दर्शनात्मा है, उसके उपयोगात्मा अवश्य ही होती है।

जिस जीव के उपयोगात्मा है, उसमें चारित्रात्मा की भजना है, क्योंकि असंयती जीवों के उपयोगात्मा तो होती है, परन्तु चारित्रात्मा नहीं होती और जिस जीव के चारित्रात्मा है, उसके उपयोगात्मा अवश्य ही होती है।

जिस जीव में उपयोगात्मा होती है, उसमें वीर्यात्मा की भजना है, क्योंकि सिद्धों में उपयोगात्मा होते हुए भी वीर्यात्मा नहीं पाई जाती है।

ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, चारित्रात्मा और वीर्यात्मा में उपयोगात्मा अवश्य ही रहती है, क्योंकि जीव का लक्षण ही उपयोग है। उपयोग लक्षण वाला जीव ही ज्ञान, दर्शन, चारित्र और वीर्य का कारण होता है। उपयोग शून्य घटादि जड़ पदार्थ होते हैं, जिनमें ज्ञानादि नहीं पाये जाते।

ज्ञानात्मा के आगे की तीन आत्माओं का सम्बन्ध—जिस जीव में ज्ञानात्मा है, उसके दर्शनात्मा अवश्य ही होती है, क्योंकि सम्यग्ज्ञान रूपी ज्ञान सम्यग्दृष्टि जीवों के ही होता है और वह दर्शनपूर्वक ही होता है और जिस जीव के दर्शनात्मा है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है, क्योंकि मिथ्यादृष्टि जीवों के दर्शनात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नहीं होती।

जिस जीव के ज्ञानात्मा है, उसके चारित्रात्मा की भजना होती है क्योंकि अविरति-सम्यग्दृष्टि जीव के ज्ञानात्मा होते हुए भी चारित्रात्मा नहीं होती और जिस जीव के चारित्रात्मा है, उसके ज्ञानात्मा अवश्य ही होती है। ज्ञान के बिना चारित्र का अभाव है।

जिस जीव में ज्ञानात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा की भजना है, क्योंकि सिद्ध जीवों में ज्ञानात्मा के होते हुए भी वीर्यात्मा नहीं होती और जिस जीव के वीर्यात्मा है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है, क्योंकि मिथ्यादृष्टि जीवों के वीर्यात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नहीं होती।

दर्शनात्मा के साथ चारित्रात्मा और वीर्यात्मा का सम्बन्ध—जिस जीव के दर्शनात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा और वीर्यात्मा की भजना है क्योंकि दर्शनात्मा के होते हुए भी असंयती जीवों के चारित्रात्मा नहीं होती जबकि सिद्धों के दर्शनात्मा होते हुए भी वीर्यात्मा नहीं होती। सामान्यावबोध रूप दर्शन तो सभी जीवों में होता है।

चारित्रात्मा और वीर्यात्मा का सम्बन्ध—जिस जीव के चारित्रात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है क्योंकि वीर्य के बिना चारित्र का अभाव है, परन्तु जिस जीव में वीर्यात्मा होती है, उसमें चारित्रात्मा की भजना है, क्योंकि असंयत जीवों में वीर्यात्मा होते हुए भी चारित्रात्मा नहीं होती है।

Elaboration—These seven statements discuss the mutual association of aforesaid eight classes of souls.

Association of *Dravya-atma* (soul entity) with other seven classes—A *jiva* (living being) having *Dravya-atma* (soul entity) has *Kashaaya-atma* (passion-soul) when he is under influence of passions. However, when he is in the state of pacified or destroyed passions he does not have *Kashaaya-atma*. But, a *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Dravya-atma* (soul entity) because in absence of *Dravya-atma*, or life itself, there is no scope for passions.

A *jiva* (living being) having *Dravya-atma* (soul entity) has *Yoga-atma* (associated-soul) when he is in the state of association (*sayogi*). However, when he is in the state of dissociation (*ayogi*), or has dissociated himself

from all activities, he cannot have *Yoga-atma*. But, a *jiva* having *Yoga-atma* (associated-soul) certainly has *Dravya-atma* (soul entity) because in absence of *Dravya-atma*, or life itself, there is no scope for association.

Dravya-atma (soul entity) and *Upayoga-atma* (righteously active soul) have eternal unrestricted association. Thus *Dravya-atma* essentially has *Upayoga-atma* and vice versa. This is because *Dravya-atma* is life and being active is its intrinsic attribute, and so they always co-exist as a rule.

A *jiva* (living being) having *Dravya-atma* has *Jnana-atma* (righteous-soul) optionally. This is because a righteous (*samyagdrishti*) *jiva* has *Jnana-atma* whereas an unrighteous (*mithyadrishti*) *jiva* does not have righteous-soul (*Jnana-atma*). But, *Jnana-atma* certainly has *Dravya-atma* because in absence of *Dravya-atma*, or life itself, there is no scope for righteousness.

Like *Dravya-atma* and *Upayoga-atma* (righteously active soul), *Dravya-atma* and *Darshan-atma* (perceptive soul) have eternal unrestricted association. This is because every living being is endowed with ability of perception in the form of general awareness; even the liberated souls (Siddhas) have perception in the form of omniscient perception (*Keval-darshan*). But, *Darshan-atma* certainly has *Dravya-atma* because in absence of *Dravya-atma*, or life itself, there is no scope for perception.

A *jiva* having *Dravya-atma* has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) when he has renounced the world. However, when he has not renounced the world and still leads mundane life, he does not have *Chaaritra-atma*. The *Siddhas* too, in absence of the need of any conduct are devoid of *Chaaritra-atma*. But, *Chaaritra-atma* certainly has *Dravya-atma* because in absence of *Dravya-atma*, or life itself, there is no scope for right conduct.

The association of *Dravya-atma* with *Virya-atma* is optional because every worldly being having *Dravya-atma* with active potency has *Virya-atma*, but in absence of active potency *Dravya-atma* of *Siddhas* (liberated souls) is devoid of *Virya-atma*. But, *Virya-atma* certainly has *Dravya-atma* because in absence of *Dravya-atma*, or life itself, there is no place for potency.

Association of *Kashaaya-atma* (passion-soul) with following six classes—A *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Yoga-atma* (associated-soul). This is because a soul with passion cannot be without association. But, one having *Yoga-atma* has *Kashaaya-atma* only optionally because a soul with association is with passions as well as without passions.

A *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Upayoga-atma* (active soul). This is because no *jiva* is without an inclination towards activity of soul. But, one having *Upayoga-atma* has *Kashaaya-atma* only optionally because *jiva*s from eleventh to fourteenth *Gunasthaan* (level of spiritual ascendance or level of purity of soul) as well *Siddha*s have *Upayoga-atma* but are devoid of passions.

A *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) has *Jnana-atma* (righteous-soul) only optionally. This is because an unrighteous *jiva* has *Kashaaya-atma* but is devoid of righteousness or *Jnana-atma*, whereas a righteous *jiva* with passions has *Jnana-atma*. And a *jiva* with *Jnana-atma* also has *Kashaaya-atma* only optionally because a *jiva* with right knowledge may be with and without passions both.

A *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Darshan-atma* (perceptive soul) because the faculty of perception is only in living beings and not in the non-living who are also without *Kashaaya-atma*. And a *jiva* with *Darshan-atma* has *Kashaaya-atma* only optionally because a *jiva* with right perception may be with and without passions both.

A *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) only optionally. This is because *jiva*s with passion can be both with and without renunciation. And a *jiva* with *Chaaritra-atma* also has *Kashaaya-atma* only optionally because a *jiva* with right conduct including Saamaayik has *Kashaaya-atma* but one observing *Yathaakhyaat chaaritra* (conduct conforming to perfect purity) is without passions.

A *jiva* having *Kashaaya-atma* (passion-soul) certainly has *Virya-atma* (soul with active potency) because all living beings are endowed with active potency. But a *jiva* with *Virya-atma* has *Kashaaya-atma* only

optionally because a *jiva* with active potency may be with and without passions both.

Association of *Yoga-atma* (associated-soul) with following five classes—A *jiva* having *Yoga-atma* (associated-soul) certainly has *Upayoga-atma* (righteously active soul) because all *jivas* are righteously active. But a *jiva* with *Upayoga-atma* has *Yoga-atma* only optionally because, at fourteenth Gunasthaan, though an Ayogi Kevali (omniscient without association) and Siddhas have *Upayoga-atma*, they are free of any association.

A *jiva* with *Yoga-atma* has *Jnana-atma* (righteous-soul) only optionally because unrighteous *jivas* have association but not right knowledge, thus no *Jnana-atma.* In the same way a *jiva* with *Jnana-atma* has *Yoga-atma* only optionally because, at fourteenth Gunasthaan, though an Ayogi Kevali (omniscient without association) and Siddhas have *Jnana-atma,* they are free of any association.

A *jiva* having *Yoga-atma* (associated-soul) certainly has *Darshan-atma* (perceptive soul) because all *jivas* have perception in the form of general awareness. But a *jiva* with *Darshan-atma* has *Yoga-atma* only optionally because a being with right perception may be and may not be with association.

A *jiva* with *Yoga-atma* has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) only optionally because though having association *jivas* without renunciation do not follow right conduct, thus no *Chaaritra-atma.* In the same way a *jiva* with *Chaaritra-atma* has *Yoga-atma* only optionally because, at fourteenth Gunasthaan, though Ayogi Kevalis have *Chaaritra-atma,* they are free of any association. However, all other beings with *Chaaritra-atma* essentially have *Yoga-atma* because all activities of right conduct including inspection and review are done through association only.

A *jiva* having *Yoga-atma* (associated-soul) certainly has *Virya-atma* (soul with active potency) because association does not manifest without potency. But a *jiva* with *Virya-atma* has *Yoga-atma* only optionally because, at fourteenth Gunasthaan, though an Ayogi Kevali (omniscient without association) has potency he is free of any association. The same is also true

for Karan *Virya-atma* (soul with means of potency) and Labdhi *Virya-atma* (soul with accomplishment of potency). With Karan *Virya-atma* there is *Yoga-atma* but with Labdhi *Virya-atma* it is not.

Association of *Upayoga-atma* (righteously active soul) with following four classes—A *jiva* with *Upayoga-atma* (righteously active soul) has *Jnana-atma* (righteous-soul) only optionally because unrighteous *jivas* have active soul but not right knowledge, thus no *Jnana-atma*. But, a *jiva* having *Jnana-atma* certainly has *Upayoga-atma* because action is intrinsic attribute of soul.

In the same way a *jiva* having *Upayoga-atma* certainly has *Darshan-atma* (perceptive soul) as well as vice versa because action and perception both are intrinsic attributes of soul.

A *jiva* with *Upayoga-atma* (righteously active soul) has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) only optionally because unrestrained *jivas* have active soul but not right conduct. But, a *jiva* having *Chaaritra-atma* certainly has *Upayoga-atma* because action is an intrinsic attribute of soul.

A *jiva* with *Upayoga-atma* (righteously active soul) has *Virya-atma* (soul with active potency) only optionally because Siddhas have active soul but not active potency.

A *jiva* having *Jnana-atma, Darshan-atma, Chaaritra-atma,* and *Virya-atma,* certainly *has Upayoga-atma* because action is an intrinsic attribute of soul. Only a soul endowed with matter is capable of having knowledge (*Jnana*), *Darshan* (perception), *Chaaritra* (conduct), and *Virya* (potency). Matter or the non-living is incapable of having these because it lacks voluntary action.

Association of *Jnana-atma* (righteous-soul) with following three classes—A *jiva* having *Jnana-atma* (righteous-soul) certainly has *Darshan-atma* (perceptive soul) because right knowledge is gained by righteous persons only and through right perception and faith only. But, a *jiva* with *Darshan-atma* has *Jnana-atma* (righteous-soul) only optionally because unrighteous *jivas* have perception but not right knowledge.

A *jiva* with *Jnana-atma* has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) only optionally because a righteous *jiva* without renunciation has *Jnana-atma* but not right conduct. But, a *jiva* having *Chaaritra-atma* certainly has *Jnana-atma* because without right knowledge right conduct is impossible.

A *jiva* with *Jnana-atma* has *Virya-atma* (soul with active potency) only optionally because Siddhas have active soul but not active potency. Also, a *jiva* with *Virya-atma* has *Jnana-atma* (soul with active potency) only optionally because unrighteous *jiva*s have potency but not right knowledge.

Association of *Darshan-atma* (perceptive soul) with following two classes—A *jiva* having *Darshan-atma* (perceptive soul) has *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) and *Virya-atma* (soul with active potency) only optionally because a unrestrained *jiva* with right perception does not have right conduct and a *Siddha* having right perception does not have active potency. Every *jiva* has perception in the form of general awareness.

Association of *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) and *Virya-atma* (soul with active potency)—A *jiva* having *Chaaritra-atma* (right conduct observing soul) certainly has *Virya-atma* (soul with active potency) because without potency right conduct cannot be observed. But, a *jiva* with *Virya-atma* (soul with active potency) has *Chaaritra-atma* because unrestrained *jiva*s have potency but not right conduct.

९. [प्र.] एयासि णं भंते ! दवियायाणं कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायायाओ अणंतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवयोग-दविय-दंसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ।

९. [प्र.] भगवन्! द्रव्यात्मा, कषायात्मा यावत् वीर्यात्मा—इनमें से कौन-सी आत्मा, किससे अल्प, बहुत, यावत् विशेषाधिक है?

[उ.] गौतम! सबसे थोड़ी चारित्रात्माएँ हैं, उनसे ज्ञानात्माएँ अनन्तगुणी हैं, उनसे कषायात्माएँ अनन्तगुणी हैं, उनसे योगात्माएँ विशेषाधिक हैं, उनसे वीर्यात्माएँ विशेषाधिक हैं, उनसे उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा और दर्शनात्मा, ये तीनों विशेषाधिक और परस्पर तुल्य हैं।

9. [Q.] *Bhante !* Of the said *Dravya-atma* (soul entity), *Kashaaya-atma* (passion-soul)... and so on up to... *Virya-atma* (soul with active potency) which is less in number than which... and so on up to... which is much more ?

[Ans.] Gautam ! Minimum of these are *Chaaritra-atma*s, infinite times more than these are *Jnana-atma*s, infinite times more than these are *Kashaaya-atma*s, much more than these are *Yoga-atma*s, much more than these are *Virya-atma*s, much more than these and mutually equivalent are *Upayoga-atma*s, *Dravya-atma*s and *Darshan-atma*s.

विवेचन—उपरोक्त आठ प्रकार की आत्माओं का अल्पबहुत्व मूलपाठ में बताया गया है। उसका कारण यह है—सबसे कम चारित्रात्माएँ हैं, क्योंकि चारित्रवान् जीव संख्यात ही होते हैं। चारित्रात्मा से ज्ञानात्मा अनन्तगुणी हैं, क्योंकि सिद्ध और सम्यग्दृष्टि जीव चारित्री जीवों से अनन्तगुणे हैं। ज्ञानात्मा से कषायात्मा अनन्तगुणी हैं, क्योंकि सिद्ध जीवों की अपेक्षा सकषायी जीव अनन्तगुणे हैं। कषायात्मा से योगात्मा विशेषाधिक हैं, क्योंकि योगात्मा में कषायात्मा जीव तो सम्मिलित हैं ही और जो कषाय रहित है ऐसे योग वाले जीवों का भी इसमें समावेश हो जाता है। योगात्मा से वीर्यात्मा विशेषाधिक हैं, क्योंकि वीर्यात्मा में अयोगी आत्माओं का भी समावेश हो जाता है। उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा और दर्शनात्मा, ये तीनों परस्पर तुल्य हैं, क्योंकि तीनों विशिष्ट आत्माएँ सभी जीवों में सामान्य रूप से पाई जाती हैं, किन्तु वीर्यात्मा से ये तीनों विशेषाधिक हैं, क्योंकि इन तीनों आत्माओं में वीर्यात्मा वाले संसारी जीवों के अतिरिक्त सिद्ध जीवों का भी समावेश होता है।

Elaboration—The reasons for the aforesaid statement about comparative numbers are—Minimum are *Chaaritra-atma*s because the number of jivas following right conduct (initiated ascetics) is countable only. Infinite times more than these are *Jnana-atma*s because the number of Siddhas (liberated souls) and righteous *jiva*s is infinite times more than those with right conduct. Infinite times more than these are *Kashaaya-atma*s because the number of *jiva*s with passions is infinite times more than Siddhas. Much more than these are *Yoga-atmas* because they include all *jiva*s with passions as well as those without passions but with association. Much more than these are *Virya-atma*s because they also include *jiva*s without association. Much more than these and mutually equivalent are *Upayoga-atma*s, *Dravya-atma*s and *Darshan-atma*s because these three types exist naturally in all *jiva*s and as, besides worldly *jiva*s with *Virya-atma*s, they also include Siddhas or liberated souls, they are much more than *Virya-atma*s.

१०. [प्र.] आया भंते ! नाणे, अन्नाणे?

[उ.] **गोयमा ! आया सिय नाणे, सिय अन्नाणे, नाणे पुण नियमं आया।**

१०. [प्र.] भगवन्! आत्मा ज्ञानस्वरूप है अथवा अज्ञानस्वरूप है?

[उ.] गौतम! आत्मा कदाचित् ज्ञानरूप है, कदाचित् अज्ञानरूप है। लेकिन ज्ञान तो नियम से आत्मस्वरूप ही है।

10. **[Q.]** *Bhante !* Is soul (a manifestation of) knowledge (*jnana*) or (a manifestation of) non-knowledge (*ajnana* or ignorance as well as false or pervert knowledge)?

[Ans.] Gautam ! Soul, at times, is (a manifestation of) knowledge (*jnana*) and, at times, (a manifestation of) non-knowledge (ignorance as well as false or pervert knowledge). However, knowledge (*jnana*), as a rule, is (constituent of) soul.

विवेचन—यहाँ गौतम स्वामी द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में श्रमण भगवान महावीर ने जो उत्तर दिया है उसका अर्थ यह है कि आत्मा वैसे तो ज्ञान से अभिन्न है, अर्थात् वह त्रिकाल में भी ज्ञान रहित नहीं हो सकती, परन्तु यहाँ ज्ञान का अर्थ सम्यग्ज्ञान है और अज्ञान का अर्थ मिथ्याज्ञान है। सम्यक्त्व होने पर ज्ञान सम्यग्ज्ञान अर्थात् मति-श्रुतादि रूप हो जाता है और मिथ्यात्व होने पर ज्ञान, अज्ञान यानी मति-अज्ञानादि रूप हो जाता है। वैसे सामान्यतया ज्ञान आत्मा से भिन्न नहीं है, क्योंकि वह आत्मा का धर्म है। इस अभेद दृष्टि से 'ज्ञान को नियम से आत्मा' (आत्मस्वरूप) कहा गया है। ज्ञान का ही विकृत रूप ही अज्ञान है जो मिथ्यात्व के कारण विपरीत (मिथ्या ज्ञान) हो जाता है। इसलिए यहाँ आत्मा को कथञ्चित् अज्ञान रूप कहा गया है। जबकि आचारांग सूत्र में बताया गया है, '**जे आया से विन्नाणे जे विन्नाणे से आया**' (जो आत्मा है, वह विज्ञान रूप है, जो विज्ञान है, वह आत्मरूप है)।

Elaboration—The answer given by Bhagavan Mahavir to Gautam Swami's question implies that though soul is inseparable from knowledge, here *jnana* (knowledge) refers to smayak-*jnana* (right knowledge) and *ajnana* refers to mithya-*jnana* (false or pervert knowledge). In the state of righteousness 'knowledge becomes right knowledge and in the state of unrighteousness it becomes pervert knowledge. However, generally speaking knowledge is not different from soul because it is the intrinsic attribute of soul. From this unitary or monistic view it has been stated that 'knowledge (*jnana*), as a rule, is (constituent of) soul'. The distorted form of *jnana* is *ajnana*; it becomes pervert due to unrighteousness.

That is the reason for the dichotomy here that 'at times soul is knowledge (*jnana*) and, at times, it is non-knowledge (*ajnana*). In *Acharanga Sutra* the statement is 'soul is vi*jnana* (special knowledge) and vi*jnana* is soul.'

११. [प्र.] आया भंते ! नेरइयाणं नाणे, अन्ने नेरइयाणं नाणे?

[उ.] गोयमा ! आया नेरइयाणं सिय नाणे सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया।

११. [प्र.] भगवन्! नैरयिकों की आत्मा ज्ञानरूप है अथवा नैरयिकों की आत्मा अज्ञानरूप है?

[उ.] गौतम! नैरयिकों की आत्मा कथञ्चित् ज्ञानरूप भी है और कथञ्चित् अज्ञानरूप भी है। परन्तु उनका ज्ञान (सम्यग्ज्ञन हो अथवा मिथ्याज्ञान) नियम से आत्मरूप ही है।

11. [Q.] *Bhante !* Is soul of infernal beings knowledge (*jnana*) or non-knowledge ?

[Ans.] Gautam ! Soul of infernal beings, at times, is (a manifestation of) knowledge (*jnana*) and, at times, (a manifestation of) non-knowledge (ignorance as well as false or pervert knowledge). However, their knowledge (right or wrong), as a rule, is (constituent of) soul.

१२. एवं जाव थणियकुमाराणं।

[१२] इसी प्रकार यावत् 'स्तनितकुमार' (भवनपति देव के अन्तिम भेद) तक कहना चाहिए।

12. The same should be stated for other beings ... and so on up to ... Stanit-kumar gods (the last class among abode dwelling gods).

१३. [प्र.] आया भंते ! पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे?

[उ.] गोयमा ! आया पुढविकाइयाणं नियमं अन्नाणे, अण्णाणे वि नियमं आया।

१३. [प्र.] भगवन्! क्या पृथ्वीकायिक जीवों की आत्मा अज्ञानरूप है? अथवा पृथ्वीकायिकों का अज्ञान अन्य अर्थात् आत्मरूप नहीं है?

[उ.] गौतम! पृथ्वीकायिकों की आत्मा नियम से अज्ञान रूप है, परन्तु उनका अज्ञान अवश्य ही आत्मरूप है।

13. [Q.] *Bhante !* Is soul of earth-bodied beings non-knowledge (*ajnana*) or otherwise (Is *ajnana* of earth-bodied beings non-knowledge (*ajnana*) or otherwise ?

[Ans.] Gautam ! Soul of earth-bodied beings is non-knowledge (*ajnana*) and *ajnana* of earth-bodied beings is certainly soul.

१४. एवं जाव वणस्सइकाइयाणं।

[१४] इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक कहना चाहिए।

14. The same is true for other bodied beings ... and so on up to ...plant bodied beings.

१५. बेइंदिय-तेइंदिय. जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं।

[१५] द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय (आदि से लेकर) यावत् वैमानिक तक के (जीवों तक का कथन) नैरयिकों के समान जानना चाहिए।

15. The pattern of infernal beings holds good also for two-sensed beings, three sensed beings... and so on up to... Vaimanik Dev (celestial-vehicular gods).

१६. [प्र.] आया भंते ! दंसणे, अन्ने दंसणे?

[उ.] गोयमा ! आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया।

१६. [प्र.] भगवन्! आत्म-दर्शनरूप है, अथवा दर्शन उससे भिन्न है?

[उ.] गौतम! आत्मा नियमतः दर्शनरूप है और दर्शन भी नियमतः आत्मरूप है।

16. [Q.] *Bhante !* Is soul (a manifestation of) perception (*darshan*) or *darshan* is different from it ?

[Ans.] Gautam ! Soul, as a rule, is (a manifestation of) perception (*darshan*) and *darshan* too, as a rule, is (constituent of) soul.

१७. [प्र.] आया भंते ! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे?

[उ.] गोयमा ! आया नेरइयाणं नियमं दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया।

१७. [प्र.] भगवन्! नैरयिकों की आत्मा दर्शनरूप है, अथवा नैरयिकों का दर्शन उनसे भिन्न है?

[उ.] गौतम! नैरयिक जीवों की आत्मा नियमतः दर्शनरूप है, उनका दर्शन भी नियमतः आत्मरूप है।

17. [Q.] *Bhante !* Is soul of infernal beings (a manifestation of) perception (*darshan*) or *darshan* is different from it ?

[Ans.] Gautam ! Soul of infernal beings, as a rule, is (a manifestation of) perception (*darshan*) and *darshan* too, as a rule, is (constituent of) soul.

१८. एवं जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ।

[१८] इसी प्रकार यावत् वैमानिकों तक चौबीस दण्डकों के (दर्शन) विषय में (जानना चाहिए।)

18. The same is true for beings of all twenty four places of suffering... and so on up to... Vaimaniks.

विवेचन—'आत्मा दर्शन है, दर्शन आत्मा है'—इसी नियम के अनुसार चौबीस दण्डकवर्ती जीवों के लिए यहाँ दर्शन के विषय में कथन किया गया है क्योंकि सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों में दर्शन सामान्य रूप से अवश्य रहता है।

Elaboration—Soul is (a manifestation of) perception (*darshan*) and *darshan* is (constituent of) soul. All beings of all the twenty four places of suffering (*dandak*) adhere to this rule because all beings have the faculty of perception.

१९-१. [प्र.] आया भंते ! रयणप्पभा पुढवी, अन्ना रयणप्पभा पुढवी?

[उ.] गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिए नो आया, सिय अवत्तव्वं—आया इ य, नो आया इ य।

१९-१. [प्र.] भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी आत्मरूप है अथवा वह अन्य रूप है?

[उ.] गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी कथंचित् आत्मरूप (सद्रूप) है और कथंचित् नो-आत्मरूप (असद्रूप) है तथा आत्मरूप भी है एवं नो-आत्मरूप भी है, इसलिए कथंचित् अवक्तव्य है।

19-1. [Q.] *Bhante !* Is Ratnaprabha Prithvi self-morphic (*atma-roop* or existent) or non-self-morphic (*anya* or non-existent) ?

[Ans.] Gautam ! Ratnaprabha Prithvi is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent) and perhaps inexpressible – being both.

१९-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं—आया इ य, नो आया इ य'?

[उ.] गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं-रयणप्पभा पुढवी आया इ य, नो आया इ य। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आया इ य।

१९-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से आप ऐसा कहते हैं कि रत्नप्रभा पृथ्वी कथंचित् आत्मरूप (सद्रूप), कथंचित् नो-आत्मरूप (असद्रूप) और आत्मरूप एवं नो-आत्मरूप (उभयरूप) होने से अवक्तव्य है?

[उ.] गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी अपने स्वरूप की दृष्टि से कथन किए जाने पर आत्मरूप (सद्रूप) है, पर-रूप की दृष्टि से कथन किए जाने पर नो-आत्मरूप (असद्रूप) है और उभयरूप की विवक्षा से सद्-असद्रूप होने से अवक्तव्य है। इसी कारण पूर्वोक्त रूप से यावत् उसे अवक्तव्य कहा गया है।

19-2. [Q.] *Bhante !* Why do you say that Ratnaprabha Prithvi (first hell) is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent) and perhaps inexpressible – being both ?

[Ans.] Gautam ! In context of its own attributes it is *atma-roop* (self-morphic or existent); in context of other attributes it is no-*atma-roop* or *anya* (non-self-morphic or non-existent); and in context of both *atma-roop* and no-*atma-roop*, being both existent and non-existent, it is inexpressible. That is why it is said as aforesaid... and so on up to... it is inexpressible.

२०. [प्र.] आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी?

[उ.] जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभा वि।

२०. [प्र.] भगवन्! शर्कराप्रभा पृथ्वी आत्मरूप (सद्रूप) है? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी के (विषय में कथन किया गया है), उसी प्रकार शर्कराप्रभा के विषय में भी (कहना चाहिए।)

20. [Q.] *Bhante !* Same question about Sharkaraprabha Prithvi ?

[Ans.] What has been stated about Sharkaraprabha Prithvi (second hell) should be repeated for Sharkaraprabha Prithvi.

२१. एवं जाव अहेसत्तमा।

[२१] इसी प्रकार यावत् अधःसप्तमपृथ्वी (सातवीं नरक) तक कहना चाहिए।

21. In the same way repeat for all hells... and so on up to... Adhah-saptam Prithvi (seventh hell).

२२-१. [प्र.] आया भंते ! सोहम्मे कप्पे? पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया, सिय नो आया, जाव नो आया इ य।

२२-१. [प्र.] भगवन्! (क्या) सौधर्म कल्प आत्मरूप (सद्रूप) है? इत्यादि प्रश्न है।

[उ.] गौतम! सौधर्म कल्प कथंचित् आत्मरूप है, कथंचित् नो-आत्मरूप है तथा कथंचित् आत्मरूप-नो-आत्मरूप (सद्-असद्रूप) होने से अवक्तव्य है।

22-1. **[Q.]** *Bhante !* Same question about Saudharma Kalp (a divine realm)?

[Ans.] Gautam ! Saudharma Kalp is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent) and perhaps inexpressible – being both.

२२-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो आया इ य?

[उ.] गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आया इ य, नो आया इ य। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आया इ य।

२२-२. [प्र.] भगवन्! क्या कारण है कि (सौधर्मकल्प कथंचित आत्मरूप है, कथंचित नो आत्मरूप है) यावत् कथंचित आत्मरूप नो आत्मरूप (सद्-असद्रूप) होने से अव्यक्त है?

[उ.] गौतम! (सौधर्म कल्प) स्व-स्वरूप की दृष्टि से कथन किये जाने पर आत्मरूप है, पर-रूप की दृष्टि से कहे जाने पर नो-आत्मरूप है और उभयरूप की विवक्षा से अवक्तव्य है। इसी कारण उपर्युक्त रूप से यावत् उसे अवक्तव्य कहा गया है।

22-2. **[Q.]** *Bhante !* Why do you say that Saudharma Kalp (a divine realm) is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent) and perhaps inexpressible – being both ?

[Ans.] Gautam ! (Saudharma Kalp) In context of its own attributes it is *atma-roop* (self-morphic or existent); in context of other attributes it is no-*atma-roop* or *anya* (non-self-morphic or non-existent); and in context of both *atma-roop* and *no-atma-roop*, being both existent and non-existent, it is inexpressible. That is why it is said as aforesaid... and so on up to... it is inexpressible.

२३. एवं जाव अच्चुए कप्पे।

[२३] इसी प्रकार यावत् अच्युत कल्प तक (पूर्वोक्त स्वरूप के विषय में जानना चाहिए।)

23. The same is true for other divine realms... and so on up to... Achyut Kalp.

२४. [प्र.] आया भंते ! गेवेज्जविमाणे, अन्ने गेविज्जविमाणे?

[उ.] एवं जहा रयणप्पभा तहेव।

२४. [प्र.] भगवन्! ग्रैवेयक विमान आत्मरूप (सद्रूप) है? अथवा वह उससे भिन्न (नो-आत्मरूप) है?

[उ.] गौतम! इसका कथन रत्नप्रभा पृथ्वी के समान करना चाहिए।

24. [Q.] *Bhante!* Is Graiveyak Vimaan (a divine realm) self-morphic (*atma-roop* or existent) or non-self-morphic (*anya* or non-existent)?

[Ans.] Gautam! Repeat what has been said about Ratnaprabha Prithvi.

२५. एवं अणुत्तरविमाणा वि।

[२५] इसी प्रकार अनुत्तर विमान तक कहना चाहिए।

25. The same is also true for Anuttar Vimaan (a divine realm).

२६. एवं ईसिपब्भारा वि।

[२६] इसी प्रकार ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक कहना चाहिए।

26. The same is also true up to Ishatpragbhaara Prithvi (*Siddha Lok*).

विवेचन—प्रस्तुत सूत्रों में रत्नप्रभा पृथ्वी से लेकर ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक के आत्मरूप और अनात्मरूप के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। प्रस्तुत प्रश्नोत्तरों में आत्मा का अर्थ सद्रूप और अनात्मा (अन्य) का अर्थ असद्रूप बताया गया है। जब किसी भी वस्तु को एक साथ सद्रूप और असद्रूप नहीं कहा जा सकता तब वह वस्तु 'अवक्तव्य' कहलाती है।

रत्नप्रभा आदि पृथ्वी : तीन रूपों में—रत्नप्रभा पृथ्वी से लेकर ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक—ये स्व-स्वरूप की अपेक्षा से अर्थात्—अपने वर्णादि पर्यायों से—सद् (आत्म) रूप है। पररूप की अर्थात्—परवस्तु की पर्यायों की अपेक्षा से—असद् (अनात्म) रूप है और उभयरूप—स्व-पर-पर्यायों की अपेक्षा से, आत्म (सद्) रूप और अनात्म (असद्) रूप, इन दोनों का एक साथ कहना अशक्य होने से अवक्तव्य है। इस दृष्टि से यहाँ प्रत्येक पृथ्वी के सद्रूप, असद्रूप और अवक्तव्य, ये तीन भंग होते हैं।

Elaboration—The aforesaid statements are about the form of all realms from first hell to *Siddha Lok* (the realm of liberated souls). In these questions self (*atma*) means existent and non-self (*anatma* or the other) means non-existent. As a thing cannot be called existent and non-existent at the same time it is called inexpressible (*avaktavya*).

Ratnaprabha Prithvi etc.—All the realms from first hell to *Siddha Lok* (the realm of liberated souls) are, in context of their own attributes like colour, *atma-roop* (self-morphic or existent). In context of other attributes, or attributes of other things, they are *no-atma-roop* or *anya* (non-self-morphic or non-existent); and in context of both *atma-roop* and *no-atma-roop*, being both existent and non-existent, they are called inexpressible. From this angle there are three alternatives for all lands or realms.

२७. [प्र.] आया भंते ! परमाणुपोग्गले, अन्ने परमाणुपोग्गले ?

[उ.] एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे।

२७. [प्र.] भगवन्! परमाणु-पुद्गल आत्मरूप (सद्रूप) अथवा अन्य (अनात्म–असद्रूप) है?

[उ.] (गौतम!) जिस प्रकार सौधर्म कल्प के विषय में कहा है, उसी प्रकार परमाणु-पुद्गल के विषय में कहना चाहिए।

27. [Q.] *Bhante !* Is *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or ultron) self-morphic (*atma-roop* or existent) or non-self-morphic (*anya* or non-existent) ?

[Ans.] Gautam ! Repeat what has been said about Saudharma Kalp also for *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or ultron).

२८-१. [प्र.] आया भंते ! दुपएसिए खंधे, अन्ने दुपएसिए खंधे ?

[उ.] गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ३, सिय आया य नो आया य ४, सिय आया य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ५, सिय नो आया य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ६।

२८-१. [प्र.] भगवन्! द्विप्रदेशिक स्कन्ध आत्मरूप (सद्रूप) है, (अथवा) वह अन्य (अनात्मरूप-असद्रूप) है?

[उ.] गौतम! १. द्विप्रदेशी स्कन्ध कथंचित् सद्रूप है, २. कथंचित् असद्रूप है, ३. सद्-असद्रूप होने से कथंचित् अवक्तव्य है, ४. कथंचित् सद्रूप है और कथंचित् असद्रूप है, ५. कथंचित् सद्रूप है और सद्-असद्-उभयरूप होने से अवक्तव्य है और ६. कथंचित् असद्रूप है और सद्-असद्-उभयरूप होने से अवक्तव्य है।

28-1. [Q.] *Bhante !* Is a bisectional aggregate (*dvipradeshi skandh*) self-morphic (*atma-roop* or existent) or non-self-morphic (*anya* or non-existent) ?

[Ans.] Gautam ! (1) a bisectional aggregate (*dvipradeshi skandh*) is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), (2) perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent), (3) perhaps inexpressible – being both, (4) perhaps existent and perhaps non-existent, (5) perhaps existent and perhaps inexpressible, and (6) perhaps non-existent and perhaps inexpressible.

२८-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं. तं चेव जाव नो आया य, अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य?

[उ.] गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १; परस्स आइट्ठे नो आया २; तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं—दुपएसिए खंधे आया इ य, नो आया इ य ३; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य नो आया य ४; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य, अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ५; देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे नो आया य, अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ६। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आया इ य।

२८-२. [प्र.] भगवन्! क्या कारण है कि ऐसा (द्विप्रदेशी स्कन्ध कथंचित् सद्रूप है, इत्यादि।) यावत् कथंचित् असद्रूप है और सद्-असद्-उभयरूप होने से अवक्तव्य है?

[उ.] गौतम! द्विप्रदेशी स्कन्ध १. अपने स्वरूप की अपेक्षा से कथन किये जाने पर सद्रूप है, २. पर-स्वरूप की अपेक्षा से कथन किए जाने पर असद्रूप है और ३. उभयरूप की अपेक्षा से अवक्तव्य है तथा ४. सद्भाव पर्याय वाले अपने एक देश की अपेक्षा से व्यपदिष्ट होने पर द्विप्रदेशी स्कन्ध सद्रूप है तथा असद्भाव पर्याय वाले एक देश की अपेक्षा से आदिष्ट होने पर, असद्रूप है। (इस दृष्टि से द्विप्रदेशी स्कंध कथंचित् सद्रूप और कथंचित् असद्रूप है।) ५. सद्भाव पर्याय वाले एक देश की अपेक्षा से आदिष्ट होने पर सद्रूप और सद्भाव-

असद्भाव वाले दूसरे देश की अपेक्षा से असद्रूप-उभयरूप होने से अवक्तव्य है, ६. एक देश की अपेक्षा से असद्भाव पर्याय की विवक्षा से तथा दूसरे देश के सद्भाव-असद्भाव रूप उभय-पर्याय की अपेक्षा से द्विप्रदेशी स्कन्ध असद्रूप और अवक्तव्यरूप है। इसी कारण (द्विप्रदेशी स्कन्ध को) ऐसा (पूर्वोक्त प्रकार से) यावत् कथंचित् असद्रूप और सद्-असद्-उभयरूप होने से अवक्तव्य कहा गया है।

28-2. [Q.] What is the reason for this (a bisectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps non-existent and perhaps inexpressible?

[Ans.] Gautam! A bisectional aggregate (*dvipradeshi skandh*) (1) is existent in context of its own form (attributes); (2) is non-existent in context of other form (attributes); (3) is inexpressible in context of both forms (attributes); (4) is existent with reference to its existent section and is non-existent with reference to its non existent section; (5) is existent with reference to its existent section and is inexpressible with reference to its inexpressible section; and (6) is non-existent with reference to its non existent section and is inexpressible with reference to its inexpressible section. That is why this (a bisectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps non-existent and perhaps inexpressible.

विवेचन—प्रस्तुत दो सूत्रों में परमाणु-पुद्गल एवं द्विप्रदेशी स्कन्ध के सद्-असद्रूप सम्बन्धी भंगों का निरूपण किया गया है।

परमाणु पुद्गल के असंयोगी तीन भंग होते हैं—(१) सद्रूप, (२) असद्रूप एवं (३) अवक्तव्य।

द्विप्रदेशी स्कन्ध के छह भंग होते हैं जिनमें तीन असंयोगी भंग पूर्ववत् सकल स्कन्ध की अपेक्षा से (१) सद्रूप, (२) असद्रूप और (३) अवक्तव्य है और तीन **द्विकसंयोगी** भंग देश की अपेक्षा से है, (४) द्विप्रदेशी स्कन्ध होने से उसके एक देश की स्वपर्यायों द्वारा सद्रूप की विवक्षा की जाए और दूसरे देश की पर-पर्यायों द्वारा असद्रूप से विवक्षा की जाय तो द्विप्रदेशी स्कन्ध अनुक्रम से कथंचित् सद्रूप और कथंचित् असद्रूप होता है। (५) उसके एक देश की स्वपर्यायों द्वारा सद्रूप से विवक्षा की जाए और दूसरे देश से सद्-असद्-उभयरूप से विवक्षा की जाए तो कथंचित् सद्रूप और कथंचित् अवक्तव्य कहलाता है। (६) जब द्विप्रदेशी स्कन्ध के एक देश की पर्यायों द्वारा असद्रूप से विवक्षा की जाए और दूसरे देश की उभयरूप से विवक्षा की जाए तो असद्रूप और अवक्तव्य कहलाता है।

कथंचित् सद्रूप, कथंचित् असद्रूप और कथंचित् अवक्तव्यरूप, इस प्रकार सातवाँ भंग द्विप्रदेशी स्कन्ध में नहीं बनता है। क्योंकि उसके केवल दो ही अंश है।

Elaboration—In these two statements the alternatives of existent, non-existent and both forms of *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter or ultron) and bisectional aggregate (*dvipradeshi skandh*) have been defined. There are three alternatives for ultron individually (1) existent (*sad-roop*), (2) non-existent (*asad-roop*) and (3) inexpressible (*avaktavya*).

There are six alternatives for a bisectional aggregate (*dvipradeshi skandh*). Of these first three are with reference to the aggregate individually—(1) existent (*sad-roop*), (2) non-existent (*asad-roop*) and (3) inexpressible (*avaktavya*). Other three alternatives are with reference to combinations of two sections—(4) being a bisectional aggregate it is existent with reference to its existent section and is non-existent with reference to its non existent section; (5) is existent with reference to its existent section and is inexpressible with reference to its inexpressible section; and (6) is non-existent with reference to its non existent section and is inexpressible with reference to its inexpressible section. That is why this (a bisectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps non-existent and perhaps inexpressible.

As it has only two sections there is no scope here for a seventh alternative like perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible.

२१-१. [प्र.] आया भंते ! तिपएसिए खंधे, अन्ने तिपएसिए खंधे ?

[उ.] गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं-आया इ य नो आया इ य ३, सिय आया य नो आया य ४, सिय आया य नो आयाओ य ५, सिय आयाओ य नो आया य ६, सिय आया य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ७, सिय आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नो आयाओ य ८, सिय आयाओ य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ९, सिय नो आया य अवत्तव्वं-आया इ य नो आया इ य १०, सिय नो आया य अवत्तव्वाइं-आयाओ य नो आयाओ य ११, सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं-आया इ य नो आया इ य १२, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १३।

२९-१ [प्र.] भगवन्! त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मरूप (सद्रूप) है अथवा उससे अन्य (असद्रूप) है?

[उ.] गौतम! त्रिप्रदेशी स्कन्ध १. कथंचित् आत्मा (सद्रूप) है। २. कथंचित् नोआत्मा (असद्रूप) है। ३. (आत्मा तथा नो-आत्मा) (सद्-असद्-) उभयरूप होने से कथंचित् अवक्तव्य है। ४. कथंचित् आत्मा (सद्रूप) और कथंचित् नो आत्मा (असद्रूप) है। ५. कथंचित् आत्मा (सद्रूप) और अनेक नो आत्माएँ (असद्रूप) हैं। ६. कथंचित् अनेक आत्माएँ (असद्रूप) तथा नो-आत्मा (असद्रूप) है। ७. कथंचित् आत्मा (सद्रूप) और आत्मा एवं नो-आत्मा (सद्-असद्-) उभयरूप होने से अवक्तव्य है। ८. कथंचित् आत्मा (सद्रूप) तथा अनेक आत्माएँ एवं नो-आत्माएँ (सद्-असद्रूप) होने से अवक्तव्य है। ९. कथंचित् आत्माएँ (अनेक असद्रूप) तथा आत्मा-नो आत्मा (सद्-असद्) उभयरूप होने से--अवक्तव्य है। १०. कथंचित् नो आत्मा (असद्रूप) तथा आत्मा नो आत्मा (सद्-असद्) उभयरूप होने से—अवक्तव्य है। ११. कथंचित् नो आत्मा (असद्रूप), तथा आत्माएँ नो-आत्माएँ (अनेक सद्-असद्रूप) उभयरूप होने से—अवक्तव्य है। १२. कथंचित् नो आत्माएँ (अनेक असद्रूप) तथा आत्माएँ नो-आत्माएँ (अनेक सद्-असद्रूप) उभयरूप होने से—अवक्तव्य हैं और १३. कथंचित् आत्मा (सद्रूप), नो-आत्मा (असद्रूप) और आत्मा-नो आत्मा (सद्-असद्) उभयरूप होने से—अवक्तव्य है।

29-1. **[Q.]** *Bhante!* Is a tri-sectional aggregate (*tripradeshi skandh*) self-morphic (*atma-roop* or existent) or non-self-morphic (*anya* or non-existent)?

[Ans.] Gautam! (1) a tri-sectional aggregate (*tripradeshi skandh*) is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), (2) perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent), (3) perhaps inexpressible–being both (*atma* and *no-atma*), (4) perhaps existent and perhaps non-existent, (5) perhaps existent and perhaps many non-existents, (6) perhaps many existent and perhaps non-existent, (7) perhaps existent and perhaps inexpressible– being both (*atma* and *no-atma*), (8) perhaps existent and perhaps many inexpressible– being both (*atma* and *no-atma*), (9) perhaps many existent and perhaps inexpressible–being both (*atma* and *no-atma*), (10) perhaps non-existent and perhaps inexpressible–being both (*atma* and *no-atma*), (11) perhaps non-existent and perhaps many inexpressible–being both (*atma* and *no-atma*), (12) perhaps many non-existent and perhaps many inexpressible–

being both (*atma* and *no-atma*), and (13) perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible–being both (*atma* and *no-atma*).

२९-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'तिपएसिए खंधे सिय आया य. एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं–आया-इ य नो आया इ य?

[उ.] गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १; परस्स आइट्ठे नो आया २; तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आया इ य नो आया इ य ३; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नो आयाओ य ४; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नो आयाओ य ५; देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नो आया य ६; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं–आया इ य नो आया इ य ७; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं–आयाओ य नो आयाओ य ८; देसा आइट्ठे सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं–आया इ य नो आया इ य ९; एए तिण्णि भंगा। देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं–आया इ य नो आया इ य १०; देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नो आया अवत्तव्वाइं–आयाओ य नो आयाओ य ११; देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नो आयाओ य अवत्तव्वं–आया इ य नो आया इ य १२; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तियएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं–आया इ य नो आया इ य १३; से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-तिपएसिए खंधे सिय आया. तं चेव जाव नो आया इ य।

२९-२ [प्र.] भगवन्! किस कारण से आप इस प्रकार कहते हैं कि त्रिप्रदेशी स्कन्ध कथंचित् आत्मा है, इत्यादि इस तरह सब पूर्ववत् उच्चारण करना चाहिए। यावत्–कथंचित् आत्मा है, नो आत्मा है और आत्मा-नो आत्म उभय रूप होने से अवक्तव्य है?

[उ.] गौतम! त्रिप्रदेशी स्कन्ध १. अपने आदेश (अपेक्षा) से आत्मा (सद्रूप) है; २. पर के आदेश से नो आत्मा (असद्रूप) है, ३. उभय के आदेश से आत्मा और नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप होने से अवक्तव्य है। ४. एक देश के आदेश से और सद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से वह त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मरूप है तथा एक देश के आदेश और असद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से वह त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो-आत्मारूप है। ५. एक देश के आदेश और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से वह

त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा रूप है तथा बहुत देशों के आदेश और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से, वह त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो आत्माएँ हैं। ६. बहुत देशों के आदेश और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कंध आत्माएँ है तथा एक देश के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो आत्मा है। ७. एक देश के आदेश से और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कंध आत्मा है और एक देश के आदेश से और उभय-(सद्भाव और असद्भाव) पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा तथा नो आत्मा—उभयरूप होने से अवक्तव्य है। ८. त्रिप्रदेशी स्कंध एक देश के आदेश से और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से आत्मा तथा बहुत देशों के आदेश से और उभय पर्याय की विवक्षा से आत्माएँ तथा नो आत्माएँ, इस प्रकार उभयरूप होने से अवक्तव्य है। ९. त्रिप्रदेशी स्कंध बहुत देशों के आदेश से और सद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से आत्माएँ तथा एक देश के आदेश से और उभय पर्याय की अपेक्षा से आत्मा तथा नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। ये तीन भंग जानने चाहिए। १०. एक देश के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से एवं उभय पर्याय की अपेक्षा से, त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो आत्मा और आत्मा-नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। ११. एक देश के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से तथा बहुत देशों के आदेश से और तदुभय-पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध, नो आत्मा और आत्माएँ तथा नो आत्माएँ इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। १२. बहुत देशों के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से और तदुभय पर्याय की अपेक्षा से, त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो-आत्माएँ और आत्मा तथा नो-आत्मा इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। १३. एक देश के आदेश से और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से, एक देश के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से, त्रिप्रदेशी स्कन्ध कथंचित् आत्मा, नो आत्मा और आत्मा-नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। इसलिए हे गौतम! त्रिप्रदेशी स्कन्ध को कथंचित् आत्मा, यावत्-आत्मा-नो आत्मा उभयरूप से अवक्तव्य कहा गया है।

29-2. [Q.] What is the reason for this (a tri-sectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible ?

[Ans.] Gautam ! A tri-sectional aggregate (*tripradeshi skandh*) (1) is existent in context of its own form (as tri-sectional aggregate); (2) is non-existent in context of other form; (3) is inexpressible in context of both forms; (4) is existent with reference to one of its sections in existent mode and is non-existent with reference to one of its sections in non-existent mode; (5) is existent with reference to one of its sections in existent mode

and is non-existent with reference to many of its sections in non-existent mode; (6) is existent with reference to many of its sections in existent mode and is non-existent with reference to one of its sections in non-existent mode; (7) is existent with reference to one of its sections in existent mode and is inexpressible with reference to one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode; (8) is existent with reference to one of its sections in existent mode and is inexpressible with reference to many of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode; (9) is existent with reference to many of its sections in existent mode and is inexpressible with reference to one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode (know these three alternatives); (10) is non-existent with reference to one of its sections in non-existent mode and is inexpressible with reference to one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode; (11) is non-existent with reference to one of its sections in non-existent mode and is inexpressible with reference to many of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode; (12) is non-existent with reference to many of its sections in non-existent mode and is inexpressible with reference to one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode; (13) is perhaps existent, is perhaps non-existent and perhaps inexpressible with reference to one of its sections in existent mode, one of its sections in non-existent mode and one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode. That is why, O Gautam ! It is said that this (a tri-sectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible.

विवेचन—प्रस्तुत विषय में त्रिप्रदेशी स्कन्ध के तेरह भंग होते हैं। जिनमें से प्रथम तीन भंग सकलादेश के कारण सम्पूर्ण स्कन्ध की अपेक्षा से असंयोगी है, तत्पश्चात् नौ भंग द्विकसंयोगी हैं तथा एक भंग (तेरहवाँ) त्रिकसंयोगी है।

Elaboration—In this context there are thirteen alternatives for a tri-sectional aggregate. Of these the first three alternatives are in context of the aggregate and with reference to all sections; thus free of combinations. The following nine alternatives are with reference to combinations of two. The last alternative is with reference of combination of three.

३०-१. [प्र.] आया भंते! चउप्पएसिए खंधे, अन्ने. पुच्छा?

[उ.] गोयमा! चउप्पएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य ३, सिय आया य नो आया य ४-७, सिय आया य अवत्तव्वं ८-११, सिय नो आया य अवत्तव्वं १२-१५, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १६, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नो आयाओ य १७, सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १८, सिय आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १९।

३०-१ [प्र.] भगवन्! चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्मारूप (सद्‌रूप) है, अथवा उससे अन्य (असद्‌रूप) है?

[उ.] गौतम! चतुष्प्रदेशी स्कन्ध—(१) कथंचित् आत्मा है, (२) कथंचित् नो आत्मा है, (३) आत्मा-नो-आत्मा उभयरूप होने से—अवक्तव्य है, (४-७) कथंचित् आत्मा और नो आत्मा है (एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा से चार भंग); (८-११) कथंचित् आत्मा और अवक्तव्य है (एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा से चार भंग); (१२-१५) कथंचित् नो आत्मा और अवक्तव्य है; (एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा से चार भंग); (१६) कथंचित् आत्मा और नो आत्मा तथा आत्मा-नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। (१७) कथंचित् आत्मा और नो आत्मा तथा आत्माएँ और नो-आत्माएँ इस प्रकार उभय होने से अवक्तव्य है। (१८) कथंचित् आत्मा और नो आत्माएँ तथा आत्मा-नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप होने से—(कथंचित्) अवक्तव्य है और (१९) कथंचित् आत्माएँ, नो-आत्मा तथा आत्मा-नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप होने से (कथंचित्) अवक्तव्य हैं।

30-1. [Q.] *Bhante!* Is a tetra-sectional aggregate (*chatushpradeshi skandh*) self-morphic (*atma-roop* or existent) or non-self-morphic (*anya* or non-existent)?

[Ans.] Gautam! (1) a tetra-sectional aggregate (*chatushpradeshi skandh*) is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), (2) perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent), (3) perhaps inexpressible – being both (*atma* and *no-atma*); (4-7) perhaps existent and perhaps non-existent (four alternatives with reference to singular and plural); (8-11) perhaps existent and perhaps inexpressible–being both (*atma* and *no-atma*) (four alternatives with reference to singular and plural); (12-15) perhaps non-existent and perhaps inexpressible – being both (*atma* and *no-atma*) (four alternatives

with reference to singular and plural); (16) perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible – being both (*atma* and *no-atma*); (17) perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps many inexpressibles – being both (many atmas and many *no-atmas*); (18) perhaps existent, perhaps many non-existents (many *no-atmas*) and perhaps inexpressible – being both (*atma* and *no-atma*); (19) perhaps many existents (many *atmas*), perhaps non-existent and perhaps inexpressible – being both (*atma* and *no-atma*).

३०-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया य, नो आया य, अवत्तव्वं. तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं?

[उ.] गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १, परस्स आइट्ठे नो आया २, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं. ३, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो, सब्भावपज्जवेणं तदुभएण य चउभंगो ८-११, असब्भावेणं तदुभएण य चउभंगो १२-१५; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य, नो आया य, अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १६; देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य, नो आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नो आयाओ य १७, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य, नो आयाओ य, अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १८, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य, नो आया य, अवत्तव्वं—आया इ य नो आया इ य १९। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं। निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आया इ य।

३०-२ [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहते हैं कि चतुष्प्रदेशी स्कन्ध कथंचित् आत्मा (सद्रूप) आदि होता है?

[उ.] गौतम! (चतुष्प्रदेशी स्कन्ध) (१) अपने आदेश (अपेक्षा) से आत्मा (सद्रूप) है, (२) पर के आदेश से नो आत्मा है; (३) तदुभय (आत्मा और नो-आत्मा, इस प्रकार उभयरूप होने से) के आदेश से अवक्तव्य है। (४-७) एक देश के आदेश से और सद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से और असद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से (एकवचन और बहुवचन के आश्रयी) चार भंग होते हैं। (८-११) सद्भाव पर्याय और तदुभय पर्याय की अपेक्षा से (एकवचन-बहुवचन-आश्रयी) चार भंग होते हैं। (12-15) असद्भावपर्याय और तदुभयपर्याय

की अपेक्षा से (एकवचन-बहुवचन-आश्रयी) चार भंग होते हैं। (१६) एक देश के आदेश से और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से और असद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से एवं बहुत देशों के आदेश से तथा तदुभय-पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध, आत्मा, नो-आत्मा एवं आत्मा-नो-आत्मा-उभयरूप होने से अवक्तव्य है। (१७) एक देश के आदेश से और सद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से एवं बहुत देशों के आदेश से तदुभय-पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्मा, नो आत्मा एवं आत्माएँ-नो-आत्माएँ इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। (१८) एक देश के आदेश से और सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से तथा बहुत देशों के आदेश से और असद्भाव पर्यायों की अपेक्षा से एवं एक देश के आदेश से और तदुभय पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्मा, नो-आत्माएँ एवं आत्मा-नो-आत्मा उभयरूप से अवक्तव्य है। (१९) बहुत देशों के आदेश से और सद्भाव-पर्यायों की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से और असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से एवं एक देश के आदेश से और तदुभय पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्माएँ, नो-आत्मा और आत्मा-नो आत्मा इस प्रकार उभयरूप से अवक्तव्य है। इस कारण हे गौतम! ऐसा कहा जाता है कि चतुष्प्रदेशी स्कन्ध कथंचित् आत्मा है, कथंचित् नो आत्मा है और कथंचित् अवक्तव्य है। इस निक्षेप में पूर्वोक्त सभी भंग यावत् 'नो-आत्मा है' तक कहना चाहिए।

30-2. **[Q.]** What is the reason for this (a tetra-sectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible ?

[Ans.] Gautam ! A tetra-sectional aggregate (*chatushpradeshi skandh*) (1) is existent in context of its own form (as tetra-sectional aggregate); (2) is non-existent in context of other form; (3) is inexpressible in context of both forms; (4-7) with reference to one of its sections in existent mode and with reference to one of its sections in non-existent mode there are four alternatives in context of singular and plural; (8-11) with reference to existent mode and with reference to inexpressible mode there are four alternatives in context of singular and plural; (12-15) with reference to non-existent mode and inexpressible mode there are four alternatives in context of singular and plural; (16) is perhaps existent, is perhaps non-existent and perhaps inexpressible with reference to one of its sections in existent mode, one of its sections in non-existent mode and one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode. (17) is perhaps existent, is perhaps non-existent and perhaps inexpressible with reference to one of its

sections in existent mode, one of its sections in non-existent mode and many of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode. (18) is perhaps existent, is perhaps non-existent and perhaps inexpressible with reference to one of its sections in existent mode, many of its sections in non-existent mode and one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode. (19) is perhaps existent, is perhaps non-existent and perhaps inexpressible with reference to many of its sections in existent mode, one of its sections in non-existent mode and one of its sections in inexpressible (being existent and non-existent both) mode. That is why, O Gautam! It is said that this (tetra-sectional aggregate is perhaps existent)... and so on up to... perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible.

विवेचन—चतुष्प्रदेशी स्कन्ध को त्रिप्रदेशी स्कन्ध के समान जानना चाहिए। अन्तर मात्र इतना है कि चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के १९ भंग बनते हैं। सप्तभंगी में से तीन भंग तो सकलादेश की विवक्षा एवं सम्पूर्ण स्कन्ध की अपेक्षा से असंयोगी होते हैं। शेष सप्तभंगी के चार भंगों में प्रत्येक के चार-चार विकल्प होते हैं। उनमें बारह भंग तो द्विसंयोगी होते हैं शेष चार भंग त्रिसंयोगी होते हैं।

रेखाचित्र इस प्रकार है—

३	१२	४	—
आ. नो. अवक्तव्य १ १ १	११ १२ २१ २२	१११ ११२ १२१ २११	= १९ भंग

Elaboration—A tetra-sectional aggregate (*chatushpradeshi skandh*) follows the same pattern as a tri-sectional aggregate (*tripradeshi skandh*). The only difference is that there are 19 alternatives for tetra-sectional aggregate. Of the aforesaid seven sets three are for the aggregate and with reference to all sections and thus without combinations. The remaining four sets have four alternative combinations each; they are formed by twelve alternatives with combination of two and four alternatives of combination of three.

Table—

3	12	4	T
E. N.E. Inex. 1 1 1	11 12 21 22	111 112 121 211	= 19

३१-१. [प्र.] आया भंते ! पंचपएसिए खंधे, अन्ने पंचपएसिए खंधे?

[उ.] गोयमा ! पंचपएसिए खंधे सिय आया १, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं–आया इ य नो आया इ य ३, सिय आया य नो आया य ४-७, सिय आया य अवत्तव्वं ८-११, नो आया य आया-अवत्तव्वेण य १२-१५, तियगसंजोगे एक्को ण पडइ १६-२२।

३१-१. [प्र.] भगवन्! पंचप्रदेशी स्कन्ध आत्मा है, अथवा अन्य (नो आत्मा) है?

[उ.] गौतम! पंचप्रदेशी स्कन्ध (१) कथंचित् आत्मा है, (२) कथंचित् नो आत्मा है, (३) आत्मा-नो-आत्मा इस प्रकार उभयरूप होने से कथंचित् अवक्तव्य है। (४-७) कथंचित् आत्मा और नो आत्मा (के चार भंग) (८-११) कथंचित् आत्मा और अवक्तव्य (के चार भंग), (१२-१५) (कथंचित्) नो आत्मा और अवक्तव्य (के चार भंग) (१६-२२) तथा त्रिकसंयोगी आठ भंगों में एक (आठवाँ) भंग घटित नहीं होता, अर्थात् सात भंग होते हैं। कुल मिलाकर बावीस भंग होते हैं।

31-1. [Q.] *Bhante!* Is a penta-sectional aggregate (*panchapradeshi skandh*) self-morphic (*atma*-roop or existent) or non-self-morphic (anya or non-existent)?

[Ans.] Gautam! (1) penta-sectional aggregate (*panchapradeshi skandh*) is perhaps self-morphic (*atma-roop* or existent), (2) perhaps non-self-morphic (*anya* or non-existent), (3) perhaps inexpressible--being both (*atma* and *no-atma*); (4-7) perhaps existent and perhaps non-existent (four alternatives); (8-11) perhaps existent and perhaps inexpressible (four alternatives); (12-15) perhaps non-existent and perhaps inexpressible (four alternatives); (16-22) perhaps existent, perhaps non-existent and perhaps inexpressible (seven alternatives out of eight possible combinations of three, eighth being not possible); making a total of twenty-two alternatives.

३१-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! तं चेव पडिउच्चारेयव्वं।

[उ.] गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया १, परस्स आइट्ठे नो आया २, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं. ३, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति। तियगसंजोगे एक्को ण पडइ।

३१-२. [प्र.] भगवन्! ऐसा क्यों कहा गया है कि (पंचप्रदेशी स्कन्ध आत्मा है) इत्यादि प्रश्न, यहाँ सब पूर्ववत् उच्चारण करना चाहिए।

[उ.] गौतम! पंचप्रदेशी स्कन्ध, (१) अपने आदेश से आत्मा है, (२) पर के आदेश से नो-आत्मा है, (३) तदुभय के आदेश से अवक्तव्य है। (४-१५) एक देश के आदेश से और सद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से तथा एक देश के आदेश से और असद्भाव-पर्याय की अपेक्षा से कथंचित् आत्मा है, कथंचित् नो-आत्मा है। इसी प्रकार द्विकसंयोगी सभी (बारह) भंग बनते हैं। (१६-२२) त्रिकसंयोगी आठ भंग होते हैं, उनमें से एक आठवाँ भंग नहीं बनता।

31-2. [Q.] What is the reason for this (a penta-sectional aggregate is perhaps existent) and other aforesaid questions ?

[Ans.] Gautam ! A penta-sectional aggregate (*panchapradeshi skandh*) (1) is existent in context of its own form (as tetra-sectional aggregate); (2) is non-existent in context of other form; (3) is inexpressible in context of both forms; (4-15) with reference to one of its sections in existent mode and with reference to one of its sections in non-existent mode and so on; there are twelve alternatives for combinations of two. (16-22) seven alternatives out of eight possible combinations of three, eighth being not possible.

३२. छप्पएसियस्स सव्वे पडंति।

[३२] षट्प्रदेशी स्कन्ध के ये सभी भंग बनते हैं।

32. All the aforesaid possible alternatives (23) are applicable to hexa-sectional aggregate (*shatpradeshi skandh*).

३३. जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ।

॥ बारसमे सए : दसमो उद्देसओ समत्तो॥

॥ बारसमं सयं समत्तं॥ १२॥

[३३] जैसे षट्प्रदेशी स्कन्ध के (विषय में भंग कहे हैं), उसी प्रकार यावत् अनन्त प्रदेशी (स्कन्ध तक कहना चाहिए।)

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

33. What has been stated about hexa-sectional aggregate should be repeated for infinite-sectional aggregate (*anant-pradeshi skandh*).

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

॥ बारहवाँ शतक : दशवाँ उद्देशक समाप्त ॥

॥ बारहवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

विवेचन—पंचप्रदेशी स्कन्ध के २२ भंग बनते हैं। जिनमें से पहले के तीन भंग पूर्ववत् सकलादेश रूप हैं। इसके पश्चात् द्विसंयोगी बारह भंग बनते हैं फिर त्रिकसंयोगी आठ भंग फिर हैं। आठवाँ भंग यहाँ असम्भव होने से घटित नहीं होता। षट्प्रदेशी स्कन्ध में और इससे आगे यावत् अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक २३-२३ भंग होते हैं। उनका विवरण पूर्ववत् समझना चाहिए।

Elaboration—There are 22 alternatives for penta-sectional aggregate. Of these the first three are with reference to all sections as aforesaid. After that there are 12 alternatives for combinations of two. There are eight alternatives for combinations of three but the eighth is impossible in context of penta-sectional aggregate. However, in context of hexa-sectional ... and so on up to ...infinite-sectional aggregates all possible combinations are applicable and thus there are 23 alternatives each, details of which are as aforesaid.

● END OF THE TENTH LESSON OF THE TWELFTH CHAPTER ●

(END OF THE TWELFTH CHAPTER)

तेरसमं सयं : तेरहवाँ शतक
TRAYODASH SHATAK (CHAPTER THIRTEEN)

प्राथमिक INTRODUCTION

व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के तेरहवें शतक में कुल 10 उद्देशक हैं।

पहले उद्देशक में रत्नप्रभादि सात नरक-पृथ्वियों का तथा इन पृथ्वियों के विस्तृत संख्यात एवं असंख्यात नरकावासों में रहने वाले नैरयिक जीवों की उत्पत्ति, उद्वर्त्तना और सत्तादि का वर्णन विभिन्न प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया गया है।

दूसरे उद्देशक में चार प्रकार के देवों, उनके आवासों अथवा विमानों की संख्या एवं उनके विस्तार तथा उनकी विविध विश्लेषण, विशिष्ट उत्पत्ति, उद्वर्त्तना और सत्तादि की प्ररूपणा की गई है।

तीसरे उद्देशक में नैरयिक जीवों के अनन्तराहारादि की प्ररूपणा की गई है।

चौथे उद्देशक में सात नरक पृथ्वियों की संख्या, उनकी लम्बाई-चौड़ाई, दिशा-विदिशा, लोक एवं पंचास्तिकाय का स्वरूप आदि का निरूपण तेरह द्वारों के माध्यम से किया गया है।

पाँचवें उद्देशक में नैरयिकों आदि के आहार की प्ररूपणा की गई है।

छठे उद्देशक में 24 दंडकों में उत्पत्ति-उद्वर्त्तना सम्बन्धी सांतर-निरंतर की प्ररूपणा, चमरचंच आवास का वर्णन और उदयन राजा के जीवन का संक्षिप्त चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

सातवें उद्देशक में भाषा, मन, काय, मरणादि के स्वरूप एवं उनके भेदों का कथन किया गया है।

आठवें उद्देशक में कर्म प्रकृतियों के भेदों-प्रभेदों का निरूपण किया गया है।

नौवें उद्देशक में वैक्रिय लब्धि द्वारा रस्सी से बंधी घटिका, स्वर्णादि मंजूषा, लोहादि भार, चक्र-रत्नादि को हाथ में लेकर तथा चमचेड़-यज्ञोपवित, मृणालिकादि का रूप बनाकर भावितात्मा अनगार द्वारा आकाशगमन का वर्णन किया गया है।

दसवें उद्देशक में छाद्मस्थिक समुद्घात का प्रतिपादन किया गया है।

The thirteenth chapter (*shatak*) of *Vyakhyaprajnapti Sutra* (*Bhagavati Sutra*) contains ten lessons (*uddeshak*) briefly stated as follows.

The first lesson describes, in question answer style, the seven hells (*Narak Prithvis*) and origin (birth), rise (*udvartan*; death to be reborn in higher realms) and existence (*sthiti*; life-span) of infernal beings living in innumerable infernal abodes in these hells.

The second lesson describes four classes of divine beings (*Dev*), the number of their abodes and celestial vehicles (*vimaan*), expanse of their area, as well as their origin (birth), end (death) and existence (life-span).

The third lesson details the immediate food intake and other such attributes of infernal beings.

The fourth lesson gives information about seven hells including their number and their dimensions. Also included is information about cardinal directions and intermediate directions, *Lok* (occupied space), five conglamorative entities (*astikaaya*) etc. through thirteen points of reference (*dvaar*).

The fifth lesson describes the food intakes of infernal and other beings.

The sixth lesson informs about with and without gap birth and death in 24 places of suffering (*dandak*). Also included are description of Chamarchancha abode and brief biography of King Udayan.

The seventh lesson describes speech, mind, body, death etc. and their types.

The eighth lesson details the categories and sub-categories of *karma*-species (*karma* prakriti)

The ninth lesson details the aerial movement of accomplished ascetics by transforming through *vaikriya labdhi* (special power of transmutation) into a cord or tube and carrying a bowl, box of gold, iron and other load and disc weapon etc.

The tenth lesson informs about *Chhadmastik Samudghat* (process of unrighteous bursting forth).

□□

पढमो उद्देसओ : पुढवी
प्रथम उद्देशक : नरक पृथ्वियाँ
PRATHAM UDDESHAK (FIRST LESSON) : *NARAK PRITHVIS* (HELLS)

तेरहवें शतक की संग्रहणी गाथा COLLATIVE VERSE

१. पुढवी १ देव २ मणंतर ३ पुढवी ४ आहारमेव ५ उववाए ६।
भासा ७ कम्म ८ अणगारे केयाघडिया ९ समुग्घाए १०॥

[१] तेरहवें शतक के दस उद्देशकों के नाम इस प्रकार हैं—(१) पृथ्वी, (२) देव, (३) अनन्तर, (४) पृथ्वी, (५) आहार, (६) उपपात, (७) भाषा, (८) कर्म, (९) अनगार में केयाघटिका और (१०) समुद्घात।

1. The titles of ten lessons of the thirteenth chapter are as follows—(1) *Prithvi* (Hell), (2) *Dev* (god or divine being), (3) *Anantar* (Without Interlude), (4) *Prithvi* (Hell) , (5) *Aahaar* (Intake), (6) *Upapaat* (Instant Birth), (7) *Bhaasha* (Speech), (8) *Karma* (*Karma*), (9) *Anagaare Keyaghatika* (Ascetic with Bowl in String), (10) *Samudghaat* (Bursting Forth).

नरक पृथ्वियों का वर्णन तथा रत्नप्रभा नरक पृथ्वी के नरकावासों की संख्या और उनका विस्तार
HELLS AND INFERNAL ABODES IN FIRST HELL

२. रायगिहे जाव एवं वयासी—

[२] राजगृह नगर में (श्री गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की वन्दना करके) यावत् इस प्रकार पूछा—

2. In Rajagriha city... and so on up to... (Gautam Swami) asked (Bhagavan Mahavir)—

३. [प्र.] कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा।

३. [प्र.] भगवन् ! नरक-पृथ्वियाँ कितनी बतायी गई हैं?

[उ.] गौतम ! नरक-पृथ्वियाँ सात बतायी गई हैं। यथा—रत्नप्रभा यावत् अधः सप्तम पृथ्वी।

3. [Q.] *Bhante!* How many *Narak Prithvis* (hells) are said to be there?

[Ans.] Gautam ! There are said to be seven *Narak Prithvis* (hells)—*Ratnaprabha* (first hell)... and so on up to... *Adhah-saptam Prithvi* (seventh hell).

४. [प्र.] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता।

४. [प्र.] भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने लाख नरकावास कहे गए हैं ?

[उ.] गौतम ! तीस लाख नारकावास कहे हैं।

4. [Q.] *Bhante!* How many infernal abodes are said to be there in this *Ratnaprabha Prithvi* (first hell)?

[Ans.] Gautam ! There are said to be three million infernal abodes.

५. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि।

५. [प्र.] भगवन् ! क्या वे नरकावास संख्येय (संख्यात योजन) विस्तृत हैं अथवा असंख्येय (असंख्यात योजन) विस्तृत हैं ?

[उ.] गौतम ! वे संख्येय (संख्यात योजन) विस्तृत भी हैं और असंख्येय (असंख्यात योजन) विस्तृत भी हैं।

5. [Q.] *Bhante!* Is the expanse of these infernal abodes countable Yojans or innumerable Yojans?

[Ans.] Gautam ! They have countable Yojans area as well as innumerable Yojans area.

विवेचन—नरक-पृथ्वियों की संख्या सात कही गई हैं—1. रत्नप्रभा, 2. शर्कराप्रभा, 3. बालुकाप्रभा, 4. पंकप्रभा, 5. धूमप्रभा, 6. तमस्प्रभा, 7. तमःतमस्प्रभा। इनमें से यहाँ प्रथम रत्नप्रभा नरक-पृथ्वी के नरकावासों की संख्या और उनके विस्तार को बताया गया है।

Elaboration—The number of *Narak Prithvis* (hells) is said to be seven—(1) *Ratnaprabha,* (2) *Sharkaraprabha,* (3) *Balukaprabha,* (4) *Pankaprabha,* (5) *Dhoom-prabha,* (6) *Tamah-prabha* and (7) *Tamastamah-prabha.* Here

the number of infernal abodes in the first hell and their area has been detailed.

रत्नप्रभा के संख्येय (संख्यात) विस्तृत नरकावासों में विविध विशेषण-विशिष्ट नैरयिक जीवों की उत्पत्ति से सम्बन्धित उनचालीस प्रश्नोत्तर

QUESTIONS ABOUT BIRTH OF INFERNAL BEINGS IN INFERNAL ABODES OF FIRST HELL WITH LIMITED AREA

६. [प्र.] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति? १, केवइया काउलेस्सा उववज्जंति? २, केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति? ३, केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति? ४, केवइया सन्नी उववज्जंति? ५, केवइया असन्नी उववज्जंति? ६, केवइया भव-सिद्धिया उववज्जंति? ७, केवइया अभव-सिद्धिया उववज्जंति? ८, केवइया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति? ९, केवइया सुयनाणी उववज्जंति? १०, केवइया ओहिनाणी उववज्जंति? ११, केवइया मइअन्नाणी उववज्जंति? १२, केवइया सुयअन्नाणी उववज्जंति? १३, केवइया विभंगनाणी उववज्जंति? १४, केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति? १५, केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति? १६, केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति? १७, केवइया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जंति? १८, केवइया भयसण्णोवउत्ता उववज्जंति? १९, केवइया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जंति? २०, केवइया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जंति? २१, केवइया इत्थिवेयगा उववज्जंति? २२, केवइया पुरिसवेयगा उववज्जंति? २३, केवइया नपुंसगवेयगा उववज्जंति? २४, केवइया कोहकसाई उववज्जंति? २५, जाव केवइया लोभकसायी उववज्जंति? २६-२८, केवइया सोइंदियोवउत्ता उववज्जंति? २९, जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति? ३०-३३, केवइया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति? ३४, केवइया मणजोगी उववज्जंति? ३५, केवइया वइजोगी उववज्जंति? ३६, केवइया कायजोगी उववज्जंति? ३७, केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति? ३८, केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति? ३९?

[उ.] गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति १। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति २। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति ३। एवं सुक्कपक्खिया वि ४। एवं सन्नी ५। एवं असण्णी ६। एवं भवसिद्धिया ७। एवं अभवसिद्धिया ८, आभिणिबोहियनाणी ९, सुयनाणी १०, ओहिनाणी ११,

मइअन्नाणी १२, सुयअन्नाणी १३, विभंगनाणी १४। चक्खुदंसणी न उववज्जंति १५। जहन्नेणं इक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति १६। एवं ओहिदंसणी वि १७, आहारसण्णोवउत्ता वि १८, जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि १९-२०-२१। इत्थिवेयगा न उववज्जंति २२। पुरिसवेयगा वि न उववज्जंति २३। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जंति २४। एवं कोहकसायी जाव लोभकसायी २५-२८। सोइंदियोवउत्ता न उववज्जंति २९। एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उववज्जंति ३०-३३। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ३४। मणजोगी न उववज्जंति ३५। एवं वइजोगी वि ३६। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति ३७। एवं सागारोवउत्ता वि ३८। अणागारोवउत्ता वि ३९।

६. [प्र.] भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नारकावासों में से संख्येय विस्तृत नरकों में एक समय में (१) कितने नैरयिक जीव उत्पन्न होते हैं? (२) कितने कापोत लेश्या वाले नैरयिक जीव उत्पन्न होते हैं? (३) कितने कृष्ण-पाक्षिक जीव उत्पन्न होते हैं? (४) कितने शुक्ल-पाक्षिक जीव उत्पन्न होते हैं? (५) कितने संज्ञी जीव उत्पन्न होते हैं? (६) कितने असंज्ञी जीव उत्पन्न होते हैं? (७) कितने भव-सिद्धिक जीव उत्पन्न होते हैं? (८) कितने अभव-सिद्धिक जीव उत्पन्न होते हैं? (९) कितने आभिनिबोधिक (मति) ज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं? (१०) कितने श्रुतज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं? (११) कितने अवधिज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं? (१२) कितने मति-अज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं? (१३) कितने श्रुत-अज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं? (१४) कितने विभंगज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं? (१५) कितने चक्षुदर्शनी जीव उत्पन्न होते हैं? (१६) कितने अचक्षुदर्शनी जीव उत्पन्न होते हैं? (१७) कितने अवधिदर्शनी जीव उत्पन्न होते हैं? (१८) कितने आहार-संज्ञा के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (१९) कितने भय-संज्ञा के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (२०) कितने मैथुन-संज्ञा के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (२१) कितने परिग्रह-संज्ञा के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (२२) कितने स्त्री-वेदी जीव उत्पन्न होते हैं? (२३) कितने पुरुष-वेदी जीव उत्पन्न होते हैं? (२४) कितने नपुंसक-वेदी जीव उत्पन्न होते हैं? (२५) कितने क्रोध-कषायी जीव उत्पन्न होते हैं? (२६-२८) यावत् कितने लोभ-कषायी उत्पन्न होते हैं? (२९) कितने श्रोत्रेन्द्रिय के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (३०-३३) यावत् कितने स्पर्शेन्द्रिय के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (३४) कितने नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं? (३५) कितने मनोयोगी जीव उत्पन्न होते हैं? (३६) कितने वचनयोगी जीव उत्पन्न होते हैं? (३७) कितने काययोगी जीव उत्पन्न होते हैं? (३८) कितने साकारोपयोगी जीव उत्पन्न होते हैं? (३९) कितने अनाकारोपयोगी जीव उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से संख्येय विस्तृत नरकों में एक समय में (१) जघन्य से एक, दो अथवा तीन तथा उत्कृष्ट से संख्यात नैरयिक जीव उत्पन्न होते हैं। (२) जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात कापोत लेश्या वाले जीव उत्पन्न होते हैं। (३) जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात कृष्ण-पाक्षिक जीव उत्पन्न होते हैं। (४) इसी प्रकार शुक्ल-पाक्षिक (५) संज्ञी (६) असंज्ञी (७) भव-सिद्धिक (८) अभव-सिद्धिक (९) आभिनिबोधिक (मति) ज्ञानी (१०) श्रुतज्ञानी (११) अवधिज्ञानी (१२) मति-अज्ञानी (१३) श्रुत-अज्ञानी (१४) विभंगज्ञानी (जीवों के विषय में भी जानना चाहिए।) (१५) चक्षुदर्शनी जीव उत्पन्न नहीं होते। (१६) अचक्षुदर्शनी जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन तथा उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं। (१७-२१) इसी प्रकार अवधिदर्शनी, आहारसंज्ञा के उपयोग वाले जीवों, यावत् परिग्रहसंज्ञा के उपयोग वाले जीवों के विषय में भी (जानना चाहिए।) (२२-२३) न तो स्त्रीवेदी जीव उत्पन्न होते हैं और न ही पुरुषवेदी जीव उत्पन्न होते हैं। (२४) नपुंसकवेदी जीव जघन्य से एक, दो या तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार (२५-२८) क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी जीवों (की उत्पत्ति के विषय में जानना चाहिए।) (२९) श्रोत्रेन्द्रिय के उपयोग वाले जीव उत्पन्न नहीं होते हैं। (३०-३३) इसी प्रकार यावत् स्पर्शेन्द्रिय के उपयोग वाले जीव वहाँ उत्पन्न नहीं होते हैं। (३४) नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं। (३५) मनोयोगी जीव वहाँ उत्पन्न नहीं होते हैं। (३६) इसी प्रकार वचनयोगी भी (उत्पन्न नहीं होते हैं) (३७) काययोगी जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं। (३८-३९) इसी प्रकार साकारोपयोग वाले एवं अनाकारोपयोग (वाले जीवों के विषय में भी जानना चाहिए।)

6. **[Q.]** *Bhante!* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time)—(1) How many infernal beings (*jivas*) are born ? (2) How many infernal beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*) are born ? (3) How many beings with dark future (*Krishna-paksha*) are born ? (4) How many beings with bright future (*shukla-paksha*) are born ? (5) How many sentient (*sanjni*) beings are born ? (6) How many non-sentient (*asanjni*) beings are born ? (7) How many *bhava-siddhik* (destined to be liberated in next birth) beings are born ? (8) How many *abhava-siddhik* (not destined to be liberated in next birth) beings are born ? (9) How many *abhinibodhik jnani* (endowed with sensory

knowledge) beings are born ? (10) How many *shrut jnani* (endowed with scriptural knowledge) beings are born ? (11) How many *Avadhi-jnani* (endowed with extrasensory perception of the physical dimension; something akin to clairvoyance) beings are born ? (12) How many *mati-ajnani* (endowed with false sensory knowledge) beings are born ? (13) How many *shrut ajnani* (not endowed with scriptural knowledge) beings are born ? (14) How many *vibhanga-jnani* (having pervert knowledge) beings are born ? (15) How many *chakshu darshani* (endowed with visual perception) beings are born ? (16) How many *achakshu darshani* (not endowed with visual perception) beings are born ? (17) How many *avadhi darshani* (endowed with extrasensory perception) beings are born ? (18) How many beings with active awareness for food (*Aahaar Sanjna*) are born ? (19) How many beings with active awareness of fear (*Bhaya Sanjna*) are born ? (20) How many beings with active awareness for copulation (*Maithun Sanjna*) are born ? (21) How many beings with active awareness for possessions (*Parigraha Sanjna*) are born ? (22) How many beings with female gender (*stree-vedi*) are born ? (23) How many beings with male gender (*purush-vedi*) are born ? (24) How many beings with neuter gender (*napumsak-vedi*) are born ? (25) How many *krodh-kashaayi* (having anger) beings are born ?... and so on up to... (26-28) How many *lobha-kashaayi* (having greed) beings are born ? (29) How many beings with active sense of hearing (*shrotrendriya-upayoga*) are born ?... and so on up to... (30-33) How many beings with active sense of touch (*sparshendriya-upayoga*) are born ? (34) How many beings with *no-indriya* (mind) are born ? (35) How many beings with mental association (*manoyogi*) are born ? (36) How many beings with vocal association (*vachan-yogi*) are born ? (37) How many beings with physical association (*kaayayogi*) are born ? (38) How many *Saakaaropayogi* (having inclination towards right knowledge) beings are born ? (39) How many *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) beings are born ?

[Ans.] Gautam ! Out of the three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time)—(1) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of infernal beings (*jivas*)

are born. (2) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*) are born. (3) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with dark future (*Krishna-paksha*) are born. The same is true for (4) beings with bright future (*shukla-paksha*), (5) sentient (sanjni) beings, (6) non-sentient (*asanjni*) beings, (7) *bhava-siddhik* (destined to be liberated in next birth) beings, (8) *abhava-siddhik* (not destined to be liberated in next birth) beings, (9) *abhinibodhik jnani* (endowed with sensory knowledge) beings, (10) *shrut jnani* (endowed with scriptural knowledge) beings (11) *Avadhi-jnani* (endowed with extrasensory perception of the physical dimension; something akin to clairvoyance) beings, (12) *mati-ajnani* (endowed with false sensory knowledge) beings, (13) *shrut ajnani* (not endowed with scriptural knowledge) beings, and (14) *vibhanga-jnani* (having pervert knowledge) beings. (15) *Chakshu darshani* (endowed with visual perception) beings are not born. (16) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of *achakshu darshani* (not endowed with visual perception) beings are born. (17-21) The same is true for *avadhi darshani* (endowed with extrasensory perception) beings, beings with active awareness for food (*Aahaar Sanjna*)... and so on up to... beings with active awareness for possessions (*Parigraha Sanjna*). (22) Beings with female gender (*stree-vedi*) and (23) beings with male gender (*purush-vedi*) are not born. (24) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with neuter gender (*napumsak-vedi*) are born. (25-28) The same is true for *krodh-kashaayi* (having anger) beings... and so on up to... *lobha-kashaayi* (having greed) beings. (29-33) Beings with active sense of hearing (*shrotrendriya-upayoga*)... and so on up to... beings with active sense of touch (*sparshendriya-upayoga*) are not born. (34) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with *no-indriya* (mind) are born. (35-36) Beings with mental association (*manoyogi*) and beings with vocal association (*vachan-yogi*) are not born. (37) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with physical association (*kaayayogi*) are born. (38-39) The same is true for *Saakaaropayogi* (having inclination towards right knowledge) and *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) beings.

विवेचन—रत्नप्रभा पृथ्वी में केवल कापोत लेश्या वाले जीव ही उत्पन्न होते हैं, अन्य लेश्या वाले जीव उत्पन्न नहीं होते हैं।

कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक जीव—जिन जीवों का संसार-परिभ्रमण काल अर्द्ध पुद्गल परावर्तन से कुछ कम शेष रह गया है, वे **शुक्लपाक्षिक** और जिन जीवों का इस काल से अधिक काल तक संसार-परिभ्रमण करना शेष रह जाता है, वे **कृष्णपाक्षिक** कहलाते हैं।

चक्षुदर्शनी की उत्पत्ति नरक में निषेध का कारण यह है कि इन्द्रियों का त्याग होने पर ही नरक में जीव की उत्पत्ति होती है। नरक में स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी उत्पन्न नहीं होते, क्योंकि उनके भव प्रत्यय नपुंसकवेद होता है। उत्पत्ति के समय नारकी जीव श्रोत्रादि इन्द्रियों के उपयोग वाले नहीं होते, क्योंकि उस समय उनके इन्द्रियाँ होती ही नहीं है। सामान्य (चेतनारूप) उपयोग इन्द्रियों के अभाव में भी रह सकता है। इसलिए यहाँ नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले जीव उत्पन्न होते हैं। उत्पत्ति के समय जीवों के अपर्याप्त होने से मन और वचन दोनों का अभाव होता है। इसलिए रत्नप्रभा नरकावास में मनोयोगी और वचनयोगी जीव उत्पन्न नहीं होते हैं जबकि उन जीवों के काययोग रहता है।

Elaboration—In *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell) only beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*) are born, those with other soul-complexions are not born.

Beings with *krishna-paksha and shukla-paksha*—a *jiva* (soul/ living being) with a time span of less than *Ardha-pudgal Paravartan kaal* (an extremely long unit of time; half of the time taken for an ultron to go through the complete process of all types of particulate transformations) still to spend in cycles of rebirth before getting liberated is called *shukla-pakshik* (with a bright future); and a *jiva* with more time span than that to spend in cycles of rebirth is called *krishna-pakshik* (with a dark future).

The reason for negation of birth of *jiva*s with visual perception is that a *jiva* is born in hell only when it is deprived of sense organs. Male and female genders too are not born in hells because the intrinsic gender-attribute of hell is neuter gender. At the time of birth in hell *jiva* has no sense organs and thus there are no active senses or inclination for the use of sense organs. But as the common inclination of perception is present in a living being even in absence of sense organs, *jiva*s with active mind are born in hell. At the time of birth the *jiva*s are not fully developed, therefore there is absence of mental and vocal association at the moment of birth in hells.

७. [प्र.] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उव्वट्टंति ? १, केवइया काउलेस्सा उव्वट्टंति ? २, जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ? ३९।

[उ.] गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमयेणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति १। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति २। एवं जाव सण्णी ३-४-५। असण्णी न उव्वट्टंति ६। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति ७। एवं जाव सुयअन्नाणी ८-१३। विभंगनाणी न उव्वट्टंति १४। चक्खुदंसणी न उव्वट्टंति १५, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति १६। एवं जाव लोभकसायी १७-२८। सोइंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति २९। एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति ३०-३३। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति ३४। मणजोगी न उव्वट्टंति ३५। एवं वइजोगी वि ३६। जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति ३७। एवं सागारोवउत्ता ३८, अणागारोवउत्ता ३९।

७. [प्र.] भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से जो संख्येय (संख्यात) योजन विस्तार वाले नरक है, उनमें से एक समय में (१) कितने नैरयिक जीव उद्वर्त्तते (मरते-निकलते) हैं? (२) कितने कापोत लेश्या वाले नैरयिक जीव उद्वर्त्तते हैं? यावत् (३९) कितने अनाकारोपयोग वाले (दर्शनोपयोग वाले) नैरयिक जीव उद्वर्त्तते हैं?

[उ.] गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से जो संख्येय (संख्यात योजन विस्तार वाले) नरक है, उनमें से एक समय में (१) जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात नैरयिक जीव उद्वर्त्तते हैं। (२) कापोत लेश्या वाले नैरयिक जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उद्वर्त्तते हैं। (३-४-५) इसी प्रकार यावत् संज्ञी जीव तक (नैरयिक-उद्वर्त्तना समझनी चाहिए।) (६) असंज्ञी जीव उद्वर्त्तते नहीं हैं। (७) भव-सिद्धिक नैरयिक जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उद्वर्त्तते हैं। इसी प्रकार (८-१३) यावत् श्रुत-अज्ञानी तक (उद्वर्त्तना समझनी चाहिए।) (१४) विभंगज्ञानी नहीं उद्वर्त्तते हैं। (१५) चक्षुदर्शनी भी नहीं उद्वर्त्तते हैं। (१६) अचक्षुदर्शनी जीव जघन्य से

एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उद्वर्त्तते हैं। (१७-२८) इसी प्रकार यावत् लोभ कषायी (नैरयिक जीवों तक की उद्वर्त्तना समझनी चाहिए।) (२९) श्रोत्रेन्द्रिय उपयोग वाले जीव उद्वर्त्तते नहीं हैं। (३०-३३) इसी प्रकार यावत् स्पर्शेन्द्रिय के उपयोग वाले भी नहीं उद्वर्त्तते हैं। (३४) नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले नैरयिक जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उद्वर्त्तते हैं। (३५-३६) मनोयोगी और वचनयोगी भी उद्वर्त्तते नहीं हैं। (३७) काययोगी जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उद्वर्त्तते हैं। इसी प्रकार (३८-३९) साकारोपयोग वाले और अनाकारोपयोग (वाले नैरयिक जीवों की उद्वर्त्तना समझनी चाहिए।)

7. [Q.] *Bhante!* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time)—(1) How many infernal beings (*jivas*) die (*udvartan*; rise to be born in higher realms) ? (2) How many infernal beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*) die (rise to be born in higher realms) ?... and so on up to... (39) How many *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) beings die (rise to be born in higher realms) ?

[Ans.] Gautam ! Out of the three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time)—(1) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of infernal beings (*jivas*) die (rise to be born in higher realms). (2) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*) die. (3-5) The same is true for other beings up to sentient (*sanjni*) beings. (6) Non-sentient (*asanjni*) beings do not die. (7) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of *bhava-siddhik* (destined to be liberated in next birth) beings die. (8-13) The same is true for *abhava-siddhik* (not destined to be liberated in next birth) beings ... and so on up to ... *shrut ajnani* (not endowed with scriptural knowledge) beings. (14) *Vibhanga-jnani* (having pervert knowledge) beings and *Chakshu darshani* (endowed with visual perception) beings do not die. (16) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of *achakshu darshani* (not endowed with visual perception) beings

नरक एवं नारकी

नरक वासों की संख्या

पहली नरक - 30 लाख
दूसरी नरक - 25 लाख
तीसरी नरक - 15 लाख
चौथा नरक - 10 लाख
पाँचवा नरक - 3 लाख
छठा नरक - 99995
सातवां नरक - 5
कुल नरकावास - 84 लाख

भवनवासी देवों के आवास

चित्र-परिचय 15

Illustration No. 15

नरक एवं नारकी

विस्तार की दृष्टि से नरकावास दो प्रकार के होते हैं—असंख्यात योजन विस्तार वाले और संख्यात योजन विस्तार वाले। असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों में असंख्यात नारकी होते हैं और संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों में संख्यात नारकी होते हैं। विशेष यह है कि सातों नरक में असंख्यात योजन विस्तार वाले और संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावास होते हैं लेकिन इनकी संख्या निश्चित होती है।

—शतक 13, उ. 1

भवनवासी देवों के आवास

रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक का पृथ्वी पिंड 1,80,000 हजार योजन मोटा है। इसमें 13 प्रतर और 12 आंतरे हैं। ऊपर के दो आंतरे खाली हैं उसके बाद भवनपति देवों के भवन हैं। आगे क्रमश: 12वें आंतरे तक 10 भवनपति देवों के भवन हैं। चित्र में प्रत्येक आंतरे में जो भवनपति देव रहते हैं, उनके नाम व आवासों की संख्या दी गई है। प्रत्येक आंतरा 11583.83 योजन ऊँचाई वाला है। प्रथम नरक का प्रत्येक प्रतर 3000 योजन मोटाई वाला है।

—शतक 13, उ. 2

HELLS AND INFERNAL BEINGS

In terms of expanse infernal abodes are of two kinds — with innumerable Yojans area and countable Yojans area. In abodes with innumerable Yojans area there are innumerable infernal beings and in those with countable Yojans area there are countable infernal beings. In all the seven hells there are infernal abodes with innumerable Yojans area and countable Yojans area but their numbers are fixed for each.

—Shatak-13, lesson-1

ABODES OF *BHAVAN-VAASI* GODS

The land block of the first hell, Ratnaprabha Prithvi, is 1, 80,000 Yojans thick. It has 13 levels and 12 gaps. The top two gaps are empty after which there are abodes of ten classes of Bhavan-*vaasi* gods. The illustration shows the names of the particular class of *Bhavan-vaasi* gods living in a specific gap and the number of abodes. Each gap has a height of 11583.83 Yojans. Each level of the first hell is 3000 Yojans thick.

—Shatak-13, lesson-2

die. (17-28) The same is true for *avadhi darshani* (endowed with extrasensory perception) beings... and so on up to... *lobha-kashaayi* (having greed) beings. (29) Beings with active sense of hearing (*shrotrendriya-upayoga*) do not die. (30-33) The same is true for other beings... and so on up to... beings with active sense of touch (*sparshendriya-upayoga*). (34) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with *no-indriya* (mind) die. (35-36) Beings with mental association (*manoyogi*) and beings with vocal association (*vachan-yogi*) do not die. (37) A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of beings with physical association (*kaayayogi*) die. (38-39) The same is true for *Saakaaropayogi* (having inclination towards right knowledge) and *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) beings.

विवेचन—संख्यात योजन विस्तृत नरकावासों में संख्यात नैरयिक जीव ही समा सकते हैं, इसलिए संख्यात योजन विस्तृत नरकावासों में संख्यात नैरयिक जीव ही उद्वर्त्तते हैं। उद्वर्त्तना परभव के प्रथम समय में ही होती है जबकि नैरयिक जीव असंज्ञी जीवों में उत्पन्न नहीं होते, इसी कारण वे असंज्ञी नहीं उद्वर्त्तते हैं।

Elaboration—In infernal abodes with countable Yojan expanse only countable number of infernal beings can be accommodated, thus a maximum of only countable number of them can die. *Udvartan*a means to rise from the present place of existence and get reborn into a higher realm; in other word it relates to death. As the act of rise is concluded with rebirth and infernal beings do not take rebirth as insentient beings there is no rise of insentient beings from infernal abodes.

रत्नप्रभा पृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में नैरयिक जीवों की संख्या से लेकर चरम-अचरम की संख्या से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर

THE NUMBER OF DIFFERENT INFERNAL BEINGS IN INFERNAL ABODES OF FIRST HELL WITH LIMITED AREA

८. [प्र.] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया पण्णत्ता? १, केवइया काउलेस्सा जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता? २-३९, केवइया अणंतरोववन्नगा पन्नत्ता? ४०, केवइया परंपरोववन्नगा पन्नत्ता? ४१, केवइया अणंतरोवगाढा पन्नत्ता? ४२, केवइया परंपरोवगाढा

पन्नत्ता ? ४३, केवइया अणंतराहारा पन्नत्ता ? ४४, केवइया परंपराहारा पन्नत्ता ! ४५, केवइया अणंतरपज्जत्ता पन्नत्ता ? ४६, केवइया परंपरपज्जत्ता पन्नत्ता ? ४७, केवइया चरिमा पन्नत्ता ? ४८, केवइया अचरिमा पन्नत्ता ? ४९।

[उ.] गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पन्नत्ता १। संखेज्जा काउलेस्सा पन्नत्ता २। एवं जाव संखेज्जा सन्नी पन्नत्ता ३-५। असण्णी सिय अत्थि सिय नत्थि; जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता ६। संखेज्जा भवसिद्धिया पन्नत्ता ७। एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसन्नोवउत्ता पन्नत्ता ८-२१। इत्थिवेयगा नत्थि २२। पुरिसवेयगा नत्थि २३। संखेज्जा नपुंसगवेयगा पण्णत्ता २४। एवं कोहकसायी वि २५। माणकसाई जहा असण्णी २६। एवं जाव लोभकसायी २७-२८। संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता पन्नत्ता २९। एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ३०-३३। नोइंदियोवउत्ता जहा असण्णी ३४। संखेज्जा मणजोगी पन्नत्ता ३५। एवं जाव अणागारोवउत्ता ३६-३९। अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि सिय नत्थि; जइ अत्थि जहा असण्णी ४०। संखेज्जा परंपरोववन्नगा ४१। एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोवगाढगा ४२, अणंतराहारगा ४४, अणंतरपज्जत्तगा ४६। परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा ४३, ४५, ४७, ४८, ४९।

८. [प्र.] भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले नरकों में (१) कितने नैरयिक जीव कहे गए हैं? (२-३९) कितने कापोत लेश्या वाले नैरयिक जीव कहे गए हैं? यावत् कितने अनाकारोपयोग वाले नैरयिक जीव कहे गए हैं? (४०) कितने अनन्तरोपपन्नक जीव कहे गऐ हैं? (४१) कितने परम्परोपपन्नक जीव कहे गए हैं? (४२) कितने अनन्तरावगाढ जीव कहे गए हैं? (४३) कितने परम्परावगाढ जीव कहे गए हैं? (४४) कितने अनन्तराहारक जीव कहे गऐ हैं? (४५) कितने परम्पराहारक जीव कहे गऐ हैं? (४६) कितने अनन्तरपर्याप्तक जीव कहे गए हैं? (४७) कितने परम्परपर्याप्तक जीव कहे गए हैं? (४८) कितने चरम जीव कहे गए हैं? और (४९) कितने अचरम जीव कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले नरकों में (१) संख्यात नैरयिक जीव कहे गऐ हैं। (२) संख्यात कापोत लेश्या वाले जीव कहे गए हैं। (३-५) इसी प्रकार यावत् संख्यात् संज्ञी जीव कहे गए हैं। (६) असंज्ञी जीव कदाचित् होते हैं और कदाचित् नहीं होते। यदि होते है तो जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात होते हैं। (७) भव-सिद्धिक जीव संख्यात कहे गए हैं। (८-२१) इसी प्रकार यावत् परिग्रहसंज्ञा के उपयोग वाले नैरयिक जीव संख्यात कहे गए हैं। (२२) वहाँ स्त्रीवेदी नहीं

होते हैं, (२३) पुरुषवेदी भी नहीं होते हैं। (२४) वहाँ तो केवल नपुंसकवेदी संख्यात कहे गए हैं। (२५) इसी प्रकार क्रोध कषायी भी संख्यात होते हैं। (२६) मान कषायी नैरयिक, असंज्ञी नैरयिकों जीवों के समान (कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो उत्कृष्ट से संख्यात होते हैं)। (२७-२८) इसी प्रकार यावत् (माया कषायी और) लोभ कषायी नैरयिक जीवों के (विषय में भी कहना चाहिए)। (२९-३३) श्रोत्रेन्द्रिय उपयोग वाले नैरयिकों से लेकर यावत् स्पर्शेन्द्रिय उपयोग वाले नैरयिक जीव संख्यात कहे गए हैं। (३४) नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले नैरयिक, असंज्ञी नैरयिक जीवों के समान (कदाचित् होते हैं और कदाचित् नहीं होते हैं)। (३५-३९) मनोयोगी यावत् अनाकारोपयोग वाले नैरयिक संख्यात कहे गए हैं। (४०) अनन्तरोपपन्नक नैरयिक कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते; यदि होते हैं तो असंज्ञी जीवों के समान (जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात होते हैं।) (४१) परम्परोपपन्नक नैरयिक संख्यात होते हैं। जिस प्रकार अनन्तरोपपन्नक के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार (४२) अनन्तरावगाढ, (४३) परम्परावगाढ, (४४) अनन्तराहारक और (४५) परम्पराहारक, (४६) अनन्तरपर्याप्तक के विषय में कहना चाहिए। जिस प्रकार परम्परोपपन्नक के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार (४७) परम्परपर्याप्तक, (४८) चरम और (४९) अचरम (के विषय में कहना चाहिए)।

8. **[Q.]** *Bhante !* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area—(1) How many infernal beings (*jivas*) are said to be there ? (2-39) How many infernal beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*)... and so on up to... *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) are said to be there ? (40) How many *Anantaropapannak jivas* are said to be there ? (41) How many *Paramparopapannak jivas* are said to be there ? (42) How many *Ananataraavagaadh jivas* are said to be there ? (43) How many *Paramparaavagaadh jivas* are said to be there ? (44) How many *Anantaraahaarak jivas* are said to be there ? (45) How many *Paramparaahaarak jivas* are said to be there ? (46) How many *Anantaraparyaaptak jivas* are said to be there ? (47) How many *Paramparaparyaaptak jivas* are said to be there ? (48) How many *charam jivas* are said to be there ? (49) How many *acharam jivas* are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan

area—(1) There are said to be countable number of infernal beings (*jivas*). (2) There are said to be countable number of beings with pigeon-soul-complexion (*Kaapot leshya*). (3-5) The same is true for other beings up to sentient (*sanjni*) beings. (6) Non-sentient (*asanjni*) beings are perhaps there and perhaps not; in case they are, their number can be a minimum of one, two or three and a maximum of countable. (7) There are said to be countable number of *bhava-siddhik* (destined to be liberated in next birth) beings. (8-21) The same is true for *abhava-siddhik* (not destined to be liberated in next birth) beings... and so on up to... beings with active awareness for possessions (*parigraha sanjna*). (22-23) There are said to be no beings with female gender (*stree-vedi*) as well as male gender (*purush-vedi*). (24) There are said to be countable number of beings with neuter gender (*napumsak-vedi*). (25) The same is true for *krodh-kashaayi* (having anger) beings. (26) *Maan-kashaayi* (having conceit) beings are like non-sentient (*asanjni*) beings (perhaps there and perhaps not; in case they are... and so on up to... a maximum of countable). (27-28) The same is true for *maaya-kashaayi* (having deceit) and *lobha-kashaayi* (having greed) beings. (29-33) There are said to be countable number of beings with active sense of hearing (*shrotrendriya-upayoga*)... and so on up to... beings with active sense of touch (*sparshendriya-upayoga*). (34) Beings with *no-indriya* (mind) are like non-sentient (*asanjni*) beings (perhaps there and perhaps not). (35-39) There are said to be countable number of beings with mental association (*manoyogi*)... and so on up to... *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) beings. (40) *Anantaropapannak jivas* are perhaps there and perhaps not; in case they are, they are like non-sentient (*asanjni*) beings (a minimum of one, two or three and a maximum of countable). (41) There are said to be countable number of *Paramparopapannak jivas*. What has been said about *Anantaropapannak jivas* should be repeated for (42) *Ananataraavagaadh jivas*, (43) *Paramparaavagaadh jivas* and (44) *Anantaraahaarak jivas*. What has been said about *Paramparopapannak jivas* should be repeated for (45) *Paramparaahaarak jivas*, (46) *Anantaraparyaaptak jivas*, (47) *Paramparaparyaaptak jivas*, (48) *charam jivas* and (49) *acharam jivas*.

विवेचन—अनन्तरोपपन्नक और परम्परोपपन्नक—जिन नैरयिक जीवों को उत्पन्न हुए अभी एक समय ही हुआ है, उन्हें '**अनन्तरोपपन्नक**' और जिन्हें उत्पन्न हुए दो, तीन आदि 'समय' हो चुके हैं, उन्हें **परम्परोपपन्नक** कहते हैं।

अनन्तरावगाढ और परम्परावगाढ—किसी एक विवक्षित क्षेत्र में प्रथम समय में रहे हुए (अवगाहन करके स्थित) जीवों को **अनन्तरावगाढ** और विवक्षित क्षेत्र में द्वितीय आदि समय में रहे हुए जीवों को **परम्परावगाढ** कहते हैं।

अनन्तराहारक और परम्पराहारक—आहार ग्रहण किये हुए जिन जीवों को प्रथम समय हुआ है, वे **अनन्तराहारक** और जिन्हें द्वितीय आदि समय हो गया है, उन्हें **परम्पराहारक** कहते हैं।

अन्तरपर्याप्तक और परम्परपर्याप्तक—जिन जीवों को पर्याप्त हुए प्रथम समय ही हुआ है, वे **अनन्तरपर्याप्तक** और जिन्हें पर्याप्त हुए द्वितीयादि समय हो चुका है, वे **परम्परपर्याप्तक** कहलाते हैं।

चरम नैरयिक और अचरम नैरयिक—जिन जीवों का नारक भव अन्तिम है, अथवा जो नारक भव के अन्तिम समय में वर्त्तमान हैं, वे **चरम नैरयिक** और इनसे विपरीत को **अचरम नैरयिक** कहते हैं।

जो असंज्ञी तिर्यञ्च अथवा मनुष्य मरकर नरक में नैरयिक जीव के रूप से उत्पन्न होते हैं, वे पर्याप्त-अवस्था में कुछ समय तक असंज्ञी होते हैं, फिर वे संज्ञी हो जाते हैं ऐसे नैरयिक जीव बहुत कम होते हैं। इसलिए यहाँ कहा गया है कि—रत्नप्रभा पृथ्वी में असंज्ञी कदाचित् होते हैं और कदाचित् नहीं भी होते हैं। इसी प्रकार मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी, नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले, अनन्तरोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, अनन्तराहारक तथा अनन्तरपर्याप्तक नैरयिक कदाचित् होते हैं और कदाचित् नहीं होते है।

उपर्युक्त नैरयिक जीवों के अतिरिक्त शेष नैरयिक जीव सदा प्रभूत संख्या में रहते हैं, इसलिए उन्हें 'संख्यात' कहना चाहिए।

Elaboration—*Anantaropapannak* and *Paramparopapannak jivas*—*Anantaropapannak jivas* are those who have been born just one Samaya before and *Paramparopapannak jivas* are those who have been born more than one Samaya before.

Ananataraavagaadh and *Paramparaavagaadh jivas*—*Ananataraavagaadh jivas* are those who have been born and are in the first Samaya of space occupation in that specific area. *Paramparaavagaadh jivas* are those who have been born and are in the second or any later Samaya of space occupation in that specific area.

Anantaraahaarak and *Paramparaahaarak jivas*—*Anantaraahaarak jivas* are those who have commenced intake just one

Samaya before and *Paramparopapannak jivas* are those who have commenced intake more than one *Samaya* before.

Anantaraparyaaptak and *Paramparaparyaaptak jivas*—*Anantaraparyaaptak jivas* are those who have attained full development just one Samaya before and *Paramparopapannak jivas* are those who have attained full development more than one Samaya before.

Charam Nairayik jivas and *Acharam Nairayik jivas*—*Charam Nairayik jivas* are those who are in their last infernal birth or the last moment of that particular infernal birth and those other than *charam* are *Acharam Nairayik jivas*.

The non-sentient animals or humans that are born as infernal beings after their death are initially non-sentient for some time after attaining full development and then become sentient. However, such *jivas* are very few in number that is why it is said here that in the first hell non-sentient beings are perhaps there and perhaps not. In the same way *maan-kashaayi* (having conceit), *maaya-kashaayi* (having deceit), *lobha-kashaayi* (having greed), *no-indriya* (mind), *Anantaropapannak*, *Ananataraavagaadh*; *Anantaraahaarak* and *Anantaraparyaaptak* beings are perhaps there and perhaps not.

Other than the aforesaid, all infernal beings are always in large numbers that is why it is said that all of them are countable.

रत्नप्रभा के असंख्यात विस्तृत नरकावासों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर

QUESTIONS ABOUT INFERNAL ABODES OF FIRST HELL WITH UNLIMITED AREA

९. [प्र.] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति ? १, जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? २-३९।

[उ.] गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उवज्जंति १। एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा [सु. ६-७-८] तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा। नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता ४९। "नाणत्तं लेस्सासु", लेस्साओ जहा

पढमसए (स. १ उ. ५)। नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टावेयव्वा, सेसं तं चेव।

९. [प्र.] भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकों में (१) एक समय में कितने नैरयिक जीव उत्पन्न होते है; (२-३९) यावत् कितने अनाकारोपयोग वाले नैरयिक जीव उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकों में एक समय में जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से असंख्यात नैरयिक जीव उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार संख्यात (योजन) विस्तार वाले (नरकावासों के विषय में सू. ६-७-८ में उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता) ये तीन आलापक (गमक) कहे गए हैं, उसी प्रकार असंख्यात योजन वाले नरकावासों के विषय में भी तीन आलापक जानने चाहिए। केवल इनमें विशेषता इतनी है कि 'संख्यात' के बदले 'असंख्यात' कहना चाहिए। (४९) शेष सभी यावत् 'असंख्यात अचरम कहे गए हैं', (यहाँ तक पूर्ववत् कहना चाहिए)। इनमें लेश्याओं में नानात्व (विभिन्नता) है। लेश्या सम्बन्धी कथन प्रथम शतक (श. १, उ. ५) के अनुसार कहना चाहिए। इनमें केवल विशेष इतना ही है कि संख्यात (योजन) और असंख्यात (योजन) विस्तार वाले नरकावासों में से अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी संख्यात ही उद्वर्त्तन करते हैं, ऐसा कहना चाहिए। शेष सभी कथन पूर्ववत् करना चाहिए।

9. [Q.] *Bhante !* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having uncountable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time)—(1) How many infernal beings (*jivas*) are born ?... and so on up to... (2-39) How many *Anaakaaropayoga* (having inclination towards right perception/faith) beings are born ?

[Ans.] Gautam ! Out of the three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having uncountable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time)—A minimum of one, two or three and a maximum of countable number of infernal beings (*jivas*) are born. Repeat the three statements (6,7 and 8 about infernal abodes with limited expanse in context of birth, death and existence (*sthiti*; life-span of infernal beings, up to 39); the remaining up to 49 also follow the same pattern... and so on up to... (49) innumerable acharam *jivas*. There is a little difference with regard to soul-complexions (*leshyas*). The statement

about *leshya*s should be quoted from the first chapter (Ch. 1, Les. 5). Other difference is that in infernal abodes of limited and unlimited expanse only countable *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani* die (rise). Rest of the statement is same as aforesaid.

विवेचन—जिस प्रकार संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों में नैरयिक जीवों की उत्पत्ति, उद्वर्त्तना और सत्ता (विद्यमानता), इन तीनों आलापकों की प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों में नैरयिक जीवों की उत्पत्ति आदि तीनों आलापकों का कथन करना चाहिए। संख्यात के बदले यहाँ 'असंख्यात' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी तीर्थंकर आदि ही उद्वर्त्तन करते हैं और वे स्वल्प होते हैं, जिस कारण इन दोनों के उद्वर्त्तन के विषय में 'संख्यात' ही कहा गया है।

Elaboration—The details about birth, death and life-span of infernal beings in infernal abodes with unlimited expanse (*asankhyat* Yojan) follow the same pattern as earlier mentioned about those with limited expanse (*sankhyat* Yojan) with the simple change of unlimited for limited.

As *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani* who rise from hells become *Tirthankar*s and there number is meager; that is why the term *sankhyat* (countable) has been used for their *udvartan* (rise).

शेष छह नरक पृथ्वियों के नरकावासों के सम्बन्ध में निरूपण

DETAILS ABOUT THE INFERNAL ABODES IN THE REMAINING SIX HELLS

१०. [प्र.] सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावास. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता।

१० [प्र.] भगवन्! शर्कराप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! (शर्कराप्रभा पृथ्वी में) पच्चीस लाख नरकवास कहे गए हैं।

10. [Q.] *Bhante!* How many infernal abodes are said to be there in *Sharkaraprabha Prithvi* (second hell) ? And other questions.

[Ans.] Gautam! There are said to be two and a half million infernal abodes in the second hell.

११. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि। नवरं असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णइ, सेसं तं चेव।

११. [प्र.] भगवन्! क्या (वे नरकावास) संख्यात योजन विस्तार वाले हैं, अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं?

[उ.] गौतम! जिस प्रकार रत्नप्रभा के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार शर्कराप्रभा के विषय में कहना चाहिए। मात्र विशेषता इतनी है कि उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता, इन तीनों ही आलापकों (गमकों) में 'असंज्ञी' नहीं कहना चाहिए। शेष सभी (कथन पूर्ववत् समझना चाहिए)।

11. [Q.] *Bhante!* Is the expanse of these infernal abodes countable Yojans or innumerable Yojans?

[Ans.] Gautam! What has been said about *Ratnaprabha* should be repeated here about *Sharkaraprabha.* The only difference is that all the three statements about birth, death and life-span of *asanjni* (non-sentient) should not be included. Remaining statements are exactly as mentioned earlier.

१२. [प्र.] वालुयप्पभाए णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता। सेसं जहा सक्करप्पभाए। "नाणत्तं लेसासु", लेसाओ जहा पढमसए (स. १ उ. ५)।

१२. [प्र.] भगवन्! बालुकाप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! (बालुकाप्रभा पृथ्वी) में पन्द्रह लाख नरकावास कहे गए हैं। शेष सभी कथन शर्कराप्रभा के समान करना चाहिए। यहाँ लेश्याओं के विषय में विशेषता है। लेश्या का कथन प्रथम शतक के पंचम उद्देशक के समान कहना चाहिए।

12. [Q.] *Bhante!* How many infernal abodes are said to be there in *Balukaprabha Prithvi* (third hell)? And other questions.

[Ans.] Gautam! There are said to be one and a half million infernal abodes in the third hell. All other details follow the pattern of *Sharkaraprabha.* The only difference is about *leshyas* (soul-complexions) and this should be quoted from the fifth lesson of first chapter (st. 28).

१३. [प्र.] पंकप्पभाए णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा! दस निरयावाससयसहस्सा.। एवं जहा सक्करप्पभाए। नवरं ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव।

१३. [प्र.] भगवन्! पंकप्रभा पृथ्वी में कितने नरकवास कहे गए हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! (पंकप्रभा पृथ्वी में) दस लाख नरकावास कहे गए हैं। जिस प्रकार शर्कराप्रभा के विषय में कहा है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी है कि (यहाँ से) अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी उद्वर्त्तन नहीं होते हैं। शेष सभी (कथन पूर्ववत् समझना चाहिए)।

13. [Q.] *Bhante!* How many infernal abodes are said to be there in *Pankaprabha Prithvi* (fourth hell)? And other questions.

[Ans.] Gautam! There are said to be one million infernal abodes in the fourth hell. All other details follow the pattern of *Sharkaraprabha*. The only difference is that here *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani* are not reborn. Other details are as said earlier.

१४. [प्र.] धूमप्पभाए णं. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! तिण्णि निरयावाससयसहस्सा. एवं जहा पंकप्पभाए।

१४. [प्र.] भगवन्! धूमप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे गए हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! तीन लाख नरकावास कहे गए हैं। जिस प्रकार पंकप्रभा पृथ्वी (के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए)।

14. [Q.] *Bhante!* How many infernal abodes are said to be there in *Dhoom-prabha Prithvi* (fifth hell)? And other questions.

[Ans.] Gautam! There are said to be three Lac (hundred thousand) infernal abodes in the fifth hell. All other details follow the pattern of *Pankaprabha Prithvi.*

१५. [प्र.] तमाए णं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावास. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पन्नत्ते। सेसं जहा पंकप्पभाए।

१५. [प्र.] भगवन्! तमःप्रभा पृथ्वी में कितने नरकवास कहे गए हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! पाँच कम एक लाख नरकवास कहे गए हैं। शेष (सभी कथन) पंकप्रभा (के समान जानना चाहिए)।

15. [Q.] *Bhante!* How many infernal abodes are said to be there in *Tamah-prabha Prithvi* (sixth hell)? And other questions.

[Ans.] Gautam ! There are said to be five short of one Lac (hundred thousand) infernal abodes in the sixth hell. All other details follow the pattern of *Pankaprabha Prithvi.*

१६. [प्र.] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कइ अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव अप्पइट्ठाणे।

१६. [प्र.] भगवन् ! अध:सप्तम पृथ्वी में कितने अनुत्तर और बहुत बड़े महानरकावास कहे गए हैं, इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम ! पाँच अनुत्तर यावत् बहुत बड़े नरकावास कहे गए हैं, यथा—(काल, महाकाल, रौरव, महारौरव और) अप्रतिष्ठान।

16. [Q.] *Bhante !* How many unique and gigantic infernal abodes are said to be there in *Adhah-saptam Prithvi* (seventh hell) ? And other questions.

[Ans.] Gautam ! There are said to be five gigantic infernal abodes in the seventh hell— ...and so on up to... (*Kaal, Mahakaal, Raurav, Maharaurav* and) *Apratishthaan.*

१७. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य।

१७. [प्र.] भगवन् ! क्या वे नरकावास संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं ?

[उ.] गौतम ! वे नरकावास (मध्य का अप्रतिष्ठान) संख्यात योजन विस्तार वाला है, और शेष (चार नरकावास) असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं।

17. [Q.] *Bhante !* Is the expanse of these infernal abodes countable Yojans or innumerable Yojans ?

[Ans.] Gautam ! The central one (*Apratishthaan*) has countable Yojans area and the remaining (four) have innumerable Yojans area.

१८. [प्र.] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहा. जाव महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवइया.।

[उ.] एवं जहा पंकप्पभाए। नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति न उव्वट्टंति। पन्नत्तएसु तहेव अत्थि। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि। नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा।

१८ [प्र.] भगवन् ! अधःसप्तम पृथ्वी के पाँच अनुत्तर और बहुत बड़े यावत् महानरकावासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले अप्रतिष्ठान नरकावास में एक समय में कितने नैरयिक जीव उत्पन्न होते हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! जिस प्रकार पंकप्रभा के विषय में कहा गया है, (उसी प्रकार अधःसप्तम पृथ्वी के विषय में भी कहना चाहिए।) केवल विशेषता इतनी है कि यहाँ तीन ज्ञान वाले न तो उत्पन्न होते हैं, न ही उद्वर्त्तन करते हैं। परन्तु इन पाँचों नरकावासों में रत्नप्रभा पृथ्वी आदि के समान तीनों ज्ञान वाले पाये जाते हैं। जिस प्रकार संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों के विषय में भी कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी है कि यहाँ 'संख्यात' के स्थान पर 'असंख्यात' कहना चाहिए।

18. [Q.] *Bhante !* Out of the five unique and gigantic infernal abodes, in *Adhah-saptam Prithvi* (seventh hell), in those having countable Yojan area, in one Samay (indivisible fractional unit of time) how many infernal beings (*jivas*) are born ? And other questions.

[Ans.] Gautam ! What has been said about *Pankaprabha Prithvi* should be repeated here (for *Adhah-saptam Prithvi*). The only difference is that here *jivas* with three kinds of knowledge are neither born nor die but, like *Ratnaprabha* and other *Prithvis*, *jivas* with three kinds of knowledge are found in these five infernal abodes also. What has been said about infernal abodes with countable Yojan area should also be repeated for those with innumerable Yojan area, mentioning innumerable instead of countable.

विवेचन—चूँकि असंज्ञी जीव प्रथम नरक पृथ्वी के अलावा उससे आगे की पृथ्वियों में उत्पन्न नहीं होते हैं। इसलिए द्वितीय नरक पृथ्वी से लेकर सप्तम नरक पृथ्वी तक में उनकी उत्पत्ति, उद्वर्त्तना और सत्ता, ये तीनों बातें नहीं कही गयी हैं।

लेश्याओं के विषय में जो विभिन्नता कही गई है, वह प्रथम शतक पंचम उद्देशक के (श. १, उ. ५) के अनुसार जाननी चाहिए। उसके अनुसार—

काऊ दोसु तइयाइ मीसिया नीलिया चउत्थीए।
पंचमियाए मीसा कण्हा, तत्तो परमकण्हा॥

अर्थ—प्रथम और द्वितीय नरक में कापोत लेश्या, तृतीय नरक में कापोत और नील दोनों (मिश्र) लेश्याएँ, चतुर्थ नरक में नील लेश्या, पंचम नरक में नील और कृष्ण (मिश्र) लेश्याएँ तथा छट्ठम नरक में कृष्ण लेश्या और सप्तम नरक में परम कृष्ण लेश्या होती है।

चूँकि चौथी पंकप्रभा नरक पृथ्वी से लेकर सातवीं नरक पृथ्वी तक से निकलने वाले जीव तीर्थंकर नहीं होते हैं, क्योंकि तीर्थंकर तो केवल तीसरी नरक भूमि तक में ही होते हैं और यही तीर्थंकर प्राय: अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी होते हैं। इसी कारण पंकप्रभा नरक पृथ्वी से अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी का उद्वर्तन नहीं होता है।

चूँकि इस नरक में मति-श्रुत और अवधिज्ञानी उत्पन्न नहीं होते हैं और न ही उद्वर्त्तन करते हैं जिस कारण यहाँ केवल सम्यक्त्व भ्रष्ट अर्थात् मिथ्यात्वी जीव ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु यदि कोई मिथ्यात्वी जीव यहाँ सम्यक्त्व प्राप्त कर ले तो वह मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी बन सकता है। अत: यहाँ कहा गया है कि सातवीं नरक में तीन ज्ञान वाले जीवों की उत्पत्ति और उद्वर्त्तना तो नहीं होती है, लेकिन सत्ता होती है।

Elaboration—As non-sentient (*asanjni*) beings are born only in the first hell and not in other lower hells, from second to seventh hell, their birth, death and life-span have not been mentioned.

The difference about *leshyas* (soul-complexions) is as mentioned in first chapter (les.-5, St. 28) — In first and second hells only pigeon soul-complexion exists; in the third hell pigeon and blue (mixed) soul-complexions exist; in the fourth hell only blue soul-complexion exists; in the fifth hell blue and black (mixed) soul-complexions exist; in the sixth hell black soul-complexion exists; and in the seventh hell extreme black soul-complexion exists.

Jivas rising from fourth to seventh hell do not become *Tirthankars*; they generally rise only from first to third hells. Only *Tirthankars* are *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani*; that is why it is said that from the fourth hell there is no rise of *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani jivas*.

As *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani jivas* are neither born in the seventh hell nor do they rise from there, only those fallen from righteousness, or unrighteous beings, are born here. However, if some unrighteous being gains righteousness here he can get reborn and gain three kinds of knowledge (*mati-jnan, shrut-jnana and avadhi-jnana*); that is why it is said that in the seventh hell though *jivas* with three kinds of knowledge are neither born nor rise from but they do exist.

BIRTH, DEATH AND EXISTENCE OF RIGHTEOUS, UNRIGHTEOUS AND MIXED INFERNAL BEINGS

१९. [प्र.] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति।

१९. [प्र.] भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों में सम्यग्दृष्टि नैरयिक उत्पन्न होते हैं या मिथ्यादृष्टि नैरयिक उत्पन्न होते हैं, अथवा सम्यग्मिथ्या (मिश्र) दृष्टि नैरयिक उत्पन्न होते हैं?

[उ.] गौतम ! सम्यग्दृष्टि नैरयिक भी उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नैरयिक भी उत्पन्न होते हैं, किन्तु सम्यग्मिथ्या (मिश्र) दृष्टि नैरयिक उत्पन्न नहीं होते।

19. [Q.] *Bhante !* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area, are righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) born or unrighteous (*mithyadrishti*) infernal beings are born or righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) infernal beings are born ?

[Ans.] Gautam ! Righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) are born, unrighteous (*mithyadrishti*) infernal beings are also born but mixed ones, righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) infernal beings are not born.

२०. [प्र.] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ?

[उ.] एवं चेव।

२०. [प्र.] भगवन्! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से संख्यात योजन-विस्तृत नरकावासों से सम्यग्दृष्टि नैरयिक उद्वर्त्तन करते हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] हे गौतम! उसी तरह समझना चाहिए। (जिस तरह पहले बताया गया है अर्थात्—पूर्वोक्त नरकावासों से सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नैरयिक तो उद्वर्त्तन करते हैं, परन्तु सम्यग्मिथ्या मिश्र दृष्टि नैरयिक उद्वर्त्तन नहीं करते हैं।)

20. [Q.] *Bhante !* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), from those having countable Yojan area, do righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) rise (die) ? And other questions.

[Ans.] Gautam ! As aforesaid. (righteous infernal beings rise, unrighteous infernal beings rise but righteous-unrighteous (*samyag-mithyadrishti*) infernal beings do not rise.

२१. [प्र.] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ?

[उ.] गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा।

२१. [प्र.] भगवन्! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासों में से संख्यात योजन-विस्तार वाले नरकावास सम्यग्दृष्टि नैरयिकों से अविरहित (सहित) हैं या मिथ्यादृष्टि नैरयिकों से अविरहित हैं अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिकों से अविरहित हैं?

[उ.] गौतम! (ये नरकावास) सम्यग्दृष्टि नैरयिकों से भी अविरहित हैं तथा मिथ्यादृष्टि नैरयिकों से भी अविरहित हैं और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिकों से (कदाचित्) अविरहित हैं और (कदाचित्) विरहित हैं।

21. [Q.] *Bhante !* Out of the 3 three million infernal abodes, in this *Ratnaprabha Prithvi* (the first hell), in those having countable Yojan area, do righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) exist or unrighteous (*mithyadrishti*) infernal beings exist or righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) infernal beings exist ?

[Ans.] Gautam ! Righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) exist, unrighteous (*mithyadrishti*) infernal beings exist and mixed ones, righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) infernal beings perhaps exist and perhaps not.

२२. एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा।

२२. इसी प्रकार असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों के विषय में भी तीनों आलापक (गमक) कहने चाहिए।

22. In the same way repeat three statements about infernal abodes with innumerable Yojan area.

२३. एवं सक्करप्पभाए वि। एवं जाव तमाए वि।

२३. इसी प्रकार शर्कराप्रभा से लेकर यावत् तमःप्रभापृथ्वी तक के (संख्यात, असंख्यात योजन-विस्तृत नरकावासों के सम्यग्दृष्टि आदि नैरयिकों के विषय में तीनों आलापक कहने चाहिए।)

23. Same is true for *Sharkaraprabha Prithvi*... and so on up to... *Tamah-prabha Prithvi.* (Repeat the three aforesaid statements for all infernal abodes with countable as well as innumerable Yojan areas.)

२४. [प्र.] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया, पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति।

२४. [प्र.] भगवन् ! अधःसप्तम पृथ्वी के पाँच अनुत्तर यावत् संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों में क्या सम्यग्दृष्टि नैरयिक, उत्पन्न होते हैं? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! (वहाँ) सम्यग्दृष्टि नैरयिक उत्पन्न नहीं होते (परन्तु) मिथ्यादृष्टि नैरयिक उत्पन्न होते हैं और सम्यग्-मिथ्यादृष्टि नैरयिक भी उत्पन्न नहीं होते हैं।

24. [Q.] *Bhante !* Out of the five unique and gigantic infernal abodes, in *Adhah-saptam Prithvi* (seventh hell), in those having countable Yojan area, are righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) born ? And other questions.

[Ans.] Gautam ! Righteous (*samyagdrishti*) infernal beings (*jivas*) are not born, but unrighteous (*mithyadrishti*) infernal beings are born and mixed ones, righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) infernal beings, are also not born.

२५. एवं उव्वट्टंति वि।

२५. इसी प्रकार (उत्पत्ति के समान) उद्वर्त्तना (के विषय में भी कहना चाहिए।)

25. The same is true for *udvartana* (rise or death) also.

२६. अविरहिए जहेव रयणप्पभाए।

२६. रत्नप्रभा में सत्ता के समान (यहाँ भी मिथ्यादृष्टि द्वारा) अविरहित (आदि के विषय में कहना चाहिए।)

26. What has been said about existence in *Ratnaprabha Prithvi* should be followed here also. (Only unrighteous exist.)

२७. एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा।

२७. इसी प्रकार असंख्यात योजन विस्तार वाले (नरकावासों के विषय में पूर्वोक्त) तीनों आलापक कहने चाहिए।

27. The same three statements should also be repeated for infernal abodes with innumerable Yojan area.

विवेचन—सम्यग्मिथ्यादृष्टि (मिश्रदृष्टि) नैरयिक कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं भी होते हैं, इसीलिए उनका विरह हो सकता है। '**न सम्मामिच्छो कुणइ कालं।**' अर्थात् सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवस्था में काल नहीं करता, ऐसा सिद्धान्तवचन है। अतः न तो मिश्रदृष्टि उक्त अवस्था में मरता है और न ही तद्भव-प्रत्यय अवधिज्ञान उसे होता है, जिससे कि मिश्रदृष्टि अवस्था में वह उत्पन्न हो।

Elaboration—Righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) infernal beings perhaps exist and perhaps not; as such there is a possibility of their total absence at some point of time. There is a principle that a righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) being never dies in that mixed state. Therefore, infernal beings never die in that state; also, they do not acquire *avadhi-jnana* during that birth and as such they never rise to be reborn in mixed state.

लेश्याओं का परस्पर परिवर्तन और उसके अनुसार नरक में उत्पत्ति का निरूपण

TRANSFORMATION OF *LESHYAS* AND ENTAILING BIRTH IN HELLS

२८-१. [प्र.] से नूणं भंते! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति?

[उ.] हंता, गोयमा! कण्हलेस्से जाव उववज्जंति।

२८-१. [प्र.] भगवन् ! क्या वास्तव में (जीव) कृष्णलेश्यी, नीललेश्यी यावत् शुक्ललेश्यी (कृष्ण लेश्या योग्य) बनकर (फिर से) कृष्णलेश्यी नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है?

[उ.] हाँ, गौतम! (वह जीव) कृष्णलेश्यी यावत् (शुक्ललेश्यी, कृष्णलेश्या योग्य बनकर फिर से कृष्णलेश्यी नैरयिकों में) उत्पन्न हो जाता है।

28-1. [Q.] *Bhante!* Is it true that a *jiva* with *krishna leshya, neel leshya*... and so on up to... *shukla leshya* transforms (into one with black soul-complexion) and then gets reborn among infernal beings with black soul-complexion (*leshya*)?

[Ans.] Yes, Gautam! A *jiva* with *krishna leshya*... and so on up to... gets reborn among infernal beings with black soul-complexion (*leshya*).

२८-२. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'कण्हलेस्से जाव उववज्जंति' ?

[उ.] गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेसं परिणमइ, कण्हलेसं परिणमित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति।

२८-२. [प्र.] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि (वह जीव कृष्णलेश्यी आदि होकर फिर से) कृष्णलेश्यी नारकों में यावत् उत्पन्न हो जाता है?

[उ.] गौतम ! (जब) उसके लेश्यास्थान संक्लेश को प्राप्त होते-होते (क्रमशः) कृष्णलेश्या के रूप में परिणमित हो जाते हैं तब कृष्णलेश्या के रूप में परिणमित हो जाने पर वह जीव कृष्णलेश्या वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है। इसी कारण हे गौतम! (वह जीव कृष्णलेश्यी आदि होकर फिर से) कृष्णलेश्या वाले नैरयिकों में यावत् उत्पन्न हो जाता है।

28-2. [Q.] *Bhante!* Why is it said that a *jiva* with *krishna leshya*... and so on up to... gets reborn among infernal beings with black soul-complexion (*leshya*)?

[Ans.] Gautam! When the space-points of soul-complexion (*leshyasthaan*) gradually malign to transform into black soul-complexion (*leshya*) ones then once the transformation into black soul-complexion (*leshya*) is complete, that *jiva* gets reborn among infernal beings with black soul-complexion (*leshya*). That is why, O Gautam! It is said that a *jiva* with *krishna leshya*... and so on up to... gets reborn among infernal beings with black soul-complexion (*leshya*).

२९-१. [प्र.] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव उववज्जंति।

२९-१. [प्र.] भगवन् ! क्या (जीव) कृष्णलेश्यी यावत् शुक्ललेश्यी (नील लेश्या योग्य बनकर फिर से) नीललेश्या वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाते हैं?

[उ.] हाँ, गौतम ! यावत् उत्पन्न हो जाते हैं।

29-1. [Q.] *Bhante!* Is it true that a *jiva* with *krishna leshya, neel leshya*... and so on up to... *shukla leshya* transforms (into one with blue soul-complexion) and then gets reborn among infernal beings with blue soul-complexion (*leshya*)?

[Ans.] Yes, Gautam! A *jiva* with *krishna leshya*... and so on up to... gets reborn among infernal beings with blue soul-complexion (*leshya*).

२९-२. [प्र.] से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, नीललेसं परिणमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जंति।

२९-२. [प्र.] भगवन्! किस कारण से ऐसा कहा जाता है कि यावत् (वह नीललेश्या वाले नैरयिकों में) उत्पन्न हो जाते हैं?

[उ.] गौतम! उसके लेश्या स्थान उत्तरोत्तर संक्लेश को प्राप्त होते-होते (क्रमशः) तथा विशुद्ध होते-होते (अन्त में) नीललेश्या के रूप में परिणमित हो जाते हैं। नीललेश्या के रूप में परिणमित होने पर (वह जीव) नीललेश्या वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाते हैं। इसी कारण हे गौतम! (पूर्वोक्त रूप से) यावत् उत्पन्न हो जाते हैं (ऐसा कहा गया है)।

29-2. [Q.] *Bhante!* Why is it said that a *jiva* with *krishna leshya*... and so on up to... gets reborn among infernal beings with blue soul-complexion (*leshya*)?

[Ans.] Gautam! When the space-points of soul-complexion (*leshyasthaan*) gradually malign and then purify to transform into blue soul-complexion (*leshya*) ones; once this transformation into blue soul-complexion (*leshya*) is complete that *jiva* gets reborn among infernal beings

with blue soul-complexion (*leshya*). That is why, O Gautam ! It is said that a *jiva* with *krishna leshya*... and so on up to... gets reborn among infernal beings with blue soul-complexion (*leshya*).

३०. [प्र.] से नूणं भंते! कण्हलेस्से नील. जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?

[उ.] एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्सा वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

तेरसमे सए पढमो उद्देसओ समत्तो॥१३-१॥

३० [प्र.] भगवन्! क्या (जीव) वास्तव में कृष्णलेश्यी, नीललेश्यी यावत् शुक्ललेश्यी (कापोत लेश्या योग्य बनकर फिर से) कापोतलेश्या वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाते हैं?

[उ.] जिस प्रकार नीललेश्या के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार कापोतलेश्या के विषय में भी कहना चाहिए, यावत्—इस कारण से हे गौतम! यावत् उत्पन्न हो जाते हैं।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरते हैं।

॥ तेरहवाँ शतक : प्रथम उद्देशक समाप्त॥

30. **[Q.]** *Bhante !* Is it true that a *jiva* with *krishna leshya, neel leshya*... and so on up to... *shukla leshya* transforms (into one with pigeon soul-complexion) and then gets reborn among infernal beings with pigeon soul-complexion (*leshya*) ?

[Ans.] What has been said about blue soul-complexion (*leshya*) should be repeated for pigeon soul-complexion (*leshya*)... and so on up to... gets reborn among infernal beings with pigion soul-complexion (*leshya*).

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—जीवों की संक्लिश्यमानता तथा विशुद्ध्यमानता ही प्रशस्त अथवा अप्रशस्त लेश्या-परिवर्तना का मुख्य कारण है। जब प्रशस्त लेश्यास्थान अविशुद्धि को प्राप्त होते हैं, तब वे संक्लिश्यमान तथा अप्रशस्त लेश्यास्थान जब विशुद्धि को प्राप्त होते हैं, तब वे विशुद्ध्यमान कहलाते हैं।

इसलिए प्रशस्त-अप्रशस्त लेश्याओं की प्राप्ति में संक्लिश्यमानता-विशुद्ध्यमानता को ही मुख्य कारण माना जाता है।

Elaboration—The main cause for noble and ignoble transformation of soul-complexion is the process of maligning and purifying. When the space-points of soul-complexion get tarnished they are said to be maligned and when they get cleansed they are called purified. That is why the process of maligning and purifying of soul-complexions is believed to be the main cause for noble and ignoble transformation of soul-complexion.

• END OF THE FIRST LESSON OF THE THIRTEENTH CHAPTER •

बीओ उद्देसओ : देव
द्वितीय उद्देशक : देव (भेद–उत्तर भेद, आवास, विस्तार आदि)
DVITIYA UDDESHAK (SECOND LESSON) : *DEV* (DIVINE BEINGS)

चार प्रकार के देवों की प्ररूपणा **FOUR CLASSES OF DIVINE BEINGS**

१. [प्र.] कइविहा णं भंते ! देवा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! चउव्विहा देवा पन्नत्ता, तं जहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया।

१ [प्र.] भगवन्! देव कितने प्रकार के कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! देव चार प्रकार के कहे गए हैं। यथा—(१) भवनवासी, (२) वाणव्यन्तर, (३) ज्योतिष्क और (४) वैमानिक।

1. [Q.] *Bhante !* How many classes of divine beings are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! Divine beings (*Devs*) are said to be of four classes—(1) *Bhavan-vaasi* (abode dwelling), (2) *Vaanavyantar* (interstitial), (3) *Jyotishk* (stellar) and (4) *Vaimaanik* (celestial-vehicular).

विवेचन—देवों के चार वर्ग (समूह अथवा निकाय) हैं। अधोलोक में स्थित भवनों में निवास करने वाले देव **भवनवासी** कहलाते हैं। वनों, वृक्षों, गुफाओं, कन्दराओं आदि निर्जन स्थानों में रहने वाले देव **वाणव्यन्तर** कहलाते हैं। उद्योत और ज्योति (प्रकाश) फैलाने वाले देव **ज्योतिष्क** कहलाते हैं तथा विमानों में निवास करने वाले देव **वैमानिक** अथवा **विमानवासी** कहलाते हैं।

Elaboration—There are four classes (*nikaaya*) of divine beings. Those dwelling in abodes located in the lower world are called *Bhavan-vaasi devs* (Abode-dwelling gods). Those living in forests, trees, caves, crevices and other forlorn places are called *Vaanavyantar devs* (Interstitial gods). Those emitting and spreading light or glow are called *Jyotishk devs* (Stellar gods). Those living in *vimaans* (celestial-vehicles) are called *Vaimaanik devs* (Celestial-vehicular gods).

वैमानिक देवों के आवास

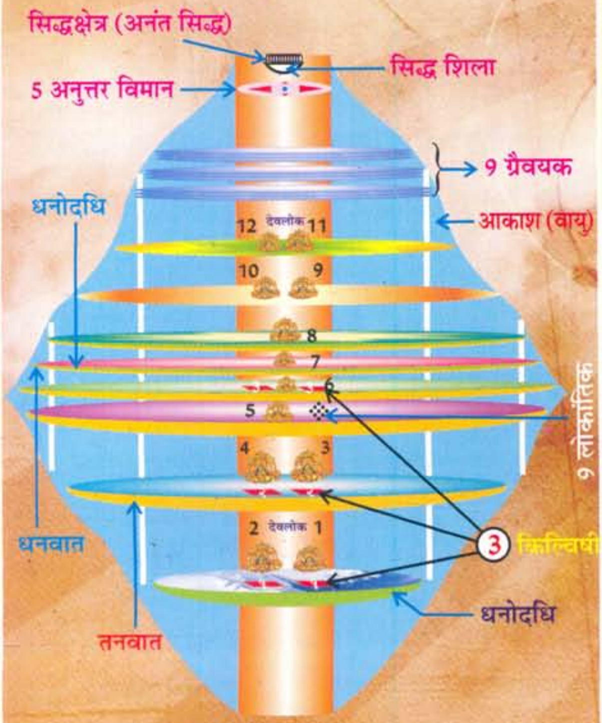

ज्योतिष्क देवों के विमान

ज्योतिष्क देवों के विमान अर्ध कविठ्ठ (अर्ध व्यास) संस्थान के होते हैं। उसके ऊपर देव के महल होते हैं।

वाणव्यंतर निकायक देवों के आवास

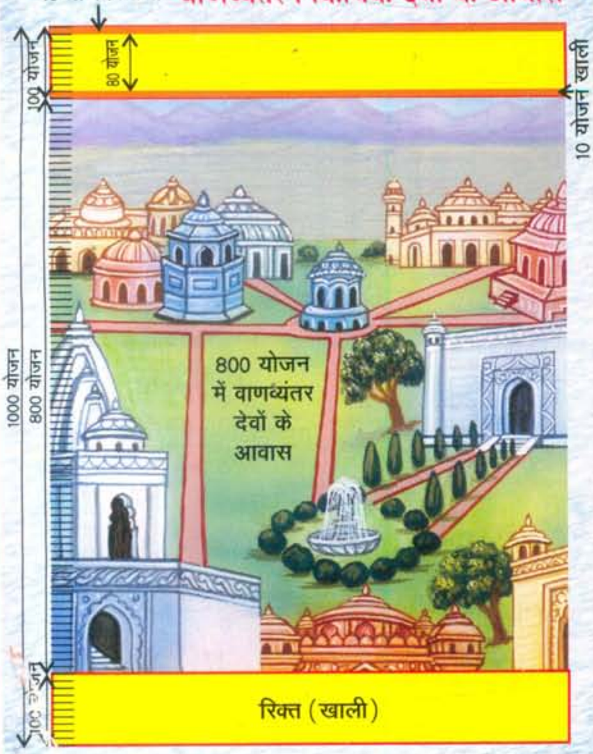

वाणव्यंतर देवों के तीन प्रकार के आवास के प्रमाण

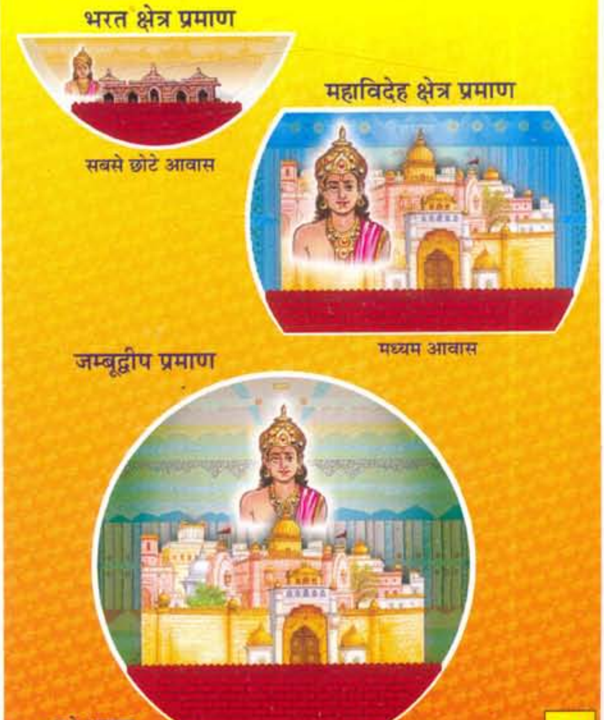

चित्र-परिचय 16

Illustration No. 16

देवों के प्रकार

देव चार प्रकार के बताये गये हैं–

(1) **वैमानिक देव**—इनका आवास ऊर्ध्वलोक में होता है। समपृथ्वी से 900 योजन ऊपर से प्रारम्भ होकर लोक के अग्र भाग तक ऊर्ध्वलोक है। ऊर्ध्वलोक में बारह देवलोक, तीन किल्विषिक, नौ लोकांतिक, नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमानवासी देव रहते हैं।

(2) **ज्योतिष्क देव**—समपृथ्वी से 790 योजन ऊपर से लेकर 900 योजन तक ज्योतिष्क देवों के विमान हैं। यह देव पाँच प्रकार के हैं—सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा। अढ़ाई द्वीप तक रहे हुए ज्योतिष्क देवों के विमान मेरु पर्वत के चारों ओर परिभ्रमण करते रहते हैं जबकि उसके आगे वाले ज्योतिष्क देवों के विमान सदा स्थिर रहते हैं।

(3) **वाणव्यन्तर देव**—तिर्यक लोक की समभूमि की मोटाई 900 योजन है। इसमें से 100 योजन नीचे की भूमि छोड़ देवें तो ऊपर के 800 योजन में वाणव्यन्तर देव रहते हैं। वाणव्यन्तर देवों के आवास विस्तार की दृष्टि से तीन प्रकार के होते हैं—जघन्य भरत क्षेत्र जितने बड़े, मध्यम महाविदेह क्षेत्र और उत्कृष्ट जम्बूद्वीप जितने विस्तार वाले।

(4) **भवनपति देव**—प्रथम नरक के पृथ्वी पिण्ड में स्थित 13 आंतरों में से दस आंतरों में 10 प्रकार के भवनपति देवों के आवास हैं। इन सभी देवों को भवन में निवास करना प्रिय होता है इसलिए इन्हें भवनवासी देव कहते हैं। दस आंतरों में इनके कुल 7 करोड़ 72 लाख भवन हैं। (कृपया चित्र संख्या 15 देखें।)

—शतक 13, उ. 2

CLASSES OF GODS

Divine beings or gods are said to be of four classes —

(1) *Vaimaanik* (celestial-vehicular)—Their abodes are in the upper world (Urdhva Lok) that begins 900 Yojans above the transverse land and extends up to the edge of the Lok. In this upper world there are twelve divine realms, three Kilvishik, nine Lokantik, nine Graiveyak and five Anuttar vimaans.

(2) *Jyotishk* (stellar)—Between 790 and 900 Yojan heights from transverse land there are vimaans of Jyotishk gods. They are of five classes — Surya (sun), Chandra (moon), Graha (planet) and Nakshatra (constellation). The vimaans of Jyotishk gods of Adhai Dveep keep on moving in orbits but those beyond are stationary.

(3) *Vaanavyantar* (interstitial)—The depth of the land mass of the transverse world is 900 Yojans. *Vaanavyantar* gods live in the upper 800 Yojans of this land mass. The expanses of their abodes are of three sizes — the smallest abodes are equivalent to Bharat area; the medium are equivalent to Mahavideh area and the largest are equivalent to Jambu continent.

(4) *Bhavan-vaasi* (abode dwelling)—Out of the 13 levels of the land block of the first hell, Ratnaprabha Prithvi, in 10 levels there are abodes of ten classes of *Bhavan-vaasi* gods. As they like to live in abodes they are called abode dwelling gods. In the ten levels there are 7 Krore 72 Lac abodes. (Illustration–15)

—Shatak-13, lesson-2

२. [प्र.] भवणवासी णं भंते ! देवा कइविहा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारा. एवं भेओ जहा बिइयसए देवुद्देसए (स. २ उ. ७) जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा।

२. [प्र.] भगवन्! भवनवासी देव कितने प्रकार के कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! (भवनवासी देव) दस प्रकार के कहे गए हैं। यथा—असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार। इस प्रकार भवनवासी आदि देवों के भेदों का वर्णन द्वितीय शतक के सप्तम उद्देशक (श. २, उ. ७) के अनुसार यावत् अपराजित एवं सर्वार्थसिद्ध तक जानना चाहिए।

2. [Q.] *Bhante!* How many classes of *Bhavan-vaasi devs* (Abode-dwelling gods) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! They are said to be of ten classes—Asur-kumar... and so on up to... Stanit-kumar. Refer to seventh lesson of the second chapter for description of all classes of divine beings including Abode-dwelling gods... and so on up to... Aparaajit and Sarvarth-siddha (*vimaans*).

३. [प्र.] केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता।

३. [प्र.] भगवन् ! असुरकुमार देवों के कितने लाख आवास कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! असुरकुमार देवों के चौसठ लाख आवास कहे गऐ हैं।

3. [Q.] *Bhante!* How many abodes of Asur-kumar *devs* are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be sixty four Lac (6.4 million) abodes of Asur-kumar *devs*.

४. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि।

४. [प्र.] भगवन्! असुरकुमार देवों के क्या वे आवास संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं?

[उ.] गौतम ! (असुरकुमार देवों के वे आवास) संख्यात योजन विस्तार वाले भी हैं और असंख्यात योजन विस्तार वाले भी हैं।

4. [Q.] *Bhante!* Is the expanse of these abodes of Asur-kumar *devs* countable (*sankhyat*) Yojans (limited) or innumerable (*asankhyat*) Yojans (unlimited) ?

[Ans.] Gautam ! The expanse of these abodes of Asur-kumar *devs* is countable Yojans as also innumerable Yojans.

भवनपति आवासों में उत्पन्न असुरकुमारादि से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर

ASUR-KUMAR AND OTHER *DEVS* BORN IN DIVINE ABODES

५-१. [प्र.] चोसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमयेणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति? जाव केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति ? केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति ?

[उ.] एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, नवरं दोहिं वि वेएहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति। सेसं तं चेव।

५-१. [प्र.] भगवन् ! (असुरकुमारों के) चौसठ लाख आवासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले असुरकुमारावासों में एक समय में कितने असुरकुमार उत्पन्न होते हैं, यावत् कितने तेजोलेश्यी उत्पन्न होते हैं ?

[उ.] (गौतम !) जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए थे, यहाँ भी इन प्रश्नों के उत्तर उसी प्रकार समझ लेना चाहिए। केवल विशेषता इतनी है कि (असुरकुमार देव) दो वेदों (स्त्रीवेद और पुरुषवेद) सहित उत्पन्न होते हैं, नपुंसकवेदी उत्पन्न नहीं होते। शेष सभी कथन पूर्ववत् समझना चाहिए।

5-1. [Q.] *Bhante!* Out of the sixty four Lac (6.4 million) divine abodes (of Asur-kumar *devs*), in those having limited expanse (countable Yojan area), in one Samay (indivisible fractional unit of time) how many Asur-kumar gods are born ?... and so on up to... How many with *tejoleshya* (fiery soul-complexion) are born ?

[Ans.] Gautam ! This follows the pattern of answers to similar questions asked about Ratnaprabha prithvi (first hell). The only difference is that these divine beings (Asur-kumar *devs*) are born with two genders (male and

female) and never with neuter gender. Rest of the information is same as aforesaid (13/1).

५ [२] उव्वट्टंतगा वि तहेव, नवरं असण्णी उव्वट्टंति, ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेसं तं चेव। पन्नत्तएसु तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थिवेयगा पन्नत्ता। एवं पुरिसवेयगा वि। नपुंसगवेयगा नत्थि। कोहकसायी सिय अत्थि, सिय नत्थि; जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता। एवं माण. माय.। संखेज्जा लोभकसायी पन्नत्ता। सेसं तं चेव तिसु वि गमएसु चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ।

५. [२] (गौतम !) उद्वर्त्तना के विषय में भी उसी प्रकार जानना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि (यहाँ से) असंज्ञी तो उद्वर्त्तना करते हैं परन्तु अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी उद्वर्त्तना नहीं करते। शेष सभी कथन पूर्ववत् जानना चाहिए। सत्ता के विषय में जैसा पहले बताया गया है, वैसा ही यहाँ कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि वहाँ संख्यात स्त्रीवेदक भी हैं और पुरुषवेदक भी हैं, नपुंसकवेदक नहीं हैं। क्रोध कषायी कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते। यदि होते हैं तो जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात होते हैं। इसी प्रकार मान कषायी और माया कषायी के विषय में कहना चाहिए। लोभ कषायी संख्यात कहे गए हैं। शेष सभी कथन पूर्ववत् जानना चाहिए। (संख्यात विस्तार वाले आवासों में) उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता, इन तीनों के आलापकों (गमकों) में चार लेश्याएँ कहनी चाहिए।

5-2. (Gautam !) The same is true for *udvartana* (death; rise to be born in higher realms or descent to be born in lower realms). The only difference is that from here non-sentient (*asanjni*) beings die but not *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani*. Rest of the information is same as aforesaid (13/1). The same is also true for existence (*satta or sthiti*). The difference is that countable gods with male and female gender exist and none with neuter gender. *Krodh-kashaayi* (having anger) *jivas* perhaps exist and perhaps not; if they do there number is a minimum of one, two or three and maximum of countable. The same is also true for *maan-kashaayi* (having conceit) and *maaya-kashaayi* (having deceit) *jivas*. *Lobha-kashaayi* (having greed) beings are said to be countable in number. Rest of the information is same as aforesaid (13/1). In the three statements about origin, death and existence (in divine abodes with limited expanse) four soul-complexions (*leshyas*) should be included.

५. [३] एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता।

५. [३] इसी प्रकार असंख्यात योजन विस्तार वाले असुरकुमारावासों के विषय में भी कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि पूर्वोक्त तीनों आलापकों (गमकों) में (संख्यात के स्थान पर) 'असंख्यात' कहना चाहिए। और यावत् –'असंख्यात अचरम कहे गए हैं', यहाँ तक कहना चाहिए।

5-3. The same is also true for divine abodes of Asur-kumar *Devs* with unlimited expanse (innumerable Yojan area). The only difference is that in the three aforesaid statements limited should be replaced by unlimited ... and so on up to ... there are said to be innumerable *acharam* beings (those who are not in their last birth or the last moment of that particular birth).

६. [प्र.] केवइया णं भंते ! नागकुमारवास. ?

[उ.] एवं जाव थणियकुमारा, नवरं जत्थ जत्तिया भवणा।

६. [प्र.] भगवन्! नागकुमार (आदि भवनवासी) देवों के कितने लाख आवास कहे गए हैं?

[उ.] (गौतम!) पूर्वोक्त रूप से (नागकुमार से लेकर) यावत् स्तनितकुमार तक (उसी प्रकार) कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि जहाँ जितने लाख भवन हों, वहाँ उतने लाख भवन कहने चाहिए।

6. [Q.] *Bhante !* How many abodes of Naag-kumar *devs* (and other abode dwelling gods) are said to be there ? (and other questions)

[Ans.] (Gautam !) As aforesaid (from Naag-kumar *devs*) ... and so on up to ... Stanit-kumar *devs*; only mention the respective number of abodes in due order.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्रों (सू. ५ व ६ में) भवनवासी देवों के आवास एवं उनके विस्तार आदि की प्ररूपणा की गई है। भवनवासी देवों के अन्तर्गत असुरकुमारों के ६४ लाख, नागकुमारों के ८४ लाख, सुपर्णकुमारों के ७२ लाख, वायुकुमारों के ९६ लाख तथा द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार और स्तनितकुमार, इन प्रत्येक युगल के ७६-७६ लाख भवन होते हैं।

भवनवासी देवों के आवास (भवन) संख्यात योजन विस्तार वाले और असंख्यात योजन विस्तार वाले होते हैं। उनके तीन प्रकार के आवासों का परिमाण निम्न गाथा के आधार पर कहा गया है–

जंबूदीवसमा खलु भवणा, जे हुंति सव्वखुड्डागा।
संखेज्जवित्थडा मज्झिमा उ सेसा असंखेज्जा॥

अर्थ—भवनपति देवों के जो सबसे छोटे आवास (भवन) होते हैं, वे जम्बूद्वीप के बराबर होते हैं। मध्यम आवास संख्यात योजन विस्तार वाले और शेष अर्थात्—बड़े आवास असंख्यात योजन विस्तार वाले होते हैं।

असुरकुमार से लेकर ईशान देवलोक तक के देव पृथ्वीकायादि असंज्ञी जीवों में भी उत्पन्न होते हैं।

असुरकुमार आदि देवों से च्यवकर निकले (उद्वृत्त) हुए जीव तीर्थंकर आदि पद को प्राप्त नहीं करते और न तीर्थंकरादि की तरह अवधिज्ञान, अवधिदर्शन लेकर उद्वृत्त होते (निकलते) हैं।

असुरकुमार आदि देवों में क्रोध, मान और माया कषाय के उदय वाले जीव तो कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते, किन्तु लोभकषाय के उदय वाले जीव तो सदैव होते हैं। इसलिए यहाँ लोभकषायी संख्यात कहे गये हैं।

असुरकुमारादि भवनवासी देवों में चार लेश्याएँ (कृष्ण, नील, कापोत और तेजोलेश्या) होती हैं, इसलिए इनके तीनों (उत्पत्ति, उद्वर्त्तन और सत्ता) आलापकों (गमकों) में प्रत्येक में चार-चार लेश्याएँ कहनी चाहिए।

Elaboration—In these statements (5, 6) details of abodes of abode-dwelling gods including their expanse have been given. The number of abodes of each sub-class of *Bhavan-vaasi devs* are as follows—Asur-kumar *devs*–6.4 million, Naag-kumar *devs*–8.4 million, Suparn-kumar *devs*–7.2 million, Vayu-kumar *devs*–9.6 million, and each following pairs have 7.6 million–Dveep-kumar & Disha-kumar, Udadhi-kumar & Vidyut-kumar, and Agni-kumar & Stanit-kumar.

The abodes of abode-dwelling gods are of countable (*sankhyat*) Yojan area as well as uncountable (*asankhyat*) Yojan area. The dimensions of their three types of abodes according to the quoted verse are—The smallest abodes of abode-dwelling gods are equivalent in size to Jambu continent. The medium sized abodes are with countable Yojan area and the remaining, the larger ones are with uncountable Yojan area.

Gods from Asur-kumars to those from Ishaan divine realm get reborn among non-sentient beings including earth-bodied ones also.

Jivas descending from divine beings including Asur-kumars do not gain any spiritually lofty status including that of a *Tirthankar*. They also do not descend endowed with *Avadhi-jnan* and *Avadhi-darshan*, like a *Tirthankar* does.

Among abode dwelling gods, *jivas* with fruition of three passion, namely anger, conceit and deceit, perhaps exist and perhaps not. But those with greed are always there. Therefore it is said that among them the number of beings having greed is countable.

In abode dwelling gods there are four soul-complexions (black, blue, pigeon and fiery); as such, in all the three statements about their origin, death and existence four soul-complexions should be included.

वाणव्यन्तर देवों से सम्बन्धित प्ररूपणा INFORMATION ABOUT *VAANAVYANTAR* DEVS

७. [प्र.] केवइया णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता।

७. [प्र.] भगवन्! वाणव्यन्तर देवों के कितने लाख आवास कहे गये हैं?

[उ.] गौतम! वाणव्यन्तर देवों के असंख्यात लाख आवास कहे गए हैं।

7. [Q.] *Bhante !* How many hundred thousand abodes of *Vaanavyantar devs* (Interstitial gods) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be innumerable hundred thousand abodes of *Vaanavyantar devs* (Interstitial gods).

८. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा।

८. [प्र.] भगवन्! क्या वे वाणव्यन्तरावास संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं?

[उ.] गौतम! वे (तो केवल) संख्यात योजन विस्तार वाले हैं, असंख्यात योजन विस्तार वाले नहीं हैं।

8. [Q.] *Bhante !* Is the expanse of these abodes of *Vaanavyantar devs* (Interstitial gods) countable Yojans (limited) or innumerable Yojans (unlimited) ?

[Ans.] Gautam ! The expanse of these abodes is countable Yojans only and not innumerable Yojans.

९. [प्र.] संखेज्जेसु णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवइया वाणमंतरा उववज्जंति ?

[उ.] एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा तहेव भाणियव्वा वाणमंतराण वि तिण्णि गमगा।

९. [प्र.] भगवन्! वाणव्यन्तर देवों के संख्यात योजन विस्तार वाले (असंख्यात लाख) आवासों में एक समय में कितने वाणव्यन्तर देव उत्पन्न होते हैं।

[उ.] (गौतम!) जिस प्रकार असुरकुमार देवों के संख्यात योजन विस्तार वाले आवासों के विषय में तीन आलापक (उत्पत्ति, उद्वर्त्तन और सत्ता) कहे गए हैं, उसी प्रकार वाणव्यन्तर देवों के विषय में भी तीनों आलापक कहने चाहिए।

9. [Q.] *Bhante !* In one Samay (indivisible fractional unit of time) how many *Vaanavyantar devs* are born in (innumerable) divine abodes of *Vaanavyantar devs,* having limited expanse (countable Yojan area) ?

[Ans.] (Gautam !) On the same pattern like the three statements (about origin, rise and existence) mentioned with regard to Asur-kumar *devs*, repeat three statements for *Vaanavyantar devs* too.

विवेचन—वाणव्यन्तर देवों के आवास केवल संख्यात योजन विस्तार वाले ही होते हैं। उनका परिमाण निम्न गाथा के आधार पर कहा गया है—

जंबूद्वीप समा खलु उक्कोसेणं हवंति ते नगरा।
खुड्डा खेत्तसमा खलु विदेह समगा उ मज्झिमगा॥

वाणव्यन्तर देवों के सबसे छोटे आवास भरतक्षेत्र के बराबर होते हैं, मध्यम आवास महाविदेह के समान होते हैं और सबसे बड़े आवास जम्बूद्वीप के समान होते हैं।

Elaboration—Divine abodes of *Vaanavyantar devs* have only limited expanse (countable Yojan area). Their dimensions as mentioned in the verse are—The smallest abodes of *Vaanavyantar devs* are equivalent to Bharat area; the medium are equivalent to Mahavideh area and the largest are equivalent to Jambu continent.

ज्योतिष्क देवों से सम्बन्धित प्रश्न **QUESTIONS ABOUT *JYOTISHK DEVS***

१०. [प्र.] केवइया णं भंते ! जोइसिय विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! असंखेज्जा जोइसिय विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता।

१०. [प्र.] भगवान् ! ज्योतिष्क देवों के कितने लाख विमानावास कहे गऐ हैं?

[उ.] गौतम ! ज्योतिष्क देवों के विमानावास असंख्यात लाख कहे गये हैं।

10. [Q.] *Bhante !* How many hundred thousand abodes of *Jyotishk devs* (stellar gods) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be innumerable hundred thousand abodes of *Jyotishk devs* (stellar gods).

११. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा. ?

[उ.] एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं एगा तेउलेस्सा। उववज्जंतेसु पन्नत्तेसु य असन्नी नत्थि। सेसं तं चेव।

११. [प्र.] भगवन् ! वे (ज्योतिष्क विमानावास) संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं?

[उ.] (गौतम !) जिस प्रकार वाणव्यन्तर देवों के विषय में कहा गया है उसी प्रकार ज़्योतिष्क देवों के विषय में तीन आलापक कहने चाहिए। मात्र विशेषता इतनी ही है कि इनमें केवल एक तेजोलेश्या ही होती है। (व्यन्तरदेवों में) असंज्ञी उत्पन्न होते हैं, ऐसा कहा गया था, परन्तु इनमें असंज्ञी उत्पन्न नहीं होते (न तो उद्वर्त्तते हैं और न ही च्यवते हैं)। शेष सभी कथन पूर्ववत् समझना चाहिए।

11. **[Q.]** *Bhante !* Is the expanse of these abodes of *Jyotishk devs* (stellar gods) countable Yojans (limited) or innumerable Yojans (unlimited) ?

[Ans.] (Gautam !) On the same pattern like the three statements (about origin, rise and existence) mentioned with regard to *Vaanavyantar devs*, repeat three statements for *Jyotishk devs* (stellar gods) too. The difference is that *Jyotishk devs* (stellar gods) have fiery soul-complexion (*Tejoleshya*) only; and among *Vaanavyantar devs* non-sentient *(asanjni)* beings are born but among *Jyotishk devs* (stellar gods) non-sentient beings are not born (or die). Rest of the information is same as stated earlier.

विवेचन—वाणव्यन्तर देवों से ज्योतिष्क देवों में अन्तर केवल इतना ही है कि इनमें केवल एक तेजोलेश्या होती है। इनके विमान संख्यात योजन विस्तार वाले तो होते हैं, परन्तु वे एक योजन से भी कम विस्तार वाले अर्थात् योजन का $\frac{१}{६१}$ भाग वाले होते है (एगसट्ठिभागं काऊण जोयणं) तथा उनमें असंज्ञी जीवों की उत्पत्ति, उद्वर्त्तना और सत्ता नहीं होती है।

Elaboration—The difference between *Vaanavyantar devs* and *Jyotishk devs* (stellar gods) is that stellar gods have fiery soul-complexion (*Tejoleshya*) only. Their celestial vehicles (*vimaans*) have countable Yojan area and that too only less than one Yojan (exactly 1/61 Yojan). Non-sentient beings do not get born, exist or die there.

सौधर्मादि कल्पों, ग्रैवेयक एवं अनुत्तर देवों से सम्बन्धित कथन

INFORMATION ABOUT SAUDHARM KALP TO ANUTTAR *VIMAANS*

१२. [प्र.] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता।

१२. [प्र.] भगवन्! सौधर्म कल्प में कितने लाख विमानावास कहे गऐ हैं?

[उ.] गौतम! बत्तीस लाख विमानावास कहे हैं।

12. [Q.] *Bhante!* How many hundred thousand *vimaans* (celestial vehicles) are said to be there in Saudharm kalp ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be thirty two Lac (3.2 million) *vimaans* (celestial vehicles) there.

१३. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि।

१३. [प्र.] भगवन् ! वे विमानावास संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं ?

[उ.] गौतम! वे संख्यात योजन विस्तार वाले भी हैं और असंख्यात योजन विस्तार वाले भी हैं।

13. [Q.] *Bhante!* Is the expanse of these *vimaans* (celestial vehicles) countable Yojans (limited) or innumerable Yojans (unlimited) ?

[Ans.] Gautam ! The expanse of these *vimaans* (celestial vehicles) is countable Yojans (limited) as also innumerable Yojans (unlimited).

१४. [प्र.] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मा देवा उववज्जंति ? केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति ?

[उ.] एवं जहा जोइसियाणं तिण्णि गमगा तहेव भाणियव्वा, नवरं तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा। ओहिनाणी ओहिदंसणी य चयावेयव्वा। सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थडेसु

एवं चेव तिण्णि गमगा, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा। ओहिनाणी य ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति। सेसं तं चेव।

१४. [प्र.] भगवन्! सौधर्म कल्प के बत्तीस लाख विमानावासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले विमानों में एक समय में कितने सौधर्म देव उत्पन्न होते हैं? और कितने तेजोलेश्या वाले सौधर्म देव उत्पन्न होते हैं?

[उ.] (गौतम!) जिस प्रकार ज्योतिष्क देवों के विषय में तीन (उत्पाद, उद्वर्त्तन और सत्ता) आलापक कहे गए हैं, उसी प्रकार यहाँ भी तीन आलापक कहने चाहिए। केवल विशेषता इतनी है कि तीनों आलापकों में (असंख्यात के स्थान पर) 'संख्यात' कहना चाहिए तथा अवधिज्ञानी-अवधिदर्शनी का च्यवन भी कहना चाहिए। इसके अतिरिक्त शेष सभी कथन पूर्ववत् जानना चाहिए।

असंख्यात योजन विस्तार वाले सौधर्म-विमानावासों के विषय में भी इसी प्रकार तीनों आलापक (गमक) कहने चाहिए। मात्र विशेषता इतनी है कि इसमें ('संख्यात' के स्थान पर) 'असंख्यात' कहना चाहिए। किन्तु असंख्यात योजन विस्तार वाले विमानावासों में से अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी तो 'संख्यात' ही च्यवते हैं। शेष सभी कथन पूर्ववत् समझना चाहिए।

14. [Q.] *Bhante !* Out of the thirty two Lac (3.2 million) divine abodes of Saudharm kalp, in those having limited expanse (countable Yojan area), in one Samay (indivisible fractional unit of time) how many Saudharm *dev*s are born ? How many with *tejoleshya* (fiery soul-complexion) are born ?

[Ans.] (Gautam !) On the same pattern like the three statements (about origin, rise and existence) mentioned with regard to *Jyotishk devs* (stellar gods), repeat three statements here too. The difference is that in all the three statements mention countable (in place of innumerable) and descent of *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani jiva*s. Rest of the information is same as stated earlier.

Repeat the same three statements for *vimaan*s having unlimited expanse (innumerable Yojan area) also. The difference is that in all the three statements mention innumerable instead of countable. However, even from *vimaan*s with unlimited expanse the descent of *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani jiva*s is only countable. Rest of the information is same as stated earlier.

१५. एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा।

[१५] जिस प्रकार सौधर्म देवलोक के विषय में छह आलापक कहे गए हैं, उसी प्रकार ईशान देवलोक के विषय में भी छह (तीन संख्येय-विस्तृत विमान-सम्बन्धी और तीन असंख्येय-विस्तृत विमान-सम्बन्धी) गमक (आलापक) कहने चाहिए।

15. On the same pattern like the six statements mentioned with regard to Saudharm kalp, repeat six statements (three about limited area and three about unlimited area) with regard to Ishaan kalp too.

१६. सणंकुमारे एवं चेव, नवरं इत्थिवेयगा उववज्जंतेसु पन्नत्तेसु य न भण्णंति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णंति। सेसं तं चेव।

[१६] सनत्कुमार देवलोक के विषय में इसी प्रकार जानना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि सनत्कुमार देवों में स्त्रीवेदक उत्पन्न नहीं होते, सत्ता विषयक गमकों में भी स्त्रीवेदी नहीं कहे जाते हैं। यहाँ तीनों आलापकों में असंज्ञी पाठ नहीं कहना चाहिए। शेष सभी कथन पूर्ववत् समझना चाहिए।

16. The same is also true for Sanatkumar *devlok* (divine realm) with a difference that female gender are not born among Sanatkumar gods; in the statements about existence also, female gender is not mentioned. Here in all the three statements non-sentient (*asanjni*) should not be included. Rest of the information is same as stated earlier.

१७. एवं जाव सहस्सारे, नाणत्तं विमाणेसु, लेस्सासु य। सेसं तं चेव।

[१७] इसी प्रकार (माहेन्द्र देवलोक से लेकर) यावत् सहस्रार देवलोक तक कहना चाहिए। यहाँ विमानों की संख्या और लेश्या के विषय में अन्तर (विभिन्नता) है। शेष सभी कथन पूर्वोक्तवत् समझना चाहिए।

17. The same should also be repeated for other divine realms (from Maahendra divine realm)... and so on up to... Sahasraar divine realm. Only difference is in the number of *vimaans* and about soul-complexions. Rest of the information is same as stated earlier.

१८. [प्र.] आणय-पाणएसु णं भंते ! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पन्नत्ता।

१८. [प्र.] भगवन्! आनत और प्राणत देवलोकों में कितने सौ विमानावास कहे गए हैं?

[उ.] गौतम! (आनत-प्राणत देवलोकों में) चार सौ विमानावास कहे गऐ हैं।

18. [Q.] *Bhante!* How many hundred *vimaans* (celestial vehicles) are said to be there in Aanat and Praanat divine realms?

[Ans.] Gautam! There are said to be four hundred *vimaans* (celestial vehicles).

१९. [प्र.] ते णं भंते! किं संखेज्ज. पुच्छा।

[उ.] गोयमा! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्ज वित्थडा वि। एवं संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा जहा सहस्सारे। असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चयंतेसु य एवं चेव संखेज्जा भाणियव्वा। पन्नत्तेसु असंखेज्जा, नवरं नोइंदियोवउत्ता, अणंतरोववन्नगा, अणंतरोगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा य, एएसिं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता। सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा।

१९. [प्र.] भगवन्! वे (विमानावास) क्या संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं?

[उ.] गौतम! वे संख्यात योजन विस्तार वाले भी हैं और असंख्यात योजन विस्तार वाले भी हैं। संख्यात योजन विस्तार वाले विमानावासों के विषय में सहस्रार देवलोक के समान तीन आलापक कहने चाहिए। असंख्यात योजन विस्तार वाले विमानों में उत्पत्ति और च्यवन के विषय में 'संख्यात' कहना चाहिए एवं 'सत्ता' में असंख्यात कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी है कि नो-इन्द्रिय (मन) के उपयोग वाले अनन्तरोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, अनन्तराहारक और अनन्तर-पर्याप्तक, ये पाँच जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात कहे गए हैं। शेष (अन्य सभी) असंख्यात कहने चाहिए।

19. [Q.] *Bhante!* Is the expanse of these *vimaans* (celestial vehicles) countable Yojans (limited) or innumerable Yojans (unlimited)?

[Ans.] Gautam! The expanse of these *vimaans* (celestial vehicles) is countable Yojans (limited) as also innumerable Yojans (unlimited). With regard to *vimaans* with countable Yojans area three statements should be repeated like Sahasraar divine realm. With regard to *vimaans* with uncountable Yojans area countable should be mentioned about origin and descent and uncountable about existence. The difference is that *jivas* with

no-indriya upayoga (mental inclination), *Anantaropapannak, Ananataraavagaadh, Anantaraahaarak* and *Anantaraparyaaptak jivas* (see 3/1/8 for meaning of these terms) are said to be a minimum of one, two and three and a maximum of countable in number. All others are said to be innumerable.

२०. आरणऽच्चुएसु एवं चेव जहा आणय-पाणएसु नाणत्तं विमाणेसु।

[२०] जिस प्रकार आनत और प्राणत के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार आरण और अच्युत देवलोक के विषय में भी कहना चाहिए। इनमें विमानों की संख्या में अन्तर (विभिन्नता) है।

20. What has been said about Aanat and Praanat divine realms should be repeated for Aaran and Achyut divine realms with difference in number of *vimaans*.

२१. एवं गेवेज्जगा वि।

[२१] इसी प्रकार नौ ग्रैवेयक देवलोकों (के विषय में भी कहना चाहिए।)

21. The same is also true for nine Gaiveyak *vimaans*.

२२. [प्र.] कइ णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता ?

[उ.] गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता।

२२. [प्र.] भगवन् ! अनुत्तर कितने कहे गए हैं?

[उ.] गौतम ! अनुत्तर विमान पाँच कहे गए हैं।

22. **[Q.]** *Bhante !* How many Anuttar *vimaans* (celestial vehicles) are said to be there ?

[Ans.] Gautam ! There are said to be five Anuttar *vimaans* (celestial vehicles).

२३. [प्र.] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?

[उ.] गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य।

२३. [प्र.] भगवन्! क्या वे (अनुत्तर विमान) संख्यात योजन विस्तार वाले हैं अथवा असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं?

[उ.] गौतम! (उनमें से एक) संख्यात योजन विस्तार वाले हैं और (शेष चार) असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं।

23. [Q.] *Bhante!* Is the expanse of these *vimaans* (Anuttar celestial vehicles) countable Yojans (limited) or innumerable Yojans (unlimited) ?

[Ans.] Gautam ! The expanse of one of these *vimaans* (celestial vehicles) is countable Yojans (limited) and that of the remaining four is innumerable Yojans (unlimited).

२४. [प्र.] पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति ? केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति ? पुच्छा तहेव।

[उ.] गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति। एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं कण्हपक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जंति न चयंति, न वि पन्नत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति जाव संखेज्जा चरिमा पन्नत्ता। सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णंति, नवरं अचरिमा अत्थि। सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता।

२४. [प्र.] भगवन्! पाँच अनुत्तर विमानों में से संख्यात योजन विस्तार वाले विमान में एक समय में कितने अनुत्तरौपपातिक देव उत्पन्न होते हैं, (उनमें से) कितने शुक्ल-लेश्यी उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न।

[उ.] गौतम! पाँच अनुत्तर विमानों में से संख्यात योजन विस्तार वाले ('सर्वार्थसिद्ध' नामक) अनुत्तर-विमान में एक समय में, जघन्य से एक दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात अनुत्तरौपपातिक देव उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार संख्यात योजन विस्तार वाले ग्रैवेयक विमानों के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी है कि यहाँ कृष्ण पाक्षिक, अभव्य-सिद्धिक तथा तीन अज्ञान वाले जीव न तो उत्पन्न होते हैं, न ही च्यवते हैं और न ही सत्ता में होते हैं। इसी प्रकार (तीनों आलापकों में) 'अचरम' का निषेध करना चाहिए, यावत् संख्यात चरम कहे गए हैं। शेष सभी वर्णन पूर्ववत् कहना चाहिए। असंख्यात योजन विस्तार वाले (चार अनुत्तर विमानों में ये पूर्वोक्त कृष्ण पाक्षिक आदि जीव पूर्वोक्त तीनों आलापकों में) नहीं कहे गए हैं। विशेषता इतनी ही है कि (इन असंख्यात योजन वाले अनुत्तर

विमानों में) अचरम जीव भी होते हैं। जिस प्रकार असंख्यात योजन विस्तार वाले ग्रैवेयक विमानों के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी सभी कथन यावत् असंख्यात अचरम जीव कहे गये हैं, तक करना चाहिए।

24. [Q.] *Bhante !* Out of the five Anuttar *vimaans* (celestial vehicles), in the one having limited expanse (countable Yojan area), in one Samay (indivisible fractional unit of time) how many Anuttaraupapaatik *devs* are born ? How many (of them) with *shukla leshya* (white soul-complexion) are born? And other questions.

[Ans.] Gautam ! Out of the five Anuttar *vimaans* (celestial vehicles), in the one (Sarvarth-siddha) having limited expanse (countable Yojan area), in one Samay (indivisible fractional unit of time) a minimum of one, two or three and a maximum of countable Anuttaraupapaatik *devs* are born. What has been said about Graiveyak *vimaans* with countable Yojan area should be repeated here. The difference is here *krishna-pakshik* (with a dark future) and *abhava-siddhik* (not destined to be liberated in next birth) as well as those with three *ajnanas* (not endowed with three kinds of knowledge) neither get born, nor die or exist. In the same way in all the three statements *Achāram jivas* should be negated... and so on up to... countable *charam jivas* are there. Rest of the information is same as stated earlier. In those (four Anuttar *vimaans*) with unlimited expanse (in aforesaid three statements the aforesaid *krishna-pakshik jivas* etc.) have been negated. The difference is that here (in Anuttar *vimaans* with unlimited expanse) Acharam *jivas* are also there. What has been said about Graiveyak *vimaans* with unlimited expanse should be repeated here... and so on up to... innumerable *Acharam jivas* are said to be there.

विवेचन—सौधर्म और ईशान देवलोक में विशेषता—इन दोनों देवलोकों से अवधिज्ञान-अवधिदर्शन युक्त तीर्थंकर तथा कई अन्य जीव च्यवते हैं, इसलिए उद्वर्त्तन (च्यवन) में यहाँ अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी कहने चाहिए।

भवनपति, वाणव्यन्तर और ज्योतिष्क देवों से लेकर वैमानिक देवों तक में विशेषता यह है कि असंख्यात योजन विस्तार वाले विमानों से अवधिज्ञानी-अवधिदर्शनी संख्यात ही च्यवते हैं, क्योंकि अवधिज्ञान और अवधिदर्शन से युक्त च्यवने वाली वैसी आत्माएँ (तीर्थंकर एवं कुछ अन्य के सिवाय) कुछ ही होती हैं।

सौधर्म और ईशान देवलोक तक ही स्त्रीवेदी देवियाँ उत्पन्न होती हैं। इनके आगे सनत्कुमारादि देवलोकों में स्त्रीवेदी उत्पन्न नहीं होते। जब इनकी उत्पत्ति वहाँ नहीं होती, तब सत्ता में भी उनका अभाव ही समझना चाहिए। सनत्कुमारादि देवलोक में जो देवियाँ आती हैं, वे नीचे के देवलोक से ही आती हैं।

सनत्कुमारादि देवलोक में संज्ञी जीव ही उत्पन्न होते हैं, असंज्ञी नहीं। असंज्ञी में देवों की उत्पत्ति दूसरे देवलोक तक होती है। जब ये देव यहाँ से च्यवते हैं, तब भी संज्ञी जीवों में ही उत्पन्न होते हैं। इसलिए इन देवलोकों में उत्पत्ति, च्यवन और सत्ता—इन तीनों आलापकों में असंज्ञी का कथन नहीं किया गया है।

माहेन्द्र देवलोक से लेकर सहस्रार तक के देवलोकों में असंख्यात तिर्यञ्चयोनिक जीवों की उत्पत्ति होने से असंख्यात योजन विस्तार वाले इन विमानावासों के तीनों आलापकों (उत्पत्ति, उद्वर्त्तन और सत्ता) में 'असंख्यात' पद घटित हो जाता है।

प्रथम और द्वितीय देवलोक में तेजोलेश्या है; तृतीय, चतुर्थ और पंचम देवलोक में पद्मलेश्या अर्थात् तीसरे में तेजो-पद्म, चौथे में पद्म और पाँचवें में पद्म-शुक्ल लेश्या है तथा इनसे आगे के समस्त देवलोकों, नौ ग्रैवेयकों और पाँच अनुत्तर विमानों में केवल एक शुक्ल लेश्या है। सातवें महाशुक्र से लेकर सर्वार्थसिद्ध तक परम शुक्ल लेश्या मानी जाती है।

Elaboration—Saudharm and Ishaan kalps–From these two divine realms many spiritually lofty *jivas* including *Tirthankars*, endowed with *Avadhi-jnana* and *Avadhi-darshan*, descend; therefore in context of *udvartan* (descent) *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani* is mentioned here.

Other divine realms from *Bhavan-pati* to *Vaimanik* – From the *vimaans* with innumerable Yojan area only countable *Avadhi-jnani* and *Avadhi-darshani jivas* descend because the number of such pure souls, including those destined to be *Tirthankars* is meager.

Jivas with female gender (goddesses) are born only up to Saudharm and Ishaan kalps. Beyond that, Sanatkumar and other *kalps* are devoid of female gender. When they are not born, there is no question of their existence there. If at all goddesses are sometimes found there, they are visiting goddesses from lower realms.

In Sanatkumar and other higher realms only sentient *jivas* are born; never non-sentient. Non-sentient *jivas* are born as divine beings only up to the second divine realm but when they descend from there they are born as sentient *jivas* only. As such, in the higher realms non-sentient has not been

mentioned in all the three statements related to origin, descent and existence.

In divine realms from Maahendra to Sahasraar innumerable animals get reborn. That is the reason that in the three statements (origin, descent and existence) about these kalps innumerable is mentioned.

In first and second *kalps* (divine realms) only *tejoleshya* (fiery soul-complexion) exists. In the third kalp there are *tejoleshya* (fiery soul-complexion) and *padma leshya* (pink soul-complexion); in the fourth there is *Padma leshya* (pink soul-complexion) and in fifth there are *Padma leshya* (pink soul-complexion) and *Shukla leshya* (white soul-complexion); beyond that up to five Anuttar *vimaans* there is *Shukla leshya* (white soul-complexion) only. From Mahashukra to Sarvarth-siddha *vimaans* there is Param *Shukla leshya* (ultimate white soul-complexion).

Charam jivas* and *Acharam jivas — *Charam jivas* are those who are in their last birth or the last moment of that particular birth and those other than *Charam* are *Acharam jivas*.

चतुर्विध देवों के संख्यात-असंख्यात विस्तृत आवासों में सम्यग्दृष्टि आदि के उत्पत्ति, उद्वर्त्तन एवं सत्ता की प्ररूपणा

ORIGIN, DESCENT AND EXISTENCE OF RIGHTEOUS *JIVAS* IN DIVINE REALMS

२५. [प्र.] चोसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी ?

[उ.] एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया तहा भाणियव्वा। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा।

२५ [प्र.] भगवन्! क्या असुरकुमार देवों के चौसठ लाख असुरकुमारावासों में से संख्यात योजन विस्तार वाले असुरकुमारावासों में सम्यग्दृष्टि असुरकुमार उत्पन्न होते हैं अथवा मिथ्यादृष्टि उत्पन्न होते हैं अथवा मिश्र (सम्यग्मिथ्या) दृष्टि उत्पन्न होते हैं?

[उ.] (गौतम!) जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी के सम्बन्ध में तीन आलापक कहे गए हैं, उसी प्रकार यहाँ भी कहने चाहिए और असंख्यात योजन विस्तार वाले असुरकुमारावासों के विषय में भी इसी प्रकार तीन आलापक कहने चाहिए।

25. [Q.] *Bhante!* Out of the 6.4 million divine abodes of Asur-kumar *devs*, in those having countable Yojan area, are righteous (*samyagdrishti*)

Asur-kumar *devs* born or unrighteous (*mithyadrishti*) or righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) Asur-kumar *devs* are born?

[Ans.] (Gautam !) On the same pattern like the three statements (about origin, rise and existence) mentioned with regard to Ratnaprabha Prithvi, repeat three statements here too. Also repeat the three statements with regard to divine abodes of Asur-kumar *devs* having innumerable Yojan area.

२६. एवं जाव गेवेज्जविमाणेसु।

[२६] इसी प्रकार (नागकुमारावासों से लेकर) यावत् ग्रैवेयक विमानों (तक) के विषय में कहना चाहिए।

26. Repeat the same with regard to other divine realms (from Naag-kumars)... and so on up to... Graiveyak *vimaans*.

२७. अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी य न भण्णंति। सेसं तं चेव।

[२७] अनुत्तर विमानों के विषय में भी इसी प्रकार कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि अनुत्तर विमानों के तीनों आलापकों में मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्या दृष्टि का कथन नहीं करना चाहिए। शेष सभी वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

27. The same is also true for Anuttar *vimaans* with a difference that in all the three statements unrighteous (*mithyadrishti*) and righteous-unrighteous (*samyagmithyadrishti*) should not be included. Rest of the information is same as stated earlier.

एक लेश्या वाले देव का दूसरी लेश्या वाले देवों में उत्पत्ति-प्ररूपणा

REBIRTH OF DIVINE BEINGS FROM ONE LESHYA TO ANOTHER

२८. [प्र.] से नूणं भंत ! कण्हलेस्से नील. जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए सहेव भाणियव्वं।

२८. [प्र.] भगवन्! क्या कृष्णलेश्यी नीललेश्यी यावत् शुक्ललेश्यी (से परिवर्तित) होकर जीव कृष्णलेश्यी देवों में उत्पन्न हो जाता है?

[उ.] हाँ, गौतम! जिस प्रकार (तेरहवें शतक के) प्रथम उद्देशक में नैरयिकों के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए।

28. [Q.] *Bhante!* Does a *jiva* with *krishna leshya, neel leshya*... and so on up to... *shukla leshya* transform (into one with black soul-complexion) and then gets reborn among divine beings with black soul-complexion (*leshya*) ?

[Ans.] Yes, Gautam! Follow the pattern as mentioned in the first lesson (of thirteenth chapter) with regard to infernal beings.

२९. नीललेसाए वि जहेव नेरइयाणं जहा नीललेस्साए।

[२९.] नीललेश्यी (देवों) के विषय में भी उसी प्रकार कहना चाहिए, जिस प्रकार नीललेश्यी नैरयिकों के विषय में कहा है।

29. For divine beings with *neel leshya* (blue soul-complexion) too repeat what has been stated about infernal beings with *neel leshya* (blue soul-complexion).

३०. एवं जाव पम्हलेस्सेसु।

[३०.] (जिस प्रकार नीललेश्यी देवों के विषय में कहा है), उसी प्रकार यावत् (कापोत, तेजस्, एवं) पद्मलेश्यी देवों के विषय में कहना चाहिए।

30. What has been said about divine beings with *neel leshya* (blue soul-complexion) should also be repeated for other soul-complexions (from pigeon soul-complexion)... and so on up to... divine beings with *padma leshya* (pink soul-complexion).

३१. सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, नवरं लेस्साठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमइ सुक्कलेसं परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ तेरसमे सए : बीओ उद्देसओ समत्तो ॥

[३१] शुक्ललेश्यी देवों के विषय में भी इसी प्रकार कहना चाहिए। केवल विशेषता इतनी ही है कि लेश्या स्थान विशुद्ध होते-होते शुक्ल लेश्या में परिणमित हो जाते हैं और शुक्ल लेश्या में परिणमित होने के पश्चात् ही (वे जीव) शुक्ललेश्यी देवों में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार से (हे गौतम!) यावत् 'उत्पन्न होते हैं' ऐसा कहा गया है।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है, ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

31. The same should also be repeated for divine beings with *shukla leshya* (white soul-complexion). The only difference is that space-points of soul-complexion (*leshyasthaan*) gradually purify and transform into white soul-complexion and only after that, those *jivas* are born among divine beings with *shukla leshya* (white soul-complexion). That is why, O Gautam! It is said ... and so on up to ...

'*jivas* are born among divine beings'.

"Bhante! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

॥ तेरहवाँ शतक : द्वितीय उद्देशक समाप्त॥

विवेचन—नैरयिक जीवों की तरह देवों में भी अप्रशस्त से प्रशस्त-प्रशस्ततर और प्रशस्त-प्रशस्ततर से अप्रशस्त-अप्रशस्ततर लेश्या के रूप में परिवर्तन होता है। यह कथन भाव लेश्या के आधार पर समझना चाहिए, जो मूल में स्पष्ट दिया गया है।

Elaboration—Like infernal beings, divine beings also undergo transformation in soul-complexion from ignoble to noble and nobler as well as from nobler to noble and ignoble. These statements are in context of *bhaava leshya* (spiritual complexion) as has been explained in the original text.

• END OF THE SECOND LESSON OF THE THIRTEENTH CHAPTER •

ततिओ उद्देसओ : अणंतर
तृतीय उद्देशक : (नैरयिकों के) अनन्तराहारादि
TRITIYA UDDESHAK (THIRD LESSON) : *ANANTAR* (WITHOUT INTERLUDE)

चौवीस दण्डकों में अनन्तराहारादि की प्ररूपणा

INTAKE WITHOUT INTERLUDE IN TWENTY FOUR PLACES OF SUFFERING

१. [प्र.] नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया।

[उ.] एवं परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्वं।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ तेरसमे सए : ततिओ उद्देसओ समत्तो ॥

१. [प्र.] भगवन्! क्या नैरयिक जीव (उत्पत्ति क्षेत्र को प्राप्त करते ही) अनन्तराहारी (अर्थात्–प्रथम समय में ही आहारक) हो जाते हैं? तत्पश्चात् क्या वह निर्वर्त्तना (अर्थात् शरीर की उत्पत्ति) करते हैं? (इसके बाद क्या वे लोमाहारादि द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करते हैं? फिर क्या उन पुद्गलों को इन्द्रियादि रूप में परिणमित करते हैं? क्या इसके पश्चात् वे परिचारणा-शब्दादि विषयों का उपभोग करते हैं? फिर क्या अनेक प्रकार के रूपों की विकुर्वणा करते हैं?) इत्यादि प्रश्न।

[उ.] (हाँ गौतम!) वे इसी प्रकार से करते हैं। (इसका उत्तर) प्रज्ञापना सूत्र का सम्पूर्ण चौतीसवाँ परिचारणापद कहना चाहिए।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है; ऐसा कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरते हैं।

॥ तेरहवाँ शतक : तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

1. [Q.] *Bhante!* Do infernal *jivas* (the moment they are born) become *Anantaraahaarak* (start intake without interlude)? After that do they form their bodies (*nirvartana*)? And other questions. (Then do they acquire matter particles by intake through hair (cilia)? Then do they assimilate

these particles to form sense organs and other body parts? Then do they activate and use these organs ? Then do they create variety of forms ?)

[Ans.] (Yes, Gautam !) They do all that. Quote complete thirty-fourth chapter, titled Parichaaranaapad of *Prajnaapana Sutra*.

"Bhante ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words... and so on up to... ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र में नैरयिक जीवों के द्वारा उत्पत्ति क्षेत्र प्राप्त करते ही अनन्तराहारी होने, उसके बाद शरीरोत्पत्ति करने, लोमाहारादि द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करने, फिर उन पुद्गलों को इन्द्रियादि रूप में परिणत करने एवं शब्दादि विषयभोग द्वारा परिचारणा करने और फिर अनेक रूपों की विकुर्वणा करने आदि के विषय में प्रश्न उठाकर प्रज्ञापनासूत्र के ३४वें सम्पूर्ण परिचारणापद का अतिदेशपूर्वक समाधान किया गया है।

Elaboration—This statement raises questions about infernal *jivas* becoming *Anantaraahaarak* (start intake without interlude) the moment they are born and the following sequence of activities including forming their bodies (*nirvartana*), acquiring matter particles by intake through hair (cilia), assimilating these particles to form sense organs and other body parts, activating and using these organs, and creating variety of forms. And then refers to thirty-fourth chapter, titled Parichaaranaapad of *Prajnaapana Sutra* for answers.

• END OF THE THIRD LESSON OF THE THIRTEENTH CHAPTER •

परिशिष्ट
APPENDIX

Appendix-1

Technical Terms

SHRI BHAGAVATI SUTRA (VYAKHYAPRAJNAPTI) Part-4

[The alphabetical index of technical terms according to aphorism number. First numeral is Shatak (chapter), second is Uddeshak (lesson) and third is Sutra (aphorism or statement) number.]

(A)

aacharanata = trickery (12/5/5)

aadhya = rich (11/11/2; 11/12/2; 12/1/3; 12/1/5)

Aaditya (12/6/5)

aahaar = food intake (11/1)

Aahaar Sanjna = active awareness for food (11/1/25; 13/1/6)

aahaarak = having faculty of food intake (11/1/18)

Aahaarak = telemigratory (12/5/24)

Aahaar-tyaag Paushadh = partial-ascetic vow without food (12/1/24)

aaharak sharira = telemigratory body (10/1/10)

Aajnapani = command (10/3/18)

Aak (11/11/23)

Aakaashaastikaaya = space entity (12/5/26)

Aalabhik (11/1/1)

Aalabhika city (12/1/7)

Aalabhiya = a city (11/12/1)

aalochana = formal censure (10/2/7)

Aamantrini = address (10/3/18)

Aanat (12/7/17)

Aan-praan pudgal parivartya = breath material or particulate transformations (12/4/15)

aaraadhak = spiritual aspirant (11/9/31; 12/1/22)

aaradhana = spiritual endeavour (10/2/7)

aarak = epoch (10/2/5)

aashamsanata = expectation (12/5/6)

Aavalika = aggregate of innumerable Samaya units (11/11/16)

aayushya = life span (11/9/33)

abandhak = non-acquirers of bondage (11/1/8)

abhava-siddhik = not destined to be liberated in next birth (13/1/6; 12/2/17)

abhavya = not destined to be liberated (12/1)

abhavya jiva = not destined to liberation = (12/4/23)

abhidhya = voracity (12/5/6)

abhigam = codes of courtesy meant = a religious assembly (12/1/20; 11/11/4)

Abhigrihita = conviction (10/3/18)

abhinibodhik jnana = sensory knowledge (12/5/30)

abhinibodhik jnani = endowed with sensory knowledge (13/1/6)

abhinivisht = fused (12/4/47)

abhisamanvagat = experienced the essence (12/4/47)

abhyangan = applying cleansing paste (11/11/49)

Abuddha = unenlightened; short of omniscience (12/1/25)

Abuddha-jaagarika = unenlightened religious-awakening (12/1/25)

achakshu darshan = non-visual perception (12/5/30)

achakshu darshani = not endowed with visual perception (13/1/6)

acharam (13/1/8)

Acharanga Sutra (12/10/10)

Acharya = head of the religious organization (12/2/20)

Achyut (10/4/14; 11/10/26; 12/7/17)

Achyut divine realm (11/12/22)

Achyut kalp (12/1; 12/10/23)

Achyutkalp-*Urdhva Lok-Kshetra Lok* = Achyutkalp divine realm or heaven (11/10/6)

Adattadaan = To take anything without permission, desire or consent of the owner; stealing (12/5/7)

Addha Kaal = time scale (11/11/7)

Addhakaal = time entity (11/10/2)

Addha-samaya = solar time (11/10/19); time (11/10/12); time entity = (10/1/7, 8)

Adhah Saptamprithvi-Adho Lok-Kshetra Lok = the seventh hell (11/10/4)

Adhah-saptam Prithvi = seventh hell (12/10/21; 12/7/8; 13/1/2)

Adharmastikaya = Rest entity (11/10/15)

Adharmastikaya-desh = rest entity as sections and not as the whole (10/1/7, 8; section of rest entity (11/10/17)

Adharmastikaya-pradesh = rest entity as space-point (10/1/7, 8)

Adho Lok- Kshetra Lok = Lower World (11/10/3)

Adholok (11/10/11)

adhyavasaaya = inspiration (12/1/12)

Aditya (12/1)

Agamtah = in context of scripture (11/10/2)

Agar (11/11/23)

Agneya kone = Southeast (10/1/5)

Agneyi = southeast or *agneya konè* (10/1/6)

Agnihotri = those who do offerings at fire sacrifice (11/9/6)

agramahishi = chief consort (12/6/6)

agurulaghu = non-heavy-non-light (11/10/*16*)

Ahaar sevan yukt paushadh = partial ascetic vow with food intake (12/1/11)

Aindri = East (10/1/6)

Airavat (12/9/31)

Aishaani = northeast or *ishaan kone* (10/1/6)

Ajaa-vraj (12/1)

ajiva = non-souls (11/10/17; the non-living (10/1/2)

Akarmabhumi = land of inaction (12/9/7)

Akashastikaya = Space entity (11/10/15)

Akashastikaya-desh = space entity as sections and not as the whole (10/1/7, 8)

Akashastikaya-pradesh = space entity as space-point (10/1/7, 8)

akriya = inactive (11/1/23)

akshama = intolerance (12/5/3)

Ala = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

Alok = space beyond the universe (11/10/27); the space beyond (11/10/24); the unoccupied space (10/1/7; 11/10/21; 11/10/11)

Alokakash (11/10/16)

Amala = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29)

Ambad (11/11/58)

anaagat kaal = future time (12/5/35)

Anaakaaropayoga = having inclination towards right perception/faith (13/1/6; 12/5/32); intent for indulgence in perception (11/1/18)

Anabhigrihita = inquiry (10/3/18)

Anagaar = abode-less ascetics (12/9/4)

Anagaare Keyaghatika = Ascetic with Bowl in String (13/1/1)

Ananataraavagaadh (13/1/8)

anant = infinite (12/4/13)

anantaanant = infinite times infinite (12/4/17)

Anantar = Without Interlude (13/1/1)

Anantaraahaarak = start intake without interlude (13/3/3; 13/1/8)

Anantaraparyaaptak (13/1/8)

Anantaropapannak (13/1/8)

anant-pradeshi skandh = infinite-sectional aggregate (12/10/30)

anapannik (10/2/9)

anga = limbs (11/11/61)

Angaar = Mangal or Mars (10/5/27)

Angaarak (10/5/27)

Angaaravatamsak (10/5/27)

angamardika = female masseurs for light massage (11/11/50)

Angul = a linear measure equal to the width of a finger (11/1/7); about 0.5 inch (11/10/26)

an-indriya = without sense organs (11/1/30)

Anjana (12/3/3)

Anju = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29)

Anka Dhatri = lap-nurse-maid (11/11/45)

Annannaghadattaaye chitthanti = they exist in mutually inter-connected state (11/9/26)

annapraashan = feeding cereals (11/11/46)

Antaraaya karma = power hindering *karma* (11/1/8)

antardveep = middle island (12/9/7; 10/1)

Antar-kaal = intervening-period between loosing and regaining birth in the same status (12/9/27)

Antarmuhurt = a unit of time slightly less than 48 minutes (11/1/31); less than a Muhurt (12/9/14)

antevasi = in-house disciple (10/4/2)

anubandh = reborn in same genus (11/1/30)

anudaya = mon-fruition (11/1/12)

anudiran = not causing voluntary fruition (11/1/13)

Anuttar (12/7/19)

Anuttar celestial vehicles (11/12/22)

Anuttar Vimaan = a divine realm (12/10/25)

Anuttar *Viman-Urdhva Lok-Kshetra Lok* = Anuttar Celestial Vehicles (11/10/6)

Anuttaropapatik = a divine realm (12/9/7)

Anuyoga = theory of disquisition (11/10/2)

apahaar = removal (11/1/5)

apakarsh = narcissism (12/5/4)

apamaan = insult (12/1/24)

Aparaajit (12/7/4)

Aparajit Dev (12/9/7)

Aparajitaa = one of the four chief consorts of Angaar (10/5/27)

aparibhoot = insuperable (11/11/2)

Apoh = ascertaining (11/9/16)

Apratishthaan (13/1/16)

Apsara = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29)

aradhak = spiritual aspirants (11/11/5)

archaniya = objects of veneration (10/5/5)

Archimali = one of the four chief consorts of Chandra (10/5/25; 12/6/6); one of the four chief consorts of Surya (10/5/26; 12/6/6)

archit = adored (12/8/2)

Ardha-pudgal Paravartan kaal = half of the time taken for an ultron to go through the complete process of all types of particulate transformations (13/1/6)

Arhant Vimal Naath (11/11/53)

Arihant Bhagavan (12/9/5)

Arunaabh vimaan (11/12/13)

Aryaa Chandana (12/2/22)

asaata vedan = experience of pain (11/1/11)

asad-roop = non-existent (12/10/28)

asamvrit anagaar = ascetic who has not blocked the inflow of *karmas* (12/1/26)

asanjni = non-sentient (11/1/29)

asankhyat = uncountable (12/4/12)

ashan, paan, khadya, svadya = staple food, liquids, general food, and savoury food (11/9/11)

Ashani = one of the four chief consorts of Soma, *lokapaal* of Balindra (10/5/10)

Ashoka = one of the four chief consorts of Kaalvalla (10/5/13)

Ashokavatamsak (10/6/1)

Astikaaya dravyas = eternal agglomerative entities (12/5/26)

astikaayas = fundamental conglamorative ontological categories (12/1)

Asur-kumar = a class of gods (10/3/3)

Atapabha = one of the four chief consorts of Surya (10/5/26; 12/6/6)

ateet kaal = past time (12/5/35)

Atikaayendra = the king of Mahorags (10/5/23)

Atimuktak (12/9/16)

Atipaat (12/1/1)

Atma (12/1/1)

atmariddhi = innate power (10/3)

atma-roop = self-morphic; existent (12/10/27)

atyutkrosh = haughtiness (12/5/4)

Audaarik = gross physical (12/5/21)

Audarik pudgal parivartya = gross physical material or particulate transformations (12/4/15)

audarik sharira = gross physical body (10/1/10)

Audayik = caused by fruition of *karmas* (11/10/2)

Aupapatik Sutra *(11/11/1; 11/11/29; 11/11/*50; *11/12; 11/9/1;* 11/9/6; *11/9/30; 12/1/2)*

Aupashamik = caused by pacification of *karmas* (11/10/2)

autpattiki = spontaneous (12/1)

Autpattiki buddhi = intelligence that rises suddenly, spontaneously and without studying scriptures (12/5/11)

Avaaya = decision arrived at through the activity of iha (12/5/11)

avadhi darshan = extrasensory perception of the physical dimension (12/5/30)

avadhi darshani = endowed with extrasensory perception (13/1/6)

Avadhi-jnana = extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance (11/9/27)

Avadhi-jnani = endowed with extrasensory perception of the physical dimensionsomething akin to clairvoyance (13/1/6)

avagaahana = space-occupation (11/1/7)

Avagahana Samsthan pad = chapter 21st of *Prajanapana Sutra(*10/1/11)

Avagraha = to acquire simple knowledge or awareness of a thing through sense organs and mind (12/5/11)

avakaashaantar = intervening space (12/5/12)

avakaashaantar = intervening space= (12/1)

avaktavya = inexpressible (12/10/26)

avalamban deepak = hanging lamps (11/11/50)

avanataasan = seat of a specific design (11/11/50)

avasanna = negligent (10/4/5)

Avasarpini = progressive cycle of time (12/6/5)

Avatamsa = one of the four chief consorts of Kinnarendra (10/5/21)

avatamsak = abode or celestial vehicle (10/5/27)

Avaya (12/5/10)

avedak = non-sufferers (11/1/10)

avichipath = the path of non-association; state of non-fruition of passions (10/2/3)

avirat = undetached (11/1/22)

Avyakrita = indistinct (10/3/18)

Avyapaar Paushadh = partial-ascetic vow renouncing business activities (12/1/24)

ayogi = state of dissociation (12/10/1)

Ayogi Kevali = dissociated omniscient (12/10/1)

Ayushya karma = *karma* responsible for life-span (11/1/13)

(B)

Baalaak = Palaashak (10/4/10)

baddha = bounded (12/4/47)

Bahuputrika = one of the four chief consorts of Purnabhadra (10/5/19)

Bahurupa = one of the four chief consorts of Surupa (10/5/18)

Bal (11/11/22)

bala = physical strength (12/5/11)

Baldev (11/11/33)

Bali = the king of Vairochan gods (10/4/8)

Balichancha (10/5/9)

Balindra = the king of Vairochan gods (10/5/9)

Balukaprabha *(12/3/3)*

Bandh (11/1/1)

bandh = bondage (11/1/8)

bandhak = acquirers of bondage (11/1/8)

Bansa (12/3/3)

Bhaasha = Speech (13/1/1)

bhaava = cognition (11/10/25); cognitive aspect (11/10/2); feeling (10/2/5)

bhaava leshya = spiritual complexion (12/5/28)

Bhaava Lok = cognitive aspect of the Universe or the world as cognition (11/10/2)

Bhaavadev *(12/9/1).*

Bhaavaketu (10/5/28)

bhaava-man = sentience and mind (11/1/13)

bhaavit = enkindling (11/11/)

Bhadra (11/11/50)

bhadraasan = seat of a specific design (11/11/50)

Bhagavan Rishabh Dev (12/9/16)

bhandan = fight (12/5/3)

Bharat (12/9/31)

Bharat ***Chakravarti*** *(12/9/16)*

Bhasha Paad = 11th chapter of *Prajnapana Sutra (10/3/18)*

bhavaadesh = in terms of number of rebirths (11/1/39)

Bhavan-pati = Abode-dwelling (10/4/14)

bhava-siddhik = destined to be liberated in next birth (13/1/6)

bhavya = destined to be liberated (12/1)

Bhavya-dravyadev (12/9/1)

Bhavya-sharira = in future context (11/10/2)

Bhaya Sanjna = active awareness of fear (11/1/25); desire to run away from fear (12/5/30)

bhed samapann = disjuncted (11/9/28)

Bheem = the king of Raakshasas (10/5/20)

bheeshika = cushions (11/11/50)

bhidhya = longing (12/5/6)

bhikshupratima = rigorous periodic austerities prescribed for ascetics (10/2/6)

bhogaasha = hope (12/5/6)

Bhoot (10/5/24)

bhoot = organisms (11/1/45)

Bhootanand = the king of Bhavan-pati Devs (10/5/14)

Bhujaga = one of the four chief consorts of Atikaayendra (10/5/23)

Bhujagavati = one of the four chief consorts of Atikaayendra (10/5/23)

Bibhel (10/4/8)

Bijaahaari = those who subsist on seeds (11/9/6)

Bil-vaasi = those who dig holes and live in them (11/9/6)

Brahmacharya Paushadh = partial-ascetic vow with celibacy (12/1/24)

Brahmadatta ***Chakravarti (12/9/16)***

Brahmalok (11/10/11)

Brahmalok Kalp = the fifth divine realm (11/12/17)

Buddha = enlightened (12/1/25)

Buddha-jaagarika (12/1/25)

Buddha-jaagarika = enlightened religious-awakening (12/1/25)

Buddhi (11/11/50)

buddhi = intelligence (12/5/9)

Bura (11/11/23)

(C)

celestial vehicles = *vimaan* (13/1)

chaandikya = rage (12/5/3)

Chaaritra = conduct (12/10/1)

Chaaritra-atma = right conduct observing soul (12/10/1)

chaitya = temple complex (11/11/1); temple complex with garden (11/12/1)

Chaitya-stambh = sacred pillar (10/5/5)

Chakra = the disc weapon (12/9/3)

Chakravarti (12/9/3)

chakshu darshan = visual perception (12/5/30)

chakshu darshani = endowed with visual perception (13/1/6)

Chamar = the king of Asura gods (10/5/4)

Chamarchancha = the capital city of Chamarendra (10/5/5)

Chamarendra = the king of Asur-kumar gods (10/4/5)

Champa city (10/4/11)

Chandra = the king of Jyotishk Devas (10/5/25)

Chandraprabha = one of the four chief consorts of Chandra (10/5/25; 12/6/6)

Chandravataran (12/2/1)

charam (13/1/8)

Chaturvidh ahaar tyaag paushadh = partial-ascetic vow renouncing food of all four kinds or with fasting (12/1/11)

chaya = to assimilate (12/1/26)

Chetak = a king (12/2/2)

Chhadmastik Samudghat = process of unrighteous bursting forth (13/1)

Chitra = one of the four chief consorts of Soma *lokapaal* of Shakrendra (10/5/31)

Chitragupta = one of the four chief consorts of Soma (10/5/6)

Chyavan = (11/1/1)

(D)

Dakshin-koolak = those who live on the southern bank of the Ganges (11/9/6)

dandak = places of suffering (10/2/5)

dandanaayak = administrators; *dandanaayag* (11/9/9)

dank = crow (12/8/7)

Dantukhalik = those who remove husk from grain with their teeth before eating (11/9/6)

Dardur (12/6/2)

darpa = bloated ego (12/5/4)

darshan = perception (12/10/1)

Darshan-atma = perceptive soul (12/10/1)

Dashashrutskandh *(10/2/6)*

Daya Vrat = partial partial-ascetic vow; *Deshavakashik Paushadh; Desh Paushadh; Shatkaayaarambh tyaag* (12/1/11)

deerghaasan = seat of a specific design (11/11/50)

desh = section (10/1/7)

Desh Paushadh = partial partial-ascetic vow; *Deshavakashik Paushadh; Daya Vrat; Shatkaayaarambh tyaag* (12/1/11)

Deshavakashik Paushadh = partial partial-ascetic vow; *Desh Paushadh; Daya Vrat; Shatkaayaarambh tyaag* (12/1/11)

Deshon Ardha-pudgal paravartya kaal = extremely long unit of time (12/9/28)

Deshon-purva Koti = a very large unit of time (12/9/14)

Dev = god; divine being (13/1/1)

Devadhidev *(12/9/1)*

Devakuru (12/9/16)

Devananda Brahmini (12/2/8)

Dev-gati = birth in divine genus (12/9/6)

devi = goddess (10/1)

Dhaarana = to accept or absorb, into the mind the meaning arrived at by iha and avaaya (12/5/11)

Dhaarini (11/9/4)

Dhamma = name of the first *Prithvi* (12/3/3)

Dhanush = a linear unit (11/9/33); a little more than a meter (11/10/26)

Dhanush-prithakatva = two to nine Dhanush (11/2/1)

Dharana (12/5/*10*)

Dharanendra = king of Naag Kumar gods (10/4/9)

Dharmachakra = wheel of religion (11/9/30)

Dharmadev *(12/9/4)*

Dharmaghosh (11/11/53)

Dharmastikaya = medium of motion (10/1/4); motion entity (11/10/2)

Dharmastikaya-desh = motion entity as sections and not as the whole (10/1/7, 8)

Dharmastikaya-pradesh = motion entity as space-point (10/1/7, 8)

Dhatakikhand continent (11/9/24)

Dhee (11/11/50)

Dhoom-prabha Prithvi = fifth hell (12/7/6)

Dhruva Rahu = regular Rahu (12/6/3)

Dikkumaris = goddesses of directions (11/10/26)

dikswastikaasan = seat of a specific design (11/11/50)

disha = directions (10/1)

Disha-chakraval (11/9/6)

Dishaprokshi = those who sprinkle water in all directions for worship (11/9/6)

doash = blame (12/5/3)

dohad = pregnancy-desires (11/11/36)

Dravya = physical aspect (11/10/2); substance (12/5/33)

dravya leshya = physical complexion (12/5/28)

Dravya Lok = material aspect of the Universe or the world as matter (11/10/2)

Dravya-atma = soul entity (12/10/1)

dravyarthik naya = existent material aspect (10/4/7)

Dridhapratijna (11/11/45)

drishti = perspective (11/1/14)

dukool = extra fine silk (11/11/50)

durnaam = superciliousness (12/5/4)

dvaar = points of reference (13/1)

dvesh = aversion (12/5/7)

dvipradeshi skandh = bisectional aggregate (12/10/28)

Dyutipalash (10/4/1)

(E)

Ekoruk island (10/7-34/1)

(G)

gahan = treachery (12/5/5)

Gana = own group of ascetics (12/2/20)

gananaayak = chieftains; *gananaayag* (11/9/9)

gandh = smell (11/1/19)

Gandharva (10/5/24)

Ganges River (11/9/6)

gardudaasan = seat of a specific design (11/11/50)

garha = slander (12/1/24)

garva = vainglory (12/5/4)

Gau = Gavyuta; a linear measure equal to two Kosa or four miles (11/3/2)

Gau-prithakatva = two to nine Gau (11/3/1)

Gaveshana = comparing with opposing values (11/9/16)

Gavyuta = Gau; a linear measure equal to two Kosa or four miles (11/3/2)

geet = singing songs (11/11/49)

Geetaratindra = the king of Gandharvas (10/5/24)

Geetayash = the king of Gandharvas (10/5/24)

ghanavaat = layer of dense air (12/5/14)

Ghanavidyut = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

ghanod = layer of dense or frozen water (12/5/14)

gilli = *ambari* or howdah with canopy (11/11/50)

gokul = cattle-yards (11/11/50)

goohanata = disguise (12/5/5)

Goshirsh chandan (11/9/9)

gotra = name and class (12/3/3)

Gotra-karma = *karma* responsible for the higher or lower status of a being (12/9/6)

graas vardhan = increase morsels (11/11/46)

grahan = acquire (12/4/47)

Graiveyak (12/7/18)

Graiveyak Vimaan = a divine realm (12/10/24)

Graiveyak *Viman-Urdhva Lok-Kshetra Lok* = Graiveyak Celestial Vehicles (11/10/6)

griddhi = infatuation (12/5/6)

grihit = acquired (12/4/49)

Gunasheelak (10/5/1)

Gunasthaan (12/10/1)

Gunavrats = restraints that reinforce the practice of *anuvrats* (11/12/13)

gupta-brahmachaaris = perfect celibates or celibacy with its nine shields (12/9/4)

guptis = restraints (12/1/25); shields (12/9/4)

guru = heavy (12/5/*18*)

(H)

hamsaasan = seat of a specific design (11/11/50)

Hastinapur (11/9/1)

Hastitaapas = those who subsist on elephant-meat (11/9/6)

heelana = to treat with contempt (12/1/24)

Hri = one of the four chief consorts of Satpurushendra (10/5/22)

Humbauttha = jungle dwelling ones (11/9/6)

(I)

ichchha = desire (12/5/6)

Ichchhaanuloma = consent (10/3/18)

Iha = conceiving the proper meaning (11/9/16); the process of analyzing that information, reject the unreal, and accept the real (12/5/11)

Iha-mrig = wolf (11/11/29)

Indra = the king of gods (10/1/6)

Indraa = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

Indras = kings of gods (10/5/16)

Indriya = sense organs (11/1/26)

Iryapathiki kriya = careful activity of an accomplished ascetic (10/2/1)

Iryasamiti = care in movement (12/9/4)

Ishaan divine realm (11/12/22)

Ishaan kone = Northeast (10/1/5)

Ishaanendra (10/5/32)

Ishatpragbhaara Prithvi = *Siddha Lok* (12/10/26); the realm of Siddhas (11/12/22)

Ishatpragbharaprithvi-*Urdhva Lok-Kshetra Lok* = the Realm of Liberated Souls (11/10/6)

(J)

isht = adorable (11/9/9)

jaagaran = night vigil (11/11/46)

jaagarika = night long religious chanting (11/11/44); religious-awakening (12/1/25)

Jal-bhakshi = those who subsist only on water (11/9/6)

Jal-vaasi = those who live in water (11/9/6)

Jamali (11/11/52; 11/9/9)

Jambudveep-*Tiryaklok-Kshetra Lok* = the Jâmbu continent (11/10/5)

Jatilak (12/6/2)

jatisampanna = belonged to high castes (10/5/2)

Jatismaran jnana = sentient knowledge of his past births (11/11/60)

Jayanti (12/1)

Jayanti = one of the four chief consorts of Angaar (10/5/27)

jihmata = cunningness (12/5/5)

jiva = living being/soul (12/1/26); the living (10/1/2)

Jivabhigam Sutra (10/5/25; 10/7-34/1; 11/9/21; *12/3/3; 12/3/3; 12/9/31)*

Jivastikaya = life entity (11/10/2)

jivitaasha = hope for life (12/5/6)

jñana = knowledge (11/1/14)

Jnana-atma = righteous-soul (12/10/1)

Jnanavaraniya = knowledge obscuring (12/5/27)

Jnanavaraniya karma = knowledge obscuring *karmas* (11/1/8)

Jna-sharira = in past context (11/10/2)

Jnasharira-Bhavyasharira Vyatirikta = other than in past and future context (11/10/2)

Jyotishk = stellar (10/3/9)

Jyotishk dev = stellar gods (10/3/5)

Jyotsnabha = one of the four chief consorts of Chandra (10/5/25; 12/6/6)

(K)

Kaal = the king of Pishaachas (10/5/17)

kaal = time (10/2/5)

Kaal = time aspect (11/10/2); time entity (11/10/*16*)

Kaal Lok = time aspect of the Universe or the world as time (11/10/2)

kaalaadesh = in terms of time (11/1/39)

Kaali = one of the five chief consorts of Chamarendra (10/5/4)

Kaalvalla = *lokapaal* of Dharanendra (10/5/13)

kaamaasha = hope (12/5/6)

kaanksha = craving (12/5/6)

kaant = lovable (11/9/9)

Kaapot leshya = pigeon soul-complexion (11/1/14)

kaaya-samvedh = the process of returning to the same genus after getting reborn in some other genus (11/1/39)

kaaya-yoga = physical association (11/1/17)

kaayayogi = beings with physical association (13/1/6)

Kachchhap (12/6/2)

kadaahi = cooking pans (11/9/6)

Kadamb (11/11/39)

Kadamba (11/11/24)

kaduchhi = spoons (11/9/6)

Kakandi (10/4/5)

kalachika = spoon (11/11/50)

kalah = dispute (12/5/3)

kalk = banditry (12/5/5)

Kalpavriksha = divine wish-fulfilling tree (11/9/9)

kalush samapann = spiteful (11/9/28)

Kalyanak = auspicious events (11/10/26)

Kamala = one of the four chief consorts of Kaal (10/5/17)

Kamal-prabha = one of the four chief consorts of Kaal (10/5/17)

Kamandalu = gourd-bowl (11/9/12)

Kanaka = one of the four chief consorts of Bheem (10/5/20); one of the four chief consorts of Soma (10/5/6)

Kanakalata = one of the four chief consorts of Soma (10/5/6)

kanchuki = door-keepers (11/11/50)

kand = bulb (11/1/45)

Kandaahaari = those who subsist on bulbous roots (11/9/6)

kank = vulture (12/8/7)

kankan = tying auspicious beads with red thread (11/11/49)

kanksha = confusion (10/4/6)

Kankshit = having desire for other faith (11/9/28)

Karan Virya-atma = soul with means of potency (12/10/1)

Kark = Cancer sign of the Zodiac (11/11/13)

karkash = hard touch (12/5/*18*)

karkat = a specific wind producing the guttural sound – '*Khu khu*' (10/3/17)

karma = drive of action (12/5/11)

Karmaja buddhi = intelligence which is acquired through regular practice like that of various arts and crafts (12/5/11)

Karman pudgal parivartya = karmic material or particulate transformations (12/4/15)

Karman pudgals = karmic particles (12/5/19)

karman sharira = *karmic* body (10/1/10)

***karma*-species** = *karma* prakriti (13/1)

***Karmiki buddhi** (12/5/9)*

karna vedhan = piercing of earlobes (11/11/46)

Karnika = a kind of plant (11/7/1)

karnika = *Kanniya*; pistil of a flower, which has ovary as its part (11/1/45)

karotika = lota or spherical jug (11/11/50)

kashaaya = passions (11/1/24)

kashaaya samudghaat = bursting-forth of passions (11/1/42)

Kashaaya-atma = passion-soul (12/10/1)

Kaushambi = a city (12/2/1)

Kautrik = those who sleep on the ground (11/9/6)

Kaya yoga = physical association (12/5/31)

kesar = pollen (11/1/45)

Keshi Shraman (11/11/53)

Ketumati = one of the four chief consorts of Kinnarendra (10/5/21)

Keval darshan = absolute perception or pre-omniscience-perception (12/5/30); omni-perception (12/1/25); omniscient perception (12/10/1)

Keval-jnana = omniscience (12/1/25)

Khar (12/6/2)

khimsana = reprimand (12/1/24)

kilvish = treachery (12/5/5)

Kimpurush (10/5/24)

Kimpurushendra = the king of Kinnaras (10/5/21)

Kinnar (10/5/24)

Kinnarendra = the king of Kinnars (10/5/21)

Kinnars = lower gods (11/11/29)

Kirti (11/11/50)

Kooladhma = those who take their meals on the bank after shouting loudly (11/9/6)

kope = provocation (12/5/3)

Korant (11/11/4)

Kosa = 2 miles (11/10/26)

kosana = curse (12/1/24)

Koshthak (12/1/2)

Kotakoti = millions of millions (10/6/1)

Kotakoti = ten million ten millions = 10^{14} (12/7/2)

Koti Sahasra-prithaktva = two thousand to nine thousand Crores (12/9/31)

kraunchaasan = seat of a specific design (11/11/50)

Kridayan Dhatri = play-nurse- maid (11/11/45)

Krishna = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Krishna leshya = black soul-complexion (11/1/14)

Krishna-paksha (13/1/6)

Krishnarashi = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Krishnasarp (12/6/2)

krit = acquiring a new form (12/4/47)

Kriya = action (11/1/21)

krodh = anger (11/1/26)

Krodh vivek = prudence with regard to anger (12/5/8)

krodh-kashaayi = having anger (13/1/6)

Kshaayik = caused by destruction of *karmas* (11/10/2)

Kshatrak (12/6/2)

Kshayopashamik = caused by pacification-cum-destruction of *karmas* (11/10/2)

kshetra = area (10/2/5)

Kshetra = area aspect (11/10/2)

Kshetra Lok = area aspect of the Universe or the world as area (11/10/2)

Kshir Dhatri = milk-nurse-maid (11/11/45)

Kula = members of same ascetic lineage (12/2/20)

Kumbhi (11/1/1)

Kumbhik = a kind of plant (11/4/1)

Kundaruk (11/11/23)

Kunik (12/2/6)

kurupa = slyness (12/5/5)

kusheel = transgressors (10/4/5)

(L)

laalapanata = demand (12/5/6)

Labdhi Virya-atma = soul with accomplishment of potency (12/10/1)

laghu = light (12/5/*18*)

Lavan ocean (11/9/27)

Laxmi (11/11/50)

leshya = soul-complexion (11/1)

leshyasthaan = space-points of soul-complexion (13/1/28)

lobha = greed (12/5/6)

lobha-kashaayi = having greed (13/1/6)

lodhi = grinding stones (11/9/6)

Lok = Occupied Space or the Universe (11/10/2)

Lokakash = Space within the Universe (11/10/15)

lokapaal = realm-guardian (10/5/6)

(M)

maan = conceit (11/1/26)

Maanibhadra = the king of Yakshas (10/5/19)

maaya = deceit (11/1/26)

mada = pride (12/5/4)

Madana = one of the five chief consorts of Balindra (10/5/9); one of the four chief consorts of Soma *lokapaal* of Shakrendra (10/5/31)

madguk = duck (12/8/7)

Magha (12/3/3)

Maghavai (12/3/3)

Mahabal (12/6/8)

Mahabheem = the king of Raakshasas (10/5/20)

Mahaghosh (10/4/9)

mahagraha = great planet (10/5/27)

Mahagrahas (10/5/28)

Mahakaal = the king of Pishaachas (10/5/17)

Mahakaayendra = the king of Mahorags (10/5/23)

Mahakachchha = one of the four chief consorts of Atikaayendra (10/5/23)

Mahapurushendra = the king of Kimpurushas (10/5/22)

Maharaurav (13/1/16)

mahattarak = managers of ladies quarters (11/11/50)

Mahavideha area (11/12/14)

Mahorag (10/5/24)

Maithun = To indulge in sexual intercourse inspired by lust (12/5/7)

Maithun Sanjna = active awareness for copulation (11/1/25); desire for sex (12/5/30)

majeeth = madder plant (12/6/2)

Majjan Dhatri = bath-nurse-maid (11/11/45)

Makar = Capricorn sign of the Zodiac (11/11/13)

makaraasan = seat of a specific design (11/11/50)

Makka = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

mallak = bowl (11/11/50)

Manah pudgal parivartya = thought material or particulate transformations (12/4/15)

manahparyav jnana = extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms (12/5/30)

Manavak chaitya-stambh = sacred pillar called Manavak (10/5/5)

Mandaar (11/10/26)

Mandalik Raja = regional sovereign (11/11/33)

mandan = decoration (11/11/49)

Mandan Dhatri = dress- nurse-maid (11/11/45)

mano-yoga = mental association (11/1/17)

manoyogi = beings with mental association (13/1/6)

Manushottar (11/10/27)

Maran Kaal = death time (11/11/7)

maranaantik samudghaat = fatal bursting-forth (11/1/42)

maranaasha = death wish (12/5/6)

Margana = searching for supporting values (11/9/16)

mati-ajnana = absence of sensory knowledge (12/5/30)

mati-ajnani = endowed with false sensory knowledge (13/1/6)

Matsya (12/6/2)

Megha = one of the five chief consorts of Chamarendra (10/5/4)

Menaka = one of the four chief consorts of Soma, *lokapaal* of Balindra (10/5/10)

Meru Mountain (11/10/11)

mithya drishti = wrong or false perspective (11/1/15)

mithyaadarshan shalya = thorn of wrong belief; unrighteousness (12/5/7)

Mithyaadarshan shalya vivek = prudence with regard to the thorn of wrong belief or unrighteousness (12/5/8)

mithyadrishti = unrighteous (12/10/1); wrong perception/faith (12/5/30)

mithya-jnana = false or pervert knowledge (12/10/10)

mool = root (11/1/45)

Moolaahaari = those who subsist on roots only (11/9/6)

Mridang = a two sided drum with bulging middle and unequal ends (11/10/9)

mridu = soft (12/5/*18*)

mrigaank = logo of deer (12/6/4)

Mrigalubdhak = those who subsist on deer-meat (11/9/6)

Mrigavati (12/2/2)

Mrishaavaad = to utter lies, harsh, harmful and damaging words; falsity (12/5/7)

Mudgal Parivrajak (11/12/16)

Muhurt = forty eight minutes (11/11/8)

mukta = liberated (12/2/22)

muktavali = pearl-string (10/1/7)

murchchha = graspingness (12/5/6)

(N)

Naadeek (11/1/1)

Naag (12/1/1)

Naag-kumar (12/4/22)

Naags = serpents; elephants (12/8/2)

Naagvitta = *lokapaal* of Bhootanand (10/5/15)

naal = stalk (11/1/45)

Naalik = a plant that has fruits in the shape of a tube or naali or naadi (11/5/1)

Naam-karma = *karma* responsible for the state one is born in (12/9/6)

Nairayik Pudgal-parivartya = material transformations related to infernal beings (12/4/17)

Nairiti = southwest or *nairitya kone* (10/1/6)

Nairitya kone = Southwest (10/1/5)

Nalin = a kind of lotus (11/8/1)

namaskaraniya = objects of salutation (10/5/5)

Nand (11/11/50)

Nandan Van = Divine Garden (11/9/2)

nandiraag = attachment (12/5/6)

napumsak-vedi = beings with neuter gender (13/1/6)

Naradev (12/9/1)

Narak Prithvis = hells (13/1/2)

Navamika = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29); one of the four chief consorts of Satpurushendra (10/5/22)

Neel leshya = blue soul-complexion (11/1/14)

nihsrisht = shed (12/4/47)

nihsrit = separated (12/4/47)

nikaaya = classes (13/3/2)

nikriti = cheat by enticing (12/5/5)

Nimajjak = those who remain under water for some time (11/9/6)

ninda = criticize (12/1/24)

Nirambha = one of the five chief consorts of Balindra (10/5/9)

Nirgranthoddeshak = Lesson-5 of Chapter-2 (11/9/20)

nirjirna = extracted the essence (12/4/47)

Nishumbha = one of the five chief consorts of Balindra (10/5/9)

nishvaas = faculty of shallow breathing (11/1/20)

nivisht = fixed (12/4/47)

No-agamtah = not in context of scripture (11/10/2)

no-indriya = mind (13/1/6)

noom = vileness (12/5/5)

no-uchchhavaas-nishvaas = faculty of neither deep nor shallow breathing (11/1/20)

(P)

paad-chakramaapan = walking on feet (11/11/46)

paakshik paushadh vrat = Fortnightly partial-ascetic vow (12/1/10)

paap = demerit (12/5/7)

paapasthaan = sources of demerit (12/5/7)

Paarinaamik = three eternal states unrelated to action of *karmas* (11/10/2)

paariyaanik = chariots for play (11/11/50)

Padma = a kind of lotus (11/6/1)

Padmaa = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29); one of the four chief consorts of Bheem (10/5/20)

padmaasan = seat of a specific design (11/11/50)

Padmavati = one of the four chief consorts of Bheem (10/5/20)

pakshaasan = seat of a specific design (11/11/50)

Palaash = *Butea monosperma* tree (11/3/1)

Palyopam (11/11/17)

Palyopam-prithaktva = two to nine Palyopam (12/9/29)

panjar deepak = lamps with shades (11/11/50)

Pankaprabha (13/1/3)

paramanu-pudgals = ultimate particles of matter; *ultrons* (12/4/2)

paramgaaman = toddling (11/11/46)

Paramparaahaarak (13/1/8)

Paramparaavagaadh (13/1/8)

Paramparaparyaaptak (13/1/8)

Paramparopapannak (13/1/8)

paraparivaad = snobbery (12/5/4)

Parigraha — The desire to possess; covetousness (12/5/7)

Parigraha Sanjna = active awareness for possessions (11/1/25)

Parigraha viraman = to abstain from covetousness (12/5/8)

parimaan = quantity (11/1/4)

Parinamiki buddhi = intelligence which is acquired through long and continuous contemplation or as a consequence of maturity and experience (12/5/11)

parinamit = caused transformation (12/4/49)

parinivrit = free of cyclic rebirth (12/2/22)

parivasana = Abode (11/9/33)

parshvasth = stragglers (10/4/5)

Parva Rahu = occasional Rahu (12/6/3)

paryaaya = mode (12/5/34)

paryapt = attained satiation or full development (12/4/47)

paryayarthik naya = transformational aspect (10/4/7)

patra = petal/leaf (11/1/45)

Patraahaari = those who subsist on leaves (11/9/6)

Paurushi = quarter of day or night (11/11/8)

paushadh = partial-ascetic vow (12/1/24)

paushadh shaala = ascetic-hostel (12/1/12); austerity chamber (12/1/16)

Paushadh vrat (12/1/11)

Paushadhopavas = partial ascetic vow and fasting (11/12/13)

peelak = Indian oriole; *vilak* (12/8/7)

Pishaach (10/5/24)

poojit = worshiped (12/8/2)

Potrik = the clad ones (11/9/6)

praan = beings (11/1/45; 12/2/18)

praanaatipaat = harming or destruction of life (12/2/14); violating life (12/5/2;)

Praanaatipaat viraman = to abstain from harming or destroying life (12/5/8)

Praanat (12/7/17)

praarthanata = begging (12/5/6)

Prabhankara = one of the four chief consorts of Chandra (10/5/25); one of the four chief consorts of Surya (10/5/26)

Prabhavati (11/11/22)

pradesh = space-point (10/1/7)

Prahar = quarter (11/11/13)

Prajnapana Sutra (10/2/4; *10/2/5; 10/2/5; 11/1/*40; *11/11/19/; 12/9/11)*

Prajnapani = factual (10/3/18)

prakriti-bandh = qualitative bondage (12/1/26)

Pramaan Kaal = Solar time or clock time (11/11/7); standard time (11/11/8)

Pranat (10/4/14)

prasthapit = stabilized (12/4/47)

pratikraman = critical review (10/2/7)

pratikunchanata = misinterpretation (12/5/5)

Pratirupa = the king of Bhoots (10/5/18)

pratishaiya = smaller beds (11/11/50)

Pratyaakhyaani = denial (10/3/18)

Pratyakhyan = codes of renouncing (11/12/13)

Prekshagrihamandap (11/11/48)

preyas = *raag;* attachment inspired by love (12/5/7)

Prichchhani = question (10/3/18)

Prithvi = Hell (13/1/1)

Prithvi = one of the four chief consorts of Soma the *lokapaal* of Ishaanendra (10/5/33)

prithvi-kaya = earth-bodied (12/4/30)

prithvikayik jivas (12/5/21)

Pudgal (12/1/1)

pudgal parivartya = material or particulate transformations (12/4/15)

Pudgalastikaya = matter entity (11/10/2)

pudgals = particles (12/5/19)

pujaniya = objects of worship (10/5/5)

Purna = one of the four chief consorts of Purnabhadra (10/5/19)

Purnabhadra = the king of Yakshas (10/5/19)

purushakaar-paraakram = intent to act (12/5/11)

purush-vedi = beings with male gender (13/1/6)

Purvakoti = extremely long period of time (11/9/33)

Purvakoti-prithakatva = 2 to 9 Purvakoti; an extremely long period of time (11/1/38)

Purvas = a very large unit of time (12/9/13)

Purvas = subtle canons (11/11/58)

Purvashayyatara = *Puvvasejjayari;* leading provider of place of stay (12/2/4)

Pushkali (12/1)

Pushpaahaari = those who subsist on flowers (11/9/6)

Pushpavati = one of the four chief consorts of Satpurushendra (10/5/22)

pusht = consolidated (12/4/47)

Puvvasejjayari = *Purvashayyatara;* leading provider of place of stay (12/2/4)

(R)

Raaji = one of the five chief consorts of Chamarendra (10/5/4)

raajyaabhishek = pre-crowning anointing (11/9/9)

Raakshas (10/5/24)

Rahu = a deity (12/1)

Rajagriha (10/2/1)

Rajani = one of the five chief consorts of Chamarendra (10/5/4); one of the four chief consorts of Soma the *lokapaal* of Ishaanendra (10/5/33)

Rajaprashniya Sutra (10/5/7; 10/6/1; *11/11/45*; *11/11/*50; *11/11/53;* 11/9/5)

Rajju = a linear measure (11/10/11)

Rama = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Ramarakshita = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Rambha = one of the five chief consorts of Balindra (10/5/9)

rasa = taste (11/1/19)

Ratipriya = one of the four chief consorts of Kinnarendra (10/5/21)

Ratisena = one of the four chief consorts of Kinnarendra (10/5/21)

Ratnaprabha = first hell (13/1/2)

Ratnaprabha = one of the four chief consorts of Bheem (10/5/20)

Ratnaprabha Prithvi = first hell (12/7/5)

Ratnaprabhaprithvi-Adho Lok-Kshetra Lok = the first hell (11/10/4)

Ratni = a linear unitapproximately one feet (11/9/33)

Ratri = one of the four chief consorts of Soma the *lokapaal* of Ishaanendra (10/5/33)

***Raurav** (13/1/16)*

***Rigveda** (11/12/*16)

Rishabh-datt (11/11/4)

Rishabh-datt Brahmin (12/2/7)

Rishabhdutt (11/9/32)

Rishibhadraputra (12/1/31)

Rittha (12/3/3)

roash = antagonism (12/5/3)

Rohini = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29); one of the four chief consorts of Satpurushendra (10/5/22)

Rohini = one of the four chief consorts of Soma *lokapaal* of Shakrendra (10/5/31)

ruchak = glow (10/1/7)

ruchak kshetra = glowing areas (10/1/7)

ruksha = coarse (12/5/*18*)

Rupa = one of the six chief consorts of Bhootanand (10/5/14)

Rupaansha = one of the six chief consorts of Bhootanand (10/5/14)

Rupakanta = one of the six chief consorts of Bhootanand (10/5/14)

Rupakavati = one of the six chief consorts of Bhootanand (10/5/14)

Rupaprabha = one of the six chief consorts of Bhootanand (10/5/14)

Rupavati = one of the four chief consorts of Surupa (10/5/18)

(S)

saadharmik = co-religionists (12/2/20)

saakaaropayoga = intent for indulgence in knowledge (11/1/18)

Saakaaropayogi = having inclination towards right knowledge (13/1/6)

Saamaayik (12/10/1)

saata vedan = experience of pleasure (11/1/11)

saatiyoga = adulteration (12/5/5)

sabha = assembly (10/1)

sachit = infested with living organisms (11/11/4)

sad-roop = existent (12/10/28)

Sagaropam = a metaphoric unit of time (12/9/16)

Sahasramravan (11/9/2)

Sahasraneek = a king (12/2/2)

sa-indriya = with sense organs (11/1/30)

Saint-king Shiva (11/12/17)

sakriya = active (11/1/23)

Sakth = an instrument (11/9/12)

sallekhana = ultimate vow (10/4/5)

Samavasaran = Divine Assembly (10/4/1)

Samaya = the indivisible fraction of time (12/2/17); the smallest unit of time (11/1/5)

sambhaashan = speaking (11/11/46)

Samhanan = body-constitution (11/9/33)

samitis = self regulations (12/1/25)

sammaan = respect (10/5/5)

Sammajjak = those who wash their hands and feet repeatedly (11/9/6)

sammanit = respected (12/8/2)

Samparayik *kriya* = passion inspired activity (10/2/1)

Samprakshaalak = those who cleanse their body by rubbing sand or clay (11/9/6)

Samsaar = cycles of rebirth (12/7/3)

Samshayakarani = doubt (10/3/18)

samsthaan = structure (11/9/33)

Samudghaat = bursting-forth (11/1/39)

samvatsar pratilekhan = celebrating birthday (11/11/46)

samvedh = reborn in other genus (11/1/30)

samvigna = rebirth-fearing (10/4/5)

samvrit anagaar = an ascetic who has blocked the inflow of *karmas* (10/2/1); restrained homeless-ascetic (10/1)

Samyagdrishti = right perception/faith (12/5/30)

samyagdrishti = righteous (12/10/1)

samyag-mithya drishti = right-wrong perspective (11/1/15)

samyagmithyadrishti = right-wrong or mixed perception/faith (12/5/30)

samyak jnana = right knowledge (12/10/1)

Sanat-kumar (12/7/19)

sandhipaal = diplomats; *sandhivaal* (11/9/9)

Sangh = members of whole religious= ganization (12/2/20)

sanghaat = integration or fusion (12/4/14)

sanjna = active awareness (11/1/24); sentience (11/1/26)

sanjni = sentient (11/1/29)

sanjvalan = irritability (12/5/3)

sankalp = resolve (12/1/12)

sankhyat = countable (12/4/11)

Sanlekhana = ultimate vow (11/11/61)

Sannipaatik = state incorporating combinations of five states (11/10/2)

Sarasvati = one of the four chief consorts of Geetaratindra (10/5/24)

Sarvaarthasiddha (12/7/4)

sarvaddha = all time (12/5/35)

Sarvarth Siddhi Vimaan (11/11/19)

Sarvarthasiddha Vimaan = a divine realm (12/9/7)

sashri = graceful (12/6/4)

Satara = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

satkaar = adoration (10/5/5)

satkaarit = honoured (12/8/2)

Satpurushendra = the king of Kimpurushas (10/5/22)

sattva = entities (11/1/45)

Saudamini = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

Saudharm (12/7/14)

Saudharma divine realm (11/12/13)

Saudharma Kalp = a divine realm (12/10/22)

Saudharmakalp-*Urdhva Lok-Kshetra Lok* = Saudharmakalp divine realm or heaven (11/10/6)

Saudharmavatamsak (10/5/30)

Saumya = North (10/1/6)

sayogi = state of association (12/10/1)

Sfuta = one of the four chief consorts of Atikaayendra (10/5/23)

Shaaluk (11/1/1)

Shaaluka = bulbous root of lotus (11/2/1)

Shaivalabhakshi = those who subsist on moss or grass only (11/9/6)

shakat-uddhi = the central beam of a bullock-cart (10/1/7)

Shakrendra (10/6/1)

shanka = doubt (10/4/6)

Shankh (12/1)

Shankhadhma = those who take their meals after blowing conch-shell (11/9/6)

Shankhavan (11/12/1)

shankit (11/9/29)

shankit = doubt (11/9/28)

Sharira satkaar tyaag Paushadh = partial-ascetic vow without body care (12/1/24)

Sharkaraaprabha Prithvi = second hell (12/7/6)

Shashi (12/1)

Shataneek = a king (12/2/2)

Shatkaayaarambh tyaag = partial partial-ascetic vow; *Deshavakashik Paushadh; Daya Vrat; Desh Paushadh* (12/1/11)

Shayya-bhaand = bed and utensils (11/9/12)

Sheela (12/3/3)

Sheel-vrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (11/12/13)

sheet = cold (12/5/*18*)

shikhi = peacock (12/8/7)

Shiva (11/9/4)

Shiva = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29)

Shiva Rajarshi (11/1/1)

Shivabhadra (11/9/5)

Shivi (11/1)

shivika = a kind of palanquin (11/11/50)

Shraaddhakin = those who perform rituals for the benefit of deceased relatives (11/9/6)

Shramanist = followers of the *Shraman* religion or Jains (10/4/5)

shramanopasak = devotee of Jain ascetic (12/1)

***shravak-aarhant*s** = those who listened to the sermons of *Arhant*s (12/2/4)

Shravasti = a city (12/1/2)

Shree (11/11/50)

Shreya = one of the eight chief consorts of Shakrendra (10/5/29)

Shringaatak (12/6/2)

shrotrendriya-upayoga = beings with active sense of hearing (13/1/6)

shrut ajnani = not endowed with scriptural knowledge (13/1/6)

shrut jnani = endowed with scriptural knowledge (13/1/6)

shrut-ajnana = absence of scriptural knowledge (12/5/30)

shrut-jnana = scriptural knowledge (12/5/30)

Shuddhadant island (10/7-34/1)

shukla-paksha (13/1/6)

Shukra = one of the six chief consorts of Dharanendra (10/5/11)

Shumbha = one of the five chief consorts of Balindra (10/5/9)

Shyamahasti (10/4/3)

Siddha = perfect one (11/12/14); Perfected Soul (12/10/1)

Siddhashila (11/9/33)

Skandak (11/12/24)

skandh = Aggregate (10/1/7, 8)

skandh-desh = Section of aggregate (10/1/7)

skandh-pradesh = Space-point of aggregate (10/1/7)

snaana = bath (11/11/49)

snigdha = smooth (12/5/*18*)

Soma = realm-guardian of Chamarendra (10/5/6); the guardian angel of the east (11/9/12)

Somaa = one of the four chief consorts of Soma *lokapaal* of Shakrendra (10/5/31)

sparsh = touch (11/1/19)

sparshendriya-upayoga = beings with active sense of touch (13/1/6)

sprisht = space-points touched (12/4/47)

stambh = rigidity (12/5/4)

Stanit Kumar (10/3/4)

Sthaalakin = those who carry plate or *thaali* and other pots (11/9/)

Sthaan = aasanseat or mattress (11/9/12)

sthaasak = half plate (11/11/50)

Sthavir Bhagavant = senior ascetic disciples (10/5/2)

Sthavirs = senior ascetics (12/2/20)

sthiti = existence; life-span (13/1); span of existence (11/1/39)

sthitibandh = acquiring bondage of span of existence (11/1)

stibuk = *thibhug*; base or the point where the petal/leaf sprouts (11/1/45)

stree-vedi = beings with female gender (13/1/6)

Subhadra = one of the four chief consorts of Naagvitta (10/5/15); one of the four chief consorts of Soma, *lokapaal* of Balindra (10/5/10)

Subhaga = one of the four chief consorts of Surupa (10/5/18)

Sudarshan (11/11/2)

Sudarshan Jaagarika = the prescribed and proper religious awakening (12/1/24)

Sudarshana = one of the four chief consorts of Kaal (10/5/17); one of the four chief consorts of Kaalvalla (10/5/13)

Sudharma Sabha = divine assembly (10/1)

Sughosha = one of the four chief consorts of Geetaratindra (10/5/24)

Sujata = one of the four chief consorts of Naagvitta (10/5/15)

Sumana = one of the four chief consorts of Naagvitta (10/5/15)

Sunanda = one of the four chief consorts of Naagvitta (10/5/15)

Suprabha = one of the four chief consorts of Kaalvalla (10/5/13)

supratishthit = an earthen pot of the shape of a wine glass (11/10/10)

Surupa = one of the four chief consorts of Surupa (10/5/18); one of the six chief consorts of Bhootanand (10/5/14)

Surupa = the king of Bhoots (10/5/18)

Surya (12/6/5)

Suryaabh Dev (10/5/7)

Suryakant (11/9/5)

Suryaprabha = one of the four chief consorts of Surya (10/5/26; 12/6/6)

Susvara = one of the four chief consorts of Geetaratindra (10/5/24)

Svayambhuraman ocean (11/9/21)

Svayambhuraman Samudra-*Tiryaklok-Kshetra Lok* = the Svayambhuraman ocean (11/10/5)

Svayamprabh (10/5/31)

syandamaanika = a kind of palanquin (11/11/50)

(T)

Taamali *Taapas* (11/9/11)

taapasas = hermits (11/9/6)

taapikahastak = pincer (11/11/50)

Taijas = fiery (12/5/21)

Taijas pudgal parivartya = fiery material or particulate transformations (12/4/15)

taijas sharira = fiery body (10/1/10)

talika = small plate (11/11/50)

Tama = Nadir (10/1/6)

***Tamahprabha** (12/3/3)*

Tamah-prabha Prithvi = sixth hell (12/7/7)

***Tamastamahprabha** (12/3/3)*

tanuvaat = layer of rarefied air (12/5/13)

Taraka = one of the four chief consorts of Purnabhadra (10/5/19)

Tejo leshya = fiery soul-complexion (11/1/14)

thaali = full plate (11/11/50)

thilli = saddle (11/11/50)

tilak = applying auspicious marks on eight parts of body (11/11/49)

Tiryaklok (11/10/11)

Tiryaklok-Kshetra Lok = Transverse World (11/10/3)

trapa = tripod (11/10/7)

Trayastrimshak gods = ministers or priests (10/4/5)

tripradeshi skandh = tri-sectional aggregate (12/10/29)

trishna = holding (12/5/6)

trutik = *varga;* a group (10/5/6)

Tungika = a city (11/12/7)

Turushk (11/11/23)

Tvachaahaari = those who subsist on bark of a plant (11/9/6)

(U)

uchchata = height (11/1/6); space occupation (11/9/33)

Uchchhavaas = Countable Aavalikas (11/11/16)

uchchhavaas = faculty of deep breathing (11/1/20)

Uchchhavasak = having faculty of deep breathing (11/1/18)

udaya = fruition (11/1/7)

Udayan = a king (12/2/2; 13/1)

Uddandak = those who move about raising their staff (11/9/6)

Udeerana = volitional fruition (11/1/7)

udirak = perpetrator of voluntary fruition (11/1/13)

udiran = voluntary fruition (11/1/13)

udvartan = rebirth (11/1/39); rise; death to be reborn in higher realms (13/1)

Udvartana = a lesson of the sixth chapter of *Prajanapana Sutra (11/1/44)*

udvartana = rebirth (12/9/25)

ugra = perfect (10/4/5)

Unmajjak = those who bathe by taking just one dip in water (11/9/6)

unmardika = female masseurs for heavy massage (11/11/50)

unnaam = smugness (12/5/4)

unnat = arrogance (12/5/4)

unnataasan = seat of a specific design (11/11/50)

upachaya = to augment (12/1/26)

upadhi = conspire (12/5/5)

Upadhyaya = scholarly teacher of scriptures (12/2/20)

upapaat = birth (12/9/11); instant birth (13/1/1)

upashaant kashaaya-ksheen kashaaya = pacified and destroyed passion = (12/10/1)

upayoga = intent of indulgence (11/1/14)

Upayoga-atma = righteously active soul (12/10/1)

Urdhva Lok-Kshetra Lok = Upper World (11/10/3)

urdhvajanu = posture with knees erect (10/4/2)

ushna = hot (12/5/*18*)

utkanchan deepak = lamps with stands (11/11/50)

utkarsh = boastfulness (12/5/4)

Utpal = a kind of lotus (11/1/3)

Utpala (12/1/4)

Utpala = one of the four chief consorts of Kaal (10/5/17)

utpannapurva = *Uvavannapuvva;* born earlier or before this (11/1/45)

utpatti = origin (11/1)

Utsarpini & Avasarpini (12/4/50)

Utsarpini = progressive cycle of time (11/11/16)

Uttama = one of the four chief consorts of Purnabhadra (10/5/19)

Uttarakuru (12/9/16)

Uttar-koolak = those who live on the northern bank of the Ganges (11/9/6)

Uttarvarti Antardveep = Northern Inner-islands (10/1)

Utthaan = preliminary drive or effort to rise (12/5/11)

(V)

vaadit = playing musical instruments (11/11/49)

vaanar= monkey (12/8/5)

Vaayavya kone (12/6/2)

Vachan pudgal parivartya = speech material or particulate transformations (12/4/15)

vachan-yoga = vocal association (11/1/17)

vachan-yogi = beings with vocal association (13/1/6)

Vaijayanti = one of the four chief consorts of Angaar (10/5/27)

Vaikriya = transmutable (12/5/24)

vaikriya labdhi = special power of transmutation (13/1)

Vaikriya pudgal parivartya = transmutable material or particulate transformations (12/4/15)

Vaikriya shakti = special power of transmutation (10/3/2)

vaikriya sharira = transmutable body (10/1/10)

Vaimaanik Devs (12/4/17)

Vaimanik = celestial vehicular (10/3/9)

Vaimanik dev = Celestial-vehicular gods (10/3/5)

Vainayiki buddhi = intelligence which is acquired through devotion for teachers and elders or seniors, by serving them and being humble before them (12/5/11)

Vaishalik = Trishala's son, that is Bhagavan Mahavir (12/2/4)

Vaishraman = the guardian angel of the north (11/9/15)

Vaishramana = capital city of Vaishraman (10/5/8)

vaiyavratya = service (12/2/20)

Vajra Swami (12/9/16)

vajra-rishabh-narach samhanan = a specific type of constitution of human body where the joints are perfect and strongest (11/9/33)

valaya = chicanery (12/5/5)

Valkal = bark garment (11/9/12)

Valkavaasi = the bark-clad (11/9/6)

Vanaspati-kaal = infinite time (12/9/27)

Vanavyantar = interstitial (12/4/32)

Vanavyantar dev = interstitial gods (10/3/5)

vanchanata = swindle (12/5/5)

vandaniya = objects of reverence (10/5/5)

vandit = saluted (12/8/2)

Vanijyagram (10/4/1)

varga = *trutik*; a group (10/5/6)

varna = colour (11/1/19)

Varnarasadi = colour, taste etc. (11/1/18)

varshadhars = guards of ladies quarters, generally eunuchs (11/11/50)

Varsh-prithakatva = two to nine years (11/4/1)

Varun = the guardian angel of the west (11/9/14)

Varuna = capital city of Varun (10/5/8)

Varuni = West (10/1/6)

Vasu = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Vasudev (11/11/33)

Vasugupta = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Vasumitra = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32)

Vasundhara = one of the eight chief consorts of Ishaanendra (10/5/32); one of the four chief consorts of Soma (10/5/6)

Vayavya kone = Northwest (10/1/5)

Vayavyaa = northwest or *vayavya kone* (10/1/6)

Vayubhakshi = those who subsist only on air (11/9/6)

veda = sufferance (11/1/7)

vedak = sufferers (11/1/10)

vedan = sufferance (11/1/10)

Vedana Pad (10/2/5)

vedana samudghaat = bursting-forth of pain (11/1/42)

Vedaniya karma = *karma* responsible for pain or pleasure (11/1/13)

Ved-bandhak = gender-bondage acquirer *(11/1/26)*

Ved-vedak = *genderic* (11/1/26)

vibhaag = disintegration or fission (12/4/14)

Vibhanga-jnana = pervert knowledge (11/9/16)

vibhanga-jnani = having pervert knowledge (13/1/6)

vichikitsa = incredulity (10/4/6)

vichikitsa yukt = incredulous (11/9/28)

vichipath = the path of association; state of fruition of passions (10/2/1)

Vidyut = one of the five chief consorts of Chamarendra (10/5/4); one of the four chief consorts of Soma the *lokapaal* of Ishaanendra (10/5/33)

Vigraha gati = the *reincarnative* movement (11/1/21)

Vijaya = one of the four chief consorts of Soma, *lokapaal* of Balindra (10/5/10); one of the four chief consorts of Angaar (10/5/27)

Vijayas = continents (12/9/31)

vijnana = special knowledge (12/10/10)

vikat = open wagon (11/11/50)

vikriya (12/9/17)

vilak = Indian oriole; *peelak* (12/8/7)

Vimaan = celestial vehicle (11/11/33)

Vimala = one of the four chief consorts of Geetaratindra (10/5/24); one of the four chief consorts of Kaalvalla (10/5/13)

Vimala = Zenith (10/1/6)

Viraman-vrats = *Anuvrats* or five minor vows (11/12/13)

virat = detached (11/1/22)

Virati = detachment (11/1/21)

virya = spiritual and mental potency (12/5/11)

Virya-atma = soul with active potency (12/10/1)

Viryantaraya karmas = potency hindering *karmas* (12/5/11)

vivaad = debate (12/5/3)

vraj = cattle-yards (11/11/50)

Vrikshamoolak = those who live under trees (11/9/6)

Vyaalak (10/5/28)

Vyakrita = distinct (10/3/18)

Vyantar Devas = interstitial gods (10/5/24)

vyuchchhinn = destroyed (10/2/2)

Vyutkrantik = sixth chapter of *Prajanapana Sutra (11/1/44)*

(Y)

Yaachani = request (10/3/18)

Yajnik = those who perform yajna or ritual sacrifice (11/9/6)

Yajurved *(11/12/16)*

Yaksha (10/5/24)

Yama = the guardian angel of the south (11/9/13)

Yamaa = capital city of Yama (10/5/8)

Yamya = South (10/1/6)

Yathaakhyaat chaaritra = conduct conforming to perfect purity (12/10/1)

Yathaayurnivritti Kaal = life-span time (11/11/7)

yathachhand = unruly in thought and conduct (10/4/5)

yoga = association (11/1/14)

Yoga-atma = associated-soul (12/10/1)

Yojan = a linear measure equal to eight miles (11/1/7)

yoni = genus or place of birth (10/2/4)

Yoni Pad *(10/2/4)*

yugma = a type of vehicle (11/11/50)

परिशिष्ट-२

आगमों का अनध्यायकाल

(स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दी सूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल में स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों में भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या संयुक्त होने के कारण, इनका भी शास्त्रों में अनध्यायकाल वर्णित किया गया है।

स्थानांग सूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या। इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए हैं, जिनका संक्षेप में निम्न प्रकार से वर्णन है—

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१. **उल्कापात-तारापतन**—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२. **दिग्दाह**—जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पड़े कि दिशा में आग-सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३. **गर्जित**—बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. **विद्युत्**—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास में नहीं मानना चाहिए। क्योंकि वह गर्जन और विद्युत् प्रायः ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अतः आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नहीं माना जाता।

५. **निर्घात**—बिना बादल के आकाश में व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६. **यूपक**—शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनों प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

७. **यक्षादीप्त**—कभी किसी दिशा में बिजली चमकने जैसा, थोड़े-थोड़े समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अतः आकाश में जब तक यक्षाकार दिखता रहे तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८. **धूमिका-कृष्ण**—कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघों का गर्भमास होता है। इसमें धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध पड़ती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुंध पड़ती रहे, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

९. **मिहिकाश्वेत**—शीतकाल में श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१०. **रज-उद्‌घात**—वायु के कारण आकाश में चारों ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१३. हड्डी, माँस और रुधिर—पंचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दें, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओं के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एवं बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमशः सात एवं आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४. अशुचि—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५. श्मशान—श्मशान भूमि के चारों ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

१७. सूर्यग्रहण—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमशः आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. पतन—किसी बड़े मान्य राजा अथवा राष्ट्र-पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह-संस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ़ न हो, तब तक शनैः-शनैः स्वाध्याय करना चाहिए।

१९. राजव्युद्‌ग्रह—समीपस्थ राजाओं में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करे।

२०. औदारिक शरीर—उपाश्रय के भीतर पंचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पड़ा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पड़ा हो तो स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२१-२८. चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा—आषाढ़-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमाओं के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्ध-रात्रि—प्रातः सूर्य उगने से एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे, सूर्यास्त होने से एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे, मध्याह्न अर्थात् दोपहर में एक घड़ी पहले और एक घड़ी पीछे एवं अर्ध-रात्रि में भी एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन-रात्रि में चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

□□

Appendix-2

INAPPROPRIATE TIME FOR STUDY OF AGAMS

(Quoted from Nandi Sutra edited by Late Acharya Pravar Shri Atmaram ji M.)

Scriptures should be studied only at the appropriate time as prescribed in the Agams. Study of sriptures at a 'time inappropriate for studies' (*anadhyaya kaal*) is prohibited.

Detailed description of *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in *Smritis* (the corpus of *Sanatan Dharmashastra*) like *Manusmriti*. Vedic people also mention about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) of the *Vedas*. This rule is applicable to other Aryan holy books. As Jain Agams are sermons of the Omniscient, ensconced by the devas, and phonetically composed, discussion about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in the scriptures. For example :

According to *Sthananga Sutra* there are thirty two slots of time defined as *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)—ten related to sky, ten related to the gross physical body (*audarik sharira*), four relating to *mahapratipada* (the date following a specific full moon night), four relating to the date of the said full moon night, and four relating to *sandhya* (the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening and midnight). They are briefly described as follows :

RELATING TO SKY

1. **Ulkapat or Tarapatan**—If a falling star or a comet is visible in the sky, scriptures should not be studied for three hours following the incident.

2. **Digdaha**—A long as the sky looks crimson in any direction, as if there was a fire, then study of scriptures should not be done.

3. **Garjit**—For three hours following thunder of clouds such studies are prohibited.

4. **Vidyut**—For three hours following lightening such studies are prohibited.

However, The prohibition related to thunder and lightening is not applicable during the four months of monsoon. This is because frequent thunder and lightening is an essential attribute of that season. Thus this prohibition is relaxed starting from *Ardra* till *Svati Nakshatra* (lunar mansion or 27/28 divisions of the ecliptic on the path of the moon).

5. **Nirghat**—For six hours following thunder without clouds (demonic or otherwise) such studies are prohibited.

6. **Yupak**—The conjunction of solar and lunar glows at twilight hour on first, second and third days of the bright half of a month (*Shukla Paksha*) is called *Yupak*. During these dates such studies are prohibited during the first quarter of the night.

7. **Yakshadeepti**—Some times there is a lightening like intermittent glow visible in te sky. This is called *Yakshadeepti*. As long as such glow is visible in the sky such studies are prohibited.

8. **Dhoomika-krishna**—The months from *Kartik* to *Maagh* are months of cloud formation. During this period smoky fog of suspended water particles is a frequent phenomenon. This is called *Dhoomika-krishna*. As long as this fog exists such studies are prohibited.

9. **Mihikashvet**—The white mist during winter season is called *Mihikashvet*. As long as this exists such studies are prohibited.

10. **Raj-udghat**—High speed wind causes dust storm. This is called *Raj-udghat*. As long as the sky is filled with dust such studies are prohibited.

RELATING TO GROSS PHYSICAL BODY

11-13. **Bone, flesh and blood**—As long as bone, flesh and blood of five sensed animals are visible and not removed from sight such studies are prohibited. According to the commentator (*Vritti*) if such things are lying up to a distance of 60 yards the prohibition is effective.

This rule is applicable to human bones, flesh and blood with the amendment that the distance is 100 cubits and the effective period is one day and night. The period prohibited for studies is three days in case of a women in menstruation, seven days in case of male-child birth and eight days in case of a female-child birth.

14. **Ashuchi**—As long as excreta is visible and not removed from sight such studies are prohibited.

15. Smashan—Up to a distance of hundred yards in any direction from a cremation ground such studies are prohibited.

16. Chandra grahan—At the time of lunar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve or sixteen hours.

17. Surya grahan—At the time of solar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve or sixteen hours.

18. Patan—On the death of a king or some other nationally eminent person such studies are prohibited as long as he is not cremated. Even after that, the period of study is kept limited as long as his successor does not take over.

19. Raaj-vyudgraha—During a war between neighbouring states such studies are prohibited as long as peace does not prevail. Studies should be resumed only 24 hours after peace is established.

20. Audarik Sharira—In case a five sensed animal dies or is killed in an *upashraya* (place of stay for ascetics) such studies are prohibited as long as the dead body is not removed. This prohibition also applies if a dead body is lying within 100 yards of the place of stay.

21-28. Four Mahotsavas and four Mahapratipada—*Ashadh, Ashvin, Kartik* and *Chaitra purnimas* (the full moon days of these four months) are called great festival days. The days after these festival days are called *Mahapratipada*. On all these days such studies are prohibited.

29-32. Sandhya—During the twenty four minutes preceding and following the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening and midnight such studies are prohibited.

Studies of scriptures or other holy books should be done avoiding all these *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies).

विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नये ज्ञान युग का शुभारम्भ

(जैन आगम, हिन्दी एवं अंग्रेजी भावार्थ और विवेचन के साथ। शास्त्र के भावों को उद्‌घाटित करने वाले बहुरंगे चित्रों सहित)

1. **सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र** — **मूल्य ₹ 600/-**

भगवान महावीर की अन्तिम वाणी। आदर्श जीवन विज्ञान तथा तत्त्वज्ञान से युक्त मोक्षमार्ग के सम्पूर्ण अंगों का सारपूर्ण वर्णन। एक ही सूत्र में सम्पूर्ण जैन आचार, दर्शन और सिद्धान्तों का समग्र सद्‌बोध।

2. **सचित्र दशवैकालिक सूत्र** — **मूल्य ₹ 600/-**

जैन श्रमण की अहिंसा व यतनायुक्त आचार संहिता। जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त, संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

3. **सचित्र नन्दी सूत्र** — **मूल्य ₹ 600/-**

मतिज्ञान-श्रुतज्ञान आदि पाँचों ज्ञानों का विविध उदाहरणों सहित विस्तृत वर्णन।

4. **सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र (भाग-1, 2)** — **मूल्य ₹ 1,200/-**

यह शास्त्र जैनदर्शन और तत्त्वज्ञान को समझने की कुंजी है। नय, निक्षेप, प्रमाण, जैसे दार्शनिक विषयों के साथ ही गणित, ज्योतिष, संगीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, प्राचीन लिपि, नाप-तौल आदि सैकड़ों विषयों का वर्णन है। यह सूत्र गम्भीर भी है और बड़ा भी है। अत: दो भागों में प्रकाशित किया है।

5. **सचित्र आचारांग सूत्र (भाग-1, 2, 3)** — **मूल्य ₹ 1,800/-**

यह ग्यारह अंगों में प्रथम अंग है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सम्यक्त्व, संयम, तितिक्षा आदि आधारभूत तत्त्वों का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। भगवान महावीर का जीवन-चरित्र, उनकी छद्मस्थ चर्या का आँखों देखा वर्णन तथा जैन श्रमण का आचार-विचार दूसरे भाग में है। दोनों भाग विविध ऐतिहासिक व सांस्कृतिक चित्रों से युक्त।

6. **सचित्र स्थानांग सूत्र (भाग-1, 2)** — **मूल्य ₹ 1,200/-**

यह चौथा अंग सूत्र है। अपनी खास संख्या प्रधान शैली में संकलित यह शास्त्र ज्ञान, विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल, गणित, इतिहास, नीति, आचार, मनोविज्ञान, पुरुष-परीक्षा आदि सैकड़ों प्रकार के विषयों का ज्ञान देने वाला बहुत ही विशालकाय शास्त्र है। भावार्थ और विवेचन के कारण प्रत्येक पाठक के लिए समझने में सरल और ज्ञानवर्धक है।

7. **सचित्र ज्ञाताधर्मकथा सूत्र (भाग-1, 2)** — **मूल्य ₹ 1,200/-**

भगवान महावीर द्वारा प्रवचनों में प्रयुक्त धर्मकथाएँ, उद्‌बोधक, रूपक, दृष्टान्त आदि जिनके माध्यम से तत्त्वज्ञान सहज ही ग्राह्य हो गया है। विविध रोचक रंगीन चित्रों से युक्त। दो भागों में सम्पूर्ण आगम।

8. सचित्र उपासकदशा एवं अनुत्तरौपपातिकदशा सूत्र **मूल्य ₹ 600/-**

सप्तम अंग उपासकदशा में भगवान महावीर के प्रमुख 10 श्रावकों का जीवन-चरित्र तथा उनके श्रावक धर्म का रोचक वर्णन है। नवम अंग अनुत्तरौपपातिकदशा में उत्कृष्ट तप:साधना करने वाले 33 श्रमणों की तप ध्यान-साधना का रोमांचक वर्णन है। भावों को स्पष्ट कने वाले कलात्मक रंगीन चित्रों सहित।

9. सचित्र निरयावलिका एवं विपाक सूत्र **मूल्य ₹ 600/-**

निरयावलिका में पाँच उपांग हैं। भगवान महावीर के परम भक्त राजा कूणिक के जन्म आदि का वर्णन तथा वैशाली गणतंत्राध्यक्ष चेटक के साथ हुए महाशिलाकंटक युद्ध का रोमांचक सचित्र चित्रण तथा भगवान अरिष्टनेमि एवं भगवान पार्श्वनाथ के शासन में दीक्षित अनेक श्रमण-श्रमणियों का चरित्र इनमें है।

विपाक सूत्र में अशुभ कर्मों के अत्यन्त कटु फल का वर्णन है, जिसे सुनते ही हृदय द्रवित हो जाता है, तथा सुखविपाक में दान, तप आदि शुभ कर्मों के महान् सुखदायी पुण्य फलों का मुँह बोलता वर्णन है। भावपूर्ण रोचक कलापूर्ण चित्रों के साथ।

10. सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र **मूल्य ₹ 600/-**

आठवें अंग अन्तकृद्दशा सूत्र में मोक्षगामी 90 महान् आत्म-साधक श्रमण-श्रमणियों के तपोमय साधना जीवन का प्रेरक वर्णन है। यह सूत्र पर्युषण में विशेष रूप में पठनीय है। विविध चित्र व तपों के चित्रों से समझने में सरल सुबोध है।

11. सचित्र औपपातिक सूत्र **मूल्य ₹ 600/-**

यह प्रथम उपांग है। इसमें राजा कूणिक का भगवान महावीर की वन्दनार्थ प्रस्थान, दर्शन-यात्रा तथा भगवान की धर्मदेशना, धर्म प्ररूपणा आदि विषयों का बहुत ही विस्तृत लालित्ययुक्त वर्णन है। इसी में अम्बड़ परिव्राजक आदि अनेक परिव्राजकों की तप:साधना का वर्णन भी है।

12. सचित्र रायपसेणिय सूत्र **मूल्य ₹ 600/-**

यह द्वितीय उपांग है। धर्मद्वेषी प्रदेशी राजा को धर्मबोध देकर परम धार्मिक बनाने वाले महान् ज्ञानी आचार्य केशीकुमार श्रमण के साथ आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म आदि विषयों पर हुई तर्कयुक्त अध्यात्म-चर्चा प्रत्येक जिज्ञासु के लिए पठनीय ज्ञानवर्द्धक है। आत्मा और शरीर की भिन्नता समझाने वाले उदाहरणों के चित्र भी बोधप्रद हैं।

13. सचित्र कल्प सूत्र **मूल्य ₹ 600/-**

कल्प सूत्र का पठन, पर्युषण में विशेष रूप में होता है। इसमें 24 तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र है। साथ ही भगवान् महावीर का विस्तृत जीवन-चरित्र, श्रमण समाचारी तथा स्थविरावली का वर्णन है। 24 तीर्थंकरों के जीवन से सम्बन्धित सुरम्य चित्रों के कारण सभी के लिए आकर्षक उपयोगी है।

14. सचित्र छेद सूत्र (दशा-कल्प-व्यवहार) **मूल्य ₹ 600/-**

आचार-शुद्धि के लिए जिन आगमों में विशेष विधान है, उन्हें 'छेद सूत्र' कहा गया है। छेद सूत्रों में आचार-शुद्धि के सूक्ष्म से सूक्ष्म नियमों का वर्णन है। चार छेद सूत्रों में दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प तथा व्यवहार—ये तीन छेद सूत्र सभी श्रमण-श्रमणियों के लिए विशेष पठनीय हैं। प्रस्तुत भाग में तीनों छेद सूत्रों का भाष्य आदि के आधार पर विवेचन है। अंग्रेजी अनुवाद के साथ 15 रंगीन चित्रों सहित प्रकाशित है।

15. **सचित्र भगवती सूत्र (भाग-1, 2, 3, 4)** **मूल्य ₹ 2,600/-**

पंचम अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र 'भगवती' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। इसमें जीव, द्रव्य, पुद्गल, परमाणु, लोक आदि चारों अनुयोगों से सम्बन्धित हजारों प्रश्नोत्तर हैं। यह विशाल आगम जैन तत्त्व विद्या का महासागर है। संक्षिप्त और सुबोध अनुवाद व विवेचन के साथ यह आगम लगभग 6 भाग में पूर्ण होने की सम्भावना है। प्रथम भाग 1 से 4 शतक तक तथा 15 रंगीन चित्रों सहित प्रकाशित है। द्वितीय भाग में 5 से 7 शतक सम्पूर्ण तथा 8वें शतक का प्रथम उद्देशक लिया गया है। इस भाग में भावपूर्ण 15 रंगीन चित्र लिये गये हैं। तृतीय भाग में आठवें शतक के द्वितीय उद्देशक से नवें शतक तक सम्पूर्ण लिया गया है। इस भाग में 22 रंगीन भावपूर्ण चित्र लिये गये हैं। चतुर्थ भाग में 10 से 13वें शतक के तृतीय उद्देशक तक लिया गया है। साथ ही यह भाग विषय को स्पष्ट करने वाले 16 रंगीन भावपूर्ण चित्रों से युक्त है।

16. **सचित्र जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र** **मूल्य ₹ 600/-**

यह छठा उपांग है। इस सूत्र का मुख्य विषय जम्बूद्वीप का विस्तृत वर्णन है। जम्बूद्वीप में आये मानव क्षेत्र, पर्वत, नदियाँ, महाविदेह क्षेत्र, मेरु पर्वत तथा मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते सूर्य-चन्द्र आदि ग्रह-नक्षत्र, अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी आदि के विस्तृत वर्णन के साथ ही चौदह कुलकर, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का चरित्र, सम्राट् भरत चक्रवर्ती की षट्खण्ड विजय आदि अनेक विषयों का वर्णन भी इस सूत्र में आता है। इसमें दिये रंगीन चित्र जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति, सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहों की गति समझने में काफी उपयोगी सिद्ध होंगे। भगवान ऋषभदेव के जीवन से जुड़े सुन्दर भावपूर्ण रोचक चित्र पाठकों को मुँह बोलते प्रतीत होंगे। यह सूत्र जैन, भूगोल, खगोल और इतिहास का ज्ञानकोष है।

17. **सचित्र प्रश्नव्याकरण सूत्र** **मूल्य ₹ 600/-**

प्रश्नव्याकरण अर्थात् प्रश्नों का व्याकरण, समाधान, उत्तर। मानव मन में सदा से यह प्रश्न उठता रहा है कि राग-द्वेष जनित वे कौन-से भयंकर विकार हैं जो आत्मा को मलिन करके दुर्गति में ले जाते हैं और इनसे कैसे बचा जाए? इन प्रश्नों के समाधान स्वरूप प्रश्नव्याकरण सूत्र में इनका विस्तृत वर्णन किया गया है। इन्हें आगम की भाषा में आश्रव कहते हैं। ये आश्रव हैं—हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह। इन आश्रवों का स्वरूप और इनसे होने वाले दु:खों को इस सूत्र में भली-भाँति समझाया गया है।

साथ ही इन पाँच आश्रवरूपी शत्रुओं से बचने हेतु अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह—ये पाँच संवर बताये गये हैं। संवर से भावित आत्मा, राग-द्वेष जनित विकारों से दूर रहती है। आश्रव-संवर वर्णन में ही समग्र जिन प्रवचन का सार आ जाता है।

18. **सचित्र आवश्यक सूत्र** **मूल्य ₹ 400/-**

आगम साहित्य में आवश्यक सूत्र का प्रमुख स्थान है। जिस प्रकार वैदिकों में संध्या, बौद्धों में उपासना, मुस्लिमों में नमाज, सिखों में अरदास और ईसाइयों में प्रार्थना का स्थान है, उसी प्रकार श्रमण परम्परा में आवश्यक-साधना का स्थान है। साधक के लिए आवश्यक रूप से करणीय, आराधनीय होने से इस सूत्र को **आवश्यक सूत्र** कहा जाता है। आवश्यक सूत्र में श्रमण और श्रावक की साधना शुद्धि के छह सोपान दिये गये हैं। जिन पर क्रमश: आरोहण करने से आत्म-शुद्धि की यात्रा सम्पन्न होती है। अत: प्रत्येक जिनोपासक के लिए यह जरूरी है कि वह आवश्यक आराधना द्वारा प्रतिदिन "निशान्त और दिवसान्त" इन दोनों संध्याओं में स्वयं का आलेखन-प्रतिलेखन करे। प्रस्तुत कृति में 20 भावपूर्ण रंगीन

चित्रों के माध्यम से साधक की प्रमुख आवश्यक क्रियाओं को सुन्दर तरीके से प्रस्तुतिकरण किया गया है।

- इस प्रकार 24 जिल्दों में 25 आगम तथा कल्पसूत्र प्रकाशित हो चुके हैं। प्राकृत अथवा हिन्दी का साधारण ज्ञान रखे वाले व्यक्ति भी अंग्रेजी माध्यम से जैनशास्त्रों का भाव, उस समय की आचार-विचार प्रणाली आदि को अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं। अंग्रेजी शब्द कोष भी दिया गया है।
- पुस्तकालयों, ज्ञान-भण्डारों तथा संत-सतियों, स्वाध्यायियों के लिए विशेषरूप से संग्रह करने योग्य आगमों का यह प्रकाशन कुछ समय पश्चात् दुर्लभ हो सकता है।
- इस आगममाला के प्रकाशन में परम श्रद्धेय उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की अत्यन्त बलवती प्रेरणा रही है। उनके शिष्यरत्न जैन शासन दिवाकर आगमज्ञाता उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म. द्वारा सम्पादित हैं, इनके सह-सम्पादक हैं प्रसिद्ध विद्वान् श्रीचन्द सुराना। अंग्रेजी अनुवादकर्त्ता हैं श्री सुरेन्द्र बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन।

IN THE HISTORY OF JAIN LITERATURE BEGINNING OF A NEW ERA OF KNOWLEDGE FOR THE FIRST TIME IN THE WORLD

(Jain Agams published with free flowing translation in Hindi and English. Also included are multicoloured illustrations vividly exemplifying various themes contained in scriptures)

1. **Illustrated Uttaradhyayan Sutra** **Price ₹ 600/-**

   The last sermon of Bhagavan Mahavir. Essence of the ideal way of life and path of liberation based on philosophical knowledge contained in all Angas. The pious discourse encapsulating complete Jain conduct, philosophy and principles.

2. **Illustrated Dashavaikalik Sutra** **Price ₹ 600/-**

   The simple rule book of ahimsa and caution based Shraman conduct rendered vividly with the help of multicoloured illustrations. Useful at every step in life, even of common man, as a guide book of good behaviour, balanced conduct and norms of etiquette, food and speech.

3. **Illustrated Nandi Sutra** **Price ₹ 600/-**

   All enveloping discussion of the five facets of knowledge including Mati-jnana and Shrut-jnana.

4. **Illustrated Anuyogadvar Sutra (Parts 1and 2)** **Price ₹ 1,200/-**

   This scripture is the key to understanding Jain philosophy and metaphysics. Besides philosophical topics like Naya, Nikshep and Praman it contains discussion about hundreds of subjects including mathematics, astrology, music, poetics, ancient scripts and weights and measures. The complexity and volume of this could be covered only in two volumes.

5. **Illustrated Acharanga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price ₹ 1,200/-**

   This is the first among the eleven Angas. It contains lucid description of ahimsa, samyaktva, samyam, titiksha and other fundamentals propagated by Bhagavan Mahavir. Eye-witness-like description of the life of Bhagavan Mahavir and his pre-omniscience praxis as well as details about ascetic conduct and praxis form the second part. Both parts contain multi-coloured illustrations on a variety of historical and cultural themes.

6. **Illustrated Sthananga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price ₹ 1,200/-**

   This is the fourth Anga Sutra. Compiled in its unique numerical placement style, this scripture is a voluminous work containing information about scriptural knowledge, science, astrology, geography, mathematics, history, ethics, conduct, psychology, judging man and hundreds of other topics. The free flowing translation and elaboration make the contents easy to understand and edifying even for common readers.

7. Illustrated Jnata Dharma Katha Sutra (Parts 1 and 2) **Price ₹ 1,200/-**

Famous inspiring and enlightening religious tales, allegories and incidents told by Bhagavan Mahavir presented with attractive colourful illustrations. This works makes the abstract philosophical principles easy to understand. This is the sixth Anga complete in two volumes.

8. Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupapatik Dasha Sutra **Price ₹ 600/-**

This book contains the seventh and the ninth Angas. The seventh anga, Upasak Dasha, contains the stories of life of ten prominent Shravak disciples of Bhagavan Mahavir with a special emphasis on their religious conduct. The ninth Anga Anuttaraupapatik Dasha contains thrilling description of the lofty austerities and meditation done by thirty three specific ascetics. With colourful illustrations.

9. Illustrated Niryavalika and Vipaak Sutra **Price ₹ 600/-**

Niryavalika has five Upangas that contain the story of the birth of king Kunik, a devout disciple of Bhagavan Mahavir. This also contains the thrilling and illustrated description of the famous Mahashilakantak war between Kunik and Chetak, the president of the republic of Vaishali. Besides these it also has life-stories of many Shramans and Shramanis of the lineage of Bhagavan Parshva Naath.

Vipaak Sutra contains the description of the extremely bitter fruits of ignoble deeds. This touching description inspires one towards noble deeds like charity and austerities the fruits of which have been lucidly described in its second section titled Sukha-vipaak. The colourful artistic illustrations add to the attraction.

10. Illustrated Antakriddasha Sutra **Price ₹ 600/-**

This eighth Anga contains the inspiring stories of the spiritual pursuits of ninety great men destined to be liberated. This Sutra is specially read during the Paryushan period. The illustrations related to austerities are specially informative.

11. Illustrated Aupapatik Sutra **Price ₹ 600/-**

This the first Upanga. This contains lucid and poetic description of numerous topics including King Kunik's preparations to go to pay homage to Bhagavan Mahavir, Bhagavan's sermon and establishment of the religious order. This also contains the description of austerities observed by Ambad and many other Parivrajaks.

12. Illustrated Raipaseniya Sutra **Price ₹ 600/-**

This is the third Upanga. It provides an interesting and edifying reading of the discussions between Acharya Keshi Kumar Shraman and the anti-religious king Pradeshi on topics like soul, next life, and rebirth. This dialogue turned him into a great religionist. The illustrations of the examples showing the difference between soul and body are also instructive.

13. Illustrated Kalpa Sutra **Price ₹ 600/-**

Kalpa Sutra is widely read and recited during the Paryushan festival. It contains stories of life of 24 Tirthankars with more details about Bhagavan Mahavir's life. It also contains the disciple lineage of Bhagavan Mahavir and detailed ascetic praxis. The illustrations connected with the 2 Tirthankars add to its attraction as well as utility.

14. Illustrated Chheda Sutra **Price ₹ 600/-**

The Agams that contain special procedures for purity of conduct are called Chheda Sutra. These Sutras enumerate subtle reules for purity of conduct. Of the four Chheda Sutras three should be specially read by all ascetics–Dashashrut-skandh, Brihatkalpa and Vyavahar. This edition contains these three Chhed Sutras with elaboration based on commentaries (Bhashya) and other works. It also includes English translation and 15 multicolour illustrations.

15. Illustrated Bhagavati Sutra (Parts 1, 2, 3 and 4) **Price ₹ 2,400/-**

Vyakhyaprajnapti, the fifth Anga, is popularly known as Bhagavati. It contains thousands of question and answers on various topics from four Anuyogas. Such as soul, entities, matter, ultimate particles and universe. This voluminous Agam is an ocean of Jain metaphysics. With simple translation and brief elaboration it is expected to be completed in six volumes. The first volume contains one to four Shataks and 15 illustrations. The second volume contains five to seven Shataks complete and first Uddeshak of the eighth Shatak. As usual 15 colourful illustrations have also been included. The third volume contains second Uddeshak of the eighth Shatak and complete ninth Shatak. 22 colourful illustrations have also been included. The fourth volume contains tenth Shatak and third Uddeshak of the thirteenth Shatak with 16 useful colourful illustrations. These will make the complex topics simple and easy to understand. This is probably for the first time that an English translation of this Agam is being published.

16. Illustrated Jambudveep Prajnapti Sutra **Price ₹ 600/-**

This is the sixth Upanga. The central theme of this Sutra is detailed description of Jambudveep. The list of topics discussed in this include inhabited areas of Jambudveep continent, mountains, rivers, Mahavideh area, Meru mountain, the sun, the moon, planets, and constellations moving around the Meru; regressive and progressive cycles of time; people like the fourteen Kulakars, the first Tirthankar Bhagavan Risabhadeva; and incidents like the conquest of the six division of the Bharat area. The colourful illustrations included in this volume will be helpful in understanding the geographical conditions of Jambudveep as well as the movement of the sun, the moon and planets. The readers will find the beautiful multicoloured illustrations of incidents from Bhagavan Risabhadeva's life very lively. This Sutra is a compendium of Jain geography, cosmology and history.

17. Illustrated Prashnavyakaran Sutra **Price ₹ 600/-**

Prashnavyakaran means the grammer of questions, solutions and answers. Human mind is always faced with the question that what are those terrible perversions caused by attachment and aversion that tarnish the soul and push it to a tormenting rebirth, and how to avoid them? In order to answer these questions Prashnavyakaran Sutra starts by giving detailed description of these perversions. In Agamic terms they are called Aashravas. They are-violence, falsity, stealing, non-celibacy and covetousness. This Sutra vividly explains the definitions of these Aashravas and the miseries caused by them.

18. Illustrated Aavashyak Sutra **Price ₹ 400/-**

Avashyak Sutra occupies pride of a place in Agam literature. In Shraman tradition Avashyak practices have the same status of importance that Sandhya has in Vedic tradition, Upasana in Buddhism, Namaz in Islam, Ardaas in Sikkhism and prayer in Christianity. As it contains obligatory or essential practices for a spiritual aspirant, it is called Avashyak Sutra. Six steps of spiritual purity for a Shraman (Sadhu or ascetic) and a Shravak (laity) have been detailed in this scripture. Rising on these steps, a spiritual aspirant attains purity. That is why it is necessary for every Jina-devotee to assess and reassess his self every morning and evening. This edition presents all six obligatory duties of spiritual aspirants in lucid style with the help of 20 colourful illustrations.

- Till date 24 Agams (including three parts of Bhagavati) and Kalpa Sutra have been published in 23 books. The English translation makes it possible for those with passing knowledge of Prakrit and Hindi to understand the content of Jain Agams including the religious practices as prevalent in ancient times. Also included in some of these editions are glossaries of jain terms with their meaning in English.
- Due to its demand by libraries, Jnana Bhandars, ascetics and lay readers this unique series may soon go out of print.
- The publication of this Agam series has been inspired by Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra Ji M.S. Its editor is his able disciple Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni Ji Maharaj. His team includes renowned scholar Shri ShrichandSurana as associate editor, Shri Surendra Bothara and Sushravak Shri Raj Kumar Jain, as English Translators.

□□

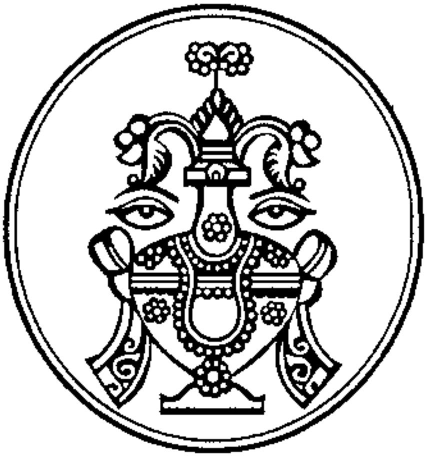

सचित्र

श्री भगवती सूत्र

भाग 4

प्रवर्तक
श्री अमर मुनि

प्रवर्त्तक स्व. श्री अमर मुनि

प्रस्तुत सूत्र के सम्पादक श्री अमर मुनि जी, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ के एक तेजस्वी संत थे। जिनवाणी के परम उपासक गुरुभक्त श्री अमर मुनि जी का जन्म वि. सं. १९९३ भादवा सुदि ५ (सन् १९३६), क्वेटा (बलूचिस्तान) के मल्होत्रा परिवार में हुआ।

११ वर्ष की लघुवय में आप जैनागम रत्नाकर आचार्यसम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज की चरण-शरण में आये और आचार्यदेव ने अपने प्रिय शिष्यानुशिष्य भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज को इस रत्न को तराशने/सँवारने का दायित्व सौंपा। गुरुदेव श्री भण्डारी जी महाराज ने अमर को सचमुच अमरता के पथ पर बढ़ा दिया। आपने संस्कृत-प्राकृत-आगम-व्याकरण-साहित्य आदि का अध्ययन करके एक ओजस्वी प्रवचनकार, तेजस्वी धर्म-प्रचारक तथा जैन आगम साहित्य के अध्येता और व्याख्याता के रूप में जैन समाज में प्रसिद्धि प्राप्त की।

आपश्री ने भगवती सूत्र (४ भाग), प्रश्नव्याकरण सूत्र (२ भाग), सूत्रकृतांग सूत्र (२ भाग) आदि आगमों की सुन्दर विस्तृत व्याख्याएँ प्रस्तुत की।

लुधियाना में दिनांक 14 मार्च, 2013 समाधिपूर्वक आपका स्वर्गवास हो गया।

Pravartak Shri Amar Muni

The editor-in-chief of this Sutra, is a brilliant ascetic affliated with Shri Vardhaman Sthanakvasi Jain Shraman Sangh.

A great worshiper of the tenets of Jina and a devotee of his Guru, Shri Amar Muni Ji was born in a Malhotra family of Queta (Baluchistan) on Bhadva Sudi 5th in the year 1993 V.

He took refuge with Jainagam Ratnakar Acharya Samrat Shri Atmaram Ji M. at an immature age of eleven years. Acharya Samrat entrusted his dear grand-disciple, Bhandari Shri Padmachandra Ji M. with the responsibility of cutting and polishing this raw gem. Gurudev Shri Bhandari Ji M. indeed, put Amar (immortal) on the path of immortality. He studied Sanskrit, Prakrit, Agams, Grammar and Literature to gain fame in the Jain society as an eloquent orator, an effective religions preacher and a scholar and interpreter of Jain Agam literature.

He has written nice and detailed commentaries of Bhagavati Sutra (in four parts), Prahsnavyakaran Sutra (in two parts), Sutrakritanga Sutra (in two parts) and some other Agams.

प्रकाशित सचित्र आगम साहित्य

Publishers & Distributors :
Padma Prakashan
Padma Dham, Narela Mandi, Delhi - 110 040

Printed by :
Shree Diwakar Prakashan
A-7, Awagarh House, M.G. Road, Agra - 282 002
Phone : 0562-2851165, M- 09319203291